मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

7

तफ़सीर इब्ने कसीर

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابنِ کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुद्दीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 7

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

ناشران

شعبہ نشر واشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

بِسْـــــمِاللهِالرَّحْمنِالرَّحِيم

अस्सलामु अलयकुम व-रहेमतुल्लाही व-बरकातुहू

बाद सलाम के मालुम हो की अल्लाह रब्बुल इज्जत के फजल-व-करम से हदीसों की 6 मोअतबर किताबें सिआ सत्ता / सिआ कुतुब पढ़ने में, समझने में और दावत पहुंचाने में आसानी हो इस नेक मक़सद से उम्मत-ए-मुस्लिमा के ख़िदमात में PDF की शकल में पेश है।

तफसीर ईब्ने क़सीर (8 जिल्द)

1. सहीह बुख़ारी (8 जिल्द)
2. सहीह मुस्लिम (8 जिल्द)
3. सुनन अबु दाऊद (6 जिल्द)
4. ज़ामेअ सुनन तिर्मिज़ी (4 जिल्द)
5. सुनन नसाई शरीफ़ (6 जिल्द)
6. सुनन इब्ने माजह (1 जिल्द)

इन PDF बनाने में हदीस नंबर,पेज नंबर, स्केनींग वगैरा मे कोई भूल हुई हो तो बराए मेहरबानी नीचे लिखे हुए मोबाइल नंबर पर इत्तेला करे।

अल्लाह रब्बुल इज्जत इन तमाम किताबों की PDF बनाने में और इसमे ता'ऊन करने वाले हजरात की ख़िदमात को कुबुल फरमाए ओर लोगों के लिए हिदायत का सबब बनाए।

शेरख़ान (अहमदाबाद-गुजरात) M.: +91 9825 696 131

मुस्तनद-मुदल्लल-मुकम्मल हिन्दी एडिशन

अल्लामा हाफ़िज़ ज़ुबैर अली ज़ई (रह.)
अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी (रह.)
शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ महदी (रह.)
शैख़ अली अहमद अल बाक़ी (रह.)
शैख़ मुबश्शिर अहमद रब्बानी (रह.)

تفسیر ابن کثیر

तफ़सीर इब्ने कसीर

इमाम एमादुदीन हाफिज इब्ने कसीर (रह.)

जिल्द 7

तर्जुमा :
मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी

हिन्दी तर्जुमा :
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट
जमीअत अहले हदीस

ज़ेरे एहतिमाम : अन्जूमन खुद्दामुल कुरआन

शो'बा नश्रो इशाअत
शहरी जमीअत अहले हदीस
जोधपुर
सूबाई जमीअत अहले हदीस
राजस्थान

नाशिर-ناشر

شعبہ نشر واشاعت
شہری جمعیت اہل حدیث
جودھپور
صوبائی جمعیت اہل حدیث
راجستھان

सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित है

इस किताब के प्रकाशन सबंधी सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई व्यक्ति/संस्था/प्रकाशन आदि इस किताब को मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ कठोर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्ज –ख़र्च के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब: **तफ़सीर इब्ने कसीर**

मुरत्तिब (अ़रबी): **एमामुद्दीन इब्ने कसीर (रह.)**

उर्दू तर्जुमा: **मौलाना मुहम्मद जुनागढ़ी (रह.)**

हिन्दी तर्जुमा: **दारूत–तर्जुमा, शोबा नशरो इशाअ़त**
जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर (राज.)

तस्हीह व नज़्रे सानी: **मौलाना जमशेद आलम सल्फ़ी, 97857-69878**

लेज़र टाइपसेटिंग: **मोहम्मद अकबर, 85030-26306**

मेनेजिंग डायरेक्टर: **अली हम्जा, 82338-55857**

प्रिण्टिंग: **अनमोल प्रिण्टस, बासनी इण्डस्टील एरिया,**
9414131426 जोधपुर (राज.)

बाइंडिंग: **मो. शाहिद, कमाल बाइंडिंग हाउस,**
9351668223 जोधपुर (राज.)

तादाद पेज: 588 ता'दाद: 1100 कॉपी क़ीमत: 500/– रुपये

प्रकाशन (प्रथम संस्करण) शाबान 1439 हिजरी (अप्रेल 2018 इस्वी)

प्रकाशक

शहरी जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर

सूबाई जमीअ़त अहले हदीस, राजस्थान

सोल डिस्ट्रीब्यूटर: **पोपुलर बुक स्टोर**, जोधपुर 094607-68990

अधिकृत विक्रेता

अलकिताब इन्टरनेशनल जामिया नगर, नई दिल्ली	011-26986973
मकतबा तर्जुमान 4116 उर्दू बाजार, नई दिल्ली	011-23273407
अल हीरा पब्लिकेशन, 423 उर्दू मार्केट, मटिया महल,जामा मस्जिद, दिल्ली	09015382970
मदरसा दारूल उलूम सलफियह मोहल्ला सब्जी फरोश, रतलाम (एम.पी.)	070004-11352 098273-97772
मौलाना शकील मेरठी, **दारूल कुतुब इस्लामिया,**मटिया महल,दिल्ली	09910889357
मकतबा अस्सुन्नह मुम्बई	08097444448
दारूल इल्म नागपाड़ा, मुम्बई	022-23088989 022-23082231
उमरी बुक डिपो, मुम्बई	09819961879
मकतबा अलफहीम मऊनाथ, भंजन, यू.पी.	0547-2222013
मौलाना खुर्शीद मुहम्मदी मिर्जापुर, यू.पी.	09919737053
शैख़ सुहैल सल्फ़ी, मकतबा सलफ़िया वाराणासी	09451915874
तौहीद किताब सेन्टर, सीकर, राजस्थान	08003972503
अल कौसर टेडर्स	09414920119
आई.आई.सी, कच्छ नूरानी होटल के पास, डाण्डा बाजार, भुज, कच्छ (गुजरात)	09429017111
कलीम बुक डिपो सीकर, राजस्थान	07014898515

फेहरिस्ते-मज़ामीन

तफ़सीर इब्ने कसीर जिल्द : 7

तफसीर सूरह साफ्फ़ात	12
फरिश्तों की क़िस्में और क़समें (आ. 1 से 5)	13
सितारे आसमान की ज़ीनत हैं (आ. 6 से 10)	14
शिहाबुन साक़िब का ज़िक्र	15
इंसान की पैदाइश (आ. 11 से 19)	16
क़ियामत के दिन कुफ्फ़ार का वावेला (आ. 20 से 26)	17
काफ़िरों के जहन्नम में तब्क़ात (आ. 27 से 37)	19
कुफ्फ़ार अज़ाब में और मोमिन नेअमतों में होंगे (आ. 38 से 49)	21
अहले जन्नत दुनिया की ज़िन्दगी का ज़िक्र करेंगे (आ. 50 से 61)	24
थूर का दरख्त (आ. 62 से 70)	28
अंजामे ख़ैर नेकों का ही है (आ. 71 से 82)	30
नूह (عليه السلام) और उनकी क़ौम का ज़िक्र	30
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 83 से 87)	32
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का बुतों को तोड़ना (आ. 88 से 98)	33
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का हज़रत इस्माईल (عليه السلام) को ज़िब्ह करना (आ. 99 से 113)	36
हज़रत मूसा (عليه السلام) और हारून (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 114 से 122)	44
हज़रत इल्यास (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 123 से 132)	45
हज़रत लूत (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 133 से 148)	47
ज़िक्रे यूनुस (عليه السلام)	47
मुश्रिक का कहना कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं (नऊज़ुबिल्लाह) (आ. 149 से 160)	50
मुश्रिकों का अंजाम (आ. 161 से 170)	52
अल्लाह का लश्कर हमेशा ग़ालिब रहेगा (आ. 171 से 179)	54
अल्लाह तआला की हम्दो सना और पैग़म्बरों पर सलाम (आ. 180 से 182)	55
तफसीर सूरह साद	57
कुरआन नसीहत है (आ. 1 से 3)	58
नबी (ﷺ) के इंसान होने पर कुफ्फ़ार का ताज्जुब (आ. 4 से 11)	60
अल्लाह तआला की कुदरत का बयान	62
कुफ्फ़ार के मज़ाक़ पर सब्र करो (आ. 12 से 20)	64
हज़रत दाऊद (عليه السلام) पर अल्लाह तआला के एहसानात (आ. 17 से 20)	64
हज़रत दाऊद (عليه السلام) का मशहूर फ़ैसला (आ. 21 से 25)	67
हुक्मरान अल्लाह के हुक्म के पाबन्द (आ. 26)	69
अल्लाह ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई (आ. 27 से 29)	70
हज़रत सुलेमान (عليه السلام) का एक वाक़िया (आ. 30 से 33)	71
हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की आज़माइश और इख्तियारात (आ. 34 से 40)	74
हज़रत अय्यूब (عليه السلام) का ज़िक्र और उनकी बीमारी (आ. 41 से 44)	81
हज़रत इब्राहीम, इस्हाक़ और यअक़ूब (عليهم السلام) का ज़िक्र (आ. 45 से 54)	84
जन्नत की नेअमतें	85
जहन्नम की सख्तियाँ (आ. 55 से 64)	86
नबी (ﷺ) का एक सुहाना ख्वाब	89
आदम (عليه السلام) की पैदाइश का ज़िक्र (आ. 71 से 85)	91
कुरआन नसीहत है (आ. 86 से 88)	92
तफसीर सूरह ज़ुमर	93
अल्लाह मालिक और मअबूद है (आ. 1 से 4)	95
अल्लाह तआला के यहाँ बग़ैर इजाज़त कोई सिफ़ारिश न कर सकेगा	96
अल्लाह तआला की कुदरतों का बयान (आ. 5, 6)	97

अल्लाह सब कुछ जानता है (आ. 7, 8)	99
आलिम और जाहिल बराबर नहीं (आ. 9)	100
सब्र का अज्र बेहिसाब दिया जाएगा (आ. 10 से 16)	102
असल ख़सारा (घाटा)	102
औसाफ़े हमीदा (आ. 17, 18)	103
जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र (आ. 19, 20)	104
पानी अल्लाह की क़ुदरत की निशानी है (आ. 21, 22)	106
अल्लाह तआला के कलाम से मोमिनों के दिल काँप जाते हैं (आ. 23)	107
इंकार करने वालों के लिए सख़्त अज़ाब (आ. 24 से 31)	109
क़ुरआनी मिसालों को बयान करने का मक्सद	110
सब मरकर दोबारा ज़िन्दा होंगे	111
सबसे बड़ा ज़ालिम कौन? (आ. 32 से 35)	113
मोमिनों के लिए अल्लाह ही काफ़ी है (आ. 36 से 40)	114
गुमराह होने वाला अपना ही नुक्सान करता है (आ. 41 से 45)	117
झूठे मअबूदों की हक़ीक़त	118
क़ियामत के दिन इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला (आ. 46 से 48)	119
तंगी व आसानी बतौर आज़माइश है (आ. 49 से 59)	122
अल्लाह तआला की रहमत हर चीज़ पर हावी है	123
तकब्बुर करने वालों का अंजाम (आ. 60, 61)	128
शिर्क हर किसी के आमाल को बर्बाद करता है (आ. 62 से 66)	129
मुश्रिकीन ने अल्लाह तआला का मक़ाम नहीं समझा (आ. 67)	131
क़ियामत की होलनाकियाँ (आ. 68 से 70)	133
नाकाम गिरोह और फ़रिश्तों की बातचीत (आ. 71, 72)	136
जन्नतियों का इस्तिक्बाल (आ. 73, 74)	138
जन्नत के दरवाज़ों की कुशादगी का बयान	140
तफ्सीर सूरह मोमिन	144
अज़ाब व सवाब का मालिक अल्लाह ही है (आ. 1 से 3)	146
हक़ बात में शुब्हात पैदा करना काफ़िरों की आदत है (आ. 4 से 6)	148
फ़रिश्ते मोमिनों के लिए दुआ करते हैं (आ. 7 से 9)	150
गुनहगारों की हालते ज़ार (आ. 10 से 14)	153
दुनिया में दोबारा आने की नाकाम आरज़ू	153
क़ियामत के दिन अल्लाह ही की बादशाही होगी (आ. 15 से 17)	155
आँखों की ख़यानत और सीने के राज़ (आ. 18 से 20)	158
नाफ़र्मान क़ौमों का अंजाम (आ. 21 से 27)	160
मूसा (ﷺ) के क़त्ल का फ़िरऔनी मंसूबा	160
एक गुमनाम मोमिन का मुजाहिदाना इक्दाम (आ. 28, 29)	162
मोमिने कामिल की बातचीत (आ. 30 से 35)	166
फ़िरऔन का मकर व फ़रेब (आ. 36, 37)	167
गुमनाम मोमिन की दूसरी नसीहत (आ. 38 से 46)	169
मुश्रिकों को दावते तौहीद	170
बरज़ख़ व क़ब्र का अज़ाब	171
जहन्नम में दोज़ख़ियों का लड़ाई झगड़ा (आ. 47 से 50)	174
रसूलों का मददगार अल्लाह तआला है (आ. 51 से 56)	176
दावते मुहम्मदिया पूरी दुनिया में फैल गयी	177
इंकारे क़ियामत आख़िर क्यूँ...? (आ. 57 से 60)	179
दुआओं को शर्फ़े क़बूलियत कौन बख़्शता है?	180
अल्लाह तआला की बेशुमार नेअमतों का तज़्किरा (आ. 61 से 65)	182
इंसान की पैदाइश का मरहलेवार ज़िक्र (आ. 66 से 68)	184
अम्बिया (ﷺ) को झुठलाने वालों का इबरतनाक अंजाम (आ. 69 से 76)	185
सब्र करो फ़तह तुम्हारी ही होगी (आ. 77 से 81)	188
अज़ाब देखकर ईमान लाने का क्या फ़ायदा (आ. 82 से 85)	189

तफसीर सूरह हामीम अस्सज्दा	191
कुफ्फ़ारे मक्का का हुज़ूर (ﷺ) को लालच देना (आ. 1 से 5)	192
ज़मीनो आसमान किस तर्तीब से पैदा किये गए (आ. 9 से 12)	198
हक़ से रूगर्दानी का अंजाम (आ. 13 से 24)	203
क़ियामत के दिन जिस्म के हिस्सों का गवाही देना	204
कुरआन को ख़ामोशी से सुनना चाहिए (आ. 25 से 29)	207
इस्तिक़ामत का मअनी व मफ्हूम (आ. 30 से 32)	209
फ़रिश्ते मोमिन को जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं	210
जन्नत के बाज़ार और दीदारे इलाही	211
सबसे अच्छी दावत किसकी है? (आ.33 से 36)	212
दिन रात, चाँद सूरज, उसी ने बनाए (आ. 37 से 39)	215
कुरआन में बातिल की मिलावट नहीं हो सकती (आ. 40 से 43)	217
कुरआन की ज़ुबान अरबी क्यूँ है? (आ. 44, 45)	218
इल्मे ग़ैब (छुपी बातों का इल्म) सिर्फ़ अल्लाह ही के पास है (आ. 47, 48)	220
इंसान की ख़ुदग़र्ज़ी (आ. 49 से 51)	222
कुरआन की हक्क़ानियत का इंकार करने वालों का अंजाम (आ. 52 से 54)	223
तफसीर सूरह शूरा	225
हुरूफ़े मुक़त्तआत के बारे में बहस (आ. 1 से 6)	226
मक्का मुकर्रमा की फ़ज़ीलत और क़ियामत का ज़िक्र (आ. 7, 8)	229
हक़ीक़ी ख़ालिक़ और मअबूद अल्लाह तआला ही है (आ. 9 से 12)	232
तौहीद तमाम अम्बिया (ؑ) की मुश्तरका दावत (आ. 13, 14)	233
दस मुस्तक़िल कलिमे (आ. 15)	235
मुसलमान क़ियामत से डरते रहते हैं(आ. 16 से 18)	236
तमाम मख़्लूक़ का राज़िक़ अल्लाह तआला है (आ. 19 से 22)	238
दुनिया का तालिब और आख़िरत को चाहने वाला	239
क़राबतदारी का मफ्हूम (आ. 23, 24)	241
अहले बैत की फ़ज़ीलत	244
सच्ची तौबा गुनाहोंको मिटा देती है (आ. 25 से 28)	247
मुसीबत व परेशानी गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया है (आ. 29 से 31)	249
दरियाओं में कश्तियों का आना जाना अल्लाह तआला की क़ुदरत की निशानी है (आ. 32 से 35)	251
दुनिया की मज़म्मत (आ. 36 से 39)	252
अहले इल्म से रहनुमाई तलब करो	253
किसी की ईज़ारसानी पर बदला या माफ़ी का ज़िक्र (आ. 40 से 43)	255
जहन्नम को देखकर ज़ालिमों की बदहवासी (आ. 44 से 46)	258
जहन्नम से बचाव की तदबीर (आ. 47, 48)	259
पूरी कायनात का तसर्रुफ़ अल्लाह के इख़्तियार में है (आ. 49 से 50)	261
वही की मुख़्तलिफ़ सूरतें (आ. 51 से 53)	261
तफसीर सूरह ज़ुख़रुफ़	263
कुरआन की नूरानियत और अज़मत (आ. 1 से 8)	264
ख़ालिक़े हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है (आ. 9 से 14)	266
सवार होने की दुआ	267
मुश्रिकों की ख़ुद साख़्ता तक्सीम (आ. 15 से 20)	269
औरत की फ़ित्री कमज़ोरियाँ	270
बाप दादों के अंधे मुक़ल्लिद (आ. 21 से 25)	272
शिर्क का क़ला क़मअ करना सुन्नते इब्राहीमी है (आ. 26 से 35)	274
अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ्लत का नतीजा (आ. 36 से 45)	277
मूसा (ؑ) दलाइल व बराहीन के साथ फ़िरऔन की तरफ़ (आ. 46 से 50)	280
फ़िरऔन का तकब्बुर और सरकशी (आ. 51 से 56)	281
मुश्रिकीन के कौनसे मअबूद जहन्नमी हैं?	284

❀ ग़ैरुल्लाह की दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी में बदल जाएगी (आ. 66 से 73)	288
❀ जहन्नमी मौत की तमन्ना करेंगे (आ. 74 से 80)	291
❀ अल्लाह तआला की सिफ़ाते कामिला और कुफ्फ़ार की हठधर्मी का बयान (आ. 81 से 89)	293
❀ **तफ्सीर सूरह दुख़ान**	297
❀ लैलतुल क़द्र रमज़ान में है न कि शअबान में (आ. 1 से 8)	299
❀ मुश्रिकीने मक्का पर धुएँ का अज़ाब (आ. 9 से 16)	300
❀ क़ियामत का धुआँ	301
❀ नेक आदमी की वफ़ात पर ज़मीन व आसमान रोते हैं (आ. 17 से 33)	305
❀ शहादते हुसैन (रज़ि.) के बारे में मुबालग़ा आराई	308
❀ क़ौमे तुब्बअ का ज़िक्र (आ. 34 से 37)	310
❀ कायनात की तख़्लीक़ बेकार नहीं (आ. 38 से 42)	313
❀ मुंकिरीने क़ियामत की होलनाक सज़ा (आ. 43 से 50)	314
❀ जन्नती ख़ूराक और लिबास (आ. 51 से 59)	316
❀ **तफ्सीर सूरह जासिया**	318
❀ ग़ौर करो तो हर तरफ़ उसकी क़ुदरत नज़र आती है (आ. 1 से 5)	319
❀ अगर क़ुरआन पर नहींतो किस चीज़ पर ईमान लाएँगे? (आ. 6 से 11)	321
❀ तिजारत के ज़रायेअ अल्लाह तआला ने पैदा किये हैं(आ. 12 से 15)	322
❀ बनी इस्राईल पर इन्आमात का ज़िक्र (आ. 16 से 20)	323
❀ दोज़ख़ी और जन्नती हर्गिज़ बराबर नहीं (आ. 21 से 23)	325
❀ फ़ल्सफ़ियों और दहरियों का रद्द (आ. 24 से 26)	326
❀ जिस दिन हश्र बपा होगा (आ. 27 से 29)	328
❀ क़ियामत के दिन सच्चे फ़ैसले होंगे (आ. 30 से 37)	330
❀ **तफ्सीर सूरह अहक़ाफ़**	333
❀ ग़ैरुल्लाह की इबादत का कोई सबूत नहीं है (आ. 1 से 6)	335
❀ फ़र्माने रसूल (ﷺ) मुझे नहीं मालूम कि मेरे साथ क्या किया जाएगा (आ. 7 से 9)	337
❀ सरकशी और तकब्बुर की मज़म्मत (आ. 10 से 14)	340
❀ कम से कम हमल की मुद्दत छः माह हो सकती है (आ. 15, 16)	342
❀ नाफ़र्मान औलाद का वालदेन से रवय्या (आ. 17 से 20)	347
❀ अहक़ाफ़ का मअनी व मतलब (आ. 21 से 25)	350
❀ क़ौमे आद के वाक़िये में इबरत व नसीहत है (आ. 26 से 28)	354
❀ जिन्नात की हक़ीक़त और क़ुरआन सुनना नीज़ हुज़ूर (ﷺ) जिन्नात के भी नबी हैं	355
❀ ज़मीनो आसमान की पैदाइश इंसानी पैदाइश से बड़ी है (आ. 33 से 35)	369
❀ **तफ्सीर सूरह मुहम्मद**	372
❀ कुफ्फ़ार के आमाले ख़ैर बर्बाद हैं (आ. 1 से 3)	373
❀ जिहाद और उसके कुछ अहकाम (आ. 4 से 9)	375
❀ मोमिन एक आंत में खाता है और काफ़िर सात आंतों में (आ. 10 से 13)	379
❀ जन्नत की नहरें और अस्मार (फल) व फ़वाकेह (मावे) (आ. 14, 15)	380
❀ अल्लाह से माफ़ी और चंद मस्नून दुआएँ (आ. 16 से 19)	383
❀ जिहाद से जी चुराने वाले मुनाफ़िक़ (आ. 20 से 23)	386
❀ क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र क्यूँ नहीं करते? (आ. 24 से 28)	389
❀ इंसान का ज़ाहिर बातिन का ग़म्माज़ होता है (आ. 29 से 31)	390
❀ गुमराह होने वाला अपना ही नुक्सान करता है (आ. 32 से 35)	392
❀ दुनिया की बे सबाती और नापायदारी (आ. 36 से 38)	394
❀ **तफ्सीर सूरह फ़तह**	395
❀ सूरह फ़तह का शाने नुज़ूल नीज़ नबी (ﷺ) की इबादत का हाल (आ. 1 से 3)	396
❀ ईमान बढ़ता और घटता है (आ. 4 से 7)	400
❀ सुलह हुदेबिया का वाक़िया अहादीस की रोशनी में (आ. 8 से 10)	401

मुनाफ़िक़ोंके हीले बहाने (आ. 11 से 14)	407
ख़ैबर की ग़नीमत अहले हुदेबिया के लिए (आ. 15)	409
सख़्त जंगजू क़ौम कौनसी है? (आ. 16, 17)	410
हुदेबिया में बबूल का मुबारक दरख़्त (आ. 18, 19)	411
मुआहिदा हुदेबिया की दफ़्आत और काफ़िरोंका इश्तिआल (आ. 20 से 24)	413
शहादते उस्मान (रज़ि.) की अफ़वाह पर अस्हाबे रसूल से बेअते रिज़्वान (आ. 25, 26)	417
नबी (ﷺ) का ख्वाब बमंज़िला वही के होता है (आ. 27, 28)	429
अस्हाबे रसूल (ﷺ) से बुग्ज़ व इनाद कुफ़्र है (आ. 29)	434
तफ्सीर सूरह हुजुरात	437
आदाबे रिसालत का बयान (आ. 1 से 3)	438
आप (ﷺ) के एहतिराम को मल्हूज़ न रखना बेअक्ली है (आ. 4, 5)	442
ख़बर व इत्तलाअ की तहक़ीक़ ज़रूरी है (आ. 6 से 8)	444
बग़ावत कुफ़्र नहीं बाग़ी गिरोह भी मोमिन है (आ. 9, 10)	448
मज़ाक़ और ऐबजोई की मुमानिअत (आ. 11)	451
बदगुमानी और उयूब तलाश करना नीज़ ग़ीबत का मफ्हूम (आ. 12)	452
फ़ज़ीलत और वक़ार का मेअयार तक्वा पर है (आ. 13)	458
ईमान और इस्लाम में फ़र्क़ (आ. 14 से 18)	462
तफ्सीर सूरह क़ाफ़	465
कुरआन पाक की सात मंज़िलों की तफ्सील	466
हर्फ़े क़ाफ़ के बारे में ख़िलाफ़े अक्ल व नक्ल रिवायात (आ. 1 से 5)	468
एक से बढ़कर एक कुदरत के नमूने (आ. 6 से 11)	470
नबियों को झुठलाने वाली क़ौमें तबाह हुईं (आ. 12 से 15)	472
अल्लाह का इल्म व कुदरत इंसान की शहे रग से ज्यादा क़रीब है (आ. 16 से 22)	473
इंसान का निगरान और गवाह फ़रिश्ता (आ. 23 से 29)	477
जहन्नम का अल्लाह से हमकलाम होना (आ. 30 से 35)	479
छः दिन में आसमान व ज़मीन बनाये गए (आ. 36 से 40)	482
अल्लाह के एक हुक्म से क़ियामत आ जाएगी (आ. 41 से 45)	485
तफ्सीर सूरह ज़ारियात	487
सूरह ज़ारियात की शुरु की आयात की ख़ूबसूरत तशरीह (आ. 1 से 14)	488
क़यामुल्लैल और सेहरी की फ़ज़ीलत (आ. 15 से 23)	491
इब्राहीम (عليه السلام) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों का वाक़िया (आ. 24 से 30)	495
हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का फ़रिश्तों से सवाल (आ. 31 से 37)	497
क़ौमे फ़िरऔन का अंजाम (आ. 38 से 46)	499
क़ौमे आद का अंजाम	499
क़ौमे समूद का अंजाम	500
अल्लाह की क़ुदरतें (आ. 47 से 51)	500
रसूलों को झुठलाया गया (आ. 52 से 60)	502
इंसानों और जिन्नों को इबादत के लिए पैदा किया गया	502
तफ्सीर सूरह तूर	504
सूरह का तआरुफ़	505
अल्लाह का अज़ाब बरहक़ है (आ. 1 से 16)	506
बैतुल मअमूर का ज़िक्र	506
अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 17 से 20)	509
अहले ईमान की औलादें (आ. 21 से 28)	511
जन्नत की नेअमतें	512
कुफ्फ़ार पैग़म्बर (ﷺ) को शायर कहते थे (आ. 29 से 43)	515
तौहीदे उलूहियत और रुबूबियत के दलाइल	515
क़ियामत का ज़िक्र (आ. 44 से 49)	517
अल्लाह की तस्बीह	518

तफसीर सूरह नज्म	520
सितारे की क़सम (आ. 1 से 4)	521
हदीसे पैग़म्बर वही है	522
हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) की शान (आ. 5 से 18)	523
मेअराज का ज़िक्र	524
हुज़ूर (ﷺ) ने अल्लाह को नहीं देखा	526
सिदरतुल मुंतहा का ज़िक्र	531
लात, उज़्ज़ा और मनात (बुतों) का ज़िक्र (आ. 19 से 26)	532
ज़ुल्खल्सा बुत का ज़िक्र	534
बेईमान लोगों की बातें (आ. 27 से 32)	536
दुनिया जहान में बादशाहत अल्लाह की है	537
छोटे गुनाह	537
ख़ुद को नेक न कहो	539
दीन से मुँह मोड़ने वाला (आ. 33 से 41)	540
कोई किसी का बोझ न उठाएगा और मसला ईसाले सवाब	541
आख़िरकार अल्लाह के पास ही जाना है (आ. 42 से 55)	543
ज़िन्दगी और मौत का मालिक अल्लाह है	544
हुज़ूर (ﷺ) नज़ीर (डराने वाले) बनकर आये (आ. 56 से 62)	545
क़ुरआन से मुँह न फेरो	546
तफसीर सूरह क़मर	547
क़ियामत क़रीब आ गई है (आ. 1 से 5)	548
अलामाते क़ियामत	550
मैदाने महशर की तरफ़ जाना (आ. 6 से 17)	552
क़ौमे नूह पर अज़ाब	553
क़ौमे आद पर अज़ाब (आ. 18 से 32)	555
क़ौमे समूद पर अज़ाब	556
क़ौमे लूत पर अज़ाब (आ. 33 से 40)	557
क़ौमे फ़िरऔन पर अज़ाब (आ. 41 से 46)	559
काफ़िर शिकस्त खाएँगे	559
अल्लाह ने तक्दीर बनाई (आ. 47 से 55)	560
मसल-ए-तक्दीर में बहस करना	561
किसी गुनाह को छोटा न समझो	563
तफसीर सूरह रहमान	565
अल्लाह की रहमतें (आ. 1 से 13)	567
दरख्त अल्लाह की रहमत	568
आसमान की पैदाइश	568
ज़मीन और फल	568
रब की नेअमतों को न झुठलाना	569
इंसान की और जिन्न की पैदाइश (आ. 14 से 25)	570
दो समुन्द्र	571
लुअ लुअ और मरजान	571
बहरी जहाज़ और कश्तियाँ	572
अल्लाह के सिवा सब कुछ फ़ना होने वाला है (आ. 26 से 30)	572
सब अल्लाह से माँगते हैं	573
जिन्नों और इंसानों को ख़िताब (आ. 31 से 36)	575
आसमान फट जाएगा (आ. 37 से 45)	576
पुल सिरात का ज़िक्र	577
जहन्नम के मुंकिरों का अंजाम	578
अल्लाह का ख़ौफ़ रब का इनआम है (आ. 46 से 53)	579
जन्नत की नेअमतें	580
जन्नत का पानी	580
जन्नतियों के बिस्तर व तख़्त (आ. 54 से 61)	581
हूरों की सिफ़त	582
जन्नत सरसब्ज़ है (आ. 62 से 78)	585
जन्नत के फल	585

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह साफ्फात - 37

आयात : 182 मक्की पैराग्राफ : 5

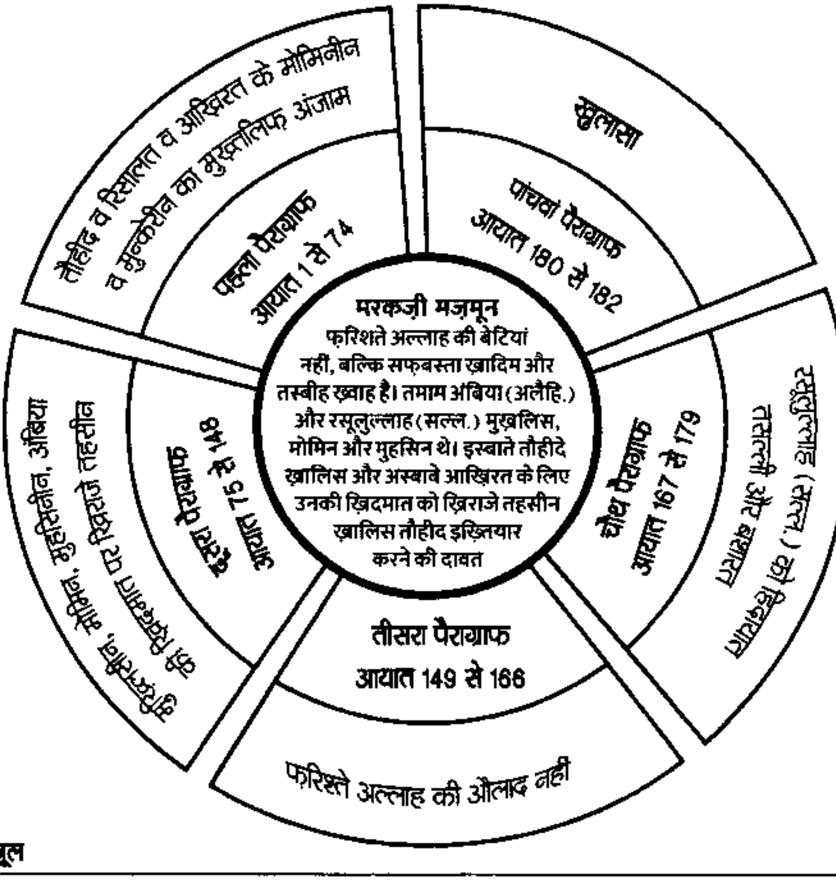

ज़मानए नुज़ूल

सूरह साफ्फात ग़ालिबन रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के तीसरे दौर (6-10 नबवी) के आख़िरी मरहले में नाज़िल हुई। ये वही ज़माना था जब सूरह (फ़ातिर) और सूरह (यासीन) नाज़िल की गई, जब मुश्रिकीने मक्का जो फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां समझते थे, रसूलुल्लाह (सल्ल.) की दावते तौहीद को मुस्तरद करके उनका मज़ाक उड़ा रहे थे। आप को (साहिर) कह रहे थे और ये कहने लगे थे कि एक (शाइरे मजनून) के लिए हम अपने (आलिहा) को कैसे छोड़ सकते हैं। इस मौके पर मुख़्तलिफ़ मुख़लिस मोमिन व मुहसिने अंबिया की तारीख़ से, उन्हें कारे रिसालत और मन्सबे रिसालते मुहम्मदी (सल्ल.) को समझने की दावत दी गई है, ताकि वो भी ख़ालिस तौहीद इख़्तियार कर लें।

तफ़्सीर सूरह साफ़्फ़ात

सुनन नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) हमें हल्की नमाज़ पढ़ने का हुक्म करते थे और आप (ﷺ) हमें सूरह साफ़्फ़ात से नमाज़ पढ़ाते थे।" (नसाई, किताबुल इमामत, बाब अर्रुख़सतुल इमाम फ़ित्तत्वील : 827; और इसकी सनद हसन है; अहमद : 2/26; इब्ने ख़ुज़ैमा : 1606)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ① فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ② فَالتّٰلِيٰتِ ذِكۡرًا ③ اِنَّ اِلٰهَكُمۡ لَوَاحِدٌ

④ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَرَبُّ الۡمَشَارِقِ ⑤

तर्जुमा : "क़सम है सफ़ बाँधने वाले फ़रिश्तों की। (1) फिर पूरी तरह डाँटने वालों की। (2) फिर ज़िक्रुल्लाह की तिलावत करने वालों की। (3) यक़ीनन तुम सबका मअबूद एक ही है। (4) आसमानों, ज़मीनों और उनके बीच की तमाम चीज़ों और मश्रिक़ों का रब तआला वही है।" (5)

फ़रिश्तों की क़िस्में और क़समें (आ. 1 से 5) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "इन तीन क़िस्मों से मुराद फ़रिश्ते हैं।" (तब्री : 21/7) और भी अक्सर हज़रात का यही क़ौल है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "फ़रिश्तों की सफ़ें आसमानों पर हैं।" (तब्री : 21/7) मुस्लिम में है, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "हमें सब लोगों पर तीन बातों में फ़ज़ीलत दी गई है,

हमारी सफ़ें फ़रिश्तों की सफ़ों जैसी की गई हैं,

हमारे लिए सारी ज़मीन मस्जिद बना दी गई है,

और पानी के न मिलने के वक़्त ज़मीन की मिट्टी हमारे लिए वुज़ू के क़ायम मक़ाम की गई है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद व मवाज़िउस्सलात : 522) मुस्लिम वग़ैरह में है कि एक बार आप (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया, "तुम उस तरह सफ़ें नहीं बाँधते जिस तरह फ़रिश्ते अपने रब तआला के सामने सफ़ बस्ता होते हैं।" हमने अर्ज़ किया वह किस तरह? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "अगली सफ़ों को पूरा करते जाते हैं

और सफ़ें बिलकुल मिला लिया करते हैं।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब अल्अम्रु बिस्सुकूनि फ़िस्सलाति वन्नही अनिल इशारति बिल यद... : 430; अबूदाऊद : 661; इब्ने माजा : 992) डाँटने वालों से मुराद सुद्दी (रह.) वग़ैरह के नज़दीक अब्र और बादल को डाँटकर, अहकाम देकर, इधर से उधर ले जाने वाले फ़रिश्ते हैं।

रबीअ बिन अनस (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कुरआन जिस चीज़ से रोकता है वह उसी से बंदिश करते हैं। ज़िक्रुल्लाह की तिलावत करने वाले फ़रिश्ते वह हैं जो अल्लाह तआला के पैग़ाम बन्दों के पास लाते हैं। जैसे फ़र्मान है (فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۝ عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۝) (77/मुर्सलात : 5, 6) यानी वही उतारने वाले फ़रिश्तों की क़सम! जो उज़्र को टालने या आगाह करने के लिए होती है। इन क़समों के बाद जिस चीज़ पर यह क़समें खाई गई थी उसका ज़िक्र हो रहा है कि तुम सबका मअबूद बरहक़ एक अल्लाह तआला ही है। वही आसमान व ज़मीन का और उनके बीच की तमाम चीज़ों का मालिक व मुतसर्रिफ़ है। उसी ने आसमान पर सितारे और चाँद, सूरज को मुसख़्ख़र कर रखा है। जो मश्रिक़ से ज़ाहिर होते हैं, मग़्रिब में ग़ुरूब होते हैं। मश्रिक़ों का ज़िक्र करके मग़्रिबों का ज़िक्र उसकी दलालत मौजूद होने की वजह से छोड़ दिया।

दूसरी आयत में ज़िक्र कर भी दिया है, फ़र्मान है (رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ) (55/रहमान : 17) यानी जाड़े और गर्मियों की, तुलूअ व ग़ुरूब की जगह का रब तआला वही है।

***

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِالْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝ اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝

तर्जुमा : ''हमने आसमाने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से बारौनक़ बना दिया है। (6) और हमने ही उसकी निगहबानी की है हर शरीर शैतान से। (7) आलमे बाला के फ़रिश्तों (की बातों) को सुनने के लिए वह कान भी नहीं लगा सकते बल्कि चारों तरफ़ से उन पर शोले बरसाये जाते हैं। (8) उनके हँकाने के लिए और उनके लिए दाइमी अज़ाब हैं। (9) हाँ! जो कोई एक आध बात उचक ले भागे तो फ़ौरन ही उसके पीछे दहकता हुआ अंगारा लग जाता है।'' (10)

सितारे आसमान की ज़ीनत हैं (आ. 6 से 10) : आसमाने दुनिया को देखने वाली नज़रों में जो ज़ीनत दी गई है उसका बयान फ़र्माया। यह इज़ाफ़त के साथ ही पढ़ा गया है और बदलियत के साथ भी, मअनी दोनों सूरतों

में एक ही हैं। उसके सितारों की, उसके सूरज की रोशनी ज़मीन को जगमगा देती है। जैसे और आयत में है (وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا) (67/मुल्क : 5) हमने आसमाने दुनिया को ज़ीनत दी सितारों के साथ और उन्हें शैतानों के रजम का ज़रिया बनाया और हमने उनके लिए आग के जला देने वाले अज़ाब तैयार कर रखे हैं।

शिहाबुन साक़िब का ज़िक्र : और आयत में है कि हमने आसमान में बुर्ज बनाए और उन्हें देखने वालों की आँखों में खप जाने वाली चीज़ बनाई और हर शैताने रजीम से उसे महफ़ूज़ रखा। जो कोई किसी बात को लेकर उड़ना चाहता है वहीं एक तेज़ शोला उसकी तरफ़ उतरता है और हमने आसमानों की हिफ़ाज़त की, हर सरकश शरीर शैतान से उसका बस नहीं कि फ़रिश्तों की बातें सुने और जब वह यह करता है तो एक शोला लपकता है और उसे जला जाता है। यह आसमानों तक पहुँच ही नहीं सकते। अल्लाह तआला की शरीअत तक़दीर के उमूर की किसी बातचीत को वह सुन ही नहीं सकते। इस बारे की हदीसें हमने आयत (حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ) (34/सबा : 23) की तफ़्सीर में बयान कर दी हैं। जिधर से भी यह आसमान पर चढ़ना चाहते हैं वहीं से उन पर आतिशबारी की जाती है। उन्हें हँकाने पस्त व ज़लील करने रोकने और न आने देने के लिए यह सज़ा बयान की है और आख़िरत के दाइमी अज़ाब अभी बाक़ी हैं जो बड़े अलमनाक, दर्दनाक और हमेशगी वाले होंगे। हाँ! कभी किसी जिन्न ने कोई कलिमा कोई फ़रिश्ते की ज़ुबान से सुन लिया और उसे उसने अपने नीचे वाले से कह दिया और उसने अपने नीचे वाले से वहीं उसके पीछे एक शोला लपकता है कभी तो वह दूसरे को पहुँचाए उससे पहले ही शोला उसे जला डालता है, कभी वह दूसरे के कानों तक पहुँचा देता है। यही वह बातें हैं जो काहिनों के कानों तक शयातीन के ज़रिये पहुँच जाती हैं। साक़िब से मुराद सख़्त तेज़, बहुत ज़्यादा रोशनी देने वाला है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि "शयातीन पहले जाकर आसमानों में बैठते थे और वह़ी (अल्लाह की बातें) सुन लेते थे। उस वक़्त उन पर तारे नहीं टूटते थे। यह वहाँ की वह़ी सुनकर ज़मीन पर आकर एक एक की दस दस करके काहिनों के कानों में फूँकते थे। जब हुज़ूर (ﷺ) को नबुव्वत मिली, फिर शैतानों का आसमान पर जाना मौक़ूफ़ (बन्द) हुआ। अब यह जाते हैं तो इन पर आग के शोले फेंके जाते हैं और इन्हें जला दिया जाता है। इन्होंने उस नौ पैद अम्र की ख़बर जब इब्लीस मलऊन को दी तो उसने कहा कि किसी अहम नए काम की वजह से इस क़द्र एहतियात और हिफ़ाज़त की गई है। चुनाँचे ख़बर लाने वालों की जमाअतें उसने रूए ज़मीन पर फैला दीं। जो जमाअत हिजाज़ की तरफ़ गई उसने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नख़ला की दोनों पहाड़ियों के बीच नमाज़ अदा कर रहे हैं। उसने जाकर इब्लीस को यह ख़बर दी, उसने कहा, बस यही वजह है जो तुम्हारा आसमानों पर जाना मौक़ूफ़ हुआ।" (तब्री : 21/12; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अबू इस्हाक़ मुदल्लस हैं।) इसकी पूरी तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने चाहा तो आयत (وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ) (72/जिन्न : 8) में आएगी।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ⑪
بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ⑫ وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ⑬ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً
يَّسْتَسْخِرُوْنَ ⑭ وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ⑮ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا
وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ⑯ اَوَاٰبَاۗؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ⑰ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ⑱
فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ⑲

तर्जुमा : ''इन काफ़िरों से पूछो तो कि आया इनका पैदा करना ज़्यादा दुश्वार है या जिन्हें हमने पैदा किया है? हमने इंसानों को तो लेसदार मिट्टी से पैदा किया है। (11) बल्कि तू तअज्जुब कर रहा है और यह मस्ख़रापन कर रहे हैं। (12) और जब इन्हें नसीहत की जाती है यह नहीं मानते। (13) और जब किसी मोजिज़े को देखते हैं तो मज़ाक़ उड़ाते हैं। (14) और कहते हैं कि यह तो बिलकुल खुल्लम खुल्ला जादू है। (15) क्या जब हम मर जाएँगे और ख़ाक और हड्डी हो जाएँगे फिर क्या सचमुच हम ज़िन्दा किये जाएँगे? (16) या हमसे पहले के हमारे बाप दादा भी। (17) तू जवाब दे कि हाँ! हाँ! और तुम ज़लील होओगे। (18) वह तो सिर्फ़ एक ज़ोर का नारा है कि यकायक यह देखने लगेंगे।'' (19)

इंसान की पैदाइश (आ. 11 से 19) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म देता है कि इन मुंकिरीने क़ियामत से पूछो तो कि तुम्हारा पैदा करना हम पर मुश्किल है या आसमान व ज़मीन, फ़रिश्ते, जिन्न वग़ैरह का? इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत (अम्मन अ़ददना) है। (तब्री : 21/19) मतलब यह है कि इसका इक़रार तो इन्हें भी है कि फिर मरकर जीने का इंकार क्यूँ कर रहे हैं? चुनाँचे और आयत में है कि इंसानों की पैदाइश से तो बहुत बड़ी और बहुत भारी पैदाइश आसमान व ज़मीन की है लेकिन अक्सर लोग बेअमली बरतते हैं। फिर इंसान की पैदाइश कमज़ोरी बयान करता है कि चिकनी मिट्टी से पैदा किया गया है जिसमें लेस था और जो हाथों को चिपकती थी। तो चूँकि हक़ीक़त को पहुँच गया है, उनके इंकार पर ताज्जुब कर रहा है। क्यों कि अल्लाह तआला की कुदरतें तेरे सामने हैं और उसके फ़र्मान भी। लेकिन यह तो उसे सुनकर हँसी उड़ाते हैं और जब कभी कोई वाज़ेह दलील सामने आ जाती है तो मसख़रापन करने लगते हैं और कहते हैं कि यह तो जादू है हम किसी तरह इसे नहीं मानने के, कि मरकर, मिट्टी होकर, फिर जी उठें बल्कि हमारे बाप दादा भी

दूसरी ज़िन्दगी में आ जाएँ, हम तो इसके क़ाइल नहीं। ऐ नबी (ﷺ)! तुम इनसे कह दो कि हाँ! तुम यक़ीनन दोबारा पैदा किये जाओगे। तुम हो क्या चीज़? अल्लाह तआला की क़ुदरत और मशिय्यत के मातहत हो। उसकी वह ज़ात है कि किसी की उसके सामने कोई हस्ती नहीं। फ़र्माता है (كُلٌّ أَتَوْهُ دَاخِرِينَ) (27/नम्ल : 87) हर शख़्स उसके सामने आजिज़ी और लाचारी से हाज़िर होने वाला है। एक आयत में है (إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ) (40/मोमिन : 60) मेरी इबादत से सरकशी करने वाले ज़लीलो ख़्वार होकर जहन्नम में जाएँगे। फिर अल्लाह तआला बयान करता है कि जिसे तुम मुश्किल समझते हो वह मुझ पर तो बिलकुल आसान है। सिर्फ़ एक आवाज़ लगते ही हर एक ज़मीन से निकलकर दहशतनाकी के साथ अहवाल व अहवाले क़ियामत को देखने लगेगा, वल्लाहु आलम!

***

وَقَالُوا يَاوَيْلَنَا هَٰذَا يَوْمُ الدِّينِ ۞ هَٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ۞
احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۞ مِن دُونِ اللَّهِ
فَاهْدُوهُمْ إِلَىٰ صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۞ وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ ۞ مَا لَكُمْ لَا
تَنَاصَرُونَ ۞ بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ۞

तर्जुमा : ''और कहेंगे कि हाय हमारी ख़राबी यही जज़ा सज़ा का दिन है। (20) यही फ़ैसला का दिन है, जिसे तुम झुठलाते रहे। (21) ज़ालिमों को और उनके हमराहियों को और जिन जिनकी वह अल्लाह तआला के सिवा पूजा करते थे (22) उन सबको जमा करके उन्हें दोज़ख़ की राह दिखा दो। (23) और उन्हें ठहरा लो इसलिए कि उनसे ज़रूरी सवाल किये जाने वाले हैं। (24) क्या वजह है कि इस वक़्त वह एक दूसरों की मदद नहीं करते? (25) बल्कि वह सबके सब आज फ़र्मांबरदार बन गए।'' (26)

क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार का वावेला (आ. 20 से 26) : क़ियामत के दिन कुफ़्फ़ार का अपने आपको मलामत करना और पछताना और अफ़सोस व हसरत करना बयान हो रहा है कि वह नादिम होकर क़ियामत के दहशतनाक और दहशत अंगेज़ उमूर को देखकर कहेंगे कि हाय हाय! यही तो जज़ा का दिन है। तो मोमिन और फ़रिश्ते बतौर डाँट डपट और नदामत बढ़ाने के उनसे कहेंगे हाँ! यही तो वह फ़ैसले का दिन है जिसे तुम सच्चा नहीं मानते थे। इस दिन अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि ज़ालिमों को, इनके जोड़ों

को, इनके भाई बंदों को और इन जैसों को एक जगह जमा करो। मस्लन ज़ानी ज़ानियों के साथ, सूदख़ोर सूदख़ोरों के साथ, शराबी शराबियों के साथ वग़ैरह। एक क़ौल यह भी है कि ज़ालिमों को और उनकी औरतों को, लेकिन यह ग़रीब है। ठीक मतलब यही है कि उन ही जैसों को और उनके साथ ही जिन बुतों को और जिन जिनको अल्लाह का शरीक यह मुक़र्रर किये हुए थे। सबको जमा करो फिर उन सबको जहन्नम का रास्ता दिखा दो। जैसे फ़र्मान है (وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ) (17/इस्रा : 97) यानी उन्हें उनके मुँह के बल अँधे बहरे गूँगे करके हम जमा करें गे, फिर उनका ठिकाना जहन्नम होगा, जिसकी आग जब कभी हल्की हो जाए हम उसे और भड़का देंगे'' और उन्हें जहन्नम के पास कुछ देर ठहरा दो ताकि हम उनसे पूछगछ कर लें। उनसे हिसाब ले लें। इब्ने अबी हातिम में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं जो शख़्स किसी को किसी चीज़ की तरफ़ बुलाए वह क़ियामत के दिन उसी के साथ खड़ा किया जाएगा, न बेवफ़ाई होगी, न जुदाई होगी, गो एक को ही बुलाया हो। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिस्साफ़्फ़ात : 3228; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में लेस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ (अत्तक़रीब : 2/138) और बशीर बिन दीनार मज्हूल रावी है।) हज़रत उस्मान बिन ज़ाइदा (रह.) फ़र्माते हैं कि सबसे पहले इंसान से उसके साथियों की बाबत सवाल किया जाएगा। फिर उनसे पूछा जाएगा कि क्यूँ आज एक दूसरे की मदद नहीं करते? तुम दुनिया में कहते फिरते थे कि हम सब एक साथ हैं और एक दूसरे के मददगार हैं। यह तो कहाँ! आज तो यह हथियार डाल चुके, अल्लाह तआला के फ़र्मांबरदार बन गए, न अल्लाह तआला के किसी फ़र्मान का ख़िलाफ़ करें, न कर सकें, न उससे बच सकें, न वहाँ से भाग सकें, वल्लाहु आलम!

***

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۝٢٧ قَالُوا إِنَّكُمْ كُنتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ
۝٢٨ قَالُوا بَل لَّمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝٢٩ وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُم مِّن سُلْطَانٍ ۖ بَلْ كُنتُمْ
قَوْمًا طَاغِينَ ۝٣٠ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّا لَذَائِقُونَ ۝٣١ فَأَغْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا
غَاوِينَ ۝٣٢ فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۝٣٣ إِنَّا كَذَٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ
۝٣٤ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ۝٣٥ وَيَقُولُونَ أَئِنَّا
لَتَارِكُوا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُونٍ ۝٣٦ بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِينَ ۝٣٧

तर्जुमा : "वह एक दूसरे की तरफ़ मुख़ातब होकर सवाल व जवाब करने लगेंगे। (27) कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दाईं जानिब से आए थे। (28) वह जवाब देंगे कि नहीं! बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे। (29) और कुछ हमारा ज़ोर तो तुम पर था (ही) नहीं। बल्कि तुम ख़ुद सरकश लोग थे। (30) अब तो हम सब पर हमारे रब तआ़ला की यह बात साबित हो चुकी, कि हम अ़ज़ाब चखने वाले हैं। (31) हमने तुम्हें गुमराह किया हम तो ख़ुद भी गुमराह ही थे। (32) अब आज के दिन तो यह सबके सब अ़ज़ाब में शरीक हैं। (33) हम गुनहगारों के साथ इसी तरह किया करते हैं। (34) यह वह लोग हैं कि जब इनसे कहा जाता है कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं, तो यह सरकशी करते थे।(35) और कहते थे कि क्या हम अपने मअ़बूदों को एक दीवाने शायर की बात पर छोड़ देने वाले हैं? (36) नहीं! नहीं! बल्कि नबी (ﷺ) तो सच्चा दीन लाये हैं और सब रसूलों को सच्चा जानते हैं।" (37)

काफ़िरों के जहन्नम में तब्क़ात (आ. 27 से 37) : काफ़िर लोग जिस तरह जहन्नम के तब्क़ों में जलते हुए आपस में झगड़े करेंगे उसी तरह क़ियामत के मैदान में वह एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाएँगे। कमज़ोर लोग ज़ोरावरों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेअ फ़र्मान थे क्या आज हमें तुम थोड़े बहुत अ़ज़ाबों से बचा लोगे? वह कहेंगे कि हम तो ख़ुद तुम्हारे साथ ही इसी जहन्नम में जल रहे हैं। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के बीच फ़ैसले कर चुका। और जैसे और जगह इनकी यह बातचीत इस तरह नक़्ल की गयी है कि ज़ईफ़ लोग मुतकब्बिरों से कहेंगे, अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान ले आते। वह जवाब देंगे कि क्या हमने तुमको हिदायत से रोक दिया? नहीं! बल्कि तुम ख़ुद ही बदकार थे। यह कहेंगे बल्कि दिन रात का मकर था जबकि तुम हमें हुक्म करते थे कि हम अल्लाह तआ़ला के साथ कुफ़्र करें और उसके शरीक मुक़र्रर करें। अ़ज़ाब को देखते ही यह सबके सब बेतरह नादिम व पशेमान होंगे, लेकिन अपनी नदामत को छुपायेंगे। इन तमाम कुफ़्फ़ार की गर्दनों में तौक़ डाल दिये जाएँगे।

हाँ! यह यक़ीनी बात है कि हर एक को सिर्फ़ उसकी करनी भरनी पड़ेगी। पस यहाँ भी यही बयान हो रहा है कि वह अपने बड़ों और सरदारों से कहेंगे कि तुम हमारी दाहिनी जानिब से आते थे। यानी चूँकि हम कमज़ोर कम हैसियत थे हम पर तर्जीह थी, इसलिए तुम हमें दबा दबोकर हक़ से नाहक़ की तरफ़ फेर देते थे। यह काफ़िरों का कलाम होगा, जो वह शैतानों से कहेंगे। यह भी कहा गया है कि इंसान यह बात जिन्नात से कहेंगे कि तुम हमें भलाई से रोक कर बुराई पर आमादा करते थे, गुनाह को मुज़य्यन और शीरीं दिखाते थे, और नेकी को बुरी और मुश्किल जताते थे, हक़ से रोकते थे और बातिल पर जमा देते थे, जब कभी नेकी का ख़्याल हमारे दिल में आता था तो तुम किसी न किसी फ़रेब से उससे रोक देते थे। इस्लाम ईमान व ख़ूबी, नेकी और सआदतमंदी से तुमने हमें महरूम कर दिया। तौहीद से दूर डाल दिया। हम तुम्हें अपना ख़ैरख़्वाह समझते रहे, राज़दार बनाए रहे, तुम्हारी बातें मानते रहे और तुम्हें भला आदमी समझते रहे। उसके जवाब में जिन्नात और

इंसान जितने भी सरदार ज़ी इज़्ज़त (इज़्ज़त वाले) और बड़े लोग थे। उन कमज़ोरों को जवाब देंगे कि इसमें हमारा तो कोई क़सूर नहीं, तुम ख़ुद ही ऐसे ही थे, तुम्हारे दिल ईमान से भागते थे और कुफ़्र की तरफ़ दौड़कर जाते थे। हमने तुम्हें जिस चीज़ की तरफ़ बुलाया वह कोई हक़ बात न थी, न उसकी भलाई पर कोई दलील थी लेकिन चूँकि तुम तिब्अन (स्वाभाविक) बुराई की तरफ़ माइल थे ख़ुद तुम्हारे दिलों में सरकशी और बुराई थी इसलिए तुमने हमारा कहा मान लिया। अब तो हम सब पर अल्लाह तआला का क़ौल साबित आ गया कि हम यक़ीनन अज़ाबों का मज़ा चखने वाले हैं। यह बड़े लोग छोटों से यह मत्बूअ लोग अपने ताबेदारों से कहेंगे कि हम तो ख़ुद ही बहके हुए थे, हमने तुम्हें भी अपनी ज़िलालत की तरफ़ बुलाया तुम दौड़े हुए आ गये। बतलाओ इसमें हमारा क्या क़सूर है? हमने तुम पर कोई ज़ुल्म व जबर तो नहीं किया? क्यूँ तुमने हमारी बात मान ली? अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है, पस आज के दन यह सब लोग जहन्नम के अज़ाबों में शरीक हैं, हर एक अपने अपने आमाल की सज़ा भुगत रहा है। मुज्रिमों के साथ हम इसी तरह किया करते हैं।

यह मोमिनों की तरह अल्लाह तआला की तौहीद के क़ाइल न थे बल्कि तौहीद की आवाज़ से तकब्बुर व नफ़रत करते थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "मुझे हुक्म दिया गया है कि लोगों से जिहाद करो, जब तक कि वह ला इलाहा इल्लल्लाह न कह लें। जो इसे कह ले उसने अपना माल और अपनी जान बचा ली मगर इस्लामी फ़र्मान से, और उसका बातिनी हिसाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे है।" (इसकी अस़ल स़हीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब दुआउन्नबी (ﷺ) वन्नुबुव्वा : 2946 और स़हीह़ मुस्लिम 21 में मौजूद है।) अल्लाह तआला की किताब में भी यही मज़्मून है और एक मुतकब्बिर क़ौम का ज़िक्र है कि वह इस कलिमे से रूगर्दानी करते थे।

इब्ने अबी ह़ातिम में अबुल अलाअ (रह़.) से मरवी है कि यहूदियों को क़ियामत के दिन लाया जाएगा और उनसे सवाल होगा कि तुम दुनिया में किसकी इ़बादत करते थे? वह कहेंगे कि अल्लाह तआला की और उ़ज़ेर (ﷺ) की। उनसे कहा जाएगा, अच्छा! बाईं तरफ़ आओ। फिर नस़रानियों से यही सवाल होगा, वह कहेंगे, अल्लाह तआला की और मसीह़ (ﷺ) की तो उनसे भी यही कहा जाएगा। फिर मुश्रिकीन को लाया जाएगा और उनसे ला इलाहा इल्लल्लाह कहा जाएगा, वह तकब्बुर करेंगे, तीन बार ऐसा ही होगा। फिर हुक्म होगा कि इन्हें भी बाईं जानिब ले चलो। फ़रिश्ते उन्हें परिन्दों से भी जल्दी पहुँचा देंगे, फिर मुसलमान को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा कि तुम किसकी इ़बादत करते रहे? यह कहेंगे, सिर्फ़ अल्लाह तआला की तो उनसे कहा जाएगा कि क्या तुम उसे देखकर पहचान लोगे? यह कहेंगे कि, हाँ! पूछा जाएगा तुम कैसे पहचान सकोगे? ह़ालाँकि तुमने कभी उसे देखा नहीं। यह जवाब देंगे कि हाँ! यह तो ठीक है हम जानते हैं कि उसके बराबर का कोई नहीं। पस अल्लाह तआला उन्हें अपनी पहचान करा देगा और उनको नजात देगा। मुश्रिकीन कलिम-ए-तौह़ीद और रद्दे शिर्क सुनकर जवाब देते थे कि क्या इस शायर व मज्नून के कहने से हम अपने मअ़बूदों से दस्तबरदार हो जाएँगे? मानना तो एक तरफ़ उल्टे रसूल (ﷺ) को शायर और दीवाना बताते थे। पस अल्लाह तआला उनकी तक्ज़ीब करता है और उनकी तर्दीद में फ़र्माता है कि यह तो बिलकुल सच्चे हैं,

सच लेकर आए हैं, सारी शरीअ़त सरासर हक़ है, ख़बरें हों तब और अह़काम हों तब। यह रसूलों को भी सच्चा जानते हैं, उन रसूलों ने जो सिफ़तें और पाकीज़गियाँ आपकी बयान की थीं उनके सही मिस्दाक़ आप ही हैं। यह भी वही अह़काम बयान करते हैं जो अगले अम्बिया (ﷺ) ने किये। जैसे और आयत में है (مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ) (41/फ़ुस्सिलत : 43) यानी तुझसे वही कहा जाता है जो तुझसे पहले के नबियों से कहा जाता रहा।

***

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٩﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٤٠﴾ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۖ وَهُم مُّكْرَمُونَ ﴿٤٢﴾ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٣﴾ عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ ﴿٤٧﴾ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٨﴾ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन तुम दर्दनाक अज़ाबों के मज़े चखने वाले हो। (38) तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (39) मगर अल्लाह तआ़ला के ख़ालिस़ बरगुज़ीदा बन्दे। (40) उन्हीं के लिए मुक़र्ररा रोज़ी है। (41) मेवे हर तरह के और वह इज़्ज़त वाले व इकराम वाले हैं। (42) नेअ़मतों वाली जन्नतों में। (43) तख़्तों पर एक दूसरे के सामने बैठे होंगे। (44) जारी शराब के जाम का उन पर दौर चल रहा होगा। (45) जो सफ़ेद और पीने में लज़ीज़ होगी। (46) न इससे दर्दे सर हो और न उसके पीने से बहकें। (47) और उनके पास नीची नज़रों वाली बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें होंगी। (48) ऐसी जैसे छुपाये हुए मोती।" (49)

कुफ़्फ़ार अ़ज़ाब में और मोमिन नेअ़मतों में होंगे (आ. 38 से 49) : अल्लाह तआ़ला तमाम लोगों से ख़िताब करके फ़र्मा रहा है कि तुम अलमनाक अ़ज़ाब चखने वाले हो और सिर्फ़ उसी का बदला दिये जाने वाले हो जिसे तुमने किया धरा है। फिर अपने मुख़्लिस़ बन्दों को उससे अलग कर लेता है जैसे (वल्अ़स्रि....) में फ़र्माया कि तमाम इंसान घाटे में हैं मगर ईमान वाले, नेक आ़माल और सूरह (वत्तीन) में फ़र्माया हमने इंसान को बहुत अच्छी पैदाइश में पैदा किया है फिर उसे नीचों से भी नीचा कर दिया, मगर जो ईमान लाए और

जिन्होंने नेक आमाल किये। और सूरह मरयम में फ़र्माया (وَإِن مِّنكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا) (19/मरयम : 71) (आख़िर आयत तक) तुम में से हर एक जहन्नम पर वारिद होने वाला है यह तो तेरे रब्बे तआला ने फ़ैसला कर दिया है और यह ज़रूरी चीज़ है लेकिन फिर हम मुत्तक़ियों को नजात देंगे और ज़ालिमों को गिरे पड़े छोड़ देंगे। सूरह मुद्दस्सिर में इर्शाद हुआ है (कुल्लु नफ़्सिन...) हर शख़्स अपने अपने आमाल में मशग़ूल है। मगर वह जिनके दाहिने हाथ में नामा-ए-आमाल आ चुका है, इसी तरह यहाँ पर भी अपने ख़ास बन्दों को अलग कर लिया कि वह अलमनाक अज़ाबों से, हिसाब के शदीद मसाइब (सख़्त तक़लीफ़ों) से अलग हैं। बल्कि इनकी बुराइयों से दरगुज़र कर लिया गया है और इनकी नेकियाँ बढ़ा चढ़ाकर एक की दस दस गुना करके बल्कि सात सात सौ गुना करके बल्कि उससे भी बहुत ज़्यादा बढ़ा चढ़ाकर उन्हें दी गईं हैं। इनके लिए मुक़र्ररा रोज़ी है और वह क़िस्म क़िस्म के मेवाजात से पुर है। वह मह्ज़ूम हैं, ज़ी इज़्ज़त हैं, ज़ी इकराम हैं, हाथों हाथ लिए जाते हैं, बड़ी आवभगत होती है, बड़ा अदब लिहाज़ रखा जाता है, यह नेअमतों से पुर जन्नतों में हैं, वहाँ के तख़्तों पर इस तरह बैठे हैं कि किसी की पीठ किसी की तरफ़ नहीं।

एक मरफ़ूअ ग़रीब हदीस में भी है कि इस आयत की तिलावत करके आपने फ़र्माया, ''हर एक की निगाहें दूसरे के चेहरे पर पड़ेंगी आमने सामने बैठे हुए होंगे। (इसकी सनद में यह्या बिन मअन और इब्राहीम क़ुरशी मज्हूल रावी हैं। देखिए (अल्मीज़ान : 1/76; रक़म : 263, 4/410; रक़म 9636) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) उस शराब के दौर उन पर चल रहे होंगे, जो जारी रहेंगे। जिसके ख़त्म हो जाने और कम हो जाने का मुत्लक़ अंदेशा नहीं।'' जो ज़ाहिर बातिन में आरास्ता है, ख़ूबियाँ हैं बुराइयाँ नहीं, रंग की सफ़ेद, मज़े की बहुत अच्छी लज़ीज़। न उसके पीने से दर्दे सर हो, न सकर व मस्ती तारी हो, न हर्ज़ा सराई करे। दुनिया की शराब में यह नुक़्सान और ख़राबी है कि दर्दे शिकम, दर्दे सिर, बेहोशी और बदहवासी वग़ैरह तारी हो जाती है। लेकिन जन्नत की शराब में उनमें से एक बुराई भी मौजूद नहीं रही। देखने में ख़ुशरंग, पीने में लज़ीज़, फ़वाइद में आला, सुरूर व कैफ़ में उम्दा लेकिन अक़्लो फ़हम को मुअत्तल कर देने वाली और बदमस्त बना देने वाली नहीं, न बदबूदार न बदरंग, न क़ाबिले नफ़रत बल्कि ख़ुश्बूदार, ख़ुश रंग, ख़ुश ज़ायक़ा और फ़ायदेमंद। उसके पीने से पेट में दर्द नहीं होता और उसकी कसरत नुक़्सानदायक नहीं, ख़िलाफ़े तबीयत नहीं, सर भारी नहीं हो जाता, चक्कर नहीं आते, गिरानी महसूस नहीं होती, होश व हवास जाते नहीं रहते, कोई ईज़ा, तक्लीफ़, उल्टी मतली नहीं होती।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''शराब में चार बुराइयाँ हैं। 1. नशा, 2. दर्दे सिर, 3. उल्टी और 4. पेशाब। मगर जन्नत की शराब इन तमाम बुराइयों से पाक है'' देख लो सूरह साफ़्फ़ात। उनके पास नीची निगाहों वाली, शर्मीली नज़रों वाली, पाकदामन अफ़ीफ़ा हूरें होंगी। जिनकी नज़र ऊपर शौहरों के चेहरे के सिवा कभी किसी के चेहरे पर नहीं पड़ती और न पड़ेगी। बड़ी बड़ी, मोटी मोटी, रसीली आँखें हैं, हुस्ने सूरत, हुस्ने सीरत दोनों चीज़ें उनमें मौजूद हैं। जिस तरह ज़ुलेख़ा ने हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) में यह दोनों ख़ूबियाँ देखीं। औरतों ने जब उन्हें तअने देने शुरू किये तो एक दिन सबको बुलाकर बैठा लिया और हज़रत यूसुफ़

(ﷺ) का पूरी तरह बनाव सिंगार कराकर बुलाया तमाम औरतों की नज़रें उनके जमाल को देखकर ख़ीरा (हैरान) हो गईं और बेसाख़्ता उनके मुँह से निकल गया कि "यह तो फ़रिश्ता हैं" ज़ुलेख़ा ने कहा, "यही वह शख़्स है कि जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थी, अल्लाह की क़सम! मैंने इसको हर चंद अपनी तरफ़ माइल करना चाहा लेकिन यह पाकदामन ही रहा। यह जमाले ज़ाहिरी के साथ हुस्ने बातिनी भी रखता है, बड़ा पाकबाज़, अमीन, पारसा, मुत्तक़ी, और परहेज़गार है।" इसी तरह हूरें हैं कि जमाले ज़ाहिरी के साथ ही बातिनी ख़ूबी भी अपने अंदर रखती हैं फिर उनका मज़ीद हुस्न बयान हो रहा है कि उनका गोरा गोरा पिण्डा (बदन) और भभूका सा रंग ऐसा चमकदार, दिलकश और जाज़िबे नज़र है कि गोया महफ़ूज़ मोती जिस तक किसी का हाथ न पहुँचा हो, जो सीप से न निकला हो, जिसे ज़माने की हवा न लगी हो, जो अपनी आबदारी में बेमिस्ल हो। ऐसे ही उनके अछूते जिस्म हैं। यह भी कहा गया है कि गोया वह अण्डे की तरह हैं अण्डे के ऊपर के छिल्के के नीचे अछूत छिल्के जैसे उनके बदन हैं।

एक हदीस में हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के सवाल पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "हूरे ईन" से मुराद बहुत बड़ी आँखों वाली, स्याह पलकों वाली हूरें हैं। फिर पूछा "बैज़ुम् मक्नून" से क्या मुराद है? फ़र्माया अण्डे के अंदर की सफ़ेद झिल्ली।" (तब्री : 21/44) इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जब लोग क़ब्रों से उठाए जाएँगे तो सबसे पहले मैं खड़ा किया जाऊँगा और जबकि वह जनाब बारी तआला में पेश होंगे तो मैं उनका ख़तीब बनूँगा और जब वह ग़मगीन हो रहे होंगे तो मैं उन्हें ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला होऊँगा और उनका सिफ़ारिशी बनूँगा। जबकि यह रोके हुए होंगे, हम्द का झण्डा उस दिन मेरे हाथ में होगा। हज़रत आदम (ﷺ) की औलाद में सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के यहाँ इकराम व इज़्ज़त वाला मैं हूँ। यह मैं बतौरे फ़ख़्र के नहीं कह रहा। मेरे आगे पीछे क़ियामत के दिन एक हज़ार ख़ादिम घूम रहे होंगे जो मिस्ल छुपे हुए अण्डों या अछूत मोतियों के होंगे।" (इसकी सनद में लेस बिन अबी सुलैम मुख़्तलत रावी है (अत्तक़रीब : 2/138) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) वल्लाहु आलम!

***

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥١﴾
يَقُولُ أَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٢﴾ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا
لَمَدِينُونَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ أَنتُم مُّطَّلِعُونَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ فَرَآهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ
تَاللَّهِ إِن كِدتَّ لَتُرْدِينِ ﴿٥٦﴾ وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٥٧﴾ أَفَمَا

نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

तर्जुमा : "एक दूसरे की तरफ़ रुख़ करके पूछेंगे (50) उनमें से एक कहेगा कि मेरा एक हमनशीन था। (51) जो मुझसे कहा करता था कि क्या तू क़ियामत के आने का यक़ीन करने वालों में से है? (52) क्या जबकि हम मरकर मिट्टी और हड्डी हो जाएँगे क्या उस वक़्त हम दोबारा ज़िन्दा किये जाने वाले हैं? (53) कहेगा तुम चाहते हो कि झाँककर देख लो? (54) झाँकते ही उसे तू बीचो बीच जहन्नम में जलता हुआ देखेगा (55) कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे भी बर्बाद कर देता। (56) अगर मेरे रब तआला का एहसान न होता तो मैं भी दोज़ख़ में हाज़िर किया गया होता। (57) क्या यह सही है कि हम मरने वाले ही नहीं? (58) सिवाय पहली एक मौत के और न हम अ़ज़ाब किये जाने वाले हैं? (59) फिर तो ज़ाहिर बात यह है कि यह बड़ी कामयाबी है। (60) ऐसी कामयाबी के लिए अ़मल करने वालों को अ़मल करना चाहिए।" (61)

अहले जन्नत दुनिया की ज़िन्दगी का ज़िक्र करेंगे (आ. 50 से 61) : जब जन्नती लोग मज़े उड़ाते हुए बेफ़िक्री और फ़ारिग़ुल बाली के साथ जन्नत के बुलंद व बाला, बालाख़ानों में ऐशो इशरत के साथ आपस में मिल जुलकर तख़्तों पर तकिये लगाए हुए बैठे होंगे। हज़ारों हसीन जमील ख़ादिम सलीक़ा शआरी से कमर बस्ता ख़िदमत में लगे हुए होंगे, हुक्म अहकाम दे रहे होंगे, क़िस्म क़िस्म के खाने पीने, पहनने, ओढ़ने और तरह तरह की लज़्ज़तों से फ़ायदेमंदी हासिल करने में मसरूफ़ होंगे, पाकीज़ा शराब का दौर चल रहा होगा। वहाँ बातों ही बातों में यह ज़िक्र निकल आएगा कि दुनिया में क्या क्या हाल गुज़रे, कैसे कैसे दिन कटे? इस पर एक शख़्स कहेगा, मेरी सुनो! मेरा शैतान एक मुश्रिक साथी था जो मुझसे अक्सर कहा करता था कि ताज्जुब है तू उस बात को मानता है कि जब हम मरकर मिट्टी में मिलकर, मिट्टी हो जाएँगे, हम खोखली, बोसीदा, सड़ी गली हड्डी हो जाएँगे, उसके बाद भी हम हिसाबो किताब, जज़ा व सज़ा के लिए उठाये जाएँगे। मुझे वह शख़्स जन्नत में तो नज़र आता नहीं, कुछ अजब नहीं कि वह जहन्नम में गया हो, अगर चाहो तो मेरे साथ चलकर झाँक कर देख लो कि जहन्नम में उसकी क्या दुर्गत हो रही है? अब जो झाँकते हैं तो देखते हैं कि वह शख़्स सरतापा जल रहा है, ख़ुद वह आग बन रहा है, बीच जहन्नम में खड़ा है और बेबसी के साथ फुक रहा है और एक उसे ही क्या देखेगा बल्कि उसको नज़र आएगा कि तमाम बड़े बड़े लोगों से जहन्नम भरी पड़ी है। कअ़ब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि जन्नत से जन्नती लोग जब भी किसी जहन्नमी को देखना चाहें देख सकते हैं, वह अपने दुश्मनों को जलते झुलसते देखकर ख़ुश होकर शुक्रे इलाही करते हैं। जन्नती उसे देखते ही कहेगा कि हज़रत!

आपने तो वह फंदा डाला था कि मुझे तबाह ही कर डालते, लेकिन अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने तुम्हारे पंजे से मुझे छुड़ा दिया। अगर अल्लाह का फ़ज़्लो करम मेरे शामिले हाल न होता तो बड़ी बुरी बनती और मैं भी तेरे साथ खचाखच यही जहन्नम में आ जाता और जलता रहता। अल्लाह तआला का शुक्र है कि उसने तेरी तेज़ कलामी और चर्ब जुबानी से मुझे आफ़ियत में रखा और तेरे असर से मुझे महफ़ूज़ रखा। तूने चालबाज़ी में कोई कमी बाक़ी नहीं रखी थी। अब मोमिन एक बात और कहता है जिसमें उसकी अपनी तस्कीन और कामयाबी की ख़बर है कि वह पहली मौत तो मर चुका अब दारुल ख़ुल्द में है, न यहाँ उस पर मौत है न डर, न अज़ाब है, न वबाल, और यही बेहतरीन कामयाबी और फ़लाहे अबदी है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "जन्नतियों से कहा जाएगा कि अपने आमाल के बदले में ख़ूब मज़े से खाओ पियो। इसमें इशारा है उस अम्र की तरफ़ की जन्नती जन्नत में मरेंगे नहीं, तो वह यह सुनकर सवाल करेंगे कि क्या अब हमें मौत तो नहीं आएगी? किसी वक़्त अज़ाब तो नहीं होगा, तो जवाब मिलेगा नहीं! हर्गिज़ नहीं! चूँकि उन्हें खटका था कि मौत आकर यह लज़्ज़तें फ़ौत न कर दे। जब यह अंदेशा जाता रहा तो वह सुकून का साँस लेकर कहेंगे। शुक्र है यह तो खुली कामयाबी है और बड़ी ही मक़्सदवरी है।" इसके बाद फ़र्माया ऐसी ही जज़ा और इन्आम के लिए आमिलों को अमल करना चाहिए।

क़तादा (रह.) तो फ़र्माते हैं कि "यह अहले जन्नत का मक़ूला है।" इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं फ़र्माने इलाही है। मतलब यह है कि "इन जैसी नेअ़मतों और रहमतों के हासिल करने के लिए लोगों को दुनिया में पूरी रग़्बत के साथ अमल करना चाहिए ताकि अंजामकार उन नेअ़मतों को हासिल कर सके।" (तब्री : 21/52)

इसी आयत के मज़्मून से मिलता जुलता एक क़िस्सा है उसे भी सुन लीजिए। दो शख़्स आपस में शरीक थे उनके पास आठ हज़ार अशरफ़ियाँ जमा हो गईं, एक चूँकि पेशे हरफ़े (कारोबार) से वाक़िफ़ था और दूसरा नावाक़िफ़ था। इसलिए उस जानकार ने न जानने वाले से कहा कि अब हमारा निबाह मुश्किल है, आप अपना हक़ लेकर अलग हो जाइए आप काम काज करना नहीं जानते हैं। चुनाँचे दोनों ने अपने अपने हिस्से अलग अलग कर लिये और जुदा जुदा हो गए। फिर उस हरफ़े वाले ने बादशाह के मर जाने के बाद उसका शाही महल एक हज़ार दीनार में ख़रीदा और अपने साथी को बुलाकर उसे दिखाया और कहा बतलाओ मैंने कैसी चीज़ ख़रीदी? उसने बड़ी ता'रीफ़ की और यहाँ से बाहर निकला। अल्लाह तआला से दुआ की और कहा, ऐ अल्लाह! इस मेरे साथी ने तो एक हज़ार दीनार का क़सरे दुनियावी ख़रीद लिया है और मैं तुझसे जन्नत का महल चाहता हूँ। मैं तेरे नाम पर तेरे मिस्कीन बन्दों पर एक हज़ार दीनार ख़र्च करता हूँ। चुनाँचे उसने एक हज़ार दीनार अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिये। फिर उस दुनियादार शख़्स ने एक ज़माने के बाद एक हज़ार दीनार ख़र्च करके अपना निकाह किया। दावत में अपने उस पुराने साझेदार को भी बुलाया और उससे ज़िक्र किया कि मैंने एक हज़ार दीनार ख़र्च करके इस औरत से निकाह किया है। उसने उसकी भी ता'रीफ़ की। बाहर आकर अल्लाह तआला की राह में एक हज़ार दीनार दिये और अल्लाह तआला से अर्ज़ किया कि ऐ बारी तआला! मेरे साथी ने इतनी ही रक़म ख़र्च करके यहाँ की एक औरत हासिल की है और मैं इस रक़म से तुझसे हूरे ईन का तालिब हूँ,

और फिर वह रक़म अल्लाह की राह में सदक़ा कर दी। फिर कुछ मुद्दत के बाद उस दुनियादार ने उसको बुलाकर कहा कि दो हज़ार के दो बाग़ मैंने ख़रीदे हैं, देख लो कैसे हैं? उसने देखकर बहुत ता'रीफ़ की और बाहर आकर अपनी आदत के मुताबिक़ जनाब बारी में अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! मेरे साथी ने दो हज़ार के दो बाग़ यहाँ के ख़रीदे हैं मैं तुझसे जन्नत के दो बाग़ चाहता हूँ और यह दो हज़ार दीनार तेरे नाम पर सदक़ा करता हूँ। चुनाँचे उस रक़म को मुस्तहेक़ीन में तक़्सीम कर दिया। फिर जब फ़रिश्ता उन दोनों को फ़ौत करके ले गया, उस सदक़ा करने वाले को जन्नत के महल में पहुँचा दिया गया, जहाँ पर एक हसीन औरत भी उसे मिली और उसे दो बाग़ भी दिये गए और वह वह नेअमतें मिलीं जिन्हें सिवाय अल्लाह तआला के और कोई नहीं जानता तो उसे उस वक़्त अपना वह साथी याद आ गया। फ़रिश्ते ने बतलाया कि वह तो जहन्नम में है। तुम अगर चाहो तो झाँककर उसे देख सकते हो। उसने जब उसे जहन्नम के अंदर जलता हुआ देखा तो उससे कहा कि "क़रीब था कि तू मुझे भी चकमा दे जाता और यह तो रब तआला की मेहरबानी हुई कि मैं बच गया।" (तब्री : 21/54)

और रिवायत में है कि तीन तीन हज़ार दीनार थे, एक काफ़िर था और एक मोमिन था। जब यह मोमिन अपनी सारी रक़म अल्लाह की राह में ख़र्च कर चुका तो टोकरी सिर पर रखकर, कुदाल फावड़े लेकर मज़दूरी के लिए चला। उसे एक शख़्स मिला और कहा कि अगर तू मेरे जानवर की देखरेख करे और गोबर उठाये तो मैं तुझे खाने पीने को दे दूँगा। उसने मंज़ूर कर लिया और काम शुरू कर दिया लेकिन यह शख़्स बड़ा बेरहम और बदगुमान था। जहाँ उसने किसी जानवर को बीमार या कमज़ोर देखा तो इस मिस्कीन मुलाज़िम की गर्दन तोड़ता, ख़ूब मारता पीटता और कहता कि इसका दाना तू चुरा लेता होगा। उस मुसलमान से ये बेजा सख़्ती बर्दाश्त न की गई तो एक दिन उसने अपने दिल में ख़्याल किया कि मैं अपने काफ़िर दोस्त के यहाँ चला जाऊँ, उसकी खेती है बाग़ात हैं। मैं वहाँ काम काज कर लूँगा और वह मुझे रोटी का टुकड़ा दे दिया करेगा और मुझे क्या चाहिए? वहाँ जो पहुँचा तो शाही ठाठ देखकर हैरान रह गया, एक बुलंद व बाला महल है, दरबान और पहरेदार ड्योढ़ी पर और चौकीदार, ग़ुलाम और लौण्डियाँ सब मौजूद हैं। यह ठिठका और दरबानों ने उसे रोका। उसने हर चंद कहा कि तुम अपने मालिक से मेरा ज़िक्र तो करो। उन्होंने कहा, अभी वक़्त नहीं, तुम एक कोने में पड़े रहो सुबह जब वह निकलें तो ख़ुद सलाम कर लेना। अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हें पहचान लेंगे, वरना फिर हमारे हाथों तुम्हारी पूरी मरम्मत हो जाएगी। उस मिस्कीन को यही करना पड़ा जो कम्बल का टुकड़ा यह जिस्म से लपेटे हुए था उसी को उसने अपना ओढ़ना बिछौना बनाया और एक कोने में दुबककर पड़ गया। सुबह के वक़्त उसके रास्ते पर जा खड़ा हुआ। जब वह निकला और उस पर नज़र पड़ी तो ताज्जुब से पूछा कि "हैं! यह क्या हालत है माल कहाँ गया?" उसने कहा वह कुछ न पूछो! उस वक़्त तो मेरा काम जो है उसे पूरा कर दो, यानी मुझे मौक़ा दो कि मैं तुम्हारी खेती बाड़ी का काम मिस्ल और नौकरों के अंजाम दूँ और आप मुझे सिर्फ़ खाना दे दिया कीजिए और जब यह कंबल बोसीदा होकर फट जाए तो एक कंबल और ख़रीद देना। उसने कहा, नहीं! नहीं! मैं इससे बेहतर सुलूक तुम्हारे साथ करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन पहले तुम यह बतलाओ कि उस रक़म को तुमने कहाँ ख़र्च किया? जवाब दिया कि मैंने वह रक़म एक शख़्स को क़र्ज़ दी है, उसने

सवाल किया कि किसे?'' कहा ऐसे को जो न लेकर मुकरे, न देने से इंकार करे।'' उसने कहा, वह कौन है? उसने जवाब दिया, ''वह अल्लाह तआला है जो मेरा और तेरा रब है।'' यह सुनते ही उस काफ़िर ने मुसलमान से हाथ छुड़ा लिया और उससे कहा, बेवक़ूफ़ हुआ है यह भी हो सकता है कि हम मरकर जब मिट्टी हो जाएँ तो फिर दोबारा ज़िन्दा किये जाएँ और अल्लाह तआला हमें बदले दे? जा! जब तू ऐसा ही बूदा और ऐसे अक़ीदों वाला है तो मुझे तुझसे कोई सरोकार नहीं। पस वह काफ़िर तो मज़े उड़ाता रहा और यह मोमिन सख़्ती से दिन गुज़ारता रहा, यहाँ तक कि दोनों को मौत आ गयी। मुसलमान को जन्नत में जो जो नेअमतें और रहमतें मिलीं वह अनगिनत थीं। उसने जो देखा कि हद्दे नज़र से बल्कि सारी दुनिया से ज़्यादा तो ज़मीन है और बेशुमार दरख़्त और बाग़ात हैं और जाबजा नहरें और चश्मे हैं, तो पूछा यह सब किसका है? जवाब मिला कि यह सब आपका है। कहा सुब्हानल्लाह! यह तो अल्लाह तआला की बड़ी मेहरबानी है। अब जो आगे बढ़ा तो इस क़द्र लौण्डी और गुलाम देखे कि गिनती नहीं हो सकती, पूछा यह किसके हैं? कहा गया कि सब आपके हैं। उसे और ज़्यादा ताज्जुब और ख़ुशी हुई। फिर जो आगे बढ़ता है तो लाल याक़ूत के महल नज़र आते हैं। मोतियों का एक महल और हर हर महल में कई कई हूरे ईन, साथ ही ख़बर दी गई कि यह सब कुछ भी आप ही का है। फिर तो उसकी बाछें खिल गईं। कहने लगा कि अल्लाह जाने मेरा वह काफ़िर साथी कहाँ होगा? अल्लाह तआला उसे दिखाएगा कि वह जहन्नम में जल रहा है। अब उनमें वह बातें होंगी जिनका ज़िक्र यहाँ हुआ है पस मोमिन पर दुनिया में जो बलाएँ आती थीं, उन्हें वह याद करेगा तो मौत से ज़्यादा भारी बला उसे कोई नज़र न आएगी।

***

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ ﴿٦٢﴾ إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِينَ ﴿٦٣﴾ إِنَّهَا شَجَرَةٌ
تَخْرُجُ فِيٓ أَصْلِ الْجَحِيمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيٰطِينِ ﴿٦٥﴾ فَإِنَّهُمْ لَأٰكِلُونَ
مِنْهَا فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٦٦﴾ ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ إِنَّ
مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ ﴿٦٨﴾ إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَآءَهُمْ ضَآلِّينَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ
يُهْرَعُونَ ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : ''क्या यह मेहमानी अच्छी है या सेंढ का दरख़्त? (62) जिसे हमने सितमगारों के लिए सख़्त सज़ा बना रखा है। (63) जो दरख़्त जहन्नम की जड़ में से निकलता है। (64) जिसके

ख़ोशे शैतानों के सरों जैसे होते हैं। (65) जहन्नमी उसी दरख़्त को खाएँगे और उसी से पेट बोझल कर लेंगे। (66) फिर उस पर गर्म जलते जलते पानी की मिलोनी होगी। (67) फिर उन सबका लौटना जहन्नम की आग के ढेर की तरफ़ होगा। (68) यक़ीन मानो कि इन्होंने अपने बाप दादों को बहका हुआ पाया। (69) और यह उन ही के निशाने क़दम पर दौड़े भागे चलते रहे।" (70)

थूर का दरख़्त (आ. 62 से 70) : जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र करके इर्शाद फ़र्माता है कि अब लोग ख़ुद फ़ैसला कर लें कि वह जगह और वह नेअमतें बेहतर हैं या ज़क़्क़ूम का दरख़्त जो जहन्नम वालों का खाना है। मुम्किन है कि इससे मुराद ख़ास एक ही दरख़्त हो और वह तमाम जहन्नम में फैला हुआ हो। जैसे कि तूबा का एक दरख़्त है जो जन्नत के एक एक महल में पहुँचा हुआ है और मुम्किन है कि मुराद ज़क़्क़ूम के दरख़्त की जिंस हो। इसकी ताईद इस आयत (لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ) (56/वाक़िआ : 52) से भी होती है। हमने इसे ज़ालिमों के लिए फ़ित्ना बनाया है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं, ज़क़्क़ूम का ज़िक्र गुमराहों के लिए हो गया। वह कहने लगे, लो और सुनो! आग में और दरख़्त? आग तो दरख़्त को जला देने वाली है। यह नबी कहते हैं जहन्नम में दरख़्त उगेगा।" तो अल्लाह तआला ने फ़र्माया, हाँ! यह दरख़्त आग ही से पैदा होगा और उसकी ग़िज़ा भी आग ही होगी। अबू जहल मल्ऊन इसी पर हँसी उड़ाता था और कहता था कि मैं तो ख़ूब मज़े से खजूर और मक्खन खाऊँगा, उसी का नाम ज़क़्क़ूम है। अल्ग़र्ज़ यह भी एक इम्तिहान है" भले लोग तो इससे डर गए और बुरों ने इसका मज़ाक़ उड़ाया। जैसे फ़र्मान है (وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِىْٓ اَرَيْنٰكَ) (17/बनी इस्राईल : 60) यानी जो मंज़र हमने तुझे दिखाया था वह सिर्फ़ इसलिए ही कि लोगों की आज़माइश हो जाए और इसीलिए इस नामुबारक दरख़्त का ज़िक्र भी। हम तो उन्हें धमका रहे हैं मगर यह नाफ़र्मानी में बढ़ते ही जा रहे हैं। उस दरख़्त की अस्ल जड़ जहन्नम में है उसके पत्ते, ख़ोशे, शाख़ें, भयानक डरावनी, लम्बी चौड़ी, ख़ूब दूर दूर तक शैतानों के सरों की तरह फैली हुई हैं। गो शैतान को भी किसी ने देखा नहीं, लेकिन उसका नाम सुनते हैं उसकी बदसूरती और ख़बासत का मंज़र सामने आ जाता है। यही हाल उस दरख़्त का है कि देखने और चखने में ज़ाहिर व बातिन में बुरी चीज़ है। यह भी कहा गया है कि साँपों की एक क़िस्म है जो बदतरीन भयानक और ख़ौफ़नाक शक्ल के होते हैं। और एक क़ौल यह भी है कि नबात की एक क़िस्म है जो बहुत बुरी तरह फैल जाती है लेकिन यह दोनों एहतिमाल दुरुस्त नहीं ठीक बात वही है जिसे हमने पहले ज़िक्र किया। इसी बद मंज़र बदबू, बदज़ायक़ा, बदमज़ा, ख़साल थूर को उन्हें जबरन खाना पड़ेगा और ठूंस ठूंस कर उन्हें खिलाया जाएगा कि यह बजाए ख़ुदएक ज़बरदस्त अज़ाब है। और आयत में है (لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ) (88/क़ियामा : 6) उनकी ख़ूराक वहाँ सिर्फ़ काँटेदार थूर होगा जो न उनकी भूख मिटा सके न मोटा कर सके। हुज़ूर (ﷺ) ने एक बार आयत (اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ) (3/आले इमरान : 102) की तिलावत करके फ़र्माया, "अगर ज़क़्क़ूम का एक क़तरा दुनिया के समुन्द्रों में पड़ जाए तो रूए ज़मीन के तमाम लोगों की ख़ूराकें ख़राब हो जाएँ। उसका क्या हाल होगा जिसकी ख़ूराक ही यही दरख़्त हो।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2585; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 4325; इब्ने हिब्बान : 7470; हाकिम : 451)

फिर उस ज़क़्क़ूम के खाने के साथ ही उन्हें ऊपर से जहन्नम का खोलता गर्म पानी पिलाया जाएगा या यह मतलब कि उस जहन्नमी दरख़्त को जहन्नमी पानी के साथ मिलाकर उन्हें खिलाया पिलाया जाएगा। और यह गर्म पानी वह होगा जो जहन्नम वालों के ज़ख़्मों से लहू पीप वग़ैरह की शक्ल में निकला होगा, और जो उनकी आँखों से और पोशीदा रास्तों से निकला होगा। (तब्री : 21/54) हदीस में है कि "जब यह पानी उनके सामने लाया जाएगा तो उन्हें सख़्त तक्लीफ़ होगी और बड़ी कराहत आएगी। फिर जब वह उनके मुँह के पास लाया जाएगा तो उसकी भाप से उनके चेहरे की खाल झुलसकर रह जाएगी। और जब उसका घूँट पेट में जाएगा तो उनकी आँतें कटकर पाख़ाने के रास्ते से बाहर आ जाएँगी।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2583; व सनदुहू हसन; अहमद : 5/265)

हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं कि "जब जहन्नमी भूख की शिकायत करेंगे तो ज़क़्क़ूम खिलाया जाएगा जिससे उनके चेहरों की खालें बिलकुल अलग होकर गिर पड़ेंगी। इस तरह उन्हें पहचानने वाला उसमें उनके मुँह की पूरी खाल देखकर पहचान सकता है कि यह फ़लाँ है। फिर प्यास की शिद्दत से बेताब होकर वह हाय वाय पुकारेंगे तो उन्हें पिघले हुए तांबे जैसा गर्म पानी दिया जाएगा जो चेहरे के सामने आते ही चेहरे के गोश्त को झुलसा देगा और तमाम गोश्त गिर पड़ेगा, और पेट में जाकर आँतों को काट देगा। ऊपर से लोहे के हथोड़े मारे जाएँगे और एक एक हिस्सा बदन का अलग अलग झड़ जाएगा, बुरी तरह चीख़ते चिल्लाते होंगे, फ़ैसला होते ही उनका ठिकाना जहन्नम हो जाएगा, जहाँ उन पर तरह तरह के अज़ाब होते रहेंगे।" (तब्री : 21/56) जैसे और आयत में है (يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ آنٍ) (55/रहमान : 44) जहन्नम और आग जैसे गर्म पानी के बीच चक्कर खाते रहेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरअत (सुम्मा इन्ना मक़ीलहुम ला इलल जहीम) है। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "वल्लाह! आधे दिन से पहले ही पहले दोनों गिरोह अपनी अपनी जगह पहुँच जाएँगे और वहीं क़ेलूला यानी दोपहर का आराम करेंगे।" क़ुरआन बताता है (أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا) (25/फ़ुरक़ान : 24) जन्नती बाएतिबार जाये क़याम, बहुत बेहतर होंगे और बाएतिबार आरामगाह के भी बहुत अच्छे होंगे। (25/फ़ुरक़ान : 24) अल्ग़र्ज़ क़ेलूले का वक़्त दोनों का अपनी अपनी जगह होगा। आधे दिन से पहले पहले अपनी अपनी जगह पहुँच जाएँगे। इस बिना पर यहाँ सुम्म का लफ़्ज़ ख़बर पर ख़बर के अत्फ़ के लिए होगा। यह उसका बदला है कि उन लोगों ने अपने बाप दादों को गुमराह पाया। लेकिन फिर भी उनके नक़्शे क़दम पर दौड़ते फिरे, और मजबूरों और बेवक़ूफ़ों की तरह उनके पीछे हो लिए।

***

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿۷۲﴾ فَانْظُرْ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۷۳﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿۷۴﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا
نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿۷۵﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۷۶﴾ وَجَعَلْنَا
ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿۷۷﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿۷۸﴾ سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي
الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۹﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۰﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۸۱﴾ ثُمَّ
اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿۸۲﴾

तर्जुमा : "इनसे पहले भी बहुत से अगले बहक चुके हैं। (71) जिनमें हमने आगाह करने वाले रसूल भेजे थे। (72) अब तू देख कि जिन्हें धमकाया गया था उनका अंजाम कैसा कुछ हुआ? (73) सिवाय अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा मुख़्लिस बन्दों के। (74) हमें नूह ने पुकारा तो देख ले, कि हम कैसे अच्छे दुआ के क़बूल करने वाले हैं। (75) हमने उसे और उसके ताबेदारों को उस ज़बरदस्त मुसीबत से बचा लिया। (76) उसकी औलाद को हमने बाक़ी रहने वाली बना दी। (77) और हमने उसका ज़िक्रे ख़ैर पिछलों में बाक़ी रखा। (78) नूह (عليه السلام) पर तमाम जहानों में सलाम हो। (79) हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। (80) वह हमारे ईमान दार बन्दों में से था। (81) फिर हमने बाक़ी के सब लोगों को डुबो दिया।" (82)

अंजामे ख़ैर नेकों का ही है (आ. 71 से 82) : गुज़िश्ता उम्मतो में भी अक्सर लोग राह से भटके हुए थे अल्लाह तआला के साथ शरीक करते थे। उनमें भी अल्लाह तआला के रसूल आए थे। जिन्होंने उन्हें होशियार किया था और डरा धमका दिया था और बतला दिया था कि उनके शिर्क कुफ़्र और तक्ज़ीबे रसूल से अल्लाह तआला बहुत नाराज़ है और अगर वह बाज़ न आये तो उन्हें अज़ाब होंगे। फिर भी जब उन्होंने नबियों की न मानी और आमाले बद से बाज़ न आए तो देख लो कि उनका क्या अंजाम हुआ? तहस नहस कर दिये गए, तबाह व बर्बाद कर दिये गए। हाँ! नेकोकार ख़ुलूस वाले अल्लाह तआला के मुवह्हिद बन्दे बचा लिए गए और इज़्ज़त के साथ रखे गए।

नूह (عليه السلام) और उनकी क़ौम का ज़िक्र : ऊपर की आयतों में पहले लोगों की गुमराही का इज्मालन ज़िक्र

था। इन आयतों में तफ़्सीली बयान है। हज़रत नूह (ﷺ) अपनी क़ौम में साढ़े नौ सौ साल तक रहे और हर वक़्त उन्हें समझाते बुझाते रहे लेकिन ताहम (फिर भी) क़ौम गुमराही पर जमी रही, सिवाय चंद पाकबाज़ लोगों के कोई ईमान न लाया बल्कि सताते और तक्लीफ़ें देते रहे। आख़िर अल्लाह तआला के रसूल ने तंग आकर रब तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! मैं आजिज़ आ गया हूँ तू मेरी मदद कर। अल्लाह का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ और तमाम कुफ़्फ़ार को पानी में डुबो दिया। तो फ़र्माता है कि नूह (ﷺ) ने तंग आकर हमारी जनाब में दुआ की, हम तो हैं ही बेहतरीन तौर पर दुआओं के क़बूल करने वाले। फ़ौरन उनकी दुआ क़बूल कर ली और उस तक्ज़ीब व ईज़ा से जो उन्हें कुफ़्फ़ार से रोज़मर्रा पहुँच रही थी, हमने बचा लिया और उन ही की औलाद से फिर दुनिया बसी। क्यों कि वही बाक़ी बचे थे। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "तमाम लोग हज़रत नूह (ﷺ) की औलाद में से हैं।" (तब्री : 21/59) तिर्मिज़ी की मरफ़ूअ हदीस में इस आयत की तफ़्सीर में है कि साम, हाम और याफ़स की फिर औलाद फैली और बाक़ी रही। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिस्साफ़्फ़ात : 3230; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में सईद बिन बशीर ज़ईफ़ और क़तादा मुदल्लस हैं।)

मुस्नदे अहमद में यह भी है कि साम पूरे अरब के बाप हैं और हाम तमाम हब्श के और याफ़िस तमाम रूम के। (अहमद : 5/9; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिस्साफ़्फ़ात : 3231; और सनद ज़ईफ़ है; क़तादा मुदल्लस रावी के सिमाअ की सराहत नहीं है।) इस हदीस में रूमियों से मुराद रूमे अव्वल यानी यूनानी हैं, जो रूमी बिन लेती बिन यूनान बिन याफ़िस बिन नूह की तरफ़ मंसूब हैं। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) का इर्शाद है कि "हज़रत नूह (ﷺ) के एक लड़के साम की औलाद अरब, फ़ारसी और रूमी हैं। और याफ़िस की औलाद तुर्क, सिक़ालिया और याजूज माजूज हैं। और हाम की औलाद क़िब्ती, सूडानी और बरबरी हैं, वल्लाहु आलम! हज़रत नूह (ﷺ) की भलाई और उनका ज़िक्रे ख़ैर उनके बाद के लोगों में अल्लाह तआला की तरफ़ से ज़िन्दा रहा। तमाम अम्बिया (ﷺ) की हक़गोई का नतीजा यही होता है। हमेशा उन पर लोग सलाम भेजते रहेंगे और उनकी ता'रीफ़ें बयान करते रहेंगे। (तब्री : 21/60) हज़रत नूह (ﷺ) पर सलाम हो! यह गोया अगले जुम्ले की तफ़्सीर है।

यानी उनका ज़िक्र भलाई से बाक़ी रहने के मअनी यह हैं कि हर उम्मत उन पर सलाम भेजती रहती है। हमारी यह आदत है कि जो शख़्स ख़ुलूस के साथ हमारी इबादत व इताअत पर जम जाए हम भी उसका ज़िक्रे जमील बाद वालों में हमेशा के लिए बाक़ी रखते हैं। हज़रत नूह (ﷺ) यक़ीन और ईमान रखने वालों और तौहीद पर जम जाने वालों में से थे। हज़रत नूह (ﷺ) और दअवते नूह को क़बूल करने वालों का तो यह अंजामे ख़ैर हुआ। लेकिन नूह (ﷺ) के मुख़ालेफ़ीन ग़ारत और ग़र्क़ कर दिये गए। एक आँख झपकने वाली उनमें बाक़ी न बची। एक ख़बर रसाँ तक ज़िन्दा न रहा और निशान तक बाक़ी न बचा। हाँ! उनकी बुराइयाँ और बदियाँ रह गईं जिनकी वजह से मख़्लूक़ की जुबान पर उनके बदतरीन अफ़साने चढ़ गए।

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾ اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ
مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

तर्जुमा : ''नूह (عليه السلام) की ताबेदारी करने वालों में से ही इब्राहीम (عليه السلام) भी थे। (83) जबकि वह अपने रब तआला के पास बेऐब दिल लाये। (84) उन्होंने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किसको पूज रहे हो? (85) क्या तुम अपनी फ़ासिद राय से अल्लाह तआला के सिवा दूसरों के मुरीद बन रहे हो? (86) तो यह तो बतलाओ कि तुमने रब्बुल आलमीन को क्या समझ रखा है? (87)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 83 से 87) : हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) भी नूह (عليه السلام) के दीन पर थे, उन ही के तरीक़े और चाल चलन पर थे। अपने रब तआला के पास सलामत दिल ले गए यानी तौहीद वाला जो अल्लाह तआला को हक़ जानता हो, क़ियामत को आने वाली मानता हो, मुर्दों को दोबारा जीने वाला समझता हो, शिर्क व कुफ़्र से बेज़ार हो, दूसरों पर लअ़न तअ़न करने वाला हो। (तब्री : 21/63) ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने अपनी तमाम क़ौम से और अपने वालिद से साफ़ कह दिया कि यह तुम किसकी पूजा पाठ कर रहे हो? अल्लाह तआला के सिवा दूसरों की बंदगी छोड़ दो और अपने इन झूठे खुदाओं की इरादत छोड़ दो। वरना जान लो कि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ क्या कुछ न करेगा और तुम्हें कैसी कुछ सख़्त सज़ाएँ देगा।

***

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾ فَقَالَ اِنِّيْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ
اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا
بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ
خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا
بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

तर्जुमा : "अब इब्राहीम (ﷺ) ने एक निगाह सितारों की तरफ़ उठाई। (88) और कहा कि मैं तो बीमार हो जाऊँगा। (89) उस पर वह सब उससे मुँह फेरे हुए वापिस चले गए। (90) आप ख़ामोशी के साथ उनके मअबूदों के पास गए और फ़र्माने लगे तुम खाते क्यूँ नहीं? (91) तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते? (92) फिर तो पूरी कुव्वत के साथ दाएँ हाथ से उन्हें मारना शुरू किया। (93) बुतपरस्त दौड़े भागे आपकी तरफ़ मुतवज्जह हुए। (94) तो आपने फ़र्माया क्या तुम उन्हें पूजते हो? जिन्हें ख़ुद तुम तराशते हो। (95) हालाँकि तुम्हें और तुम्हारी बनाई हुई सब चीज़ों को अल्लाह तआला ही ने पैदा किया है। (96) वह कहने लगे इसके लिए आतिशकदा (बड़ा अलाव) बनाओ और उस दहकती हुई आग में इसे डाल दो। (97) उन्होंने तो इब्राहीम (अ.) के साथ मकर करना चाहा लेकिन हमने उन ही को नीचों का नीच कर दिया।"(98)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का बुतों को तोड़ना (आ. 88 से 98) : हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने अपनी क़ौम से यह इसलिए कहा कि वह जब अपने मेले में चले जाएँ तो यह उनके इबादतख़ाने में तंहा रह जाएँ और उनके बुतों को तोड़ने का तंहाई में मौक़ा मिल जाए। इसीलिए एक ऐसी बात कही जो दरहक़ीक़त सच्ची थी लेकिन उनकी समझ में जो मतलब उसका आया उससे आप (ﷺ) ने अपना दीनी काम निकाल लिया। वह तो अपने एतिक़ाद के बमौजिब हज़रत इब्राहीम (ﷺ) को सचमुच बीमार समझ बैठे और उन्हें छोड़कर चले गए। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "जो शख़्स किसी अम्र में ग़ौरो फ़िक्र करे तो अरब कहते हैं कि उसने सितारों पर नज़रें डालीं।" मतलब यह है कि ग़ौरो फ़िक्र के साथ तारों की तरफ़ नज़र उठाई और सोचने लगे कि मैं इन्हें किस तरह टालूँ? सोच समझकर फ़र्माया कि मैं सक़ीम हूँ यानी कमज़ोर हूँ। एक हदीस में आया है कि "हज़रत इब्राहीम (ﷺ) ने सिर्फ़ तीन झूठ बोले हैं, जिनमें से दो मर्तबा तो अल्लाह तआला के दीन के लिए जिनमें एक बार उनका फ़र्माना (इन्नी सक़ीम) और दूसरे उनका फ़र्माना (بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَٰذَا) (21/अम्बिया : 63) और एक उनका हज़रत सारा को अपनी बहन कहना।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वत्तख़ज़ल्लाहु इब्राहीमा ख़लीला) : 3358; सहीह मुस्लिम : 2371) तो याद रहे कि दरअसल उनमे हक़ीक़ी झूठ एक भी नहीं। उन्हें तो सिर्फ़ मिजाज़न झूठ कहा गया है। कलाम में ऐसी ता'रीफ़ें किसी शरई मक़सद के लिए करना झूठ में दाख़िल नहीं। जैसे कि हदीस में है कि "ता'रीफ़ें झूठ से अलग है और उससे बेनियाज़ कर देती है।" (अल्अदबुल मुफ़रद लिल बुख़ारी : 857; और इसकी सनद सहीह है; यह रिवायत मौक़ूफ़ है। और मरफ़ूअन सही नहीं बल्कि ज़ईफ़ है देखिए सुननुल कुब्रा लिल बैहक़ी (10/199) इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "हज़रत ख़लीलुल्लाह (ﷺ) के इन तीनों कलिमात में से एक भी ऐसा नहीं जिससे हिक्मते अमली के साथ अल्लाह तआला के दीन की भलाई मक़सूद न हो।" (इसकी सनद में अली बिन ज़ेद बिन जिदआन ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 2/37; रक़म : 342) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)

हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं "मैं बीमार हूँ" से मतलब मुझे ताऊन हो गया है। और वह लोग ऐसे

मरीज़ से भागते थे। हज़रत सईद (रह.) का बयान है कि अल्लाह तआला के दीन की तब्लीग़ उनके झूठे मअबूदों की तर्दीद के लिए अल्लाह तआला के ख़लीलुल्लाह (ﷺ) की यह हिक्मते अमली थी कि एक सितारे को तु लूअ होते देखकर फ़र्मा दिया कि मैं सक़ीम हूँ। औरों ने यह भी लिखा है कि मैं बीमार होने वाला हूँ यानी यक़ीनन एक बार मर्जुल मौत आने वाला है। और यह भी कहा गया है कि मरीज़ हूँ यानी मेरा दिल तुम्हारे इन बुतों की इबादत से बीमार है।

हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं "जब आपकी क़ौम मेले में जाने लगी तो आपको भी मजबूर करने लगी, आप (ﷺ) हट गए और फ़र्मा दिया कि मैं सक़ीम हूँ और आसमान की तरफ़ देखने लगे।" जब वह उन्हें तंहा छोड़कर चल दिये तो आपने ब फ़राग़त (पूर तौर पर) उनके मअबूदों के टुकड़े टुकड़े कर दिये। वह तो सब अपनी ईद में गए और आप (ﷺ) चुपके चुपके और जल्दी जल्दी उनके बुतों के पास आए। पहले तो फ़र्माया, क्यूँ जी! तुम खाते क्यूँ नहीं? यहाँ आकर अल्लाह के ख़लील (ﷺ) ने देखा कि जो चढ़ावे उन लोगोंने उन बुतों पर चढ़ा रखे थे वह सब रखे हुए थे। उन लोगों ने तबर्रुक की ग़र्ज़ से जो कुर्बानियाँ यहाँ की थीं वह सब यूँ ही पड़ी हुई हैं। यह बुतख़ाना बहुत बड़ा वसीअ और मुज़य्यन था। दरवाज़े के मुत्तसिल एक बहुत बड़ा बुत था और उसके आसपास उससे छोटे फिर उनसे छोटे यूँ ही तमाम बुतख़ाना भरा हुआ था। उनके पास मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने रखे हुए थे, जो इस एतिक़ाद से रखे गए थे कि यहाँ रहने से मुतबर्रक हो जाएँगे फिर हम खा लेंगे। इब्राहीम (ﷺ) ने अपनी बात का जवाब न पाकर फिर फ़र्माया यह तुम्हें क्या हो गया? बोलते क्यूँ नहीं? अब तो पूरी कुव्वत से दाएँ हाथ से मार मारकर उनके टुकड़े टुकड़े कर दिये, हाँ! बड़े बुत को छोड़ दिया ताकि उस पर बदगुमानी की जा सके, जैसे सूरह अम्बिया में गुज़र चुका है और वहीं उसकी पूरी तफ़्सीर भी बयान हो चुकी है। बुतपरस्त जब अपने मेले से वापिस हुए और बुतख़ाने में दाख़िल हुए तो देखा कि उनके सब रब तहस नहस पड़े हुए हैं, किसी का हाथ नहीं, किसी का पैर नहीं, किसी का सिर नहीं, किसी का धड़ नहीं। हैरान हो गए कि यह क्या हुआ? आख़िर सोच समझकर बहस मुबाहिसे के ब ाद मालूम कर लिया कि हो न हो यह काम इब्राहीम (ﷺ) का हो। अब सारे के सारे मिल जुलकर ख़लीलुर्रहमान वल ग़फ़ूर उनके पास दौड़े भागे, दाँत पीसते, तिलमिलाते बिगड़ते आए। ख़लील (ﷺ) को तब्लीग़ का और उन्हें क़ाइल व मअकूल करने का और समझाने का अच्छा मौक़ा मिला। कहने लगे, क्यूँ उन चीज़ों की पूजा करते हो जिन्हें तुम ख़ुद बनाते हो। अपने हाथों गढ़ते और तराशते हो? हालाँकि तुम्हारा और तुम्हारे आमाल का ख़ालिक़ अल्लाह तआला ही है। मुम्किन है कि इस आयत में मा मसदरिया हो और मुम्किन है कि अल्लज़ी के मअनी में हों, लेकिन दोनों मअनी में तलाज़ुम है भले पहले ज़्यादा ज़ाहिर है। चुनाँचे इमाम बुख़ारी (रह.) की किताब अफ़आलुल इबाद में एक मरफ़ूअ हदीस है कि अल्लाह तआला हर सानेअ और उसकी सिन्अत को पैदा करता है। (ख़ल्कु अफ़आलिल इबाद लिल बुख़ारी : 117; अस्सुन्नत लि इब्ने अबी आसिम : 358; और इसकी सनद हसन है; हाकिम : 1/31; अल्अस्माउ वस्सिफ़ात, पेज : 26; अद्दैलमी : 1/2/228) फिर कुछ ने इसी आयत की तिलावत की। चूँकि उस पाक व साफ़ बात का कोई जवाब उनके पास न था तो तंग आकर दुश्मनी

पर और सुफ़्लेपन पर उतर आये और कहने लगे एक बुनियान बनाओ, उसमें आग जलाओ और उसको उसमें डाल दो। चुनाँचे यही उन्होंने किया। लेकिन अल्लाह तआला ने अपने ख़लील (عليه السلام) को उससे नजात दी। उन ही को ग़ल्बा दिया और उन ही की मदद की। भले उन्होंने उनको बुराई पहुँचानी चाही, लेकिन अल्लाह तआला ने ख़ुद उन्हें ज़लील कर दिया। इसका पूरा बयान और कामिल तफ़्सीर सूरह अम्बिया में गुज़र चुकी है वहीं देख ली जाए।

***

وَقَالَ اِنِّیْ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیْ سَیَهْدِیْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِیْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ
بِغُلٰمٍ حَلِیْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْیَ قَالَ یٰبُنَیَّ اِنِّیْۤ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْۤ اَذْبَحُكَ
فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی ؕ قَالَ یٰۤاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ؗ سَتَجِدُنِیْۤ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ
الصّٰبِرِیْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّاۤ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَیْنٰهُ اَنْ یّٰۤاِبْرٰهِیْمُ ﴿١٠٤﴾ قَدْ صَدَّقْتَ
الرُّءْیَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِی الْمُحْسِنِیْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِیْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَیْنٰهُ
بِذِبْحٍ عَظِیْمٍ ﴿١٠٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَیْهِ فِی الْاٰخِرِیْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰۤی اِبْرٰهِیْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ نَجْزِی
الْمُحْسِنِیْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِیْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِیًّا مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ
﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَیْهِ وَعَلٰۤی اِسْحٰقَ ؕ وَمِنْ ذُرِّیَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِیْنٌ ﴿١١٣﴾

तर्जुमा : "इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा मैं तो हिजरत करके अपने परवरदिगार की तरफ़ जाने वाला हूँ वह ज़रूर मेरी रहनुमाई करेगा। (99) ऐ मेरे रब! मुझे नेक बख़्त औलाद अता कर। (100) तो हमने उसे एक बुर्दबार बच्चे की बशारत दी। (101) फिर जब बच्चा उतनी उम्र को पहुँचा कि उसके साथ चले फिरे तो इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा, मेरे प्यारे बच्चे! मैं ख़्वाब में अपने आपको तुझे ज़िब्ह करते हुए देख रहा हूँ, अब तू बता कि तेरी क्या राय है? बेटे ने जवाब दिया कि अब्बा! जो

हुक्म किया जाता है उसे कर गुज़रिये! इंशाअल्लाह तआला! आप मुझे सब्र करने वालों में पाएँगे। (102) ग़र्ज़ जब दोनों ने तस्लीम कर ली और बाप ने बेटे कोपेशानी के बल लिटा दिया। (103) तो हमने आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम (ﷺ)! (104) यक़ीनन तूने अपने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया, हम नेकी करने वालों को इसी तरह जज़ा देते हैं। (105) दरहक़ीक़त यह खुला इम्तिहान था। (106) और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके फ़िदये में दे दिया। (107) और हमने उनका ज़िक्रे ख़ैर पिछलों में बाक़ी रखा। (108) इब्राहीम (ﷺ) पर सलाम हो। (109) हम नेककारों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।(110) बेशक वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था। (111) हमने उसको इस्हाक़ (ﷺ) नबी की बशारत दी जो सालेह लोगों में से होगा। (112) और हमने इब्राहीम व इस्हाक़ (ﷺ) पर बरकतें नाज़िल कीं, इन दोनों की औलादों में कुछ तो नेकबख़्त हैं और कुछ अपने नफ़्स पर सरीह ज़ुल्म करने वाले हैं।" (113)

हज़रत इब्राहीम (ﷺ) का हज़रत इस्माईल (ﷺ) को ज़िब्ह करना (आ. 99 से 113) : ख़लीलुल्लाह (ﷺ) जब अपनी क़ौम की हिदायत से मायूस हो गए। बड़ी बड़ी क़ुदरती निशानियाँ देखकर भी जब उन्हें ईमान नसीब न हुआ, तो आपने उनसे अलग हो जाना पसंद किया और ऐलान कर दिया कि मैं अब तुममें से हिज्रत कर जाऊँगा , मेरा रहनुमा मेरा रब तआला है। साथ ही अपने रब तआला से अपने यहाँऔलाद होने की दुआ माँगी ताकि वही तौहीद में आपका साथ दे। उसी वक़्त दुआ क़बूल होती है और एक बुर्दबार बच्चे की बशारत दी जाती है। यह हज़रत इस्माईल (ﷺ) थे यही आप (ﷺ) के पहले साहबज़ादे थे और हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) से बड़े थे। इसे तो अहले किताब भी मानते हैं। बल्कि उनकी किताब में मौजूद है कि हज़रत इस्माईल (ﷺ) की पैदाइश के वक़्त हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की उम्र छियालीस साल की थी और जिस वक़्त हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) पैदा हुए हैं उस वक़्त आपकी उम्र निन्नान्वे साल की थी। बल्कि उनकी अपनी किताब में तो यह भी है कि जनाब इब्राहीम (ﷺ) को अपने इकलोते फ़रज़न्द के ज़िब्ह करने का हुक्म हुआ था। लेकिन सिर्फ़ इसलिए कि यह लोग ख़ुद नबीअल्लाह हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) की औलाद में हैं, और नबीअल्लाह व ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल (ﷺ) की औलाद में से अरब हैं। उन्होंने वाक़िया की असलियत बदल दी और इस फ़ज़ीलत को हज़रत इस्माईल (ﷺ) से हटाकर हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) को दे दी और बेजा तावीलें करके अल्लाह तआला के कलाम को बदल डाला, और कहा कि हमारी किताब में लफ़्ज़ वहीदक है इससे मुराद इकलोता नहीं , बल्कि जो तेरे पास उस वक़्त अकेला है वह है। यह इसलिए कि हज़रत इस्माईल (ﷺ) तो अपनी वालिदा के साथ मक्का में थे, यहाँ ख़लीलुल्लाह (ﷺ) के साथ सिर्फ़ इस्हाक़ (ﷺ) थे, लेकिन यह बिलकुल ग़लत है। "वहीदक" उसी को कहा जाता है जो इकलौता हो, उसका और कोई भाई न हो, फिर यहाँ एक बात और भी है कि इकलोते और पहलोते बच्चे के साथ जो मुहब्बत होती है और उसके जो लाड प्यार होते हैं उमूमन दूसरी औलादों के होने पर फिर वह बाक़ी नहीं रहती, इसलिए उसके ज़बीहे का हुक्म, इम्तिहान और आज़माइश की ज़बरदस्त कड़ी है। हम इसे मानते हैं कि कुछ सलफ़ भी इसके

क़ाइल हुए हैं कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) थे यहाँ तक कि कुछ सहाबा (रज़ि.) से भी यह मरवी है लेकिन यह चीज़ किताबो सुन्नत से साबित नहीं होती। बल्कि ख़्याल यह है कि बनी इस्राईल की एक शोहरत दी हुई बात को उन हज़रात ने भी बेदलील अपने यहाँ ले लिया। दूर क्यूँ जाएँ किताबुल्लाह के अल्फ़ाज़ में ही ग़ौर कर लीजिए कि हज़रत इस्माईल (عليه السلام) की बशारत का गुलामे हलीम कहकर ऐलान हुआ। फिर अल्लाह की राह में ज़िब्ह के लिए तैयार होने का ज़िक्र हुआ। उस तमाम बयान को ख़त्म करके फिर नबी सालेह हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के पैदा होने की बशारत का बयान हुआ और फ़रिश्तों ने बशारते इस्हाक़ (عليه السلام) के मौक़े पर गुलामे अलीम फ़र्माया था। इसी तरह कुरआन में है और बशारते इस्हाक़ के साथ इर्शाद हुआ है (وَمِن وَرَاءِ إِسْحَاقَ يَعْقُوبَ) (11/हूद : 71) यानी हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) की हयात में ही हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के यहाँ हज़रत यअक़ूब (عليه السلام) पैदा होंगे। यानी उनकी तो नस्ल जारी रहने का पहले ही इल्म कराया जा चुका था अब उन्हें ज़िब्ह करने का हुक्म कैसे दिया जाता? इसे हम पहले ही बयान कर चुके। अल्बत्ता हज़रत इस्माईल (عليه السلام) का वस्फ़ यहाँ पर बुर्दबारी को बयान किया गया है जो ज़बीहे के लिए निहायत मुनासिब है।

अब हज़रत इस्माईल (عليه السلام) बड़े हो गए अपने वालिद के साथ चलने फिरने के क़ाबिल हो गए। आप (عليه السلام) उस वक़्त मअ अपनी वालिदा मुहतरमा के फ़ारान में थे। हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) उमूमन वहाँ जाते आते रहते थे। यह भी मज़्कूर है कि बुर्राक़ पर जाते थे और इस जुम्ले के यह मअनी भी हैं कि जवानी के लगभग हो गए बचपन का ज़माना निकल गया और बाप की तरह चलने फिरने और काम काज करने के क़ाबिल बन गए तो हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने ख़्वाब में देखा कि गोया आप (عليه السلام) अपने उस प्यारे बच्चे को ज़िब्ह कर रहे हैं। अम्बिया (عليه السلام) के ख़्वाब वही (मैसेज ऑफ अल्लाह) होते हैं और इसकी दलील यहां आयत है। एक मरफ़ूअ रिवायत में भी यह है। (यह रिवायत सिमाक अन इक्रिमा होने की वजह से ज़ईफ़ है जबकि इन अल्फ़ाज़ से मौक़ूफ़न सहीह बुख़ारी 138 में उबेद बिन उमेर और हाकिम : 2/431 में इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरक़ूम है हाकिम की रिवायत को इमाम हाकिम और ज़हबी ने सहीह क़रार दिया है लेकिन यह रिवायत इब्ने अबी नजीह की वजह से ज़ईफ़ है।) पस अल्लाह तआला के रसूल ने अपने लख़्ते जिगर की आज़माइश के लिए और इसलिए भी कि अचानक ज़िब्ह करने से वह घबरा न जाएँ, अपना इरादा और सच्चे ख़्वाब को उन पर ज़ाहिर किया, वहाँ क्या था वह भी उसी दरख़्त के फल थे। नबी इब्ने नबी थे। जवाब देते हैं, ''अब्बा! फिर देर क्यूँ लगा रहे हो, यह बातें भी पूछने की होती हैं? जो हुक्म हुआ है उसे फ़ौरन कर डालिए और अगर मेरी निस्बत खटका हो तो ज़ुबानी इत्मिनान क्या कराऊँ? छुरी रखिए मालूम हो जाएगा कि मैं कैसा कुछ साबिर हूँ। इंशाअल्लाह! मेरा सब्र आपका जी ख़ुश कर देगा।'' सुब्हानल्लाह! जो कहा था वही करके दिखाया और सादिक़ुल वअद होने का सर्टिफ़िकेट अल्लाह तआला की तरफ़ से हासिल कर ही लिया। आख़िर बाप बेटा दोनों हुक्मे अल्लाह तआला की इताअत के लिए जान देने को तैयार हो जाते हैं। बाप बच्चे को ज़िब्ह करने के लिए और बच्चा अल्लाह की राह में अपने बाप के हाथों अपना गला कटवाने के लिए तैयार हो जाता है और बाप अपने नूरे चश्म, लख़्ते जिगर को मुँह के बल लिटा देते हैं ताकि ज़िब्ह के वक़्त मुँह देखकर मुहब्बत न आ जाए और हाथ सुस्त न पड़ जाए।

मुस्नदे अह़मद में इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि "जब ह़ज़रत इब्राहीम (ﷺ) अपने नूरे नज़र को ज़िब्ह़ करने के लिए बहुक्मे बारी तआ़ला ले चले तो सई के वक़्त शैतान सामने आया। लेकिन ह़ज़रत इब्राहीम (ﷺ) उससे आगे बढ़ गए। फिर ह़ज़रत जिब्राईल (ﷺ) के साथ आप जमरा उ़क़्बा पर पहुँचे तो फिर शैतान सामने आया। आपने उसके साथ कंकरियाँ मारीं। फिर जमरा वुस्ता के पास आया फिर वहाँ सात कंकरियाँ मारीं। फिर आगे बढ़कर अपने प्यारे बच्चे को अल्लाह तआ़ला के नाम पर ज़िब्ह़ करने के लिए दे पछाड़ा और ज़बीहुल्लाह के जिस्म पर उस वक़्त सफ़ेद चादर थी। कहने लगे कि अब्बाजान! इसे उतार लीजिए ताकि इसमें आप मुझे कफ़ना सकें। आह! उस वक़्त बेटे को नंगा करते हुए बाप का अ़जब ह़ाल था कि आवाज़ आई बस इब्राहीम! ख़्वाब सच्चा कर चुके। मुड़कर देखा तो एक मेंढा सफ़ेद रंग बड़े बड़े सींगों और साफ़ आँखों वाला नज़र पड़ा। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, इसीलिए हम इस क़िस्म के मेंढ़े चुन चुनकर क़ुर्बानी के लिए लेते थे।" (अह़मद : 1/297; और इसकी सनद स़ह़ीह़ है।)

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ही से दूसरी रिवायत में ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (ﷺ) का नाम मरवी है। तो गो दोनों नाम आपसे मरवी हैं लेकिन पहले ही औला है और इसकी दलीलें आ रही हैं, इंशाअल्लाह तआ़ला। इसके बदले बड़ा ज़बीह़ा अल्लाह तआ़ला ने अ़ता किया, उसकी बाबत ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "यह जन्नती मेंढा था जो वहाँ चालीस साल से खा पी रहा था। उसे देखकर आप (ﷺ) अपने बच्चे को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। जमरा ऊला पर आकर सात कंकरियाँ फेंकीं फिर वह भागकर जमरा वुस्ता पर आ गया। सात कंकरियाँ यहाँ मारीं फिर जमरा कुब्रा के पास सात कंकरियाँ मारीं और वहाँ से मन्ह़र पर लाकर ज़िब्ह़ किया। उसके सींग सिर समेत इब्तिदाए इस्लाम के ज़माने तक कअ़बे के परनाले के पास लटक रहे थे फिर सूख गए।" एक बार ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) और ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) बैठे हुए बातें कर रहे थे। ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) तो ह़दीसें बयान कर रहे थे और ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) किताबों के क़िस्से बयान कर रहे थे। ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) का फ़र्मान है कि "हर नबी के लिए एक दुआ़ क़बूलशुदा है और मैंने अपनी उस मक़्बूल दुआ़ को पोशीदा करके रख छोड़ा है, अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त के लिए जो बरोज़े क़ियामत होगी।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुद्दअ़वात, बाब (उदऊ़नी अस्तजिब लकुम) : 6304; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 198) तो ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) ने फ़र्मायया तुमने ख़ुद इसे हुज़ूर (ﷺ) से सुना है? फ़र्माया, हाँ! ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) ख़ुश हुए और कहने लगे, तुम पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों या फ़र्माया, हुज़ूर (ﷺ) पर मेरे माँ बाप स़दक़े। फिर ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) ने ह़ज़रत इब्राहीम ख़लील (ﷺ) का क़िस्सा सुनाया कि जब आप (ﷺ) अपने लड़के ह़ज़रत इस्ह़ाक़ (ﷺ) को ज़िब्ह़ करने के लिए मुस्तइद हो गए तो शैतान ने कहा अगर मैं इस वक़्त इनको न बहका सका तो मुझे इनसे उ़म्र भर के लिए मायूस हो जाना चाहिए। पहले तो यह ह़ज़रत सारा के पास आया और पूछा कि इब्राहीम (ﷺ) तुम्हारे लड़के को कहाँ ले गए हैं? माई स़ाह़िबा ने जवाब दिया अपने किसी काम पर ले गए हैं। उसने कहा, नहीं! बल्कि वह तो ज़िब्ह़ करने के लिए ले गए हैं। माई स़ाह़िबा ने फ़र्माया वह उसे क्यूँ ज़िब्ह़ करने लगे? लईन ने कहा, वह कहते हैं अल्लाह तआ़ला का

उन्हें हुक्म है। जवाब मिला फिर तो यही बेहतर है कि वह जल्दी से अल्लाह तआ़ला के हुक्म की बजाआवरी से फ़ारिग़ हो लें। यहाँ से नामुराद होकर यह बच्चे के पास आया और कहा, तुम्हारे अब्बा तुम्हें कहाँ ले जा रहे हैं? उन्होंने फ़र्माया, अपने काम के लिए। कहा, नहीं! बल्कि वह तुझे ज़िब्ह करने के लिए ले जा रहे हैं। फ़र्माया, यह क्यूँ? कहा इसलिए कि वह समझते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हुक्म किया है। कहा, फिर तो अल्लाह की क़सम! उन्हें इस काम में बहुत जल्दी करनी चाहिए। उनसे भी मायूस होकर यह मल्ऊन ख़लीलुल्लाह (ﷺ) के पास पहुँचा। उनसे कहा, बच्चे को कहाँ ले जा रहे हो? जवाब दिया कि अपने काम के लिए। मल्ऊन ने कहा, नहीं! बल्कि तुम इसे ज़िब्ह करने के लिए ले जा रहे हो। आपने फ़र्माया, क्यूँ? बोला इसलिए कि तुम्हारा ख़्याल है कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म तुम्हें यूँ ही है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला की क़सम! फिर तो मैं ज़रूर ही इसे ज़िब्ह कर डालूँगा। अब इब्लीस मायूस हो गया।''

दूसरी रिवायत में यह भी है कि ''उस तमाम वाक़िया के बाद जनाब बारी तआ़ला ने हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) से फ़र्माया कि एक दुआ तुम मुझसे माँगो जो माँगोगे मिलेगा। हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) ने कहा, फिर मेरी दुआ यह है कि जिसने तेरे साथ शरीक न किया हो, उसे तू ज़रूर जन्नत में ले जाना। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है, अल्लाह तआ़ला ने मुझे इख़्तियार दिया कि मैं दो बातों में से एक को इख़्तियार कर लूँ, या तो यह कि मेरी आधो आध उम्मत बख़्शी जाए, या यह कि मैं शफ़ाअ़त करूँ और उसे अल्लाह तआ़ला क़बूल कर ले, तो मैंने शफ़ाअ़त करने को तर्जीह दी, इस उम्मीद पर कि वह आ़म होगी। हाँ! एक दुआ थी कि मैं वही करता लेकिन अल्लाह तआ़ला का एक नेक बंदा मुझसे पहले ही उस दुआ को माँग चुका था। वाक़िया यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) से ज़िब्ह होने की तक्लीफ़ दूर कर दी तो उनसे फ़र्माया गया, ''माँगो जो माँगोगे दिया जाएगा।'' तो हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! शैतान के बहकाने से पहले ही मैं उसे माँग लूँगा। ऐ अल्लाह! जो शख़्स इस हाल में मरा हो कि उसने तेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तो उसे बख़्श दे और जन्नत में पहुँचा दे।'' (इसकी सनद में अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/564; रक़म : 4868) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।) यह हदीस इब्ने अबी हातिम में है लेकिन सनद ग़रीब और मुंकर है इसके एक रावी अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ेद बिन असलम ज़ईफ़ हैं और मुझे तो यह भी डर है कि यह अल्फ़ाज़ कि ''जब अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) से'' आख़िर तक रावी के अपने न हों, जिन्हें उन्होंने हदीस में दाख़िल कर दिये हैं।

ज़बीहुल्लाह तो हज़रत इस्माईल (ﷺ) हैं ज़िब्ह की जगह मिना है और वह मक्का में है और हज़रत इस्माईल (ﷺ) यहीं थे न कि हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) वह तो शहरे कन्आन में थे जो शाम में है। जब हज़रत इब्राहीम (ﷺ) अपने प्यारे बच्चे को ज़िब्ह करने के लिए लिटाते हैं तो जनाब बारी तआ़ला से निदा आती है कि बस इब्राहीम! तुम अपने ख़्वाब को पूरा कर चुके।

सुद्दी (रह.) से रिवायत है कि जब ख़लीलुल्लाह (ﷺ) ने ज़बीहुल्लाह (ﷺ) के हलक़ पर छुरी

फेरी तो गर्दन तांबे की हो गई और न कटी और यह आवाज़ आई कि हम इसी तरह नेककारों को बदला देते हैं, यानी सख़्तियों से बचा लेते हैं और छुटकारा कर देते हैं। जैसे फ़र्माया, अल्लाह तआला से डरते रहने वालों के लिए अल्लाह तआला छुटकारे की सूरत निकाल ही देता है और उसे इस तरह रोज़ी पहुँचाता है कि उसके गुमान व वहम में भी न हो, अल्लाह तआला पर भरोसा करने वालों को अल्लाह तआला ही काफ़ी है, अल्लाह तआला अपने कामों को पूरा कर छोड़ता है हर चीज़ का उसने अंदाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। इस आयत से इस पर इस्तिदलाल किया है कि काम पर कुदरत पाने से पहले ही हुक्म मंसूख़ हो सकता है।

हाँ! मुअतज़िला इसको नहीं मानते। वजहे इस्तिदलाल बहुत ज़ाहिर है इसलिए कि ख़लीलुल्लाह (ﷺ) को अपने बेटे को ज़िब्ह करने का हुक्म होता है और फिर ज़िब्ह से पहले ही फ़िदये के साथ मंसूख़ कर दिया जाता है। मक़सूद इससे यह था कि सब्र का और बजाआवरी हुक्म पर मुस्तअदी का सवाब मर्हमत फ़र्मा दिया जाए, इसीलिए इर्शाद हुआ यह तो सिर्फ़ एक आज़माइश थी, खुला इम्तिहान था कि इधर हुक्म हुआ उधर तैयारी हुई। इसीलिए जनाब ख़लील (ﷺ) की ता'रीफ़ कुरआन में है कि "इब्राहीम (ﷺ) बड़े ही वफ़ादार थे।" बड़े ज़बीहे के साथ उनका फ़िदया हमने दिया।" सफ़ेद रंग, बड़ी आँखों और बड़े सींगों वाला उम्दा ख़ूराक से पाला हुआ मेंढा फ़िदया में दिया गया जो सबीर में बबूल के दरख़्त से बंधा हुआ मिला जो जन्नत में चालीस साल चरता रहा। मिना में सबीर के पास जो चट्टान है उस पर यह जानवर ज़िब्ह किया गया। यह चीख़ता हुआ ऊपर से उतरा था। यही वह मेंढ़ा है जिसे हाबील ने अल्लाह की राह में कुर्बान किया था उसकी ऊन क़द्रे सुर्ख़ी माइल थी, उसका नाम जरीर था। कुछ कहते हैं कि मक़ामे इब्राहीम पर उसे ज़िब्ह किया और कोई कहता है कि मिना में मन्हर पर। एक शख़्स ने अपने आपको अल्लाह की राह में ज़िब्ह करने की मिन्नत मानी थी, तो हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने उसे एक सौ ऊँट ज़िब्ह करने का फ़त्वा दिया था। लेकिन फिर फ़र्माते थे कि अगर मैं उसे एक मेंढ़ा ज़िब्ह करने को कहता तब भी काफ़ी था, क्योंकि किताबुल्लाह में है कि हज़रत ज़बीह (ﷺ) का फ़िदया उसी से दिया गया था। अक्सर लोगों का यही क़ौल है। कुछ कहते हैं कि यह पहाड़ी बकरा था। कोई कहता है नर हिरन था। मुस्नद अहमद में है कि "हज़रत उस्मान (रज़ि.) को बुलाकर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "मैंने मेंढ़ा के सींग बैतुल्लाह की दाख़िली के वक़्त अंदर देखे थे और मुझे याद न रहा कि मैं तुझे उनके ढाँक देने का हुक्म दूँ। जाओ उसे ढक दो। बैतुल्लाह में कोई ऐसी चीज़ न होनी चाहिए जो नमाज़ी को अपनी तरफ़ माइल करे।" (अबूदाऊद, किताबुल मनासिक, बाब फ़ी दुख़ूलिल कअबा : 2030; और वह हसन है; अहमद : 4/68) हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं उस मेंढ़े के सींग बैतुल्लाह में ही रहे। यहाँ तक कि एक बार बैतुल्लाह में आग लगी, उसमें वह जल गए। यह वाक़िया भी इस अम्र की दलील है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल (ﷺ) थे इसी वजह से उनकी औलाद कुरैश तक यह सींग बराबर विरासतन चले आए यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) को अल्लाह तआला ने मब्ऊस फ़र्माया, वल्लाहु आलम!

उन आसार का बयान जिनमें ज़बीहुल्लाह का नाम इस्हाक़ है। अबू मैसरा (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) ने बादशाहे मिस्र से फ़र्माया "क्या तू मेरे साथ खाना चाहता है? मैं यूसुफ़ बिन यअक़ूब

नबीअल्लाह बिन इस्हाक़ ज़बीहुल्लाह बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हूँ।" उबेद बिन उमेर से नक़्ल है हज़रत मूसा (ﷺ) ने जनाब बारी तआला में अर्ज़ की कि ऐ अल्लाह! क्या वजह है कि लोगों की ज़ुबानों पर यह चढ़ा हुआ है कि इब्राहीम इस्हाक़ और यअक़ूब (ﷺ) के अल्लाह की क़सम। तो जवाब मिला कि इसलिए कि इब्राहीम (ﷺ) ने तो हर हर चीज़ पर मुझ ही को तर्जीह दी और इस्हाक़ (ﷺ) ने अपने आपको मेरी राह में ज़िब्ह होने के लिए सुपुर्द कर दिया फिर भला और चीज़ें उसे पेश कर देना क्या मुश्किल थीं? और यअक़ूब (ﷺ) को मैं ज्यों ज्यों बलाओं में डालता गया उसका हुस्ने ज़न्न मेरे साथ बढ़ता ही रहा। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के सामने एक मर्तबा किसी ने फ़ख़्रन अपने बाप दादाओं का नाम लिया, तो आपने फ़र्माया, क़ाबिले फ़ख़्र बाप दादा तो हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) के थे जो यअक़ूब बिन इस्हाक़ ज़बीहुल्लाह बिन इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (ﷺ) थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) और ख़ुद अब्बास, अली (रज़ि.), इक्रिमा, सईद बिन जुबैर, मुजाहिद, शअबी, उबेद बिन उमेर, अबू मैसरा, ज़ेद बिन असलम, अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़, ज़ोहरी, क़ासिम बिन अबू बर्ज़ा, मक्हूल, उस्मान बिन अबी हाज़िर, सुद्दी, हसन, क़तादा, अबुल हज़ील, इब्ने साबित, कअब अहबार (रह.), इन सबका यही क़ौल है और इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को इख़्तियार करते हैं कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) थे।

सहीह इल्म तो अल्लाह तआला ही को है मगर बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इन सब बुज़ुर्गों के उस्ताद हज़रत कअब अहबार (रह.) हैं। यह ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में मुसलमान हुए थे और कभी कभी हज़रत उमर (रज़ि.) को क़दीमी किताबों की बातें सुनाते थे। लोगों ने उसे रुख़सत समझकर फिर उनसे हर एक बात बयान करनी शुरू कर दी और सही व ग़लत की तमीज़ उठ गई। हक़ तो यह है कि इस उम्मत को अगली किताबों की एक बात की भी हाजत नहीं। बग़वी (रह.) ने कुछ और नाम भी सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन (रह.) के बतलाए हैं, जिन्होंने कहा है कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) हैं। एक मरफ़ूअ हदीस में भी यह आया है अगर वह हदीस सही होती तो झगड़े का फ़ैसला था, (इसकी सनद में हसन बिन दीनार व अली बिन ज़ेद ज़ईफ़ रावी हैं जिस तरह कि हाफ़िज़ इब्ने कसीर (रह.) ने फ़र्माया है। लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) मगर वह हदीस सही नहीं, इसमें दो रावी ज़ईफ़ हैं, हसन बिन दीनार मतरूक हैं और अली बिन ज़ेद बिन जिदआन मुंकरुल हदीस हैं और ज़्यादा सही यह है कि है भी मौक़ूफ़। चुनाँचे एक सनद से यह मक़ूला हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का मरवी है और यही ज़्यादा ठीक है, वल्लाहु आलम! अब इन आसार को सुनिए जिनसे मालूम होता है कि ज़बीहुल्लाह इस्माईल (ﷺ) ही थे और यही ठीक और बिलकुल दुरुस्त भी है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) यही फ़र्माते हैं और फ़र्माते हैं यहूदी हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) का नाम ग़लत लेते हैं।

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के सामने जब मुहम्मद बिन कअब क़ुर्ज़ी (रह.) ने यह फ़र्माया और साथ ही उसकी दलील भी दी कि ज़िब्ह का ज़िक्र करने के बाद क़ुरआन में ख़लीलुल्लाह (ﷺ) को हज़रत इस्हाक़ (ﷺ) के पैदा होने की बशारत का ज़िक्र है और साथ ही बयान है कि उनके यहाँ भी लड़का होगा, यअ क़ूब नामी जब उनकी और उनके यहाँ लड़का होने की बशारत दी गई थी,

फिर बावजूद उनके यहाँ लड़का न होने के इससे पेशतर ही उनके ज़िब्ह करने का हुक्म कैसे दिया जाता? तो हज़रत उमर (रह.) ने फ़र्माया, यह बहुत साफ़ दलील है। मेरा ज़हन यहाँ नहीं पहुँचा था गोया मैं भी जानता था कि ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल (عليه السلام) ही हैं। फिर शाहे इस्लाम ने शाम के एक यहूदी आलिम से पूछा जो मुसलमान हो गए थे कि तुम इस बारे में क्या इल्म रखते हो? उन्होंने कहा कि, अमीरुल मुस्लिमीन! सच तो यह है कि जिनके ज़िब्ह करने का हुक्म दिया गया वह हज़रत इस्माईल (عليه السلام) थे लेकिन चूँकि अरब उनकी औलाद में से हैं तो यह बुज़ुर्गी उनकी तरफ़ लौटती है। इस हसद के मारे यहूदियों ने इसे बदल दिया, और हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) का नाम दे दिया। हक़ीक़ी इल्म अल्लाह तआला ही को है हमारा ईमान है कि हज़रत इस्माईल (عليه السلام) और हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) दोनों ही ताहिर व तय्यब और अल्लाह तआला के सच्चे फ़र्मांबरदार थे। किताबुज़्ज़ुहद में है कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह (रह.) ने अपने वालिद से जब यह मसला पूछा तो आपने जवाब दिया कि ज़िब्ह होने वाले हज़रत इस्माईल (عليه السلام) थे। हज़रत अली, हज़रत इब्ने उमर(रज़ि.), अबू तुफ़ैल, सईद बिन मुसय्यिब, सईद बिन जुबेर, हसन, मुजाहिद, शअबी, मुहम्मद बिन कअब, अबू हुरैरा, अबू जअफ़र मुहम्मद बिन अली, अबू सालेह (रहि.) से भी यही मरवी है।

इमाम बग़वी (रह.) ने और भी सहाबा (रज़ि.) और ताबेईन (रह.) के नाम गिनवाए हैं। एक ग़रीब हदीस भी इसी की ताईद में मरवी है। उसमें है कि शाम में अमीर मुआविया (रज़ि.) के सामने यह बहस छिड़ी कि ज़बीहुल्लाह कौन हैं? तो आपने फ़र्माया, ''अच्छा हुआ जो यह मामला मुझ जैसे बाख़बर शख़्स के पास आया। सुनो! हम हुज़ूर (ﷺ) के पास थे कि एक शख़्स आप (ﷺ) के पास आया और कहने लगा, ''ऐ दो अल्लाह तआला की राह में ज़िब्ह होने वालों की नस्ल के रसूल! मुझे भी माले ग़नीमत में से कुछ दिलवाइए।'' इस पर आप मुस्कुराये। एक तो ज़बीहुल्लाह हुज़ूर (ﷺ) के वालिद अब्दुल्लाह थे, दूसरे हज़रत इस्माईल (عليه السلام) जिनकी नस्ल से आप हैं। अब्दुल्लाह के ज़बीहुल्लाह होने का वाक़िया यह है कि आप (ﷺ) के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने जब चाहे ज़मज़म खुदवाया तो नज़्र मानी थी कि अगर यह काम आसानी से पूरा हो गया तो अपने एक लड़के को अल्लाह तआला की राह में ज़िब्ह करूँगा। जब काम हो गया और कुरआ अंदाज़ी की गई कि किस बेटे को अल्लाह तआला के नाम पर ज़िब्ह करें? तो हुज़ूर (ﷺ) के वालिद अब्दुल्लाह का नाम निकला। उनके ननिहाल वालों ने कहा आप इनकी तरफ़ से एक सौ ऊँट अल्लाह की राह में ज़िब्ह करें, चुनाँचे वह ज़िब्ह कर दिये गए।'' (हाकिम : 2/554; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; वक़ालज़्ज़हबी; इसकी इस्नाद में अब्दुल्लाह बिन सईद मज्हूल रावी है (अल्मीज़ान : 2/428; रक़म : 4348) और हज़रत इस्माईल (عليه السلام) के ज़बीहुल्लाह होने का वाक़िया तो मशहूर ही है। इब्ने जरीर में यह रिवायत मौजूद है और मग़ाज़ी अम्बिया में भी।

इब्ने जरीर (रह.) ने हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) के ज़बीहुल्लाह होने की एक दलील तो यह पेश की है कि जिस हलीम बच्चे की बशारत का ज़िक्र है उससे मुराद हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) हैं। कुरआन में और जगह है (وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ) (51/ज़ारियात : 28) और हज़रत यअक़ूब (عليه السلام) की बशारत का यह जवाब दिया

है कि वह आपके साथ चलने फिरने की उम्र को पहुँच गए थे और मुम्किन है कि यअ़कूब (अलैहि.) के साथ ही कोई और औलाद भी हुई हो। और कअ़बतुल्लाह में सींगों की मौजूदगी के बारे में फ़र्माते हैं, बहुत मुम्किन है कि यह बिलादे कन्आन से लाकर रखे गए हों। और कुछ लोगों से हज़रत इस्हाक़ (अलैहि.) के नाम की सराहत भी आई है। लेकिन यह सब बातें हक़ीक़त से बहुत दूर हैं। हाँ! हज़रत इस्माईल (अलैहि.) के ज़बीहुल्लाह होने पर मुहम्मद बिन कअ़ब कुर्ज़ी (रह.) का इस्तिदलाल बहुत साफ़ और क़वी है, वल्लाहु आलम! पहले ज़बीहुल्लाह हज़रत इस्माईल (अलैहि.) के पैदा होने की बशारत दी गई थी। यहाँ उसके बाद उनके भाई हज़रत इस्हाक़ (अलैहि.) की बशारत दी जा रही है। सूरह हूद और सूरह हिज्र में भी इसका ज़िक्र गुज़र चुका है (नबिय्यन) हाल मुक़द्दरा है यानी वह नबी सालेह होगा।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ज़बीह हज़रत इस्हाक़ (अलैहि.) थे और यहाँ नबुव्वते हज़रत इस्हाक़ (अलैहि.) की बशारत है। जैसे हज़रत मूसा (अलैहि.) के बारे में फ़र्मान है कि हमने उन्हें अपनी रहमत से उनके भाई हारून (अलैहि.) को नबी बना दिया। हालाँकि हज़रत हारून (अलैहि.) हज़रत मूसा (अलैहि.) से बड़े थे। तो यहाँ भी उनकी नबुव्वत की बशारत है। पस यह बशारत उस वक़्त दी गई जबकि इम्तिहान ज़िब्ह में वह साबिर साबित हुए। यह भी मरवी है कि यह बशारत दो बार दी गई, पैदाइश से पहले और नबुव्वत से कुछ पहले। हज़रत क़तादा (रह.) से भी यही मरवी है। उन पर और इस्हाक़ पर हमारी बरकतें नाज़िल हुईं। उनकी औलाद में हर क़िस्म के लोग हैं, नेक भी बद भी। जैसे हज़रत नूह (अलैहि.) से फ़र्मान हुआ था कि ऐ नूह (अलैहि.)! हमारे सलाम और बरकत के साथ तू उतर। तू भी और तेरे साथ वाले भी और ऐसे भी लोग हैं जिन्हें हम फ़ायदे पहुँचाएँगे। फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुँचेंगे।

***

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿۱۱۵﴾
وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۶﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَهَدَيْنٰهُمَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۱۸﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى
وَهٰرُوْنَ ﴿۱۲۰﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲۱﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने मूसा और हारून (अलैहि.) पर बहुत बड़ा एहसान किया। (114) और उन्हें और उनकी क़ौम को बहुत बड़े दुख दर्द से नजात दे दी। (115) और उनकी मदद करके उन ही

को ग़ालिब कर दिया। (116) और हमने उन्हें वाज़ेह और रोशन किताब दी। (117) और उन्हें सीधे रास्ते पर क़ायम रखा। (118) और हमने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात बाक़ी रखी (119) कि मूसा और हारून (عليه السلام) पर सलाम हो। (120) हमने नेक लोगों को इसी तरह बदले दिया करते हैं। (121) यक़ीनन यह दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे।" (122)

हज़रत मूसा (عليه السلام) और हारून (عليه السلام) का ज़िक्र (आ. 114 से 122) : अल्लाह तआला हज़रत मूसा (عليه السلام) और हारून (عليه السلام) पर अपनी नेअमतें जता रहा है कि उन्हें नबुव्वत दी और उन्हें उनकी क़ौम के साथ फ़िरऔन जैसे ताक़तवर दुश्मन से नजात दी। जिसने उन्हें बुरी तरह पस्त व ज़लील कर रखा था। उनके बच्चों को क़त्ल करा देता था और लड़कियों को रहने देता था, उनसे ज़लील ख़िदमात लेता था और बेहैसियत बना रखा था। ऐसे बदतरीन दुश्मन को उनके सामने हलाक किया। उन्हें उस पर ग़ालिब किया। उनकी ज़मीन और ज़र के यह मालिक बन गए। फिर हज़रत मूसा (عليه السلام) को वाज़ेह और जली, रोशन और बय्यन किताब इनायत की जो हक़ व बातिल में फ़र्क़ व फ़ैसला करने वाली और नूर व हिदायत वाली थी। और उनके बाद वालों में भी उनका ज़िक्रे ख़ैर और सना व सिफ़त बाक़ी रखी कि हर ज़ुबान उन पर सलाम पढ़ती है। हम नेककारों को यूँ ही और ऐसे ही बदले देते हैं। वह हमारे मोमिन बन्दे थे।

***

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۞ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ۞ اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا
وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ۞ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۞ فَكَذَّبُوْهُ
فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۞ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۞ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۞
سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ۞ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۞ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا
الْمُؤْمِنِيْنَ ۞

तर्जुमा : "बेशक इल्यास (عليه السلام) भी पैग़म्बरों में से थे। (123) जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि क्या तुम अल्लाह तआला से डरते नहीं। (124) क्या तुम बअ़ल नामी बुत से दुआएँ करते हो? और सबसे बेहतर ख़ालिक़ को छोड़ देते हो? (125) जो अल्लाह तआला तुम्हारा

और तुम्हारे अगले तमाम बाप दादों का पालनहार है। (126) लेकिन क़ौम ने उन्हें झुठलाया, पस वह अज़ाबों में हाज़िर किये जाएँगे। (127) सिवाय अल्लाह तआला के मुख़्लिस बन्दों के। (128) हमने इल्यास (ﷺ) का ज़िक्रे ख़ैर पिछलों में भी बाक़ी रखा। (129) कि इल्यास पर सलाम हो। हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं। (131) बेशक वह हमारे ईमान वाले बन्दों में से थे।'' (132)

हज़रत इल्यास (ﷺ) का ज़िक्र (आ. 123 से 132) : कुछ कहते हैं कि इल्यास नाम था हज़रत इदरीस (ﷺ) का। (तब्री : 21/95) वहब (रह.) कहते हैं कि उनका सिलसिल-ए-नसब यूँ है, इल्यास बिन नुसय बिन फुन्हास बिन ऐज़ार बिन हारून बिन इमरान (ﷺ)। (तब्री : 21/95) हज़क़ील (ﷺ) के बाद यह बनी इस्राईल में भेजे गए थे। वह लोग बअल नामी बुत के पुजारी बन गए। उन्होंने दावते इस्लाम दी। उनके बादशाह ने उनकी दावत को क़बूल भी कर लिया लेकिन फिर मुर्तद हो गया और लोग भी सरकशी पर तुले रहे और ईमान लाने से इंकार कर दिया। आप (ﷺ) ने उनके लिए बद् दुआ की। तीन साल तक बारिश न हुई। अब तो यह सब तंग आ गए और क़समें खा खाकर इक़रार किया कि आप दुआ कीजिए, बारिश के होते ही हम सब आपकी नबुव्वत पर ईमान ले आएँगे। चुनाँचे आप (ﷺ) की दुआ से बारिश बरसी, लेकिन यह कुफ़्फ़ार अपने वादे से फिर गए और अपने कुफ़्र पर अड़ गए। आप (ﷺ) ने यह हालत देखकर अल्लाह तआला से दुआ की कि अल्लाह तआला इन्हें अपनी तरफ़ ले ले। उनके हाथों तले हज़रत यसअ बिन उख़्तूब (ﷺ) पले थे। हज़रत इल्यास (ﷺ) की इस दुआ के बाद उन्हें हुक्म मिला कि वह एक जगह जाएँ और वहाँ उन्हें जो सवारी मिले उस पर सवार हो जाएँ। वहाँ आप (ﷺ) गए एक नूरी घोड़ा दिखाई दिया जिस पर सवार हो गए। अल्लाह तआला ने उन्हें भी नूरानी कर दिया और अपने परों से फ़रिश्तों के साथ उड़ने लगे और एक इंसानी फ़रिश्ता ज़मीनी और आसमानी बन गए। इसकी सेह्हत का इल्म अल्लाह तआला ही को है। है यह बात अहले किताब की रिवायत से है। हज़रत इल्यास (ﷺ) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि क्या तुम अल्लाह तआला से डरते नहीं हो? कि उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो! अहले यमन और क़बीला अज़्दे शनुआ रब को बअल कहते थे। (तब्री : 21/96) बअल नामी जिस बुत की यह पूजा करते थे वह एक औरत थी। उनके शहर का नाम भी बअलबक था। (तब्री : 21/97)

तो अल्लाह तआला के नबी हज़रत इल्यास (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ताज्जुब है कि तुम अल्लाह को छोड़कर जो ख़ालिक़े कुल है और बेहतरीन ख़ालिक़ है, एक बुत को पूज रहे हो और उसको पुकारते रहते हो। अल्लाह तआला तुम सबका और तुमसे अगलों का भी रब तआला है वही मुस्तहिक़े इबादत है। उसके सिवा किसी क़िस्म की इबादत किसी के लायक़ नहीं।

लेकिन उन लोगों ने अल्लाह तआला के प्यारे नबी की उस साफ़ और ख़ैरख़्वाहाना नसीहत को न माना तो अल्लाह तआला ने भी उन्हें अज़ाब पर हाज़िर कर दिया कि क़ियामत के दिन उनसे ज़बरदस्त पूछताछ

और उन पर सख़्त अज़ाब होंगे। हाँ! उनमें से जो तौहीद पर क़ायम थे, वह बच रहेंगे।

हमने (हज़रत) इल्यास की सनाए जमील और ज़िक्रे ख़ैर पिछले लोगों में भी बाक़ी रखा कि हर मुस्लिम की जुबान से उन पर दुरूदो सलाम भेजा जाता है। लफ़्ज़े इल्यास में दूसरा लुग़त इल्यासीन है। जैसे इस्माईल में इस्माईन बनू असद में इसी तरह यह लुग़त है। एक तमीमी के शेअर में भी यह लुग़त इस तरह लाया गया है।

मीकाईल को मीकाल और मीकाईन भी कहा जाता है, इब्राहीम को इब्राहाम, इस्राईल को इस्राईन, तूरे सीना को तूरे सीनीन। ग़र्ज़ यह लुग़त अरब में मशहूर व राइज है।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में (सलामुन अ़ला आले यासीन) है। कुछ कहते हैं कि इससे मुराद हुज़ूर (ﷺ) हैं। हम इसी तरह नेककारों को नेक बदला देते हैं। यक़ीनन वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। इस जुम्ला की तफ़्सीर गुज़र चुकी है, वल्लाहु आलम!

***

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۱۳۳ اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ۱۳۴ اِلَّا عَجُوْزًا فِي
الْغٰبِرِيْنَ ۱۳۵ ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۱۳۶ وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ۱۳۷
وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۱۳۸ وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۱۳۹ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ
الْمَشْحُوْنِ ۱۴۰ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۱۴۱ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ
۱۴۲ فَلَوْلَاۤ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۱۴۳ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۱۴۴
فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ۱۴۵ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۱۴۶ وَاَرْسَلْنٰهُ
اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۱۴۷ فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۱۴۸

तर्जुमा :"बेशक लूत (ﷺ) भी पैग़म्बरों में से थे। (133) हमने उन्हें और उनके मुतअल्लिक़ीन सबको नजात दी। (134) सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गई। (135) फिर हमने सबको हलाक कर दिया। (136) और तुम तो सुबह होने पर उनकी बस्तियों के पास से गुज़रते हो। (137) और रात को भी। क्या फिर भी नहीं समझते? (138) बतहक़ीक़ यूनुस (ﷺ) नबियों में से थे। (139) जब भाग पहुँचा भरी कश्ती पर। (140) फिर क़ुरआ अंदाज़ी हुई यह मग़लूब हो गए। (141) फिर तो उसे मछली ने निगल लिया और वह ख़ुद अपने आपको मलामत करने लग गए। (142) पस अगर यह पाकी बयान करने वालों में से न होता। (143) तो मुर्दे ज़िन्दा किये जाएँ उस दिन तक उसके पेट में ही रहता। (144) पस उसे हमने चटयल मैदान में डाल दिया और वह उस वक़्त बीमार था। (145) और उस पर साया करने वाला कद्दू की क़िस्म का एक दरख़्त हमने उगा दिया। (146) और हमने उसे एक लाख बल्कि और ज़्यादा आदमियों की तरफ़ भेजा। (147) पस वह ईमान लाए और हमने उन्हें एक ज़माना तक ऐशो इशरत दी।" (148)

हज़रत लूत (ﷺ) का ज़िक्र (आ. 133 से 148) : अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हज़रत लूत (ﷺ) का बयान हो रहा है कि उन्हें भी उनकी क़ौम ने झुठलाया, जिस पर अल्लाह तआला के अज़ाब बरस पड़े। और अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी हज़रत लूत (ﷺ) को उनके घरवालों के साथ नजात दे दी लेकिन उनकी बीवी ग़ारत हुई, क़ौम के साथ ही हलाक हुई, और सारी क़ौम भी तबाह हुई। क़िस्म क़िस्म के अज़ाब उन पर आये और जिस जगह वह रहते थे वहाँ एक बदबूदार झील बन गई। जिसका पानी बद मज़ा और बदबूदार, बद रंग है। जो ऐन आमद व रफ़्त के रास्ते में ही पड़ती है। तुम तो दिन रात वहाँ से आते जाते रहते हो और उस ख़ौफ़नाक मंज़र और भयानक मक़ाम को सुबह शाम देखते रहते हो। क्या इस मुआयना के बाद भी इब्रत हासिल नहीं करते और सोचते समझते नहीं हो? कि किस तरह यह बर्बाद कर दिये गए? ऐसा न हो कि यही अज़ाब तुम पर भी आ जाएँ।

ज़िक्रे यूनुस (ﷺ) : हज़रत यूनुस (ﷺ) का क़िस्सा सूरह यूनुस में बयान हो चुका है। बुख़ारी व मुस्लिम में हदीस है कि किसी बन्दे को यह लायक़ नहीं कि वह कहे, मैं यूनुस बिन मत्ता से अफ़ज़ल हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व इन्ना यूनुसा ल मिनल मुर्सलीन) : 3416; सहीह मुस्लिम : 2376; अहमद : 1/254; इब्ने हिब्बान : 6241) यह नाम मुम्किन है कि आप (ﷺ) की वालिदा का हो और यह भी हो सकता है कि वालिद का हो। यह भागकर माल व अस्बाब से लदी हुई कश्ती में सवार हो गए। वहाँ क़ुरआ अंदाज़ी हुई, और यह हार गए। कश्ती के चलते ही चारों तरफ़ से लहरें उठीं और सख़्त तूफ़ान आया। यहाँ तक कि सबको अपनी मौत का और कश्ती के डूब जाने का यक़ीन हो गया। सब आपस में कहने लगे कि क़ुरआ डालो जिसके नाम का क़ुरआ निकले उसको समुन्द्र में डाल दो ताकि सब बच

जाएँ और कश्ती इस तूफ़ान से छूट जाए। तीन बार कुरआ अंदाज़ी हुई और तीनों बार अल्लाह तआला के प्यारे पैग़म्बर हज़रत यूनुस (عليه السلام) का ही नाम निकला। अहले कश्ती आप (عليه السلام) को पानी में बहाना नहीं चाहते थे लेकिन क्या करते बार बार की कुरआ अंदाज़ी पर भी आपका ही नाम निकलता रहा और फिर आप (عليه السلام) ख़ुद कपड़े उतारकर उन लोगों के रोकने के बावजूद समुन्द्र में कूद पड़े। उसी वक़्त बहरे अख़ज़र की एक बहुत बड़ी मछली को जनाब बारी तआला का फ़र्मान सादिर हुआ कि वह दरियाओं को चीरती फाड़ती जाए और (हज़रत) यूनुस को निगल ले, लेकिन न तो उनका जिस्म ज़ख़्मी हो और न कोई हड्डी टूटे। चुनाँचे उस मछली ने अल्लाह तआला के पैग़म्बर को निगल लिया और समुन्द्रों में चलने फिरने लगी। जब हज़रत यूनुस (عليه السلام) पूरी तरह मछली के पेट में जा चुके, तो आप (عليه السلام) को ख़्याल गुज़रा कि मैं मर चुका हूँ। लेकिन जब हाथों और पैरों को हरकत दी और वह हिले जुले तो ज़िन्दगी का यक़ीन करके वहीं खड़े होकर नमाज़ शुरू कर दी और अल्लाह तआला से अर्ज़ की कि ऐ परवरदिगार! मैंने तेरे लिए उस जगह को मस्जिद बनाया है जहाँ कोई न पहुँचा होगा। तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन या एक दिन से भी कुछ कम या सिर्फ़ एक रात तक मछली के पेट में रहे। अगर यह हमारी पाकीज़गी बयान करने वालों में से न होते, यानी जबकि फ़राख़ी और कुशादगी और अम्नो अमान की हालत में थे उस वक़्त की उनकी नेकियाँ अगर न होतीं। एक हदीस भी इस क़िस्म की है जो अन्क़रीब बयान होगी, इंशाअल्लाह तआला।

इब्ने अब्बास (रज़ि.) की हदीस में है कि "आराम व राहत के वक़्त अल्लाह तआला की इबादत करो तो वह सख़्ती और बेचेनी के वक़्त तुम्हारी फ़िक्र करेगा।" (अहमद : 1/307; और इसकी सनद हसन है।) यह भी कहा गया है कि अगर यह पाबन्दे नमाज़ न होते। और यह भी कहा गया है कि अगर मछली के पेट में नमाज़ न पढ़ते और यह भी कहा गया है कि अगर यह (لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبْحَٰنَكَ إِنِّى كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ) (21/अम्बिया : 87) के साथ हमारी तस्बीह न करते। (तब्री : 21/110) चुनाँचे कुरआने करीम की और आयतों में है कि उसने अंधेरों में यही कलिमात कहे और हमने उसकी दुआ क़बूल करके उसे ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम मोमिनों को नजात देते हैं। इब्ने अबी हातिम की एक हदीस में है कि हज़रत यूनुस (عليه السلام) ने जब मछली के पेट में इन कलिमात को कहा तो यह दुआ अर्शे इलाही के आसपास मँडराने लगी और फ़रिश्तों ने कहा, इलाही! यह आवाज़ तो कहीं बहुत ही दूर की है, लेकिन इस आवाज़ से हमारे कान आशना ज़रूर हैं। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, अब भी पहचान लिया यह किसकी आवाज़ है? उन्होंने कहा, नहीं पहचाना। फ़र्माया, यह मेरे बन्दे यूनुस की आवाज़ है। फ़रिश्तों ने कहा, वही यूनुस (عليه السلام)! जिनके नेक आमाल और मक़्बूल दुआएँ हमेशा आसमान पर चढ़ती रहती हैं? ऐ अल्लाह! उन पर तू ज़रूर रहम कर, उनकी दुआ क़बूल कर ले वह तो आसानियों में भी तेरा नाम लिया करते थे, उनको बला से नजात दे। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़र्माया, हाँ! मैं उसे नजात दूँगा। चुनाँचे मछली को हुक्म हुआ कि मैदान में हज़रत यूनुस (عليه السلام) को उगल दे, और उसने उगल दिया और वहीं अल्लाह तआला ने उन पर उनकी नहीफ़ी और कमज़ोरी और बीमारी की वजह से छाँव के लिए कद्दू की बेल उगा दी और एक जंगली बकरी को मुक़र्रर कर दिया। (तब्री : 21/110)

जो सुबह शाम उनके पास आ जाती थी और यह उसका दूध पी लिया करते थे।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत से यह वाक़ियात मरफ़ूअ अहादीस से सूरह अम्बिया की तफ़्सीर में बयान हो चुके हैं। हमने उन्हें उस ज़मीन में डाल दिया, जहाँ सब्ज़ा, रूइदगी और घास कुछ न था। दजला के किनारे या यमन की सरज़मीन पर यह डाल दिये गए थे। यह उस वक़्त कमज़ोर थे जैसे परिन्दों के बच्चे होते हैं, या बच्चा जिस वक़्त पैदा होता है। यानी सिर्फ़ साँस चल रहा था और ताक़त हिलने जुलने की भी नहीं थी। ''यक़्तीन'' कद्दू की बेल को भी कहते हैं। (तब्री :21/113) और हर उस दरख़्त को जिसका तना न हो यानी बेल हो, और उस दरख़्त को भी जिसकी उम्र एक साल से ज़्यादा नहीं होती। कद्दू में बहुत से फ़वाइद हैं, यह बहुत जल्द उगता और बढ़ता है, इसके पत्तों का साया घना और फ़रहत बख़्श होता है क्योंकि वह बड़े बड़े होते हैं और उसके पास मक्खियाँ नहीं आतीं और यह ग़िज़ा का काम देता है, और छिल्के और गूदे समेत खाया जाता है। सहीह हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) को कद्दू यानी घिया बहुत पसंद था और बर्तन में से चुन चुनकर उसे खाते थे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल बुयूअ, बाबुल ख़ियात : 2092; सहीह मुस्लिम : 2041) फिर उन्हें एक लाख बल्कि ज़्यादा आदमियों की तरफ़ रिसालत के साथ भेजा गया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि इससे पहले आप (عليه السلام) रसूल न थे। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं मछली के पेट में जाने से पहले ही आप उस क़ौम की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए थे। दोनों क़ौलों से इस तरह तज़ाद उठ सकता है कि पहले भी उनकी तरफ़ भेजे गए थे अब दोबारा भी उन ही की तरफ़ भेजे गए और वह सब ईमान लाए और आप (عليه السلام) की तस्दीक़ की। बग़वी (रह.) कहते हैं कि मछली के पेट से नजात पाने के बाद दूसरी क़ौम की तरफ़ भेजे गए थे। यहाँ अव बल्कि के मअनी में इस्तेमाल हुआ है और वह एक लाख तीस हज़ार या उससे भी कुछ ऊपर या एक लाख चालीस हज़ार से भी ज़्यादा, या सत्तर हज़ार से भी बढ़कर, या एक लाख दस हज़ार, और एक ग़रीब मरफ़ूअ हदीस की रू से एक लाख बीस हज़ार थे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिस्साफ़्फ़ात : 3229; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में एक रावी मज्हूल है।) यह मतलब भी बयान किया गया है कि इंसानी अंदाज़ा एक लाख से ज़्यादा ही ज़्यादा का था। इब्ने जरीर (रह.) का यही मस्लक है और यही मस्लक उनका आयत (أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً) (2/बक़रह : 74) और आयत (أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً) (4/निसाअ : 77) और आयत (أَوْ أَدْنَىٰ) (53/नज्म : 9) में है यानी इससे कम नहीं, इससे ज़ाइद ही। पस क़ौमे यूनुस सबके सब मुसलमान हो गई। हज़रत यूनुस (عليه السلام) की तस्दीक़ की, और अल्लाह तआला पर ईमान ले आए। हमने भी उनके मुक़र्ररा वक़्त यानी मौत की घड़ी तक दुनियावी फ़ायदे दिये। और आयत में है कि किसी बस्ती के ईमान ने उन्हें (अज़ाब के आने के बाद) नफ़ा नहीं दिया सिवाय क़ौमे यूनुस के। वह जब ईमान लाए तो हमने उन पर से अज़ाब को हटा लिया और उन्हें एक म्यादे मुअय्यन तक बहरामंद किया।

***

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ ﴿١٤٩﴾ اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ﴿١٥٠﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾ وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ
﴿١٥٢﴾ اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾ مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ
﴿١٥٥﴾ اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾ فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ
وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۭ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾

तर्जुमा : ''इनसे पूछ तो सही कि क्या तेरे रब तआला की तो बेटियाँ हैं? और इनके बेटे हैं? (149) या यह उस वक़्त मौजूद थे जबकि हमने फ़रिश्तों को मुअन्नस पैदा किया? (150) आगाह रहो कि यह लोग सिर्फ़ अपनी इफ़्तिरा परदाज़ी से कह रहे हैं। (151) कि अल्लाह तआला की औलाद है। यक़ीनन यह सिर्फ़ झूठे हैं।(152) क्या अल्लाह तआला ने अपने लिए बेटियों को बेटों पर तर्जीह दी? (153) तुम्हें क्या हो गया है कि कैसे हुक्म लगाते फिरते हो। (154) क्या तुम इस क़द्र भी नहीं समझते? (155) या तुम्हारे पास इसकी कोई साफ़ दलील है, (156) तो जाओ अगर सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ। (157) इन लोगों ने तो अल्लाह तआला के और जिन्नात के बीच भी रिश्तेदारी ठहरा दी है। और हालाँकि ख़ुद जिन्नात यक़ीन रखते हैं कि इस अक़ीदे के लोग अज़ाबों के सामने पेश किये जाएँगे। (158) जो कुछ यह बयान कर रहे हैं इससे अल्लाह तआला बिलकुल पाक है (159) हाँ! अल्लाह तआला के मुख़्लिस बन्दे।'' (160)

मुश्रिक का कहना कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं (नऊज़ुबिल्लाह) (आ. 149 से 160) : अल्लाह तआला मुश्रिकों की बेवक़ूफ़ी बयान कर रहा है कि अपने लिए तो लड़कों को पसंद करते हैं और अल्लाह तआला के लिए लड़कियाँ मुक़र्रर करते हैं। अगर लड़की होने की ख़बर पाएँ तो चेहरे काले पड़ जाते हैं और अल्लाह तआला की लड़कियाँ साबित करते हैं। पस फ़र्माता है कि इनसे पूछो तो सही कि यह तक़्सीम कैसी है कि तुम्हारे लिए तो लड़के हों और अल्लाह तआला के लिए लड़कियाँ हों। फिर फ़र्माता है कि यह

फ़रिश्तों को लड़कियाँ किस सबूत पर कहते हैं? क्या उनकी पैदाइश के वक़्त वह मौजूद थे। कुरआन की और आयत (وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ) (43/जुख़्रुफ़ : 19) में भी यही बयान है।

दरअसल यह क़ौल इनका सिर्फ़ झूठ है कि अल्लाह तआला के यहाँ औलाद है। वह औलाद से पाक है। पस इन लोगों के तीन झूठ और तीन कुफ़्र हुए। पहला तो यह कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला की औलाद हैं और दूसरे यह कि औलाद भी लड़कियाँ, तीसरे यह कि ख़ुद फ़रिश्तों की इबादत शुरू कर दी। फिर फ़र्माता है कि आख़िर किस चीज़ ने अल्लाह तआला को मजबूर किया कि उसने लड़के तो लिए नहीं और लड़कियाँ अपनी ज़ात के लिए पसंद कीं? जैसे और आयत में है कि तुम्हें तो लड़कों से नवाज़े और फ़रिश्तों को अपनी बेटियाँ बनाए यह तो तुम्हारी निहायत दर्जा की लग़्व बात है। यहाँ फ़र्माया, क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते जो ऐसी दूर अज़्क़यास बातें बनाते हो, तुम समझते नहीं हो कि अल्लाह तआला पर झूठ बाँधना कैसा बुरा है? अच्छा अगर कोई दलील तुम्हारे पास हो तो लाओ उसी को पेश करो, या अगर किसी आसमानी किताब से तुम्हारे इस क़ौल की सनद हो और तुम सच्चे हो तो लाओ उसी को सामने ले आओ! यह तो ऐसी लच्चर और फ़िज़ूल बात है जिसकी कोई अ़क़्ली या नक़्ली दलील हो ही नहीं सकती। और इतने ही पर बस न किया बल्कि जिन्नात में और अल्लाह तआला में भी रिश्तेदारी क़ायम कर दी।

मुश्रिकों के इस क़ौल पर कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला की बेटियाँ हैं, हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने सवाल किया "फिर उनकी माएँ कौन हैं?" तो उन्होंने कहा, जिन्न सरदारों की लड़कियाँ।" (तब्री : 21/121) हालाँकि ख़ुद जिन्नात को इसका इल्म और यक़ीन है कि इस क़ौल के क़ाइल क़ियामत के दिन अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाएँगे। उनमें कुछ दुश्मनाने अल्लाह तो यहाँ तक कमअक़्ली करते थे कि शैतान भी अल्लाह तआला का भाई है। (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक)

अल्लाह तआला इससे बहुत पाक और मुनज़्ज़ा और बिलकुल दूर है, जो यह मुश्रिक उसकी ज़ात पर बोहतान लगाते हैं , और झूठे बोहतान बाँधते हैं, उसके बाद का इस्तिस्ना मुन्क़तअ़ है और है यह मुस्बत से, मगर इस सूरत में कि (यसिफ़ून) की ज़मीर का मरजअ़ तमाम लोग क़रार दिये जाएँ। पस उनमें से उन लोगों को अलग कर लिया जो हक़ को मानने वाले हैं, और तमाम नबियों और रसूलों पर ईमान रखते हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि यह इस्तिस्ना (इन्नहुम ल मुहज़रून) से है। यानी यह सबके सब अ़ज़ाब में फाँस लिये जाएँगे, मगर वह अल्लाह के बन्दे जो इख़्लास वाले थे। यह क़ौल ज़रा ताम्मुल तलब है, वल्लाहु आलम!

***

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿١٦١﴾ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ﴿١٦٢﴾ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ﴿١٦٣﴾
وَمَا مِنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ﴿١٦٤﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُّونَ ﴿١٦٥﴾ وَإِنَّا لَنَحْنُ
الْمُسَبِّحُونَ ﴿١٦٦﴾ وَإِن كَانُوا لَيَقُولُونَ ﴿١٦٧﴾ لَوْ أَنَّ عِندَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا
عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٩﴾ فَكَفَرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧٠﴾

तर्जुमा : ''यक़ीन मानो कि तुम सब और तुम्हारे मअ़बूदाने बातिल ।(161) किसी एक को भी बहका नहीं सकते (162) सिवाय उसके जो दोज़ख़ी ही है।(163) (फ़रिश्तों का क़ौल है) हममें से तो हर एक की जगह मुक़र्रर है। (164) और हम तो अल्लाह तआला की बन्दगी में सफ़बस्ता खड़े हैं। (165) और उसकी तस्बीह बयान कर रहे हैं। (166) कुफ़्फ़ार तो कहा करते थे। (167) कि अगर हमारे सामने अगले लोगों के वाक़ियात होते। (168) तो हम भी अल्लाह तआला के चुनिन्दा बन्दे बन जाते। (169) लेकिन फिर इस क़ुरआन के साथ कुफ़्र कर गए पस अब अन्क़रीब जान लेंगे।'' (170)

मुश्रिकों का अंजाम (आ. 161 से 170) : अल्लाह तआला मुश्रिकों से फ़र्मा रहा है कि तुम्हारी गुमराही और कुफ़्र और शिर्क की ता'लीम वही क़बूल करेंगे जो जहन्नम के लिए ही पैदा किये गए हों। जो अ़क़्ल से ख़ाली, कानों से बहरे और आँखों के अंधे हों । जो मिस्ल चौपायों के बल्कि उनसे भी कई दर्जा बदतर हों। जैसे और जगह फ़र्माया है कि इससे वही गुमराह हो सकते हैं जो दिमाग़ से ख़ाली और बातिल के शैदाई हों। उसके बाद फ़रिश्तों की बराअत और उनकी तस्लीम व रज़ा, ईमान व इताअ़त का ज़िक्र किया कि वह ख़ुद कहते हैं कि हममें से हर एक के लिए एक मुक़र्रर जगह और एक मक़ामे इबादत मख़्सूस है, जिससे न हम हट सकते हैं, न उसमें कमी बेशी कर सकते हैं। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि आसमान चरचरा रहा है और वाक़ेई उसे चरचराना भी चाहिए। उसमें एक क़दम रखने की भी जगह बाक़ी नहीं, जहाँ कोई न कोई फ़रिश्ता रुकूअ़, सज्दे में मसरूफ़ न हो। फिर आप (ﷺ) ने इन तीनों आयतों की तिलावत की। (किताबुस्सलात, लि इब्ने नस्र : 255; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है; व लहू तरीक़ुन आख़र अन हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि.), और इसकी सनद ज़ईफ़ है और हदीस तिर्मिज़ी : 2312) युग़नी अ़न्हू) एक रिवायत में ''आसमाने दुनिया'' का लफ़्ज़ है। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि एक बालिश्त भर जगह आसमानों में ऐसी नहीं जहाँ पर किसी न किसी फ़रिश्ते के क़दम या पेशानी न हो। (तबरी : 21/127; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीही अन्अनतुल मुदल्लिस)

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं पहले तो मर्द और औरत एक साथ नमाज़ पढ़ते थे लेकिन इस आयत के नुज़ूल के बाद मर्दों को आगे बढ़ा दिया गया और औरतों को पीछे कर दिया गया। और हम सब फ़रिश्ते सफ़बस्ता अल्लाह तआला की इबादत किया करते हैं। आयत (وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا) (37/साफ़्फ़ात : 1) की तफ़्सीर में इसका बयान गुज़र चुका है।

वलीद बिन अब्दुल्लाह (रह.) फ़र्माते हैं कि इस आयत के नाज़िल होने तक नमाज़ की सफ़ें नहीं थीं फिर सफ़ेंमुक़र्रर हो गईं। हज़रत उमर (रज़ि.) इक़ामत के बाद लोगों की तरफ़ मुँह करके फ़र्माते थे कि ''सफ़ें पूरे तौर पर सही कर लो और सीधे खड़े हो जाओ। अल्लाह तआला तुमसे भी फ़रिश्तों की तरह सफ़बन्दी चाहता है जैसे कि वह फ़र्माते हैं (व इन्ना ल नह्नुस्साफ़्फ़ून) ''ऐ फ़लाँ! आगे बढ़ और ऐ फ़लाँ! पीछे हट।'' फिर आगे बढ़कर नमाज़ शुरू करते। (तब्री : 21/128) (इब्ने अबी हातिम) सहीह मुस्लिम मेंहै कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''हमको तीन फ़ज़ीलतें ऐसी दी गई हैं जिनमें और कोई हमारे साथ नहीं। हमारी सफ़ें फ़रिश्तों जैसी बनाई गई हैं। हमारे लिए सारी ज़मीन मस्जिद बनाई गई है। और हमारे लिए ज़मीन की मिट्टी पाक करने वाली बनाई गई....।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मसाजिद व मवाज़िउस्सलात : 522; सुननुल कुब्रा : 8022; अहमद : 5/383; इब्ने हिब्बान : 1697; बैहक़ी : 1/213) हम अल्लाह तआला की तस्बीह और पाकी बयान करने वाले हैं। उसकी बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान करते हैं, तमाम नुक़्सानों से उसे पाक मानते हैं। हम सब फ़रिश्ते उसके गुलाम हैं, उसके मोहताज हैं, उसके सामने अपनी पस्ती और आजिज़ी का इज़्हार करने वाले हैं। पस यह तीनों औसाफ़ फ़रिश्तों के हैं। यह भी कहा गया है कि तस्बीह करने वालों से मुराद नमाज़ पढ़ने वाले हैं। और आयत में है (وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ) (19/मरयम : 88) यानी कुफ़्फ़ार ने कहा अल्लाह तआला की औलाद है। अल्लाह तआला इससे पाक है। अल्बत्ता फ़रिश्ते उसके मुहतरम बन्दे हैं, उसके फ़र्मान से आगे नहीं बढ़ते। उसके अहकाम पर अमल करते हैं। वह उनका आगा पीछा बख़ूबी जानता है। वह किसी की शफ़ाअत का भी इख़्तियार नहीं रखते सिवाय उसके जिसके लिए रहमान राज़ी हो। वह तो ख़ौफ़े इलाही से थरथराते रहते हैं। उनमें से जो अपने आपको लायक़े इबादत कहे, हम उसे जहन्नम में झोंक दें। ज़ालिमों की सज़ा हमारे यहाँ यही है। नबी (ﷺ) उनके पास आएँ, इससे पहले तो यह कहते थे कि अगर हमारे पास कोई आता जो हमें राहे इलाही की ता'लीम देता और हमारे सामने अगले लोगों के वाक़ियात बतौरे नसीहत पेश करता और हमारे पास किताबुल्लाह ले आता, तो यक़ीनन हम मुख़्लिस मुसलमान बन जाते।

जैसे और आयत में है (وَاَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ) (6/अन्आम : 109), यानी बड़ी पुख़्ता क़समें खा खाकर कहते थे कि अगर कोई अल्लाह तआला का नबी हमारी मौजूदगी में आ जाए तो हम इताअत क़बूल कर लेंगे और राहे हिदायत की तरफ़ से सबसे पहले दौड़ेंगे लेकिन जब अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) आ गए तो भाग खड़े हुए और एक आयत में फ़र्माया (اَنْ تَقُوْلُوْا اِنَّمَا اُنْزِلَ) (6/अन्आम : 156) पस यहाँ फ़र्माया कि जब यह तमन्ना पूरी हुई तो कुफ़्र करने लगे। अब उन्हें अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि अल्लाह तआला से कुफ़्र करने का और नबी (ﷺ) को झुठलाने का क्या नतीजा निकलता है।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَإِنَّ
جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ
﴿١٧٥﴾ أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ
﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

तर्जुमा : ''अल्बत्ता हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए स़ादिर हो चुका है। (171) कि वह ही मुज़फ़्फ़र व मंसूर होंगे। (172) और हमारा ही लश्कर ग़ालिब और बरतर रहेगा। (173) अब तू कुछ दिनों तक इनसे मुँह फेर ले। (174) और इन्हें देखता रह और यह भी आगे चलकर देख लेंगे। (175) क्या यह हमारे अ़ज़ाबों की जल्दी मचा रहे हैं? (176) सुनो! जब हमारा अ़ज़ाब इनके मैदानों में उतर आएगा उस वक़्त उनकी जिनको मुतनब्बा कर दिया गया था बड़ी बुरी सुबह होगी। (177) तू कुछ वक़्त तक इनका ख़याल छोड़ दे। (178) और देखता रह यह भी अभी अभी देख लेंगे।'' (179)

अल्लाह का लश्कर हमेशा ग़ालिब रहेगा (आ. 171 से 179) : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है कि हम तो अगली किताबों मे भी लिख आए हैं पहले नबियों की ज़ुबानी भी दुनिया को सुना चुके हैं कि दुनिया और आख़िरत में हमारे रसूल और उनके ताबेदारों ही का अंजाम बेहतर होता है। जैसे फ़र्माया (كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ) (58/मुजादिला : 21) और फ़र्माया (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا) (40/ग़ाफ़िर : 51) यानी मेरे रसूल और ईमान वाले ही दोनों जहान में ग़ालिब रहेंगे। यहाँ भी यही फ़र्माया कि रसूलों से हमारा वादा हो चुका है कि वह मंसूर हैं। हम ख़ुद इनकी मदद करेंगे। देखते चले आओ कि इनके दुश्मन किस त़रह़ ख़ाक में मिला दिये गए? याद रखो हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहेगा, अंजामकार उन ही के हाथ रहेगा। तू एक वक़्ते मुक़र्ररा तक स़ब्र व इस्तिक़ामत से इनका मामला देखता रह, इनकी ईज़ारसानी पर स़ब्र कर, हम तुझे इन सब पर ग़ालिब कर देंगे। दुनिया ने देख लिया कि यही हुआ भी। नीज़ तू इन्हें देखता रह कि किस त़रह़ अल्लाह तआ़ला की पकड़ इन पर नाज़िल होती है और किस त़रह़ यह ज़िल्लत व तौहीन के साथ पकड़ लिए जाते हैं। यह ख़ुद इन तमाम रुस्वाइयों को अभी अभी देख लेंगे। ताज्जुब सा ताज्जुब है कि यह बावजूद त़रह़ त़रह़ के छोटे छोटे अ़ज़ाबों की गिरफ़्त के अभी तक बड़े अ़ज़ाब को मह़ाल जानते हुए कहते हैं कि वह कब आएगा? पस उन्हें जवाब मिलता है कि जब अ़ज़ाब उनके मैदानों में, मह़लों में, अंगनाइयों में आएगा, वह दिन उन पर बड़ा ही भारी दिन होगा। हलाक और बर्बाद कर दिये जाएँगे।

सहीह बुख़ारी में है कि ख़ैबर के मैदानों में हुज़ूर (ﷺ) का लश्कर सुबह ही सुबह कुफ़्फ़ार की बेख़बरी में पहुँच गया। वह लोग हस्बे आदत अपने खेतों के आलात लेकर शहर से निकले और उस रब्बानी फ़ौज को देखकर भागे और शहर वालों को ख़बर की। उस वक़्त आप (ﷺ) ने यही फ़र्माया कि "अल्लाह तआला बहुत बड़ा है, ख़ैबर बर्बाद हुआ। हम जब किसी क़ौम के मैदानों में उतर आते हैं उस वक़्त उनकी दुर्गत होती है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्व-ए-ख़ैबर : 4197; सहीह मुस्लिम : 1365; अहमद : 3/101) फिर दोबारा पहले हुक्म की ताकीद की कि तू इनसे एक मुद्दते मुअय्यन तक के लिए बेपरवाह हो जा और इन्हें छोड़ दे और देखता रह यह भी देख लेंगे।

***

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

तर्जुमा :"पाक है तेरा रब! जो बहुत बड़ी इज़्ज़त वाला है हर उस चीज़ से जो यह मुश्रिक बयान करते हैं। (180) पैग़म्बरों पर सलाम है। (181) और सब तरह की ता'रीफ़ अल्लाह तआला के लिए है जो सारे जहान का रब है।" (182)

अल्लाह तआला की हम्दो सना और पैग़म्बरों पर सलाम (आ. 180 से 182) : अल्लाह तआला उन तमाम चीज़ों से अपनी बराअत बयान करता है जो मुश्रिकीन उसकी तरफ़ मंसूब करते थे, जैसे औलाद, शरीक वग़ैरह। वह बहुत बड़ी और लाज़वाल इज़्ज़त वाला है। इन झूठे और मुफ़्तरी लोगों के बोहतान से पाक और मुनज़्ज़ा है। अल्लाह तआला के रसूलों पर सलाम है। इसलिए कि इनकी तमाम बातें उन ड़यूब से सालिम हैं जो मुश्रिकों की बातों में मौजूद हैं। बल्कि नबियों की बातें और जो औसाफ़ वह ज़ाते इलाही के बयान करते हैं सब सही और बरहक़ हैं। उसी की ज़ात के लिए तमाम हम्दो सना सज़ावार है। दुनिया और आख़िरत में इब्तिदा और इंतिहा का वही सज़ावारे ता'रीफ़ है। हर हाल में क़ाबिले हम्द वही है। तस्बीह से हर तरह के नुक़्सान की उस ज़ात पाक से दूरी साबित होती है तो लाज़िम है कि हर तरह के कमालात उसकी ज़ाते वाहिद में हों उसी को साफ़ लफ़्ज़ों में हम्द से साबित किया, ताकि नुक़्सानात की नफ़ी और कमालात का इस्बात हो जाए। ऐसे ही क़ुरआने करीम की बहुत सी आयतों में तस्बीह और हम्द का एक साथ बयान हुआ है। हज़रत क़तादा (रह.) से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "तुम जब मुझ पर सलाम भेजो और नबियों पर भी सलाम भेजो क्योंकि मैं भी मिन्जुम्ला और नबियों के एक नबी ही हूँ।" (तब्री : 21/134; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) (इब्ने अबी हातिम) यह हदीस मुस्नदे अहमद में भी मरवी है। अबू यअ़ला की एक ज़ईफ़

हदीस में है कि जब हुज़ूर (ﷺ) नमाज़ का सलाम फेरने का इरादा करते तो इन तीनों आयतों को पढ़कर सलाम फेरते। (मुस्नदे अबी यअ़ला : 1118; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अबू हारून अ़म्मारा बिन जुवैन मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 3/173; रक़म : 6018) इब्ने अबी हातिम में है कि जो शख़्स यह चाहे कि भरपूर पैमाने से नापकर अज्र पाये तो वह जिस किसी मज्लिस में हो वहाँ से उठते हुए यह तीनों आयतें पढ़ ले। (इब्ने अबी हातिम : 12/125; अद्दुर्रुल मंसूर : 8/372 और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) और मुस्नद अहमद में यह रिवायत हज़रत अ़ली (रज़ि.) से मौक़ूफ़न मरवी है। तब्रानी की हदीस में है जो शख़्स हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तीन मर्तबा इन तीनों आयतों की तिलावत करे, उसे भरपूर अज्र पूरे पैमाने से नापकर मिलेगा। (और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ और मौज़ूअ़ है; इसमें अ़ब्दुल मुन्इम बिन बशीर और अहमद बिन रुश्दैन दोनों मुत्तहम हैं। मज्लिस के कफ़्फ़ारे के बारे में बहुत सी अहादीस में आया है कि यह पढ़े (सुब्हानकल्लाहुम्म वबि हम्दिका ला इलाहा इल्ला अन्ता अस्तग़्फ़िरुका व अतूबु इलैक) (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब कफ़्फ़ारतुल मज्लिस : 4857; और इसकी सनद सही है; तिर्मिज़ी : 3433; तब्रानी : 1/79; हाकिम : 1/537) मैंने इस मसले पर एक मुस्तक़िल किताब लिखी है, अल्हम्दु लिल्लाह!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह साफ़्फ़ात की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह साद - 38

आयात : 88 मक्की पैराग्राफ : 8

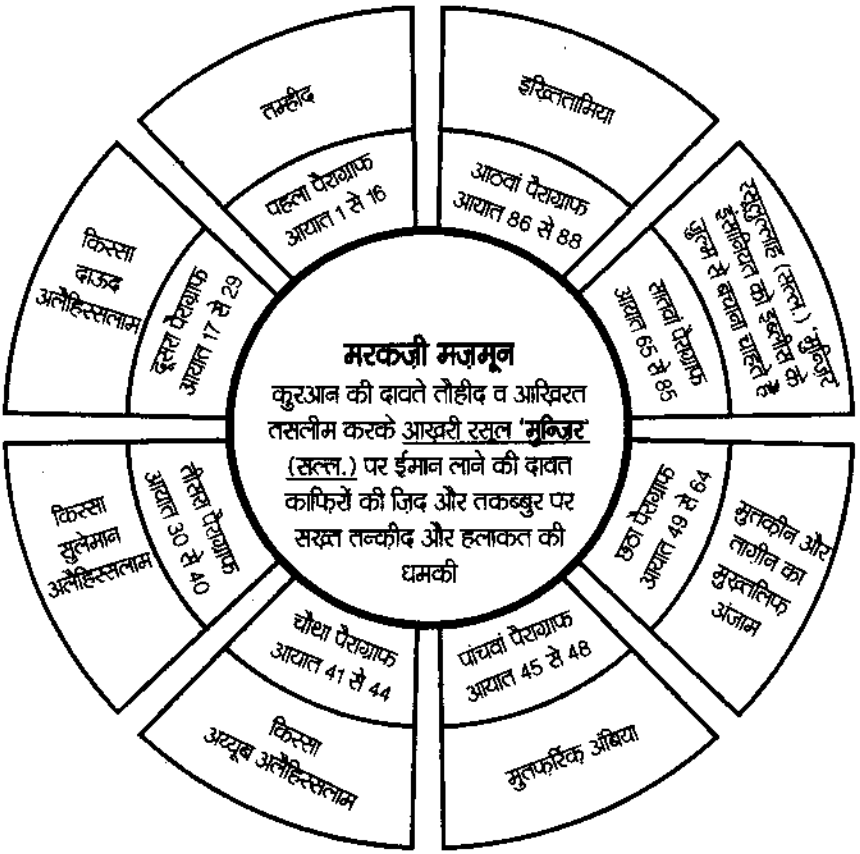

ज़मानए नुज़ूलः

ग़ालिबन दस नबवी में नाज़िल हुई, जब अबू तालिब मर्ज़े वफ़ात में मुब्तला थे और जब आप (सल्ल.) ''साहिर कज़्ज़ाब'' कहा जा रहा था। मुश्रेकीने मक्का सख़्त इस्तिकबार और ज़िद (इज़्ज़ा व शिक़ाक़) में मुब्तला थे और कुरआन की दावत की तकज़ीब कर रहे थे।

तफ़्सीर सूरह स़ाद

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।"

***

صٓ وَالۡقُرۡاٰنِ ذِى الذِّكۡرِ ① بَلِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا فِىۡ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ② كَمۡ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ قَرۡنٍ فَنَادَوۡا وَّلَاتَ حِيۡنَ مَنَاصٍ ③

तर्जुमा : "स़ॉद! इस नस़ीहत वाले क़ुरआन की क़सम, (1) बल्कि कुफ़्फ़ार ग़ुरूर व मुख़ालिफ़त में पड़े हुए हैं। (2) हमने इनसे पहले भी बहुत से फ़िर्क़ों को तबाह कर डाला, उन्होंने हर चंद चीख़ पुकार की लेकिन वह वक़्त छुटकारे का न था।" (3)

क़ुरआन नस़ीहत है (आ. 1 से 3) : हुरूफ़े मुक़त्तआत, जो सूरतों के शुरू में आते हैं उनकी पूरी तफ़्सीर सूरह बक़रह के शुरू में गुज़र चुकी है। यहाँ क़ुरआन की क़सम खाई और इसे पंद व नस़ीह़त करने वाला फ़र्माया। क्यों कि इसकी बातों पर अ़मल करने वाले की दीन व दुनिया दोनों सँवर जाती हैं। और आयत में है (فِيۡهِ ذِكۡرُكُمۡ) (21/अम्बिया : 10) इस क़ुरआन में तुम्हारे लिए नस़ीह़त है और यह भी मत़लब है कि क़ुरआन शराफ़त व बुज़ुर्गी, इ़ज़्ज़त व अ़ज़्मत वाला है, अब उस क़सम का जवाब कुछ के नज़दीक तो (اِنۡ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ) (38/स़ाद : 14) कुछ कहते हैं (اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ) (38/स़ाद : 64) है। लेकिन यह ज़्यादा मुनासिब नहीं मालूम होता। ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कि इसका जवाब इसके बाद की आयत है। (त़ब्री : 21/140) इब्ने जरीर (रह़.) इसी को मुख़्तार बताते हैं। (त़ब्री : 21/141) कुछ अ़रबीदाँ कहते हैं कि इसका जवाब (साद) है और इस लफ़्ज़ के मअ़नी स़दाक़त और ह़क़्क़ानियत के हैं। एक क़ौल यह भी है कि पूरी सूरत का ख़ुलास़ा इस क़सम का जवाब है, वल्लाहु अ़ालम!

फिर फ़र्माता है कि यह क़ुरआन तो सरासर इ़ब्रत और नस़ीह़त है मगर इससे फ़ायदा वही उठाते हैं जिनके दिल में ईमान है। काफ़िर लोग इस फ़ायदे से इसलिए मह़रूम हैं कि वह मुतकब्बिर हैं और मुख़ालिफ़

हैं। यह लोग अपने से पहले के अपने जैसे लोगों के अंजाम पर नज़र डालें और अपने अंजाम से डरें। अगली उम्मतों को उसी जुर्म पर हमने तह व बाला कर दिया है। अ़ज़ाब आ पड़ने पर तो बड़े रोये चिल्लाये। ख़ूब आहवज़ारी की, लेकिन उस वक़्त की तमाम बातें बेकार हैं। जैसे फ़र्माया (فَلَمَّا اَحَسُّوا بَأْسَنَا) (21/अम्बिया : 12) हमारे अ़ज़ाबों को मालूम करके इनसे बचना और भागना चाहा, लेकिन यह कैसे हो सकता था? इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''अब भागने का वक़्त नहीं, न फ़रियाद का वक़्त है। उस वक़्त कोई फ़रियाद रसी नहीं कर सकता। चाहे कितना ही चीख़ो चिल्लाओ, सब बेकार है। अब तौहीद की कुबूलियत बेनफ़ा और तौबा बेकार। यह बेवक़्त की पुकार है। लात मअ़नी में ला के है। इसमें त ज़ाइद है। जैसे सम्मत में भी त ज़्यादा होती है और रबत में भी, यह मफ़सूला है और इस पर वक़्फ़ है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) का क़ौल है कि यह त ह़ीन से मिली है यानी वला तह़ीनु है लेकिन मशहूर पहला ही है। जुम्हूर ने (ह़ीन) को ज़बर से पढ़ा है तो मत़लब यह होगा कि यह वक़्त आहवज़ारी का वक़्त नहीं। कुछ ने यहाँ ज़ेर पढ़ना भी जाइज़ रखा है। लुग़त में नविस़ कहते हैं पीछे हटने को। और बविस़ कहते हैं आगे बढ़ने को। पस मक़्सद यह है कि यह वक़्त भागने और निकल जाने का वक़्त नहीं। वल्लाहुल मुवफ़्फ़िक़।

***

وَعَجِبُوٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۡ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٤ اَجَعَلَ
الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ عُجَابٌ ۝٥ وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا
وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ يُّرَادُ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ
الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِیْ
شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ
الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۟ فَلْيَرْتَقُوْا
فِی الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١

तर्जुमा : "काफ़िरों को इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उन ही में से एक उन्हें समझाने वाला आ गया। और कहने लगे कि यह तो जादूगर और झूठा है। (4) क्या इसने इतने सारे मअ़बूदों का एक ही मअ़बूद कर दिया? वाक़ेई यह बहुत ही अजीब बात है। (5) इनके सरदार यह कहते हुए चले कि जाओ अपने मअ़बूदों पर जम रहो। यक़ीनन यह तो कोई मत़लब व मुराद है। (6) हमने तो यह बात पिछले दीन में भी नहीं सुनी। कुछ नहीं यह तो सिर्फ़ गढ़ंत है। (7) यह हो भी सकता है कि हम सबको छोड़कर इसी पर कलामे इलाही नाज़िल किया जाए? दरअस़ल यह लोग मेरी वह़ी की त़रफ़ से शक में ही हैं, बल्कि सही यह है कि इन्होंने अब तक मेरे अ़ज़ाब चखे ही नहीं। (8) या क्या इनके पास मेरे ज़बरदस्त फ़य्याज़ अल्लाह तआला की रहमत के ख़ज़ाने हैं। (9) या क्या आसमान व ज़मीन और इनके बीच की हर चीज़ की बादशाहत इन ही की है। तो फिर यह रस्सियाँ तानकर चढ़ जाएँ। (10) यह भी बड़े बड़े लश्करों में से शिकस्त पाया हुआ छोटा सा लश्कर है।" (11)

नबी (ﷺ) के इंसान होने पर कुफ़्फ़ार का ताज्जुब (आ. 4 से 11) : हुज़ूर (ﷺ) की रिसालत पर कुफ़्फ़ार के ह़िमाक़त आमेज़ ताज्जुब का इज़्हार हो रहा है जैसे और आयत में है (اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا) (10/यूनुस : 2) क्या लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि उनमें से एक इंसान की त़रफ़ हमने वह़ी की कि वह लोगों को होशियार कर दे और ईमान वालों को इस बात की ख़ुशख़बरी सुना दे कि उसके पास उनके लिए बेहतरीन तैयारी है। काफ़िर तो हमारे रसूल को खुला जादूगर कहने लगे। पस यहाँ है कि इन ही में से इन ही जैसे एक इंसान के रसूल बनकर आने पर इन्हें ताज्जुब हुआ और कहने लगे कि यह तो जादूगर और कज़्ज़ाब है। रसूल (ﷺ) की रिसालत पर ताज्जुब के साथ अल्लाह तआला की वह़दानियत पर भी उनको ताज्जुब मालूम हुआ और कहने लगे लो और सुनो! इतने सारे ख़ुदाओं के बदले यह तो कहता है कि अल्लाह तआला एक ही है और उसका कोई किसी त़रह का शरीक ही नहीं। इन बेवक़ूफ़ों को अपने बड़ों की देखादेखी जिस शिर्क व कुफ़्र की आ़दत थी, उसके ख़िलाफ़ आवाज़ सुनकर इनके दिल दुखने और रुकने लगे और वह तौह़ीद को एक अनोखी और अंजान चीज़ समझने लगे। इनके बड़ों और सरदारों ने तकब्बुर के साथ मुँह मोड़ते हुए ऐलान किया कि अपने क़दीमी मज़हब पर जमे रहो। इसकी बात न मानो और अपने मअ़बूदों की इबादत करते रहो। यह तो सिर्फ़ अपने मत़लब की बातें कहता है। यह इस बहाने अपनी जमा रहा है कि यह तुम्हारा सब का बड़ा बन जाए और तुम इसके ताबेअ़ फ़र्मान हो जाओ। इन आयतों का शाने नुज़ूल यह है कि क़ुरैशियों के शरीफ़ व सरदार और रईस लोग एक बार जमा हुए उनमें अबू जहल बिन हिशाम, आ़स़ बिन वाइल, अस्वद बिन मुत्तलिब, अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस वग़ैरह भी थे। और सबने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि चलकर आज अबू त़ालिब से आख़िरी फ़ैसला कर लें। वह इंसाफ़ के साथ एक बात हमारे ज़िम्मे डाल दे और एक अपने भतीजे (मुहम्मद स.) के ज़िम्मे। क्यों कि यह अब इंतिहाई उ़म्र को पहुँच चुके हैं, चराग़ सेह़री हो रहे हैं अगर मर गए और उनके बाद हमने मुहम्मद (ﷺ) को कोई मुसीबत पहुँचाई तो अ़रब हमें त़अ़ना देंगे कि बुढ़े की

मौजूदगी तक तो कुछ न चली और उनकी मौत के बाद बहादुरी आ गई। चुनाँचे यह चले, एक आदमी भेजकर अबू तालिब से इजाज़त माँगी, इजाज़त मिलने पर सब घर में आ गए और कहा सुनिए जनाब! आप हमारे सरदार हैं, बुजुर्ग हैं, बड़े हैं। हम आपके भतीजे से अब बहुत तंग आ गए हैं। आप इंसा फ़ के साथ हममें और इसमें फ़ैसला कर दीजिए। देखिए हम आपसे इंसाफ़ चाहते हैं, वह हमारे मअबूदों को बुरा न कहें, और न हम उन्हें सताएँ, वह मुख़्तार हैं, जिसकी चाहें इबादत करें लेकिन हमारे ख़ुदाओं को बुरा न कहें। अबू तालिब ने आदमी भेजकर अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) को बुलवाया और कहा, जाने पेदर देखते हो आपकी क़ौम के सरदार और बुजुर्ग सब जमा हुए हैं और आपसे सिर्फ़ यह चाहते हैं कि आप इनके मअबूदों की तौहीन और बुराई करने से बाज़ रहें और यह आपको आपके दीन पर चलने में आज़ादी दे रहे हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़मार्या, ''चचाज़ान! क्या मैं इन्हें बेहतरीन और बड़ी भलाई की तरफ़ न बुलाऊँ' '! अबू तालिब ने कहा, वह क्या है? फ़र्माया, यह एक कलिमा कह दें, सिर्फ़ उसके कहने की वजह से सारा अरब इनके मातहत हो जाएगा और सारे अजम पर इनकी हुकूमत हो जाएगी। अबू जहल मल्ऊन ने सवाल किया अच्छा बतलाओ वह ऐसा कौनसा कलिमा है? एक नहीं हम दस कहने को तैयार हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कहो ला इलाहा इल्लल्लाह बस यह सुनना था कि शोरो गुल मच गया और कहने लगे इसके सिवा जो तू माँगे हम देने को तैयार हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्मायया, अगर तुम सूरज को भी लाकर मेरे हाथ पर रख दो तो भी मैं तो तुमसे इस कलिमे के सिवा और कुछ नहीं माँगूगा। इस बात को सुनकर सब लोग गुस्से और ग़ज़ब से वह्शतनाक होकर ख़ड़े हो गए और कहने लगे, अल्लाह की क़सम! हम तुझे और तेरे रब को गालियाँ देंगे, जिसने तुझे यह हुक्म दिया है। अब यह चले और इनके सरदार यह कहते रहे कि जाओ अपने दीन और अपने मअबूदों की इबादत पर क़ायम रहो। मालूम हो गया कि इसका तो इरादा ही और है, यह तो बड़ा बनना चाहता है। (इब्ने अबी हातिम वग़ैरह)

एक रिवायत में यह भी है कि उनके चले जाने के बाद हुज़ूर (ﷺ) ने अपने चचा से कहा कि आप ही इस कलिमा को पढ़ लीजिए। उन्होंने कहा, नहीं! मैं तो अपने बाप दादों और क़ौम के बड़ों के दीन पर ही रहूँगा। इस पर अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को फ़र्माया कि, जिसे तू चाहे हिदायत नहीं कर सकता। और रिवायत में है कि उस वक़्त अबू तालिब बीमार थे, और उसी बीमारी में वह इंतिक़ाल कर गए। जिस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ लाए, उस वक़्त अबू तालिब के पास एक आदमी के बैठने की जगह खाली थी, बाक़ी तमाम घर आदमियों से भरा हुआ था तो अबू जहल ख़बीस ने ख़्याल कि अगर आप आकर अपने चचा के पास बैठ गए तो ज़्यादा असर डाल सकेंगे। इसलिए यह मल्ऊन कूदकर वहाँ जाकर बैठा और हुज़ूर (ﷺ) को दरवाज़े के पास ही बैठना पड़ा। हुज़ूर (ﷺ) ने जब एक कलिमा कहने को कहा तो सबने जवाब दिया कि एक नहींदस, हम सब मुंतज़िर हैं कहिए वह कलिमा क्या है? और जब कलिमा तौहीद आपकी ज़ुबानी सुना तो कपड़े झाड़ते हुए भाग खड़े हुए, और कहने लगे, लो और सुनो! यह तो सारे मअबूदोंका एक मअबूद बना रहा है। इस पर यह आयतें (अज़ाबुन) तक उतरीं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति स़ाद : 3232; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अअमश मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं। अहमद :

1/362; नसाई : 456; हाकिम : 2/432) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस रिवायत को हसन कहते हैं। हमने तो यह बात न अपने दीन में देखी, न ईसाईयों के दीन में। बिलकुल ग़लत और झूठ और बेसनद बात है। यह किस क़द्र ताज्जुब की बात है कि अल्लाह तआला को कोई नज़र ही न आया और इस पर कुरआन उतार दिया। जैसे और आयत में इनका क़ौल है (لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 31) यानी इन दोनों शहरों में से किसी बड़े आदमी पर कुरआन क्यूँ न उतारा गया? जिसके जवाब में जनाब बारी तआला का इर्शाद हुआ कि "क्या यह लोग रब तआला की रहमत के तक़्सीम करने वाले हैं। यह तो इस क़द्र मोहताज हैं कि इनकी अपनी रोज़ियाँ और दर्जे भी हम तक़्सीम करते हैं।" अल्ग़र्ज़ यह एतिराज़ भी इनकी हिमाक़त का ग़र्रा था। अल्लाह तआला फ़र्माता है, यह है इनके शक का नतीजा और वजह यह है कि अब तक यह पोली पोली खाते रहे हैं। हमारे अज़ाबों से सामना नहीं पड़ा। कल क़ियामत के दिन जबकि धक्के देकर जहन्नम में गिराये जाएँगे उस वक़्त अपनी उस सरकशी का मज़ा चखेंगे।

अल्लाह तआला की कुदरत का बयान : फिर अल्लाह अपना क़ब्ज़ा और अपनी कुदरत ज़ाहिर करता है कि जो वह चाहे करे, जिसे चाहे जो कुछ चाहे अता करे, इज़्ज़त व ज़िल्लत उसके हाथ में है। हिदायत और ज़लालत उसकी तरफ़ से है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहे वह्यी नाज़िल करे और जिसके दिल पर चाहे अपनी मुहर लगादे। बन्दों के इख़्तियार में कुछ नहीं, वह सिर्फ़ बेबस, बिलकुल लाचार और सरासर मजबूर हैं। इसीलिए फ़र्माया, "क्या इनके पास उस बुलंद ग़ालिब व वह्हाब अल्लाह तआला की रहमत के ख़ज़ाने हैं?" यानी नहीं हैं जैसे फ़र्माया (اَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ) (4/निसाअ : 53) अगर अल्लाह तआला की ख़ुदाई का कोई हिस्सा इनके हाथ में होता तो यह बख़ील तो किसी को टुकड़ा भी न खाने को देते या इन्हीं लोगों के हाथों में अल्लाह तआला का फ़ज़्ल देखकर हसद आ रहा है? हमने आले इब्राहीम को किताब व हिक्मत और बहुत बड़ी सल्तनत दी थी। उनमें से कुछ तो ईमान लाए और कुछ ईमाना से रुके रहे, जो भड़कती हुई जहन्नम के लुक़्मे बनेंगे, वह आग ही इन्हें काफ़ी है। और आयत में है (قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا) (17/इस्रा : 100) यानी "अगर मेरे रब तआला की रहमतों के ख़ज़ाने तुम्हारी मिल्कियत में होते तो तुम तो कम हो जाने का डर करके ख़र्च करने से रुक जाते, इंसान है ही नाशुक्रा।"

क़ौमे सालेह ने भी अपने नबी (عليه السلام) से यही कहा था कि (ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا) (54/क़मर : 25) क्या हम सबको छोड़कर इसी पर ज़िक्र उतारा गया? नहीं! बल्कि यह झूठा और शरीर है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि कल को मालूम कर लेंगे कि ऐसा कौन है? फिर फ़र्माया क्या ज़मीन व आसमान और इसके बीच की चीज़ों पर इनका इख़्तियार है? अगर ऐसा है तो फिर आसमानों की राहों पर चढ़ जाएँ, सातवें आसमान पर पहुँच जाएँ। यह यहाँ का लश्कर भी अन्क़रीब हज़ीमत व शिकस्त उठाएगा, और मग़्लूब व ज़लील होगा। जैसे और बड़े बड़े गिरोह हक़ से टकराये और चूर चूर हो गए। जैसे और आयत में है (اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ) (54/क़मर : 44) यानी क्या इनका क़ौल है कि हम बड़ी जमाअत हैं

और हम ही फ़तहयाब रहेंगे? सुनो! इन्हें अभी अभी शिकस्ते फ़ाश होगी और पीठ दिखाते हुए बुज़दिली के साथ बदहवास होकर भाग खड़े होंगे। चुनाँचे बद्र वाले दिन अल्लाह तआला की ख़ुदाई ने अल्लाह तआला की बातों की सच्चाई अपनी आँखों आज़माई। और अभी इनके अज़ाबों के वादे का दिन तो आख़िरत का दिन है जो सख़्त कठिन और निहायत दहशतनाक और वहशत वाला है।

***

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ﴿١٢﴾ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ
وَّأَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ ۚ أُولٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ ﴿١٣﴾ إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ
﴿١٤﴾ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ
لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾ إِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا
الْأَيْدِ ۚ إِنَّهٗٓ أَوَّابٌ ﴿١٧﴾ إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾
وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً ۗ كُلٌّ لَّهٗٓ أَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ
الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : "इनसे पहले भी क़ौमे नूह और आदियों ने और मेख़ों वाले फ़िरऔन ने झुठलाया था। (12) और समूदियों ने और क़ौमे लूत ने और ऐका के रहने वालों ने भी, यही बड़े लश्कर थे। (13) उनमें से एक भी ऐसा न था जिसने रसूलों को झुठलाया न हो, पस मेरी तरफ़ की सज़ा उन पर साबित हो गई। (14) उन्हें सिर्फ़ एक तुंद आवाज़ का इंतिज़ार है जिसमें कोई तवक़्क़ुफ़ और ढील नहीं है। (15) कहने लगे कि ऐ हमारे रब! हमारी सर नविश्त तू हमें रोज़े हिसाब से पहले ही दे दे। (16) तू इनकी बातों पर सब्र कर। और हमारे बन्दे दाऊद (عليه السلام) को याद कर, जो बड़ी कुव्वत वाला था, यक़ीनन वह बहुत रुजूअ रहने वाला था। (17) हमने पहाड़ों को उसके ताबेअ कर दिया था कि उसके साथ शाम को और सुबह को तस्बीह बयान करें। (18) और उड़ते जानवर जमा होकर सबके सब उसके ज़ेरे फ़र्मान रहते। (19) और हमने उसकी सल्तनत को मज़बूत कर दिया था और उसे हिक्मत दी थी और बात का फ़ैसला सुझा दिया था।" (20)

कुफ़्फ़ार के मज़ाक़ पर सब्र करो (आ. 12 से 20) : उन सबके वाक़ियात कई बार बयान हो चुके हैं कि किस तरह उन पर उनके गुनाहों की वजह से अज़ाबे इलाही टूट पड़े। यही वह जमाअतें हैं जो माल व औलाद में, कुव्वत व ताक़त में, ज़ोरो ज़र में, तुम्हारे ज़माने के इन हक़ीर काफ़िरों से बहुत बढ़ी हुई थीं। लेकिन अम्रे इलाही आ चुकने के बाद उन्हें कोई चीज़ काम न आयी। फिर उनकी तबाही की वजह बयान हुई कि यह रसूलों के दुश्मन थे, उन्हें झूठा कहते थे, उन्हें सिर्फ़ सूर का इंतिज़ार है और उसमें भी कोई देर नहीं। बस वह एक आवाज़ होगी कि जिसके कान में पड़ी, बेहोश और बेजान हो गया, सिवाय उन लोगों के जिन्हें रब तआला ने अलग कर दिया है। (क़ित्त) के मअनी किताब और हिस्से के हैं। मुश्रिकीन की बेवक़ूफ़ी और उनका अज़ाबों को महाल समझकर और निडर होकर अज़ाब के तलब करने का ज़िक्र हो रहा है। जैसे और आयत में है कि उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह! अगर यह सही है तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या और कोई दर्दनाक अज़ाबे आसमानी हमें पहुँचा। और यह भी कहा गया है कि उन्होंने अपना जन्नत का हिस्सा यहाँ तलब किया। और यह जो कुछ कहा यह सब उसे झूठा समझने और महाल जानने की वजह से था। इब्ने जरीर (रह़.) का क़ौल है कि "जिस ख़ैरो शर के वह दुनिया में मुस्तहिक़ थे उसे उन्होंने जल्द तलब किया।" (तब्री : 21/165) यही बात सही है। ज़ह्हाक (रह़.) और इस्माईल की तफ़्सीर का माहसल भी यही है, वल्लाहु आलम! पस अल्लाह तआला ने उनकी तक्ज़ीब और तमस्ख़ुर के मुक़ाबले में अपने नबी (ﷺ) को सब्र की ता'लीम दी और सिहार की तल्क़ीन की।

हज़रत दाऊद(عليه السلام) पर अल्लाह तआला के एहसानात (आ. 17 से 20) : (ज़ल अयदि) से मुराद इल्मी और अमली कुव्वत वाला है और सिर्फ़ कुव्वत वाले के मअनी भी होते हैं। जैसे फ़र्मान है (وَالسَّمَآءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْيدٍ) (51/ ज़ारियात : 47) मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं मुराद इताअत की ताक़त है। (तब्री : 21/166) क़तादा (रह़.) कहते हैं हज़रत दाऊद (عليه السلام) को इबादत की कुदरत और इस्लाम की फ़िक़ा अता की गई थी। (तब्री : 21/167) यह मज़्कूर है कि आप (عليه السلام) हर रात तिहाई रात तक तहज्जुद में खड़े रहते थे और एक दिन बाद एक दिन हमेशा रोज़े से रहते थे। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा पसंदीदा हज़रत दाऊद (عليه السلام) की रात की नमाज़ और उन ही के रोज़े थे। आप आधी रात सोते और तिहाई रात क़ियाम करते और छठा हिस्सा रात का फिर सो जाते और एक दिन रोज़ा रखते, एक दिन न रखते। और दुश्मनाने दीन से जिहाद करने से पीठ न दिखाते।" (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब मन नाम इन्दल सेहर : 1131; सह़ीह़ मुस्लिम : 1159) और अपने हर हाल में अल्लाह तआला की तरफ़ रग़बत व रुजूअ रखते। पहाड़ों को उनके साथ मुसख़्ख़र कर दिया था। आपके साथ सूरज के चमकने के वक़्त और दिन के आख़िरी वक़्त तस्बीह़ बयान करते। जैसे फ़र्मान है (يَا جِبَالُ أَوِّبِي مَعَهُ) (34/सबा : 10) यानी "अल्लाह तआला ने पहाड़ों को उनके साथ रुजूअ करने का हुक्म दिया था।" इसी तरह परिन्दे भी आपकी आवाज़ सुनकर आप (عليه السلام) के साथ अल्लाह तआला की पाकी बयान करने लग जाते। उड़ते हुए परिन्दे पास से गुज़रते और आप तिलावत फ़र्माते तो आप (عليه السلام) के साथ ही वह भी तिलावत में मशग़ूल हो जाते और

परवाज़ तर्क करके हवा में ठहर जाते। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के रोज़े ज़ुहा यानी इशराक़ के वक़्त हज़रत उम्मे हानी(रज़ि.) के घर में आठ रकअत नमाज़ अदा की। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मेरा ख़्याल है कि यह भी वक़्ते नमाज़ है। जैसे फ़र्मान है (युसब्बिह्न बिल अशिय्यि वल इश्राक़)

अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन नौफ़िल कहते हैं कि "हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ज़ुहा की नमाज़ नहीं पढ़ते थे तो एक दिन मैं उनको हज़रत उम्मे हानी (रज़ि.) के यहाँ ले गया और कहा कि आप इनसे वह हदीस बयान कीजिए जो आपने मुझसे बयान की थी। तो माई साहिबा (रज़ि.) ने फ़र्माया, "फ़तहे मक्का के दिन मेरे घर में मेरे पास रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए और आने के बाद एक बर्तन में पानी मँगवाया और एक कपड़े का पर्दा तानकर नहाने बैठ गए। उसके बाद घर के एक कोने में पानी छिड़ककर आठ रकअतें सलातुज़्ज़ुहा की अदा कीं। उनमें क़ियाम, रुकूअ, सज्दा और जुलूस सब तक़रीबन बराबर थे।" हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) यह हदीस सुनकर जब वहाँ से निकले तो फ़र्माने लगे, "पूरे क़ुरआन को मैंने पढ़ लिया लेकिन मैं नहीं जानता था कि ज़ुहा की नमाज़ क्या है? आज मुझे मालूम हुआ कि (युसब्बिह्न बिल अशिय्यि वल इश्राक़) वाली आयत में भी इश्राक़ से मुराद यही ज़ुहा है।" चुनाँचे उसके बाद उन्होंने अपने अगले क़ौल से रुजूअ कर लिया। (तब्री : 21/169; हाकिम : 4/53; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सईद बिन अबी उरूबा मुदल्लस है।) और परिन्दे भी हवा में रुक जाते थे और हज़रत दाऊद (عليه السلام) की मातहती में उनकी तस्बीहों का साथ देते थे। और उसकी सल्तनत हमने मज़बूत कर दी। बादशाहों को जिन जिन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है हमने उसे सब कुछ अता किया था। चार हज़ार तो उनकी मुहाफ़िज़ सिपाह थी। इस क़द्र फ़ौज थी कि हर रात तैंतीस हज़ार फ़ौजी पहरे पर चढ़ते थे, लेकिन जो आज की रात आते फिर साल भर तक उनकी बारी न आती। चालीस हज़ार आदमी हर वक़्त उनकी ख़िदमत में मुसल्लह तैयार रहते। एक रिवायत में है कि उनके ज़माना में दो बनी इस्राईली शख़्सों में झगड़ा वाक़ेअ हुआ, एक ने दूसरे पर इल्ज़ाम लगाया कि उसने मेरी गाय ग़सब कर ली है। दूसरे ने उस जुर्म से इंकार किया। हज़रत दाऊद (عليه السلام) ने मुद्दई से दलील तलब की मगर वह सबूत फ़राहम न कर सका। आप (عليه السلام) ने फ़र्माया, अच्छा तुम्हें कल फ़ैसला सुनाया जाएगा। रात को हज़रत दाऊद (عليه السلام) को ख़्वाब में हुक्म हुआ कि दावेदार को क़त्ल कर दो। सुबह को आप (عليه السلام) ने दोनों को बुलवाया और हुक्म दिया कि "उस मुद्दई को क़त्ल कर दिया जाए।" उसने कहा, "ऐ अल्लाह तआला के नबी! आप मेरी ही क़त्ल का हुक्म दे रहे हैं हालाँकि उसने मेरी गाय चुराई है।" आपने फ़र्माया "यह मेरा हुक्म नहीं बल्कि अल्लाह तआला का फ़ैसला है और नामुम्किन है है कि यह टल जाए लिहाज़ा तू तैयार हो जा।" तब उसने कहा, ऐ अल्लाह तआला के रसूल! मैं अपने दावे में तो सच्चा हूँ कि इसने मेरी गाय ग़सब कर ली है मगर अल्लाह तआला ने आपको मेरे क़त्ल का हुक्म मेरे इस मुक़द्दमा की वजह से नहीं किया, इसकी वजह और ही है और उसे सिर्फ़ मैं ही जानता हूँ। बात यह है कि आज रात मैंने उस शख़्स को फ़रेब से क़त्ल कर दिया है जिसका किसी को इल्म नहीं। पस उसके बदले में अल्लाह तआला ने आपको क़िसास का हुक्म दिया है। चुनाँचे वह क़त्ल कर दिया गया। अब तो हज़रत दाऊद (عليه السلام) की हैबत हर शख़्स के दिल में बैठ गई। हमने उसे हिक्मत दी थी, यानी

फ़हम व अक़्ल और ज़ेरकी (बहादुरी) की व दानाई अदल व फ़रासत किताबुल्लाह और उसकी इत्तिबाअ़, नबुव्वत व रिसालत वग़ैरह और झगड़ों के तस्फ़िया का सही तरीक़ा यानी गवाह लेना, क़सम खिलवाना, मुद्दई के ज़िम्मे बारे सबूत डालना, मुद्दआ अलैहि से क़सम लेना। (तब्री 21/172) यही तरीक़ा फ़ैसलों के लिए अम्बिया (عليهم السلام) का और नेक लोगों का रहा है और यही तरीक़ा इस उम्मत में राइज है। ग़र्ज़ हज़रत दाऊद (عليه السلام) मामला की तह को पहुँच जाते थे और हक़ व बातिल, सच और झूठ में सही और खरे की पहचान कर लेते थे। कलाम भी आप (عليه السلام) का साफ़ होना था और हुक्म भी अदल के मुताबिक़ होता था। आप (عليه السلام) ही ने अम्मा बअ़द का कहना ईजाद किया है। और फ़स्लुल ख़िताब से उसकी तरफ़ भी इशारा है।

***

وَهَلْ أَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ إِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ
مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا
تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ إِنَّ هٰذَآ أَخِيْ ۖ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ
نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۖ فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ
نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ۖ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ
فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ ﴿٢٤﴾ {السجدة} فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهٗ
عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''क्या तुझे झगड़ा करने वालों की भी ख़बर हुई? जबकि वह दीवार फाँदकर इबादत की जगह आ गए। (21) जब यह (हज़रत) दाऊद (عليه السلام) के पास पहुँचे यह उनसे डर गए। उन्होंने कहा, डरिये नहीं, हम दोनों आपस ही में झगड़ा और ज़्यादती कर रहे हैं आप (عليه السلام)

हमारे बीच हक़ हक़ फ़ैसला कर दीजिए, नाइंसाफ़ी न कीजिए और हमें सीधी राह बता दीजिए। (22) सुनिए यह मेरा भाई है, इसके पास तो निन्नान्वे दुंबिया हैं और मेरे पास एक ही है लेकिन यह मुझसे कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझ ही को दे दे। (23) और मुझ पर बड़ी तेज़ी और सख़्ती बरतता है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, इसका अपनी इतनी दुंबियों के साथ तेरी एक दुंबी मिला लेने का सवाल बेशक एक ज़ुल्म है, और अक्सर साझी और शरीक ऐसे ही होते हैं कि एक दूसरे पर ज़ुल्म और सितम करते हैं सिवाय उनके जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किये और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं और (हज़रत) दाऊद (ﷺ) समझ गए कि हमने इन्हें आज़माया है फिर तो अपने रब से इस्तिग़फ़ार करने लगे और आजिज़ी करते हुए गिर पड़े और पूरी तरह रुजूअ हो गए। (24) पस हमने भी उसे माफ़ कर दिया, यक़ीनन वह हमारे नज़दीक बड़े मर्तबे वाले और बहुत अच्छे ठिकाने वाले हैं।" (25)

हज़रत दाऊद (ﷺ) का मशहूर फ़ैसला (आ. 21 से 25) : मुफ़स्सिरीन ने यहाँ पर एक क़िस्सा बयान किया है लेकिन इसका अक्सर हिस्सा बनी इस्राईली रिवायतों से लिया गया है, हदीस से साबित नहीं, इब्ने अबी हातिम में एक हदीस है लेकिन वह भी साबित नहीं क्योंकि इसका एक रावी यज़ीद रक़्क़ाशी है, भले वह निहायत नेक शख़्स है लेकिन है ज़ईफ़। पस सही यह है कि कुरआन में जो है और जिस पर यह शामिल है वह हक़ है। हज़रत दाउद (ﷺ) को उन्हें देखकर घबराना इस वजह से था कि वह अपने तंहाई के ख़ास ख़ल्वतख़ाना में थे और पहरेदारों को मना किया था कि कोई भी आज अंदर न आए, और अचानक उन दोनों को जो देखा तो घबरा गए।

(अ़ज़्ज़नी) से मतलब बातचीत में ग़ालिब आ जाना, दूसरे पर छा जाना है हज़रत दाऊद (ﷺ) समझ गए कि यह अल्लाह तआ़ला की आज़माइश है, पस वह रुकूअ और सज्दा करते हुए अल्लाह तआ़ला की तरफ़ झुक पड़े। मज़्कूर है कि चालीस दिन तक सज्दे से सिर न उठाया। पस हमने उसे बख़्श दिया। यह याद रहे कि जो काम अ़वाम के लिए नेकियों के होते हैं वही काम ख़्वास के लिए कुछ मर्तबा बदियों के बन जाते हैं। यह आयत सज्दे की है या नहीं? इसकी बाबत इमाम शाफ़ेई (रह.) का जदीद मज़हब तो यह है कि यहाँ सज्दा ज़रूरी नहीं। यह तो सज्दा शुक्र है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि (सॉद) ज़रूरी सज्दों में से नहीं। हाँ! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसमें सज्दा करते हुए देखा है।" (सहीह बुख़ारी, किताब सुजूदुल कुरआन, बाब सज्दा सॉद : 1069; इब्ने हिब्बान : 2766; अहमद : 2/360)

सुनन नसाई में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने यहाँ सज्दा करके फ़र्माया, "यह सज्दा हज़रत दाऊद (ﷺ) का तो तौबा के लिए था और हमारा शुक्र के लिए है।" (नसाई, किताबुल इफ़्तिताह, बाब सुजू ल अल कुरआनिस सुजूद 11, फ़ी सॉद 958; और इसकी सनद सही है; बैहक़ी : 2/319; दारे कुत्नी : 1/407) तिर्मिज़ी में है कि एक शख़्स ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ख़्वाब में देखा गोया मैं एक दरख़्त के पीछे नमाज़ पढ़ रहा

हूँ और नमाज़ में मैंने सज्दे की आयत तिलावत की और सज्दा किया तो मेरे साथ उस दरख़्त ने भी सज्दा किया और मैंने सुना कि वह यह दुआ माँग रहा था (अल्लाहुम्मक्तुब ली बिहा इन्दका अज्रव्वज्अल्हा ली इन्दका ज़ुख़्रव्वज़अ बिहा अन्नी विज़्रंव्वक़्बल्हा मिन्नी कमा क़बिल्तहा मिन अब्दिका दाऊद) यानी ऐ अल्लाह! मेरे इस सज्दे को तू मेरे लिए अपने पास अज्र और ख़ज़ाने का सबब बना और इससे तू मेरा बोझ हल्का कर दे और इसे मुझसे क़बूल फ़र्मा। जैसे कि तूने अपने बन्दे दाऊद (ﷺ) के सज्दे को क़बूल किया। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं फिर मैंने देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने खड़े होकर नमाज़ अदा की और सज्दे की आयत को पढ़कर सज्दा किया और उस सज्दा में वही दुआ पढ़ी जो उस शख़्स ने दरख़्त की दुआ नक़्ल की थी। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा यक़ूलु फ़ी सुजूदिल क़ुरआन : 3424; और इसकी सनद ह़सन है; इब्ने माजा : 1053) इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत के सज्दे पर यह दलील वारिद करते हैं कि क़ुरआन ह़कीम ने बताया है, उसकी औलाद में से दाऊद व सुलेमान (ﷺ) हैं जिनको हमने हिदायत की थी। पस तू ऐ नबी! उनकी हिदायत की पैरवी कर। पस हुज़ूर (ﷺ) उनकी इक़्तिदा के लिए मामूर थे और यह साफ़ साबित है कि ह़ज़रत दाऊद (ﷺ) ने सज्दा किया और हुज़ूर (ﷺ) ने भी यह सज्दा किया। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत् तफ़्सीर, सूरह साद : 4807)

ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) का बयान है कि "मैंने ख़्वाब में देखा कि गोया मैं सूरह साद लिख रहा हूँ। जब आयते सज्दा तक पहुँचा तो मैंने देखा कि क़लम और दवात और मेरे आसपास की तमाम चीज़ों ने सज्दा किया। उन्होंने अपना यह ख़्वाब हुज़ूर (ﷺ) से बयान किया। फिर आप इस आयत की तिलावत के वक़्त बराबर सज्दा करते रहे।" (मुस्नदे अह़मद : 3/78; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; यह रिवायत मुंक़तअ है बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़्नी ने सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को नहीं पाया। ह़ाकिम : 2/432; बैहक़ी : 2/320)

अबूदाऊद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने मिम्बर पर सूरह साद पढ़ी और सज्दे की आयत तक पहुँचकर मिम्बर पर से उतरे और सज्दा किया और आप (ﷺ) के साथ ही और सबने भी सज्दा किया। एक और मर्तबा आप (सा.) ने इसी सूरत की तिलावत की, जब आयते सज्दा तक पहुँचे तो लोगों ने सज्दा की तैयारी की, आप (ﷺ) ने फ़र्माया यह तो एक नबी की तौबा का सज्दा था लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम सज्दा के लिए तैयार हो गए हो। चुनाँचे आप (ﷺ) उतरे और सज्दा किया। (अबूदाऊद, किताब सुजूदुल क़ुरआन, बाब अस्सुजूद फ़ी साद : 1410; और वह ह़सन है; ह़ाकिम : 2/431; इब्ने ह़िब्बान : 2765) अल्लाह तआला फ़र्माता है हमने उसे बख़्श दिया। क़ियामत के दिन उसकी बड़ी क़द्रो मंज़िलत होगी और नबियों और आदिलों का दर्जा वह पाएँगे। ह़दीस में है कि आदिल लोग नूर के मिम्बरों पर रह़मान की दाहिनी जानिब होंगे। अल्लाह तआला के दोनों हाथ दाहिने हैं। यह आदिल वह हैं जो अपनी अहलो अयाल में और जिनके वह मालिक हों अदलो इंसाफ़ करते हैं। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब फ़ज़ीलतुल अमीरिल आदिल व उक़ूबतिल जाइर : 1827) और ह़दीस में है कि "सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के दोस्त और सबसे ज़्यादा उसके मुक़र्रब वह बादशाह होंगे जो आदिल हों और सबसे ज़्यादा दुश्मन और सबसे ज़्यादा सख़्त अज़ाब में वह होंगे

जो हुक्मरान ज़ालिम हों।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल अह़काम, बाब मा जाअ फ़िल्इमामिल आदिल : 1329; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; अह़मद : 3/22; इसकी सनद में अतिया बिन सअद औफ़ी ज़ईफ़ व मुदल्लस रावी है। (अल्मीज़ान : 3/79; रक़म : 5667)

हज़रत मालिक बिन दीनार (रह़.) फ़र्माते हैं क़ियामत के दिन हज़रत दाऊद (عليه السلام) को अर्श के पाये के पास खड़ा किया जाएगा और अल्लाह तआला हुक्म देगा कि ऐ दाऊद (عليه السلام)! जिस प्यारी दर्दनाक, मीठी और जाज़िब आवाज़ से तुम मेरी ता'रीफ़ें दुनिया में करते थे, अब भी करो। आप (عليه السلام) फ़र्माएँगे, बारी तआला अब वह आवाज़ कहाँ रही? अल्लाह तआला कहेगा, मैंने वही आवाज़ आज तुम्हें फिर अता की। अब हज़रत दाऊद (عليه السلام) अपनी दिलकश और दिलरुबा आवाज़ निकालकर निहायत वजद की ह़ालत में अल्लाह तआला की ह़म्दो सना बयान करेंगे। जिसे सुनकर जन्नती और नेअ़मतों को भी भूल जाएँगे और यह सुरीली आवाज़ और नूरानी गला उनको सब नेअ़मतों से हटाकर अपनी तरफ़ मुतवज्जह कर देगा।

***

يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝۲۶

तर्जुमा : ''ऐ दाऊद (عليه السلام)! हमने तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बना दिया, तुम लोगों के बीच ह़क़ के साथ फ़ैसले किया कर और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी न करो वरना वह तुम्हें अल्लाह तआला की राह से भटका देगी। यक़ीनन जो लोग अल्लाह की राह से भटक जाते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब हैं, इसलिए कि उन्होंने ह़िसाब के दिन को भुला दिया है।'' (26)

हुक्मरान अल्लाह के हुक्म के पाबन्द (आ. 26) : इस आयत में बादशाहों और ज़ी इख़्तियार लोगों को हुक्म हो रहा है कि वह अदल व इंसाफ़ के साथ कुरआन व ह़दीस के मुताबिक़ फ़ैसला किया करें वरना राहे इलाही से भटक जाएँगे। और जो भटककर अपने ह़िसाब के दिन को भूल जाए वह सख़्त अ़ज़ाबों में मुब्तला होगा। हज़रत अबू ज़रआ (रह़.) से वक़्त के बादशाह वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक ने एक मर्तबा पूछा कि ख़लीफ़ए वक़्त से भी अल्लाह तआला के यहाँ ह़िसाब लिया जाएगा? आपने फ़र्माया कि सच बता दूँ! ख़लीफ़ा ने कहा, ज़रूर सच ही बतलाओ और आपको हर तरह अम्न है। फ़र्माया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह तआला के नज़दीक आपसे बहुत बड़ा दर्जा हज़रत दाऊद (عليه السلام) का था और उन्हें ख़िलाफ़त के

साथ ही साथ अल्लाह तआला ने नबुव्वत भी दे रखी थी। लेकिन बावजूद इसके, किताबुल्लाह उनसे कहती है (या दाऊदु इन्ना...)। इक्रिमा (रह़.) फ़र्माते हैं मत़लब यह है कि उनके लिए ह़िसाब के दिन सख़्त अ़ज़ाब हैं, उनके भूल जाने की वजह से। (त़ब्री : 21/189) सुद्दी (रह़.) कहते हैं उनके लिए सख़्त अ़ज़ाब हैं इस वजह से कि उन्होंने ह़िसाब के दिन के लिए आ़माल जमा नहीं किये। (त़ब्री : 21/189) आयत के लफ़्ज़ों से इसी क़ौल को ज़्यादा मुनासिबत है, वल्लाहु आ़लम!

***

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۚ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ
مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "हमने आसमान व ज़मीन और उनके बीच की चीज़ों को बात़िल और नाह़क़ पैदा नहीं किया, यह गुमान तो काफ़िरों का है। सो काफ़िरों के लिए ख़राबी है आग की। (27) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अ़मल किये उनके बराबर कर देंगे जो हमेशा ज़मीन में फ़साद मचाते रहे। या परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे? (28) यह बाबरकत किताब जिसे हमने तेरी त़रफ़ इसलिए नाज़िल किया है कि लोग इसकी आयतों पर ग़ौरो फ़िक्र कर लें, और अ़क़्लमंद इससे नसीहत ह़ासिल कर लें।" (29)

अल्लाह ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई (आ. 27 से 29) : इर्शाद है कि मख़्लूक़ की पैदाइश अ़बस और बेकार नहीं, यह सब इबादते ख़ालिक़ के लिए पैदा की गई है। फिर एक वक़्त आने वाला है कि मानने वालों की सरबुलंदी की जाए और न मानने वालों को सख़्त सज़ा दी जाए। काफ़िरों का ख़्याल है कि हमने उन्हें यूँ ही पैदा कर दिया है दारे आख़िरत और दूसरी ज़िन्दगी कोई चीज़ नहीं, यह ग़लत़ है। इन काफ़िरों को क़ियामत के दिन बड़ी ख़राबी होगी। क्योंकि उस आग में इन्हें जलना होगा जो इनके लिए अल्लाह तआ़ला के फ़रिश्तों ने दहका रखी है। यह नामुम्किन है और अनहोनी बात है कि मोमिन को मुफ़्सिद को और परहेज़गार और बदकार को एक जैसा कर दें। अगर क़ियामत आने वाली ही न हो तब तो यह दोनों अंजाम के लिहाज़ से एक जैसे ही रहे। ह़ालाँकि यह ख़िलाफ़े इंसाफ़ बात है। क़ियामत ज़रूर आएगी, नेकी करने वाला जन्नत और गुनहगार जहन्नम में

जाएँगे। पस अक़्ली इक़्तिज़ा भी दारे आख़िरत के सबूत को ही चाहता है। हम देखते हैं कि एक ज़ालिम पापी अल्लाह तआला की दरगाह से राँदा हुआ दुनिया में ख़ुश वक़्त है, माल औलाद फ़राख़दस्ती और तंदुरुस्ती सब कुछ उसके पास है और एक मोमिन मुत्तक़ी पाकदामन एक एक पैसे से तंग और एक एक राहत से दूर है तो हिक्मत अलीम व हकीम व आदिल का इक़्तिज़ा यह था कि कोई ऐसा वक़्त भी आए कि उस नमक हराम से उसकी नमक हरामी का बदला लिया जाए, और उस साबिर व शाकिर फ़र्मांबरदार की नेकियों का उसे बदला दिया जाए और यही दारे आख़िरत में होना है। पस यह साबित हुआ कि इस जहान के बाद एक जहान यक़ीनन है। चूँकि यह पाक ता'लीम कुरआन से ही हासिल हुई है और इस नेकी का रहबर यही है, इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया कि यह मुबारक किताब हमने तेरी तरफ़ नाज़िल की है ताकि लोग इसे समझें और ज़ी अक़्ल लोग इससे नसीहत हासिल कर सकें। हज़रत हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं "जिसने कुरआन के अल्फ़ाज़ हिफ़्ज़ कर लिए और कुरआन पर अमल नहीं किया उसने कुरआन में तदब्बुर व ग़ौर भी नहीं किया।" लोग कहते हैं हमने पूरा कुरआन पढ़ लिया, लेकिन कुरआन की एक नसीहत या कुरआन के एक हुक्म का नमूना उनमें नज़र नहीं आता। ऐसा नहीं होना चाहिए, असल चीज़ ग़ौरो ख़ोज़ और नसीहत व इब्रत और अमल है।

***

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ۭ نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝۳۰ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ
الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝۳۱ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ
بِالْحِجَابِ ۝۳۲ رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ۝۳۳

तर्जुमा : "हमने दाऊद (عليه السلام) को सुलेमान (عليه السلام) नामी फ़रज़न्द अता किया जो बड़ा अच्छा बन्दा था और बेहद रुजूअ करने वाला था। (30) उनके सामने शाम के वक़्त तेज़ रू ख़ास्से के घोड़े पेश किये गए। (31) तो कहने लगे मैंने अपने परवरदिगार की याद पर इन घोड़ों की मुहब्बत को तर्जीह दी। यहाँ तक कि आफ़ताब गुरूब हो गया। (32) उन घोड़ों को दोबारा मेरे सामने लाओ फिर तो पिण्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरना शुरू कर दिया।" (33)

हज़रत सुलेमान (عليه السلام) का एक वाक़िया (आ. 30 से 33) : अल्लाह तआला ने जो एक बड़ी नेअमत हज़रत दाऊद (عليه السلام) को अता की थी उसका ज़िक्र कर रहा है कि उनकी नबुव्वत का वारिस उनके लड़के हज़रत सुलेमान (عليه السلام) को कर दिया। इसीलिए सिर्फ़ हज़रत सुलेमान (عليه السلام) का ज़िक्र किया वरना उनकी और औलादें भी थीं। एक सौ औरतें आपकी लौण्डियों के अलावा थीं। चुनाँचे और आयत में है (وَوَرِثَ

سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ (नम्ल 27:16) हज़रत दाऊद (عليه السلام) के वारिस हज़रत सुलेमान (عليه السلام) हुए, यानी नबुव्वत आपके बाद उन्हें मिली। यह भी बड़े अच्छे बन्दे थे। यानी ख़ूब इबादतगुज़ार थे और अल्लाह तआला की तरफ़ झुकने वाले थे। मक्हूल (रह़.) कहते हैं कि ''जनाब दाऊद नबी (عليه السلام) ने एक बार आपसे चंद सवालात किये और उनके सही जवाबात पाकर फ़र्माया कि आप अल्लाह के नबी हैं। पूछा कि सबसे अच्छी चीज़ क्या है? जवाब दिया कि अल्लाह तआला की तरफ़ की सकीनत और ईमान। फिर पूछा कि सबसे बुरी चीज़ क्या है? सुलेमान (عليه السلام) ने अर्ज़ किया कि ईमान के बाद कुफ़्र करना। फिर पूछा कि सबसे ज़्यादा मीठी चीज़ क्या है? अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला की रह़मत। फिर पूछा कि सबसे ज़्यादा ठण्डक वाली चीज़ क्या है? जवाब दिया कि अल्लाह तआला का लोगों से दरगुज़र करना, और लोगों को आपस में एक दूसरे को माफ़ कर देना।'' (इब्ने अबी ह़ातिम) हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के सामने उनकी बादशाहत के ज़माने में उनके घोड़े पेश किये गए जो बहुत तेज़ रफ़्तार थे और तीन पैरों पर खड़े रहते थे और एक पैर कुछ यूँ ही सा ज़मीन पर टिकता था।(त़ब्री : 21/192) एक यह भी है कि यह परदार घोड़े थे जो तादाद में बीस थे। इब्राहीम तैमी ने घोड़ों की तादाद बीस हज़ार बताई है, वल्लाहु आलम!

अबूदाऊद में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) तबूक या ख़ैबर के सफ़र से वापिस लौटे थे घर में तशरीफ़ फ़र्मा थे जो तेज़ हवा के झोंके से घर में एक कोने का पर्दा हट गया। वहाँ हज़रत आइशा (रज़ि.) के खेलने की गुड़ियाँ रखी हुई थीं। हुज़ूर (ﷺ) की नज़र उस पर पड़ गयी। पूछा, यह क्या है? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने जवाब दिया कि मेरी गुड़िया हैं। आप (ﷺ) ने देखा कि बीच में एक घोड़ा सा बना हुआ है जिसके कपड़े के दो पर लगे हुए हैं। पूछा यह क्या है? कहा, घोड़ा है। फ़र्माया और यह उसकेऊपर दोनों तरफ़ कपड़े के क्या बने हुए हैं?कहा यह दोनों इसके पर हैं। फ़र्माया, घोड़ा भी अच्छा है और उसके पर भी। सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने अर्ज़ किया कि क्या आपने नहीं सुना कि हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के पास पर वाले घोड़े थे? यह सुनकर हुज़ूर (ﷺ) हँस दिये यहाँ तक कि आपके आख़िरी दाँत दिखाई देने लगे।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब अल्लइबु बिल बनात : 4932; और इसकी सनद ह़सन है; इब्ने ह़िब्बान : 5864; बैहक़ी : 10/219) हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के देखने भालने में इस क़द्र मशग़ूल हो गए कि अस्र की नमाज़ का ख़्याल ही न रहा। बिलकुल भूल गए जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के मौक़े पर एक दिन लड़ाई की मशग़ूली की वजह से अ़सर की नमाज़ न पढ़ सके और मग़्रिब बाद अदा की। चुनाँचे बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''सूरज के डूबने के बाद हज़रत उ़मर (रज़ि.) कुफ़्फ़ारे क़ुरैश को बुरा कहते हुए हुज़ूर (ﷺ) के पास आए और कहने लगे ''हुज़ूर (ﷺ) मैं तो अ़सर की नमाज़ भी न पढ़ सका।'' आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं भी अब तक अदा नहीं कर सका। चुनाँचे हम बत़्हान में गए वहाँ वुज़ू किया और सूरज के ग़ुरूब होने के बाद अ़सर की नमाज़ अदा की और फिर मग़्रिब की पढ़ी।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब मन स़ल्ला बिन्नासि जमाअ़तु बअ़द ज़िहाबिल वक़्त : 596; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 631; तिर्मिज़ी : 180) यह भी हो सकता है कि दीने सुलेमान (عليه السلام) में जंगी मस़ालेह़ की वजह से ताख़ीरे नमाज़ जाइज़ हो और यह जंगी घोड़े थे जिनको उसी मक़्सद से रखा था।

चुनाँचे कुछ उलमा ने यह भी कहा है कि सलाते ख़ौफ़ के जारी होने से पहले यही हालत था। कुछ कहते हैं जब तलवारें तनी हुई हों और लश्कर भिड़ गए हों और नमाज़ के लिए रुकूअ व सुजूद का इम्कान ही न हो तब यह हुक्म है। जैसे कि सहाबा (रज़ि.) ने तुस्तर की फ़तह के मौक़े पर किया था। (सहीह बुख़ारी, किताबुल ख़ौफ़, बाब अस्सलातु इन्द मनाहिज़तिल हुसून... क़ब्ल हदीस : 945) लेकिन हमारा पहला क़ौल ही ठीक है इसलिए कि उसके बाद ही हज़रत सुलेमान (عليه السلام) का उन घोड़ों को दोबारा तलब करना वग़ैरह बयान हुआ है। उन्हें काट डालने का हुक्म दिया और फ़र्माया कि मेरे रब तआला की इबादत से मुझे इस चीज़ ने ग़ाफ़िल कर दिया। मैं ऐसी चीज़ रख ही नहीं सकता। (तब्री : 21/195) चुनाँचे उनकी कूचें काट दी गई और उनकी गर्दनें मारी गईं। (तब्री : 21/195) लेकिन हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का बयान है कि आप (عليه السلام) ने घोड़ों की पेशानी के बालों वग़ैरह पर हाथ फेरा। (तब्री : 21/196)

इमाम इब्ने जरीर(रह.) भी इसी क़ौल को इख़्तियार करते हैं कि "बिला वजह जानवरों को ईज़ा पहुँचाना मम्नूअ है, उन जानवरों का क़सूर न था जो उन्हें कटवा देते।" लेकिन मैं कहता हूँ कि मुम्किन है यह बात उनकी शरअ में जाइज़ हो। ख़ुसूसन ऐसे वक़्त जबकि वह यादे इलाही में हारिज हुए और नमाज़ का वक़्त निकल गया तो दरअसल यह गुस्सा भी अल्लाह के लिए था। चुनाँचे इसी वजह से उन घोड़ों से भी तेज़ और हल्की चीज़ अल्लाह तआला ने अपने नबी (عليه السلام) को अता की, यानी हवा उनके ताबेअ कर दी। हज़रत अबू क़तादा (रह.) और हज़रत अबू दहमा (रह.) अक्सर हज्ज किया करते थे। उनका बयान है कि एक बार एक गाँव में हमारी एक देहाती से मुलाक़ात हो गई तो उसने कहा कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मेरा हाथ थामकर मुझे बहुत कुछ दीनी ता'लीम दी, उसमें यह भी फ़र्माया कि अल्लाह तआला से डरकर तू जिस चीज़ को छोड़ेगा अल्लाह तआला तुझे उससे बेहतर अता करेगा।" (अहमद : 5/78; और इसकी सनद सहीह है।)

***

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ
لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾
فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ
وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾

तर्जुमा : ''हमने सुलेमान (ﷺ) की आज़माइश की और उनके तख़्त पर एक जिस्म डाल दिया फिर उसने रुजूअ किया। (34) कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसा मुल्क अ़ता कर जो मेरे सिवा किसी शख़्स के लायक़ न हो। तू बड़ा ही देने वाला है। (35) बस हमने हवा को उनके मातहत कर दिया वह आप (ﷺ) के हुक्म से जहाँ आप (ﷺ) चाहते नर्मी के साथ पहुँचा दिया करती थी। (36) और ताक़तवर जिन्नात को भी उनका मातहत कर दिया हर इमारत बनाने वाले को और ग़ोताख़ोर को। (37) और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े रहते। (38) यह है हमारा अ़तिया अब तू एहसान कर या रोक रख कुछ हिसाब नहीं। (39) उनके लिए हमारे पास बड़ा नज़दीकी का मर्तबा है और बहुत अच्छा ठिकाना है।'' (40)

हज़रत सुलेमान (ﷺ) की आज़माइश और इख़्तियारात (आ. 34 से 40) : हमने हज़रत सुलेमान (ﷺ) का इम्तिहान लिया और उनकी कुर्सी पर एक जिस्म डाल दिया यानी शैतान। फिर वह अपने तख़्तो ताज की तरफ़ लौट आए। उस शैतान का नाम सख़र था या आसिफ़ था या सुर्द था या हक़ीक़ था। यह वाक़िया अक्सर मुफ़स्सिरीन ने ज़िक्र किया है। किसी ने बहुत तफ़्सील के साथ, किसी ने इख़्तिसार के साथ। हज़रत क़तादा (रह.) इस वाक़िया को इस तरह बयान करते हैं कि हज़रत सुलेमान (ﷺ) को बैतुल मक़्दिस की ता'मीर का हुक्म हुआ कि इस तरह बनाओ कि लोहे की आवाज़ भी न सुनी जाए, आपने हर चंद तदबीरें कीं लेकिन कारगर न हुईं। फिर आप (ﷺ) ने सुना कि समुन्द्र में एक शैतान है जिसका नाम सख़र है वह तो अल्बत्ता ऐसी तर्कीब बता सकता है। आप (ﷺ) ने हुक्म दिया कि उसको किसी तरह लाओ एक दरिया समुन्द्र में मिलता था। हर सातवें दिन उसमें लबालब पानी आ जाता था और यही पानी यह शैतान पीता था। उसका पानी निकाल दिया गया और बिलकुल ख़ाली कर दिया गया और बिलकुल ख़ाली करके पानी को बंद करके उसके आने वाले दिन उसे शराब से पुर कर दिया गया। यह जब आया और यह हाल देखा तो कहने लगा, है तो यह मज़े की चीज़, लेकिन दुश्मन की अक़्ल है, जिहालत को तरक़्क़ी देने वाली चीज़ है। चुनाँचे वह प्यासा ही चला गया। जब प्यास की शिद्दत हुई तो मजबूरन यह सब कुछ कहते हुए पीना ही पड़ा। अब अक़्ल जाती रही और उसे हज़रत सुलेमान (ﷺ) की अंगूठी दिखाई गई या मूँढों के बीच उससे मुहर लगा दी गई, यह बेबस हो गया। हज़रत सुलेमान (ﷺ) की हुकूमत उसी अंगूठी की वजह से थी। जब यह हज़रत सुलेमान (ﷺ) के पास पहुँचा तो आपने उसे उस काम के सरअंजाम देने का हुक्म दिया। यह गया और हुदहुद के अण्डे ले आया और उन्हें जमा करके रखकर उन पर शीशा रख दिया। हुदहुद आया, उसने अपने अण्डे देखे, चारों तरफ़ घूमा लेकिन देखा कि हाथ नहीं आ सकते, उड़कर वापिस चला गया और अलमास ले आया और उसको उस शीशे पर रखकर शीशे को काटना शुरू किया। आख़िर वह कट गया और वह अपने अण्डे ले गया। उस अलमास को ले लिया गया और फिर उसी से पत्थर काट काटकर ता'मीर शुरू हुई। हज़रत सुलेमान (ﷺ) जब बैतुलख़ला में या हम्माम में जाते तो अंगूठी उतार जाते। एक दिन हम्माम जाना था और यह शैतान आपके साथ था। आप (ﷺ) उस वक़्त फ़र्ज़ गुस्ल के लिए जा रहे थे, अंगूठी उसी को सौंप दी और चले गए उसने

अंगूठी समुन्द्र में फेंक दी और शैतान पर हज़रत सुलेमान (अ़लैहि.) की शक्ल डाल दी गई और आपसे तख़्तो ताज छिन गया। सब चीज़ों पर शैतान ने क़ब्ज़ा कर लिया सिवाय आप (अ़लैहि.) की बीवियों के। अब उससे बहुत सी ग़ैर मा'रूफ़ बातें भी ज़ुहूर में आने लगीं। तो उस ज़माने में एक साहब थे, जो ऐसे ही थे जैसे हुज़ूर (सल्ल.) के ज़माने में हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.)। उन्होंने कहा, भई! आज़माइश करनी चाहिए मुझे तो यह शख़्स सुलेमान (अ़लैहि.) नहीं मालूम होता। चुनाँचे एक दिन उन्होंने सवाल किया, क्यूँ जनाब! अगर कोई शख़्स रात को जुंबी हो जाए और सर्दी होने की वजह से वह सूरज के तुलूअ होने तक ग़ुस्ल न करे, तो क्या कोई हर्ज तो नहीं? उसने जवाब दिया हर्गिज़ नहीं, चालीस दिन तक यह तख़्ते सुलेमान पर रहा। फिर आप (अ़लैहि.) को मछली के पेट से अंगूठी मिल गई। हाथ में पहनते ही फिर तमाम चीज़ें आप (अ़लैहि.) की मुतीअ़ हो गईं, उसी का बयान इस आयत में है। सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि हज़रत सुलेमान (अ़लैहि.) की एक सौ बीवियाँ थीं, आप (अ़लैहि.) को सबसे ज़्यादा एतिबार उनमें से एक बीवी पर था जिनका नाम जुरादा था। जब जुंबी होते या रफ़अ़े हाजत के लिए जाते तो अपनी अंगूठी उन ही को सौंप जाते। एक बार आप (अ़लैहि.) पाख़ाने गऐ, पीछे से शैतान आप (अ़लैहि.) ही की सूरत बनाकर आया और बीवी साहिबा से अंगूठी तलब की, आपने दे दी। यह उसको लेते ही तख़्त पर बैठ गया। अब जो हज़रत सुलेमान (अ़लैहि.) आए और अंगूठी माँगी तो बीवी साहिबा ने कहा, आप अंगूठी तो ले गए। आप समझ गए कि यह अल्लाह तआ़ला की आज़माइश है निहायत परेशाना हाली से महल से निकल गए। उस शैतान ने चालीस दिन तक हुकूमत की लेकिन अहकाम की तब्दीली को देखकर उलमा ने समझ लिया कि यह सुलेमान (अ़लैहि.) नहीं। चुनाँचे उन उलमा की जमाअ़त आप (अ़लैहि.) की बीवियों के पास आई और उनसे कहा, यह क्या मामला है? हमें सुलेमान (अ़लैहि.) की ज़ात पर शक पैदा हो गया है। अगर यह वाक़ेई सुलेमान हैं तो इनकी अ़क़्ल जाती रही है या यह कि सुलेमान (अ़लैहि.) नहीं, वरना ऐसे ख़िलाफ़े शरअ़ अहकाम न देते। औरतें यह सुनकर रोने लगीं, और यह लोग वहाँ से वापिस आ गए और तख़्त के आसपास उसे घेरकर बैठ गए और तौरात खोलकर उसकी तिलावत शुरू कर दी, यह ख़बीस शैतान कलामुल्लाह से भागा और अंगूठी समुन्द्र में फेंक दी जिसे एक मछली निगल गई। हज़रत सुलेमान (अ़लैहि.) यूँही अपने दिन गुज़ारते थे। एक बार समुन्द्र के किनारे निकल गए भूख बहुत लगी हुई थी। माहीगीरों को मछलियों को पकड़ते हुए देखकर, उनके पास आकर उनसे एक मछली माँगी और अपना नाम भी बताया, उस पर कुछ लोगों को बड़ा तैश आया कि देखो! भीखमँगा अपने आपको सुलेमान (अ़लैहि.) बताता है। उन्होंने आप (अ़लैहि.) को मारना शुरू किया। आप (अ़लैहि.) ज़ख़्मी हो गए और एक किनारे जाकर अपने ज़ख़्म का ख़ून धोने बैठे। कुछ माहीगीरों को रहम आ गया कि एक साइल को ख़्वाह मख़्वाह मारा। जाओ भई इसे दो मछलियाँ दे आओ! भूखा है भून खाएगा चुनाँचे वह मछलियाँ आपको दे गए। भूख की वजह से आप (अ़लैहि.) अपने ज़ख़्मों को और ख़ून को तो भूल गए और जल्दी से मछली का पेट चाक करने बैठ गए। अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से मछली के पेट से वह अंगूठी निकली। आप (अ़लैहि.) ने अल्लाह तआ़ला की ता'रीफ़ बयान की और अंगूठी उँगली में डाल ली। उसी वक़्त परिन्दों ने आकर आप (अ़लैहि.) पर साया किया और लोगों ने पहचान लिया और

आप (عليه السلام) से उ़ज़्र मअज़िरत करने लगे। आप (عليه السلام) ने फ़र्माया यह सब अम्रे रब्बी था, अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से एक इम्तिहान था। आप (عليه السلام) तशरीफ़ ले आए और अपने तख़्त पर बैठ गए और हुक्म दिया कि उस शैत़ान को जहाँ भी हो, गिरफ़्तार कर लाओ। चुनाँचे उसको क़ैद कर लिया गया। आप (عليه السلام) ने उसे एक लोहे के संदूक़ में बंद किया और ताला लगाकर उस पर अपनी मुहर लगा दी और समुन्द्र में फिंकवा दिया जो क़ियामत तक वहीं क़ेद रहेगा, उसका नाम हक़ीक़ था। आप (عليه السلام) की यह दुआ कि मुझे ऐसा मुल्क अ़ता कर जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो, यह दुआ भी क़बूल हुई और हवाएँ आप (عليه السلام) के ताबेअ़ कर दी गईं। मुजाहिद (रह.) से मरवी है कि एक शैत़ान से जिसका नाम आ़सिफ़ था। एक मर्तबा हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने पूछा कि तुम लोगों को किस त़रह फ़ित्ने में डालते हो, उसने अ़र्ज़ किया कि ज़रा मुझे अपनी अंगूठी दिखाओ मैं अभी आप (عليه السلام) को दिखाता हूँ। आप (عليه السلام) ने अंगूठी दे दी और उसने उसे समुन्द्र में फेंक दी और ख़ुद तख़्तो ताज का मालिक बन बैठा और आप (عليه السلام) के लिबास में लोगों को अल्लाह की राह से हटाने लगा, आख़िर तक। याद रहे कि यह सब वाक़ियात बनी इस्राईल के बयानकर्दा हैं और उन सबसे ज़्यादा मुंकर वाक़िया वह है जो इब्ने अबी हातिम में है और जो ऊपर बयान हुआ। जिसमें आप (عليه السلام) की बीवी साहिबा हज़रत जुरादा का ज़िक्र है। उसमें यह भी है कि आख़िर नौबत यहाँ तक पहुँची थी कि लड़के आप (عليه السلام) को पत्थर मारते थे। आप (عليه السلام) की बीवियों से उ़लमा ने जब तफ़्तीश की तो उन्होंने कहा कि हाँ! हमें भी उसके सुलेमान होने से इंकार है क्योंकि वह हालते हेज़ में हमारे पास आता है, शैत़ान को जब मालूम हुआ कि राज़ खुल गया है, तो उसने जादू की और कुफ़्र की किताबें लिखवाकर कुर्सी तले दफ़न कर दीं, और फिर लोगों के सामने उन्हें निकलवाकर उनसे कहा, देखो! इन किताबों की बदौलत सुलेमान (عليه السلام) तुम पर हुकूमत कर रहे थे। चुनाँचे लोगों ने आपको काफ़िर कहना शुरू कर दिया। हज़रत सुलेमान (عليه السلام) समुन्द्र के किनारे मज़दूरी करते थे। एक बार एक शख़्स ने बहुत सी मछलियाँ ख़रीदीं मज़दूर को बुलाया, आप पहुँचे। उसने कहा कि यह उठा लो! पूछा मज़दूरी क्या दोगे? उसने कहा कि इसमें एक मछली तुझे दे दूँगा। आप (عليه السلام) ने टोकरा सिर पर रखा और उसके यहाँ पहुँचा दिया। उसने एक मछली दे दी। आप (عليه السلام) ने उसे लिया पेट चाक करते ही वह अंगूठी निकल पड़ी। पहनते ही कुल शयात़ीन, जिन्न इंसान फिर ताबेअ़ हो गए और झुर्मुट बाँधकर हाज़िर हो गए। आप (عليه السلام) ने मुल्क पर क़ब्ज़ा किया और उस शैत़ान को सख़्त सज़ा दी। पस (सुम्म अनाब) से मुराद शैत़ान जो मुसल्लत़ किया गया था उसका लौटना है। इसकी इस्नाद हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) तक है। यह सनद क़वी तो है लेकिन यह ज़ाहिर है कि उसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने अहले किताब से लिया है। यह भी उस वक़्त जबकि हम इसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल मान लें। अहले किताब की एक जमाअ़त हज़रत सुलेमान (عليه السلام) को नबी नहीं मानती थी तो अ़जब नहीं कि यह बेहूदा क़िस्से उसी ख़बीस जमाअ़त के गढ़े हुए हों। इसमें तो वह चीज़ें भी हैं जो बिलकुल ही मुंकर हैं। ख़ुसूसन उस शैत़ान का आप (عليه السلام) की बीवियों के पास जाना। और अइम्मा (रह.) ने भी ऐसे ही क़िस्से बयान तो किये हैं लेकिन इस बात का सबने इंकार किया है और कहा कि जिन्न हज़रत सुलेमान (عليه السلام) की बीवियों के पास नहीं जा सका और नबी के घराने की

औरतों की अस्मत व शराफ़त का तक़ाज़ा भी यही है। और भी बहुत से लोगों ने इन वाक़ियात को बहुत तफ़्सील से बयान किया है लेकिन सबकी असल यही है कि वह बनी इस्राईल और अहले किताब से लिए गए हैं, वल्लाहु आलम!

शैबानी (रह़.) फ़र्माते हैं आप (عليه السلام) ने अपनी अंगूठी अस्क़लान में पायी थी और बैतुल मक़्दिस तक तवाज़ुअन (ख़ाकसारी के तौर पर) आप पैदल चले थे। इमाम इब्ने अबी ह़ातिम (रह़.) ने सिफ़ते सुलेमान (عليه السلام) में कअ़ब अह़बार (रह़.) से एक अजीब ख़बर रिवायत की है। अबू इस्ह़ाक़ मिस्री कहते हैं कि जब (اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ) (89/फ़ज्र : 7) के क़िस्से से ह़ज़रत कअ़ब (रह़.) ने फ़राग़त ह़ासिल की तो ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) ने कहा, अबू इस्ह़ाक़! आप ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की कुर्सी का ज़िक्र भी कीजिए तो फ़र्माया कि वह हाथी दाँत की थी। दुर्र व याक़ूत, ज़बरजुद और लुअ लुअ से सज़ी थी और चारों तरफ़ उसके सोने के मोर थे, और बाएँ तरफ़ गिद्ध थे और वह भी सोने के थे। उस कुर्सी के पहले दर्जे पर दाहिनी तरफ़ दो दरख़्त सनोबर के सोने के थे और बाएँ जानिब दो शेर सोने के बने हुए थे। उनके सरों पर दो सतून ज़बरजुद के थे और कुर्सी के दोनों जानिब अंगूर की सुनहरी बेलें थीं जो कुर्सी को ढाँपे हुए थीं उसके खोशे भी सुर्ख़ मोती के थे फिर कुर्सी के आला दर्जे पर दो शेर सोने के बहुत बड़े बने हुए थे जिनके अंदर ख़ोल थे उनमें मुश्क व अंबर भरा रहता था। ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) जब कुर्सी पर आते तो यह शेर ह़रकत करते और उनके घूमने से उनके अंदर से मुश्क व अंबर चारों तरफ़ छिड़क दिया जाता। फिर दो मिम्बर सोने के बिछा दिये जाते। एक आप (عليه السلام) के वज़ीर का और एक उस वक़्त के सबसे बड़े आलिम का। फिर कुर्सी के सामने सत्तर मिम्बर सोने के और बिछा दिये जाते जिन पर बनी इस्राईल के क़ाज़ी उनके उलमा और उनके सरदार बैठते। उनके पीछे पैंतीस मिम्बर सोने के और होते थे जो ख़ाली रहा करते थे। ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) जब तशरीफ़ लाते तो पहले ज़ीने पर क़दम रखते ही कुर्सी उन तमाम चीज़ों समेत घूम जाती शेर अपना दाहिना क़दम आगे बढ़ा देता और गिद्ध अपना बायाँ पर फैला देता जब दूसरे दर्जे पर क़दम रखते तो शेर अपना बायाँ हाथ फैला देते और गिद्ध अपना दाहिना पर। जब आप (عليه السلام) तीसरे दर्जे पर चढ़ जाते और कुर्सी पर बैठ जाते तो एक बड़ा गिद्ध आपका ताज लेकर आप (عليه السلام) के सिर पर रखता फिर कुर्सी तेज़ी से घूमती। ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) ने पूछा, आख़िर इसकी क्या वजह? फ़र्माया वह एक सोने की लाट पर थी, जो सख़र नामी जिन्न ने बनाई थी। उसके घूमते ही नीचे वाले मोर गिद्ध वग़ैरह सब ऊपर आ जाते और सिर झुकाते, परों को फड़फड़ाते, जिससे आप (عليه السلام) के जिस्म पर मुश्क व अंबर का छिड़काव हो जाता। फिर एक सोने का कबूतर तौरात उठाकर आप (عليه السلام) के हाथ में देता जिसे आप (عليه السلام) तिलावत करते, लेकिन यह रिवायत बिलकुल ग़रीब है। ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) की दुआ का मतलब यह है कि मुझे ऐसा मुल्क दे कि मुझसे कोई दूसरा उसको छीन न सके जैसे कि उस जिस्म का वाक़िया हुआ जो आप (عليه السلام) की कुर्सी पर डाल दिया गया था। यह मतलब नहीं कि आप दूसरों के लिए ऐसे मुल्क के न मिलने की दुआ करते हों, लेकिन जो कुछ लोगों ने यह मअ़नी लिए हैं वह कुछ ठीक नहीं नज़र आते, बल्कि सही मतलब यही है कि आप (عليه السلام) की दुआ की यही मतलब था कि मुझे ऐसा मुल्क और

सल्तनत दी जाए कि मेरे बाद फिर किसी और शख़्स को ऐसी सल्तनत न मिले। यही आयत के अल्फ़ाज़ से मालूम होता है और यही अहादीस से भी साबित होता है। सहीह बुख़ारी में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने एक बार फ़र्माया कि "एक सरकश जिन्न ने गुज़िश्ता रात मुझ पर ज़्यादती की और मेरी नमाज़ बिगाड़ देनी चाही लेकिन अल्लाह तआला ने मुझे उस पर क़ाबू दे दिया और मैंने चाहा कि मैं उसे मस्जिद के इस सुतून से बाँध दूँ ताकि सुबह तुम सब उसे देखो लेकिन उसी वक़्त मुझे मेरे भाई (हज़रत) सुलेमान (عليه السلام) की दुआ याद आ गई।"

रावी हदीस हज़रत रौहा (عليه السلام) फ़र्माते हैं, फिर हुज़ूर (ﷺ) ने उसे ज़लीलो ख़्वार करके छोड़ दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह साद बाब क़ौलुहू (व्हब ली मुल्कल् ला यम्बग़ी लि अहदिम् मिम् बअ़दी इन्नका अन्तल वह्हाब) : 4808; सहीह मुस्लिम : 541; इब्ने हिब्बान : 2349) और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) नमाज़ में खड़े हुए तो हमने सुना कि आप (عليه السلام) ने फ़र्माया (अऊज़ु बिल्लाहि मिन्क) फिर आप (عليه السلام) ने तीन बार फ़र्माया (अल्अनुक बि लअ़नतिल्लाहि) फिर आप (ﷺ) ने इस तरह आप हाथ बढ़ाया कि गोया आप (ﷺ) किसी चीज़ को लेना चाहते हैं। जब फ़ारिग़ हुए तो हमने आपसे उन दोनों बातों की वजह पूछी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया "अल्लाह तआला का दुश्मन इब्लीस आग लेकर मेरे मुँह में डालने के लिए आया तो मैंने तीन मर्तबा अऊज़ु पढ़ी, फिर तीन मर्तबा उस पर लअ़नत भेजी, लेकिन वह फिर भी न हटा फिर मैंने चाहा कि उसको पकड़कर बाँध दूँ ताकि मदीने के लड़के उससे खेलें। अगर हमारे भाई (हज़रत) सुलेमान (عليه السلام) की दुआ न होती तो मैं यही करता।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब जवाज़ु लुइनश्शैतानु फ़ी अस्नाइस्सलात... : 542; इब्ने हिब्बान : 1979; बैहक़ी : 2/263) हज़रत अ़ता बिन यज़ीद लैसी (रह.) नमाज़ पढ़ रहे थे कि अबू उबैद ने उनके सामने से गुज़रना चाहा उन्होंने उन्हें अपने हाथ से रोक दिया। फिर फ़र्माया मुझसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने हदीस बयान की है कि "हुज़ूर (ﷺ) सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे और मैं भी हुज़ूर (ﷺ) के पीछे था। क़िरअत आप (ﷺ) पर ख़लत़ मलत़ हो गई तो फ़ारिग़ होकर फ़र्माया, "काश! तुम देखते कि मैं ने इब्लीस को पकड़ लिया था और इस क़द्र उसका गला घोंटा कि उसके मुँह से झाग मेरे शहादत की और बीच की उँगली पर पड़े। अगर मेरे भाई (हज़रत) सुलेमान (عليه السلام) की दुआ न होती तो वह सुबह होते ही इस मस्जिद के ख़म्बे से बँधा हुआ मिलता और मदीना के बच्चे उसको सताते होते। तुमसे जहाँ तक हो सके इस बात का ख़्याल रखो कि नमाज़ की हालत में तुम्हारे सामने से कोई गुज़रने न पाये।" (मुस्नद अहमद : 3/82; अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा युअमरुल मुसल्ली अंय्यदरउ अ़निल मुमिर्र बैन यदैही : 699; मुख़्तसरन और इसकी सनद हसन है।)

और हदीस में है कि रबीआ बिन यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह दैलमी (रह.) कहते हैं कि मैं हज़रत अ़ब्दुलाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) के पास त़ाइफ़ के एक बाग़ में गया जिसका नाम रहत़ था। आप उस वक़्त एक क़ुरैशी का हाथ पकड़े हुए थे जो ज़ानी और शराबी था। मैंने उनसे कहा, मुझे पता चला है कि आप यह हदीस बयान करते हैं कि जो एक घूँट शराब पियेगा अल्लाह तआला चालीस दिन तक उसकी तौबा क़बूल न करेगा और बुरा आदमी वह है जो माँ के पेट में ही बुरा हो गया है, जो शख़्स सिर्फ़ नमाज़ ही की निय्यत से

बैतुल मक़्दिस की मस्जिद में जाए तो वह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है जैसे आज ही पैदा हुआ। वह शराबी शख़्स जिसको हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) पकड़े हुए थे वह तो शराब का ज़िक्र सुनते ही झटका देकर अपना हाथ छुड़ाकर भाग गया। अब हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़र्माया, किसी को हलाल नहीं कि मेरे ज़िम्मे वह बात मंसूब करे जो मैंने न की हो। मैंने तो हुज़ूरे अकरम (ﷺ) से इस तरह सुना है कि ''जो शख़्स शराब का एक घूँट भी पी ले, उसकी चालीस दिन की नमाज़ मक़्बूल नहीं, अगर वह तौबा करे तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल करता है। फिर अगर दोबारा लौटे फिर चालीस दिन तक की नमाज़ें नामक़्बूल हैं फिर अगर तौबा कर ले तो तौबा क़बूल होगी। मुझे अच्छी तरह याद नहीं कि तीसरी या चौथी बार में फ़र्माया कि अगर फिर लौटेगा तो यक़ीनन अल्लाह तआला उसको दोज़ख़ियों के बदन का ख़ून पीप और पेशाब वग़ैरह क़ियामत के दिन पिलायेगा, और हुज़ूर (ﷺ) से मैंने सुना है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने अपनी मख़्लूक़ को अँधेरे में पैदा किया, फिर उन पर अपना नूर डाला। जिस पर वह नूर उस दिन पड़ गया वह तो हिदायत वाला हो गया और जिस तक वह नूर न पहुँचा वह भटक गया। इसीलिए मैं कहता हूँ कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के इल्म के मुताबिक़ क़लम चल चुका। और मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने अल्लाह तआला से तीन दुआएँ कीं, जिनमें से दो तो उनको मिल गईं और हमें उम्मीद है कि तीसरी हमारे लिए हो। मुझे ऐसा हुक्म दे जो तेरे हुक्म के मुवाफ़िक़ हो, मुझे ऐसा मुल्क दे जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो (3) जो शख़्स अपने घर से उस मस्जिद की नमाज़ के इरादे ही से निकले तो जब वह लौटे तो ऐसा हो जाए गोया आज ही पैदा हुआ हो। पस हमें उम्मीद है कि यह हमारे लिए अल्लाह तआला ने दी हो। (अहमद : 2/176; नसाई, किताबुल मसाजिद, बाब फ़ज़्लुल मस्जिदुल अक़्सा वस्सलातु फ़ीही : 694; और इसकी सनद सहीह है; इब्ने माजा : 1408) तबरानी में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हज़रत दाऊद (عليه السلام) को अपने लिए एक घर बनाने का हुक्म दिया। हज़रत दाऊद (عليه السلام) ने पहले अपना घर बना लिया उस पर वह्यी आई कि तुमने अपना घर मेरे घर से पहले बनाया? आप (عليه السلام) ने अर्ज़ किया, परवरदिगार! यही फ़ैसला किया गया था। फिर मस्जिद बनानी शुरू की, दीवारें पूरी हो गईं तो इत्तिफ़ाक़न तिहाई हिस्सा गिर गया। आपने अल्लाह से दुआ की तो जवाब मिला कि तू मेरा घर नहीं बना सकता। पूछा क्यूँ? फ़र्माया इसलिए कि तेरे हाथों से ख़ून बहा है। अर्ज़ कि, ऐ अल्लाह! वह भी तो तेरी मुहब्बत है। फ़र्माया, हाँ! लेकिन वह मेरे बन्दे थे। मैं उन पर रहम करता हूँ। आप (عليه السلام) पर यह कलाम सख़्त दुश्वार पड़ा। फिर वह्यी आई कि ग़मगीन न हो! मैं उसे तेरे लड़के सुलेमान के हाथों पूरा कराऊँगा। चुनाँचे दाऊद (عليه السلام) के इंतिक़ाल के बाद हज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने उसे बनाना शुरू किया। जब पूरा कर चुके तो बड़ी बड़ी कुर्बानियाँ कीं और ज़बीहे ज़िब्ह किये और बनी इस्राईल को जमा करके ख़ूब खिलाया पिलाया। चुनाँचे वह्यी का नुज़ूल हुआ कि तूने यह सब कुछ मेरे हुक्म की ता'मील की ख़ुशी में किया लिहाज़ा तू मुझसे माँग, जो मांगेगा पाएगा, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मेरे तीन सवाल हैं, मुझे ऐसा फ़ैसला समझा जो तेरे मंशा के मुताबिक़ हो, और ऐसा मुल्क दे जो मेरे बाद किसी के लायक़ न हो, और जो इस घर में आए सिर्फ़ नमाज़ की निय्यत से तो वह अपने गुनाहों से ऐसा आज़ाद हो जाए जैसे आज ही पैदा हुआ है। उनमें से दो चीज़ें तो अल्लाह तआला ने उनके दे दीं और मुझे उम्मीद है कि तीसरी

भी दे दी गई हो। (त़ब्रानी : 4477; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; मज्मउज़्ज़वाइद : 4/8;य इसकी सनद में मुहम्मद बिन अय्यूब रमली है इब्ने ह़िब्बान कहते हैं कि इससे रिवायत करना ह़लाल नहीं और अबू ज़रआ कहते हैं उसने अपने वालिद की किताबों में मौज़ूअ रिवायात दाख़िल कर दी थीं (अल्मीज़ान : 3/487; रक़म : 726) रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी हर दुआ को इन लफ़्ज़ों से शुरू करते, सुब्ह़ानल्लाहि रब्बिल अ़लिय्यिल आ'लल वह्हाब। (मुस्नद अह़मद : 4/54; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में उ़मर बिन राशिद यमामी है जिसे मुह़द्दिसीन ने ज़ईफ़ कहा है।)

एक दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत दाऊद (عليه السلام) के विसाल के बाद अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) से फ़र्माया, मुझसे अपनी ह़ाजत त़लब करो। आप (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा दिल दे जो तुझसे डरने वाला हो जैसे कि मेरे वालिद का दिल तुझसे ख़ौफ़ किया करता था, और मेरे दिल में अपनी मुह़ब्बत डाल दे जैसे कि मेरे वालिद के दिल में तेरी मुह़ब्बत थी। इस पर अल्लाह तआ़ला बहुत ख़ुश हुआ कि मेरा बन्दा ऐन मेरी अ़त़ा के वक़्त भी मुझसे मेरा डर और मेरी मुह़ब्बत त़लब करता है, मुझे अपनी क़सम! मैं इसे इतनी बड़ी सल्त़नत दूँगा जो इसके बाद किसी को न मिले। फिर अल्लाह तआ़ला ने उनकी मातह़ती में हवाएँ कर दीं और जिन्नात को भी उनका मातह़त बना दिया और इस क़द्र मुल्क व माल पर भी उन्हें ह़िसाबे क़ियामत से आज़ाद कर दिया।

इब्ने अ़साकिर में है कि ह़ज़रत दाऊद (عليه السلام) ने दुआ की कि बारी तआ़ला! सुलेमान (عليه السلام) के साथ ऐसे लुत़्फ़ो करम से पेश आ जो लुत़्फ़ो करम तेरा मुझ पर हुआ तो वह़्यी नाज़िल हुई कि सुलेमान (عليه السلام) से कह दो! वह भी इसी त़रह़ मेरा रहे जिस त़रह़ तू मेरा था तो मैं भी उसके साथ हो जाऊँगा जैसे तेरे साथ था। फिर बयान हो रहा है कि जब ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) ने अल्लाह तआ़ला की मुह़ब्बत में आकर उन ख़ूबसूरत प्यारे वफ़ादार तेज़ रफ़्तार घोड़ों को काट डाला तो अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन्हें उनके बदले उनसे बेहतर चीज़ अ़त़ा की यानी हवा को उनके ताबेअ़ फ़र्मान कर दिया जो एक महीना की राह को सुबह़ की एक घड़ी में तै कर देती थी, और इसी त़रह़ शाम को। जहाँ का इरादा करते वहीं ज़रा सी देर में पहुँचा देती। जिन्नात को भी ह़ज़रत सुलेमान (عليه السلام) के ताबेअ़ कर दिया। उनमें से कुछ बड़ी ऊँची लम्बी संगीन पुख़्ता इमारत के बनाने के काम सरअंजाम देते थे जो इंसानी त़ाक़त से बाहर था और कुछ ग़ोत़ाख़ोर थे जो समुन्द्र की तह में से लुअ लुअ और जवाहिर और दीगर क़िस्म क़िस्म की नफ़ीस व नादिर चीज़ें ला देते थे। फिर और कुछ थे जो भारी भारी बेड़ियों में जकड़े रहते थे, यह या तो वह थे जो हुकूमत से सरताबी करते थे या काम काज में शरारत और कमी करते थे या लोगों को सताते और ईज़ा देते थे। यह है हमारी मेहरबानी और हमारी बख़्शिश और हमारा इन्आम और हमारा अ़त़िया, अब तुझे इख़्तियार है जिससे जो चाहे सुलूक कर, सब बेह़िसाब है किसी पर पकड़ नहीं, जो तेरी ज़ुबान से निकलेगा वह ह़क़ होगा। स़ह़ीह़ ह़दीस में है कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) को इख़्तियार दिया गया कि अगर चाहें अ़ब्द व रसूल रहें यानी जो हुक्म दिया जाए बजा लाते रहें और अगर चाहें नबी और बादशाह बना दिये जाएँ, जिसे चाहें दें और जिसे चाहें न दें और उसका कोई ह़िसाब अल्लाह तआ़ला के यहाँ न

लिया जाएगा तो आप (ﷺ) ने हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) से मश्वरा लिया और आपके मश्वरे से पहली बात क़बूल की क्योंकि फ़ज़ीलत के लिहाज़ से और आला वही है। भले नबुव्वत व सल्तनत भी बड़ी चीज़ है। इसीलिए हज़रत सुलेमान (عليه السلام) के दुनियावी अज़्ज़ व जाह बयान करते ही फ़र्माया कि वह दारे आख़िरत में भी हमारे पास बड़े मर्तबे और बेहतरीन बुज़ुर्गी और आलातर क़ुर्ब व नज़दीकी रखते हैं।

***

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾
اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ
مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ
وَلَا تَحْنَثْ ۗ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ۗ نِعْمَ الْعَبْدُ ۗ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

तर्जुमा : "हमारे बन्दे अय्यूब (عليه السلام) का भी ज़िक्र कर, जबकि उसने अपने रब तआला को पुकारा कि मुझे शैतान ने रंज और दुख पहुँचाया है। (41) अपना पैर मारो। यह है नहाने का ठण्डा और पीने का पानी। (42) और हमने उसे उसका पूरा कुंबा अता किया बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी ख़ास रहमत से और अक़्लमंदों की नसीहत के लिए। (43) और अपने हाथ में तीलियों की एक झाडू लेकर मार दे और क़सम का ख़िलाफ़ न कर। सच तो यह है कि हमने उसे बड़ा साबिर बन्दा पाया। वह बड़ा नेक बन्दा था, और बड़ी ही रग़बत रखने वाला।" (44)

हज़रत अय्यूब (عليه السلام) का ज़िक्र और उनकी बीमारी (आ. 41 से 44) : हज़रत अय्यूब (عليه السلام) का ज़िक्र हो रहा है और उनके सब्र की और इम्तिहान में पास होने की ता'रीफ़ बयान हो रही है कि माल बर्बाद हो गया, औलादें मर गईं, जिस्म मरीज़ हो गया। यहाँ तक कि सूई के नाके के बराबर सारे जिस्म में ऐसी जगह न थी जहाँ बीमारी न हो। सिर्फ़ दिल सलामत रह गया था और फिर फ़क़ीरी और मुफ़्लिसी का यह हाल था कि एक वक़्त का खाना पास न था और इस हाल में कोई ऐसा न था जो ख़बरगीरी करता सिवा एक अपनी बीवी साहिबा (عليها السلام) के, जिनके दिल में अल्लाह का डर और अपने शौहर की मुहब्बत थी। लोगों का काम काज करके अपना और अपने शौहर का पेट पालती थीं। आठ साल तक यही हाल रहा। हालाँकि इससे पहले उनसे ज़्यादा मालदार कोई और न था। औलाद भी बहुत थीं और दुनिया की हर राहत मौजूद थी। अब हर चीज़ छीन ली गई

थी, और शहर का कूड़ा करकट जहाँ डाला जाता था वहाँ आप (عليه السلام) को ला बिठाया था। उसी हाल में एक दो दिन नहीं साल दो साल नहीं अठारह साल कामिल गुज़रे, अपने और ग़ैर हर एक ने मुँह फेर लिया था यहाँ तक कि ख़ैरियत पूछने वाला भी कोई न था। सिर्फ़ आप (عليه السلام) की यही एक बीवी साहिबा थीं जो हर वक़्त दिन व रात आपकी ख़िदमत में कमरबस्ता थीं, अल्बत्ता पेट पालने के लिए मेहनत मज़दूरी के वक़्त आपकी ख़िदमत से मजबूरन अलग होना पड़ता था। आख़िरकार आज़माइश के ख़त्म होने का वक़्त आया और उस बरगुज़ीदा बन्दे ने रब्बुल आलमीन इलाहल मुर्सलीन की बारगाह में तज़र्रोअ वज़ारी की और कपकपाते हुए होंठों, हुज़ूरे क़ल्ब के साथ दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! पालनहार! मुझे दुख ने तड़पा दिया है और तू अरहमुर्राहिमीन है। यहाँ जो दुआ है उसमें जिस्मानी तक्लीफ़ और माल व औलाद के दुख दर्द का ज़िक्र किया। उसी वक़्त रहीमो करीम अल्लाह तआला ने उनकी दुआ को क़बूल किया, और हुक्म हुआ कि ज़मीन पर अपना पैर मारो। पैर लगते ही वहाँ एक चश्मा उबलने लगा, हुक्म हुआ कि इस पानी से गुस्ल कर लो, गुस्ल करते ही बदन की तमाम बीमारी इस तरह जाती रही गोया कोई बीमारी थी ही नहीं। फिर हुक्म हुआ कि और जगह ऐड़ी मारो! वहाँ पैर मारते ही दूसरा चश्मा जारी हो गया। हुक्म हुआ कि इसका पानी पी लो! इस पानी के पीते ही अंदरूनी बीमारियाँ भी जाती रहीं और ज़ाहिर व बातिन की आफ़ियत और कामिल तंदुरुस्ती हासिल हो गई।

इब्ने जरीर और इब्ने अबी हातिम में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं, "अठारह साल तक अल्लाह तआला के यह पैग़म्बर दुख दर्द में मुब्तला रहे, अपने और ग़ैर सबने छोड़ दिया।" यहाँ आप (عليه السلام) के दो मुख़्लिस दोस्त सुबह व शाम ख़ैरियत और मिज़ाजपुर्सी के लिए आ जाया करते थे। एक मर्तबा एक ने दूसरे से कहा, मेरा ख़्याल यह है कि अय्यूब (عليه السلام) ने अल्लाह तआला की कोई बड़ी नाफ़र्मानी की है कि अठारह साल से इस बला में मुब्तला है और अल्लाह तआला इन पर रहम नहीं करता। उस दूसरे शख़्स ने शाम को हज़रत अय्यूब (عليه السلام) से उस शख़्स की यह बात ज़िक्र कर दी। आप (عليه السلام) को सख़्त रंज हुआ और फ़र्माया, मैं नहीं जानता कि वह ऐसा क्यूँ कहते हैं? अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मेरी तो यह हालत थी कि जब दो शख़्सों को आपस में झगड़ते देखता और दोनों अल्लाह तआला को बीच में लाते तो मुझसे यह न देखा जाता कि अल्लाह तआला के अज़ीज़ नाम की इस तरह याद की जाए, क्योंकि दो में से एक तो ज़रूर मुज्रिम होगा और दोनों अल्लाह तआला का नाम ले रहे हैं, तो मैं अपने पास से दे दिलाकर उनके झगड़े को ख़त्म कर देता कि नामे अल्लाह तआला की बेअदबी न हो। आप (عليه السلام) से उस वक़्त चला फिरा बल्कि उठा बैठा भी न जाता था। पाख़ाने के बाद आपकी बीवी साहिबा (रज़ि.) आपको उठाकर लाती थीं। एक बार वह मौजूद न थीं आपको बहुत तक्लीफ़ हुई, आपने उस दिन बारगाहे इलाही में अपनी सेहत के लिए दुआ की। अल्लाह तआला की तरफ़ से वही हुई कि ज़मीन पर पैर मारो। बहुत देर के बाद जब आप (عليه السلام) की बीवी साहिबा आईं तो देखती हैं कि मरीज़ शौहर तो है नहीं और कोई दूसरा तंदुरुस्त शख़्स नूरानी चेहरे वाला बैठा हुआ है। पहचान न सकीं, और पूछने लगीं कि "ऐ अल्लाह के नेक बन्दे! यहाँ अल्लाह के एक नबी (عليه السلام) जो दर्द दुख में मुब्तला थे, उन्हें देखा है? अल्लाह की क़सम! जब वह तन्दुरुस्त थे तो क़रीब क़रीब तुम जैसे ही थे।" आप (عليه السلام) ने फ़र्माया, वह मैं ही हूँ। रावी कहता है कि आप (عليه السلام) की दो कोठियाँ थीं, एक गेहूँ के

लिए और एक जौ के लिए। अल्लाह तआला ने दो बादल भेजे, एक ने सोना बरसाया और एक कोठी अनाज की उससे भर गई और दूसरे में से भी सोना बरसा और दूसरी कोठी भी भर गई। (त़ब्री : 21/211)

स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ''ह़ज़रत अय्यूब (अ.) नंगे होकर नहा रहे थे कि आसमान से सोने की टिड्डियाँ बरसने लगीं, आप (अ.) ने जल्दी जल्दी उनको अपने कपड़े में समेटना शुरू किया तो अल्लाह तआला ने आवाज़ दी कि ऐ अय्यूब (अ.)! क्या मैंने तुम्हें ग़नी और बेपरवाह नहीं कर रखा। आप (अ.) ने जवाब दिया, हाँ ऐ अल्लाह! बेशक तूने मुझे बहुत कुछ दे रखा है। मैं सबसे ग़नी और बेनियाज़ हूँ लेकिन तेरी रह़मत से बेनियाज़ नहीं हूँ बल्कि इसका तो पूरा मोह़ताज हूँ।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब अह़ादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व अय्यूबा इज़ नादा रब्बहू अन्नी मस्सनिय....) : 3391; अह़मद : 2/314) पस अल्लाह तआला ने अपने उस स़ाबिर पैग़म्बर (अ.) को नेक बदले और बेहतर जज़ाएँ अ़ता कीं। औलाद भी दी और उसी के मिस्ल और भी दी। बल्कि ह़ज़रत ह़सन और क़तादा (रह़.) से तो मंक़ूल है कि मुर्दा औलादें अल्लाह तआला ने फिर से ज़िन्दा कर दीं और उतनी ही और ज़्यादा अ़ता कीं। (त़ब्री : 21/212) यह था अल्लाह तआला का रह़म जो उनके स़ब्रो इस्तिक़्लाल, अल्लाह की त़रफ़ रुजूअ और तवाज़ोअ व इंकिसारी के बदले अल्लाह तआला ने उनको अ़ता किया और अ़क़्लमंदों के लिए नस़ीह़त व इब्रत है वह जान लेते हैं कि स़ब्र का अंजाम कुशादगी है और रह़मत व राह़त है। कुछ लोगों का बयान है कि ह़ज़रत अय्यूब (अ.) अपनी बीवी के किसी काम की वजह से उन पर नाराज़ हो गए थे। कुछ कहते हैं कि वह अपने बालों की एक लट बेचकर उनके लिए खाना लाई थीं इस बात पर आप (अ.) नाराज़ हुए और क़सम खाली थी कि शिफ़ा हो जाने के बाद सौ कोड़े मारेंगे। दूसरों ने नाराज़गी की वजह और बयान की है। जब आप (अ.) तन्दुरुस्त और सही सालिम हो गए तो इरादा किया कि अपनी क़सम को पूरा करें। लेकिन ऐसी नेक सिफ़त ख़ातून ऐसी सज़ा के लायक़ न थीं जो ह़ज़रत अय्यूब (अ.) ने तै कर रखी थी। जिस औरत ने उस वक़्त ख़िदमत की जब कोई दर्दमंद और साथी न था, इसलिए रब्बुल आलमीन और अरह़मुर्-राह़िमीन ने उन पर रह़म किया और अपने नबी (अ.) को हुक्म दिया कि क़सम पूरी करने के लिए खजूर की टहनी ले लो जिसमें एक सौ शाख़ें हों और एक बार उन्हें मार दो। ऐसा कर देने से क़सम पूरी हो जाएगी और एक ऐसी स़ाबिरा शाकिरा नेक बीवी पर सज़ा भी न होगी। यही दस्तूरे इलाही है कि वह अपने नेक बन्दों को जो उससे डरते रहते हैं, बुराइयों और बदियों से मह़फ़ूज़ रखता है। फिर अल्लाह तआला ह़ज़रत अय्यूब (अ.) की सना व सिफ़त बयान करता है कि हमने उनको बड़ा स़ाबिर व ज़ाबित़ पाया वह बड़ा नेक और अच्छा बन्दा साबित हुआ। उसके दिल में हमारी सच्ची मुह़ब्बत थी। वह हमारी ही त़रफ़ झुकता रहा और हम ही से लौ लगाये रहा। इसीलिए फ़र्माने इलाही है कि जो अल्लाह तआला से डरता रहता है अल्लाह तआला उसके लिए छुटकारे की स़ूरत निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रोज़ी देता है जो उसके ख़्याल में भी न हो। अल्लाह तआला पर भरोसा करने वालों को अल्लाह तआला ही काफ़ी है। अल्लाह तआला अपने काम में पूरा उतरता है। अल्लाह तआला ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा मुक़र्रर कर रखा है। समझदार उ़लमा-ए-किराम ने इस आयत से बहुत से ईमानी वग़ैरह मसाइल अख़ज़ किये हैं, वल्लाहु आ़लम!

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِي الْاَيْدِيْ وَالْاَبْصَارِ ۝٤٥ اِنَّآ
اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۝٤٦ وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ
۝٤٧ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۭ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ۝٤٨ هٰذَا ذِكْرٌ ۭ وَاِنَّ
لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ۝٤٩ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ۝٥٠ مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا
يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ۝٥١ وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ۝٥٢
هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٥٣ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ۝٥٤

तर्जुमा : ''हमारे बन्दों इब्राहीम, इस्हाक़ और यअक़ूब (عليهم السلام) का भी लोगों से ज़िक्र करो जो हाथों और आँखों वाले थे। (45) हमने उन्हें एक इम्तियाज़ी बात यानी आख़िरत की याद के साथ मख़्सूस किया था। (46) यह सब हमारे नज़दीक बरगुज़ीदा और बेहतरीन लोग थे। (47) इस्माईल (عليه السلام) यसअ (عليه السلام) और ज़ुल किफ़्ल (عليه السلام) का भी ज़िक्र कर दीजिए। यह सब बेहतरीन लोग थे। (48) यह है नसीहत यक़ीन मानो कि परहेज़गारों के लिए बड़ी अच्छी जगह है। (49) यानी हमेशगी वाली जन्नतें जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले हुए हैं। (50) जिनमें बाफ़राग़त तकिये लगाए बैठे हुए तरह तरह के मेवे और क़िस्म क़िस्म की शराबों की फ़र्माइशें कर रहे हैं। (51) और उनके पास नीची निगाहों वाली हमउम्र कमसिन हूरें होंगी। (52) यह है जिसका वादा तुमसे हिसाब के दिन किया जाता था। (53) बेशक यह रोज़ियाँ ख़ास हमारा अतिया हैं जिनका कभी ख़ात्मा ही नहीं।'' (54)

हज़रत इब्राहीम, इस्हाक़ और यअक़ूब (عليهم السلام) का ज़िक्र (आ. 45 से 54) : अल्लाह तआला अपने आबिद बन्दों और रसूलों की फ़ज़ीलतों को बयान कर रहा है और उनके नाम गिनवा रहा है। इब्राहीम, इस्हाक़ और यअक़ूब (عليهم السلام)। और फ़र्माता है कि उनके आमाल बहुत बेहतर थे और सही इल्म भी रखते थे। साथ ही इबादते इलाही में क़वी थे और क़ुदरत की तरफ़ से उनको बसीरत अता की गई थी, दीन में समझदार थे। इताअते इलाही में निहायज दर्जा इस्तिक़ामत रखते थे। हक़ को देखने वाले थे। उनके नज़दीक दुनिया की कोई अहमियत न थी, सिर्फ़ आख़िरत का ही हर वक़्त ख़याल बँधा रहता था। हर अमल आख़िरत के लिए ही होता

था। दुनिया की मुहब्बत से वह अलग थे और आख़िरत के ज़िक्र में हर वक़्त मशग़ूल रहते थे। वह आमाल इख़्तियार करते थे जो जन्नत का मुस्तहिक़ बना दें। लोगों को भी नेक आमाल की तर्ग़ीब देते थे। उन्हें अल्लाह तआला भी क़ियामत के दिन बेहतरीन बदले और अफ़ज़ल मक़ामात अता करेगा। यह बुज़ुर्गाने दीन अल्लाह तआला के चुनिन्दा मुख़्लिस और ख़ासुल ख़ास बन्दे हैं। इस्माईल, यसअ और ज़ुल किफ़्ल (عليهم السلام) भी पसंदीदा और ख़ास बन्दों में से थे। उनके हालात सूरह अम्बिया में गुज़र चुके हैं इसलिए हमने यहाँ बयान नहीं किये, इन फ़ज़ाइल में उनके लिए नसीहत है जो पंद व नसीहत हासिल करने के और क़बूल करने के आदी हैं। और यह मतलब भी है कि यह क़ुरआने अज़ीम ज़िक्र यानी नसीहत है।

जन्नत की नेअमतें : नेकोकार तक़्वा वालों के लिए दारे आख़िरत में कितना पाक बदला और कैसी प्यारी जगह है। हमेशगी की जन्नतें हैं जिनके दरवाज़े उनके लिए बंद नहीं बल्कि खुले हुए हैं, खुलवाने की भी ज़हमत नहीं। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "जन्नत में एक महल अदन है जिसके आसपास बुर्ज हैं। जिसके पाँच हज़ार दरवाज़े हैं और हर दरवाज़े पर पाँच हज़ार चादरें हैं। उसमें सिर्फ़ नबी या सिद्दीक़ या शहीद या आदिल बादशाह ही रहेंगे।" (इब्ने अबी हातिम; इसकी सनद में अब्दुल्लाह बिन हुर्मुज़ मक्की ज़ईफ़ रावी है जिसे इब्ने मुईन इब्ने मदीनी और नसाई वग़ैरह ने ज़ईफ़ कहा है। देखिए (अल्मीज़ान : 2/502; रक़म : 602) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)

और यह तो बहुत सी बिलकुल सही अहादीस से साबित है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। अपने तख़्तों पर तकिया लगाये बेफ़िक्री से चार ज़ानू बाआराम बैठे हुए होंगे। और जिस मेवे को या जिस क़िस्म की शराब को जी चाहे हुक्म के साथ ख़ुद्दाम सलीक़े के साथ हाज़िर कर देंगे। उनके पास उनकी बीवियाँ होंगी जो अफ़ीफ़ा, पाकदामन नीची निगाहों वाली और उनसे मुहब्बत व इश्क़ रखने वाली हा, जिनकी निगाहें कभी दूसरे की तरफ़ न उठीं, न उठ सकीं। उनकी हमउम्र और उनकी उम्र के लायक़ होंगी। उन सिफ़ात वाली जन्नत का वादा अल्लाह तआला से डरते रहने वाले बन्दों से अल्लाह तआला ने फ़र्माया है। क़ियामत के दिन यह उसके वारिस व मालिक हों गे। जबकि क़ब्रों से उठकर, आग से नजात पाकर, हिसाब से फ़ारिग़ होकर, यहाँ जाकर आराम के साथ बस जाएँगे। यह है हमारा इन्आम जिसमें न कभी कमी आएगी और न यह मुन्क़तअ होगा। जैसे फ़र्माया (مَا عِندَكُمْ يَنفَدُ ۖ وَمَا عِندَ اللَّهِ بَاقٍ) (16/नहल : 96) तुम्हारे पास जो है वह ख़त्म हो जाता है और अल्लाह तआला के पास जो है वह बाक़ी रहने वाला है। और आयत में है (غَيْرَ مَجْذُوذٍ) (11/हूद : 108) और जगह (غَيْرَ مَمْنُونٍ) (68/क़लम : 3) भी है, मतलब यह है कि न उसमें कभी कमी और घाटा आएगा और न कभी वह ख़त्म और फ़ना होगा। जैसे इर्शाद है (أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا) (13/रअद : 35) उसके मेवे और खाने पीने और उसके साये दाइमी हैं। परहेज़गारों का अंजाम यही है और काफ़िरों का अंजाम जहन्नम है। इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं।

هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿۵۵﴾ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۵۶﴾ هٰذَا ۙ
فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿۵۷﴾ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿۵۸﴾ هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ
مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿۵۹﴾ قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ
اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿۶۰﴾ قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ
عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿۶۱﴾ وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ
الْاَشْرَارِ ﴿۶۲﴾ اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿۶۳﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ
تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿۶۴﴾

तर्जुमा : ''यह तो हुई जज़ा, याद रखो कि सरकशों के लिए बड़ी बुरी जगह है।(55) जो दोज़ख़ है जिसमें वह जाएँगे, आह! क्या ही बुरा बिछौना है (56) यह है पस उसे चखें गर्म पानी और पीप (57) और कुछ और उसी शक्ल की तरह तरह की चीज़ें। (58) यह एक क़ौम है जो तुम्हारे साथ आग में जाने वाली है, उन्हें ख़ुशी और कुशादगी न हो, यही तो जहन्नम में जाने वाले हैं। (59) वह कहेंगे बल्कि तुम ही हो कि तुम्हें ख़ुशी न हो। तुम ही ने तो उसे पहले ही से हमारे सामने ला रखा था। पस रहने की बड़ी बुरी जगह है। (60) वह कहेंगे कि ऐ हमारे रब! जिसने कुफ़्र की रस्म हमारे लिए पहले निकाली हो उसके हक़ में जहन्नम की दुगुनी सज़ा कर दे। (61) जहन्नमी कहेंगे, यह क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62) क्या हमने ही उनका मज़ाक़ बना रखा था या हमारी निगाहें उनसे बहक रही हैं? (63) यक़ीन जानो कि दोज़ख़ियों का यह झगड़ा ज़रूर ही होगा।'' (64)

जहन्नम की सख़्तियाँ (आ. 55 से 64) : मज़्कूरा बाला आयतों में नेकों का हाल बयान किया तो यहाँ बदकार लोगों का हाल बयान कर रहा है जो अल्लाह तआला का हुक्म नहीं मानते थे कि उनके लौटने की जगह बहुत बुरी है और वह जहन्नम है जिसमें यह लोग दाख़िल होंगे और चारों तरफ़ से उन्हें आतिशे जहन्नम घेर लेगी। यह निहायत ही बुरा बिछौना है। ''हमीम'' उस पानी को कहते हैं जिसकी हरारत और गर्मी इंतिहा को

पहुँच चुकी हो। और ग़स्साक़ कहते हैं उस ठण्ड को जिसकी सर्दी इंतिहा को पहुँच चुकी हो। पस एक तरफ़ आग का गर्म अज़ाब और दूसरी जानिब ठण्डी का सर्द अज़ाब और इसी तरह क़िस्म क़िस्म के जोड़ जोड़ के अज़ाब, जो एक दूसरे की ज़िद हों। मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "अगर एक ढोल ग़स्साक़ का दुनिया में बहाया जाए तो तमाम अहले दुनिया बदबूदार हो जाएँ।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबे अहलिन्नार : 2584; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ है। अहमद : 3/28) हज़रत कअब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं कि ग़स्साक़ नामी जहन्नम में एक नहर है जिसमें साँप, बिच्छू वग़ैरह का ज़हर जमा होता है फिर वह गर्म होकर पकने लगता है, उसमें जहन्नम वालों को ग़ोते दिये जाएँगे जिससे उनका सारा गोश्त पोस्त झड़ जाएगा और पिण्डलियों में लटक जाएगा। जिसे वह इस तरह घसीटते फिरेंगे जैसे कोई शख़्स अपना कपड़ा घसीट रहा हो। (इब्ने अबी हातिम)

ग़र्ज़ सर्दी का अज़ाब अलग होगा, गर्मी का अलग होगा। हमीम पीने को ज़क़्क़ूम खाने को। कभी आग के पहाड़ों पर चढ़ाया जाता है तो कभी आग के गढ़ों में धकेला जाता है। अल्लाह तआला हम सबको उस अज़ाब से बचा ले, आमीन! अब जहन्नम वालों का झगड़ा उनका तनाज़ोअ और एक दूसरे को बुरा कहने का बयान हो रहा है। जैसे कि एक दूसरी आयत में है (كُلَّمَا دَخَلَتْ) (7/आराफ़ : 38) हर गिरोह दूसरे पर बजाय सलाम के लअनत भेजेगा, एक दूसरे को झुठलायेगा और एक दूसरे पर इल्ज़ाम रखेगा। एक जमाअत जो पहले जहन्नम में जा चुकी है वह दूसरी जमाअत को जहन्नम के दारोग़ा के साथ आती हुई देखकर कहेगी कि यह गिरोह जो तुम्हारे साथ है उन्हें मरहबान हो इसलिए कि यह भी जहन्नमी गिरोह है। वह आने वाले उनसे कहेंगे कि तुम्हारे लिए मरहबा न हो तुम ही तो थे कि हमें उन बुरे कामों की तरफ़ बुलाते रहे, जिनका अंजाम यह हुआ। पस बुरी मंज़िल है। फिर कहेंगे कि ऐ बारी तआला! जिसने हमारे लिए उसकी तक़्दीम की तू उसको दुगुना अज़ाब कर, जैसे फ़र्मान है (قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا) (7/आराफ़ : 38) यानी बाद को बदकार होने वाले लोग, अव्वलीन बदकारों के बारे में अर्ज़ करेंगे कि ऐ हमारे रब! इन्होंने ही तो हमको भी गुमराह किया था, लिहाज़ा तू इनको दुगुना अज़ाब कर, अल्लाह तआला कहेगा हर एक के लिए दुगुना अज़ाब ही है, लेकिन तुम नहीं जानते। यानी हर एक के लिए ऐसा अज़ाब है जिसकी इंतिहा उसी के लिए है। चूँकि कुफ़्फ़ार वहाँ मोमिनों को न पाएँगे जिनको अपने ख़्याल में बहका हुआ जानते थे तो आपस में ज़िक्र करेंगे कि इसकी वजह क्या है जो हमें मुसलमान जहन्नम में नज़र नहीं आते?

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि अबू जहल कहेगा कि बिलाल, अम्मार और सुहैब वग़ैरह कहाँ हैं? वह तो नज़र ही नहीं आते। (तब्री : 21/232) ग़र्ज़ हर काफ़िर यही कहेगा कि वह लोग जिनको हम दुनिया में शरीर गिनते थे वह आज यहाँ नज़र नहीं आते। क्या हमारी ही ग़लती थी कि हम उन्हें दुनिया में ख़ातिर में न लाते और उनका मज़ाक़ उड़ाते थे? लेकिन नहीं, हमारा यह मामला उनके साथ दुरुस्त था वह होंगे तो जहन्नम में ही लेकिन किसी ऐसी तरफ़ हैं कि हमारी नज़रें उन पर नहीं पड़ती। उसी वक़्त अहले जन्नत की जानिब से आवाज़ आएगी कि ऐ अहले दोज़ख़! इधर देखो। हमने तो अपने रब तआला के वादे को हक़ पाया।

तुम अपनी कहो, क्या अल्लाह तआला के वादे सच्चे निकले? यह जवाब देंगे कि हाँ! बिलकुल सच्चे निकले। उसी वक़्त एक मुनादी निदा करेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह तआला की लअनत हो। इसी का बयान इन आयात (وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ) (7/आराफ़ : 44) से (وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ) (7/आराफ़ : 49) तक बयान हुआ है। फिर फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! जो ख़बर मैं आपको दे रहा हूँ कि जहन्नमी इस बात पर लड़ेंगे झगड़ेंगे और आपस में एक दूसरे पर लअन तअन करें, यह बिलकुल सच्ची वाक़ेई और ठीक ख़बर है, जिसमें कोई शक व शुब्हा नहीं।

***

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾ أَنتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾ مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾ إِن يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٠﴾

तर्जुमा : "कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ़ होशियार करने वाला हूँ, और अल्लाह अकेले ग़ालिब के सिवा और कोई लायक़े इबादत नहीं। (65) जो परवरदिगार है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है, वह ज़बरदस्त और बड़ा बख़्शने वाला है। (66) तू कह दे कि यह बहुत बड़ी ख़बर है। (67) जिससे बेपरवाह हो रहे हो। (68) मुझे उन बुलंद क़द्र फ़रिश्तों की बातचीत का मुत्लक़न इल्म ही नहीं। (69) मेरी तरफ़ फ़क़त यही वह्ही की जाती है कि मैं तो साफ़ साफ़ आगाह कर देने वाला हूँ।" (70)

(आयत 65 से 70) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को हुक्म करता है कि काफ़िरों से कह दो कि मेरी निस्बत तुम्हारे ख़्यालात सिर्फ़ ग़लत हैं, में तो तुम्हें डराने वाला हूँ। अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू के सिवा और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं, वह अकेला है वह हर चीज़ पर ग़ालिब है, हर चीज़ उसके मातहत है, वह ज़मीन व आसमान और हर हर चीज़ का मालिक है और सब तसर्रुफ़ात उसी के क़ब्ज़े में हैं। वह इज़्ज़तों वाला है और बावजूद उस अज़्मत व इज़्ज़त के बड़ा ही बख़्शने वाला है। यह बहुत बड़ी है यानी मेरा रसूल की हैसियत से तुम्हारे बीच आना, फिर भी तुम ऐ ग़ाफ़िलों! मेरी बयानकर्दा हक़ीक़तों से मुँह मोड़ रहे हो। यह भी कहा गया है कि यह बड़ी चीज़ है, यानी क़ुरआने करीम। हज़रत आदम (عليه السلام) के बारे में फ़रिश्तों के बीच जो

कुछ इख़्तिलाफ़ हुआ अगर रब तआला की वह़ी मेरे पास न आई होती तो मुझे उसकी बाबत क्या इल्म होता? इब्लीस का आपको सज्दा करने से इंकार करना और रब तआला के सामने उसकी मुख़ालिफ़त करना और अपनी बड़ाई जताना वग़ैरह, इन सब बातों को मैं किस तरह़ जान सकता था?

नबी (ﷺ) का एक सुहाना ख़्वाब : मुस्नद अह़मद में है कि एक दिन सुबह़ की नमाज़ में हुज़ूर (ﷺ) ने बहुत देर कर दी, यहाँ तक कि सूरज तुलूअ होने का वक़्त आ गया, फिर बहुत जल्दी करते हुए आप तशरीफ़ लाए, तक्बीर कही गई और आप (ﷺ) ने हल्की नमाज़ पढ़ाई। उसके बाद हमसे फ़र्माया ''थोड़ी देर ठहर जाओ। फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़र्माया, रात में नमाज़े तहज्जुद पढ़ रहा था कि मुझे ऊँघ आने लगी, यहाँ तक कि मैं जागा और मैंने देखा कि गोया अपने रब तआला के पास हूँ। मैंने अपने परवरदिगार को बेहतरीन उम्दा सूरत में देखा। मुझसे जनाब बारी तआला ने पूछा, जानते हो कि आलमे बाला के फ़रिश्ते इस वक़्त किस अम्र में बातचीत और सवाल-जवाब कर रहे हैं? मैंने अर्ज़ किया मेरे रब! मुझे क्या ख़बर? तीन बार के सवाल व जवाब के बाद मैंने देखा कि मेरे दोनों मूँढों के बीच अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने हाथ रखा, यहाँ तक कि उँगलियों की ठण्डक मुझे मेरे सीने में महसूस हुई और मुझ पर हर एक चीज़ रोशन हो गई। फिर मुझसे फ़र्माया, अब बतलाओ मल्अे आला में क्या बातचीत हो रही है? मैंने कहा, गुनाहों के कफ़्फ़ारे की। फ़र्माया फिर तुम बताओ कफ़्फ़ारे क्या क्या हैं ? मैंने कहा नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने के लिए क़दम उठाकर जाना, नमाज़ों के बाद मस्जिदों में बैठे रहना और दिल के न चाहने पर भी कामिल वुज़ू करना। फिर मुझसे मेरे अल्लाह तआला ने पूछा, दर्जे क्या हैं? मैंने कहा, नर्म कलामी इख़्तियार करना और रातों को जबकि लोग सोये हुए हों नमाज़ पढ़ना। अब मुझसे मेरे रब तआला ने फ़र्माया, माँग क्या माँगता है? मैंने कहा, मैं नेकियों का करना, बुराईयों को छोड़ना, मिस्कीनों से मुहब्बत रखना और तेरी बख़्शिश और तेरा रह़म और जब तेरा इरादा किसी क़ौम के साथ फ़ित्ने का हो तो उस फ़ित्ने में मुब्तला होने से पहले की मौत और तेरी मुहब्बत और तुझसे मुहब्बत रखने वालों की मुहब्बत और उन कामों की चाहत जो तेरी मुहब्बत से क़रीब करने वाले हों, माँगता हूँ। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''यह सरासर ह़क़ है इसे पढ़ो पढ़ाओ, सीखो सिखाओ!'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति साद : 3235; और इसकी सनद ह़सन है; अह़मद : 5/243) यह ह़दीस ख़्वाब की है और मशहूर भी यही है। कुछ ने कहा कि यह बेदारी की ह़ालत का वाक़िया है। लेकिन यह ग़लत़ है बल्कि सही यह है कि यह वाक़िया ख़्वाब का है और यह भी ख़्याल रहे कि क़ुरआन में फ़रिश्तों की जिस बात का रद्दोबदल करना इस आयत में मज़्कूर है वह यह नहीं, जो इस ह़दीस में है। बल्कि यह सवाल व जवाब वह है जिसका ज़िक्र इसके बाद ही है। मुलाह़िज़ा हों अगली आयतें।

***

اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ۝ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ
مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ۝ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ۝ اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ
اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا
خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ۝ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ
خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ۝ وَّاِنَّ
عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝ قَالَ
فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝ اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ۝ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ
لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ۝ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ
اَقُوْلُ ۝ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝

तर्जुमा : ''जबकि तेरे रब तआला ने फ़रिश्तों से इर्शाद फ़र्माया कि मैं मिट्टी से इंसान को पैदा करने वाला हूँ। (71) तो जब मैं उसे ठीक ठाक कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़ना। (72) चुनाँचे तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने न किया, उसने घमण्ड किया और वह काफ़िरों में से था। (73) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, ''ऐ इब्लीस! तुझे किस चीज़ ने रोका कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने हाथों से पैदा किया। क्या तू कुछ घमण्ड में आ गया है? (74) या तू बड़े दर्जे वालों में से है। (75) उसने जवाब दिया कि मैं इससे बहुत बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया है। (76) इर्शाद हुआ कि तू यहाँ से निकल जा तू मर्दूद हुआ। (77) और तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरी लअनत व फिटकार है। (78) कहने लगा, मेरे रब तआला! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक मोहलत दे, (79) अल्लाह तआला ने फ़र्माया, तू मोहलत वालों में से है (80)

तयशुदा तारीख़ तक के वक़्त तक। (81) कहने लगा फिर तो तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं इन सबको यक़ीनन बहका दूँगा। (82) सिवा तेरे उन बन्दों के जो चुनिन्दा और पसंदीदा हों। (83) फ़र्माया, सच तो यह है, और सच ही कहा करता हूँ। (84) कि तुझसे और तेरे तमाम मानने वालों से मैं भी जहन्नम को भर दूँगा।'' (85)

आदम (عليه السلام) की पैदाइश का ज़िक्र (आ. 71 से 85) : यह क़िस्सा सूरह बक़रह में और सूरह आराफ़ में और सूरह हिज्र में और सूरह सुब्हान में सूरह कहफ़ में और इस सूरह साद में बयान हुआ है। हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा करने से पहले अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को अपना इरादा बताया कि मैं मिट्टी से आदम (अ.) को पैदा करने वाला हूँ। जब मैं उसको पैदा कर दूँ तो तुम सब उसे सज्दा करना ताकि मेरी फ़र्मांबरदारी के साथ ही हज़रत आदम (عليه السلام) की शराफ़त व बुज़ुर्गी का इज़्हार हो जाए। पस तमाम फ़रिश्तों ने ता'मीले इर्शाद की। हाँ! इब्लीस उससे रुका यह फ़रिश्तों की जिंस में से था भी नहीं, बल्कि जिन्नात में से था। तब्ई ख़बासत और जिबिल्ली सरकशी ज़ाहिर हो गई। सवाल हुआ कि इतनी मुअज़्ज़ज़ मख़्लूक़ को जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया, तूने मेरे फ़र्मान के बावजूद सज्दा क्यूँ न किया? यह तकब्बुर और सरकशी? तो कहने लगा मैं इससे अफ़ज़ल व आला हूँ, कहाँ आग और कहाँ मिट्टी? उस ख़त्ताकार ने उसके समझने में ग़लती की और अल्लाह तआला के हुक्म की मुख़ालिफ़त की वजह से ग़ारत हो गया। हुक्म हुआ कि मेरे सामने से हट जा, मेरे दरबार में तुझ जैसे नाफ़र्मानों मे रसाई नहीं, अब तू मेरी रहमत से दूर हो गया और तुझ पर अबदी लअनत नाज़िल हुई और अब तू ख़ैरो ख़ूबी से मायूस हो जा। उसने अल्लाह तआला से दुआ की कि क़ियामत तक उसको मोहलत दी जाए, उस हलीम अल्लाह तआला ने जो अपनी मख़्लूक़ को उनके गुनाहों पर फ़ौरन नहीं पकड़ता उसकी यह इल्तिजा पूरी कर दी और क़ियामत तक की उसको मोहलत दे दी। अब कहने लगा कि मैं तो इसकी तमाम औलाद को बहका दूँगा, सिर्फ़ मुख़्लिस लोग तो बच जाएँगे। अल्लाह तआला को मंज़ूर भी यही था, जैसे कि क़ुरआने करीम की और आयतों में भी है मस्लन (أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي) (17/इस्रा : 62) और (إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ) (15/हिज्र : 42) (फ़ल्हक़्क़ु..) को हज़रत मुजाहिद (रह.) ने पेश से पढ़ा है।

मअ़नी यह हैं कि मैं ख़ुद हक़ हूँ और मेरी बात भी हक़ ही होती है। और एक रिवायत में इनसे यूँ मरवी है कि हक़ मेरी तरफ़ से है और मैं हक़ ही कहता हूँ। (तब्री : 21/242) औरों ने दोनों लफ़्ज़ ज़बर से पढ़े हैं। सुद्दी (रह.) कहते हैं यह क़सम है (तब्री : 21/242) मैं कहता हूँ, यह आयत इस तरह है (وَلَٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ) (32/सज्दा : 13) यानी मेरा यह क़ौल अटल है कि मैं ज़रूर बिज़्ज़रूर जहन्नम को इस क़िस्म के इंसानों और जिन्नों से भर दूँगा। और जैसे फ़र्मान है (اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ) (17/इस्रा : 63) यहाँ से निकल जा, जो शख़्स भी तेरी मानेगा उसकी और तेरी पूरी सज़ा जहन्नम है।

قُلْ مَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَآ أَنَا۠ مِنَ ٱلْمُتَكَلِّفِينَ ﴿٨٦﴾ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُۥ بَعْدَ حِينٍۭ ﴿٨٨﴾

तर्जुमा : ''कह दीजिए कि मैं तुमसे इस पर कोई उज्रत तलब नहीं करता और न मैं तकल्लुफ़ करने वाला हूँ। (86) यह तो जहान वालों के लिए सरासर नसीहत व इब्रत है। (87) यक़ीनन तुम इसकी हक़ीक़त को कुछ ही वक़्त के बाद सही तौर पर जान लोगे।'' (88)

क़ुरआन नसीहत है (आ. 86 से 88) : अल्लाह तआला अपने नबी को हुक्म देता है कि लोगों में आप ऐलान कर दीजिए कि मैं तब्लीग़े दीन और अहकामे क़ुरआन पर तुमसे कोई उज्रत व बदला नहीं माँगता। इससे मेरा मक़्सद कोई दुनियावी नफ़ा हासिल करना नहीं और न मैं तकल्लुफ़ करने वाला हूँ कि अल्लाह तआला ने नाज़िल न किया हो और मैं तस्नीफ़ कर लूँ। बल्कि मुझे तो जो कुछ पहुँचाया जाता है वही मैं तुम्हें पहुँचा देता हूँ न तो कुछ कमी कर सकता हूँ न ज़्यादती। और मेरा मक़्सद इससे सिर्फ़ रज़ाए इलाही और मर्ज़ी मौला है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं लोगो! जिसे किसी मसला का इल्म हो वह उसे लोगों से बयान कर दे और जो न जानता हो वह कह दे कि अल्लाह तआला बेहतर जानने वाला है। देखो अल्लाह तआला ने इस आयत में अपने नबी (ﷺ) से भी यही फ़र्माया कि मैं तकल्लुफ़ करने वाला नहीं हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह साद बाब क़ौलुहू (वमा अना मिनल मुतकल्लिफ़ीन) : 4809; सहीह मुस्लिम : 2798) यह क़ुरआन तमाम इंसानों और जिन्नों के लिए नसीहत है। जैसे और आयत में है (لِأُنذِرَكُم بِهِۦ وَمَنۢ بَلَغَ) (6/अन्आम : 19) ताकि मैं तुम्हें और जिन लोगों तक यह पहुँचे आगाह व होशियार कर दूँ और आयत में है (وَمَن يَكْفُرْ بِهِۦ) (11/हूद : 17) जो शख़्स भी उससे कुफ़्र करे वह जहन्नमी है। मेरी बातों की हक़ीक़त और मेरे कलाम की तस्दीक़ मेरे बयान की सच्चाई, मेरी ज़ुबान की सदाक़त तुम्हें अभी अभी मालूम हो जाएगी, यानी मरते ही और क़ियामत के क़ायम होते ही। मौत के वक़्त यक़ीन आ जाएगा और मेरी कही हुई ख़बरें अपनी आँखों से देख लोगे, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह साद की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह अज़्ज़ुमर - 39

आयात : 75 मक्की पैराग्राफ : 6

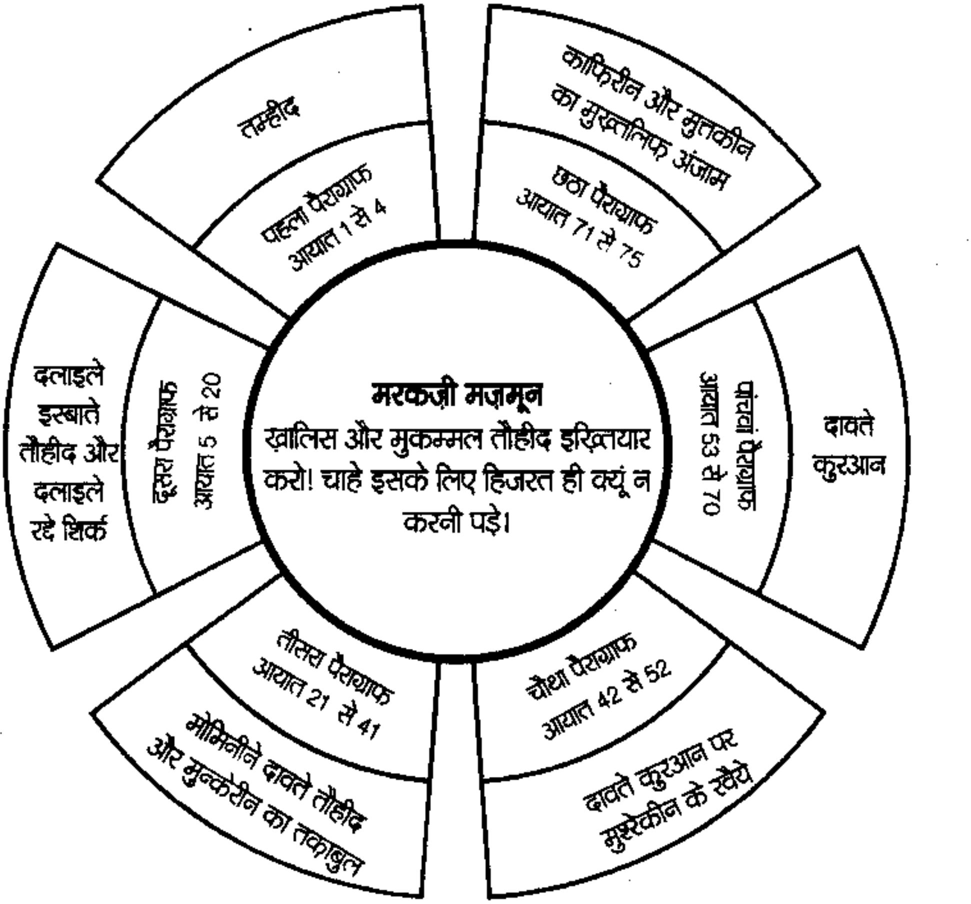

ज़मानए नुज़ूल

सूरह अज़्ज़ुमर सूरह अलकहफ़ और ऐलाने आम के बाद हिजरते हब्शा (रजब 5 नबवी) से पहले ग़ालिबन 5 नबवी के अवाइल में नाज़िल हुई, जब कुरआन की दावते तौहीद का चर्चा घर-घर आम हो चुका था और मुश्रिकीने मक्का के खुद साख़्ता अक़ीदा शफ़ाअत और बुतों की पूजा के ज़रिये तक़र्रुबे इलाही हासिल करने के अक़ीदे पर इसरार किया जा रहा था। ज़ुल्म का अभी आग़ाज़ ही हुवा था।

ये वही ज़माना था, जब सूरह "अनकबूत" और सूरह "रूम" का नुज़ूल हुवा। सूरह अज्ज़ुमर आयत नम्बर 10 में भी सूरह अनकबूत की आयत 56 की तरह हिजरते हब्शा का इशारा मौजूद है

तफ़्सीर सूरह ज़ुमर

हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "हुज़ूर (ﷺ) नफ़्ल रोज़े इस तरह पे दर पे रखे चले जाते कि हम ख़्याल करते थे कि शायद अब आप (ﷺ) छोड़ेंगे ही नहीं। और ऐसा भी होता कि आप (ﷺ) रोज़े न रखते यहाँ तक कि हमको ख़्याल होता कि अब रखेंगे ही नहीं और हर रात आप (ﷺ) सूरह बनी इस्राईल और सूरह ज़ुमर की तिलावत कर लिया करते।" (अहमद : 6/189; तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब क़िराअतु सूरह बनी इस्राईल वज़्ज़ुमर : 2920; और इसकी सनद हसन है।)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝١ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝٢ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ
دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ
مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ۝٣ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ
يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاۗءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤

तर्जुमा : "इस किताब का उतारना अल्लाह ग़ालिब बाहिक्मत की तरफ़ से है। (1) यक़ीनन हमने इस किताब को तेरी तरफ़ हक़ के साथ नाज़िल फ़र्माया, पस तू अल्लाह तआला ही की इबादत कर, उसी के लिए इबादत को ख़ालिस कर ले। (2) ख़बरदार! अल्लाह तआला ही के

लिए ख़ालिस इबादत करना है। और जिन लोगों ने उसके सिवा औलिया बना रखे हैं और कहते हैं कि हम उनकी इबादत सिर्फ़ इसलिए करते हैं कि यह बुज़ुर्ग अल्लाह तआला की नज़दीकी के मर्तबा तक हमारी रसाई कर दें यह लोग जिस बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसका सच्चा फ़ैसला अल्लाह तआला ख़ुद कर देगा। झूठे और नाशुक्रों को अल्लाह तआला राह नहीं दिखाता। (3) अगर अल्लाह तआला का इरादा औलाद का ही होता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता, लेकिन वह तो पाक है। वह वही अल्लाह तआला है यगाना और दबाव और क़ुव्वत वाला।'' (4)

अल्लाह मालिक और मअबूद है (आ. 1 से 4) : अल्लाह तबारक व तआला ख़बर देता है कि यह क़ुरआने अज़ीम उसी का कलाम है और उसी का नाज़िल किया हुआ है। इसके हक़ होने में कोई शक और शुब्हा नहीं। जैसे एक दूसरी जगह है (وَاِنَّهٗ لَتَنۡزِيۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ) (26/शोअ़रा : 192) यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से नाज़िल किया हुआ है जिसे रूहुल अमीन लेकर आए हैं। तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू आगाह करने वाला बन जा। साफ़ फ़सीह अरबी ज़ुबान में है। और आयतों में है यह बाइज़्ज़त किताब वह है जिसके आगे से पीछे से बातिल आ ही नहीं सकता, यह हिक्मत वाले ता'रीफ़ों वाले अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी है। यहाँ फ़र्माया कि यह किताब बहुत बड़े इज़्ज़त वाले और हिक्मत वाले अल्लाह तआला की तरफ़ से उतरी है जो अपने क़ौल व अफ़आल, शरीअ़त व तक़्दीर सब में हिक्मतों वाला है। हमने तेरी तरफ़ इस किताब को हक़ के साथ नाज़िल किया है। तुझे चाहिए कि ख़ुद अल्लाह तआला की इबादतों में और उसकी तौहीद में मशग़ूल रहकर सारी दुनिया को उसी तरफ़ बुला, क्योंकि उस अल्लाह तआला के सिवा किसी की इबादत ज़ेबा नहीं। वह ला शरीक लहू है वह बेमिसाल है, उसका कोई शरीक नहीं। दीने ख़ालिस यानी शहादते तौहीद के लायक़ वही है। फिर मुश्रिकों का नापाक अक़ीदा बयान किया कि वह फ़रिश्तों को अल्लाह तआला का मुक़र्रब जानकर, उनकी ख़्याली तस्वीरें बनाकर उनकी पूज पाठ करने लगे। यह समझकर कि यह अल्लाह के लाडले हमें भी अल्लाह तआला के क़रीब कर देंगे। फिर तो हमारी रोज़ियों में और हर चीज़ में ख़ूब बरकत हो जाएगी। यह मतलब नहीं कि क़ियामत के दिन हमें वह नज़दीकी और मर्तबा दिलाएँगे इसलिए कि क़ियामत के तो वह क़ाइल ही नहीं थे। यह भी कहा गया है कि वह उन्हें अपना सिफ़ारिशी जानते थे। जाहिलियत के ज़माने में हज्ज को जाते तो वहाँ लब्बैक पुकारते हुए कहते (लब्बैक ला शरीक लक इल्ला शरीकन हुव लक तम्लिकुहू वमा मलक) यानी ऐ अल्लाह! हम तेरे हुज़ूर हाज़िर हुए हैं, तेरा कोई शरीक नहीं, मगर ऐसे शरीक जिनका मालिक भी ख़ुद तू ही है और जो चीज़ें उनके मातहत हैं उनका हक़ीक़ी मालिक भी तू ही है। यही शुब्हा अगले और पिछले तमाम मुश्रिकों को रहा और उसी को तमाम अम्बिया (عليهم السلام) रद्द करते रहे और सिर्फ़ रब्बे वाहिद की इबादत की तरफ़ बुलाते रहे। यह अक़ीदा मुश्रिकों ने बेदलील गढ़ लिया था जिससे अल्लाह तआला की ज़ात पाक है। फ़र्माता है (وَلَقَدۡ بَعَثۡنَا فِىۡ كُلِّ اُمَّةٍ) (16/नह्ल : 36) यानी हर उम्मत में हमने रसूल भेजे कि तुम अल्लाह तआला ही की इबादत करो और उसके सिवा किसी की इबादत न करो। और

फ़र्माया (وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِیْٓ اِلَیْهِ) (21/अम्बिया : 25) यानी हर उम्मत में हमने रसूल भेजे कि तुम सब मेरी इबादत करना। साथ ही यह भी बयान कर दिया कि आसमान में जिस क़द्र फ़रिश्ते हैं, ख़्वाह वह कितने ही बड़े मर्तबे (ओहदों) वाले क्यूँ न हों? सबके सब उसके सामने लाचार, आजिज़ और गुलाम हैं। इतना भी तो इख़्तियार नहीं कि किसी की सिफ़ारिश में होंठ हिला सकें।

अल्लाह तआला के यहाँ बग़ैर इजाज़त कोई सिफ़ारिश न कर सकेगा : यह अक़ीदा महज़ ग़लत है कि वह अल्लाह तआला के पास ऐसे हैं जैसे बादशाहों के पास अमीर उमरा होते हैं कि जिसकी वह सिफ़ारिश कर दें उसका काम बन जाता है। इस बातिल और ग़लत अक़ीदे से यह कहकर मना किया कि (فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ) (16/नह्ल : 74) अल्लाह तआला के सामने मिसालें न बयान किया करो, अल्लाह तआला इससे बहुत ही बुलंद व बाला है। क़ियामत के दिन अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ का सच्चा फ़ैसला कर देगा और हर एक को उसके आमाल का बदला देगा। उन सबको जमा करके फ़रिश्तों से सवाल करेगा कि क्या यह लोग तुम्हें पूजते थे? वह जवाब देंगे कि तू पाक है यह नहीं बल्कि हमारा वली और वाली तो तू ही है। यह लोग तो जिन्नात की पूजा करते थे और उनमें से अक्सर का अक़ीदा व ईमान उन्हीं पर था। अल्लाह तआला उन्हे राहे रास्त नहीं दिखाता जिनका मक़्सूद अल्लाह तआला पर झूठ बोहतान बाँधना हो और जिनके दिल में अल्लाह तआला की आयतों और उसकी निशानियों और उसकी दलीलों से कुफ़्र बैठ गया हो। फिर अल्लाह तआला ने उन लोगों के अक़ीदे की नफ़ी की जो अल्लाह तआला की औलाद ठहराते थे। मस्लन मुश्रिकीने मक्का कहते थे कि फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं।

यहूद कहते हैं कि उज़ेर (عليه السلام) अल्लाह के बेटे हैं। ईसाई गुमान करते हैं कि ईसा (عليه السلام) अल्लाह के बेटे हैं। पस फ़र्माया कि जैसा इनका ख़्याल है अगर यही होता तो अम्र इसके ख़िलाफ़ होता। पस यहाँ शर्त न तो वाक़िया होने के लिए है न इम्कान के लिए, बल्कि महाल के लिए है और मक़्सद सिर्फ़ उन लोगों की जिहालत बयान करने का है। जैसे फ़र्माया (لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا) (21/अम्बिया : 17) अगर हम इन बेहूदा बातों का इरादा करते तो अपने पास से ही बना लेते, अगर हम करने वाले ही होते। और आयत में है (قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ) (43/ज़ुख़्रुफ़ : 81) यानी ''कह दे कि अगर रहमान की औलाद होती तो मैं तो सबसे पहले इसका क़ाइल होता।'' पस यह सब आयतें शर्त को महाल के साथ मुतअल्लिक़ करने वाली हैं इम्कान या वक़ूअ के लिए नहीं, बल्कि मतलब यह है कि न यह हो सकता है, न वह हो सकता है। अल्लाह तआला इन सब बातों से पाक है। वह फ़र्द, अहद, समद और वाहिद है। हर चीज़ उसकी मातहत, फ़र्मांबरदार, आजिज़ व मोहताज, फ़क़ीर व बेकस और बेबस है। वह हर चीज़ से ग़नी है। सबसे बेपरवाह है, सब पर उसकी हुकूमत और ग़ल्बा है। ज़ालिमों के इन अक़ाइद से और जाहिलों की इन बातों से उसकी ज़ात पाक, मुबर्रा और मुनज़्ज़ा है।

***

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى
الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۗ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ
⑤ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ۖ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ
ثَلٰثٍ ۖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ⑥

तर्जुमा : "निहायत अच्छी तदबीर से उसने आसमानों और ज़मीन को बनाया। वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेट देता है और उसने सूरज चाँद को काम पर लगा रखा है। हर एक मुक़र्रर मुद्दत पर चल रहा है। यक़ीन मानो कि वही ज़बरदस्त और गुनाहों का बख़्शने वाला है। (5) उसने तुम सबको एक ही शख़्स से पैदा किया है फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए चौपाययों में से आठ नर व मादा उतारे। वह तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों में एक केफ़ियत के बाद दूसरी केफ़ियत पर बनाता रहता है तीन तीन अंधेरियों में, यही अल्लाह तआला तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाहत है, उसके सिवा कोई मअबूद नहीं , फिर तुम क्यूँ बहक रहे हो?" (6)

अल्लाह तआला की क़ुदरतों का बयान (आ. 5, 6) : हर चीज़ का ख़ालिक़, सबका मालिक, सब पर हुक्मराँ और सब पर क़ाबिज़ अल्लाह तआला ही है। दिन रात का उलटफेर उसी के हाथ में है। उसी के हुक्म से इंतिज़ाम के साथ दिन रात एक दूसरे के पीछे बराबर मुसलसल चले आ रहे हैं, न वह आगे बढ़ सके, न वह पीछे रह सके। सूरज और चाँद को उसने मुसख़्ख़र कर रखा है, वह अपने दौरे को पूरा कर रहे हैं , क़ियामत तक इस निज़ाम में तुम कोई फ़र्क़ न पाओगे। वह इज़्ज़त व अज़्मत वाला, किब्रियाई और रिफ़अत वाला है। गुनहगारों का बख़्शने वाला और आसियों पर मेहरबान वही है। तुम सबको उसने एक ही शख़्स यानी हज़रत आदम (عليه السلام) से पैदा किया है। फिर देखो कि तुम्हें आपस में किस क़द्र इख़्तिलाफ़ है। रंग व सूरत और आवाज़ व बोलचाल और ज़ुबान व बयान हर एक अलग अलग है। हज़रत आदम (عليه السلام) से ही उनकी बीवी साहिबा हज़रत हव्वा (عليها السلام) को पैदा किया।

जैसे और जगह है कि लोगो! अल्लाह तआला से डरो जो तुम्हारा रब है, जिसने तुम्हें एक ही नफ़्स से

पैदा किया है उसी से उसकी बीवी को पैदा किया। फिर बहुत से मर्द व औरत फैला दिये। उसने तुम्हारे लिए आठ नर व मादा चौपाये पैदा किये। जिनका बयान सूरह अन्आम की आयत (مِّنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ) (6/अन्आम : 143) में है। यानी भेड़, बकरी, गाय, ऊँट। वह तुम्हें तुम्हारी माओं के पेटों में पैदा करता है, जहाँ तुम्हारी पैदाइश होती रहती है। पहले नुत्फ़ा, फिर ख़ून बस्ता, फिर लोथड़ा, फिर गोश्त पोस्त, हड्डी, रग पुट्ठे, फिर रूह। ग़ौर करो कि वह कितना अच्छा ख़ालिक़ है। तीन अंधेरियों में तुम्हारी यह तरह तरह की तब्दीलियों की पैदाइश का हेर फेर होता रहता है। रहम की अंधेरी, उसके ऊपर की झिल्ली की अंधेरी, और पेट की अंधेरी। (तब्री : 21/258) यह जिसने आसमान व ज़मीन को और ख़ुद तुमको और तुम्हारे अगले पिछलों को पैदा किया है, वही रब तआला है, उसी का मुल्क है, वही सबमें मुतसर्रिफ़ है, वही लायक़े इबादत है, उसके सिवा कोई और नहीं। अफ़सोस! न जाने तुम्हारी समझ और अक़्लें कहाँ गईं कि तुम उसके सिवा दूसरों की इबादत व बंदगी करने लगे।

***

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا
يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۗ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۞ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ
مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ
اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۞

तर्जुमा : ''अगर तुम नाशुक्री करो तो याद रखो कि अल्लाह तआला तुम सबसे बेनियाज़ है, हाँ! अल्लाह तआला अपने बन्दों की नाशुक्री से ख़ुश नहीं। और अगर तुम शुक्र करो तो वह उसकी वजह से तुमसे ख़ुश होगा, कोई किसी का बोझ नहीं उठाता। फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे रब तआला ही की तरफ़ है। तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते रहे। यक़ीनन वह दिलों तक की बातों का वाक़िफ़ है। (7) इंसान को जब कभी कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह ख़ूब रुजूअ होकर अपने रब तआला को पुकारता है फिर जब अल्लाह तआला उसे अपने पास से नेअमत अता कर देता है तो वह उससे पहले जो दुआ करता था उसे बिलकुल भूल जाता है और अल्लाह तआला

के शरीक मुक़र्रर करने लगता है जिससे औरों को भी उसकी राह से बहकाये। तू कह दे कि अपने कुफ़्र का फ़ायदा कुछ दिन और उठा लो, आख़िर तुम दोज़ख़ी हो।" (8)

अल्लाह सब कुछ जानता है (आ. 7, 8) : फ़र्माता है कि सारी मख़्लूक़ अल्लाह तआला की मोहताज है और अल्लाह तआला सबसे बेनियाज़ है। हज़रत मूसा (عليه السلام) का फ़र्मान कुरआन में नक़्ल है कि अगर तुम और रूए ज़मीन के सब जानदार अल्लाह तआला से कुफ़्र इख़्तियार कर लें, तो अल्लाह तआला का कोई नुक़्सान नहीं। वह सारी मख़्लूक़ से बेपरवाह और पूरी ता'रीफ़ों वाला है। सहीह मुस्लिम की हदीस में है कि "ऐ मेरे बन्दों! तुम्हारे सब अव्वल और आख़िर इंसान व जिन्न मिल मिलाकर बदतरीन शख़्स का सा दिल बनालो तो मेरी बादशाहत में कोई कमी नहीं आएगी।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577) हाँ! अल्लाह तआला तुम्हारी नाशुक्री से ख़ुश नहीं न वह इसका तुम्हें हुक्म देता है और अगर तुम उसकी शुक्रगुज़ारी करोगे तो वह उस पर तुमसे रज़ामंद हो जाएगा और तुम्हें अपनी और नेअमतें अता करेगा। हर शख़्स वही पाएगा जो उसने किया हो, एक के बदले दूसरा न पकड़ा जाएगा और अल्लाह तआला पर कोई चीज़ छुपी नहीं है। इंसान को देखो कि अपनी हाजत के वक़्त तो बहुत ही आजिज़ी और इंकिसारी से अल्लाह तआला को पुकारता है और उससे फ़रियाद करता रहता है। जैसे और आयत में है (وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي) (17/बनी इस्राईल : 67) यानी जब दरिया और समुन्द्र में होते हैं और वहाँ कोई आफ़त आती हुई देखते हैं तो जिन जिनको अल्लाह के अलावा पुकारा करते थे सबको भूल जाते हैं और सिर्फ़ अल्लाह तआला को पुकारने लगते हैं। लेकिन नजात पाते ही मुँह फेर लेते हैं, इंसान है ही नाशुक्रा, पस फ़र्माता है कि जहाँ दुख दूर हुआ फिर तो ऐसा हो जाता है गोया मुसीबत के वक़्त उसने हमें पुकारा ही न था। इस दुआ और गिरया वज़ारी को बिलकुल फ़रामोश कर देता है। जैसे और आयत में है (وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا) (10/यूनुस : 12)

यानी तक्लीफ़ के वक़्त तो इंसान हमें उठते बैठते लेटते हर वक़्त बड़े हुज़ूरे क़ल्ब (दिल) से पुकारता रहता है लेकिन उस तक्लीफ़ के हटते ही वह भी हमसे हट जाता है गोया उसने दुख दर्द के वक़्त हमें पुकारा ही न था बल्कि आफ़ियत के वक़्त अल्लाह तआला के साथ शरीक करने लगता है। पस अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐसे लोग अपने कुफ़्र से गो कुछ यूँ ही सा फ़ायदा उठा लें। इसमें डाँट है और सख़्त धमकी है। जैसे फ़र्माया (قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِنَّ مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ) (14/इब्राहीम : 30) कह दे कि फ़ायदा हासिल कर लो, आख़िरी जगह तो तुम्हारी जहन्नम ही है। और फ़र्मान है (نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ) (31/लुक़्मान : 24) हम इन्हें कुछ फ़ायदा देंगे फिर सख़्त अज़ाबों की तरफ़ बेबस कर देंगे।

***

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٩

तर्जुमा : ''भला जो शख़्स रातों के वक़्त सज्दे और क़ियाम की हालत में इबादत गुज़ार रहता हो, आख़िरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो, बतलाओ तो इल्म वाले और बेइल्म वाले क्या बराबर हो सकते हैं? नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्लमंद हों।'' (9)

आलिम और जाहिल बराबर नहीं (आ. 9) : मतलब यह है कि जिसकी हालत यह हो वह मुश्रिक के बराबर नहीं। जैसे फ़र्मान है (لَيْسُوا سَوَاءً) (आले इमरान : 113) यानी सबके सब बराबर के नहीं। अहले किताब में वह जमाअत भी है जो रातों के वक़्त क़ियाम की हालत में आयते रब्बानी की तिलावत करते हैं और सज्दों में पड़े रहते हैं। कुनूत से मुराद यहाँ पर नमाज़ का ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ है सिर्फ़ क़ियाम मुराद नहीं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) से क़ानितुन के मअनी मुतीअ और फ़र्माँबरदार के हैं। इब्ने अब्बास(रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है कि (अनाअल्लैलि) से मुराद आधी रात है। मंसूर (रह़.) फ़र्माते हैं, मुराद मग़्रिब व इशाअ के बीच का वक़्त है। क़तादा (रह़.) वग़ैरह फ़र्माते हैं पहले दरम्याना और आख़िरी रात मुराद है। यह आबिद लोग एक तरफ़ लरज़ाँ व तरसाँ हैं, दूसरी जानिब उम्मीदवार और तमअ कुनाँ हैं। नेक लोगों पर ज़िन्दगी में तो ख़ौफ़े इलाही उम्मीद पर ग़ालिब रहता है, मौत के वक़्त ख़ौफ़ पर उम्मीद का ग़ल्बा हो जाता है। रसूलुल्लाह (ﷺ) एक शख़्स के पास उसके इंतिक़ाल के वक़्त जाते हैं और पूछते हैं कि ''तू अपने आपको किस हालत में पाता है? उसने अर्ज़ किया ख़ौफ़ और उम्मीद की हालत में। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स के दिल में ऐसे वक़्त यह दोनों चीज़ें जमा हो जाएँ, उसकी उम्मीद अल्लाह तआला पूरी करता है और उसके ख़ौफ़ से उसे नजात अता फ़र्माता है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल जनाइज़, बाब अर्रिजाउ बिल्लाहि वल ख़ौफ़ि बिज़्ज़ंबि इन्दल मौत : 983; और इसकी सनद ह़सन है; इब्ने माजा : 4261; अमलल यौमु वल्लैलतु लिन्नसाई : 1070)

इब्ने उमर (रज़ि.) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, यह वस्फ़ तो सिर्फ़ ह़ज़रत उस्मान (रज़ि.) में था, फ़िल्वाक़ेअ आप रात के वक़्त बकस्रत तहज्जुद पढ़ते रहते थे और उसमें कुरआने करीम की लम्बी क़िरअत किया करते थे यहाँ तक कि कभी कभी एक ही रकअत में कुरआन ख़त्म कर देते थे, जैसे कि अबू उबेदा (रज़ि.) से मरवी है। शायर कहता है कि सुबह़ के वक़्त उनका चेहरा नूर के सबब से चमकदार होते हैं क्योंकि उन्होंने तस्बीह़ व तिलावते कुरआन में रात गुज़ारी है। नसाई वग़ैरह में ह़दीस है कि ''जिसने एक रात सौ आयतें पढ़ लीं उसके नामा-ए-आमाल में सारी रात की कुनूत लिखी जाती है।'' (अह़मद : 4/103; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; वलिल ह़दीसि शाहिद इन्दि अबी दाऊद : 1398; और इसकी सनद ह़सन है;

फ़िल्हदिसि बिही हसन; नसाई फ़ी अमलिल यौम वल्लैला : 717) पस ऐसे लोग और मुश्रिक जो अल्लाह तआला के साथ दूसरों को शरीक करते हैं किसी तरह एक मर्तबे के नहीं हो सकते। आलिम और जाहिल का दर्जा एक नहीं हो सकता। हर अक़्लमंद पर उनका फ़र्क़ ज़ाहिर है।

***

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ
وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ
اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿۱۱﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲﴾ قُلْ اِنِّيْٓ
اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۳﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ﴿۱۴﴾
فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿۱۵﴾ لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ
مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿۱۶﴾

तर्जुमा : ''मेरा पैग़ाम पहुँचा दो कि ऐ मेरे ईमान वाले बन्दों! अपने रब से डरते रहा करो। जो इस दुनिया में नेकियाँ करते हैं उनके लिए नेक बदला है। अल्लाह तआला की ज़मीन बहुत कुशादा है, सब्र करने वालों ही को उनका पूरा पूरा बेशुमार अज्र दिया जाता है। (10) तू कह दे कि मुझे हुक्म दिया गया है कि अल्लाह की इस तरह इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को ख़ालिस कर लूँ। (11) और मुझे फ़र्मान दिया गया है कि मैं सबसे पहला हुक्मबरदार बन जाऊँ। (12) कह दे कि मुझे तो अपने रब तआला की नाफ़र्मानी करते हुए बड़े दिन के अज़ाब का डर लगता है। (13) कह दे कि मैं तो ख़ालिस करके सिर्फ़ अपने रब ही की इबादत करता हूँ। (14) तुम उसके सिवा जिसकी चाहो इबादत करते रहो। कह दे कि हक़ीक़ी ज़ियाँकार वह हैं जो अपने आपको और अपने वालों को क़ियामत के दिन नुक़्सान में डाल देंगे। याद रखो कि खुल्लम

खुल्ला नुक़्सान यही है (15) उन्हें नीचे ऊपर से आग के शोले मिस्ल सायबान के ढाँक रहे होंगे। यही अज़ाब हैं जिनसे अल्लाह तआला अपने बन्दों को डरा रहा है कि मेरे बन्दो। मुझसे डरते रहा करो।" (16)

सब्र का अज्र बेहिसाब दिया जाएगा (आ. 10 से 16) : अल्लाह तआला अपने ईमान वाले बन्दों को अपने रब तआला की इताअत पर जमे रहने का और हर अम्र में उसकी पाक ज़ात का ख़्याल रखने का हुक्म देता है कि जिसने इस दुनिया में नेकी की, उसकी इसी दुनिया में और आने वाली आख़िरत में नेकी ही नेकी मिलेगी। तुम अगर एक जगह अल्लाह तआला की इबादत इस्तिक़्लाल से न कर सको तो दूसरी जगह चले जाओ, अल्लाह तआला की ज़मीन बहुत वसीअ (फैली हुई) है, मुसीबत से भागते रहो, शिर्क को मंज़ूर न करो। साबिरों को बे नापतोल और बेहिसाब अज्र मिलता है, जन्नत उन्हीं का ठिकाना है और मुझे अल्लाह तआला की ख़ालिस इबादत करने का हुक्म हुआ है, और मुझसे यह भी कह दिया गया है कि अपनी तमाम उम्मत से पहले मैं ख़ुद मुसलमान हो जाऊँ और ख़ुद को अपने रब तआला का फ़र्मांबरदार और उसके अह्काम का पाबन्द बना लूँ।

असल ख़सारा (घाटा) : हुक्म होता है कि लोगों में ऐलान कर दो कि बावजूद यह कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ लेकिन अज़ाबे इलाही से बेख़ौफ़ नहीं हूँ अगर मैं अपने रब तआला की नाफ़र्मानी करूँ तो क़ियामत के दिन अज़ाबों से मैं भी नहीं बच सकता। तो दूसरे लोगों को अल्लाह की नाफ़र्मानी से बहुत ज़्यादा इज्तिनाब करना चाहिए। तुम अपने दीन का भी ऐलान कर दो कि मैं पुख़्ता और यक्सूई वाला मुवह्हिद हूँ। तुम जिसकी चाहो इबादत करते रहो, इसमें भी डाँट डपट है न कि इजाज़त। पूरे नुक़्सान में वह हैं जिन्होंने ख़ुद अपने आपको और अपने मुतअल्लिक़ीन को नुक़्सान में फंसा दिया, क़ियामत के दिन उनमें जुदाई हो जाएगी।

अगर इनके अहल जन्नत में गए तो यह दोज़ख़ में जल रहे हैं और इनसे अलग हैं और अगर सब जहन्नम में गए तो वहाँ बुराई के साथ एक दूसरे से दूर हैं और परेशान और ग़मगीन हैं। यही वाज़ेह नुक़्सान है। फिर उनका हाल जो जहन्नम में होगा उसका बयान हो रहा है कि ऊपर तले से आग ही आग होगी।

जैसे फ़र्माया (لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ) (7/आराफ़ : 41) यानी "उनका ओढ़ना बिछौना सब आतिशे जहन्नम से ही होगा, ज़ालिमों का यही बदला है।" और आयत में है (يَوْمَ يَغْشَاهُمُ الْعَذَابُ) (29/अन्कबूत : 55) क़ियामत वाले दिन उन्हें नीचे ऊपर से अज़ाब हो रहा होगा और ऊपर से कहा जाएगा कि अपने आमाल का मज़ा चखो! यह इसलिए ज़ाहिर व बाहिर कर दिया गया और खोल खोलकर इस वजह से बयान किया गया कि उस हक़ीक़ी अज़ाब से जो यक़ीनन आने वाला है मेरे बन्दे ख़बरदार हो जाएँ और गुनाहों और नाफ़र्मानियों को छोड़ दें। मेरे बन्दो! मेरी गिरफ़्त और मेरे अज़ाब व ग़ज़ब से और मेरे इंतिक़ाम व हिसाब से डरते रहो।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ
فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ
هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾

तर्जुमा : जिन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवा दूसरों की इबादत से परहेज़ किया और हमातन (पूरे तौर पर) अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह रहे वह ख़ुशख़बरी के मुस्तहिक़ हैं। पस मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दे। (17) जो बात को कान लगाकर सुनते हैं, फिर जो बेहतरीन बात हो उस पर अमल करते हैं। यही हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने हिदायत की है और यही अक़्लमंद भी हैं।'' (18)

औसाफ़े हमीदा (आ. 17, 18) : मरवी है कि यह आयत ज़ेद बिन अम्र बिन नुफ़ैल और अबू ज़र्र और सलमान फ़ारसी (रज़ि.) के बारे में उतरी है। (तब्री : 21/273) लेकिन सही यह है कि यह आयत जिस तरह उन बुज़ुर्गों को शामिल है उसी तरह हर उस शख़्स को शामिल है जिसमें यह पाक औसाफ़ हों यानी अल्लाह तआला के सिवा सबसे बेज़ारी और अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी। यह हैं जिनके लिए दोनों जहान में ख़ुशियाँ हैं। बात समझकर, सुनकर जब वह अच्छी हो तो उस पर अमल करने वाले मुस्तहिक़े मुबारकबाद हैं। अल्लाह तआला ने अपने कलीम पैग़म्बर हज़रत मूसा (عليه السلام) से तौरात के अता करने के वक़्त फ़र्माया था, इसे मज़बूती से थामो और अपनी क़ौम को हुक्म दो कि उसकी अच्छाई को मज़बूत थाम लें। अक़्लमंद और नेक रविश लोगों में भली बातों के क़बूल करने का सही जज़्बा ज़रूर होता है।

***

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۭ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ڛ
وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : ''भला जिस शख़्स पर अज़ाब की बात साबित हो चुकी हो, तो क्या तू उसे जो दोज़ख़ में है छुड़ा सकता है? (19) हाँ! वह लोग जो अपने रब तआला का लिहाज़ करते रहे उनके लिए

बालाख़ाने हैं और उनके नीचे चश्मे बह रहे हैं। रब तआला का वादा है और वह वादाख़िलाफ़ी नहीं करता।" (20)

जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र (आ. 19, 20) : फ़र्माता है कि जिसकी बदबख़्ती लिखी जा चुकी है तू उसे सीधा रास्ता नहीं दिखा सकता। कौन है जो अल्लाह तआला के गुमराह किये हुए को राहे रास्त दिखा सके? तुझसे यह नहीं हो सकता कि तू उनकी रहबरी करके उन्हें अज़ाबे इलाही से बचा सके। हाँ! नेकबख़्त नेक आमाल और नेक अक़ीदा लोग क़ियामत के दिन जन्नत के महल्लात में मज़े करेंगे। उन बालाख़ानों में जो कई कई मंज़िलों के हैं, तमाम सामाने आराइश से आरास्ता हैं। वसीअ और बुलंद, ख़ूबसूरत और दीदाज़ेब हैं। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं, जन्नत में ऐसे महल हैं जिनका अंदुरुनी हिस्सा बाहर से और बैरूनी हिस्सा अंदर से साफ़ दिखाई देता है। एक आराबी ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह किन लोगों के लिए हैं? फ़र्माया "उनके लिए जो नर्म कलामी करें, खाना खिलाएँ और रातों को जब लोग मीठी नींद में हों तो यह अल्लाह तआला के सामने खड़े होकर गिड़गिड़ाएँ, नमाज़ें पढ़ें।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति ग़ुरफ़िल जन्ना : 2527; और वह हसन है; इब्ने अबी शैबा : 8/625; मुस्नदे अबी यअला : 428)

मुस्नद अहमद में फ़र्माने रसूलुल्लाह (ﷺ) है "जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनका ज़ाहिर बातिन से और बातिन ज़ाहिर से नज़र आता है, उन्हें अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों के लिए बनाया है जो खाना खिलाएँ, कलाम को नर्म रखें, पे दर पे नफ़्ल रोज़े बकसरत रखें और पिछली रातों को तहज्जुद पढ़ें।" (अहमद : 5/343; वहुव हदीसुन हसन अन्नहाया बि तहक़ीक़ी : 1326) मुस्नद अहमद की और हदीस में है जन्नती जन्नत के बालाख़ानों को इस तरह देखेंगे जैसे तुम आसमान के सितारों को देखते हो और रिवायत में है कि मश्रिक़ी और मग़रिबी किनारों के सितारे जिस तरह तुम्हें दिखाई देते हैं, उसी तरह जन्नत के वह महल्लात तुम्हें नज़र आएँगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब सिफ़तुल जन्नति वन्नार : 6555; सहीह मुस्लिम : 2830; अहमद : 5/340; इब्ने हिब्बान : 209) और हदीस में है कि उन महल्लात की यह ता'रीफ़ें सुनकर लोगों ने कहा, "हुज़ूर (ﷺ)! यह तो नबियों के लिए होंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! और उन लोगों के लिए जो अल्लाह तआला पर ईमान लाए और रसूलों को सच्चा जाने।" (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब फ़ी तराइ अहलिल जन्नति फ़िल ग़ुरफ़ : 2556; और इसकी सनद हसन है; और इस मअनी की रिवायत सहीह बुख़ारी 3256 में भी मौजूद है।)

मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से सहाबा (रज़ि.) ने अर्ज किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! जब तक हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहते हैं और आपके नूरानी चेहरे को देखते रहते हैं, उस वक़्त तक तो हमारे दिल नर्म रहते हैं और हम आख़िरत की तरफ़ पूरे तौर पर मुतवज्जह हो जाते हैं लेकिन जब आपकी मज्लिस से उठकर दुनियावी कारोबार में मसरूफ़ (व्यस्त) हो जाते हैं और बाल बच्चों में मशग़ूल हो जाते हैं तो उस वक़्त हमारी हालत वह नहीं रहती। तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि "तुम हर वक़्त उसी हालत पर रहते जो

हालत तुम्हारी मेरे सामने होती है तो फ़रिश्ते अपने हाथों से तुमसे मुसाफ़ा करते और तुम्हारे घरों में आकर तुमसे मुलाक़ातें करते। सुनो! अगर तुम गनुाह ही न करते तो अल्लाह तआला ऐसे लोगों को लाता जो गुनाह करें ताकि अल्लाह तआला उनको बख़्शे। हमने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! जन्नत की बिना किस चीज़ की है? फ़र्माया कि एक ईंट सोने की एक चाँदी की, उसका चूना ख़ालिस मुश्क है उसकी कंकरियाँ लूअ लूअ और याक़ूत हैं। उसकी मिट्टी ज़ाफ़रान है। उसमें जो दाख़िल हो गया वह मालामाल हो गया, जिसके बाद बेमाल होने का ख़तरा ही नहीं। वह हमेशा उसमें ही रहेगा वहाँ से निकाले जाने का इम्कान ही नहीं, न मौत का खटका है, उनके कपड़े गलते सड़ते नहीं, उनकी जवानी हमेशगी वाली है। सुनो! तीन शख़्सों की दुआ लौटाई नहीं जाती, आदिल बादशाह, रोज़ेदार और मज़्लूम। इनकी दुआ अब्र पर उठाई जाती है और इसके लिए आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़र्माता है, मुझे अपनी इज़्ज़त की क़सम! मैं तेरी ज़रूर मदद करूँगा अगरचे कुछ मुद्दत के बाद हो।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व नईमिहा : 2526; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ज़ियाद ताई का सय्यदना अबू हुरैरा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। अहमद : 2/304; इब्ने हिब्बान : 1752)

उन महल्लात के बीच चश्मे बह रहे हैं और वह भी ऐसे कि जहाँ चाहें पानी पहुँचाएँ जब और जितना चाहें बहाव रहे। यह है अल्लाह तआला का वादा अपने मोमिन बन्दों से। यक़ीनन अल्लाह तआला की ज़ात वादाख़िलाफ़ी से पाक है।

***

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : ''क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह तआला आसमान से पानी उतारता है और उसे ज़मीन की सोतों में पहुँचाता है फिर उसी के ज़रिये से मुख़्तलिफ़ क़िस्म की खेतियाँ उगाता है फिर वह ख़ुश्क हो जाती हैं और तू उन्हें पीले रंग की देखता है फिर उन्हें रेज़ा रेज़ा कर देता है। इसमें अक़्लमंदों के लिए बहुत ज़्यादा इब्रत है। (21) क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह

तआला ने इस्लाम के लिए खोल दिया है। पस वह अपने परवरदिगार की तरफ़ से एक नूर पर है। और हलाकी उन पर जिनके दिल यादे इलाही से असर नहीं लेते बल्कि सख़्त हो गए हैं। यह लोग सरीह गुमराही में मुब्तला हैं।'' (22)

पानी अल्लाह की क़ुदरत की निशानी (आ. 21, 22) : ज़मीन में जो पानी है वह दरहक़ीक़त आसमान से उतरा हुआ है। जैसे फ़र्मान है कि हम आसमान से पानी उतारते हैं। यह पानी ज़मीन पी लेती है और अंदर ही अंदर वह फैल जाता है। पस हस्बे हाजत किसी सोत से अल्लाह तआला उसे निकालता है और चश्मे जारी हो जाते हैं। जो पानी ज़मीन के मेल से खारी हो जाता है वह खारी ही रहता है। इसी तरह आसमानी पानी बर्फ़ की शक्ल में पहाड़ों पर जम जाता है जिसे पहाड़ जज़्ब कर लेते हैं और फिर उनमें से आबशारों का पानी खेतियों में पहुँचता है, जिससे खेतियाँ लहलहाने लगती हैं, जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रंग व बू की और तरह तरह के मज़े और शक्ल व सूरत की होती हैं। फिर आख़िरी वक़्त में उनकी जवानी बुढ़ापे से और सब्ज़ी ज़र्दी से बदल जाती है। फिर ख़ुश्क हो जाती हैं और काट ली जाती हैं। क्या इसमें अक़्लमंदों के लिए बसीरत व नसीहत नहीं? क्या वह इतना नहीं देखते कि इसी तरह दुनिया है कि आज जवान और ख़ूबसूरत नज़र आती है, कल बुढ़िया और बदसूरत हो जाती है। आज एक शख़्स नौजवान ताक़तवर है कल वही बूढ़ा बदशक्ल और कमज़ोर नज़र आता है, फिर आख़िर मौत के पंजे में फँसता है पस अक़्लमंद अंजाम पर नज़र रखें। बेहतर वह है जिसका अंजाम बेहतर हो। अक्सर जगह दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल बारिश से पैदा शुदा खेती के साथ दी गई है। जैसे (وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا) (18/ कहफ़ : 45) में।

फिर फ़र्माता है जिसका सीना इस्लाम के लिए खुल गया और जिसने रब तआला के पास का नूर पा लिया वह सख़्त सीने वाला, तंग दिल वाला बराबर हो सकता है? हक़ पर क़ायम और हक़ से दूर यक्साँ हो सकते हैं? जैसे फ़र्माया (اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا) (6/अन्आम : 122) वह शख़्स जो मुर्दा था हमने उसे ज़िन्दा किया और उसे नूर अता किया, जिसे अपने साथ लिए हुए लोगों में चल फिर रहा है। यह और वह जो अंधेरियों में घिरा हुआ है जिनसे छुटकारा महाल है, दोनों बराबर हो सकते हैं? पस यहाँ भी नतीजा बयान किया कि जिनके दिल अल्लाह तआला के ज़िक्र से नर्म नहीं पड़ते, अहकामे इलाही को मानने के लिए नहीं खुलते, रब तआला के सामने आजिज़ी नहीं करते, बल्कि संगदिल और सख़्त दिल हैं उनके लिए ख़राबी है, वैल, अफ़सोस और हसरत है, यह बिलकुल गुमराह हैं।

***

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ

يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۲۳﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने बेहतरीन कलाम नाज़िल फ़र्माया है जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती जुलती और बार बार दोहराई हुई आयतों की है जिससे उन लोगों के जिस्म काँप उठते हैं जो अपने रब तआला से डरते हैं आख़िर में उनके जिस्म और दिल अल्लाह तआला के ज़िक्र की तरफ़ झुक जाते हैं। यह है अल्लाह तआला की हिदायत, जिसे चाहे यह समझा देता है और जिसे अल्लाह तआला ही राह भुला दे उसका हादी कोई नहीं।" (23)

अल्लाह तआला के कलाम से मोमिनों के दिल काँप जाते हैं (आ. 23) : अल्लाह तआला अपनी इस किताब कुरआन करीम की ता'रीफ़ में फ़र्माता है कि इस बेहतरीन किताब को उसने नाज़िल किया है जो सबकी सब मुतशाबेह है और जिसकी आयतें मुकर्रर हैं, ताकि फ़हम से क़रीबतर हो जाएँ। एक आयत दूसरी के मुशाबेह और एक हर्फ़ दूसरे से मिलता जुलता। इस सूरत की आयतें उस सूरत से और उसकी इससे मिली जुली, एक ही बात और एक ही ज़िक्र कई कई जगह और फिर बेइख़्तिलाफ़। कुछ आयतें एक ही बयान में कुछ में जो मज़्कूर है उसकी ज़िद्द का ज़िक्र भी उन्हीं के साथ है। मस्लन मोमिनों के ज़िक्र के साथ ही काफ़िरों का ज़िक्र, जन्नत के साथ ही दोज़ख़ का बयान वग़ैरह। देखिए अबरार के ज़िक्र के साथ ही फ़ुज्जार का बयान है, सिज्जीन के साथ ही इल्लिय्यीन का बयान है, मुत्तक़ीन के साथ ही ताग़ीन का बयान है, ज़िक्रे जन्नत के साथ ही तज़्किरा जहन्नम है। यानी यह मअनी हैं मसानी के। और मुतशाबेहात उन आयतों को कहते हैं जो एक ही क़िस्म के ज़िक्र में मुत्तसिल चली जाती हैं। यहाँ इस लफ़्ज़ के जो मअनी हैं वह तो यह हैं और (وَاُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ) (3/आले इमरान : 7) में और ही मअनी हैं। उसकी पाक और बाअसर आयतों का मोमिनों के दिल पर नूर पड़ता है, वह उन्हें सुनते ही ख़ौफ़ज़दा हो जाते हैं। सज़ाओं और धमकियों को सुनकर उनका कलेजा कपकपाने लगता है, रौंगटे खड़े हो जाते हैं और इंतिहाई आजिज़ी और बहुत बड़ी गिरया वज़ारी से उनके दिल अल्लाह तआला की तरफ़ झुक जाते हैं। उसकी रहमत व लुत्फ़ पर नज़रें डालकर उम्मीदें बँध जातीहैं। पस उनका हाल स्याह दिलों से बिलकुल जुदागाना है। यह रब तआला के कलाम को नेकियों से सुनते हैं, वह गाने बजाने पर सर धुनते हैं। यह लोग कुरआनी आयात के ज़रिये अपने ईमान को और ज़्यादा मज़बूत करते हैं मगर जिनके दिलों में रोग है वह आयाते कुरआनिया को सुनकर मज़ीद कुफ़्र के ज़ीने पर चढ़ते हैं, यह रोते हुए सज्दों में गिर पड़ते हैं, और वह मज़ाक़ उड़ाते हुए अकड़ते हैं। कुरआन का फ़र्मान है (اِنَّمَا

(اَلْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ) (8/अन्फ़ाल : 2)

यानी यादे अल्लाह तआला मोमिनों के दिलों को हिला देती है, वह ईमान व तवक्कल में बढ़ जाते हैं, नमाज़ व ज़कात व ख़ैरात का ख़्याल रखते हैं, सच्चे बाईमान यही हैं। दर्जे, मग़्फ़िरत और बेहतरीन रोज़ियाँ यही लोग पाएँगे। और आयत में है (وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا) (25/फ़ुरक़ान : 73) यानी भले लोग आयाते क़ुरआनिया को बहरों, अंधों की तरह नहीं सुनते पढ़ते कि उनकी तरफ़ न तो सही तवज्जह हो, न इरादा अमल हो, बल्कि यह कान लगाकर सुनते हैं और दिल लगाकर समझते हैं, ग़ौरो फ़िक्र से मआनी और मतलब तक रसाई हासिल करते हैं। अब तौफ़ीक़ हाथ आती है, सज्दे में गिर पड़ते हैं और ता'मील के लिए कमरबस्ता हो जाते हैं। यह ख़ुद अपनी समझ से काम करने वाले होते हैं। दूसरों की देखा देखी जिहालत के पीछे पड़े नहीं रहते। तीसरा वस्फ़ उनमें बरख़िलाफ़ दूसरों के यह है कि क़ुरआन के सुनने के वक़्त बाअदब रहते हैं। हुज़ूर (ﷺ) की तिलावत सुनकर सहाबा किराम (रज़ि.) के जिस्म व रूह ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ झुक जाते थे, उनमें ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ पैदा हो जाता था लेकिन यह न था कि चीख़ने चिल्लाने और हुड़दंग करने लगे और अपनी सूफ़ियत जताएँ बल्कि सबात व सकून अदब और खशिय्यत के साथ कलामुल्लाह सुनते, दिल जमई और सुकून हासिल करते इसी वजह से मुस्तहिक़े ता'रीफ़ और सज़ावारे तौसीफ़ हुए। (रज़ियल्लाहु अन्हुम)

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ (रह.) से मरवी है कि हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं ओलिया अल्लाह की सिफ़त यह है कि क़ुरआन सुनकर उनके दिल मोम हो जाएँ और ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ वह झुक जाएँ, उनके दिल डर जाए, उनकी आँखें आँसू बहाएँ और तबीअत में सुकून पैदा हो जाए यह नहीं कि अक़्ल जाती रहे, अजीब कैफ़ियत तारी हो जाए, नेक व बद का होश न रहे। यह बिदअत के अफ़आल हैं कि हो हल्ला करने लगते हैं और कूदते, उछलते और कपड़े फाड़ते हैं, यह शैतानी हरकत है। ज़िक्रुल्लाह से मुराद वादा अल्लाह तआला भी बयान किया गया है। फिर फ़र्माता है कि यह हैं सिफ़तें उन लोगों की, जिन्हें अल्लाह तआला ने हिदायत दी है। उनके ख़िलाफ़ जिन्हें पाओ समझ लो कि अल्लाह तआला ने उन्हें गुमराह कर दिया है। और यक़ीन रखो कि रब तआला जिन लोगों को हिदायत देना न चाहे, उन्हें कोई राहे रास्त नहीं दिखा सकता।

***

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُوْنَ ۝٢٤ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا
يَشْعُرُوْنَ ۝٢٥ فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ

لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ
لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ
مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : "भला जो शख़्स क़ियामत के दिन के बदतरीन अ़ज़ाबों की सिपर (ढाल) अपने मुँह को बनाएगा, ऐसे ज़ालिमों से कहा जाएगा कि अपने किये का वबाल चखो। (24) इनसे पहले वालों ने भी झुठलाया, फिर इन पर इनकी बेख़बरी की हालत में ही अ़ज़ाब आ पड़े। (25) और अल्लाह तआ़ला ने इन्हें ज़िन्दगानी दुनिया की रुस्वाई का मज़ा चखाया। और अभी आख़िरत का तो बड़ा भारी अ़ज़ाब है, काश कि यह लोग समझ लें। (26) यक़ीनन हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर क़िस्म की मिसालें बयान कर दी हैं क्या अजब कि वह नसीहत हासिल कर लें। (27) क़ुरआने अ़रबी बेऐब है, हो सकता है कि वह परहेज़गारी इख़्तियार कर लें, (28) सुनो! अल्लाह तआ़ला मिसाल बयान कर रहा है एक वह शख़्स जिसमें बहुत से मुख़्तलिफ़ साझी हैं और दूसरा वह शख़्स जो सिर्फ़ एक ही का गुलाम है, क्या यह दोनों सिफ़त में यक्साँ हैं? अल्लाह तआ़ला ही के लिए सब ता'रीफ़ें। बात यह है कि इनमें के अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। (29) यक़ीनन ख़ुद तुझे भी मौत का मज़ा चखना है और यह सब भी मरने वाले हैं। (30) फिर तुम सब क़ियामत के दिन अपने रब तआ़ला के सामने झगड़ोगे।" (31)

इंकार करने वालों के लिए सख़्त अ़ज़ाब (आ. 24 से 31) : एक वह जिसे हंगामाख़ेज़ दिन में अम्नो अमान हासिल हो, और एक जिसे अपने मुँह पर अ़ज़ाब के थपेड़े खाने पड़ते हों, बराबर हो सकते हैं? जैसे फ़र्माया (اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖ) (67/मुल्क : 22) औंधे मुँह, मुँह के बल चलने वाला और रास्त क़ामत, अपने पैरों सीधी राह चलने वाला बराबर नहीं। इन कुफ़्फ़ार को तो क़ियामत के दिन औंधे मुँह घसीटा जाएगा और कहा जाएगा कि आग का मज़ा चखो। ओर आयत में है (اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِى النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ) (41/हामीम अस्सज्दा : 40) जहन्नम में दाख़िल किया जाने वाला बदनसीब अच्छा या अम्नो अमान से क़ियामत के दिन गुज़ारे वाला अच्छा? यहाँ इस आयत का भी मतलब यही है, लेकिन एक

क़िस्म का ज़िक्र करके दूसरी क़िस्म के बयान को छोड़ दिया। क्योंकि इसी से वह भी समझ लिया जाता है। यह बात शोअ़रा के कलाम में भी बराबर पाई जाती है। अगले लोगों ने भी अल्लाह तआ़ला की बातों को न माना था और रसूलों को झूठा कहा था। फिर देखो कि उन पर किस तरह उनकी बेख़बरी में मार पड़ी? अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब ने उनको दुनिया में भी ज़लीलो ख़्वार किया और आख़िरत के सख़्त अ़ज़ाब भी उनके लिए बाक़ी हैं। तो तुम्हें डरते रहना चाहिए कि रसुल (ﷺ) के सताने और न मानने की वजह से तुम पर कहीं उनसे भी बदतर अ़ज़ाब बरस न पड़ें। तुम अगर ज़ी इल्म हो तो उनके हालात और तज़्किरे तुम्हारी नसीहत के लिए काफ़ी हैं।

क़ुरआनी मिसालों को बयान करने का मक़सद : चूँकि मिसालों से बातें ठीक तौर पर समझ में आ जाती हैं इसलिए अल्लाह तआ़ला क़ुरआने करीम में हर क़िस्म की मिसालें भी बयान करता है ताकि लोग अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लें। चुनाँचे इर्शाद है (ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ) (30/रूम : 28) अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए वह मिसालें बयान कीं हैं जिन्हें तुम ख़ुद अपने आपस में बहुत अच्छी तरह जानते बूझते हो। और आयत में है (وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ) (29/अ़न्कबूत : 43) "इन मिसालों को हम लोगों के लिए बयान कर रहे हैं, उलमा ही इन्हें बख़ूबी समझ सकते हैं" यह क़ुरआन फ़सीह अ़रबी ज़बान में है जिसमें कोई कजी और कोई कमी नहीं, वाज़ेह दलीलें और रोशन हुज्जतें हैं। यह इसलिए कि इसे पढ़ सुनकर लोग अपना बचाव कर लें, उसके अ़ज़ाब की आयतों को सामने रखकर बुराइयाँ छोड़ दें, और उसके सवाब की आयतों की तरफ़ नज़रें रखकर नेक आ़माल में मेहनत करें। इसके बाद जनाब बारी अ़ज़्ज़ इस्मुहू मुवह्हिद और मुश्रिक की मिसाल बयान करता है कि एक तो वह ग़ुलाम जिसके मालिक बहुत सारे हों और वह भी आपस में एक दूसरे के मुख़ालिफ़ हों, दूसरा वह ग़ुलाम जो ख़ालिस़ सिर्फ़ एक ही शख़्स की मिल्कियत का हो, उसके सिवा उस पर दूसरे किसी का कोई इख़्तियार न हो, क्या यह दोनों तुम्हारे नज़दीक एक जैसे हैं? हर्गिज़ नहीं! इसी तरह मुवह्हिद जो सिर्फ़ एक अल्लाह वहदहू ला शरीक लहू की ही इबादत करता है और मुश्रिक जिसने अपने मअ़बूद बहुत से बना रखे हैं, उन दोनों में भी कोई निस्बत नहीं। कहाँ यह मुख़्लिस़ मुवह्हिद? कहाँ यह दर बदर भटकने वाला मुश्रिक? इस ज़ाहिर बाहिर रोशन और स़ाफ़ मिसाल के बयान पर भी रब्बुल आ़लमीन की हम्दो सना बयान करनी चाहिए कि उसने अपने बन्दों को इस तरह समझा दिया कि हक़ीक़त बिलकुल खुल गई, शिर्क की बदी और तौहीद की ख़ूबी अच्छी तरह ज़हन नशीन हो गई। अब रब्बे तआ़ला के साथ वही लोग शरीक करेंगे जो यक्सर बेइल्म हों , जिनमें समझ बूझ बिलकुल ही न हो। उसके बाद की आयत को हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की वफ़ात के बाद पढ़कर फिर दूसरी आयत (وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ) (3/आले इमरान : 144) की आख़िर आयत तक तिलावत करके लोगों को बतलाया था कि हुज़ूर (ﷺ) की वफ़ात हो चुकी। आपका कलाम सुनकर सबको यक़ीन हो गया था। मतलब आयते करीमा का यह है कि सब इस दुनिया से जाने वाले हैं और आख़िरत में अपने रब तआ़ला के पास जमा होने वाले हैं, वहाँ अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों और मुवह्हिदों में स़ाफ़ फ़ैसला कर देगा और हक़ ज़ाहिर हो जाएगा। उससे अच्छे फ़ैसले वाला और उससे ज़्यादा इल्म वाला कौन है? ईमान, इख़्लास़ और तौहीद व

सुन्नत वाले नजात पाएँगे। शिर्क व कुफ़्र, इंकार व तक्ज़ीब करने वाले सख़्त सज़ाएँ उठाएँगे। इसी तरह जिन दो शख़्सों में झगड़ा और इख़्तिलाफ़ दुनिया में था क़ियामत के दिन वह रब आदिल के सामने पेश होकर फ़ैसल होगा। इस आयत के नाज़िल होने पर हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने रसूले अकरम (ﷺ) से सवाल किया कि क़ियामत के दिन फिर से झगड़े होंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! यक़ीनन! तो हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा, फिर तो सख़्त मुश्किल है। (हाकिम : 2/435; और इसकी सनद हसन है। इब्ने अबी हातिम)

सब मरकर दोबारा ज़िन्दा होंगे : मुस्नद अहमद की इस हदीस में यह भी है कि आयत (ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ) (102/तकासुर : 8) यानी "फिर उस दिन तुमसे रब्बानी नेअमतों का सवाल किया जाएगा" के नाज़िल होने पर आप ही ने सवाल किया कि वह कौनसी नेअमतें हैं जिनकी बाबत हमसे हिसाब लिया जाएगा? हम तो खजूरें खाकर और पानी पीकर गुज़ारा कर रहे हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "अब नहीं हैं तो क्या? अन्क़रीब बहुत सी नेअमतें हासिल हो जाएँगी।" यह हदीस तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन बतलाते हैं। (अहमद : 1/164; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति ज़ुमर : 3236; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 4158) मुस्नद की इसी हदीस में यह भी है कि हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम (रज़ि.) ने आयत (إِنَّكَ مَيِّتٌ) (39/ज़ुमर : 30) के नाज़िल होने पर पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या जो झगड़े हमारे दुनिया में थे वह दोबारा वहाँ क़ियामत में दोहराये जाएँगे? साथ ही गुनाहों की भी पूछताछ होगी? आपने फ़र्माया, "हाँ! ज़रूर दोहराये जाएँगे और हर शख़्स को उसका पूरा पूरा हक़ दिलवाया जाएगा। यह सुनकर आपने अर्ज़ किया कि फिर तो सख़्त मुश्किल काम है।" (अहमद : 1/167; और इसकी सनद हसन है।) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "सबसे पहले पड़ोसियों के आपस के झगड़े पेश होंगे। (अहमद : 4/151; और वह हदीस हसन है; अल्मुअजमुल कबीर लित्तब्रानी : 17/303; ह : 836; और इसकी सनद हसन है।) और हदीस में है उस ज़ात पाक की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है कि सब झगड़ों का फ़ैसला क़ियामत के दिन होगा यहाँ तक कि दो बकरियाँ जो लड़ी होंगी और एक ने दूसरी को सींग मारे होंगे, उनका बदला भी दिलवाया जाएगा।" (अहमद : 3/29; और इसकी सनद ज़ईफ़ है और हदी मुस्लिम (2582) युग्री अन्हू)

मुस्नद अहमद ही की एक हदीस में है कि दो बकरियों को आपस में लड़ते हुए देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से पूछा कि "जानते हो कि यह क्यूँ लड़ रही हैं? हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने जवाब दिया कि हुज़ूर (ﷺ)! मुझे क्या ख़बर? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ठीक है, लेकिन अल्लाह तआला को इसका इल्म है और वह क़ियामत के दिन इन दोनों में इंसाफ़ करेगा।" (अहमद : 5/162; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीही मजाहील)

बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "ज़ालिम और ख़ाइन बादशाह से उसकी रइयत क़ियामत के दिन झगड़ा करेगी और उस पर वह ग़ालिब आ जाएगी और फ़र्माने इलाही सरज़द होगा कि जाओ

इसे जहन्नम का एक रुक्न बना दो।'' (मुस्नदे बज़्ज़ार : 1644; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अग़लब बिन तमीम ज़ईफ़ रावी है।) इस ह़दीस के एक रावी अग़लब बिन तमीम का ह़ाफ़्ज़ा जैसा होना चाहिए वैसा नहीं है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हर सच्चा झूठे से, हर मज़्लूम ज़ालिम से, हर हिदायत याफ़्ता गुमराही में मुब्तला होने वाले से, हर कमज़ोर ज़ोरावर से उस दिन झगड़ेगा।'' इब्ने मन्दा (रह़.) अपनी ''किताबुर्रूह़'' में ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से रिवायत लाए हैं कि ''लोग क़ियामत के दिन झगड़ेंगे यहाँ तक कि रूह़ और जिस्म के बीच भी झगड़ा होगा। रूह़ तो जिस्म को इल्ज़ाम देगी कि तूने यह सब बुराइयाँ कीं और जिस्म रूह़ से कहेगा कि सारी चाहत और शरारत तेरी ही थी। एक फ़रिश्ता उनमें फ़ैसला करेगा। वह कहेगा सुनो! एक आँखों वाला इंसान है लेकिन अपाहिज बिलकुल लूला लंगड़ा चलने फिरने से मा'ज़ूर है। दूसरा आदमी अँधा है लेकिन उसके पैर सलामत हैं चलता फिरता है यह दो नों एक बाग़ में हैं। लंगड़ा अंधे से कहता है, भाई यह बाग़ तो मेवों और फलों से लदा हुआ है लेकिन मेरे तो पैर नहीं जो मैं जाकर यह फल तोड़ लूँ। अँधा जवाब देता है कि आओ मेरे पैर हैं मैं तुझे अपने कँधे पर चढ़ा लेता हूँ और ले चलता हूँ। चुनाँचे यह दोनों इस त़रह़ पहुँचे और ख़ूब मर्ज़ी के मुत़ाबिक़ फल तोड़े। बतलाओ उन दोनों में मुज्रिम कौन है? जिस्म और रूह़ दोनी जवाब देते हैं कि जुर्म दोनों का है। फ़रिश्ता कहता है बस अब तो तुमने अपना फ़ैसला कर दिया यानी जिस्म गोया सवारी है और रूह़ उस पर सवार है।'' इब्ने अबी ह़ातिम में है कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''इस आयत के नाज़िल होने पर हम ताज्जुब में थे कि हममें और अहले किताब में तो झगड़ा है ही नहीं, फिर आख़िर क़ियामत के दिन किससे झगड़े होंगे? उसके बाद जब आपस के फ़ित्ने शुरू हो गए तो हमने समझ लिया कि यही आपस के झगड़े होंगे जो अल्लाह तआ़ला के यहाँ पेश होंगे।'' अबुल आ़लिया (रह़.) फ़र्माते हैं कि अहले क़िब्ला ग़ैर अहले क़िब्ला से झगड़ेंगे।'' और इब्ने ज़ेद (रह़.) से मरवी है कि मुराद अहले इस्लाम और अहले कुफ़्र का झगड़ा है लेकिन हम पहले ही बयान कर चुके हैं कि फ़िल्वाक़ेअ यह आयत आ़म है। वल्लाहु आ़लम

अल्ह़म्दु लिल्लाह! अल्लाह के फ़ज़्लो करम से तफ़्सीर इब्ने कसीर का 23वाँ पारा मुकम्मल हुआ।

***

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَآءَهٗ ۚ أَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ

اَسْوَاَ الَّذِیْ عَمِلُوْا وَیَجْزِیَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِیْ كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ۝٣٥

तर्जुमा : "उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है? जो अल्लाह पर झूठ बोले और सच्चा दीन जब उसके पास आये तो उसे झूठा बतलाए क्या ऐसे कुफ़्फ़ार के लिए जहन्नम ठिकाना नहीं है? (32) और जो लोग सच्चे दीन को लाएँ और जो उसे सच्चा जानें यही लोग पारसा हैं। (33) उनके लिए उनके रब के पास हर वह चीज़ है जो यह चाहें, नेक लोगों का यही बदला है। (34) ताकि अल्लाह तआला उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और जो नेक काम उन्होंने किये हैं उनका नेक बदला अता करे।" (35)

सबसे बड़ा ज़ालिम कौन? (आ. 32 से 35) : मुश्रिकीन ने अल्लाह तआला पर बहुत झूठ बोला था और तरह तरह के इल्ज़ाम लगाए थे, कभी उसके साथ दूसरे मअबूद बतलाते थे, कभी फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की बेटियाँ शुमार करने लगते थे, कभी मख़्लूक़ में से किसी को उसका बेटा कह दिया करते थे जिन तमाम बातों से उसकी बुलंद व बाला ज़ात पाक और बरतर थी, साथ ही उनमें दूसरी बद ख़स्लत यह भी थी कि जो हक़ अम्बिया (عليهم السلام) की ज़ुबानी अल्लाह तआला नाज़िल करता यह उसे भी झुठलाते, पस फ़र्माया कि यह सबसे बढ़कर ज़ालिम हैं। फिर जो सज़ा इन्हें होनी है उससे उन्हें आगाह कर दिया कि ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम ही है, जो मरते दम तक इंकार व तक्ज़ीब पर ही रहें। उनकी बुरी ख़स्लत और सज़ा का ज़िक्र करके फिर मोमिनों की नेक ख़ू और उनकी जज़ा का ज़िक्र करता है कि जो सच्चाई को लाया और उसे सच्चा माना यानी हुज़ूर (ﷺ) और हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) और हर वह शख़्स जो कलिमा तौहीद का इक़रारी हो और तमाम अम्बिया (عليهم السلام) और उनकी मानने वाली मुसलमान उम्मत, यह क़ियामत के दिन यही कहेंगे कि जो तुमने हमें दिया और जो फ़र्माया हम उसी पर अमल करते रहे। ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इस आयत में दाख़िल हैं। आप (ﷺ) भी सच्चाई के लाने वाले और अगले रसूलों की तस्दीक़ करने वाले और आप पर जो कुछ नाज़िल हुआ था उसे मानने वाले थे और साथ ही यही वस्फ़ तमाम ईमान वालों का था कि वह अल्लाह तआला पर फ़रिश्तों पर किताबों पर और रसूलों पर ईमान रखने वाले थे।

रबीअ बिन अनस की क़िरअत में (वल्लज़ीना जाऊ बिस्सिद्क़ि) है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ज़ेद बिन असलम (रह.) फ़र्माते हैं सच्चाई को लाने वाले हुज़ूर (ﷺ) हैं और उसे सच मानने वाले मुसलमान हैं। यही मुत्तक़ी पारसा और परहेज़गार हैं जो अल्लाह तआला से डरते रहे और शिर्क कुफ़्र से बचते रहे। उनके लिए जन्नत में जो वह चाहें सब कुछ है, जब तलब करेंगे पाएँगे। यही बदला है उन पाकबाज़ लोगों का। रब उनकी बुराइयाँ तो माफ़ फ़र्मा देता है और नेकियाँ क़बूल कर लेता है। जैसे दूसरी आयत में फ़र्माया (اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا) (46/अहक़ाफ़ : 16) यह वह लोग हैं कि इनकी नेकियाँ हम क़बूल कर लेते हैं। और बुराइयों से दरगुज़र फ़र्मा लेते हैं यह जन्नतियों में रहेंगे इन्हें बिलकुल सच्चा और सही सही वादा दिया जाता है।

اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ؕ وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ۝٣٦ وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِى انْتِقَامٍ ۝٣٧
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ؕ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٣٨
قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ مَنْ يَّاْتِيْهِ
عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤٠

तर्जुमा : "क्या अल्लाह तआला अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं? यह लोग तुझे रब के सिवा औरों से डरा रहे हैं। जिसे रब गुमराह कर दे उसकी रहनुमाई करने वाला कोई नहीं। (36) और जिसे वह हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह तआला ग़ालिब और बदला लेने वाला नहीं? (37) अगर तू इनसे पूछे कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यक़ीनन वह यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने। अब तू इनसे कह कि अच्छा यह बतलाओ जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो क्या यह उसके नुक़्सान को हटा सकते हैं? या अल्लाह तआला मुझ पर मेहरबानी का इरादा करे तो क्या यह उसकी मेहरबानी को रोक सकते हैं। तू कह दे कि अल्लाह मुझे काफ़ी है तवक्कल करने वाले उसी पर तवक्कल करते हैं। (38) कह दे कि ऐ मेरी क़ौम! तुम अपने तौर पर अमल किये जाओ, मैं भी अमल कर रहा हूँ अभी अभी तुम जान लोगे। (39) कि किस पर रुस्वा करने वाला अज़ाब आता है और किस पर दाइमी और हमेशगी की सज़ा होती है।" (40)

मोमिनों के लिए अल्लाह ही काफ़ी है (आ. 36 से 40) : एक क़िरअत में (अलैसल्लाहु बि काफ़िन इबादतहू) है यानी अल्लाह तआला अपने हर बन्दे को काफ़ी है उसी पर हर शख़्स को भरोसा रखना चाहिए।

रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि "उसने नजात पा ली जो इस्लाम की हिदायत दिया गया और बक़द्रे ज़रूरत रोज़ी दिया गया और क़नाअत भी नसीब हुई।" (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़िल किफ़ाफ़ि वस्सब्रु अलैहि : 2349; और इसकी सनद हसन है; हाकिम : 4/122; अहमद : 6/19) ऐ नबी (ﷺ)! यह लोग तुझे अल्लाह के सिवा औरों से डरा रहे हैं, यह इनकी जिहालत व ज़लालत है और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई राह नहीं दिखा सकता। जिस तरह अल्लाह तआला के राह दिखाए हुए शख़्स को कोई बहका नहीं सकता। अल्लाह तआला बुलंद जनाब वाला है। उस पर भरोसा करने वाले का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता और उसकी तरफ़ झुक जाने वाला कभी महरूम नहीं रहता। उससे बढ़कर इज़्ज़त वाला कोई नहीं, इसी तरह उससे बढ़कर इंतिक़ाम पर क़ादिर भी कोई नहीं। जो उसके साथ कुफ़्र व शिर्क करे उसके रसूलों से लड़ते भिड़ते हैं, यक़ीनन वह उन्हें सख़्त सज़ाएँ देगा। मुश्रिकीन की और मज़ीद जिहालत बयान हो रही है कि बावजूद अल्लाह तआला को ख़ालिक़े कुल मानने के फिर भी ऐसे मअबूदाने बातिल की पूजा करते हैं जो किसी नफ़ा नुक़्सान के मालिक नहीं जिन्हें किसी अम्र का कोई इख़्तियार नहीं। हदीस शरीफ़ में है "अल्लाह को याद रख वह तेरी हिफ़ाज़त करेगा, अल्लाह को याद रख तू उसे हर वक़्त अपने पास पायेगा। आसानी के वक़्त रब की नेअमतों का शुक्रगुज़ार रह सख़्ती के वक़्त वह तुझे काम आएगा। जब कुछ माँगे तो अल्लाह तआला ही से माँग और जब मदद तलब करे तो उसी से मदद तलब कर। यक़ीन रख कि अगर तमाम दुनिया मिलकर तुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे और अल्लाह का इरादा न हो तो सब तुझे ज़रा सा भी नुक़्सान नहीं पहुँचा सकता। और सब जमा होकर तुझे कोई नफ़ा पहुँचाना चाहें जो अल्लाह ने मुक़द्दर में न लिखा हो तो हर्गिज़ नहीं पहुँचा सकते। सहीफ़े ख़ुश्क हो चुके, क़लमें उठा ली गईं। यक़ीन और शुक्र के साथ नेकियों में मशग़ूल रहा कर। तक्लीफ़ों में सब्र करने पर बड़ी नेकियाँ मिलती हैं। मदद व सब्र के साथ है। ग़म व रंज के साथ ही ख़ुशी और फ़राख़ी है। हर सख़्ती अपने अंदर आसानी को लिये हुए है।" (अहमद : 1/307; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब हदीसे हंज़ला : 2516; और इसकी सनद हसन है; शुअबुल ईमान : 1074; मुस्नदे अबी यअला : 1099) तू कह दे कि मुझे बस अल्लाह ही काफ़ी है। भरोसा करने वाले उसी की ज़ात पर भरोसा करते हैं। जैसे कि हज़रत हूद(عليه السلام) ने अपनी क़ौम को जवाब दिया था जबकि उन्होंने कहा था कि ऐ हूद (عليه السلام)! हमारे ख़्याल से तो तुम्हें हमारे किसी मअबूद ने किसी ख़राबी में मुब्तला कर दिया है। तो आपने फ़र्माया मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तुम्हारे तमाम मअबूदाने बातिल से बेज़ार हूँ। तुम सब मिलकर मेरे साथ जो दाव घात तुमसे हो सकते हैं सब कर लो और मुझे मुत्लक़ मोहलत न दो। सुनो! मेरा तवक्कल मेरे रब पर है जो दरअसल तुम सबका भी रब है। रूए ज़मीन पर जितने चलने फिरने वाले हैं सबकी चोटियाँ उसके हाथ में हैं। मेरा रब सिराते मुस्तक़ीम पर है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि 'जो शख़्स सबसे ज़्यादा क़वी होना चाहे वह अल्लाह पर भरोसा रखे और जो सबसे ज़्यादा ग़नी बनना चाहे वह उस चीज़ पर जो अल्लाह के हाथ मे है ज़्यादा एतिमाद रखे बनिस्बत उस चीज़ के जो ख़ुद उसके हाथ में है। और जो सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग होना चाहे वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल से डरता है।" (इसकी सनद में हिशाम बिन

ज़ियाद अबुल मिक़दाम बसरी मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 4/298; रक़म : 9222) लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।) फिर मुश्रिकीन को डाँटते हुए फ़र्माता है कि अच्छा! तुम अपने तरीक़े पर अमल करते चले जाओ, मैं अपने तरीक़े पर आमिल हूँ। तुम्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि दुनिया में ज़लीलो ख़ार कौन होता है? और आख़िरत के हमेशा के अज़ाबों में गिरफ़्तार कौन होता है? अल्लाह तआला हमें महफ़ूज़ रखे, आमीन!

***

إِنَّآ أَنزَلۡنَا عَلَيۡكَ ٱلۡكِتَٰبَ لِلنَّاسِ بِٱلۡحَقِّۖ فَمَنِ ٱهۡتَدَىٰ فَلِنَفۡسِهِۦۖ وَمَن ضَلَّ
فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيۡهَاۖ وَمَآ أَنتَ عَلَيۡهِم بِوَكِيلٍ ٤١ ٱللَّهُ يَتَوَفَّى ٱلۡأَنفُسَ حِينَ
مَوۡتِهَا وَٱلَّتِي لَمۡ تَمُتۡ فِي مَنَامِهَاۖ فَيُمۡسِكُ ٱلَّتِي قَضَىٰ عَلَيۡهَا ٱلۡمَوۡتَ وَيُرۡسِلُ
ٱلۡأُخۡرَىٰٓ إِلَىٰٓ أَجَلٖ مُّسَمًّىۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَأٓيَٰتٖ لِّقَوۡمٖ يَتَفَكَّرُونَ ٤٢ أَمِ ٱتَّخَذُواْ
مِن دُونِ ٱللَّهِ شُفَعَآءَۚ قُلۡ أَوَلَوۡ كَانُواْ لَا يَمۡلِكُونَ شَيۡـٔٗا وَلَا يَعۡقِلُونَ ٤٣ قُل لِّلَّهِ
ٱلشَّفَٰعَةُ جَمِيعٗاۖ لَّهُۥ مُلۡكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِۖ ثُمَّ إِلَيۡهِ تُرۡجَعُونَ ٤٤ وَإِذَا ذُكِرَ
ٱللَّهُ وَحۡدَهُ ٱشۡمَأَزَّتۡ قُلُوبُ ٱلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ بِٱلۡأٓخِرَةِۖ وَإِذَا ذُكِرَ ٱلَّذِينَ مِن
دُونِهِۦٓ إِذَا هُمۡ يَسۡتَبۡشِرُونَ ٤٥

तर्जुमा : ''तुझ पर हमने हक़ के साथ यह किताब लोगों के लिए नाज़िल की है। पस जो शख़्स राहे रास्त पर आ जाए उसके अपने लिए नफ़ा और जो गुमराह हो जाए उसकी गुमराही का वबाल उसी पर है, तू इनका ज़िम्मेदार नहीं। (41) अल्लाह ही रूहों को उनकी मौत के वक़्त और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें उनकी नींद के वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है फिर जिन पर मौत का हुक्म लग चुका है उन्हें तो रोक लेता है और दूसरी रूहों को एक मुक़र्ररा वक़्त तक के लिए छोड़ देता है ग़ौर करने वालों के लिए इसमें यक़ीनन बहुत सी निशानियाँ हैं। (42) क्या इन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवा औरों को सिफ़ारिश करने वाला मुक़र्रर कर रखा है? तू कह दे कि गो वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न अक़्ल रखते हों। (43) कह दे कि तमाम सिफ़ारिश का मुख़्तार

अल्लाह ही है। तमाम आसमानों और ज़मीन का राज उसी के लिए है। तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे। (44) जब अल्लाह अकेले का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल नफ़रत करने लगते हैं जो आख़िरत का यक़ीन नहीं रखते और जब उसके सिवा औरों का ज़िक्र किया जाए तो इनके दिल खुलकर ख़ुश हो जाते हैं।'' (45)

गुमराह होने वाला अपना ही नुक़सान करता है (आ. 41 से 45) : अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने नबी (ﷺ) को ख़िताब करके फ़र्मा रहा है कि हमने तुझ पर इस कुरआन को सच्चाई और रास्ती के साथ तमाम जिन्न व इंसान की हिदायत के लिए नाज़िल किया है। इसके फ़र्मान को मानकर राहे रास्त हासिल करने वाले अपना ही नफ़ा करेंगे और इसके होते हुए भी दूसरी ग़लत राहों पर चलने वाले अपना ही बिगाड़ेंगे। तू इस अम्र का ज़िम्मेदार नहीं कि ख़्वाह मख़्वाह हर शख़्स इसे मान ही ले, तेरे ज़िम्मे सिर्फ़ इसका पहुँचा देना है। हिसाब लेने वाले हम हैं। हम हर मौजूद में जो चाहें तसर्रुफ़ करते रहते हैं। वफ़ाते कुब्रा जिसमें हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते इंसान की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वफ़ाते सुग़रा जो नींद के वक़्त होती है हमारे ही क़ब्ज़े में है। जैसे और आयत में है (وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ) (6/अन्आम : 60) यानी वह ज़ात जो तुम्हें रात को फ़ौत कर देता है और दिन में जो कुछ तुम करते हो जानता है फिर तुम्हें दिन में उठा बिठाता है ताकि मुक़र्रर किया हुआ वक़्त पूरा कर दिया जाए फिर तुम सबकी बाज़गश्त (लौटना) उसी की तरफ़ है और वह तुम्हें तुम्हारे आमाल की ख़बर देगा। वही अपने सब बन्दों पर ग़ालिब है, वही तुम पर निगहबान फ़रिश्ते भेजता है उस वक़्त कि तुममें से किसी की मौत आ जाए तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं और वह तक़्सीर और कमी नहीं करते। पस इन दोनों आयतों में भी यही ज़िक्र हुआ है पहले छोटी मौत को फिर बड़ी मौत को बयान किया। यहाँ पहले बड़ी वफ़ात को फिर छोटी वफ़ात को ज़िक्र किया। इससे यह भी मालूम होता है कि मलए आला में यह रूहें जमा होती हैं जैसे कि सहीह बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब तुममें से कोई अपने बिस्तर पर सोने को जाए तो अपने तहबंद के अंदरूनी हिस्सों से उसे झाड़ ले, न जाने उस पर क्या कुछ हो? फिर यह दुआ पढ़े (बिइस्मिक रब्बी वज़अतु जंबी वबिका अरफ़उहू इन अम्सक्त नफ़्सी फ़रहम्हा व इन अर्सल्तहा फ़ह्फ़ज़्हा बिमा तह्फ़ज़ु बिही इबादकस्सालेहीन) यानी ''ऐ मेरे पालने वाले रब! तेरे पाक नाम की बरकत से मैं लैटता हूँ और तेरी रहमत से मैं जागूँगा, अगर तू मेरी रूह को रोक ले तो उस पर रहम कर और अगर तू उसे भेज दे तो उसकी ऐसी ही हिफ़ाज़त करना जैसी तू अपने नेक बन्दों की हिफ़ाज़त करता है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब नम्बर 13; हदीस : 6320; सहीह मुस्लिम : 2714) कुछ सलफ़ का क़ौल है कि मुर्दों की रूहें जब वह मरें और ज़िन्दों की रूहें जब वह सो जाए क़ब्ज़ कर ली जाती हैं और उनमें आपस में तआरुफ़ होता है जब तक अल्लाह चाहे फिर मुर्दों की रूहें तो वहीं रोक ली जाती हैं और दूसरी रूहें मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ दी जाती है यानी मरने के वक़्त तक। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मुर्दों की रूहें अल्लाह तआला रोक लेता है और ज़िन्दों की रूहें वापिस भेज देता है और उसमें कभी ग़लती नहीं होती।'' ग़ौरो फ़िक्र के जो आदी हैं वह

इसी एक बात में क़ुदरते इलाही के बहुत से दलाइल पा लेते हैं।

झूठे मअबूदों की हक़ीक़त : अल्लाह तआला मुश्रिकों की मज़म्मत बयान करता है कि वह बुतों को और मअबूदाने बातिल को अपना सिफ़ारिशी और शफ़ीअ समझे बैठे हैं जिसकी न कोई दलील है न हुज्जत और दरअसल उन्हें न कुछ इख़्तियार है, न अक़्ल व शऊर। न उनकी आँखें, न उनके कान, वह तो पत्थर और जमादात हैं जो जानवरों से भी बदतर हैं इसलिए अपने नबी को हुक्म दिया कि इनसे कह दो कोई नहीं जो अल्लाह तआला के सामने लब हिला सके, आवाज़ उठा सके, जब तक कि उसकी मर्ज़ी न पा ले और इजाज़त हासिल न कर ले। सारी शफ़ाअतों का मालिक वही है। ज़मीन व आसमान का बादशाह तंहा वही है। क़ियामत के दिन तुम सबको उसी की तरफ़ लौटकर जाना है। उस वक़्त वह अदल के साथ तुम सब में सच्चे फ़ैसले करेगा और हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। इन काफ़िरों की यह हालत है कि तौहीद का कलिमा सुनना इन्हें नापसंद है। अल्लाह तआला की वहदानियत का ज़िक्र सुनकर इनके दिल तंग हो जाते हैं इसका सुनना भी उन्हें पसंद नहीं। इनका जी उसमें नहीं लगता। कुफ़्र व तकब्बुर उन्हें रोक देता है। जैसे और आयत में है (اِنَّهُمْ كَانُوْا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ) (37/साफ़्फ़ात : 35) यानी इनसे जब कहा जाता था कि अल्लाह एक के सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं तो यह तकब्बुर करते थे और मानने से जी चुराते थे। चूँकि इनके दिल हक़ के इंकारी हैं इसलिए झूठी बात को बहुत जल्द क़बूल कर लेते हैं। जहाँ बुतों का और दूसरे ख़ुदाओं का ज़िक्र आया कि इनकी बाछें खिल गईं।

***

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾

तर्जुमा : "तू कह, ऐ अल्लाह! आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, छुपे खुले के जानने वाले, तू ही अपने बन्दों में उन उमूर का फ़ैसला करेगा जिनमें वह उलझ रहे थे। (46) अगर ज़ुल्म

करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो रूए ज़मीन पर है और उसके साथ उतना ही और हो तो भी बदतरीन सज़ा के बदले में क़ियामत के दिन यह सब कुछ दे दें और उनके सामने ख़ुदा की तरफ़ से वह ज़ाहिर होगा जिसका गुमान भी उन्हें न था। (47) जो कुछ उन्होंने किया था उसकी बुराइयाँ उन पर खुल पड़ेंगी और जिसके साथ वह मज़ाक़ करते थे वह उन्हें आ घेरेगा।'' (48)

क़ियामत के दिन इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला (आ. 46 से 48) : मुश्रिकीन को तौहीद से जो नफ़रत है और शिर्क से जो मुहब्बत है उसे बयान करके अपने नबी (ﷺ) से अल्लाह तआला वहदहू ला शरीक लहू फ़र्माता है कि तू सिर्फ़ अल्लाह तआला वाहिद अहद को ही पुकार, जो आसमान व ज़मीन का ख़ालिक़ है और उस वक़्त उसने उन्हें पैदा किया है जबकि न कुछ थे न इनका कोई नमूना था। वह ज़ाहिर व बातिन छुपे खुले का आलिम है। यह लोग जो जो इख़्तिलाफ़ात अपने आपस में करते थे सबका फ़ैसला उस दिन होगा जब यह क़ब्रों से निकलेंगे और मैदाने क़ियामत में आएँगे। हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान (रह.) हज़रत आइशा (रज़ि.) से पूछते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तहज्जुद की नमाज़ को किस दुआ से शुरू करते थे? आप (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि इस दुआ से (अल्लाहुम्म रब्बि जिब्रील व मीकाईल व इस्राफ़ील फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आलिमल ग़ैबि वश्शहादति अन्त तहकुमु बैन इबादिक फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ूना इहदिनी लिमख़्तलिफ़ फ़ीहि मिनल हक़्क़ि बि इज़्निक इन्नका तहदी मन तशाउ इला सिरातिम्मुस्तक़ीम) यानी ''ऐ अल्लाह! ऐ जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील के रब! ऐ आसमान व ज़मीन को बेनमूने के पैदा करने वाले, ऐ हाज़िर व ग़ायब के जानने वाले, तू ही अपने बन्दों के इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला करने वाला है जिस चीज़ में इख़्तिलाफ़ किया गया है तू मुझे उन सबमें अपने फ़ज़्ल से राहे हक़ दिखा तू जिसे चाहे सीधी राह की रहनुमाई करता है।'' (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब सलातुन्नबी (ﷺ) व दुआइही बिल्लैलि : 770; अबूदाऊद : 767; इब्ने माजा : 1357; अहमद : 6/156; इब्ने हिब्बान : 2600; नसाई : 1626) हुज़ूर फ़र्माते हैं ''जो बन्दा इस दुआ को पढ़े अल्लाह तआला क़ियामत के दिन अपने फ़रिश्तों से कहेगा कि मेरे इस बन्दे ने मुझसे अहद लिया है, उस अहद को पूरा करो। चुनाँचे उसे जन्नत में पहुँचा दिया जाएगा।'' वह दुआ यह है (अल्लाहुम्म फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आलिमल ग़ैबि वश्शहादति इन्नी अअहदु इलैक फ़ी हाज़िहिद्दुनिया इन्नी अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्त वहदक ला शरीक लक व अन्ना मुहम्मदन अब्दुक व रसूलुक फ़ इन्नका इन तकिल्नी इला नफ़्सी तुक़र्रिब्नी मिनश्शर्रि व तुबाइद्नी मिनल ख़ैरि व इन्नी ला असिक़ु इल्ला बि रहमतिक फ़ज्अल ली इन्दक अहदन तुवफ़्फ़ीनीहि यौमल क़ियामति इन्नक ला तुख़्लिफ़ुल मीआद) यानी ''ऐ अल्लाह! ऐ आसमान व ज़मीन के बेनमूने के पैदा करने वाले, ऐ ग़ायब और हाज़िर के जानने वाले, मैं इस दुनिया में तुझसे अहद करता हूँ कि मेरी गवाही है कि तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं और मेरी यह भी गवाही है कि मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं। तू अगर मुझे मेरी ही तरफ सौंप देगा तो मैं बुराई से करीब और भलाई से दूर जा पड़ूँगा, ऐ अल्लाह! मुझे सिर्फ़ तेरी रहमत ही का सहारा और भरोसा है, पस तू भी मुझसे अहद कर जिसे तू क़ियामत के दिन पूरा करे, यक़ीनन तू वादाख़िलाफ़ी नहीं

करता।'' इस हदीस के रावी सुहैल (रह.) फ़र्माते हैं कि मैंने क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान (रह.) से जब कहा कि औन (रह.) इस तरह यह हदीस बयान करते हैं तो आपने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! हमारी तो पर्दानशीन बच्चियों को भी यह हदीस याद है।'' (मुस्नद अह़मद : 1/412; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/74; इसकी सनद में इंक़िताअ़ है औन बिन मुहम्मद बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द का अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने एक काग़ज़ निकाला और फ़र्माया कि यह दुआ हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिखाई है (अल्लाहुम्म फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आ़लिमल ग़ैबि वश्शहादति अन्त रब्बु कुल्लि शैइव्व इलाहु कुल्लि शैइन अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्त वह्दक ला शरीक लक व अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुक व रसूलुक वल मलाइकतु यश्हदूना अऊ़ज़ुबिक मिनश्शैतानि व शिर्किही व अऊ़ज़ुबिका अन अक़्तरिफ़ा अ़ला नफ़्सि इस्मन अव अजुर्रहू इला मुस्लिम) यानी ''ऐ अल्लाह! ऐ आसमान व ज़मीन को बेनमूना पैदा करने वाले, छुपी खुली के जानने वाले, तू हर चीज़ का रब है और हर चीज़ का मअ़बूद है, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं और मुहम्मद (ﷺ) तेरे बन्दे और तेरे रसूल हैं और फ़रिश्ते भी यही गवाही देते हैं। मैं शैतान से और उसके शिर्क से तेरी पनाह में आता हूँ। मैं तुझसे पनाह तलब करता हूँ कि मैं अपनी जान पर कोई गुनाह करूँ या किसी और मुसलमान की तरफ़ किसी गुनाह को ले जाऊँ।'' हज़रत अबू अ़ब्दुर्रहमान (रह.) फ़र्माते हैं ''यह दुआ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) को सिखलाई थी वह इसे सोने के वक़्त पढ़ा करते थे।'' (अह़मद : 2/171; और इसकी सनद ज़ईफ़ है और हदीसे अह़मद (1/9; ह : 561) युग़नी अ़न्हू; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/122) और रिवायत में है कि अबू राशिद ह़िब्रानी (रह.) ने कोई हदीस सुनने की ख़्वाहिश हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से की तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने किताब निकालकर उनके सामने रख दी और फ़र्माया, यह है जो मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लिखवाई है। मैंने देखा तो उसमें लिखा था कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं सुबह व शाम क्या पढ़ूँ? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, यह पढ़ो (अल्लाहुम्मा फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ि आ़लिमल ग़ैबि वश्शहादति ला इलाहा इल्ला अन्ता रब्बा कुल्लि शैइंव् वमलीकुहू अऊ़ज़ुबिका मिन शर्रि नफ़्सी व शर्रिश्शैतानि व शिर्किही अव अक़्तरिफ़ा अ़ला नफ़्सी सूअन अव अजुर्रुहू इला मुस्लिम) (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअ़वात, बाब दुआउ इल्मुहू (ﷺ) अबाबक्र (रज़ि.) : 3529; और इसकी सनद हसन है; अल्अदबुल मुफ़रद : 1204) मुस्नद अह़मद की हदीस में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मुझे इस दुआ के पढ़ने का अल्लाह के रसूल (ﷺ) सुबह व शाम और सोते वक़्त हुक्म दिया है।'' (अह़मद : 1/11; तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मिन्हू (दुआउ : अल्लाहुम्मा आ़लिमल ग़ैबि...) : 3392; और इसकी सनद सही है; अबूदाऊद : 5067; मुस्नदे तयालिसी : 2582; हाकिम : 1/513)

दूसरी आयत में ज़ालिमों से मुराद मुश्रिकीन हैं। फ़र्माता है कि अगर इनके पास रूए ज़मीन के ख़ज़ाने और इतने ही और हों तो भी यह क़ियामत के बदतरीन अ़ज़ाबों के बदले उन्हें अपने फ़िदये में और अपनी जान के बदले में देने के लिए तैयार हो जाएँगे लेकिन उस दिन कोई फ़िदया और बदला क़बूल न किया जाएगा भले

ज़मीन भरकर सोना दें जैसे कि और आयत में बयान कर दिया है। आज अल्लाह के वह अ़ज़ाब इनके सामने आएँ हैं कि कभी इन्हें उनका ख़्याल भी न गुज़रा था। जो जो हरामकारियाँ, बदकारियाँ, गुनाह और बुराइयाँ इन्होंने दुनिया में की थीं। इन सबकी सज़ा अपने आगे मौजूद पाएँगे। दुनिया में जिस सज़ा का ज़िक्र सुनकर मज़ाक़ करते थे आज वह इन्हें चारों ओर से घेर लेगी।

***

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى
عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٩ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٥٠ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَالَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥١ اَوَلَمْ
يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ
اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥٣ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى
رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٥٤ وَاتَّبِعُوْٓا
اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ
لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٥٥ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ

كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى

قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : ''इंसान को जब कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो हमें पुकारने लगता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई नेअ़मत दे दें तो कहने लगता है कि इसे तो मैं अपनी दानाई की वजह से दिया गया हूँ, बल्कि यह आज़माइश है लेकिन उनमें से अक्सर लोग बेइल्म हैं। (49) इनसे अगले भी यही बात कह चुके हैं। पस इनकी कार्रवाई इनके कुछ काम न आई (50) फिर इनकी तमाम बुराइयाँ इन पर आ पड़ीं और इनमें से भी जो गुनहगार हैं उनकी की हुई बुराइयाँ भी अब इन पर आ पड़ेंगी। यह हमें हरा देने वाले नहीं। (51) क्या इन्हें यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला जिसके लिए चाहे रोज़ी कुशादा कर देता है और तंग भी। ईमान लाने वालों के लिए इसमें बड़ी बड़ी निशानियाँ हैं। (52) मेरी जानिब से कह दो ऐ मेरे वह बन्दों! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की तुम अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो जाओ। बिल यक़ीन अल्लाह तआ़ला सारे गुनाहों को बख़्श देता है। वाक़ेई वह बड़ी बख़्शिश वाला बड़ी रहमत वाला है। (53) तुम सब अपने परवरदिगार की तरफ़ झुक पड़ो और उसकी हुक्मबरदारी किये चले जाओ इससे पहले कि तुम्हारे पास अ़ज़ाब आ जाए और फिर तुम्हारी मदद न की जाए। (54) और पैरवी करो उस बेहतरीन चीज़ की जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है।'' (55) इससे पहले कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न रहे। (55) ऐसा न हो कि कोई शख़्स कहे, हाय अफ़सोस! इस बात पर कि मैंने अल्लाह तआ़ला के हक़ में कोताही की बल्कि मैं तो मज़ाक़ उड़ाने वालों में ही रहा। (56) या कहने लगे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत करता तो मैं भी पारसा लोगों में होता। (57) या अ़ज़ाबों को देखकर कहने लगे काश कि किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेकोकारों में हो जाता। (58) हाँ! हाँ! बेशक तेरे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया और ग़ुरूर व तकब्बुर किया और तू था ही काफ़िरों में से।'' (59)

तंगी व आसानी बतौर आज़माइश है (आ. 49 से 59) : अल्लाह तआ़ला इंसान की हालत को बयान करता है कि मुश्किल के वक़्त तो वह आह व ज़ारी शुरू कर देता है, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ पूरी तरह राजेअ़ और राग़िब हो जाता है लेकिन जहाँ मुश्किल हटी जहाँ राहत व नेअ़मत हासिल हुई कि यह सरकश व मुतकब्बिर

बना और अकड़ता हुआ कहने लगा कि यह तो अल्लाह के ज़िम्मे मेरा हक़ था। मैं अल्लाह के नज़दीक इसका मुस्तहिक़ था ही। मेरी अपनी अक़्लमंदी और ख़ुश तदबीरी की वजह से इस नेअमत को मैंने हासिल किया है। अल्लाह तआला फ़र्माता है बात यूँ नहीं बल्कि दरअसल यह हमारी तरफ़ से आज़माइश है हमें अज़ल से इल्म हासिल है लेकिन ताहम हम इसे ज़हूर में लाना चाहते हैं और देखते हैं कि इस नेअमत का यह शुक्रिया अदा करता है या नाशुक्री करता है? लेकिन यह लोग बेइल्म हैं। दावा करते हैं, मुँह से बात निकाल देते हैं, लेकिन असलियत से बेख़बर हैं। यही दावा और यही क़ौल इनसे पहले के लोगों ने भी किया और कहा, लेकिन उनका क़ौल सही साबित न हुआ और उन नेअमतों ने और किसी चीज़ ने और उनके आमाल ने उन्हें कोई नफ़ा न दिया जिस तरह उन पर वबाल टूट पड़ा उसी तरह इन पर एक दिन इनकी बद आमालियों का वबाल आ पड़ेगा और यह अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते, न थका और हरा सकते हैं। जैसे कि क़ारून से उसकी क़ौम ने कहा था कि इस क़द्र अकड़ नहीं, अल्लाह तआला ख़ुद पसंदों को महबूब नहीं रखता। अल्लाह की दी हुई नेअमतों को ख़र्च करके आख़िरत की तैयारी को और वहाँ का सामान मुहय्या कर। इस दुनिया में भी फ़ायदा उठाता रह और जैसे अल्लाह तआला ने तेरे साथ सुलूक किया है तू भी लोगों के साथ एहसान करता रह। ज़मीन में फ़सादी मत बन। अल्लाह तआला फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। इस पर क़ारून ने जवाब दिया कि इन तमाम नेअमतों और जाह व दौलत को मैंने महज़ अपनी दानाई और इल्म व हुनर से हासिल किया है। अल्लाह तआला फ़र्माता है क्या उसे यह मालूम नही कि इससे पहले उससे ज़्यादा जमा जत्थे वालों को मैंने हलाक व बर्बाद कर दिया है। मुज्रिम अपने गुनाहों के बारे में पूछे न जाएँगे? अल्ग़र्ज़ माल व औलाद पर फूलकर अल्लाह को भूल जाना यह शेवा कुफ़्र है। कुफ़्फ़ार का क़ौल था कि हम माल व औलाद में ज़्यादा हैं। हमें अज़ाब नहीं होगा, क्या उन्हें अब तक यह मालूम नहीं कि रिज़्क़ का मालिक अल्लाह तआला है जिसके लिए चाहे कुशादगी करे और जिस पर चाहे तंगी करे। इसमें ईमान वालों के लिए तरह तरह की इब्रतें और दलीलें हैं।

अल्लाह तआला की रहमत हर चीज़ पर हावी है : इस आयत में तमाम नाफ़र्मानों को भले वह मुश्रिक व काफ़िर भी हों तौबा की दावत दी गई है और बतलाया गया है कि अल्लाह तआला की ज़ात ग़फ़ूरुर रहीम है। वह हर ताइब की तौबा क़बूल करता है। हर झुकने वाले की तरफ़ मुतवज्जह होता है। तौबा करने वाले के अगले गुनाह भी माफ़ कर देता है भले वह कैसे ही हों, कितने ही हों, कभी के हों। इस आयत को बग़ैर तौबा के गुनाहों की बख़्शिश के मअनी में लेना सही नहीं इसलिए कि शिर्क बे तौबा बख़्शा नहीं जाएगा। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि "कुछ मुश्रिकीन जो क़त्ल व ज़िना के भी मुर्तकिब थे हाज़िरे ख़िदमते नबवी होकर अर्ज़ करते हैं कि यह आपकी बातें और आपका दीन हमें हर लिहाज़ से अच्छा और सच्चा मालूम होता है लेकिन यह बड़े बड़े गुनाह जो हमसे हो चुके हैं इनका कफ़्फ़ारा क्या होगा? इस पर आयत (وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ) (25/फ़ुरक़ान : 68)" और यह आयत नाज़िल हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुज़्ज़ुमर बाब क़ौलुहू (या इबादियल्लज़ीना असरफ़ू अला अनफ़ुसिहिम ला तक़्नतू मिर्रहमतिल्लाह) : 4810; सहीह मुस्लिम : 123; अबूदाऊद : 4274; नसाई : 4003) मुस्नद अहमद की हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मुझे सारी दुनिया और उसकी हर चीज़ के मिलने से इतनी ख़ुशी न होती जितनी इस आयत के नाज़िल होने से हुई है।" एक शख़्स

ने सवाल किया कि जिसने शिर्क किया हो? आप (ﷺ) ने थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद फ़र्माया, ख़बरदार रहो! जिसने शिर्क भी किया हो, तीन बार यही फ़र्माया। (अहमद : 5/275; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अल्मुअजमुल औसत : 176) मुस्नद अहमद की एक और हदीस में है कि एक बूढ़ा शख़्स लकड़ी टेकता हुआ हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मेरे छोटे मोटे गुनाह बहुत सारे हैं, क्या मुझे भी बख़्शा जाएगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''क्या तू अल्लाह तआला की तौहीद की गवाही नहीं देता? उसने कहा, हाँ! और आप (ﷺ) की रिसालत की गवाही भी देता हूँ। आपने फ़र्माया, तेरे छोटे मोटे गुनाह माफ़ हैं। (अहमद : 4/385; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सनद मुन्क़तअ है मक्हूल ताबेई ने अम्र बिन ख़ब्सा (रज़ि.) से कुछ नहीं सुना। मज्मउज़्ज़वाइद : 1/32) अबूदाऊद तिर्मिज़ी वग़ैरह में है हज़रत अस्मा (रज़ि.) फ़र्माती हैं मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आप इस आयत की तिलावत इसी तरह फ़र्मा रहे थे (اِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ) (11/हूद : 46) और इसी आयत को इस तरह पढ़ते हुए सुना (या इबादियल्लज़ीन असरफ़ू अन अनफ़ुसिहिम ला तक़्नतू मिर्रहमतिल्लाहि इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूबा जमीअंव्वला युबाली इन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर रहीम) (अहमद : 6/454; अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ : 3982; मुख़्तसरन और इसकी सनद हसन है; तिर्मिज़ी : 3237; हाकिम : 2/249) पस इन कुल अहादीस से साबित होता है कि तौबा से सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। बन्दे को रहमते रब से मायूस न होना चाहिए भले गुनाह कितने ही बड़े और कितने ही ज़्यादा हों। तौबा और रहमत का दरवाज़ा हमेशा खुला ही रहता है और वह बहुत ही वसीअ है। अल्लाह तआला का इर्शाद है (اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ) (9/तौबा : 104) क्या लोग नहीं जानते कि अल्लाह तआला अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है। और फ़र्माया (وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ) (4/निसाअ : 110) जो बुरा काम करे या अपनी जान पर ज़ुल्म कर बैठे फिर अल्लाह से इस्तिग़्फ़ार करे वह अल्लाह को बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला पाएगा। मुनाफ़िक़ों की सज़ा जो जहन्नम के सबसे नीचे के तब्क़े में होगी उसे बयान करके यह भी फ़र्माया (اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا) (2/बक़रह : 160) यानी इससे वह लोग अलग हैं जो तौबा करें और इस्लाह कर लें। मुश्रिकीने नसारा के इस शिर्क का कि वह अल्लाह को तीन में का तीसरा मानते हैं, ज़िक्र करे उनकी सज़ाओं के बयान से पहले फ़र्मा दिया (اِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ) (5/माइदा : 73) कि अगर यह अपने क़ौल से बाज़ न आए तो फिर अल्लाह तआला अज़्मत व किब्रियाई, जलाल व शान वाले ने फ़र्माया, यह क्यूँ अल्लाह तआला से तौबा नहीं करते और क्यूँ उससे इस्तिग़्फ़ार नहीं करते? वह तो बड़ा ही ग़फ़ूर व रहीम है। इन लोगों का जिन्होंने ख़ंदक़ें खोदकर मुसलमानों को आग में डाला था ज़िक्र करते हुए भी फ़र्माया कि जो मुसलमान मर्दों और औरतों को तक्लीफ़ पहुँचाकर फिर भी तौबा न करें उनके लिए अज़ाबे जहन्नम और अज़ाबे नार है। इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं कि ''अल्लाह के करम व जूद को देखो कि अपने दोस्तों के क़ातिलों को भी तौबा और मग़्फ़िरत की तरफ़ बुला रहा है।'' इस मज़्मून की और भी बहुत सी आयतें हैं। सहीहैन की हदीस में उस शख़्स का वाक़िया भी मज़्कूर है जिसने निन्नान्वे (99) आदमियों को क़त्ल किया था फिर बनी इस्राईल के एक आबिद से पूछा कि क्या उसके लिए भी तौबा है? उसने इंकार किया, उसने उसे भी क़त्ल कर दिया। फिर एक आलिम से पूछा उसने जवाब दिया कि तुझमें और तौबा में कोई रोक नहीं और हुक्म दिया कि

मुवह्हिदों की बस्ती में चला जाए। चुनाँचे यह उस गाँव की तरफ़ चला लेकिन रास्ते में ही मौत आ गई। रहमत और अज़ाब के फ़रिश्तों में आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने ज़मीन के नापने का हुक्म दिया तो एक बालिश्त भर नेक लोगों की बस्ती जिस तरफ़ वह हिज्रत करके जा रहा था क़रीब निकली और यह उन ही के साथ मिला दिया गया और रहमत के फ़रिश्ते उसकी रूह को ले गए। यह भी मज़्कूर है कि वह मौत के वक़्त सीने के बल उस तरफ़ घसीटता हुआ चला था और यह भी वारिद हुआ है कि नेक लोगों की बस्ती को क़रीब हो जाने का और बुरे लोगों की बस्ती को दूर हो जाने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब नम्बर : 54, हदीस : 347; सहीह मुस्लिम : 2766; इब्ने हिब्बान : 615) यह है ख़ुलासा इस हदीस का और पूरी हदीस अपनी जगह बयान हो चुकी है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने तमाम बन्दों को अपनी मग़्फ़िरत की तरफ़ बुलाया है उन्हें भी जो हज़रत मसीह (عليه السلام) को अल्लाह कहते थे, उन्हें भी जो आपको अल्लाह का बेटा कहते थे, उन्हें भी जो हज़रत उज़ेर (عليه السلام) को अल्लाह का बेटा बतलाते थे, उन्हें भी जो अल्लाह को फ़क़ीर कहते थे , उन्हें भी जो अल्लाह के हाथों को बंद बतलाते थे और उन्हें भी जो अल्लाह तआला को तीन में का तीसरा कहते थे। अल्लाह तआला उन सबसे फ़र्माता है कि यह क्यूँ अल्लाह की तरफ़ नहीं झुकते और क्यूँ उससे अपने गुनाहों की माफ़ी नहीं चाहते?" अल्लाह तो बड़ी ही बख़्शिश वाला और बहुत ही रहमो करम करने वाला है। फिर तौबा की दावत अल्लाह तआला ने उसे दी जिसका क़ौल इन सबसे बढ़ चढ़कर था जिसने दावा किया था कि मैं तुम्हारा बुलंद व बाला रब हूँ। जो कहता था कि मैं नहीं जानता कि तुम्हारा कोई मअबूद मेरे सिवा भी हो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "उसके बाद भी जो शख़्स अल्लाह के बन्दों को तौबा से मायूस करे, वह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की किताब का इंकारी है। लेकिन इसे समझ लो कि जब तक अल्लाह किसी बन्दे पर अपनी मेहरबानी से रुजूअ न करे उसे तौबा नसीब नहीं होती।"

क़ुरआन की चार जामेअ आयात : तबरानी में हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है कि "किताबुल्लाह क़ुरआने करीम में सबसे ज़्यादा अज़्मत वाली आयत आयतल कुर्सी है और ख़ैरो शर की सबसे ज़्यादा जामेअ आयत (إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ) (16/नहल : 90) है और सारे क़ुरआन में सबसे ज़्यादा ख़ुशी की आयत सूरह ज़ुमर की (क़ुल या इबादिय...) है। और सबसे ज़्यादा ढारस देने वाली आयत (وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ۝ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ) (65/तलाक़ : 2, 3) यानी "अल्लाह से डरते रहने वालों की मुख़्लिसी ख़ुद अल्लाह कर देता है और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देता है जहाँ का उसे गुमान व ख़्याल भी न हो।" हज़रत मसरूक़ (रह.) ने यह सुनकर फ़र्माया कि बेशक आप सच्चे हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) जा रहे थे कि "आपने एक वाइज़ को देखा जो लोगों को नसीहत कर रहा था। आपने फ़र्माया, क्यूँ तू लोगों को मायूस कर रहा है? फिर इसी आयत की तिलावत की।" (इब्ने अबी हातिम)

उन अहादीस का बयान जिनमें नाउम्मीदी और मायूसी की मुमानिअत है : रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! अगर तुम ख़ताएँ करते करते ज़मीनो आसमान पुर कर दो

फिर अल्लाह से तौबा करो तो यक़ीनन वह तुम्हें बख़्श देगा। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है अगर तुम ख़ताएँ करो ही नहीं तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल तुम्हें ख़त्म करके उन लोगों को लाए जो ख़ता करे, इस्तिग़फ़ार करें और फिर अल्लाह उन्हें बख़्श दे।'' (अहमद : 3/238; और यह हदीस हसन है।) हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि.) अपने इंतिक़ाल के वक़्त फ़र्माते हैं, एक हदीस मैंने तुमसे आज तक बयान नहीं की थी, अब बयान कर देता हूँ, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आपने फ़र्माया है, ''अगर तुम गुनाह ही न करते तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ऐसी क़ौम को पैदा करता जो गुनाह करती फिर अल्लाह उन्हें बख़्शता।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तौबा, बाब सुक़ूतु ज़ुनूब बिल इस्तिग़फ़ारि वत्तौबा : 2748; तिर्मिज़ी : 3539; अहमद : 5/414) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''गुनाह का कफ़्फ़ारा नदामत और शर्मसारी है और आपने फ़र्माया, अगर तुम गुनाह न करते तो अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को लाता जो गुनाह करें फिर वह उन्हें बख़्शे।'' (अहमद : 1/289; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; तब्रानी : 2794; और इसकी अ़सल सहीह मुस्लिम : 2749 में मौजूद है।) आप फ़र्माते हैं अल्लाह तआ़ला उस बंदे को पसंद करता जो कामिल यक़ीन रखने वाला और गुनाहों से तौबा करने वाला हो।'' (अहमद : 1/80; मुस्नदे अबी यअ़ला : 483; और इसकी सनद मौज़ूअ़ है; फ़ीहि इलल मिन्हा अबू अ़म्र उ़बैदह बिन अ़ब्दुर्रहमान बजली कान यरविल मौज़ूआत अ़निस् सिक़ात) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बेद बिन उ़मेर (रह.) फ़र्माते हैं कि ''इब्लीस मल्ऊ़न ने कहा, ऐ मेरे रब! तूने मुझे आदम की वजह से जन्नत से निकाला है और मैं उस पर बग़ैर इसके कि तू मुझे उस पर ग़ल्बा दे ग़ालिब नहीं आ सकता। जनाब बारी तआ़ला ने फ़र्माया, जा तू उन पर मुसल्लत़ है। उसने कहा, या अल्लाह! कुछ और भी मुझे ज़्यादती अ़ता कर। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, जा बनी आदम में जितनी औलाद पैदा होगी उतनी ही तेरे यहाँ भी होगी। उसने फिर इल्तिजा की कि बारी तआ़ला! कुछ और भी मुझे ज़्यादती दे। परवरदिगारे आ़लम ने फ़र्माया, बनी आदम के सीने में तेरे लिए मस्कन बना दूँगा और तुम उनके जिस्म में ख़ून की जगह फिरोगे। उसने फिर कहा और भी मुझे ज़्यादती इनायत कर। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, जा तू उन पर अपने सवार और प्यादे दौड़ा, और उनके माल व औलाद में अपना साझा कर और उन्हे उमंगें दिला, भले हक़ीक़तन तेरा उमंगें दिलाना और वादे करना सरासर धोखे ही धोखे हैं। उस वक़्त हज़रत आदम (ﷺ) ने दुआ़ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! तूने इसे मुझ पर मुसल्लत़ कर दिया। अब मैं इससे बग़ैर तेरे बचाये बच नहीं सकता। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, सुनो! तुम्हारे यहाँ जो औलाद होगी उसके साथ एक मुहाफ़िज़ मुक़र्रर कर दूँगा जो शैत़ानी पंजे से महफ़ूज़ रखे। हज़रत आदम (ﷺ) ने और ज़्यादती त़लब की। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, एक नेकी को दस गुनी करके दूँगा बल्कि दस से भी ज़्यादा और बुराई उसी के बराबर रहेगी या माफ़ कर दूँगा। आपने फिर भी अपनी यही दुआ़ जारी रखी। रब्बुल इ़ज़्ज़त ने फ़र्माया तौबा का दरवाज़ा तुम्हारे लिए उस वक़्त तक खुला है जब तक रूह जिस्म में है। हज़रत आदम (ﷺ) ने दुआ़ की, ऐ अल्लाह! मुझे और ज़्यादती अ़ता कर। अब अल्लाह तआ़ला ने यही आयत पढ़ सुनाई कि मेरे गुनहगार बन्दों से कह दो वह मेरी रहमत से मायूस न हों।'' (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद अबी अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बेद बिन उ़मेर से सही है)

हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) की हदीस में है कि ''जो लोग अपनी कमज़ोरी की वजह से कुफ़्फ़ार की

तक्लीफ़ें बर्दाश्त न कर सकने की वजह से अपने दीन के फ़ित्ने में पड़ गये थे हम उनकी निस्बत आपस में कहते थे कि अल्लाह तआला उनकी कोई नेकी और तौबा क़बूल न करेगा। उन लोगों ने अल्लाह को पहचान कर फिर कुफ़्र को ले लिया और काफ़िरों की सख़्ती को बर्दाश्त न किया। जब हुज़ूर (ﷺ) मदीने में आ गए तो अल्लाह तआला ने उन लोगों के बारे में हमारे इस क़ौल की तर्दीद कर दी और (या इबादियल्लज़ीना असरफ़ू) से (ला तश्उरून) तक आयतें नाज़िल हुईं। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने अपने हाथ से यह आयतें लिखीं और हिशाम बिन आस (रज़ि.) के पास भेज दीं। हज़रत हिशाम बिन आस (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं उस वक़्त ज़ी तुवा मे था। मैं उन्हें बार बार पढ़ रहा था और ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ कर रहा था। लेकिन असली मतलब तक ज़हन रसाई नहीं करता था। आख़िर मैंने दुआ की कि परवरदिगार! इन आयतों का मतलब और इनके मेरी तरफ़ भेजे जाने का सही मक़्सद मुझ पर वाज़ेह कर दे। चुनाँचे मेरे दिल में अल्लाह की तरफ़ से डाला गया कि इन आयतों से मुराद हम ही हैं। यह हमारे बारे में और हमें जो ख़्याल था कि अब हमारी तौबा क़बूल नहीं हो सकती, उसी बारे में नाज़िल हुई हैं। उसी वक़्त मैं वापिस मुड़ा अपना ऊँट लिया उस पर सवारी की और सीधा मदीना आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गया।'' (सीरते इब्ने इस्हाक़, और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने इस्हाक़ अन्अन; हाकिम : 3/240, 241; मुख़्तसरन, और इसकी सनद बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ है।) बन्दों की मायूसी को तोड़कर उन्हें बख़्शिश की उम्मीद दिलाकर फिर हुक्म दिया और रग़बत दिलाई कि वह तौबा की तरफ़ और नेक अमल की तरफ़ सबक़त और जल्दी करें। ऐसा न कि ख़ुदाई अज़ाब आ पड़ें जिस वक़्त कि किसी की मदद कुछ काम नहीं आती। और उन्हें चाहिए कि अज़्मत वाले क़ुरआने करीम की ताबेदारी और मातहती में मशग़ूल हो जाएँ इससे पहले कि अचानक अज़ाब आ जाएँ और यह बेख़बरी में ही हों। उस वक़्त क़ियामत के दिन बे तौबा मरने वाले और अल्लाह की इबादत में कमी करने वाले बड़ी हसरत और बहुत अफ़सोस करेंगे और आरज़ू करेंगे कि काश! कि हम ख़ुलूस के साथ अहकामे इलाही बजा लाते। अफ़सोस! कि हम तो बेयक़ीन रहे। अल्लाह की बातों की तस्दीक़ ही न की बल्कि हँसी मज़ाक़ ही समझते रहे। और कहेंगे कि अगर हम भी हिदायत पा लेते तो यक़ीनन रब की नाफ़र्मानियों से दुनिया में और अल्लाह के अज़ाबों से आख़िरत में बच जाते। और अज़ाब का मुआयना करके अफ़सोस करते हुए कहेंगे कि अगर अब दोबारा दुनिया की तरफ़ जाना हो जाए तो दिल खोलकर नेकियाँ करें।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''बन्दे क्या अमल करेंगे और क्या कुछ वह कहेंगे। और उनके अमल और उनके क़ौल से पहले ही अल्लाह तआला ने उसकी ख़बर दे दी और वाक़ियतन (वास्तव में) उससे ज़्यादा ख़बर रखने वाला कौन हो सकता है?'' न उससे ज़्यादा सच्ची ख़बर कोई दे सकता है। बदकारों के यह तीनों क़ौल बयान किये। (तब्री : 21/316) और दूसरी जगह यह ख़बर दे दी कि अगर यह वापिस दुनिया में भेजे जाएँ तो भी हिदायत को इख़्तियार न करेंगे बल्कि जिन कामों से रोके गए हैं उन्हीं को करने लगेंगे और यहाँ जो कहते हैं, सब झूठ निकलेगा। मुस्नद अहमद की हदीस में है हर जहन्नमी को उसकी जन्नत की जगह दिखाई जाती है उस वक़्त वह कहता है काश! कि अल्लाह मुझे हिदायत देता। यह इसलिए कि उसे हसरत व अफ़सोस हो और इसी तरह हर जन्नती को उसकी जहन्नम की जगह दिखाई जाती है। उस वक़्त वह कहता है

कि अगर मुझे अल्ल्लाह तआला हिदायत न देता तो मैं जन्नत में न आ सकता यह इसलिए कि वह शुक्र में और एहसान के मानने में और बढ़ जाए। (अहमद : 2/512; और इसकी सनद ज़ईफ़ है अअमश मुदल्लस व अन्अन अन अबी सालेह व अख़्तअल हाफ़िज़ ज़हबी फ़क़वा मअन्अनहू अन अबी सालेह (रह.); सुननुल कुब्रा : 11454; हाकिम : 2/435) जब गुनहगार लोग दुनिया की तरफ़ लौटने की आरज़ू करेंगे और अल्लाह की आयतों की तस्दीक़ न करने की हसरत करेंगे और अल्लाह के रसूलों की न मानने पर कुढ़ने लगेंगे तो अल्लाह सुब्हानहू व तआला कहेगा कि अब नदामत से कुछ हासिल नहीं होना है, पछतावा बेसूद है, दुनिया में ही मैं तो अपनी आयतें उतार चुका था, अपनी दलीलें क़ायम कर चुका था लेकिन तू उन्हें झुठलाता रहा और उनकी ताबेदारी से तकब्बुर करता रहा और उनका मुंकिर रहा। कुफ़्र इख़्तियार किया, अब कुछ नहीं हो सकता।

***

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾

तर्जुमा : "जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ बाँधा है तू देखेगा कि क़ियामत के दिन उनके चेहरे स्याह हो गए होंगे। क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम नहीं? (60) और जिन लोगों ने परहेज़गारी की उन्हें अल्लाह तआला उनकी कामयाबी के साथ बचा लेगा उन्हें कोई बुराई छू भी न सकेगी और न वह किसी तरह ग़मगीन होंगे।" (61)

तकब्बुर करने वालों का अंजाम (आ. 60, 61) : क़ियामत के दिन दो तरह के लोग होंगे, काले मुँह वाले और नूरानी चेहरे वाले। तफ़र्क़ा और इख़्तिलाफ़ वालों के चेहरे तो काले पड़ जाएँगे और अहले सुन्नत वल जमाअत की ख़ूबसूरत शक्लें नूरानी हो जाएँगी। अल्लाह तआला के शरीक ठहराने वालों उसकी औलाद मुक़र्रर करने वालों को तू देखेगा कि उनके झूठ और बोहतान की वजह से उनके चेहरे काले होंगे और हक़ को क़बूल न करने और तकब्बुर व ख़ुदनुमाई करने के वबाल में यह जहन्नम में झोंक दिये जाएँगे जहाँ बड़ी ज़िल्लत के साथ सख़्ततर और बदतरीन सज़ाएँ भुगतेंगे।

इब्ने अबी हातिम की मरफ़ूअ हदीस में है कि "तकब्बुर करने वालों का हश्र क़ियामत के दिन चींटियों की सूरत में होगा। हर छोटी से छोटी मख़्लूक़ भी उन्हें रौंदती जाएगी यहाँ तक कि जहन्नम के जेलख़ाने में बंद कर दिये जाएँगे जिसका नाम बोलिस है जिसकी आग बहुत तेज़ और निहायत ही मुसीबत वाली है।

जहन्नमियों के लहू, पीप और गंदगी उन्हें पिलाई जाएगी।'' (इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है ईसा अल् हनात मतरूक रावी है।) हाँ! अल्लाह का डर रखने वाले अपनी कामयाबी और सआदतमंदी की वजह से उन अज़ाबों से और उस ज़िल्लत और मारपीट से बिलकुल बचे हुए होंगे। कोई बुराई उनके पास भी न फटकेगी। घबराहट और ग़म जो क़ियामत के दिन आम होगा वह उनसे अलग होगा। हर ग़म से बेग़म और हर डर से बेडर और हर सज़ा से बेसज़ा और हर दुख से बेपरवाह होंगे। किसी क़िस्म की डाँट झिड़की उन्हें न दी जाएगी। अम्नो अमान के साथ राहत व चेन के साथ अल्लाह तआला की तमाम नेअमतें हासिल किये हुए होंगे।

***

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ
تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ
مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (62) आसमानों और ज़मीन की कुँजियों का मालिक वही है। जिन जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63) तू कह दे ऐ जाहिलों! क्या तुम मुझसे अल्लाह के सिवा औरों की इबादत को कहते हो? (64) यक़ीनन तेरी तरफ़ भी और तुझसे पहले के तमाम नबियों की तरफ़ भी वही की गई है कि अगर तूने शिर्क किया तो बिला शुब्हा तेरा अमल ज़ाया हो जाएगा और बिल यक़ीन तू ज़ियाकारों में हो जाएगा। (65) बल्कि तू अल्लाह की इबादत करता रह और शुक्र करने वालों में से हो जा। (66)

शिर्क हर किसी के आमाल को बर्बाद करता है (आ. 62 से 66) : तमाम जानदार और बेजान चीज़ों का ख़ालिक़, मालिक, रब और मुतसर्रिफ़ अल्लाह तआला अकेला ही है। हर चीज़ उसकी मातहती में और उसके क़ब्ज़े में और उसकी तदबीर में है। सबका कारसाज़ और वकील वही है। तमाम कामों की बागडोर उसी के हाथ में है। ज़मीनो आसमान की कुँजियों और उनके ख़ज़ानों का वही तंहा मालिक है। हम्दो सताइश के

क़ाबिल और हर चीज़ पर क़ादिर वही है। कुफ़्र व इंकार करने वाले बड़े ही घाटे और नुक़्सान में हैं। इमाम इब्ने अबी ह़ातिम ने यहाँ एक ह़दीस वारिद की है भले सनद के लिह़ाज़ से वह बहुत ही ग़रीब है बल्कि सेह़त में भी कलाम है लेकिन ताहम हम भी उसे यहाँ ज़िक्र कर देते हैं। उसमें है कि ''ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस आयत का मत़लब पूछा तो आपने फ़र्माया, ऐ उ़स्मान (रज़ि.)! तुमसे पहले किसी ने मुझसे इस आयत का मत़लब नहीं पूछा। इसकी तफ़्सीर यह कलिमात हैं (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिही अस्तग़्फ़िरुल्लाह वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि अल्अव्वलु वल आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल बात़िनु बि यदिहिल ख़ैरु युह़यी व युमीतु वहुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर) ऐ उ़स्मान! जो शख़्स इसे सुबह़ को दस बार पढ़ ले तो अल्लाह तआ़ला उसे छः फ़ज़ाइल अ़त़ा करता है। पहले तो वह शैत़ान और उसके लश्कर से बच जाता है, दूसरे उसे एक क़िन्त़ार अज्र मिलता है, तीसरे उसका एक दर्जा जन्नत में बुलंद होता है, चौथे उसका ह़ूरे ईन से निकाह़ करा दिया जाता है, पाँचवाँ उसके पास बारह फ़रिश्ते आते हैं, छठे उसे इतना सवाब दिया जाता है जैसे किसी ने कुरआन और तौरात और इंजील व ज़बूर पढ़ी, फिर साथ ही उसे एक क़बूलशुदा ह़ज्ज और एक मक़्बूल उ़मरा का सवाब मिलता है और अगर उसी दिन उसका इंतिक़ाल हो जाए तो शहादत का दर्जा मिलता है।'' (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 10/115; किताबुल मौज़ूआत : 1/216, ह़ : 301 और इसकी सनद मौज़ूअ़ है।) यह ह़दीस बहुत ही ग़रीब है और इसमें नकारत है। (वल्लाहु आ़लम)

ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुश्रिकीन ने आप (ﷺ) से कहा कि आओ! तुम हमारे मअ़बूदों की पूजा करो और हम तुम्हारे रब की परसतिश करेंगे, इस पर यह आयत(कुल अफ़ग़ैरल्लाहि) से (मिनल ख़ासिरीन) तक नाज़िल हुई यही मज़्मून इस आयत में भी है (وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ) (6/अन्आम : 88) ऊपर अम्बिया (عليهم السلام) का ज़िक्र है फिर फ़र्माया है।

अगर बिल्फ़र्ज़ यह अम्बिया भी शिर्क करें तो इनके तमाम आ़माल अकारत और ज़ाया हो जाएँ। यहाँ भी फ़र्माया कि तेरी त़रफ़ और तुझसे पहले के तमाम अम्बिया की त़रफ़ हमने यह वह़ी भेज दी है कि जो भी शिर्क करे उसके अ़मल ग़ारत और वह नुक़्सान उठाने वाला और ज़ियाकार। पस तुझे चाहिए कि तू ख़ुलूस के साथ रब्बे वाह़िद व ला शरीक की इ़बादत में लगा रह और उसका शुक्रगुज़ार रह। तू भी और तेरे मानने वाले मुसलमान भी।

***

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۖ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ

مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ۚ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

तर्जुमा : "इन लोगों ने जैसी अ़ज़्मत अल्लाह तआ़ला की करनी चाहिए थी नहीं की। सारी ज़मीन क़ियामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और तमाम आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे। वह पाक और बरतर है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका शरीक बनाएँ।" (67)

मुश्रिकीन ने अल्लाह तआ़ला का मक़ाम नहीं समझा (आ. 67) : मुश्रिकीन ने दरअसल अल्लाह तआ़ला की क़द्रो अ़ज़्मत जानी ही नहीं, इसी वजह से वह उसके साथ दूसरों को शरीक करने लगे। उससे बढ़कर इ़ज़्ज़त वाला , उससे ज़्यादा बादशाहत वाला उससे बढ़कर ग़ल्बा और क़ुदरत वाला कोई नहीं। न कोई उसका हमसर और बराबरी करने वाला है। यह आयत कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के बारे में नाज़िल हुई है। उन्हें अगर क़द्र होती तो उसकी बातों को ग़लत़ न जानते जो शख़्स अल्लाह तआ़ला को हर चीज़ पर क़ादिर माने वह है जिसने अल्लाह की अ़ज़्मत की। और जिसका यह अ़क़ीदा न हो वह अल्लाह तआ़ला की क़द्र करने वाला नहीं। इस आयत के बारे में बहुत सी ह़दीसें आई हैं। इस जैसी आयतों के बारे में सलफ़े स़ालेह़ीन का मस्लक यही रहा है कि जिस त़रह़ ओर जिन लफ़्ज़ों में यह आई हैं उसी त़रह़ उन ही लफ़्ज़ों के साथ इन्हें मान लेना और उन पर ईमान रखना, न उनकी कैफ़ियत टटोलना न उनमें तह़रीफ़ व तब्दील करनी। स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में इस आयत की तफ़्सीर में है कि यहूदियों का एक बहुत बड़ा आ़लिम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और कहने लगा कि हम यह लिखा पाते हैं कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल सातों आसमानों को एक उँगली पर रख लेगा और सब ज़मीनों को एक उँगली पर रख लेगा और दरख़्तों को एक उँगली पर रख लेगा और पानी और मिट्टी को एक उँगली पर और बाक़ी तमाम मख़्लूक़ को एक उँगली पर रख लेगा। फिर कहेगा मैं ही सबका मालिक और सच्चा बादशाह हूँ। हुज़ूर (ﷺ) उसकी बात की सच्चाई पर हँस दिये यहाँ तक कि आपके मसूड़े ज़ाहिर हो गए। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह जुमर बाब क़ौलुहू (वमा क़दरुल्लाह ह़क़्क़ा क़दरिही) : 4811; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2786; तिर्मिज़ी : 3238) मुस्नद अह़मद की ह़दीस भी क़रीब इसी के है। उसमें है कि आप हँसे और अल्लाह तआ़ला ने यह आयत उतारी। (अह़मद : 1/378; ह़ : 3595; व मुस्लिम : 186; और वह ह़दीस स़ह़ीह़ है।) और रिवायत में है कि वह अपनी उँगलियों पर बताता जाता था पहले उसने कलिमे की उँगली दिखाई थी। इस रिवायत में चार उँगलियों का ज़िक्र है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब मिन सूरतिज़्ज़ुमर : 3240; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अ़त़ा बिन साइब रावी मुख़्तलत़ है। अह़मद : 1/251; त़बरी : 24/26)

स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है कि अल्लाह तआ़ला ज़मीन को क़ब्ज़ कर लेगा और आसमान को अपनी

दाहिनी मुट्ठी में ले लेगा फिर कहेगा मैं हूँ बादशाह, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह।(सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह ज़ुमर बाब क़ौलुहू (वल अर्ज़ु जमीअन क़ब्ज़तुहू यौमल क़ियामति वस्समावातु ....) :4812; सहीह मुस्लिम : 2787) मुस्लिम की इस हदीस में है कि ज़मीनें उसकी एक उँगली पर होंगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में होंगे, फिर कहेगा मैं ही बादशाह हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुत् तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (लिमा ख़लक़्तु बियदिय) : 7412; सहीह मुस्लिम : 2787)

मुस्नद अहमद में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने एक दिन मिम्बर पर इस आयत की तिलावत की और आप अपना हाथ हिलाते जाते थे, आगे पीछे ला रहे थे और फ़र्माते थे अल्लाह तआला अपनी बुज़ुर्गी आप बयान करेगा कि मैं जब्बार हूँ, मैं मुतकब्बिर हूँ, मैं मालिक हूँ, मैं बाइज़्ज़त हूँ, मैं करीम हूँ। आप इसके बयान के वक़्त इतना हिल रहे थे कि हमें डर लगने लगा कि कहीं मिम्बर आप समेत गिर न जाए।" (अहमद : 2/72; ह : 5414; और इसकी सनद सही है इस मअनी की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़तुल क़ियामति वल जन्नति वन्नार 2788 में मौजूद है।)

एक रिवायत में है कि "हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने इसकी पूरी कैफ़ियत दिखा दी कि किस तरह हुज़ूर (ﷺ) ने इसे हिकायत किया था कि अल्लाह तबारक व तआला आसमानों और ज़मीनों को अपने हाथ में लेगा और कहेगा, मैं बादशाह हूँ, अपनी उँगलियों को कभी खोलेगा कभी बंद करेगा, और आप उस वक़्त हिल रहे थे यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) के हिलने से सारा मिम्बर हिलने लगा और मुझे यह डर लगा कहीं वह हुज़ूर (ﷺ) को गिरा न दे।" (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़तुल क़ियामति वल्जन्नति वन्नार : 2788; इब्ने माजा : 198; इब्ने हिब्बान : 7324) बज़्ज़ार की रिवायत में है कि आपने यह आयत पढ़ी और मिम्बर हिलने लगा पस आप तीन बार आए गए। (तब्रानी : 13321; और इसकी सनद ज़ईफ़ है इसकी सनद में अब्बाद बिन मैसरा लीनुल हदीस आबिद है।) वल्लाहु आलम! मुअजम कबीर तब्रानी की एक ग़रीब हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने सहाबा की एक जमाअत से फ़र्माया, "मैं आज तुम्हें सूरह ज़ुमर की आख़िरी आयतें सुनाऊँगा जिसे उनसे रोना आ गया, वह जन्नती हो गया। अब आपने इस आयत से लेकर ख़त्म सूरह तक की आयतें तिलावत कीं। कुछ रोये और कुछ को रोना न आया, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमने हर चंद रोना चाहा लेकिन रोना न आया। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा! मैं फिर पढ़ूँगा जिसे रोना न आए वह रोनी शक्ल बनाकर बतकल्लुफ़ रोये।" (तब्रानी : 2459; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/104) एक इससे बढ़कर ग़रीब हदीस में है कि अल्लाह तआला फ़र्माता है मैंने तीन चीज़ें अपने बन्दों से छुपा ली हैं अगर वह उन्हें देख लेते तो कोई शख़्स कभी कोई बुराई न करता। 1. अगर मैं पर्दा हटा देता और वह मुझे देखकर ख़ूब यक़ीन कर लेते और मालूम कर लेते कि मैं अपनी मख़्लूक़ से क्या कुछ करता हूँ जबकि उनके पास आऊँ और आसमानों को अपनी मुट्ठी में ले लूँ फिर ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लूँ फिर कहूँ मैं बादशाह हूँ, मेरे सिवा मुल्क का मालिक कौन है? 2. फिर मैं उन्हें जन्नत दिखाऊँ और उसमें जो भलाइयाँ हैं सब उनके सामने कर दूँ और वह यक़ीन के साथ ख़ूब अच्छी तरह देख लें।

3. और मैं जहन्नम दिखा दूँ और उसके अज़ाबों का मुआयना करा दूँ यहाँ तक कि उन्हें यक़ीन आ जाए लेकिन मैंने यह चीज़ें क़सदन इनसे पोशीदा रखी हैं ताकि मैं जान लूँ कि मुझे किस तरह जानते हैं क्योंकि मैंने यह सब बातें बयान कर दी हैं। (मुअजमुल कबीर लित्तब्रानी : 3/295; ह : 3447; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; शुरैह बिन उबैद अन अबी मालिक मुन्क़तअ) इसकी सनद मुत्क़ारिब है और इस नुस्ख़े से बहुत सी हदीसें रिवायत की जाती हैं, वल्लाहु आलम!

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ۞ وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآيْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۞ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ۞

तर्जुमा : "और सूर फूँक दिया जाएगा पस आसमानों और ज़मीन वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर जिसे अल्लाह चाहे फिर दोबारा सूर फूँका जाएगा पस वह एक दम खड़े होकर देखने लग जाएँगे। (68) ज़मीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी। नामाएआमाल हाज़िर किये जाएँगे नबियों और गवाहों को लाया जाएगा और लोगों के दरम्यान हक़ हक़ फ़ैसले कर दिये जाएँगे। (69) वह ज़ुल्म न किये जाएँगे और जिस शख़्स ने जो कुछ किया है भरपूर दे दिया जाएगा जो कुछ लोग कर रहे हैं वह बख़ूबी जानने वाला है।" (70)

क़ियामत की होलनाकियाँ (आ. 68 से 70) : क़ियामत की होलनाकी और दहशत व वहशत का ज़िक्र हो रहा है कि सूर फूँका जाएगा। यह दूसरा सूर होगा जिससे हर ज़िन्दा मर जाएगा ख़्वाह आसमान में हो ख़्वाह ज़मीन में, मगर जिसे अल्लाह चाहे। सूर की मशहूर हदीस में है कि फिर बाक़ी वालों की रूहें क़ब्ज़ की जाएँगी यहाँ तक कि सबसे आख़िर ख़ुद हज़रत मलकुल मौत की रूह भी क़ब्ज़ की जाएगी। और सिर्फ़ अल्लाह तआला ही बाक़ी रह जाएगा जो हय्य व क़य्यूम है, जो अव्वल से था और आख़िर में दवाम के साथ रह जाएगा। फिर कहेगा आज किसका राज पाट है? तीन बार यही कहेगा। फिर ख़ुद आप ही अपने आप जवाब देगा कि अल्लाह वाहिद व क़ह्हार का। मैं ही अकेला हूँ जिसने हर चीज़ को अपनी मातहती में कर रखा है। आज मैंने सबको फ़ना का हुक्म दे दिया है, फिर अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ को दोबारा ज़िन्दा करेगा। सबसे पहले हज़रत इस्राफ़ील (عليه السلام) को ज़िन्दा करेगा और उन्हें हुक्म देगा कि दोबारा सूर फूँकें। यह तीसरा

सूर होगा जिससे सारी मख़्लूक़ जो मुर्दा थी ज़िन्दा हो जाएगी। जिसका बयान इस आयत में है कि और नफ़्ख़ा फूँका जाएगा और सब लोग उठ खड़े होंगे और नज़रें दौड़ाने लगेंगे यानी क़ियामत की दिल दहला देने वाली हालत देखने लगेंगे। जैसे फ़र्मान है (فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾)(79/नाज़िआत : 13, 14) यानी वह तो सिर्फ़ एक ही सख़्त आवाज़ होगी जिससे सब लोग फ़ौरन ही एक मैदान में आ मौजूद हो जाएँगे। आयत में है (يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ) (17/बनी इस्राईल : 52) यानी जिस दिन अल्लाह तआला उन्हें बुलाएगा तो तुम सब उसकी हम्द करते हुए उसकी पुकार को मान लोगे और दुनिया की ज़िन्दगी को कम समझने लगोगे। अल्लाह जल्ल व अला का और जगह इर्शाद है (وَمِنْ آيَاتِهِ أَن تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ) (30/रूम : 25) उसकी निशानियों में से ज़मीन आसमान का उसके हुक्म से क़ायम रहना है फिर जब वह तुम्हें ज़मीन में से पुकारकर बुलाएगा तो तुम सब एक बारगी निकल पड़ोगे। मुस्नद अहमद में है कि "एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से कहा कि आप फ़र्माते हैं इतने इतने वक़्त तक क़ियामत आ जाएगी। आपने नाराज़ होकर फ़र्माया, जी तो चाहता है कि तुमसे कोई बात बयान ही न करूँ। मैंने तो कहा था बहुत थोड़ी मुद्दत में तुम अहम अम्र देखोगे। फिर फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है मेरी उम्मत में दज्जाल आएगा और वह चालीस तक रहेगा। मैं नहीं जानता कि चालीस दिन या चालीस महीने या चालीस साल या चालीस रातें। फिर अल्लाह तआला हज़रत ईसा बिन मरियम (عليه السلام) को भेजेगा। वह बिलकुल सूरत शक्ल में हज़रत उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी (रज़ि.) जैसे होंगे। अल्लाह तआला आपको ग़ालिब करेगा और दज्जाल आपके हाथों हलाक होगा फिर सात साल तक लोग इस तरह मिले जुले रहेंगे कि सारी दुनिया में दो शख़्सों के बीच भी आपस में रंजिश व अदावत न होगी। फिर परवरदिगारे आलम शाम की तरफ़ से एक हल्की ठण्डी हवा चलाएगा जिससे तमाम ईमान वालों की रूह क़ब्ज़ कर ली जाएगी यहाँ तक कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर ईमान होगा वह भी फ़ौत हो जाएगा। यह ख़्वाह कहीं भी हों यहाँ तक कि अगर किसी पहाड़ की खोह में भी कोई मुसलमान होगा तो यह हवा वहाँ भी पहुँचेगी। मैंने इसे रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। फिर तो बदतरीन लोग बाक़ी रह जाएँगे जो अपने कमीनेपन में मिस्ल परिन्दों के हल्के और बेवक़ूफ़ी में मिस्ल दरिन्दों के बेवक़ूफ़ होंगे, न अच्छाई को अच्छाई समझेंगे और न बुराई को बुराई जानेंगे। उन पर शैतान ज़ाहिर होगा और कहेगा, शर्माते नहीं कि तुमने बुतपरस्ती छोड़ रखी है चुनाँचे वह उसके बहकावे में आकर बुतपरस्ती शुरू कर देंगे। उस हालत में फिर अल्लाह तआला उनकी रोज़ी में और उनके मआश में कुशादगी अता फ़र्माये हुए होगा। फिर सूर फूँक दिया जाएगा जिसके कान में उसकी आवाज़ जाएगी, वह उधर गिरेगा फिर खड़ा होगा फिर गिरेगा। सबसे पहले उसकी आवाज़ जिसके कान मे पड़ेगी यह वह शख़्स होगा जो अपना हौज़ ठीक कर रहा होगा, फौरन बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ेगा फिर तो हर शख़्स बेहोश और ख़ुद फ़रामोश हो जाएगा। फिर अल्लाह तआला बारिश नाज़िल करेगा जो शबनम की तरह होगी उससे लोगों के जिस्म उग निकलेंगे। फिर दूसरा सूर फूँका जाएगा तो सब ज़िन्दा खड़े हो जाएँगे और देखने लगेंगे। फिर कहा जाएगा कि ऐ लोगों! अपने रब की तरफ़ चलो, इन्हें ठहरा लो, इनसे सवालात किये जाएँगे। फिर

फ़र्माया जाएगा कि जहन्नम का हिस्सा निकाल लो। पूछा जाएगा किस क़द्र? जवाब मिलेगा हर हज़ार से नौ सौ निन्नान्वे। यह दिन होगा कि बच्चे बूढ़े हो जाएँगे और यही दिन होगा जिसमें पिण्डली खोली जाएगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़ी ख़ुरूजिद्दज्जाल व मकसुहू फ़िल्अर्ज़ि : 2940; अहमद : 2/166; इब्ने हिब्बान : 7353)

सहीह बुख़ारी में है दोनों सूर के बीच चालीस होंगे। रावी हदीस हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से सवाल हुआ कि क्या चालीस दिन? फ़र्माया, मैं जवाब देने से इंकारी हूँ। पूछा गया क्या चालीस साल। फ़र्माया मैं इसका जवाब नहीं दूँगा। पूछा गया चालीस माह? फ़र्माया मैं इसका भी इंकार करता हूँ। इंसान की सब चीज़ सड़ गल जाएगी मगर रीढ़ की हड्डी, उसी से मख़्लूक़ की तर्तीब दी जाएगी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुज़्ज़ुमर बाब क़ौलुहू (व नुफ़िख़ा फ़िस्सूरि फ़सइक़ा मन फ़िस्समावाति वमन फ़िल्अर्ज़ि....) : 4814; सहीह मुस्लिम : 2955) अबू यअ़ला में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) से पूछा कि इस आयत में जो इस्तिस्ना है यानी जिसे रब चाहे उससे कौन लोग मुराद हैं? फ़र्माया, शोहदा। यह अपनी तलवारें लटकाये हुए अल्लाह तआ़ला के अ़र्श के आसपास होंगे। फ़रिश्ते अपने झुर्मुट में उन्हें महशर की तरफ़ ले जाएँगे। याक़ूत की ऊँटनियों पर वह सवार होंगे, जिनकी गद्दियाँ रेशम से भी ज़्यादा नर्म होंगी। इंसान की निगाह जहाँ तक काम करती है उसका एक क़दम होगा। यह जन्नत में ख़ुश वक़्त होंगे वहाँ ऐशो इशरत में होंगे, फिर उनके दिल में आएगा कि चलो देखें अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले कर रहा होगा। चुनाँचे उनकी तरफ़ देखकर इलाहल आ़लमीन हँस देगा और उस जगह जिसे देखकर रब हँस दे उस पर हिसाब किताब नहीं है। इसके कुल रावी सिक़ा हैं, मगर इस्माईल बिन अ़याश के उस्ताद ग़ैर मअ़रूफ़ हैं, वल्लाहु आ़लम! क़ियामत के दिन जबकि अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले के लिए आएगा उस वक़्त उसके नूर से सारी ज़मीन जगमगा उठेगी, नामा-ए-आमाल लाये जाएँगे, नबियों को पेश किया जाएगा जो गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी उम्मतों को तब्लीग़ कर दी थी, और बन्दों के नेक व बुरे आ़माल के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते लाये जाएँगे। और अ़दलो इंसाफ़ के साथ मख़्लूक़ के फ़ैसले किये जाएँगे। और किसी पर किसी क़िस्म का ज़ुल्मो सितम न किया जाएगा। जैसे फ़र्माया (وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ) (21/अम्बिया : 47) यानी क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अ़दल क़ायम करेंगे और किसी पर बिलकुल ज़ुल्म न होगा, भले राई के दाने के बराबर अ़मल हो हम उसे भी ला मौजूद करेंगे और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं। (और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में उ़मर बिन मुहम्मद मज्हूल रावी है।) और आयत में है अल्लाह तआ़ला बक़द्रे ज़र्रे के भी ज़ुल्म नहीं करता। वह नेकियों को बढ़ाता है और अपने पास से अज्रे अ़ज़ीम इनायत करता है। इसीलिए यहाँ भी इर्शाद हो रहा है हर शख़्स को उसके भले, बुरे अ़मल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। वह हर शख़्स के आ़माल से बाख़बर है।

***

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ۭ حَتّٰٓى اِذَا جَاۗءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۭ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾ قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾

तर्जुमा : ''कुफ़्फ़ारों के गिरोह के गिरोह जहन्नम की तरफ़ हँकाये जाएँगे जब वह उसके पास पहुँच जाएँगे उसके दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और वहाँ के निगहबान उनसे सवाल करेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुममें से रसूल नहीं आते थे? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें उस दिन की मुलाक़ात से आगाह करते थे? यह जवाब देंगे हाँ! दुरुस्त है लेकिन अज़ाब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया। (71) कहा जाएगा कि अब जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ जहाँ हमेशगी है। पस सरकशों का ठिकाना बहुत ही बुरा है।'' (72)

नाकाम गिरोह और फ़रिश्तों की बातचीत (आ. 71, 72) : बदनसीब मुंकिरीने हक़ कुफ़्फ़ार का अंजाम बयान हो रहा है कि वह जानवरों की तरह रुस्वाई और ज़िल्लत से डाँट डपट और झिड़की से जहन्नम की तरफ़ हँकाए जाएँगे। जैसे और आयत में (युदअऊन) लफ़्ज़ है यानी धक्के दिये जाएँगे। और सख़्त प्यासे होंगे, जैसे अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़र्माया (يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ) (19/मरियम : 85) जिस दिन हम परहेज़गारों को रहमान के मेहमान बनाकर जमा करेंगे और गुनहगारों को दोज़ख़ की तरफ़ प्यासा हाँकेंगे। उसके अलावा वह बहरे, गूँगे और अंधे होंगे और मुँह के बल घसीटे जा रहे होंगे। जैसे फ़र्माया (وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰي وُجُوْهِهِمْ) (17/बनी इस्राईल : 97) क़ियामत के दिन उन्हें हम उनके चेहरे के बल घसीट कर लाएँगे। यह अँधे गूँगे और बहरे होंगे। उनका ठिकाना जहन्नम होगा जब उसकी आँच धीमी होने लगेगी हम उसे और तेज़ कर देंगे। यह क़रीब पहुँचे कि दरवाज़े खुल पड़ेंगे। ताकि फ़ौरन ही अज़ाबे नार शुरू हो जाए। फिर उन्हें वहाँ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते शर्मिन्दा करने के लिए और नदामत बढ़ाने के लिए डाँट कर और झिड़ककर कहेंगे, क्योंकि उनमें रहम का तो माद्दा ही नहीं, सरासर सख़्ती करने वाले सख़्त गुस्सैल और बड़ी बेतरह मार मारने वाले हैं कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे ही जिंस के अल्लाह के रसूल नहीं आये थे? जिनसे तुम सवाल जवाब कर सकते थे, अपना इत्मिनान और तसल्ली कर सकते थे, उनकी बातों को समझ सकते थे। उनकी सोहबत में बैठ सकते थे, उन्होंने अल्लाह तआला की आयतें तुम्हें पढ़कर सुनाईं, अपने लाये हुए सच्चे दीन पर दलीलें क़ायम

कर दीं, तुम्हें इस दिन की बुराइयों से आगाह कर दिया आज के अ़ज़ाबों से डरा दिया। काफ़िर इक़रार करेंगे कि हाँ! यह सच है बेशक अल्लाह के पैग़म्बर हममें आये उन्होंने दलीलें भी क़ायम कीं हमें बहुत कुछ कहा सुना भी, डराया धमकाया भी लेकिन हमने उनकी एक न मानी बल्कि उनका ख़िलाफ़ किया, क्योंकि हमारी क़िस्मत में ही शक़ावत थी, अज़ली बदनसीब हम थे हक़ से हट गए और बातिल के तरफ़दार बन गए। जैसे सूरह तबारक की आयत में है जब जहन्नम में कोई गिरोह डाला जाएगा उससे वहाँ के मुहाफ़िज़ पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? वह जवाब देंगे कि हाँ! आया तो था लेकिन हमने उसकी तक्ज़ीब की और कह दिया कि अल्लाह तआ़ला ने तो कुछ भी नाज़िल नहीं किया तुम बड़ी भारी ग़लती में हो। अगर हम सुनते या समझते तो आज जहन्नम वालों में न होते, यानी अपने आपको ख़ुद मलामत करने लगेंगे अपने गुनाह का ख़ुद इक़रार करेंगे। अल्लाह कहेगा दूरी और ख़सारा हो लअ़नत व फिटकार हो अहले दोज़ख़ पर। कहा जाएगा यानी हर वह शख़्स जो उन्हें देखेगा और उनकी हालत को मालूम करेगा, वह साफ़ कह उठेगा कि बेशक यह इसी लायक़ हैं। इसीलिए कहने वाले का नाम नहीं लिया गया बल्कि इसे मुत्लक़ छोड़ा गया ताकि इसका उमूम बाक़ी रहे और अल्लाह तआ़ला के अ़दल की गवाही कामिल हो जाए। इनसे कह दिया जाएगा कि अब जाओ जहन्नम में हमेशा जलते झुलसते रहो, न यहाँ से किसी तरह किसी वक़्त छुटकारा मिले, न तुम्हें मौत आये, आह! यह क्या ही बुरा ठिकाना है जिसमें दिन रात जलना ही जलना है। यह है तुम्हारे तकब्बुर और हक़ को न मानने का बदला जिसने तुम्हें ऐसी बुरी जगह पहुँचा दिया और यहीं का कर दिया। क्या ही बुरा हाल है और क्या ही इब्रतनाक नतीजा है। अल्लाह तआ़ला हमें महफ़ूज़ रखे, आमीन!

***

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

तर्जुमा : "और जो लोग अपने रब से डरते थे उनके गिरोह के गिरोह जन्नत की तरफ़ रवाना किये जाएँगे यहाँ तक कि जब उसके पास आ जाएँगे और दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और वहाँ के निगहबान उनसे कहेंगे तुम पर सलाम हो। तुम ख़ुशहाल हो तुम इसमें हमेशा के लिये चले

जाओ। (73) यह कहेंगे, अल्लाह का शुक्र है जिसने हमसे अपना वादा पूरा किया और हमें इस ज़मीन का वारिस बनाया कि जन्नत में जहाँ चाहें मक़ाम करें। पस अमल करने वालों का बहुत ही अच्छा बदला है।'' (74)

जन्नतियों का इस्तिक़्बाल (आवभगत) (आ. 73, 74) : ऊपर बदबख़्तों का अंजाम और उनका हाल बयान हुआ यहाँ सआदतमंदों का नतीजा बयान हो रहा है कि यह बेहतरीन ख़ूबसूरत ऊँटनियों पर सवार होकर जन्नत की तरफ़ पहुँचाये जाएँगे। उनकी भी जमाअतें होंगी। मुक़र्रिबीने ख़ास की जमाअत, फिर अबरार की फिर जैसे के दर्जे वालों की, फिर उनसे कम दर्जे वालों की। हर जमाअत अपने मुनासिब लोगों के साथ होगी, अम्बिया अम्बिया के साथ, सिद्दीक़ अपने जैसों के साथ, शहीद लोग अपने वालों के साथ, उलमा अपने जैसे के साथ। ग़र्ज़ हर हमजिंस अपने मेल के लोगों के साथ होंगे। जब यह जन्नत के पास पहुँचेंगे पुलसिरात से पार हो चुकेंगे वहाँ एक पुल पर ठहराये जाएँगे और उनमें आपस में जो मज़ालिम होंगे उनका क़िसास और बदला हो जाएगा। जब पाक साफ़ हो जाएँगे तो जन्नत में जाने की इजाज़त पाएँगे। सूर की लम्बी हदीस में है कि जन्नत के दरवाज़ों पर पहुँचकर यह आपस में मश्वरा करेंगे कि देखो सबसे पहले किसे इजाज़त दी जाती है। फिर वह हज़रत आदम (عليه السلام) का क़स्द करेंगे फिर हज़रत नूह (عليه السلام) का फिर हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का फिर हज़रत मूसा (عليه السلام) का फिर हज़रत ईसा (عليه السلام) का फिर हज़रत मुहम्मद (ﷺ) का। जैसे मैदाने महशर में शफ़ाअत के मौक़े पर भी किया था। सहीह मुस्लिम की हदीस में है मैं वह पहला सिफ़ारिशी हूँ जन्नत में। और रिवायत में है मैं वह पहला शख़्स हूँ जो जन्नत का दरवाज़ खटखटाऊँगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिन्नबी (ﷺ) (अना अव्वलुन्नास यश्फ़عليه السلام..) : 196) मुस्नद अहमद में है ''मैं क़ियामत के दिन जन्नत का दरवाज़ा खुलवाना चाहूँगा तो वहाँ का दारोग़ा मुझसे पूछेगा कि आप कौन हैं? मैं कहूँगा मुहम्मद। वह कहेगा मुझे यही हुक्म था कि आपकी तशरीफ़ आवरी से पहले जन्नत का दरवाज़ा किसी के लिए न खोलूँ।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिन्नबी (ﷺ) (अना अव्वलुन्नास यश्फ़अ..) : 197; अहमद : 3/136)

जन्नतियों के हुस्नो जमाल का मंज़र : मुस्नद अहमद में है कि पहली जमाअत जो जन्नत में जाएगी उनके चेहरे चोदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। थूक रेंट पेशाब पाख़ाना वहाँ कुछ न होगा। उनके बर्तन और सामान आराइश सोने चाँदी का होगा, उनकी अंगेठियो में बेहतरीन अगरबत्ती ख़ुश्बू दे रहा होगा। उनका पसीना मुश्क होगा, उनमें से हर एक की दो बीवियाँ होंगी जिनकी पिण्डली की गूदा बवजह हुस्नो नज़ाकत, सफ़ाई और नफ़ासत के गोश्त के पीछे से नज़र आ रहा होगा, किसी दो में कोई इख़्तिलाफ़, हसद और बुग़्ज़ न होगा। सबके दिल मिलकर ऐसे हो जाएँगे जैसे एक शख़्स का दिल। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्ना : 3245; सहीह मुस्लिम : 2834; तिर्मिज़ी : 2537; अहमद : 2/316; इब्ने हिब्बान : 7436) सुबह शाम अल्लाह की तस्बीह में गुज़रेगी। अबू यअला में है पहली जमाअत जो

जन्नत में जाएगी उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होंगे, उनके बाद वाली जमाअत के चेहरे ऐसे होंगे जैसे बेहतरीन चमकता हुआ सितारा फिर क़रीब क़रीब ऊपर वाली हदीस के बयान है और यह भी है कि उनके क़द साठ हाथ के होंगे जैसे हज़रत आदम (ﷺ) का क़द था। (सहीह बुख़ार, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ख़ल्क़े आदम व ज़ुर्रियतहू : 3327; सहीह मुस्लिम : 2834; इब्ने माजा : 4333; इब्ने हिब्बान : 7437) और हदीस में है कि "मेरी उम्मत की एक जमाअत जो सत्तर हज़ार की तादाद में होगी, पहले पहल जन्नत में दाख़िल होगी। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमक रहे होंगे। यह सुनकर हज़रत उकाशा बिन मिहसन (रज़ि.) ने दरख़्वास्त की कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे भी उन्हीं में से कर दे। आपने दुआ की कि अल्लाह तआला उन्हें भी उन ही में से कर दे। फिर एक अंसारी ने भी यही अर्ज़ की। आपने फ़र्माया, उकाशा तुझ पर सब्क़त ले गए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब यदख़ुलुल जन्नत्त सब्ऊना बिग़ैरि हिसाब : 6542; सहीह मुस्लिम : 216) उन सत्तर हज़ार का बेहिसाब जन्नत में दाख़िल होना बहुत सी किताबों में बहुत सी सनदों से बहुत से सहाबा से मरवी है। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार या सात सौ जन्नत में एक साथ जाएँगे। एक दूसरे के हाथ थामे हुए होंगे। सब एक साथ ही जन्नत में क़दम रखेंगे। उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद जैसे होंगे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब यदख़ुलुल जन्नत सब्ऊना बिग़ैरि हिसाब : 6543; सहीह मुस्लिम : 219) इब्ने अबी शैबा में है मुझसे मेरे रब का वादा है कि "मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार शख़्स जन्नत में जाएँगे। हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार और होंगे। उनसे न हिसाब होगा न उन्हें अज़ाब होगा। उनके अलावा और तीन लपें फिर जो अल्लाह तआला अपने हाथों से लप भरकर जन्नत में पहुँचाएगा।" (इब्ने अबी शैबा : 11/471; ह : 31705; और इसकी सनद हसन है अबी उमामा (रज़ि.) से तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब मिन्हू दुख़ूल सब्ईन अलफ़ बिग़ैरि हिसाब व बअज़ मय्यंशफ़अ लहू : 2437; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4286 में भी मौजूद है।) इस रिवायत में है फिर हर हज़ार के साथ सत्तर हज़ार होंगे। इस हदीस के बहुत से शवाहिद हैं। जब सईद बख़्त बुज़ुर्ग जन्नत के पास पहुँच जाएँगे उनकी वहाँ इज़्ज़त ताज़ीम होगी, वहाँ के मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उन्हें बशारत सुनाएँगे उनकी ता'रीफ़ें करेंगे, उन्हें सलाम कहेंगे। उसके बाद का जवाब क़ुरआन में महज़ूफ़ रखा गया है ताकि उमूमियत बाक़ी रहे। मतलब यह है कि उस वक़्त यह पूरे ख़ुश वक़्त हो जाएँगे, बेअंदाज़ सुरूर व राहत, आराम व चैन उन्हें मिलेगा, हर तरह की आस और हर भलाई की उम्मीद बँध जाएगी। हाँ! यहाँ यह बयान कर देना भी ज़रूरी है कि कुछ लोगों ने जो कहा है कि (व फ़ुतिहत) में वाव आठवीं है और इससे इस्तिदलाल लिया है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, उन्होंने बड़ा तकल्लुफ़ किया है और बेकार मशक़्क़त उठाई है। जन्नत के आठ दरवाज़ों का सबूत तो सहीह अहादीस में साफ़ मौजूद है। मुस्नद अहमद में है "जो शख़्स अपने माल में से अल्लाह तआला की राह में जोड़े ख़र्च करे वह जन्नत के सब दरवाज़ों से बुलाया जाएगा। जन्नत के कई एक दरवाज़े हैं। नमाज़ी बाबुस्सलात से, सख़ी बाबुस्सदक़ा से, मुजाहिद बाबे जिहाद से, रोज़ेदार बाबुर्रय्यान से बुलाये जाएँगे। यह सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने सवाल किया कि या

रसूलल्लाह (ﷺ)! भले इसकी ज़रूरत तो नहीं कि हर दरवाज़े से पुकारा जाए, जिससे भी पुकारा जाए मक़्सद तो जन्नत में जाने से है लेकिन क्या कोई ऐसा भी है जो जन्नत के कुल दरवाज़ों से बुलाया जाए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! और मुझे उम्मीद है कि तुम उन्हीं में से होगे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाबुर्रय्यान लिस्साइमीन : 1897; सहीह मुस्लिम : 1027; अहमद : 2/268; तिर्मिज़ी : 3674; इब्ने हिब्बान : 308) बुख़ारी व मुस्लिम की एक हदीस में है, जन्नत में आठ दरवाज़े हैं जिनमें से एक का नाम बाबुर्रय्यान है उसमें से सिर्फ़ रोज़ेदार ही दाख़िल होंगे। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सौम, बाबुर्रय्यान लिस्साइमीन : 1896; सहीह मुस्लिम : 1152; तिर्मिज़ी : 765; इब्ने माजा : 1460; इब्ने हिब्बान : 3420) सहीह मुस्लिम में है तुममें से जो शख़्स कामिल मुकम्मल बहुत अच्छी तरह मलकर वुज़ू करे फिर (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू) पढ़े उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं जिससे चाहे चला जाए। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तहारत, बाब अज़्ज़िक्रुल मुस्तहब उक़्बल वुज़ू : 234; अबूदाऊद : 169; तिर्मिज़ी : 55; इब्ने माजा : 470; अहमद : 4/153; इब्ने हिब्बान : 1050) और हदीस में है ''जन्नत की कुँजी ला इलाहा इल्लल्लाह है।'' (अहमद : 5/242; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; शहर बिन हुवेशिब का सय्यदना मुआज़ बिन जबल (रज़ि.) से मुलाक़ात नही है बाक़ी सनद भी ज़ईफ़ है; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/16)

जन्नत के दरवाज़ों की कुशादगी का बयान : अल्लाह हमें भी जन्नत नसीब करे। शफ़ाअत की लम्बी हदीस में है कि ''फिर अल्लाह कहेगा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अपनी उम्मत में से जिन पर हिसाब नहीं, उन्हें दाहिनी तरफ़ के दरवाज़े से जन्नत में ले जाओ लेकिन और दरवाज़ों में भी यह दूसरों के साथ शरीक हैं। उसकी क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है कि जन्नत की चोखट इतनी बड़ी वुस्अत वाली है जितना फ़ासला मक्का और हिज्र में है या फ़र्माया हिज्र और मक्का में।'' एक रिवायत में है कि मक्का और बसरा में है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह बनी इस्राईल बाब (ज़ुर्रियतुम् मन हमल्ना मअ नूह...) : 4712; सहीह मुस्लिम : 194) हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान ने अपने ख़ुत्बे में बयान किया कि हमसे यह ज़िक्र किया गया है कि जन्नत के दरवाज़े की वुस्अत चालीस साल की राह है। एक ऐसा दिन भी आने वाला है जबकि जन्नत में जाने वालों की भीड़भाड़ से यह वसीअ दरवाज़े खचाखच भरे हुए होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल मोमिन व जन्नतुन लिल काफ़िर :2967; तिर्मिज़ी : 136; इब्ने माजा : 4156; अहमद : 4/174; इब्ने हिब्बान : 7121) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जन्नत की चोखट चालीस साल की राह है।'' (अहमद : 3/29; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; और हदीसे अहमद (5/3, और इसकी सनद हसन है) युग्री अन्हू; अबू यअला : 1275; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/397) यह जब जन्नत के पास पहुँचेंगे, उन्हें फ़रिश्ते सलाम करेंगे और मुबारकबाद देंगे कि तुम्हारे आमाल तुम्हारे अक़्वाल तुम्हारी कोशिशें और तुम्हारा बदला हर चीज़ ख़ुशी वाली और उम्दगी वाली है। जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ने किसी ग़ज़्वे के मौक़े पर अपने मुनादी से कहा था, जाओ निदा करो कि जन्नत में सिर्फ़ मुसलमान लोग ही जाएँगे या फ़र्माया था सिर्फ़ मोमिन ही। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब इन्नल्लाह युअय्यिदुद्दीना बिर्रजुलि फ़ाजिर : 3062; सहीह मुस्लिम : 111; तिर्मिज़ी : 1574) फ़रिश्ते उनसे कहेंगे कि तुम अब यहाँ से निकाले न जाओगे बल्कि यहाँ तुम्हारे लिए हमेशगी है। अपना यह हाल देखकर ख़ुश होकर

जन्नती अल्लाह तआला का शुक्र अदा करेंगे और कहेंगे (رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ) (3/आले इमरान : 194) यानी "ऐ हमारे परवरदिगार! हमें वह दे जिसका वादा तूने अपने रसूलों की ज़ुबानी हमसे किया है और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर, यक़ीनन तेरी ज़ात वादाख़िलाफ़ी से पाक है। और आयत में है कि उस मौक़े पर अहले जन्नत यह भी कहेंगे कि अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने हमें इसकी हिदायत की। अगर वह हिदायत न करता तो हम हिदायत न पा सकते। यक़ीनन अल्लाह के रसूल हमारे पास हक़ लाये थे। वह यह भी कहेंगे कि अल्लाह ही के लिए सब ता'रीफ़ है जिसने हमसे ग़म दूर कर दिया। यक़ीनन हमारा रब बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है। जिसने अपने फ़ज़्लो करम से यह पाक जगह हमें नसीब की जहाँ हमें न कोई दुख दर्द है न रंज व तक्लीफ़। यहाँ है कि यह कहेंगे उसने हमें जन्नत की ज़मीन का वारिस किया। जैसे फ़र्मान है (وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ) (21/अम्बिया : 105) हमने ज़बूर में ज़िक्र के बाद लिख दिया था कि ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे। इसी तरह आज जन्नती कहेंगे कि इस जन्नत में हम जहाँ जगह बना लें कोई रोक टोक नहीं। यह है बेहतरीन बदला हमारे नेक आमाल का। मेअ़राज वाले वाक़िया में सहीहैन में है कि जन्नत के डेरे ख़ेमे लूअ लूअ के हैं और उसकी मिट्टी मुश्के ख़ालिस है। (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब कैफ़ फ़र्ज़तुस्सलात : 349; सहीह मुस्लिम : 163; इब्ने हिब्बान : 7406) इब्ने साइद से जब हुज़ूर (ﷺ) ने जन्नत की मिट्टी का सवाल किया तो उसने कहा सफ़ेद मेदे जैसी मुश्के ख़ालिस। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, यह सच्चा है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब ज़िक्रु इब्ने सय्याद : 2928)

मुस्लिम ही की और रिवायत में है कि इब्ने साइद ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब ज़िक्रु इब्ने सय्याद : 2928) इब्ने अबी हातिम में हज़रत अली (रज़ि.) का क़ौल मरवी है कि जन्नत के दरवाज़े पर पहुँचकर यह एक दरख़्त को देखेंगे जिसकी जड़ में से दो नहरें निकलती होंगी। एक में वह ग़ुस्ल करेंगे जिससे इस क़द्र पाक साफ़ हो जाएँगे कि उनके जिस्म और चेहरे चमकने लगेंगे। उनके बाल कँघी किये हुए तेल वाले हो जाएँगे कि फिर कभी सुलझाने की ज़रूरत ही न पड़े, न चेहरे और जिस्म का रंग रूप हल्का पड़े। फिर यह दूसरी नहर पर जाएँगे गोया कि उनसे कह दिया गया हो उसमें पानी पियेंगे जिनसे तमाम घिन की चीज़ों से पाक हो जाएँगे। जन्नत के फ़रिश्ते उन्हें सलाम करेंगे, मुबारकबाद पेश करेंगे और उन्हें जन्नत में जाने को कहेंगे। हर एक के पास उसके खादिम आएँगे और ख़ुशी ख़ुशी उन पर क़ुर्बान होंगे और कहेंगे आप ख़ुश हो जाइए अल्लाह तआला ने आपके लिए तरह तरह की नेअ़मतें मुहय्या कर रखी हैं। उनमें से कुछ भागे दौड़े जाएँगे और जो हूरें उस जन्नती के लिए ख़ास की हैं उनसे कहेंगे लो! मुबारक हो फ़लाँ साहब आ गए। नाम सुनते ही ख़ुश होकर वह पूछेंगी कि क्या तुमने ख़ुद उन्हें देखा है? वह कहेंगे हाँ! हम अपनी आँखों देखकर आ रहे हैं। यह मारे ख़ुशी के दरवाज़े पर आ खड़ी होंगी। जन्नती जब अपने महल में आएगा तो देखेगा कि गद्दे बराबर बराबर लगे हुए हैं और आबख़ोरे रखे हुए हैं और क़ालीन बिछे हुए हैं। उस फ़र्श को मुलाहिज़ा फ़र्माकर अब जो दीवारों की तरफ़ नज़र करेगा तो लाल व हरे और पीले व सफ़ेद और क़िस्म क़िस्म के मोतियों

की बनी हुई होंगी। फिर छत की तरफ़ निगाह उठाएगा तो वह इस क़द्र शफ़्फ़ाफ़ और मुसफ़्फ़ा होगी कि नूर की तरह चमक दमक रही होगी। जिसकी रोशनी आँखों की रोशनी को बुझा दे अगर अल्लाह तआला उसे बरक़रार न रखे। फिर अपनी बीवियों पर यानी जन्नती हूरों पर मुहब्बत भरी निगाह डालेगा फिर अपने तख़्तों में से जिसे उसका जी चाहे बैठेगा और कहेगा अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने हमें हिदायत की। अगर अल्लाह हमें यह राह न दिखाता तो हम तो हर्गिज़ उसे तलाश नहीं कर सकते थे। (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अबू इस्हाक़ सबीई मुदल्लस अन्अन) और हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है जब यह अपनी क़ब्रों से निकलें, उनका इस्तिक़्बाल किया जाएगा। उनके लिए परों वाली ऊँटनियाँ लाई जाएँगी जिन पर सोने के कजावे होंगे। उनकी जूतियों के तस्मे तक नूर से चमक रहे होंगे। यह ऊँटनियाँ एक एक क़दम इस क़द्र दूर रखती हैं जहाँ तक इंसान की निगाह जा सकती है। यह एक दरख़्त के पास पहुँचेंगे जिसके नीचे से दो नहरें निकलती हैं। एक का पानी यह पियेंगे जिससे उनके पेट की तमाम फ़िज़ूलियात और मेल कुचैल धुल जाएगा। दूसरी नहर से यह ग़ुस्ल करेंगे फिर हमेशा तक उनके बदन मैले न होंगे। उनके बाल परागंदा न होंगे और उनके जिस्म और चेहरे बारौनक़ रहेंगे। अब यह जन्नत के दरवाज़ों पर आएँगे, देखेंगे कि एक कुण्डा लाल याक़ूत का है जो सोने की तख़्ती पर आवेज़ाँ है। यह उसे हिलाएँगे तो एक अजीब सुरीली सदा पैदा होगी। उसे सुनते ही हर हूर जान लेगी कि उसके शौहर आ गए। यह दारोग़ा को हुक्म देगी कि जाओ दरवाज़ा खोलो, वह दरवाज़ा खोल देगा। यह अंदर क़दम रखते ही उस दारोग़ा की नूरानी शक्ल देखकर सज्दे में गिर पड़ेगा लेकिन वह उसे रोक लेगा और कहेगा अपना सर उठा मैं तो तेरा मातहत हूँ और उसे अपने साथ ले चलेगा। जब यह उस जुर्र याक़ूत के ख़ेमे के पास पहुँचेगा जहाँ उसकी हूर है वह बेतहाशा दौड़कर ख़ेमे से बाहर आ जाएगी और बग़लगीर होकर कहेगी तुम मेरे महबूब हो और मैं तुम्हारी चाहने वाली हूँ। मैं यहाँ हमेशा रहने वाली हूँ। मरूँगी नहीं। मैं नेअमतों वाली हूँ फ़क़्र व मोहताजी से दूर हूँ। मैं आपसे हमेशा राज़ी ख़ुशी रहूँगी कभी नाराज़ नहीं होने की। मैं हमेशा आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहने वाली हूँ कभी इधर उधर हटूँगी नहीं। फिर यह घर में जाएगा जिसकी छत फ़र्श से एक लाख हाथ बुलंद होगी। उसकी कुल दीवारें क़िस्म क़िस्म के और रंग बिरंग के मोतियों की होंगी। उस घर में सत्तर तख़्त होंगे और हर तख़्त पर सत्तर सत्तर छोलदारियाँ होंगी और उनमें से हर बिस्तर पर सत्तर हूरें होंगी और हर हूर पर सत्तर जोड़े होंगे और उन सब हुल्लों के नीचे से उनकी पिण्डली का गूदा नज़र आता होगा। उनके एक जिमाअ का अंदाज़ा एक पूरी रात का होगा। उनके बाग़ों और मकानों के नीचे नहरें बह रही होंगी जिनका पानी कभी बदबूदार नहीं होता, साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मोती जैसा पानी है और दूध की नहरें होंगी जिसका मज़ा कभी नहीं बदलता जो दूध किसी जानवर के थन से नहीं निकला। और शराब की नहरें होंगी जो निहायत लज़ीज़ होगा और ख़ालिस शहद की नहरें होंगी जो मक्खियों के पेट से हासिल शुदा नहीं। क़िस्म क़िस्म के मेवों से लदे हुए दरख़्त उसके चारों तरफ़ होंगे जिनका फल उनकी तरफ़ झुका हुआ होगा। यह खड़े खड़े फल लेना चाहें तो ले सकते हैं। अगर यह बैठे बैठे फल तोड़ना चाहें तो शाख़ें इतनी झुक जाएँगी कि यह तोड़ लें। अगर यह लेटे लेटे फल लेना चाहें तो शाख़ें और झुक आएँगी। फिर आप

(ﷺ) ने आयत (وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا) (76/दहर : 14) पढ़ी यानी उन जन्नती दरख़्तों के साये उन पर झुके हुए होंगे और उसके मेवे बहुत क़रीब कर दिये जाएँगे। यह खाना खाने की ख़्वाहिश करेंगे तो सफ़ेद रंग या सब्ज़ रंग के परिन्द उनके पास आकर अपना पर ऊँचा कर देंगे यह जिस क़िस्म का उसके पहलू का गोश्त चाहें खाएँगे फिर वह ज़िन्दा का ज़िन्दा जैसा था वैसा ही होकर उड़ जाएगा। फ़रिश्ते उनके पास आएँगे सलाम करेंगे और कहेंगे कि यह जन्नतें हैं जिनके तुम अपने आमाल के बाइस वारिस बनाये गए हो। अगर किसी हूर का एक बाल ज़मीन पर आ जाए तो वह अपनी चमक से और अपनी स्याही से नूर को रोशन करे और स्याही नुमायाँ रहे।'' (इब्ने अबी हातिम, और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीहि इलल मिन्हा ज़ुअफ़ अबी मुआज़ बसरी) यह हदीस ग़रीब है गोया कि यह मुर्सल है, वल्लाहु आलम!

***

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾

तर्जुमा : ''और तू फ़रिश्तों को अल्लाह तआला के अर्श के आसपास हल्क़ा बाँधे हुए अपने रब की हम्दो तस्बीह करते हुए देखेगा और सब में आपस में इंसाफ़ का फ़ैसला किया जाएगा और कह दिया जाएगा कि सारी ख़ूबी अल्लाह तआला ही के लिए है जो तमाम जहानों का पालनहार है।'' (75)

(आयत : 75) : जबकि अल्लाह तआला ने अहले जन्नत और अहले जहन्नम का फ़ैसला सुना दिया और उन्हें उनके ठिकाने पहुँचाए जाने का हाल भी बयान कर दिया और इसमें अपने अदलो इंसाफ़ का सबूत भी दे दिया तो इस आयत में फ़र्माया कि क़ियामत के दिन उस वक़्त तू देखेगा कि फ़रिश्ते अल्लाह तआला के अर्श के चारों तरफ़ खड़े हुए होंगे और अल्लाह तआला की तस्बीह, हम्द, बुज़ुर्गी और बड़ाई बयान कर रहे होंगे। सारी मख़्लूक़ में अदल व हक़ के साथ फ़ैसले हो चुके होंगे। उस सरासर अदल और बिलकुल रहम वाले फ़ैसलों पर कायनात का ज़र्रा ज़र्रा उसकी सना ख़्वानी करने लगेगा और जानदार ओर बेजान सारी चीज़ों से आवाज़ आएगी कि (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ) (1/फ़ातिहा : 1) चूँकि उस वक़्त हर तर व ख़ुश्क, चीज़ अल्लाह की हम्दो सना बयान करेगी उसे यहाँ मज्हूल का सेग़ा लाकर फ़ाइल को आम कर दिया गया।

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि ख़ल्क़ की पैदाइश की इब्तिदा भी हम्द से है, फ़र्माता है (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضَ) (6/अन्आम : 1) और मख़्लूक़ की इंतिहा भी हम्द से है, फ़र्माता है (وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ) (39/ज़ुमर : 75) (तब्री : 21/344)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह ज़ुमर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई)

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह मोमिन - 40

आयात : 85 मक्की पैराग्राफ : 5

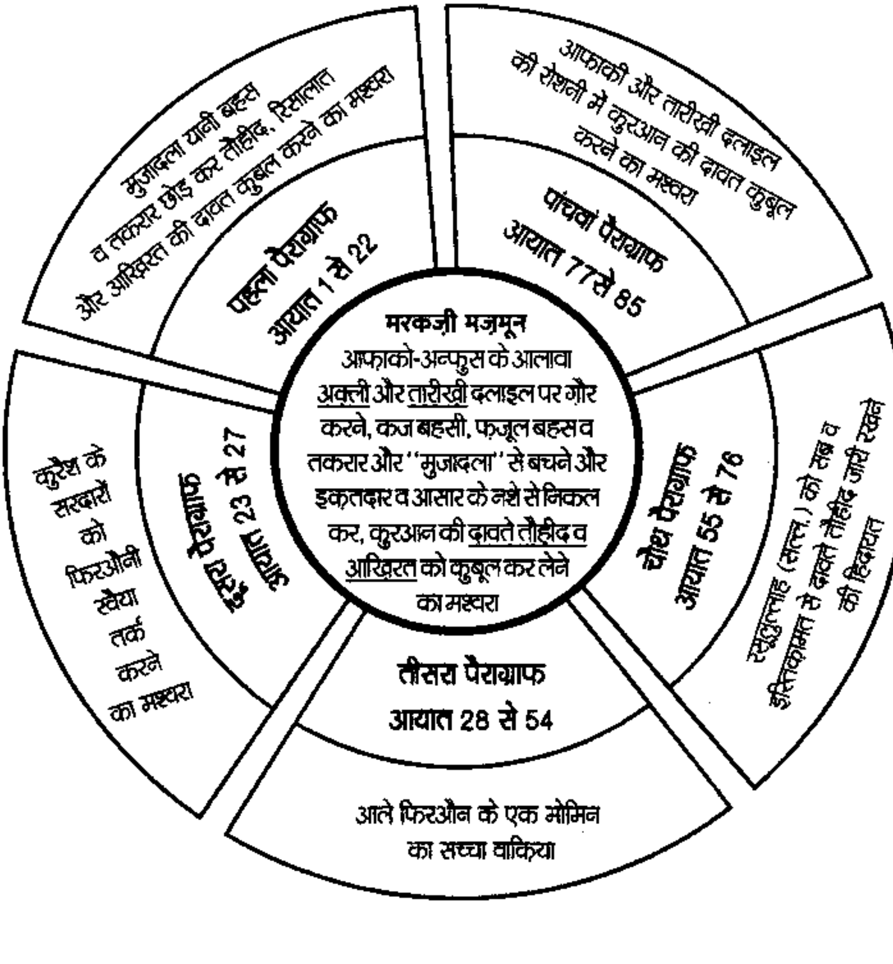

तफ़्सीर सूरह मोमिन

कुछ सलफ़ का क़ौल है कि जिन सूरतों की इब्तिदा (ह़ामीम) से है उन्हें ह़वामीम कहना मकरूह है आले ह़ामीम कहा जाए। ह़ज़रत मुह़म्मद बिन सीरीन (रह़.) भी यही कहते हैं। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''(ह़ामीम) क़ुरआन का दीबाचा हैं।'' (ह़ाकिम : 2/437; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने अबी नजीअ़ मुदल्लस व अ़न्अ़न) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हर चीज़ का दरवाज़ा होता है और क़ुरआने करीम का दरवाज़ा (ह़ामीम) है या फ़र्माया ह़वामीम हैं।'' (अद्दुर्रुल मंसूर : 7/268) ह़ज़रत मिस्अ़र बिन कुदाम (रह़.) फ़र्माते हैं इन सूरतों को अ़राइस कहा जाता था। उ़रूस दुलहन को कहते हैं। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि क़ुरआन की मिसाल उस शख़्स जैसी है जो अपने घरवालों के लिए किसी अच्छी मंज़िल की तलाश में निकला तो एक जगह ऐसी है जहाँ गोया अभी अभी बारिश बरस चुकी है। यह ज़रा कुछ आगे बढ़ा होगा जो देखता है कि तरोताज़ा लहलाते हुए चंद चमन हैं। यह पहले तर ज़मीन को देखकर ही ताज्जुब में था अब तो उसका ताज्जुब और भी बढ़ गया। उससे कहा गया कि पहले की मिसाल तो क़ुरआन करीम की अ़ज़्मत की मिसाल है और इन बाग़ीचों की मिसाल ऐसी है जैसे क़ुरआन में ह़ामीम वाली सूरतें (बग़वी) ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं हर चीज़ का दरवाज़ा होता है और क़ुरआन का दरवाज़ा यही (ह़ामीम) वाली सूरतें हैं। ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब मैं तिलावत करता हुआ (ह़ामीम) वाली सूरतों पर पहुँचता हूँ तो मुझे ऐसा मालूम होता है गोया मैं हरे भरे फले फूले बाग़ीचों की सैर कर रहा हूँ।'' एक शख़्स ने ह़ज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) को मस्जिद बनाते हुए देखकर पूछा कि यह क्या है फ़र्माया कि मैं इसे (ह़ामीम) वाली सूरतों के लिए बना रहा हूँ। मुम्किन है यह मस्जिद वह हो जो दमिश्क़ के क़िले के अंदर है और आप ही के नाम से मंसूब है और यह भी हो सकता है कि इसकी ह़िफ़ाज़त ह़ज़रत अबुद्दर्दा की नेक निय्यती की और जिस वजह से यह मस्जिद बनाई गई थी उसकी बरकत के बाइ़स हो। इस कलाम में दुश्मनों पर फ़तह़ और ज़फ़र की दलील भी है। जैसे कि ह़ुज़ूर (ﷺ) ने अपने कुछ जिहादों में अपने लश्कर से फ़र्माया था कि अगर रात को तुम अचानक ह़मला करो तो तुम्हारी पहचान के ख़ास़ अल्फ़ाज़ (ह़ामीम ला युन्सरून) हैं। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िर्रुजुल युनादी बिशशआर : 2597; और वह स़ह़ीह़ है; तिर्मिज़ी : 1682; ह़ाकिम : 2/107) एक रिवायत में तुन्सरून है। मुस्नदे बज़्ज़ार में है जिसने आयतल कुर्सी और सूरह ह़ामीम अल्मोमिन का इब्तिदाई ह़िस्सा पढ़ लिया वह सारे दिन की बुराई से मह़फ़ूज़ रहता है। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन, बाब मा जाअ फ़ी सूरतिल बक़रह व आयतल कुर्सी : 2879; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दारमी : 2/449 इसकी सनद में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र मलीकी ज़ईफ़ रावी है। यह ह़दीस तिर्मिज़ी में भी है और इसके एक रावी पर कुछ जरह़ भी है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

حٰمٓ ① تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ② غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ③

तर्जुमा : ''हामीम! (1) इस किताब का नाज़िल करना उस अल्लाह की तरफ़ से है जो ग़ालिब और दाना है। (2) गुनाह के बख़्शने वाला, तौबा क़बूल करने वाला है। सख़्त अज़ाब वाला इन्आम कुदरत वाला जिसके सिवा कोई सच्चा मअबूद नहीं। उसी की तरफ़ वापिस लौटना है।'' (3)

अज़ाब व सवाब का मालिक अल्लाह ही है (आ. 1 से 3) : सूरतों के पहले (हामीम) वग़ैरह जो हुरूफ़ आये हैं उनकी पूरी बहस सूरह बक़रह की तफ़्सीर में कर आये हैं जिसके एआदा (लौटाने) की अब कतई ज़रूरत नहीं। कुछ कहते हैं (हामीम) अल्लाह तआला का एक नाम है और उसकी गवाही में वह यह शेअर पेश करते हैं,

युज़क्किरुनी हामीम वर्रुम्हु शाजिरुन फ़हल्ला तला हामीम क़ब्लत्तक़दुम

यानी यह मुझे हामी याद दिलाता है जबकि नेज़ा तन चुका फिर उससे पहले ही उसने हामीम क्यूँ न कह दिया। अबूदाऊद और तिर्मिज़ी की हदीस में वारिद है कि अगर तुम पर शबख़ून मारा जाए तो हामीम ला युन्सरून कहो। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़िर्रुजुल युनादी बिशशआर : 2597; और वह सहीह है; तिर्मिज़ी : 1682) इसकी सनद सहीह है। अबू उबेदह कहते हैं मुझे यह पसंद है कि इस हदीस को यूँ रिवायत किया जाए कि आपने फ़र्माया, तुम कहो हामीम ला युन्सरू यानी नून के बग़ैर। तो गोया इनके नज़दीक ला युन्सरू जज़ा है हामीम की यानी जब तुम यह कहोगे तो तुम मग़लूब न होओगे तो क़ौल सिर्फ़ हामीम रहा। यह किताब यानी कुरआन मजीद अल्लाह तआला की जानिब से नाज़िलकर्दा है जो इज़्ज़त व इल्म वाला है। जिसकी जनाब हर बेअदबी से पाक है और जिस पर कोई ज़र्रा भी मख़्फ़ी नहीं भले वह कितने ही पर्दों में हो। वह गुनाहों की बख़्शिश करने वाला है और जो उसकी तरफ़ झुके उसकी जानिब माइल होने वाला है। और जो उससे बेपरवाही करे उसके सामने सरकशी और तकब्बुर करे और दुनिया को पसंद करके आख़िरत से बेरग़बत हो जाए अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी को छोड़ दे उसे वह सख़्त तरीन अज़ाब और बदतरीन सज़ाएँ देने

वाला है। जैसे फ़र्मान है (نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۙ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ) (15/हिज्र : 49, 50) यानी मेरे बन्दों को आगाह कर दो कि मैं बख़्शने वाला और मेहरबानियाँ करने वाला भी हूँ और मेरे अ़ज़ाब भी बड़े दर्दनाक हैं। और भी इस क़िस्म की आयतें क़ुरआने करीम में बहुत सारी हैं जिनमें रह़मो करम के साथ अ़ज़ाब व सज़ा का बयान भी है ताकि बन्दा ख़ौफ़ व उम्मीद की ह़ालत में रहे। वह वुस्अ़त व ग़िना वाला है वह बहुत बेहतरी वाला है बड़े एहसानों और ज़बरदस्त नेअ़मतों और रह़मतों वाला है। बन्दों पर उसके इन्आ़म व एह़सान इस क़द्र हैं कि कोई उन्हें गिन भी नहीं सकता। चे जाए कि उनका शुक्र अदा कर सके बल्कि ह़क़ीक़त यह है कि किसी एक नेअ़मत का पूरा शुक्र किसी से अदा नहीं हो सकता। उस जैसा कोई नहीं उसकी एक सिफ़त भी किसी में नहीं। उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं न उसके सिवा कोई किसी की परवरिश करने वाला है उसी की त़रफ़ सबको लौटकर जाना है। उस वक़्त वह हर अ़मल करने वाले को उसके अ़मल के मुत़ाबिक़ जज़ा सज़ा देगा और बहुत जल्द ह़िसाब से फ़ारिग़ हो जाएगा। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) से एक शख़्स ने आकर मसला पूछा कि मैंने किसी को क़त्ल कर दिया है क्या मेरी तौबा क़बूल हो सकती है?'' आपने शुरू सूरत की दो आयतें तिलावत की और फ़र्माया, नाउम्मीद न हो और नेक अ़मल किये जा।'' (इब्ने अबी ह़ातिम)

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास एक शामी कभी कभी आया करता था और था ज़रा ऐसा ही आदमी। एक बार लम्बी मुद्दत तक वह आया ही नहीं तो अमीरुल मोमिनीन ने लोगों से उसका ह़ाल पूछा। उन्होंने कहा उसने बहुत ज़्यादा पीना शुरू कर दिया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने कातिब को बुलवाकर कहा लिखो ''यह ख़त़ है उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) की त़रफ़ से फ़लाँ बिन फ़लाँ की त़रफ़। बाद अज़ सलाम अ़लैक मैं तुम्हारे सामने अल्लाह की ता'रीफ़ें बयान करता हूँ जिसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं जो गुनाहों का बख़्शने वाला, तौबा को क़बूल करने वाला, सख़्त अ़ज़ाब वाला, बड़ा एह़सान वाला है। जिसके सिवा कोई इलाह नहीं, उसी की त़रफ़ लौटना है। यह ख़त़ उसकी त़रफ़ भिजवाकर आपने अपने साथियों से फ़र्माया अपने भाई के लिए दुआ करो कि अल्लाह तआ़ला उसके दिल को मुतवज्जह कर दे और उसकी तौबा क़बूल कर ले। जब उस शख़्स को ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ख़त़ मिला तो उसने उसे बार बार पढ़ना और यह कहना शुरू किया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपनी सज़ा से डराया भी है और अपनी रह़मत की उम्मीद दिलाकर गुनाहों की बख़्शिश का वादा भी किया है। कई कई बार उसे पढ़कर रो दिया फिर तौबा की और सच्ची पक्की तौबा की। जब ह़ज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) को यह पता चला तो आप बहुत ख़ुश हुए और फ़र्माया इसी त़रह़ किया करो जब तुम देखो कि कोई मुसलमान भाई लग़्ज़िश खा गया तो उसे सीधा करो और मज़बूत़ करो और उसके लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ करो, शैत़ान के मददगार न बनो।'' ह़ज़रत साबित बिनानी (रह़.) फ़र्माते हैं कि मैं ह़ज़रत मुस्अ़ब बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के साथ कूफ़े के गिर्द व नवाह़ में था। मैंने एक बाग़ में जाकर दो रकअ़त नमाज़ शुरू की और उसमें सूरह मोमिन की तिलावत करने लगा। मैं अभी (व इलैहिल मसीर) तक पहुँचा ही था कि एक शख़्स ने जो मेरे पीछे सफ़ेद ख़च्चर पर सवार था जिस पर यमनी चादरें थीं। मुझसे कहा जब (غَافِرِ

(الذَّنْبِ) (40/ग़ाफ़िर : 3) पढ़ो तो कहो या ग़ाफ़िरिज़्ज़ंबि इग़्फ़िर ली ज़ंबी और जब (क़ाबिलित्तौबि) पढ़ो तो कहो या क़ाबिलित्तौबि इक़्बल तौबती और जब (शदीदिल इक़ाब) पढ़ो तो कहो या शदीदल इक़ाबि ला तुआक़िब्नी। साबित बिनानी (रह.) फ़र्माते हैं मैंने गोशा चश्म से देखा तो मुझे कोई नज़र न आया। फ़ारिग़ होकर मैं दरवाज़े पर पहुँचा। वहाँ जो लोग बैठे थे उनसे मैंने पूछा कि क्या कोई शख़्स तुम्हारे पास से गुज़रा है जिस पर यमनी चादरें थीं? उन्होंने कहा नहीं! हमने तो किसी को आते जाते नहीं देखा। अब लोग यह ख़्याल करने लगे कि यह हज़रत इल्यास (عليه السلام) थे। यह रिवायत दूसरी सनद से भी मरवी है और उसमें हज़रत इल्यास (عليه السلام) का ज़िक्र नहीं। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

***

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ④ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ⑤ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۘ⑥

तर्जुमा : "अल्लाह तआला की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो काफ़िर हैं पस उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुझे धोखे में न डाले। (4) क़ौमे नूह ने और उसके बाद की दूसरी जमाअतों ने भी झुठलाया था और हर उम्मत ने अपने रसूल को गिरफ़्तार कर लेने का इरादा किया और बेहूदा शुब्हात निकालकर उनसे हक़ को बिगाड़ना चाहा। पस मैंने उनको पकड़ लिया। सो मेरी तरफ़ से कैसी सज़ा हुई। (5) और इसी तरह तेरे रब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया कि वह दोज़ख़ी हैं।" (6)

हक़ बात में शुब्हात पैदा करना काफ़िरों की आदत है (आ. 4 से 6) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हक़ के ज़ाहिर हो चुकने के बाद उसे न मानना और उसमें नुक़्सानात पैदा करने की कोशिश करना काफ़िरों का ही काम है। अगर मालदार और ज़ी इज़्ज़त हों तो तू किसी धोखे में न पड़ जाना कि अगर यह अल्लाह तआला

के नज़दीक बुरे होते तो अल्लाह तआला इन्हें अपनी यह नेअमतें क्यूँ अता करता? जैसे और जगह है, काफ़िरों का शहरों में चलना फिरना तुझे धोखे में न डाल दे, यह तो कुछ यूँ ही सा फ़ायदा है आख़िरी अंजाम तो इनका जहन्नम है जो बदतरीन जगह है। और आयत में है, हम इन्हें बहुत कम फ़ायदे दे रहे हैं बिल आख़िर इन्हें सख़्त अज़ाबों की तरफ़ बेबस कर देंगे। फिर अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को तसल्ली देता है कि लोगों की तक्ज़ीब की वजह से घबराएँ नहीं अपने से अगले नबियों के हालात को देखें कि उन्हें भी झुठलाया गया और उन पर ईमान लाने वालों की भी बहुत कम तादाद थी। हज़रत नूह (عليه السلام) जो बनी आदम में से पहले रसूल होकर आए जबकि लोगों में पहले पहल बुतपरस्ती शुरू हुई तो उन लोगों ने उन्हे भी झुठलाया और उनके बाद भी जितने नबी आए उन्हें उनकी उम्मत झुठलाती रही बल्कि सबने अपने अपने ज़माने के नबी को क़ैद करना और मार डालना चाहा। और कुछ कुछ उसमें कामयाब भी हुए और अपने शुब्हात से और बातिल से हक़ को हक़ीर करना चाहा।

तब्रानी में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि ''जिसने बातिल की मदद की ताकि हक़ को कमज़ोर करे उससे अल्लाह तआला और उसके रसूल बरिउज़्ज़िम्मा हैं। (तब्रानी : 11539; हाकिम : 4/100; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीहि इल्लतान, ज़ुअफ़ हुनश व तदलीस सुलेमान तैमी, मज्मउज़्ज़वाइद : 4/205) अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मैंने इन बातिल वालों को पकड़ लिया और इनके इन ज़बरदस्त गुनाहों और बदतरीन सरकशियों की बिना पर इन्हें हलाक कर दिया। अब तुम ही बतलाओ कि मेरे अज़ाब इन पर कैसे कुछ हुए? यानी बहुत सख़्त निहायत तक्लीफ़देह और अलमनाक। जिस तरह इन पर इनके इस नापाक अमल की वजह से मेरे अज़ाब उतर पड़े इसी तरह अब उसकी उम्मत में से जो इस आख़िरी रसूल को झुठलाया करते हैं उन पर भी मेरे ऐसे ही अज़ाब नाज़िल होने वाले हैं यह भले और नबियों को सच्चा मानें लेकिन जब तक तेरी नबुव्वत के क़ाइल न हो जाते, इनकी सच्चाई मर्दूद है, वल्लाहु आलम!

***

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْاۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ
لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ
جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْؕ

اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩

तर्जुमा : ''अर्श के उठाने वाले और उसके आसपास के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह हम्द के साथ साथ करते रहते हैं और उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! तूने हर चीज़ को अपनी बख़्शिश और इल्म से घेर रखा है पस तू उन्हें बख़्श दे जो तौबा करें और तेरी राह की पैरवी करें तू उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से भी बचा ले। (7) ऐ हमारे रब! तू उन्हें हमेशगी वाली जन्नतों में ले जा जिनका तूने उनसे वादा किया है और उनके बाप दादों और बीवियों और औलादों में से भी उन सबको जो नेक अ़मल करते हैं। यक़ीनन तू तो ग़ालिब व बाहिक्मत है। (8) उन्हें बुराइयों से भी महफ़ूज़ रख। हक़ तो यह है कि उस दिन तूने जिसे बुराइयों से बचा लिया उस पर तूने रहमत कर दी, और वोह बहुत बड़ी कामयाबी है।'' (9)

फ़रिश्ते मोमिनों के लिए दुआ करते हैं (आ. 7 से 9) : अ़र्श को उठाने वाले चारों फ़रिश्ते और उसके आसपास के तमाम बेहतरीन बुज़ुर्ग फ़रिश्ते एक तरफ़ तो अल्लाह की पाकी बयान करते हैं तमाम ऊ़यूब और कुल कमियों और बुराइयों से उसे दूर बतलाते हैं, दूसरी जानिब उसे तमाम सताइशों और ता'रीफ़ों के क़ाबिल मानकर उसकी हम्द बजा लाते हैं। ग़र्ज़ जो अल्लाह में नहीं है उसका इंकार करते हैं और जो सिफ़तें उसमें हैं उन्हें साबित करते हैं, उस पर ईमान व यक़ीन रखते हैं। उससे पस्ती और आजिज़ी का इज़्हार करते हैं और कुल ईमान वाले मर्दों, औरतों के लिए इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं। चूँकि ज़मीन वालों का ईमान अल्लाह तआ़ला पर उसे देखे बग़ैर था इसलिए अल्लाह तआ़ला ने अपने क़रीबी फ़रिश्ते उनके गुनाहों की माफ़ी तलब करने के लिए मुक़र्रर कर दिये हैं जो उनके बिन देखे हर वक़्त उनकी तक़्सीरों की माफ़ी माँगते रहते हैं। सहीह मुस्लिम शरीफ़ में है कि ''जब मुसलमान अपने भाई मुसलमान के लिए उसकी ग़ैर हाज़िरी में दुआ करता है तो फ़रिश्ता उसकी दुआ पर आमीन कहता है और उसके लिए दुआ करता है कि अल्लाह तआ़ला तुझे भी यही दे जो तू उस मुसलमान के लिए अल्लाह तआ़ला से माँग रहा है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब फ़ज़्लुद्दुआइ लिल मुस्लिमीन बि ज़हरिल ग़ैबि : 2732) मुस्नद अहमद में है कि उमय्या बिन अबी सुल्त के कुछ अश्आर की रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तस्दीक़ की जैसे यह शेअ़र है,

زحل و ثور تحت رجل یمینہ   والنسر للاخری و لیث مرصد

यानी हामिलाने अ़र्श चार फ़रिश्ते हैं। दो एक तरफ़ दो दूसरी तरफ़। आपने फ़र्माया सच है, फिर उसने कहा।

والشمس تطلع كل اخر ليلته حمراء يصبح لونها يتورد

تابى فما تطلع لنا فى رسلها الا معذبته والا تجلد

यानी "सूरज लाल रंग में उगता है फिर गुलाबी हो जाता है, अपनी हैयत में कभी साफ़ ज़ाहिर नहीं होता बल्कि रूखा फीका ही रहता है।" आपने फ़र्माया, सच है। (अहमद : 1/256; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने इस्हाक़ मुदल्लस व अन्अन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2482; तब्रानी : 11591) इसकी सनद बहुत पुख़्ता है और इससे साफ़ ज़ाहिर होता है कि इस वक़्त हामिलाने अ़र्श चार फ़रिश्ते हैं, हाँ! क़ियामत के दिन अ़र्श को आठ फ़रिश्ते उठाएँगे। जैसे कुरआन मजीद में है (وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ) (69/ हाक़्क़ा : 17) हाँ! इस आयत के मतलब और इस हदीस के इस्तिदलाल में एक सवाल रह जाता है कि अबूदाऊद की हदीस में है कि बतहा में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअ़त से एक अब्र को गुज़रते हुए देखकर सवाल किया कि इसका नाम क्या है? उन्होंने कहा, हाब! आप (ﷺ) ने फ़र्माया और इसे मुज़न भी कहते हो? कहा, हाँ! फ़र्माया, इनान भी? अ़र्ज़ किया, हाँ! पूछा, जानते हो आसमान व ज़मीन में किस क़द्र दूरी है? सहाबा (रज़ि.) ने कहा, नहीं! फ़र्माया "इकहत्तर या बहत्तर या तेहत्तर साल का रास्ता है। फिर उसके ऊपर का आसमान भी पहले आसमान से इतने ही फ़ासले पर, इसी तरह सातों आसमान। सातवें आसमान पर एक समुन्द्र है जिसकी इतनी ही गहराई है। फिर उस पर आठ फ़रिश्ते पहाड़ी बकरों की सूरत के हैं जिनके खुर से घुटने की दूरी भी इतनी ही है। उनकी पुश्त पर अल्लाह तआ़ला का अ़र्श है, जिसकी ऊँचाई भी इस क़द्र है। फिर उसके ऊपर अल्लाह तबारक व तआ़ला है।" (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़िल्जहमिया : 4723; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मेरा का अहनफ़ से सिमाअ़ मालूम नहीं। तिर्मिज़ी : 3320; इब्ने माजा : 193) तिर्मिज़ी में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे ग़रीब बतलाते हैं। इससे मालूम होता है कि अ़र्शे इलाही इस वक़्त आठ फ़रिश्तों के ऊपर है। हज़रत शहर बिन हुवेशिब (रह.) का फ़र्मान है कि हामिलाने अ़र्श (अ़र्श को उठाने वाले) आठ हैं जिनमें से चार की तस्बीह तो यह है "सुब्हानकल्लाहुम्मा वबि हम्दिका लकल हम्दु अ़ला हिल्मिका बअ़द इ़ल्मिका" यानी "ऐ बारी तआ़ला! तेरी ज़ात पाक ही के लिए हर तरह की हम्दो सना है कि तू बावजूद इ़ल्म के फिर बुर्दबारी और हिल्म करता है।" और दूसरे चार की तस्बीह यह है, "अल्लाहुम्मा वबि हम्दिका लकल हम्दु अ़ला अ़फ़्विका बअ़द क़ुदरतिका" यानी ऐ अल्लाह! क़ुदरत के बावजूद तू जो माफ़ी और दरगुज़र करता रहता है। उस पर हम तेरी पाकीज़गी और तेरी ता'रीफ़ बयान करते हैं। इसीलिए मोमिनों के इस्तिग़फ़ार में वह यह भी कहते हैं कि ऐ अल्लाह! तेरी रहमत व इ़ल्म ने हर चीज़ को अपनी वुस्अ़त व कुशादगी में ले लिया है।

बनी आदम के तमाम गुनाह उनकी कुल ख़ताओं पर तेरी रहमत छाई हुई है। इसी तरह तेरा इ़ल्म भी उनके तमाम अक़्वाल व अफ़्आ़ल को अपने अंदर लिये हुए है। उनकी कुल हरकात व सक्नात से तू बख़ूबी वाक़िफ़ है। पस तू उनके बुरे लोगों को जब वह तौबा करें और तेरी तरफ़ झुकें और गुनाहों से बाज़ आ जाएँ और

तेरे अह्काम की ता'मील करें, नेकियाँ करें, बदियाँ छोड़ें, बख़्शश दे और उन्हें जहन्नम के दर्दनाक घबराहट वाले अ़ज़ाबों से नजात दे और उन्हें मअ़ उनके वालदेन बीवियों और बच्चों के जन्नत में ले जा ताकि उनकी आँखें हर तरह ठण्डी रहें भले उनके आमाल उन जितने न हों ताहम तू उनके दरजात बढ़ाकर ऊँचे दर्जों में पहुँचा दे। जैसे बारी तआ़ला अ़ज़्ज़ इस्मुहू का फ़र्मान है (وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ) (52/तूर : 21) जो लोग ईमान लाएँ और उनके ईमान की इत्तिबाअ़ उनकी औलाद भी करे, हम उन औलादों को भी उनसे मिला देंगे और उनका कोई अ़मल कम न करेंगे। दर्जे में सबको बराबरी देंगे ताकि दोनों जानिब की आँखें ठण्डी रहें और फिर यह न करेंगे कि दर्जों में बढ़े हुओं को नीचा कर दें, नहीं बल्कि नीचे वालों को सिर्फ़ अपनी रह्मत व एह्सान के साथ ऊँचा कर देंगे। ह़ज़रत सईद बिन जुबैर (रह़.) फ़र्माते हैं ''मोमिन जन्नत में जाकर पूछेगा मेरा बाप, मेरे भाई, मेरी औलाद कहाँ है? जवाब मिलेगा कि उनकी नेकियाँ इतनी न थी कि वह इस दर्जे में पहुँचते। यह कहेगा मैंने तो अपने लिए और उन सबके लिए अ़मल किये थे। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला उन्हें भी उनके दर्जे में पहुँचा देगा। फिर आपने इसी आयत (रब्बना व अदखिल्हुम...) तिलावत फ़र्माई।'' (तब्री : 21/357) ह़ज़रत मुत्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह का फ़र्मान है कि ईमान वालों की ख़ैरख़्वाही फ़रिश्ते भी करते हैं। फिर आपने यही आयत पढ़ी और शयातीन उनकी बदख़्वाही करते हैं। तू ऐसा ग़ालिब है जिस पर कोई ग़ालिब नहीं और जिसे कोई रोक नहीं सकता। जो तू चाहता है होता है और जो नहीं चाहता नहीं हो सकता। तू अपने क़ौल व फ़ेअ़ल शरीअ़त व तक़्दीर में ह़िक्मत वाला है। तू उन्हें बुराइयों के करने से दुनिया में और उनके वबाल से दोनों जहान में मह़फ़ूज़ रख। क़ियामत के दिन रह्मत वाला वही शुमार हो सकता है जिसे तू अपनी सज़ा से और अपने अ़ज़ाब से बचा ले। ह़क़ीक़तन कामयाबी पूरी मक़्सदवरी और ज़फ़रयाबी यही है।

***

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ
اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ
فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ
وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۚ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢ هُوَ الَّذِيْ
يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ۚ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣
فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝١٤

तर्जुमा : ''बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें यह आवाज़ दी जाएगी कि यक़ीनन अल्लाह का तुमसे बेज़ार होना था बहुत ज़्यादा उससे जो तुम बेज़ार होते हो अपने जी से। जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे फिर कुफ़्र करने लगते थे। (10) वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! तूने हमें दो बार मार डाला और दो बार ही ज़िन्दा किया अब हम अपने गुनाहों के इक़रारी हैं तो क्या अब कोई राह निकलने की भी है? (11) यह अ़ज़ाब तुम्हें इसलिए है कि जब सिर्फ़ अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता तो तुम इंकार कर जाते थे और अगर उसके साथ किसी को शरीक किया जाता था तो तुम मान लेते थे पस अब फ़र्मान व हुकूमत अल्लाह बुलंद बुज़ुर्ग ही की है। (12) वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखलाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रोज़ी उतारता है नसीहत तो सिर्फ़ वही हासिल करते हैं जो झुकते रहते हैं। (13) तुम अल्लाह को पुकारते रहो उसके दीन को ख़ालिस करके भले काफ़िर कितना ही बुरा मानें।'' (14)

गुनहगारों की हालते ज़ार (आ. 10 से 14) : क़ियामत के दिन जबकि काफ़िर आग के कुओं में होंगे और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाबों को चख चुके होंगे और तमाम होने वाले अ़ज़ाब निगाहों के सामने होंगे उस वक़्त ख़ुद अपने नफ़्स के दुश्मन बन जाएँगे और बहुत सख़्त दुश्मन हो जाएँगे। क्योंकि अपने बुरे आमाल की वजह से जहन्नम वासिल होंगे। उस वक़्त फ़रिश्ते उनसे बआवाज़े बुलंद कहेंगे कि आज जिस क़द्र तुम अपने आपसे नालाँ हो और जितनी दुश्मनी तुम्हें ख़ुद अपनी ज़ात से है और जिस क़द्र तुम आज अपने आपको कह रहे हो उससे बहुत ज़्यादा बुरे अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तुम दुनिया में थे जबकि तुम्हें इस्लाम व ईमान की दावत दी जाती थी और तुम उसे मानते न थे। उनके बाद की आयत मिस्ल आयत (كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللهِ) (2/बक़रह : 28) के है। सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं यह दुनिया में मार डाले गए फिर क़ब्र में ज़िन्दा किये गए और जवाब सवाल के बाद मार डाले गए फिर क़ियामत के दिन ज़िन्दा कर दिये गए। इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत आदम (عليه السلام) की पीठ से रोज़े मीसाक़ को ज़िन्दा किये गए फिर माँ के पेट में रूह फूँकी गई फिर मौत आई फिर क़ियामत के दिन जी उठे। लेकिन यह दोनों क़ौल ठीक नहीं इसलिए कि इस तरह तीन मौतें और तीन हयातें लाज़िम आती हैं और आयत में दो मौत और दो ज़िन्दगी का ज़िक्र है। सही क़ौल हज़रत इब्ने मसऊ़द, हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) और उनके साथियों का है (यानी माँ के पेट से पैदा होने की एक ज़िन्दगी और क़ियामत की दूसरी ज़िन्दगी, पैदाइशे दुनिया से पहले की मौत और दुनिया से रुख़सत होने की मौत यह दो मौतें और दो ज़िन्दगियाँ मुराद हैं।)

दुनिया में दोबारा आने की नाकाम आरज़ू : मक़सूद यह है कि उस दिन कुफ़्फ़ार अल्लाह तआ़ला से क़ियामत के मैदान में यह आरज़ू करेंगे कि अब उन्हें दुनिया में एक बार और भेज दिया जाए। जैसे फ़र्मान है (وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُوْنَ) (32/सज्दा : 12) तू देखेगा कि गुनहगार लोग अपने रब के सामने सर नगूँ होंगे और कह रहे होंगे कि ऐ अल्लाह! हमने देख सुन लिया। अब तू हमें फिर दुनिया में भेज दे तो नेकियाँ करेंगे और

ईमान लाएँगे लेकिन उनकी यह आरज़ू क़बूल न की जाएगी। फिर जब अ़ज़ाब व सज़ा को जहन्नम और उसकी आग को देखेंगे और जहन्नम के किनारे पहुँचा दिये जाएँगे तो दोबारा यही दरख़्वास्त करेंगे और पहली दफ़ा से ज़्यादा ज़ोर देकर कहेंगे। जैसे इर्शादे बारी तआ़ला है (وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ) (6/अन्आ़म : 27) यानी काश कि तू देखता जबकि वह जहन्नम के पास ठहरा दिये गए होंगे, कहेंगे काश कि हम दुनिया की त़रफ़ लौटाए जाते और अपने रब की बातों को न झुठलाते और बाईमान होते बल्कि उनके लिए वह ज़ाहिर हो गया जो उससे पहले पोशीदा कर रहे थे। और बिल्फ़र्ज़ यह वापिस लौटाये भी जाएँ तो भी दोबारा यह वही करने लगेंगे जिससे मना किये गए हैं। यह हैं ही झूठे। उसके बाद जब इन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा और तरह-तरह के अ़ज़ाब शुरू हो जाएँगे उस वक़्त और ज़्यादा ज़ोरदार और अल्फ़ाज़ में यही आरज़ू करेंगे वहाँ चीख़ते चिल्लाते हुए कहेंगे (رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا) (35/फ़ातिर : 37) "ऐ हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे हम नेक आ़माल करते रहेंगे उनके ख़िलाफ़ जो अब तक करते रहे हैं। जवाब मिलेगा कि क्या हमने इन्हें इतनी उ़म्र और मोहलत न दी थी कि अगर यह नसीहत हासिल करने वाले होते तो यक़ीनन कर सकते थे, बल्कि तुम्हारे पास हमने आगाह करने वाले भी भेज दिये थे, अब अपने करतूत का मज़ा चखो। ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। कहेंगे कि ऐ अल्लाह! हमें यहाँ से निकाल दे अगर हम फिर वही करें तो यक़ीनन हम ज़ालिम ठहरेंगे। अल्लाह कहेगा दूर हो जाओ, इसी में पड़े रहो और मुझसे कलाम न करो।" इस आयत में उन लोगों ने अपने सवाल से पहले एक मुक़द्दमा क़ायम करके सवाल में एक गोना लत़ाफ़त करदी है। अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला बयान किया कि बारी तआ़ला! हम मुर्दा थे तूने हमें ज़िन्दा कर दिया, फिर मार डाला फिर ज़िन्दा कर दिया पस तू हर उस चीज़ पर जिसे तू चाहे, क़ादिर है हमें अपने गुनाहों का इक़रार है। यक़ीनन हमने अपनी जानों पर ज़ुल्मो ज़्यादती की, अब बचाव की कोई सूरत बना दे यानी हमें दुनिया की त़रफ़ फिर लौटा दे जो यक़ीनन तेरे बस में है। हम वहाँ जाकर अपने पहले आ़माल के ख़िलाफ़ आ़माल करेंगे। अब अगर हम वही काम करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं। उन्हें जवाब दिया जाएगा कि अब दोबारा दुनिया में जाने की कोई राह नहीं, इसलिए कि अगर दोबारा चले भी जाओगे तो फिर भी वही करोगे जिससे मना किये जाओगे। तुमने अपने दिल ही टेढ़े कर लिये हैं। तुम अब भी ह़क़ को क़बूल न करोगे बल्कि उसका ख़िलाफ़ ही करोगे। तुम्हारी तो यह ह़ालत थी कि जहाँ रब्बे वाह़िद का ज़िक्र आया और तुम्हारे दिल में कुफ़्र समाया। हाँ! उसके साथ किसी को शरीक किया जाए तो तुम्हें यक़ीन व ईमान आ जाता था। यही ह़ालत फिर तुम्हारी हो जाएगी। दुनिया में अगर दोबारा गए दोबारा यही करोगे पस ह़ाकिमे ह़क़ीक़ी जिसके हुक्म में कोई ज़ुल्म न हो सरासर अ़दलो इंसाफ़ ही हो वह अल्लाह तआ़ला ही है। जिसे चाहे हिदायत दे जिसे चाहे न दे। जिस पर चाहे रह़म करे जिसे चाहे अ़ज़ाब करे। उसके हुक्म व अ़दल में कोई उसका शरीक नहीं। वह अल्लाह अपनी क़ुदरतें लोगों पर ज़ाहिर करता है, ज़मीन आसमान में उसकी तौहीद की बेशुमार निशानियाँ मौजूद हैं जिनसे स़ाफ़ ज़ाहिर है कि सबका ख़ालिक़, सबका मालिक, सबका पालनहार और ह़िफ़ाज़त करने वाला वही है। वह आसमान से रोज़ी यानी बारिश नाज़िल करता है जिससे हर क़िस्म के अनाज की खेतियाँ और त़रह़ त़रह़ के अ़जीब अ़जीब मज़े के मुख़्तलिफ़

रंग रूप और शक्ल, वज़अ के मेवे और फल फूल पैदा होते हैं, हालाँकि पानी एक ज़मीन एक। पस इससे भी उसकी शान ज़ाहिर होती है, सच तो यह है कि इब्रत व नसीहत, ग़ौरो-फ़िक्र की तौफ़ीक़ उन ही को होती है जो अल्लाह की तरफ़ रग़बत व रुजूअ करने वाले हों। अब तुम दुआ और इबादत ख़ुलूस के साथ सिर्फ़ अल्लाह वाहिद की किया करो, मुश्रिकीन के मज़हब व मस्लक से अलग हो जाओ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर (रज़ि.) हर फ़र्ज़ नमाज़ के सलाम के बाद यह पढ़ते थे (ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर. ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि ला इलाहा इल्लल्लाहु वला नअबुदू इल्ला इय्याहु लहुन्निअमतु वलहुल फ़ज़्लु वलहुस्सनाउल हसनु ला इलाहा इल्लल्लाहु मुख़्लिसीना लहुद्दीना वलौ करिहल काफ़िरून) और फ़र्माते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी हर नमाज़ के बाद इन्हें पढ़ा करते थे। (मुस्नद अहमद : 4/4; सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिहबाबुज़्ज़िक्र बअदस्सलाति व बयानु सिफ़तिही : 594; अबूदाऊद : 1506; इब्ने हिब्बान : 2008) इब्ने अबी हातिम में है अल्लाह तबारक व तआला से दुआ करो और क़बूलियत का यक़ीने कामिल रखो और याद रखो कि अल्लाह तआला बेपरवाह है और दूसरी तरफ़ के मशग़ूल दिल की दुआ नहीं सुनता। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब नम्बर : 65; हदीस : 3479; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; सालेह मुर्री रावी मतरूक है।)

***

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ
لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ
الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾ اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا
ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

तर्जुमा : "बुलंद दर्जों वाला मालिक अर्श का, वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है वही नाज़िल करता है ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डरा दे। (15) जिस दिन सब लोग ज़ाहिर हो जाएँगे। उनमें से कोई अल्लाह से पोशीदा न रहेगा। आज किसकी बादशाही है? फ़क़त अल्लाह वाहिद व क़ह्हार की। (16) आज हर नफ़्स को उसकी करनी का फल दिया जाएगा। आज किसी क़िस्म का ज़ुल्म नहीं। यक़ीनन अल्लाह तआला बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है।" (17)

क़ियामत के दिन अल्लाह ही की बादशाही होगी (आ. 15 से 17) : अल्लाह तआला अपनी

किब्रियाई और अज़्मत और अपने अर्श की बड़ाई और वुस्अत बयान करता है जो तमाम मख़्लूक़ पर मिस्ल छत के छाया हुआ है। जैसे इर्शाद है (مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ) (70/मआरिज : 3) यानी वह अज़ाब अल्लाह की तरफ़ से होगा जो सीढ़ियों वाला है कि फ़रिश्ते और रूह उसके पास चढ़कर जाते हैं ऐसे दिन में जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल की है और इस बात का बयान इंशाअल्लाह! आगे आयेगा कि यह दूरी सातवीं ज़मीन से लेकर अर्श तक की है। जैसे कि सलफ़ व ख़लफ़ जमाअत का एक क़ौल है और यही राजेह भी है इंशाअल्लाह तआला! बहुत से मुफ़स्सिरीन से मरवी है कि अर्श लाल रंग याक़ूत का है। जिसके दो किनारों की वुस्अत पचास साल की है और जिसकी ऊँचाई सातवीं ज़मीन से पचास हज़ार साल की है। और उससे पहले हदीस में जिसमें फ़रिश्तों का अर्श उठाना बयान हुआ है। यह भी गुज़र चुका है कि सातों आसमानों से भी वह बहुत बुलंद और बहुत ऊँचा है वह जिस पर चाहे वही भेजे। जैसे फ़र्माया (يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ) (16/नहल : 2) वह फ़रिश्तों को वही देकर अपने हुक्म से जिसके पास चाहता है भेजता है तुम लोगों को आगाह कर दो कि मेरे सिवा कोई मअबूद नहीं, मुझसे डरते रहो। और जगह फ़र्मान है (اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ) (26/शोअरा : 192) यानी यह क़ुरआन तमाम जहानों के रब का उतारा हुआ है जिसे मुअतबर फ़रिश्ते ने तेरे दिल पर उतारा है ताकि तू डराने वाला बन जा। यहाँ भी यही फ़र्माया कि वह मुलाक़ात के दिन से डरा दे। (तब्री : 21/364) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह भी क़ियामत का एक नाम है जिससे अल्लाह ने अपने बन्दों को डराया है। जिसमें हज़रत आदम (عليه السلام) ख़ुद और उनकी औलाद में सबसे आख़िरी बच्चा एक दूसरे से मिल लेगा। इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं बन्दे अल्लाह से मिलेंगे। क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं आसमानों वाले और ज़मीन वाले आपस में मुलाक़ात करेंगे। ख़ालिक़ मख़्लूक़, ज़ालिम व मज़्लूम मिलेंगे। मक़्सद यह है कि हर एक दूसरे से मुलाक़ात करेगा बल्कि आमिल और उसका अमल भी मिलेगा। आज सब अल्लाह तआला के सामने होंगे बिलकुल ज़ाहिर बाहिर होंगे। छुपने की तो कहाँ साये की जगह भी कोई न होगी। सब उसके आमने सामने मौजूद होंगे उस दिन अल्लाह ख़ुद फ़र्माएगा आज बादशाहत किसकी है? कौन होगा जो जवाब तक दे? फिर ख़ुद ही जवाब देगा कि अल्लाह अकेले की जो हमेशा वाहिद अहद है और सब पर ग़ालिब हुक्मरान है। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि अल्लाह तआला आसमान व ज़मीन को लपेटकर अपने हाथ में ले लेगा और कहेगा मैं बादशाह हूँ, जब्बार हूँ, मैं मुतकब्बिर हूँ, ज़मीन के बादशाह और जब्बार और मुतकब्बिर लोग आज कहाँ हैं? (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़तुल क़ियामति वल्जन्नति वन्नार : 2788) सूर की हदीस में है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल जब तमाम मख़्लूक़ की रूह क़ब्ज़ कर लेगा और उस वहदहू ला शरीक लहू के सिवा और कोई बाक़ी न रहेगा। उस वक़्त तीन बार कहेगा आज मुल्क किसका है? फिर ख़ुद ही जवाब देगा अल्लाह अकेले ग़ालिब का यानी उसका जो वाहिद है, उसका जो हर चीज़ पर ग़ालिब है, जिसकी मिल्कियत में हर चीज़ है। (यह रिवायत ज़ईफ़ है और पहले गुज़र चुकी है) इब्ने अबी हातिम में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''क़ियामत के क़ायम होने के वक़्त एक मुनादी निदा करेगा कि लोगों! क़ियामत आ गई जिसे मुर्दा ज़िन्दा सब सुनेंगे। अल्लाह तआला आसमाने

दुनिया पर नुज़ूल इज्लाल करेगा और कहेगा आज किसके लिए मुल्क है? सिर्फ़ अल्लाह अकेले ग़ल्बा वाले के लिए'' फिर अल्लाह तआला के अदलो इंसाफ़ का बयान हो रहा है कि ज़रा सा भी जुल्म उस दिन न होगा बल्कि नेकियाँ दस दस गुनी करके मिलेंगी और बुराइयाँ उतनी ही रखी जाएँगी। सहीह मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) अल्लाह तआला का फ़र्मान नक़्ल करते हैं कि ''ऐ मेरे बन्दो! मैंने जुल्म करना अपने ऊपर भी हराम कर लिया है और तुम पर भी हराम कर दिया है। पस तुममें से कोई किसी पर जुल्म न करे।'' आख़िर में है ''ऐ मेरे बन्दों! यह तो तुम्हारे अपने आमाल हैं जिन्हें मैं निगाह रखता हूँ और जिनका पूरा बदला दूँगा पस जो शख़्स भलाई पाये वह अल्लाह की हम्द करे और जो उसके सिवा पाये वह अपने आपको ही मलामत करे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिलति, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्म : 2577; तिर्मिज़ी : 2495; इब्ने माजा : 4257; अहमद : 5/160; इब्ने हिब्बान : 619) फिर अपने हिसाब लेने को बयान किया कि सारी मख़्लूक़ से हिसाब लेना उस पर ऐसा है जैसे एक शख़्स का हिसाब लेना है। जैसे इर्शादे बारी तआला है (مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ) (31/लुक़्मान : 28) यानी तुम सबका पैदा करना और तुम सबको मरने के बाद ज़िन्दा कर देना मेरे नज़दीक मिस्ल एक शख़्स के पैदा करने और ज़िन्दा कर देने के है और आयत में अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है (وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ) (54/क़मर : 50) यानी हमारे हुक्म के साथ ही काम हो जाता है उतनी देर में जैसे किसी ने आँख झपकायी हो।

***

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾ وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : ''उन्हें बहुत ही क़रीब आने वाली क़ियामत से आगाह कर दे जबकि दिल हलक़ तक पहुँच जाएँगे और सब ख़ामोश होंगे। ज़ालिमों का न कोई वली व दोस्त होगा न सिफ़ारिशी, जिसकी बात मानी जाएगी। (18) वह आँखों की ख़यानत को और सीनों की पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है। (19) अल्लाह तआला ठीक ठीक फ़ैसला कर देगा अल्लाह के सिवा जिन्हें यह लोग पुकारते रहते हैं वह किसी चीज़ का भी फ़ैसला नहीं कर सकते। बेशक अल्लाह तआला ख़ूब सूनता ख़ूब देखता है।'' (20)

आँखों की ख़यानत और सीने के राज़ (आ. 18 से 20) : (आज़िफ़ा) क़ियामत का एक नाम है। इसलिए कि वह बहुत ही क़रीब है। जैसे फ़र्मान है (अज़िफ़तिल आज़िफ़ा...) (53/नज्म : 57) यानी क़रीब आने वाली क़रीब हो चुकी है जिसका खोलने वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं। और जगह इर्शाद है (اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ) (54/क़मरः1) क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया। और फ़र्मान है (اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ) (21/अम्बियाः1) "लोगों के हिसाब का वक़्त क़रीब आ गया।" और फ़र्मान है (اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ) (16/नहलः1) "अल्लाह का अम्र आ चुका है तुम उसमें जल्दी न करो।"

और आयत में है (فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا) (67/मुल्क : 27) "जब उसे क़रीब देख लेंगे तो काफ़िरों के चेहरे काले पड़ जाएँगे।"

अल्ग़र्ज़ इसी नज़दीकी की वजह से क़ियामत का नाम (आज़िफ़ा) है। उस वक़्त कलेजे मुँह को आ जाएँगे। वह ख़ौफ़ व हरास होगा कि किसी का दिल ठिकाने न रहेगा, सब पर ग़ज़ब का सन्नाटा होगा। किसी के मुँह से कोई बात न निकलेगी क्या मजाल कि बग़ैर इजाज़त कोई लब हिला सके। सब रो रहे होंगे और हैरान व परेशान होंगे। जिन लोगों ने अल्लाह के साथ शिर्क करके अपनी जानों पर ज़ुल्म किया है उनका आज कोई दोस्त, ग़मख़्वार न होगा जो उनके काम आए, न शफ़ीअ और सिफ़ारिशी होगा जो उनकी सिफ़ारिश के लिए ज़ुबान हिला सके बल्कि हर भलाई के अस्बाब कट चुके होंगे। उस अल्लाह तआला का इल्म मुहीते कुल है तमाम छोटी बड़ी छुपी खुली बारीक मोटी उस पर यक्साँ ज़ाहिर बाहिर हैं। इतने बड़े इल्म वाले से जिससे कोई चीज़ छुपी न हो हर शख़्स को डरना चाहिए और किसी वक़्त यह ख़्याल न करना चाहिए कि इस वक़्त वह मुझसे पोशीदा है और मेरे हाल की उसे ख़बर नहीं बल्कि हर वक़्त यह यक़ीन करके कि वह मुझे देख रहा है उसका इल्म मेरे साथ है उसका लिहाज़ करता रहे और उसके रोके हुए कामों से रुका रहे। आँख जो ख़यानत के लिए उठती है भले बज़ाहिर वह अमानत ज़ाहिर करे लेकिन रब्बे अलीम पर वह छुपी नहीं। सीने के जिस गोशे में जो ख़्याल छुपा हुआ हो और दिल में जो बात पोशीदगी से उठती हो उसका उसे इल्म है।

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "इस आयत में मुराद वह शख़्स है जो मस्लन किसी घर में गया वहाँ कोई ख़ूबसूरत औरत है या वह आ जा रही है तो यह कंखियों से उसे देखता है जहाँ किसी की नज़र पड़ी तो निगाह फेर ली और जब मौक़ा पाया, आँख उठाकर देख लिया। पस ख़ाइन आँख की ख़यानत को उसके दिल के राज़ को रब्बे अलीम ख़ूब जानता है कि उसके दिल में तो यह है कि अगर मुम्किन हो तो पोशीदा हिस्से भी देख ले।" हज़रत ज़हहाक (रह.) फ़र्माते हैं "इससे मुराद आँख मारना, इशारे करना और बिन देखी चीज़ को देखी हुई या देखी हुई चीज़ को अनदेखी बताना है।" (तब्री : 21/369)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "निगाह जिस निय्यत से डाली जाए अल्लाह तआला पर रोशन है। (तब्री : 21/369) फिर सीने में छुपा ख़्याल कि अगर मौक़ा मिले और बस हो तो आया यह बदकारी से बाज़ रहेगा या नहीं, यह भी वह जानता है।" सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं "दिलों के वस्वसों से वह

आगाह है।'' वह अदल के साथ हुक्म करता है। क़ादिर है कि नेकी का बदला नेक दे और बुराई की सज़ा बुरी दे। वह सुनने वाला, देखने वाला है। जैसे फ़र्मान है कि वह बुरों को उनकी करनी की सज़ा और भलों को उनकी भलाई की जज़ा इनायत करेगा। जो लोग उसके सिवा दूसरों को पुकारते हैं ख़्वाह बुत और तस्वीरें हों ख़्वाह और कुछ वह चूँकि किसी चीज़ के मालिक नहीं उनकी हुकूमत ही नहीं तो हुक्म और फ़ैसले करेंगे ही क्या? अल्लाह अपनी मख़्लूक़ के क़ौल को सुनता है उनके अह़्वाल को देख रहा है। जिसे चाहे राह दिखाता है जिसे चाहे गुमराह करता है उसका इसमें भी सरासर अदलो इंसाफ़ है।

***

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ﴿۲۱﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿۲۲﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا
مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۲۳﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ
كَذَّابٌ ﴿۲۴﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿۲۵﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ
ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ
فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿۲۶﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿۲۷﴾

तर्जुमा : "क्या यह लोग ज़मीन में चले फिरे नहीं? कि देखते कि जो लोग इनसे पहले थे उनका नतीजा कैसा हुआ? वह बा ऐतिबार कुव्वत व ताक़त के और बा ऐतिबार ज़मीन में अपनी यादगारों के उनसे बहुत ज़्यादा थे पस अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया और कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह के अज़ाबों से बचा लेता। (21) यह इस वजह से कि उनके पास उनके पैग़म्बर मोजिज़े ले लेकर आते थे तो वह इंकार कर देते थे पस अल्लाह उन्हें पकड़ लेता था यक़ीनन वह ज़बरदस्त ताक़त वाला और सख़्त अज़ाब वाला है। (22) हमने मूसा (عليه السلام) को अपनी आयतों और खुली दलील के साथ भेजा (23) फ़िरऔन, हामान और क़ारून की तरफ़, तो कहने लगे यह तो जादूगर और झूठा है। (24) जब उनके पास मूसा (عليه السلام) हमारी तरफ़ से दीने हक़ को लेकर आए तो उन्होंने कहा उसके साथ जो ईमान वाले हैं उनके लड़कों को तो मार डालो और उनकी लड़कियों को ज़िन्दा रखो। काफ़िरों की जो हीलासाज़ी है वह ग़लती में ही है। (25) फ़िरऔन कहने लगा, मुझे छोड़ो मैं मूसा (عليه السلام) को मार डालूँ। उसे चाहिए कि यह अपने रब को पुकारे मुझे डर है कि यह कहीं तुम्हारा दीन न बदल डाले या मुल्क में कोई बहुत बड़ा फ़साद बरपा न कर दे। (26) मूसा (عليه السلام) ने कहा, मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ हर उस तकब्बुर करने वाले शख़्स की बुराई से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता।" (27)

नाफ़र्मान क़ौमों का अंजाम (आ. 21 से 27) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! क्या तेरी रिसालत के झुठलाने वाले कुफ़्फ़ार ने अपने से पहले के रसूलों के झुठलाने वाले कुफ़्फ़ार की हालतों का मुआयना इधर उधर चल फिरकर नहीं किया? जो उनसे ज़्यादा क़वी ताक़तवर और जस्सेदार थे जिनके मकानात और आलीशान इमारतों के खण्डरात अब तक मौजूद हैं जो उनसे ज़्यादा बा तम्किनत थे, उनसे बड़ी उम्रों वाले थे, जब उनके कुफ़्र और गुनाहों की वजह से अज़ाबे इलाही उन पर आया तो न तो कोई उसे हटा सका न किसी में मुक़ाबले की ताक़त पाई गई न उससे बचने की कोई सूरत निकली। ग़ज़बे इलाही उन पर बरस पड़ने की बड़ी वजह यह हुई कि उनके पास भी उनके रसूल वाज़ेह दलीलें और साफ़ रोशन हुज्जतें लेकर आए बावजूद उसकी उन्होंने कुफ़्र किया जिस पर अल्लाह तआला ने उन्हें हलाक कर दिया और कुफ़्फ़ार के लिए उन्हें बाइसे इब्रत बना दिया। अल्लाह तआला पूरी कुव्वत वाला, सख़्त पकड़ वाला, शदीद अज़ाब वाला है। हमारी दुआ है कि वह हमें अपने तमाम अज़ाबों से नजात दे। (आमीन)

मूसा (عليه السلام) के क़त्ल का फ़िरऔनी मंसूबा : अल्लाह तआला अपने आख़िरी रसूल को तसल्ली देने के लिए अगले रसूलों के क़िस्से बयान करता है जिस तरह अंजामकार फ़तह व ज़फ़र उनके साथ रही उसी तरह आप भी उन कुफ़्फ़ार से कोई अंदेशा न कीजिए। मेरी मदद आपके साथ है। अंजामकार आप ही की बेहतरी और बरतरी होगी जैसे कि (हज़रत) मूसा बिन इमरान (عليه السلام) का वाक़िया आपके सामने है कि हमने उन्हें दलाइल व बराहीन के साथ भेजा। क़िब्तियों के बादशाह फ़िरऔन की तरफ़, जो मिस्र का सुल्तान था और

हामान की तरफ़ जो उसका वज़ीरे आ'ज़म था। और क़ारून की तरफ़ जो उसके ज़माने में सबसे ज़्यादा दौलतमंद था और ताजिरों का बादशाह समझा जाता था। उन बदनसीबों ने अल्लाह तआला के उस ज़बरदस्त रसूल को झुठलाया और उनकी तौहीन की और साफ़ कह दिया कि यह तो जादूगर और झूठा है। यही जवाब अगली उम्मतों के काफ़िरों का भी अम्बिया (عليه السلام) को मिलता रहा।

जैसे इर्शाद है (كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ) (51/ज़ारियात : 52)। यानी इस तरह उनसे पहले भी जितने रसूल आये सबसे उनकी क़ौम ने यही कहा कि जादूगर या दीवाना है। क्या इन्होंने इस पर कोई मुत्तफ़क़ा तज्वीज़ कर रखी है? बल्कि दरअसल यह सबके सब सरकश लोग हैं। जब हमारे रसूल मूसा (عليه السلام) उनके पास हक़ लाए और अपनी रिसालत पर ज़बरदस्त दलीलें क़ायम कर दीं तो उन लोगों ने रसूलों को सताना और दुख देना शुरू किया। और फ़िरओन ने हुक्म जारी किया कि इस रसूल पर जो ईमान लाते हैं उनके यहाँ जो लड़के हों उन्हें क़त्ल कर दो और जो लड़कियाँ हों उन्हें ज़िन्दा छोड़ दो। इससे पहले भी वह यही हुक्म जारी कर चुका था, इसलिए कि उसे डर था कि कहीं मूसा (عليه السلام) पैदा न हो जाएँ। या इसलिए कि बनी इस्राईल की तादाद कम कर दे और उन्हें कमज़ोर और बेताक़त बना दे। और मुम्किन है दोनों मस्लिहतें सामने हों और अब दोबारा हुक्म की वजह तो यही थी कि यह जमाअत हार जाए और इनकी गिनती न बढ़े और पस्त व ज़लील रहे बल्कि उन्हें ख़्याल हो कि हमारी इस मुसीबत की वजह हज़रत मूसा (عليه السلام) हैं। चुनाँचे बनी इस्राईल ने हज़रत मूसा (عليه السلام) से कहा भी कि आपके आने से पहले भी हमें ईज़ा दी गई और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी हम सताये गए। आपने जवाब दिया तुम जल्दी न करो बहुत मुम्किन है कि अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन को बर्बाद कर दे और तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाए फिर देखे कि तुम कैसे अमल करते हो?

हज़रत क़तादा (रह.) का क़ौल है कि फ़िरओन का यह हुक्म दोबारा था। (तब्री : 21/373) अल्लाह तआला फ़र्माता है कि कुफ़्फ़ार का फ़रेब और उनकी यह पॉलिसी कि बनी इस्राईल फ़ना हो जाएँ, थी ही बेफ़ायदा और फ़िज़ूल। फ़िरओन का एक बदतरीन क़सद (इरादे का) बयान हो रहा है कि उसने हज़रत मूसा (عليه السلام) के क़त्ल का इरादा किया और अपनी क़ौम से कहा, मैं मूसा (عليه السلام) को क़त्ल कर डालूँगा वह अपने अल्लाह को भी अपनी मदद पर पुकारे मुझे कोई परवाह नहीं। मुझे डर है कि अगर उसे ज़िन्दा छोड़ दिया तो वह तुम्हारे दीन को बदल देगा तुम्हारी आदात और रसूमात को तुमसे छुड़ा देगा और ज़मीन में एक फ़साद फैला देगा। इसीलिए अरब में यह मसल (मुहावरा) मशहूर हो गई सार फ़िरओनु मुज़क्किरन यानी फ़िरओन भी वाइज़ बन गया। कुछ क़िरअतों में बजाय अंय्युज़्हिर के युज़्हिरु है हज़रत मूसा (عليه السلام) को जब फ़िरओन का यह बुरा इरादा मालूम हुआ तो आपने फ़र्माया कि मैं उसकी और उस जैसों की बुराई से अल्लाह की पनाह में आता हूँ। ऐ मेरे मुख़ातब लोगों! मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ हर उस शख़्स की ईज़ारसानी से जो हक़ से तकब्बुर करने वाला और क़ियामत के दिन पर ईमान न रखने वाला हो। हदीस शरीफ़ में है कि जब जनाब रसूले करीम (ﷺ) को किसी क़ौम से डर होता तो आप यह दुआ पढ़ते (अल्लाहुम्मा इन्ना नऊज़ुबिका मिन शुरूरिहिम व नदरउबिका फ़ी नुहूरिहिम) यानी "ऐ अल्लाह! इनकी बुराई से हम तेरी पनाह में आते हैं और

हम तुझे इनके मुक़ाबले में करते हैं।'' (अबूदाऊउद, किताबुल वित्र, बाब मा यक़ूलुर्रजुल इज़ा ख़ाफ़ क़ौमन : 1537; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; क़तादा मुदल्लस के सिमाअ़ की तसरीह नहीं है; हाकिम : 2/142; अहमद : 4/414; इब्ने हिब्बान : 4765)

***

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۸﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ؕ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿۲۹﴾

तर्जुमा : ''एक मोमिन शख़्स ने जो फ़िरऔन के ख़ानदान में से था और अपना ईमान छुपाये हुए था कहा कि क्या तुम एक शख़्स को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करना चाहते हो कि वह कहता है मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलीलें लेकर आया है और वह झूठा हो तो उसका झूठ उसी पर है और अगर वह सच्चा हो तो जिन अ़ज़ाबों का वह तुमसे वादा कर रहा है वह कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा। अल्लाह तआ़ला उनकी रहबरी नहीं करता जो हद से गुज़र जाने वाले और झूठे हों। (28) ऐ मेरी क़ौम के लोगों! आज बादशाहत तुम्हारी है कि इस ज़मीन पर तुम ग़ालिब हो लेकिन अगर अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर आ गया तो कौन हमारी मदद करेगा। फ़िरऔन बोला मैं तो तुम्हें वह राय दे रहा हूँ जो ख़ुद देख रहा हूँ और मैं तो तुम्हें भलाई की राह ही बतला रहा हूँ।'' (29)

एक गुमनाम मोमिन का मुजाहिदाना इक़्दाम (आ. 28, 29) : मशहूर तो यह है कि यह मोमिन क़िब्ती थे और फ़िरऔन के ख़ानदान के थे। बल्कि सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि फ़िरऔन के यह चचाज़ाद भाई थे। और

यह भी कहा गया है कि उन्होंने भी हज़रत मूसा (ﷺ) के साथ नजात पाई थी। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी क़ौल को पसंद करते हैं। बल्कि जिन लोगों का क़ौल है कि यह मोमिन भी इस्राईली थे आपने उनकी तर्दीद की है और कहा है कि यह अगर इस्राईली होते तो न फ़िरऔन इस तरह सब्र से उनकी नसीहत सुनता, न हज़रत मूसा (ﷺ) के क़त्ल के इरादे से बाज़ आता बल्कि उन्हें ईज़ा पहुँचाता। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "आले फ़िरऔन में से एक तो यह मर्द ईमानदार था, दूसरे फ़िरऔन की बीवी ईमान लाई थीं, तीसरा वह शख़्स जिसने हज़रत मूसा (ﷺ) को ख़बर दी थी कि सरदारों का मश्वरा तुम्हें क़त्ल करने का हो रहा है।" यह अपने ईमान को छुपाये रहते थे लेकिन क़त्ले मूसा (ﷺ) की ख़बर सुनकर ज़ब्त न हो सका और दरहक़ीक़त यही सबसे बेहतर और अफ़ज़ल जिहाद है कि ज़ालिम बादशाह के सामने इंसान कलिम-ए-हक़ कह दे जैसे कि हदीस (अबूदाऊद, किताबुल मलाहिम, बाब अल्अम्रु वन्नही : 4344; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 2174; इब्ने माजा : 4011) में है और फ़िरऔन के सामने उससे ज़्यादा बड़ा कलिमा कोई न था। पस यह शख़्स बहुत बड़े मर्तबे के मुजाहिद थे जिनके मुक़ाबले का कोई नज़र नहीं पड़ता। अल्बत्ता सहीह बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में एक वाक़िया कई रिवायतों से मरवी है जिसका माहसल (समरी,सारांश) यह है कि "हज़रत उर्वा बिन ज़ुबैर (रह.) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि.) से एक बार पूछा कि सबसे बड़ी तक्लीफ़ मुश्रिकों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को क्या पहुँचाई है? आपने फ़र्माया, सुनो! एक दिन हुज़ूर (ﷺ) कअबा शरीफ़ में नमाज़ पढ़ रहे थे जो उक़्बा बिन अबी मुईत आया और आप (ﷺ) को पकड़ लिया और अपनी चादर में बल देकर आपकी गर्दन में डालकर घसीटने लगा जिससे आपका गला घुटने लगा। उसी वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) दौड़े दौड़े आये और उसे धक्का देकर दूर फेंक दिया और कहने लगे, क्या तुम उस शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है मेरा रब अल्लाह है और वह तुम्हारे पास दलीलें लेकर आया है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मोमिन बाब : 4815; अहमद : 2/204; इब्ने हिब्बान : 6567) एक रिवायत में है कि कुरैशियों का मज्मअ जमा था। जब आप वहाँ से गुज़रे तो उन्होंने कहा क्या तू ही है जो हमें हमारे बाप दादों के मअबूदों की इबादत से मना करता है? आपने फ़र्माया, हाँ! हाँ! मैं ही हूँ। उस पर वह सब आपको चिमट गए और कपड़े पकड़कर घसीटने लगे। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आकर आप (ﷺ) को छुड़ाया और आँसू बहाते हुए बाआवाज़े बुलंद उनसे यह फ़र्माया और पूरी आयत (अतक़्तुलूना) की तिलावत की। (सुननुल कुब्रा : 11462; और इसकी सनद सहीह है।)

पस उस मोमिन ने भी यही कहा कि इसका क़सूर तो सिर्फ़ इतना ही है कि यह अपना रब अल्लाह को बतलाता है और जो कहता है उस पर सनद और दलील पेश करता है। अच्छा मान लो बिलफ़र्ज़ यह झूठा है तो इसके झूठ का वबाल इसी पर पड़ेगा, अल्लाह सुब्हानहू व तआला इसे दुनिया और आख़िरत में सज़ा देगा। और अगर वह सच्चा है और तुमने उसे सताया या दुख दिया तो यक़ीनन तुम पर अज़ाबे इलाही बरस पड़ेगा जैसे कि वह कह रहा है। पस अक़्लन लाज़िम है तुम इसे छोड़ दो। जो इसकी मान रहे हैंमानें, तुम क्यूँ उसके दरपे आज़ार हो रहे हो। हज़रत मूसा (ﷺ)ने भी फ़िरऔन और फ़िरऔनियों से यही चाहा था।

जैसे कि आयत (وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ) से (فَاعْتَزِلُوْنِ) (44/दुख़ान : 17 से 21) तक है यानी हमने इनसे पहले क़ौमे फ़िरऔन को आज़माया, उनके पास रसूले करीम को भेजा। उसने कहा कि अल्लाह के बन्दों को मुझे सौंप दो, मैं तुम्हारी तरफ़ रब का रसूले अमीन हूँ, तुम अल्लाह से बग़ावत न करो, देखो! मैं तुम्हारे पास खुली दलीलें और ज़बरदस्त मोजिज़े लेकर आया हूँ। तुम मुझे संगसार कर दोगे उससे मैं अल्लाह की पनाह लेता हूँ। अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझे छोड़ दो। यही जनाब रसूले करीम (ﷺ) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था कि अल्लाह के बन्दों को अल्लाह की तरफ़ मुझे पुकारने दो, तुम मेरी ईज़ारसानी से बाज़ रहो और मेरी क़राबतदारी का ख़्याल करते हुए मुझे दुख न दो। सुलहे हुदेबिया भी दरअसल यही चीज़ थी जो खुली फ़तह कहलाई। वह मोमिन कहता है कि सुनो! मुस्रिफ़ और झूठे आदमी राह याफ़्ता नहीं होते। उनके साथ अल्लाह की मदद नहीं होती। उनके क़ौल व अफ़आल बहुत जल्द उनकी ख़बासत को ज़ाहिर कर देते हैं। बरख़िलाफ़ उसके यह अल्लाह के नबी! इख़्तिलाफ़ व इज़्तिराब से पाक हैं। सहीह सच्ची और अच्छी राह पर हैं। ज़ुबान के सच्चे और अमल के पक्के हैं। अगर यह हद से गुज़र जाने वाले और झूठे होते तो यह रास्ती और उम्दगी उनमें हर्गिज़ न होती। फिर क़ौम को नसीहत करते हैं और उन्हें अल्लाह तआला के अज़ाबों से डराते हैं। भाईयों! तुम्हें अल्लाह ने उस मुल्क की सल्तनत अता की है, बड़ी इज़्ज़त दी है तुम्हारा हुक्म जारी कर रखा है। अल्लाह की इस नेअमत पर तुम्हें उसका शुक्र करना चाहिए और उसके रसूलों को सच्चा मानना चाहिए। याद रखो अगर तुमने नाशुक्री की और रसूल की तरफ़ बुरी नज़रें डालीं तो यक़ीनन अज़ाबे इलाही तुम पर आ जाएगा। बतलाओ उस वक़्त किसे लाओगे जो तुम्हारी मदद पर खड़ा हो और अल्लाह तआला के अज़ाबों को रोके या टाले? यह लाव लश्कर, यह जान व माल कुछ काम न आएँगे, फ़िरऔन से और तो कोई मअक़ूल जवाब न बना, खिसयाना होकर क़ौम में अपनी ख़ैरख़्वाही जताने लगा कि मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रहा, जो मेरा ख़्याल है और मेरे ज़हन में है वही तुम पर ज़ाहिर कर रहा हूँ। हालाँकि दरअसल यह भी उसकी ख़यानत थी वह बख़ूबी जानता था कि हज़रत मूसा (عليه السلام) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं। जैसे फ़र्माने बारी है (لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَآئِرَ) (17/बनी इस्राईल : 102) यानी हज़रत मूसा (عليه السلام) ने फ़र्माया, ऐ फ़िरऔन! तू ख़ूब जानता है कि यह अजायबाते ख़ास आसमान व ज़मीन के परवरदिगार ने भेजे हैं जो कि बसीरत के ज़रायेअ हैं और आयत में है (وَجَحَدُوْا بِهَا) (27/नम्ल : 14) यानी उन्होंने बावजूद दिली यक़ीन के अज़्राहे ज़ुल्मो ज़्यादती इंकार कर दिया। इसी तरह उसका यह कहना भी सरासर ग़लत था कि मैं तुम्हें हक़ की सच्चाई की और भलाई की राह दिखाता हूँ। इसमें वह लोगों को धोखा दे रहा था और अवाम से ख़यानत कर रहा था। लेकिन उसकी क़ौम उसके धोखे में आ गई और फ़िरऔन की बात मानली। फ़िरऔन ने उन्हें कोई भलाई की राह पर न डाला। उसका काम ठीक था ही नहीं। और जगह अल्लाह तआला फ़र्माता है फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को बहका दिया और उन्हें सही राह तक न पहुँचने दिया, न पहुँचाया। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो इमाम अपनी रिआया से ख़यानत कर रहा हो वह मरकर जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पायेगा। हालाँकि वह ख़ुश्बू पाँच सौ साल की राह पर से आती है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अहकाम, बाब मिनस्स्तरई रुअयत फ़लम यन्सुह : 7150; सहीह मुस्लिम : 142) वल्लाहु सुब्हानहू व तआला अल्मुवफ़्फ़िक़ु लिस्सवाब

وَقَالَ الَّذِيٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۝٣٠ مِثْلَ
دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا
لِّلْعِبَادِ ۝٣١ وَيٰقَوْمِ اِنِّيٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝٣٢ يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا
لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣ وَلَقَدْ جَاۗءَكُمْ
يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَاۗءَكُمْ بِهٖ ۭ حَتّٰٓى اِذَا هَلَكَ
قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
مُّرْتَابُۨ ۝٣٤ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۭ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ
اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝٣٥

तर्जुमा : ''उस मोमिन ने कहा, ऐ मेरी क़ौम के लोगों ! मुझे तो अंदेशा है कि तुम पर भी वैसा ही अज़ाब न आ जाए जो और उम्मतों पर आया (30) जैसे उम्मते नूह और आद व समूद और उनके बाद वालों का हाल हुआ। अल्लाह अपने बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता। (31) और मुझे तुम पर हाँक पुकार के दिन का भी डर है। (32) जिस दिन तुम पीठ फेरकर लौटोगे तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा और जिसे अल्लाह तआला गुमराह कर दे उसका हादी कोई नहीं। (33) इससे पहले तुम्हारे पास हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) दलीलें लेकर आये, फिर भी तुम उनकी लाई हुई दलील में शक व शुब्हा करते रहे यहाँ तक कि जब उनकी वफ़ात हो गई तो तुम कहने लगे, उनके बाद तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं। इसी तरह अल्लाह गुमराह करता है जो हद से बढ़ जाने वाला शक शुब्हा करने वाला हो। (34) जो बग़ैर किसी सनद के उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़ने लगते हैं अल्लाह के नज़दीक और मोमिनों के नज़दीक यह तो बहुत बड़ी बेज़ारी की चीज़ है। अल्लाह इसी तरह हर एक मग़रूर व सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है।'' (35)

मोमिने कामिल की बातचीत (आ. 30 से 35) : उस मोमिन की नसीहत का आख़िरी बयान हो रहा है कि उसने फ़र्माया, देखो! अगर तुमने अल्लाह के रसूल की न मानी और अपनी सरकशी पर अड़े रहे तो मुझे डर है कि कहीं अगली क़ौमों की तरह तुम पर भी अज़ाबे इलाही न बरस पड़े। क़ौमे नूह और आदियों, समूदियों को देख लो कि पैग़म्बरों की न मानने के वबाल में उन पर कैसे अज़ाब आए? और कोई न हुआ जो उन्हें अज़ाब से बचा लेता। इसमें अल्लाह तआला का कुछ ज़ुल्म न था, उसकी ज़ात बन्दों पर ज़ुल्म करने से पाक है। उनके अपने करतूत थे जो उनके लिए वबाले जान बन गए। मुझे तुम पर क़ियामत के दिन के अज़ाबों का भी डर है जो हाँक पुकार का दिन है। सूर की हदीस में है जब ज़मीन में ज़लज़ला (भूकम्प) आएगा और फट जाएगा तो लोग मारे घबराहट के इधर उधर परेशान बदहवास भागने लगेंगे और एक दूसरे को आवाज़ें देंगे। हज़रत ज़ह्हाक (रह.) वग़ैरह का क़ौल है कि, "यह उस वक़्त का ज़िक्र है जब जहन्नम लाई जाएगी और लोग उसे देखकर डरकर भागेंगे और फ़रिश्ते उन्हें मैदाने महशर की तरफ़ वापिस लाएँगे" जैसे फ़र्माने इलाही है (وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا) (69/हाक़्क़ा : 17) यानी फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे। और फ़र्मान है (يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا) (55/रहमान : 33) यानी "ऐ इंसानों और जिन्नों! अगर तुम ज़मीन व आसमान के किनारों से भाग निकलने की ताक़त रखते हो तो निकल भागो लेकिन यह तुम्हारे बस की बात नहीं।" हसन और ज़ह्हाक (रहि.) की क़िरात में (यौमत्तनाद्द) दाल की तशदीद के साथ है यह और यह माख़ूज़ है नद्दल बईरु से। जब ऊँट चला जाए और सरकशी करने लगे तो यह लफ़्ज़ कहा जाता है। कहा गया है कि जिस तराज़ू में अमल तौले जाएँगे वहाँ एक फ़रिश्ता होगा जिसकी नेकियाँ बढ़ जाएँगी वह बाआवाज़े बुलंद पुकार कर कहेगा, लोगो! फ़लाँ सआदत वाला हो गया और आज के बाद से उस पर शक़ावत कभी नहीं आएगी। और अगर उसकी नेकियाँ घट गईं तो वह फ़रिश्ता आवाज़ लगायेगा, फ़लाँ बिन फ़लाँ बदनसीब हो गया और तबाह व बर्बाद हो गया। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं क़ियामत को (यौमत्तनाद) इसलिए कहा गया है कि जन्नती जन्नतियों को और जहन्नमी जहन्नमियों को पुकारेंगे और यह भी कहा गया है कि वजह यह है कि जन्नती जहन्नम वालों को पुकारेंगे और कहेंगे कि हमारे रब ने हमसे जो वादा किया था वह हमने सच पाया। तुम बतलाओ कि क्या तुमने भी अपने रब का वादा सच्चा पाया? वह जवाब देंगे कि हाँ! इसी तरह जहन्नमी जन्नतियों को पुकार कर कहेंगे कि हमें थोड़ा सा पानी ही छुआ दो, या कुछ वह दे दो जो अल्लाह तआला ने तुम्हें दे रखा है। जन्नती जवाब देंगे कि यहाँ के खाने पीने को अल्लाह ने काफ़िरों पर हराम कर दिया है। इसी तरह सूरह आराफ़ में यह भी बयान है कि आराफ़ वाले दोज़ख़ियों और जन्नतियों को पुकारेंगे। बग़वी वग़ैरह फ़र्माते हैं कि यह तमाम बातें हैं और इन सब वजूहात की बिना पर क़ियामत के दिन का नाम (यौमत्तनाद) है। यही क़ौल बहुत उम्दह है, वल्लाहु आलम!

उस दिन लोग पीठ फेरकर भाग खड़े होंगे लेकिन भागने की कोई जगह न पायेंगे और कह दिया जाएगा कि आज ठहरने की जगह यही है। उस दिन कोई न होगा जो बचा सके और अल्लाह तआला के अज़ाबों से छुड़ा सके। बात यह है कि अल्लाह तआला के सिवा कोई क़ादिरे मुत्लक़ नहीं वह जिसे गुमराह कर दे उसे

कोई हिदायत नहीं दे सकता। उससे पहले अहले मिस्र के पास हज़रत यूसुफ़ (ﷺ) अल्लाह तआला के पैग़म्बर बनकर आए थे। आपकी बिअसत हज़रत मूसा (ﷺ) से पहले हुई थी, अज़ीज़े मिस्र भी आप ही थे और अपनी उम्मत को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाते थे। लेकिन क़ौम ने उनकी इताअत न की, हाँ बवजह दुनियावी जाह के और वज़ारत के तो उन्हें मातहती करनी पड़ती थी। पस फ़र्माता है कि तुम उनकी नबुव्वत की तरफ़ से भी शक में ही रहे, आख़िर जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो तुम बिलकुल मायूस हो गए और तमअ करते हुए कहने लगे कि, अब तो अल्लाह तआला किसी को नबी बनाकर भेजेगा ही नहीं। यह था उनका कुफ़्र और उनका झुठलाना। इसी तरह अल्लाह तआला उन्हें गुमराह कर देता है जो बेजा काम करने वाला हद से गुज़र जाने वाला और शक शुब्हा में मुब्तला रहने वाला हो। यानी जो तुम्हारा हाल है यही हाल उन सबका होता है कि जिनके काम इसराफ़ वाले हों और जिनका दिल शक व शुब्हा वाला हो, जो लोग हक़ को बातिल से हटाते हैं और बग़ैर दलील के दलीलों को टालते हैं उस पर अल्लाह तआला उनसे नाख़ुश है और सख़्ततर नाराज़ है। उनके यह अफ़आल जहाँ अल्लाह की नाराज़गी का सबब हैं वहाँ ईमान वालों की भी नाख़ुशी का ज़रिया हैं। जिन लोगों में ऐसी बेहूदा सिफ़तें होती हैं उनके दिल पर अल्लाह तआला मुहर कर देता है। जिसके बाद उन्हें न अच्छाई अच्छी लगती है न बुराई बुरी लगती है। हर वह शख़्स जो हक़ से सरकशी करने वाला हो और तकब्बुर व ग़ुरूर वाला हो। हज़रत शअबी (रह.) फ़र्माते हैं ''जब्बार वह शख़्स है जो दो इंसानों को क़त्ल कर डाले।'' अबू इमरान जूनी और क़तादा (रहि.) का फ़र्मान है कि जो ''बग़ैर हक़ के किसी को क़त्ल कर दे वह जब्बार है।'' वल्लाहु आलम!

***

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ
السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ
سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : ''फ़िरऔन ने कहा, ऐ हामान! मेरे लिए एक बालाख़ाना बना क्या अजब कि मैं आसमान के दरवाज़ों तक पहुँच जाऊँ (36) और मूसा (ﷺ) के रब को झाँक लूँ। मुझे तो पूरा यक़ीन है कि वह झूठा है ठीक इसी तरह फ़िरऔन की बदकिरदारियाँ उसे भली दिखाई गईं और राह से रोक दिया गया फ़िरऔन की हर हीलासाज़ी तबाही में ही रही।'' (37)

फ़िरऔन का मकर व फ़रेब (आ. 36, 37) : फ़िरऔन की सरकशी और तकब्बुर बयान हो रहा है कि

उसने अपने वज़ीर हामान से कहा कि मेरे लिए एक बुलंद व बाला महल ता'मीर करा। ईंटों और चूने की पुख़्ता और बहुत ऊँची इमारत बना। जैसे और जगह है कि उसने कहा, ऐ हामान! ईंटें पकाकर मेरे लिए एक ऊँची इमारत बना। हज़रत इब्राहीम नख़ई (रह.) का क़ौल है कि ''क़ब्र को पुख़्ता बनाना और उसे चूना गच करना, सलफ़े सालेहीन मकरूह जानते थे'' (इब्ने अबी हातिम) फ़िरऔन कहता है कि यह महल मैं इसलिए बनवा रहा हूँ कि आसमान के दरवाज़ों और आसमान के रास्तों तक मैं पहुँच जाऊँ और मूसा (عليه السلام) के रब को देख लूँ भले मैं जानता कि मूसा (عليه السلام) झूठा है। वह जो कह रहा है कि रब ने उसे भेजा है यह बिलकुल ग़लत है।

दरअसल फ़िरऔन का यह एक मकर था और वह अपनी रइयत पर यह ज़ाहिर करना चाहता था कि देखो! मैं ऐसा करता हूँ जिससे कि मूसा (عليه السلام) का झूठ बिलकुल खुल जाए और मेरी तरह तुम्हें भी यक़ीन आ जाए कि मूसा (عليه السلام) ग़लत गो, मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब हैं। फ़िरऔन राहे रब से रोक दिया गया था। उसकी हर तदबीर उल्टी ही रही और जो काम वह करता है वह उसके लिए नुक़्सानदेह होता है और ख़सारे में बढ़ता ही जा रहा है।

وَقَالَ الَّذِىٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِىَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا
يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾ وَيٰقَوْمِ مَا لِىٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى
النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِىٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾ تَدْعُوْنَنِىْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِىْ
بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِىٓ اِلَيْهِ
لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِى الدُّنْيَا وَلَا فِى الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ
هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِىٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ

اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ

الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۟

اَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "उस ईमान वाले शख़्स ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों! तुम मेरी पैरवी करो मैं नेक राह की तरफ़ तुम्हारी रहबरी करूँगा। (38) ऐ मेरे गिरोह के लोगों! हयाते दुनिया फ़ानी है, यक़ीन मानो कि क़रार और हमेशगी तो आख़िरत का घर ही है। (39) जिसने गुनाह किया उसे तो बराबर बराबर का बदला ही है और जिसने नेकी की है ख़्वाह वह मर्द हो ख़्वाह औरत और हो ईमान वाला तो यह लोग वह हैं जो जन्नत में जाएँगे और वहाँ बेशुमार रोज़ी पायेंगे। (40) ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुला रहा हूँ और तुम मुझे दोज़ख़ की तरफ़ बुला रहे हो। (41) तुम मुझे यह दावत दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ और उसके साथ शिर्क करूँ जिसका कोई इल्म मुझे नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले रब की तरफ़ दावत दे रहा हूँ। (42) यह यक़ीनी अम्र है कि तुम मुझे जिसकी तरफ़ बुला रहे हो वह तो न दुनिया में पुकारने के क़ाबिल है न आख़िरत में और यह भी यक़ीनी बात है कि हम सबका लौटना अल्लाह की तरफ़ है और हद से गुज़र जाने वाले यक़ीनन अहले दोज़ख़ हैं। (43) पस आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे। मैं अपना मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द करता हूँ यक़ीनन अल्लाह तआला बन्दों का निगरान हैं। (44) पस उसे अल्लाह तआला ने उन तमाम बुराइयों से महफ़ूज़ रख लिया जो उन्होंने सोच रखी थीं और फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह अज़ाब उलट पड़ा। (45) आग है जिसके सामने यह हर सुबह शाम लाये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी फ़र्मान होगा कि फ़िरऔनियों को सख़्त तरीन अज़ाब में डालो।" (46)

गुमनाम मोमिन की दूसरी नसीहत (आ. 38 से 46) : फ़िरऔन की क़ौम का मोमिन मर्द जिसका ज़िक्र पहले गुज़र चुका है अपनी क़ौम के सरकशों, ख़ुदपसंदों और मुतकब्बिरों को नसीहत करते हुए कहता है कि तुम मेरी मानो, मेरी राह चलो, मैं तुम्हें राहे रास्त पर डाल दूँगा। यह अपने उस क़ौल में फ़िरऔन की तरह झूठा न था। फ़िरऔन तो अपनी क़ौम को धोखा दे रहा था और यह उनकी हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाही कर रहा था। फिर उन्हें दुनिया से बेरग़बत करने और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जह होने के लिए कहता है कि दुनिया एक ढल जाने वाला साया और फ़ना हो जाने वाला फ़ायदा है। लाज़वाल और क़रार व हमेशगी वाली ज़िन्दगी तो उसके बाद आने वाली आख़िरत है जहाँ की रहमत व ज़हमत अबदी और ग़ैर फ़ानी है। जहाँ बुराई का बदला तो उसके बराबर ही

दिया जाता है हाँ! नेकी का बदला बेहिसाब दिया जाता है। नेकी करने वाला मर्द हो तो, और औरत हो तो, हाँ! शर्त यह है कि हो ईमान वाला। उसे उस नेकी का सवाब इस क़द्र दिया जाएगा जो बेहद व बेहिसाब होगा, वल्लाहु आलम!

मुश्रिकों को दावते तौहीद : क़ौमे फ़िरऔन का मोमिन मर्द अपना वअ़ज़ जारी रखते हुए कहता है कि यह क्या बात है कि मैं तुम्हें तौहीद की तरफ़ यानी अल्लाह वह्दहू ला शरीक लहू की इबादत की तरफ़ बुला रहा हूँ, मैं तुम्हें अल्लाह के रसूल की तस्दीक़ करने की दावत दे रहा हूँ और तुम मुझे कुफ़्रो शिर्क की तरफ़ बुला रहे हो। तुम चाहते हो कि मैं जाहिल बन जाऊँ और बेदलील अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल के ख़िलाफ़ करूँ। ग़ौर करो कि तुम्हारी और मेरी दावत में किस क़द्र फ़र्क़ है। मैं तुम्हें उस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ ले जाना चाहता हूँ जो बड़ी इज़्ज़त वाला और किब्रियाई वाला है। बावजूद उसके वह हर उस शख़्स की तौबा क़बूल करता है जो उसकी तरफ़ झुके और इस्तिग़फ़ार करे (ला जरम) के मअ़नी हक़ व सदाक़त के हैं। यानी यह यक़ीनी सच और हक़ है कि जिसकी तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो यानी बुतों और अल्लाह के सिवा औरों की इबादत की तरफ़, वह हैं जिन्हें दीनो दुनिया का कोई इख़्तियार नहीं जिन्हें नफ़ा नुक़्सान पर कोई क़ाबू नहीं जो अपने पुकारने वाले की पुकार को न सुन सकें, न क़बूल कर सकें, न यहाँ न वहाँ। जैसे फ़र्माने रब्बानी है (وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ) (46/अह्क़ाफ़ : 5) यानी उससे बढ़कर कोई गुमराह नहीं जो अल्लाह के सिवा औरों को पुकारता है जो उसकी पुकार को क़ियामत तक सुन नहीं सकते जिन्हें मुत्लक़ ख़बर नहीं कि कौन हमें पुकार रहा है जो क़ियामत के दिन अपने पुकारने वालों के दुश्मन हो जाएँगे और उनकी इबादत से बिलकुल इंकार कर जाएँगे। भले तुम उन्हें पुकारा करो लेकिन वह नहीं सुनते और बिल्फ़र्ज़ अगर सुन भी लें तो क़बूल नहीं कर सकते। मोमिन आले फ़िरऔन कहता है कि हम सबको लौटकर अल्लाह ही के पास जाना है। वहाँ हर एक को अपने आमाल का बदला भुगतना है। वहाँ हद से गुज़र जाने वाले, अल्लाह के साथ दूसरों को शरीक करने वाले, हमेशा के लिए जहन्नम में झोंक दिये जाएँगे। तुम इस वक़्त भले मेरी बातों की क़द्र न करो लेकिन अभी अभी तुम्हें मालूम हो जाएगा और मेरी बातों की सदाक़त व हक़्क़ानियत तुम पर वाज़ेह हो जाएगी। उस वक़्त नदामत, हसरत और अफ़सोस करोगे लेकिन वह सिर्फ़ बेकार होगा। मैं तो अपना काम अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द करता हूँ मेरा तवक्कल उसी की ज़ात पर है। मैं अपने हर काम में उसी से मदद तलब करता हूँ। मुझे तुमसे कोई वास्ता नहीं, मैं तुमसे अलग हूँ और तुम्हारे कामों से नफ़रत करता हूँ, मेरा तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं। अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के तमाम हालात का दाना बीना है। मुस्तहिक़्क़े हिदायत जो हैं उनकी वह रहनुमाई करेगा और मुस्तहिक़्क़ीने ज़लालत उस रहनुमाई से महरूम रहेगा। उसका हर काम हिक्मत वाला है और उसकी हर तदबीर अच्छाई वाली है। उस मोमिन को अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔनियों के मकर से बचा लिया। दुनिया में भी वह महफ़ूज़ रहा यानी मूसा (عليه السلام) के साथ उसने नजात पाई और आख़िरत के अ़ज़ाबों से भी महफ़ूज़ रहा। बाक़ी तमाम फ़िरऔनी बदतरीन अ़ज़ाबों का शिकार हुए। सब दरिया में डुबो दिये गए फिर वहाँ से जहन्नम में झोंक दिये गए।

बरज़ख़ व क़ब्र का अज़ाब : हर सुबह़ शाम उनकी रूहें जहन्नम के सामने लाई जाती हैं, क़ियामत तक यह अज़ाब उन्हें होता रहेगा और क़ियामत के दिन उनकी रूहें जिस्म समेत जहन्नम में डाल दी जाएँगी और उस दिन उनसे कहा जाएगा कि ऐ आले फ़िरऔन! सख़्त दर्दनाक और बहुत ज़्यादा तक्लीफ़देह अज़ाबों में चले जाओ। यह आयत अहले सुन्नत के उस मज़हब की कि आलमे बरज़ख़ में यानी क़ब्रों में अज़ाब होता है बहुत बड़ी दलील है। हाँ! यहाँ पर यह बात याद रखनी चाहिए कि कुछ अह़ादीस में कुछ ऐसे मज़ामीन वारिद हुए हैं जिनसे मालूम होता है कि अज़ाबे बरज़ख़ का इल्म रसूलुल्लाह (ﷺ) को मदीने शरीफ़ की हिज्रत के बाद हुआ और यह आयत मक्का में नाज़िल हुई है तो जवाब इसका यह है कि आयत से सिर्फ़ इतना मालूम होता है कि मुश्रिकों की रूहें सुबह़ शाम जहन्नम के सामने पेश की जाती हैं। बाक़ी रही यह बात कि यह अज़ाब हर वक़्त जारी और बाक़ी रहता है या नहीं? और यह भी कि आया यह अज़ाब सिर्फ़ रूह़ को होता है या जिस्म को भी? उसका इल्म अल्लाह तआला की तरफ़ से आपको मदीना में कराया गया है और आपने उसे बयान कर दिया। पस ह़दीस व क़ुरआन मिलाकर मसला यह साबित हुआ कि अज़ाब व सवाबे क़ब्र रूह़ और जिस्म दोनों को होता है और यही ह़क़ है। अब इन ह़दीसों को मुलाह़िज़ा कीजिए। मुस्नद अह़मद में है कि "एक यहूदिया औरत ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ख़िदमत गुज़ार थी। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) जब कभी उसके साथ कुछ सलूक करतीं तो वह दुआ देती और कहती, अल्लाह तुझे क़ब्र के अज़ाब से बचा ले। एक दिन ह़ज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने ह़ुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या क़ियामत से पहले क़ब्र में अज़ाब होता है? आपने फ़र्माया, नहीं तो! यह किसने कहा है? ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने उस यहूदिया औरत का वाक़िया बयान किया तो आपने फ़र्माया, यहूद झूठे हैं और वह तो इससे ज़्यादा अल्लाह पर झूठ बाँधा करते हैं। क़ियामत से पहले कोई अज़ाब नहीं। कुछ दिन ही गुज़रे थे कि एक बार ज़ुहर के वक़्त कपड़े लपेटे हुए रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए, आँखें लाल हो रही थीं और बाआवाज़े बुलंद कह रहे थे क़ब्र मानिन्द स्याह रात की अंधेरियों के टुकड़ों के है। लोगों! अगर तुम वह जानते जो मैं जानता हूँ तो बहुत ज़्यादा रोते और बहुत कम हँसते। लोगों! क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह माँगो, यक़ीन मानो कि अज़ाबे क़ब्र ह़क़ है।" (अह़मद : 6/81; और इसकी सनद सह़ीह़ है।) और रिवायत में है कि "एक यहूदिया औरत ने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से कुछ माँगा जो आपने दिया और उसने वह दुआ दी। उसके आख़िर में है कि उसके कुछ दिनों के बाद ह़ुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे वह़ी की गई है कि तुम्हारी आज़माइश क़ब्रों में की जाती है।" (अह़मद : 6/238; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) पस इन अह़ादीस और आयत में एक तत्बीक़ तो वह है जो ऊपर बयान हुई है। दूसरी तत्बीक़ यह भी हो सकती है कि आयत (युअरज़ून) से सिर्फ़ इस क़द्र साबित होता है कि कुफ़्फ़ार को आलमे बरज़ख़ में अज़ाब होता है लेकिन उससे यह लाज़िम नहीं आता कि मोमिन को भी उसके कुछ गुनाहों की वजह से उसकी क़ब्र में अज़ाब होता है। यह सिर्फ़ ह़दीस से साबित हुआ। मुस्नद अह़मद में है कि "ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) आए उस वक़्त एक यहूदिया औरत माई साह़िबा (रज़ि.) के पास बैठी हुई थी और कह रही थी कि आपको मालूम है कि तुम लोग अपनी क़ब्रों में

आज़माये जाओगे? उसे सुनकर हुज़ूर (ﷺ) काँप गए और फ़र्माया, यहूदी ही आज़माये जाते हैं। फिर चंद दिनों बाद आपने फ़र्माया, लोगो! तुम सब क़ब्रों के फ़ित्नों में डाले जाओगे। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) क़ब्र के फ़ित्ने से पनाह माँगा करते थे।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिह़बाबुत्तअव्वज़ु मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि... : 584; अह़मद : 6/248) यह भी हो सकता है कि आयत से सिर्फ़ रूह़ के अ़ज़ाब का सबूत होता था उससे जिस्म तक उस अ़ज़ाब के पहुँचने का सबूत नहीं था। बाद में बज़रिया वह़ी हुज़ूर (ﷺ) को यह मालूम कराया गया कि अ़ज़ाबे क़ब्र ज़िस्म व रूह़ को होता है। चुनाँचे आपने फिर उससे बचाव की दुआ शुरू की। वल्लाहु सुब्ह़ानहू व तआ़ला आ़लम!

स़ह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ में है कि ''ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) के पास एक यहूदिया औ़रत आई और उसने कहा अ़ज़ाबे क़ब्र से हम अल्लाह तआ़ला की पनाह चाहते हैं। इस पर ह़ज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से सवाल किया कि क्या क़ब्र में अ़ज़ाब होता है? आपने फ़र्माया हाँ! अ़ज़ाबे क़ब्र बरह़क़ है। फ़र्माती हैं उसके बाद मैंने देखा कि हुज़ूर (ﷺ) हर नमाज़ के बाद अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह माँगा करते थे।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब अत्तअव्वज़ु मिन अ़ज़ाबिल क़ब्रि : 6366) इस ह़दीस से तो साबित होता है कि आपने उसे सुनते ही यहूदिया औ़रत की तस्दीक़ की, और ऊपर वाली अह़ादीस से मालूम होता है कि आपने तक्ज़ीब की थी। दोनों में तत्बीक़ यह है कि यह दो वाक़िये हैं। पहले वाक़िये के वक़्त चूँकि वह़ी से आपको मालूम नहीं हुआ था, आपने इंकार कर दिया। फिर मालूम हो गया तो आपने इक़रार किया। वल्लाहु सुब्ह़ानहू व तआ़ला आ़लम! क़ब्र के अ़ज़ाब का ज़िक्र बहुत सी स़ह़ीह़ अह़ादीस में आ चुका है।

ह़ज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं ''रहती दुनिया तक हर सुबह़ शाम फ़िरऔ़नियों की रूहें जहन्नम के सामने लाई जाती रहेंगी। और उनसे कहा जाता रहेगा कि बदकारो! तुम्हारी असल जगह यही है ताकि उनके रंजो ग़म में इज़ाफ़ा हो। उनकी ज़िल्लत व तौहीन हो। (त़ब्री : 21/396) पस आज भी वह अ़ज़ाब में ही हैं। और हमेशा उसी में रहेंगे।''

इब्ने अबी ह़ातिम में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) का क़ौल है कि ''शहीदों की रूहें सब्ज़ रंग के परिन्दों के क़ालिब में हैं वह जन्नत में जहाँ कहीं चाहें, चुगती फिरती हैं और मोमिनों की रूहें चिड़ियाओं के क़ालिब में हैं और जहाँ वह चाहें जन्नत में चुगती रहती हैं और अ़र्श तले की क़िंदीलों में आराम ह़ासिल करती हैं, और आले फ़िरऔ़न की रूहें स्याह रंग परिन्दों के क़ालिब में हैं। सुबह़ भी जहन्नम के पास जाती हैं और शाम को भी यही उनका पेश होना है।'' मेअ़राज वाली लम्बी रिवायत में है कि ''मुझे एक बहुत बड़ी मख़्लूक़ की त़रफ़ ले चले जिनमें हर एक का पेट मिस्ल बहुत बड़े घर के था जो आले फ़िरऔ़न के पास ही क़ैद थे और आले फ़िरऔ़न सुबह़ शाम आग पर लाये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी अल्लाह तआ़ला कहेगा इन फ़िरऔ़नियों को सख़्ततर अ़ज़ाबों में ले जाओ। और यह फ़िरऔ़नी लोग नकेल वाले ऊँटों की तरह़ मुँह नीचे किये पत्थर और दरख़्त चर रहे हैं और बिलकुल बेअक़्ल व बेशऊ़र हैं।'' (इसकी सनद

बहुत ही ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अम्मारा बिन जुवैन अबू हारून सख़्त ज़ईफ़ रावी है।) इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो एहसान करे ख़्वाह मुस्लिम हो ख़्वाह काफ़िर, अल्लाह तआला उसे ज़रूर बदला देता है। हमने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! काफ़िर को क्या बदला मिलता है? फ़र्माया, अगर उसने सिलारहमी की है या सदक़ा दिया है या और कोई अच्छा काम किया है तो अल्लाह तआला उसका बदला उसके माल में उसकी औलाद में उसकी सेहत में और ऐसी ही और चीज़ों में अता करता है। हमने फिर पूछा और आख़िरत में क्या मिलता है? फ़र्माया, बड़े दर्जे से कम दर्जे का अज़ाब, फिर आपने (अदख़िलू आला फ़िरऔन) पढ़ी।'' (बज़्ज़ार : 945; हाकिम : 2/253; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; उयेयना बिन यक़्ज़ान ज़ईफ़ है, शुअबुल ईमान : 281) इब्ने जरीर (रह.) में है कि हज़रत औज़ाई (रह.) से एक शख़्स ने पूछा कि ज़रा हमें यह तो बतलाओ कि हम देखते हैं कि बहुत से सफ़ेद परिन्दों के ग़ोल का ग़ोल समुन्द्र से निकलता है और उसके मग़रिबी किनारे उड़ता हुआ सुबह के वक़्त जाता है इस क़द्र ज़्यादती के साथ कि उनकी तादाद कोई गिन नहीं सकता। शाम के वक़्त ऐसा ही झुण्ड का झुण्ड वापिस आता है लेकिन उस वक़्त उनके रंग बिलकुल स्याह होते हैं। आपने फ़र्माया, तुमने उसे ख़ूब मालूम कर लिया। उन परिन्दों के क़ालिब में फ़िरऔनियों की रूहें हैं जो सुबह शाम आग के सामने पेश की जाती हैं। फिर अपने घौंसलों की तरफ़ लौट जाती हैं उनके पर जल गए हुए होते हैं और यह स्याह हो जाते हैं। फिर रात को वह उग जाते हैं और स्याह झड़ जाते हैं फिर वह अपने घौंसलों की तरफ़ लौट जाते हैं। यही हालत उनकी दुनिया में है और क़ियामत के दिन उनसे अल्लाह तआला कहेगा, इन फ़िरऔनियों को सख़्त तरीन अज़ाबों में दाख़िल कर दो। कहते हैं कि उनकी तादाद छः लाख की है जो फ़िरऔनी फ़ौज थी।

मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''तुममें से जब कभी कोई मरता है हर सुबह शाम उसकी जगह पेश की जाती है, अगर वह जन्नती है तो जन्नत और अगर वह जहन्नमी है तो जहन्नम और कहा जाता है कि तेरी असल जगह यही है जहाँ तुझे अल्लाह तआला क़ियामत के दिन भेजेगा।'' (अहमद : 2/113; सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब अल्मय्यितु युअरज़ु अलैहि मक़अदुहू बिल ग़दाति वल अशिय्यि : 1379; सहीह मुस्लिम : 2866; इब्ने हिब्बान : 3130)

***

وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ
اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا

رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾ قَالُوٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۗ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : ''जबकि दोज़ख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमज़ोर लोग जो ताबेअ थे तकब्बुर करने वालों से जिनके ये ताबेअ थे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पैरू थे तो क्या अब तुम हमसे उस आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो? (47) वह बड़े लोग जवाब देंगे हम तो सभी इस आग में ही हैं। अल्लाह तआला अपने बन्दों के बीच फ़ैसले कर चुका है। (48) तमाम जहन्नमी मिलकर जहन्नम के दारोग़ों से कहेंगे कि तुम ही अपने परवरदिगार से दुआ करो कि वह किसी दिन तो हमारे अज़ाब में कमी कर दे।(49) वह जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल मोजिज़े लेकर नहीं आए थे? यह कहेंगे कि हाँ! आये थे। वह कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ सिर्फ़ बेअसर और बेराह है।'' (50)

जहन्नम में दोज़ख़ियों का लड़ाई झगड़ा (आ. 47 से 50) : जहन्नमी लोग जहन्नम के अज़ाबों को बर्दाश्त करते हुए एक और अज़ाब के भी शिकार होंगे जिसका बयान यहाँ हो रहा है। यह अज़ाब फ़िरऔनियों को भी होगा और दूसरे दोज़ख़ियों को भी यानी आपस की थका फ़ज़ीहती और लड़ाई झगड़े। छोटे बड़ों से यानी ताबेदारी करने और हुक्म अहकाम के मानने वाले जिनकी बड़ाई और बुज़ुर्गी के क़ाइल थे और जिनकी बातें तस्लीम किया करते थे और जिनके कहे हुए पर आमिल थे उनसे कहेंगे कि दुनिया में हम तो आपके ताबेअ फ़र्मान रहे जो आपने कहा, हम बजा लाए, कुफ्र और गुमराही के जो अहकाम भी आपकी बारगाह से सादिर हुए आपके तक़द्दुस और इल्म व फ़ज़्ल सरदारी और हुकूमत की बिना पर हम सबको मानते रहे, अब यहाँ आप कुछ तो हमारे काम आईए। हमारे अज़ाबों का ही कोई हिस्सा अपने ऊपर उठा लीजिए। यह रईस लोग, उमरा और सादात (लीडरान) और बुज़ुर्ग जवाब देंगे कि हम भी तो तुम्हारे साथ जल झुलस रहे हैं। हमें जो अज़ाब हो रहे हैं वह क्या कम हैं जो हम तुम्हारे अज़ाब उठाएँ? अल्लाह का हुक्म जारी हो चुका है, रब्बे तआला फ़ैसले कर चुका है, हर एक को उसके बुरे आमाल के मुताबिक़ सज़ा दे चुका है, अब उसमें कमी नामुम्किन है। जैसे और आयत में है हर एक के लिए बढ़ा चढ़ा अज़ाब है भले तुम न समझो। जब अहले दोज़ख़ समझ लेंगे कि अल्लाह तआला उनकी दुआ क़बूल नहीं करता बल्कि कान भी नहीं लगाता बल्कि उन्हें डाँट दिया है और फ़र्मा चुका है कि यहीं पड़े रहो और मुझसे बात न करो तो वह जहन्नम के दारोग़ों से कहेंगे, जो वहाँ के ऐसे ही पासबान हैं जैसे दुनिया के जेलख़ानों के निगहबान दारोग़े और मुहाफ़िज़ सिपाह होते हैं। उनसे कहेंगे कि तुम ही ज़रा अल्लाह तआला से दुआ करो कि किसी एक दिन ही वह हमारे अज़ाब हल्के कर दे। वह उन्हें जवाब देंगे कि क्या रसूलों की ज़ुबानी इलाही अहकाम दुनिया में तुम्हें पहुँचे न थे? यह कहेंगे, हाँ! पहुँचे थे तो फ़रिश्ते

कहेंगे, फिर अब तुम आप ही अल्लाह से कह सुन लो। हम तो तुम्हारी तरफ़ से कोई अर्ज़ उसकी जनाब में कर नहीं सकते। बल्कि अब हम तुम्हारी हाय वाय का भी ख़्याल नहीं करने वाले बल्कि हम ख़ुद तुमसे बेज़ार और तुम्हारे दुश्मन हैं। सुनो! हम तुम्हें कहे देते हैं कि ख़्वाह तुम दुआ करो ख़्वाह तुम्हारे लिए और कोई दुआ करे, नामुम्किन है कि तुम्हारे अ़ज़ाबों में कमी हो। काफ़िरों की दुआ नामक़बूल और मर्दूद है।

***

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِينَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ
اٰتَيْنَا مُوسَى الْهُدٰى وَأَوْرَثْنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾ هُدًى وَّذِكْرٰى لِأُولِي
الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِيٓ اٰيٰتِ اللهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰهُمْ
إِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ فَاسْتَعِذْ بِاللهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : "यक़ीनन हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की मदद ज़िन्दगानी दुनिया में भी करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51) जिस दिन ज़ालिमों को उनकी उ़ज़्र मअ़ज़िरत कुछ नफ़ा न देगी, उनके लिए लअ़नत ही होगी और उनके लिए उस घर की ख़राबी ही होगी। (52) हमने मूसा (عليه السلام) को हिदायतनामा अ़ता किया और बनी इस्राईल को उस किताब का वारिस बनाया। (53) कि वह हिदायत व नसीहत थी अ़क़्लमंदों के लिए। (54) पस ऐ नबी! तू सब्र कर अल्लाह का वादा बिला शक व शुब्हा सच्चा ही है। तू अपने गुनाह की माफ़ी माँगता रह और सुबह शाम अपने परवरदिगार की तस्बीह और हम्द बयान करता रह। (55) जो लोग बावजूद अपने पास किसी सनद के न होने के आयाते बारी तआ़ला

में झगड़ा करते हैं उनके दिलों में बड़ाई के सिवा और कुछ नहीं। वह इस शान तक पहुँचने वाले ही नहीं। सो तू अल्लाह की पनाह माँगता रह बेशक वह पूरा सुनने वाला और सबसे ज़्यादा देखने वाला है।'' (56)

रसूलों का मददगार अल्लाह तआला है (आ. 51 से 56) : आयत में रसूलों की मदद करने का अल्लाह का वादा है। फिर हम देखते हैं कि कुछ रसूलों को उनकी क़ौमों ने क़त्ल कर दिया है जैसे हज़रत यहया, हज़रत ज़करिय्या, हज़रत शुऐब (अलैहि.) और कुछ अम्बिया को अपना वतन छोड़ना पड़ा जैसे हज़रत इब्राहीम (अलैहि.) और हज़रत ईसा (अलैहि.) कि उन्हें अल्लाह तआला ने आसमान की तरफ़ हिज्रत कराई। फिर क्या कोई नहीं कह सकता कि यह वादा पूरा क्यूँ नहीं हुआ? इसके दो जवाब हैं एक तो यह कि यहाँ भले आम ख़बर है लेकिन मुराद कुछ से है, और यह लुग़त में उमूमन पाया जाता है कि मुत्लक़ ज़िक्र हो और मुराद ख़ास अफ़राद हों। दूसरे यह कि मदद करने से मुराद बदला लेना हो। पस कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसे ईज़ा पहुँचाने वालों से कुदरत ने ज़बरदस्त इंतिक़ाम न लिया हो। चुनाँचे हज़रत यहया, हज़रत ज़करिय्या, हज़रत शुऐब (अलैहि.) के क़ातिलों पर अल्लाह तआला ने उनके दुश्मनों को मुसल्लत कर दिया और उन्होंने उन्हें ज़ेरो ज़बर कर डाला। उनके ख़ून की नदियाँ बहा दीं और उन्हें निहायत ज़िल्लत के साथ मौत के घाट उतार दिया। नमरूद का मशहूर वाक़िया दुनिया जानती है कि कुदरत ने उसे कैसी पकड़ में पकड़ा। हज़रत ईसा (अलैहि.) को जिन यहूदियों ने सूली देने की कोशिश की थी उन पर जनाब बारी अज़ीज़ व हकीम ने रूमियों को ग़ालिब कर दिया और उनके हाथों उनकी सख़्त ज़िल्लत व एहानत हुई और अभी क़ियामत के क़रीब जब आप उतरेंगे तब दज्जाल के साथ उन यहूदियों को जो उसके लश्करी होंगे, क़त्ल करेंगे और इमामे आदिल और हाकिमे इंसाफ़ बनकर तशरीफ़ लाएँगे, सलीब को तोड़ेंगे, ख़िंज़ीर को क़त्ल करेंगे और जिज़्या बातिल कर देंगे, सिवा इस्लाम के और कुछ क़बूल न करेंगे। यह है अल्लाह तआला की अज़ीमुश्शान मदद और यही दस्तूरे कुदरत है जो पहले से है और अब तक जारी है कि वह अपने मोमिन बन्दों की दुनियावी इम्दाद भी करता है। और उनके दुश्मनों से ख़ुद इंतिक़ाम लेकर उनकी आँखें ठण्डी करता है। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया है जो शख़्स मेरे दोस्तों से दुश्मनी करे उसने मुझे लड़ाई के लिए तलब किया। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अत्तवाज़ोउ : 6502) दूसरी हदीस में है मैं अपने दोस्तों की तरफ़ से बदला ज़रूर ले लिया करता हूँ जैसे शेर बदला लेता है। (शरहुस्सुन्ना : 1242; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) इसी बिना पर मालिकुल मुल्क ने क़ौमे नूह से, आदियों और समूदियों से, अस्हाबुर्रस्स से, क़ौमे लूत से, अहले मदयन से और उन जैसे उन तमाम लोगों से जिन्होंने अल्लाह के रसूलों को झुठलाया था और हक़ का ख़िलाफ़ किया था बदला लिया, एक एक को चुन चुनकर तबाह व बर्बाद किया और जितने मोमिन उनमें थे, उन सबको बचा लिया। इमाम सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं जिस क़ौम में अल्लाह तआला के रसूल आए या ईमान वाले बन्दे उन्हें पैग़ामे इलाही पहुँचाने के लिए खड़े हुए और उस क़ौम ने उन नबियों की या उन मोमिनों की बेहुर्मती की और उन्हें मारा पीटा, क़त्ल किया ज़रूर बिल ज़रूर

उसी ज़माने में अज़ाबे इलाही उन पर बरस पड़े। नबियों के क़त्ल के बदले लेने वाले उठ खड़े हुए और पानी की तरह उनके ख़ून की प्यासी ज़मीन को सैराब किया। पस भले अम्बिया और मोमिनीन यहाँ क़त्ल किये गए लेकिन उनका ख़ून रंग लाया और उनके दुश्मनों का भुस की तरह भरकस निकाल दिया गया। नामुम्किन है कि ऐसे बंदगाने ख़ास की इम्दाद व एआनत न हो और उनके दुश्मनों से इंतिक़ाम न लिया गया हो।

दावते मुहम्मदिया पूरी दुनिया में फैल गयी : अशरफ़ुल अम्बिया हबीबुल्लाह (ﷺ) के हालाते ज़िन्दगी दुनिया और दुनिया वालों के सामने हैं कि अल्लाह तआला ने आप और आपके अस्हाब को ग़ल्बा दिया और दुश्मनों की तमामतर कोशिशों को बेनतीजा रखा। उन तमाम पर आपको खुला ग़ल्बा अता किया, आपके कलिमे को बुलंद व बाला किया। आपके दीन ने दुनिया के तमाम दीनों को घेर लिया। क़ौम की ज़बरदस्त मुख़ालिफ़तों के वक़्त अपने नबी को मदीने पहुँचा दिया और मदीने वालों को सच्चा जाँनिसार बनाकर, फिर मुश्रिकीन का सारा ज़ोर बद्र की जंग में ढाया। उनके कुफ़्र के तमाम वज़नी सुतून उस लड़ाई में उखेड़ दिये। सरदाराने मुश्रिक या तो टुकड़े टुकड़े कर दिये गए या मुसलमानों के हाथों में क़ैदी बनकर नामुरादी के साथ गर्दन झुकाये नज़र आने लगे। क़ैदो बन्द में जकड़े हुए ज़िल्लत व एहानत के साथ मदीने की गलियों में दस्त बदस्त दिगरे पा बदस्त दिगरे हो गए। हिक्मते इलाही ने उन पर फिर एहसान किया और एक बार फिर मौक़ा दिया, फ़िदया लेकर आज़ाद कर दिये गए लेकिन फिर भी जब मुख़ालिफ़ते रसूल से बाज़ न आये और अपने करतूतों पर अड़े रहे तो वह वक़्त भी याद आया कि जहाँ से नबी (ﷺ) को छुपछुपाकर रात के अंधेरे में पा प्यादा हिज्रत करनी पड़ी थी वहाँ फ़ातिहाना हैसियत से दाख़िल हुए और गर्दन पर हाथ बाँधे दुश्मनाने रसूल सामने लाये गए और बिलादे हरम की अज़्मत व इज़्ज़त रसूले मुहतरम के ज़रिये से पूरी हुई और तमाम शिर्क व कुफ़्र और हर तरह की बेअदबियों से बैतुल्लाह पाक साफ़ कर दिया गया। बिल आख़िर यमन भी फ़तह हुआ पूरा जज़ीरा अरब क़ब्ज़ा रसूल में आ गया और जोक़ दर जोक़ लोग दीने इलाही में दाख़िल हो गए फिर रब्बुल आलमीन ने अपने रसूल रहमतुल लिल आलमीन को अपनी तरफ़ बुला लिया और वहाँ की करामत व अज़्मत से अपनी मेहमानदारी में रखकर नवाज़ा, (ﷺ) फिर आपके बाद आपके नेक निहाद सहाबा को आपका जानशीन बनाया जो मुहम्मद इस्लाम का परचम लेकर खड़े हो गये और रब की तौहीद की तरफ़ अल्लाह की मख़्लूक़ को बुलाने लगे जो रोड़ा राह में आया उसे अलग किया, जो ख़ारे चमन नज़र पड़ा उसे काट डाला। गाँव गाँव, शहर शहर, मुल्क मुल्क, दावते इस्लाम पहुँचा दी। जो मानेअ हो उसे मना का मज़ा चखाया, इसी ज़िम्न में मश्रिक़ व मग़्रिब में सल्तनते इस्लामी फैल गई। ज़मीन पर और ज़मीन वालों के जिस्मों पर ही सहाबा किराम (रज़ि.) ने फ़तह हासिल नही की बल्कि उनके दिलों पर भी फ़तह पा ली। इस्लामी नुक़ूश दिलों में जमा दिये और सबको कलिमए तौहीद के नीचे जमा कर दिया। दीने मुहम्मदी ने ज़मीन का चप्पा चप्पा और कोना कोना अपने क़ब्ज़े में कर लिया। दावते मुहम्मदिया बहरे कानों तक भी पहुँच चुकी। सिराते मुहम्मदी अंधों ने भी देख ली। अल्लाह उस पाकबाज़ जमाअत को उनकी ऊलुल अज़्मियों का बेहतरीन बदला इनायत करे। आमीन अल्हम्दु लिल्लाह! आज तक अल्लाह का दीन ग़ालिब व मंसूर है। आज तक मुसलमानों में हुकूमत व

सल्तनत मौजूद है। आज तक उनके हाथों में अल्लाह का और उसके रसूल का कलाम मौजूद है और आज तक उनके सरों पर रब का हाथ है। और क़ियामत तक यह दीन मुज़फ़्फ़र व मंसूर ही रहेगा जो इससे भिड़ेगा मुँह की खाएगा और फिर कभी मुँह न दिखाएगा यही मतलब है इस मुबारक आयत का।

क़ियामत के दिन भी दीनदारों की मदद व नुसरत होगी और बहुत बड़ी और बहुत आला पैमाने तक। गवाहों से मुराद फ़रिश्ते हैं। दूसरी आयत में (यौम) बदल है पहली आयत के इसी लफ़्ज़ से। कुछ क़िरअतों में (यौमु) है तो यह गोया पहले (यौम) की तफ़्सीर है। ज़ालिमों से मुराद मुश्रिक हैं। उनका उज़्र व फ़िदया क़ियामत के दिन मक़्बूल न होगा। वह रहमते रब से उस दिन दूर धकेल दिये जाएँगे। उनके लिए बुरा घर यानी जहन्नम होगा। उनकी आक़िबत ख़राब होगी। हज़रत मूसा (عليه السلام) को हमने हिदायत व नूर बख़्शा, बनी इस्राईल का अंजाम बेहतर किया। फ़िरऔन के माल व ज़मीन का उन्हें वारिस बनाया क्योंकि यह इताअते इलाही और इत्तिबाए रसूल में साबित क़दमी के साथ सख़्तियाँ बर्दाश्त करते रहे थे। जिस किताब के यह वारिस होते वह अक़्लमंदों के लिए सरतापा बाइसे हिदायत व इब्रत थी। ऐ नबी (ﷺ)! आप सब्र कीजिए अल्लाह का वादा सच्चा है। आपका ही बोलबाला होगा, अंजाम के लिहाज़ से आप और आप वाले ही ग़ालिब रहेंगे। रब अपने वादे के ख़िलाफ़ कभी नहीं करता। बिला शक व शुबहा दीने रब ऊँचा होकर ही रहेगा। तू अपने रब से इस्तिग़फ़ार करता रह। आपको हुक्म देकर दरअसल आपकी उम्मत को इस्तिग़फ़ार पर आमादा करना है। दिन के आख़िरी और रात के इब्तिदाई वक़्त और दिन के इब्तिदाई और रात के इंतिहाई वक़्त, ख़ुसूसियत के साथ रब की पाकीज़गी और ता'रीफ़ बयान किया कर। जो लोग बातिल पर जमकर हक़ को दबा देते हैं दलाइल को कट हुज्जती से टाल देते हैं उनके दिलों में सिवा तकब्बुर के और कुछ नहीं। उनमें इत्तिबाए हक़ से सरकशी है। यह रब की बातों की इज़्ज़त जानते ही नहीं लेकिन जो तकब्बुर और जो ख़ुदी और जो अपनी ऊँचाई वह चाहते हैं वह उन्हें हर्गिज़ हासिल नहीं होने वाली। इनके मक़्सद बातिल हैं, इनके मतलब ला हासिल हैं। अल्लाह की पनाह तलब कर कि इन जैसा हाल किसी भले आदमी का न हो और इन नुख़ुव्वत पसंद लोगों की शरारत से भी अल्लाह की पनाह चाहा कर। यह आयत यहूदियों के बारे में नाज़िल हुई है। यह कहते थे कि दज्जाल उन्हीं में से होगा और उसके ज़माने में यह ज़माने के बादशाह हो जाएँगे। पस अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया कि फ़ित्न-ए-दज्जाल से अल्लाह की पनाह तलब किया करो। वह समीअ बसीर है लेकिन आयत को यहूदियों के बारे में नाज़िलशुदा बतलाना और दज्जाल की बादशाही और उसके फ़ित्ने से पनाह का हुक्म यह सब चीज़ें तकल्लुफ़ से पुर हैं। माना कि यह तफ़्सीर इब्ने अबी हातिम में है मगर यह क़ौल नदारत से ख़ाली नहीं, ठीक यही है कि आम है वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

***

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَلَا الْمُسِيْٓءُ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾

तर्जुमा : ''आसमान व ज़मीन की पैदाइश यक़ीनन इंसान की पैदाइश से बहुत बड़ा काम है यह और बात है कि अक्सर लोग बेइल्म हैं। (57) अँधा और देखता बराबर नहीं, न वह लोग जो ईमान लाए और भलेकाम किये, बदकारों के बराबर हैं तुम बहुत कम नसीहत हासिल कर रहे हो। (58) क़ियामत बिल यक़ीन और बिला शुब्हा आने वाली है। यह और बात है कि बहुत से लोग न मानें। (59) तुम्हारे रब का फ़र्मान सरज़द हो चुका है कि मुझसे दुआ करते रहो, मैं तुम्हारी दुआओं को क़बूल करता रहूँगा। यक़ीन मानो कि जो लोग मेरी इबादत से ख़ुद सरी करते हैं वह अभी अभी ज़लील होकर जहन्नम में पहुँच जाएँगे।'' (60)

इंकारे क़ियामत आख़िर क्यूँ...? (आ. 57 से 60) : अल्लाह तआला क़ादिरे मुत्लक़ फ़र्माता है कि मख़्लूक़ को वह क़ियामत के दिन नए सिरे से ज़रूर ज़िन्दा करेगा जबकि उसने आसमान व ज़मीन जैसी ज़बरदस्त मख़्लूक़ को पैदा कर दिया तो इंसान का पैदा करना या उसे बिगाड़कर बनाना उस पर क्या मुश्किल है? और आयत में इर्शाद है कि क्या ऐसी बात और इतनी वाज़ेह्र ह्रक़ीक़त भी झुठलाए जाने के क़ाबिल है कि जिस अल्लाह ने ज़मीनो आसमान को पैदा कर दिया, और उस इतनी बड़ी चीज़ की पैदाइश से न वह थका, न आजिज़ हुआ, उस पर मुर्दों को दोबारा ज़िन्दा करना क्या मुश्किल है। ऐसी साफ़ दलील भी जिसके सामने झुठलाने की चीज़ हो उसकी मालूमात यक़ीनन नोह्रा करने के क़ाबिल हैं। उसकी जिहालत में क्या शक है? जो ऐसी मोटी बात भी न समझ सके। ताज्जुब है कि बड़ी से बड़ी चीज़ को तो तस्लीम किया जाए और उससे बहुत छोटी चीज़ को मह्राल (असंभव) माना जाए। अँधे और देखते का फ़र्क़ ज़ाहिर है, ठीक इसी त़रह्र मुस्लिम व मुज्रिम का फ़र्क़ है। अक्सर लोग किस क़द्र कम नसीहत क़बूल करते हैं। यक़ीन मानो कि क़ियामत का आना ह्रत्मी (यक़ीनी) है फिर भी उसकी तक्ज़ीब करने और उसे बावर न करने से बेशतर लोग बाज़ नहीं आते। एक

यम्नी शैख़ अपनी सुनी हुई रिवायत बयान करते हैं कि क़ुर्बे क़ियामत लोगों पर बलाएँ बरस पड़ेंगी और सूरज की हरारत सख़्त तेज़ हो जाएगी, वल्लाहु आलम!

दुआओं को शर्फ़े क़बूलियत कौन बख़्शता है? अल्लाह तबारक व तआला के इस एहसान के तसद्दुक़ हो जाएँ कि वह हमें दुआ की हिदायत करता है और क़बूलियत का वादा करता है। इमाम सुफ़्यान सौरी (रह.) अपनी दुआओं में फ़र्माया करते थे, ऐ वह अल्लाह! जिसे वह बन्दा बहुत ही प्यारा लगता है जो बकसरत उससे दुआएँ किया करे। और वह बन्दा उसे सख़्त बुरा मालूम होता है जो उससे दुआ न करे। ऐ मेरे रब! यह सिफ़त तो सिर्फ़ तेरी ही है, शायर कहता है

الله يغضب ان تركت سواله وبنى ادم حين يسال يغضب

यानी "अल्लाह तआला की शान यह है कि जब तू उससे न माँगे तो वह नाख़ुश होता है और इंसान की यह हालत है कि उससे माँगो तो वह रूठ जाता है।" हज़रत कअ़ब अह़बार (रह.) फ़र्माते हैं "इस उम्मत को तीन चीज़ें ऐसी दी गई हैं कि इससे पहले किसी उम्मत को नहीं दी गईं सिवा नबी के। देखो हर नबी को अल्लाह का फ़र्मान यह हुआ है कि तू अपनी उम्मत पर गवाह है लेकिन तमाम लोगों पर गवाह अल्लाह तआला ने तुम्हें बनाया है। अगले नबियों से कहा जाता था कि तुझ पर दीन में हर्ज नहीं लेकिन इस उम्मत से फ़र्माया गया कि तुम्हारे दीन में तुम पर कोई हर्ज नहीं। हर नबी से कहा जाता था कि मुझे पुकार मैं तेरी पुकार क़बूल करूँगा लेकिन इस उम्मत को फ़र्माया कि तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार क़बूल करूँगा। (इब्ने अबी हातिम) अबू यअ़ला में है "अल्लाह तआला ने हुज़ूर (ﷺ) से फ़र्माया कि चार ख़स्लतें हैं जिनमें से एक मेरे लिए है एक तेरे लिए, एक तेरे और मेरे बीच और एक तेरे बीच और मेरे दूसरे बन्दों के बीच। जो ख़ास मेरे लिए है वह तो यह सिर्फ़ मेरी ही इबादत कर और मेरे साथ किसी को शरीक न कर। और जो तेरा हक़ मुझ पर है वह यह कि तेरे हर अमले ख़ैर का भरपूर बदला मैं तुझे दूँगा। और जो तेरे मेरे बीच है वह यह कि तू दुआ कर और मैं क़बूल किया करूँ और चौथी ख़स्लत जो तेरे और मेरे दूसरे बन्दों के बीच है वह यह कि तू उनके लिए वह चाह जो अपने लिए पसंद करता है।" (मुस्नदे अबी यअ़ला : 2757; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, सालेह मुर्री ज़ईफ़ मशहूर, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 1/51) मुस्नदे अह़मद में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "दुआ ऐन इबादत है फिर आपने यही आयत तिलावत की" यह हदीस सुनन में भी है। (मुस्नद अहमद : 4/271; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल मोमिन : 3247; वहुव सह़ीहुन; अबूदाऊद : 1479; इब्ने माजा : 3828; इब्ने ह़िब्बान : 890) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सह़ीह़ कहते हैं। इब्ने हिब्बान और हाकिम (रह.) भी इसे अपनी सह़ीह़ में लाये हैं।

मुस्नद में है "जो शख़्स अल्लाह से दुआ नहीं करता अल्लाह तआला उस पर ग़ज़बनाक होता है।" (अहमद : 2/443; तिर्मिज़ी : 3373; इब्ने माजा : 3827; और इसकी सनद ज़ईफ़ है, अबू सालेह ख़ूज़ी रावी लीनुल हदीस है।) हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा अंसारी (रज़ि.) की मौत के बाद उनकी तलवार की म्यान में से एक पर्चा निकला जिसमें तहरीर था कि तुम अपने रब की रहमतों के मवाक़ेअ़ को तलाश करते रहो।

बहुत मुम्किन है कि किसी ऐसे वक़्त तुम दुआए ख़ैर करो कि उस वक़्त रब की रहमत जोश में हो और तुम्हें वह सआदत मिल जाए जिसके बाद कभी भी हसरत व अफ़सोस करना न पड़े।'' आयत में इबादत से मुराद दुआ और तौहीद है। मुस्नद अहमद में है कि ''क़ियामत के दिन मुतकब्बिर लोग चींटियों की शक्ल में जमा होंगे। छोटी से छोटी चीज़ भी उनके ऊपर होगी। उन्हें बोलिस नामी जहन्नम के जेलख़ाने में डाला जाएगा और भड़कती हुई सख़्त आग उनके सरों पर शोले मारेगी। उन्हें दोज़ख़ियों का लहू पीप और पाख़ाना पेशाब पिलाया जाएगा।'' (अहमद : 2/179; व मुस्नदे हुमैदी बि तहक़ीक़ी : 597; और इसकी सनद हसन है।)

इब्ने अबी हातिम में है एक बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं मैं मुल्के रूम में काफ़िरों के हाथों में गिरफ़्तार हो गया था। एक दिन मैंने सुना कि हातिफ़े ग़ैब एक पहाड़ी की चोटी से बआवाज़े बुलंद कह रहा है, ऐ अल्लाह! उस पर ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए तेरे सिवा दूसरे की ज़ात से उम्मीदें वाबस्ता रखता है। ऐ अल्लाह! उस पर भी ताज्जुब है जो तुझे पहचानते हुए अपनी हाजतें दूसरों के पास ले जाता है। फिर ज़रा ठहरकर एक पुरज़ोर आवाज़ और लगाई और कहा पूरा ताज्जुब उस पर है जो तुझे पहचानते हुए दूसरे की रज़ामंदी हासिल करने के लिए वह काम करता है जिनसे तू नाराज़ हो जाए। यह सुनकर मैंने बुलंद आवाज़ से पूछा कि तू कोई जिन्न है या इंसान? जवाब आया कि इंसान हूँ, तू इन कामों से अपना ध्यान हटा ले जो तुझे फ़ायदा न दें और उन कामों में मशग़ूल हो जा जो तेरे फ़ायदे के हैं।

***

اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ
شَیْءٍ ۘ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۫ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ
یَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ
فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۖۚ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ
الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ
الْعٰلَمِیْنَ ﴿٦٥﴾

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए रात बना दी कि तुम उसमें आराम हासिल करो और दिन को दिखलाने वाला बना दिया। बेशक अल्लाह तआला लोगों पर फ़ज़्लो करम वाला है लेकिन अक्सर लोग शुक्रगुज़ारी नहीं करते। (61) यही अल्लाह है तुम सबका पालने पोसने वाला हर चीज़ का ख़ालिक़ उसके सिवा कोई मअबूद नहीं फिर किस तरह तुम फिरे जाते हो। (62) उसी तरह वह लोग भी फिरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (63) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह और आसमान को छत बना दिया और सूरतें बनाईं और बहुत अच्छी बनाईं और तुम्हें उम्दा उम्दा चीज़ें खाने को अता कीं यही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है। पस बहुत ही बरकतों वाला अल्लाह है सारे जहान का परवरिश करने वाला जो ज़िन्दा है। (64) जिसके सिवा कोई उलूहियत वाला नहीं, पस तुम ख़ालिस उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो। तमाम ख़ूबियाँ अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालनहार है।" (65)

अल्लाह तआला की बेशुमार नेअमतों का तज़्किरा (आ. 61 से 65) : अल्लाह तआला अपना एहसान बयान फ़र्माता है कि उसने रात को सुकून व राहत की चीज़ बनाई और दिन को रोशन चमकीला किया ताकि हर शख़्स को अपने काम काज में, सफ़र में, तलबे मआश में, सहूलत हो और दिन भर का कसल (सुस्ती) और थकान रात के सुकून व आराम से उतर जाए। मख़्लूक़ पर अल्लाह तआला बड़े ही फ़ज़्लो करम करने वाला है लेकिन अक्सर लोग रब की नेअमतों की नाशुक्री करते हैं। उन चीज़ों को पैदा करने वाला और यह राहत व आराम के सामान मुहय्या करने वाला वही अल्लाह वाहिद है जो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है। उसके सिवा कोई लायक़े इबादत नहीं, न उसके सिवा और कोई मख़्लूक़ की परवरिश करने वाला है, फिर तुम क्यूँ उसके सिवा दूसरों की इबादत करते हो? जो ख़ुद मख़्लूक़ हैं किसी चीज़ को उन्होंने पैदा नहीं किया बल्कि जिन बुतों की तुम पूजा करते हो वह तो ख़ुद तुम्हारे अपने हाथों के बनाये हुए हैं। उनसे पहले के मुश्रिकीन भी इसी तरह बहके और बेदलील हुज्जत ग़ैरुल्लाह की इबादत करने लगे, ख़्वाहिशे नफ़्सानी को सामने रखकर दलाइले रब्बानी की तक्ज़ीब की और जिहालत को आगे रखकर बहकते भटकते रहे। अल्लाह तआला ने ज़मीन को तुम्हारे लिए क़रारगाह बनाया यानी ठहरी हुई और फ़र्श की तरह बिछी हुई कि उस पर तुम अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो, चलो फिरो, आओ जाओ। पहाड़ों को उसमें गाड़कर उसे ठहरा दिया कि अब हिल जुल नहीं सकती, उसने आसमान को छत बनाया है हर तरह महफ़ूज़ है, उसी ने तुम्हें बेहतरीन सूरतों में पैदा किया। हर जोड़ ठीक ठाक और दीदा ज़ेब बनाया। मौज़ूँ क़ामत (लिमिट हाइट), मुनासिब अअज़ा, सुडोल बदन, ख़ूबसूरत चेहरा अता किया। नफ़ीस और बेहतर चीज़ें खाने पीने को दीं। पैदा उसने किया, बसाया उसने, खिलाया पिलाया उसने, पहनाया ओढ़ाया उसने, पस सहीह मआनी में ख़ालिक़ व राज़िक़ वही रब्बुल आलमीन है। जैसे सूरह बक़रह में फ़र्माया (يَاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ) (2/बक़रह : 21) यानी लोगों! अपने उस रब की इबादत करो जिसने तुम्हें और तुमसे अगलों को पैदा किया ताकि तुम बचो। उसी

ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से बारिश नाज़िल करके उसकी वजह से ज़मीन से फल निकालकर तुम्हें रोज़ियाँ दीं पस तुम बावजूद इन बातों के जानने के अल्लाह के शरीक औरों को न बनाओ, यहाँ भी अपनी यह सिफ़तें बयान करके इर्शाद फ़र्माया कि यही अल्लाह तआला तुम्हारा रब है और सारे जहान का रब भी वही है। वह बाबरकत है वह बुलंदी, पाकीज़गी, बरतरी और बुज़ुर्गी वाला है, वह अज़ल से है और अबद तक रहेगा। वह ज़िन्दा है जिस पर कभी मौत नहीं वही अव्वल व आख़िर ज़ाहिर व बातिन है। उसका कोई वस्फ़ किसी दूसरे में नहीं। उसका नज़ीर व अदील कोई नहीं। तुम्हें चाहिए कि उसकी तौहीद को मानते हुए उससे दुआएँ करते रहो और उसकी इबादत में मशग़ूल रहो। तमामतर ता'रीफ़ों का मालिक अल्लाह रब्बुल आलमीन ही है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं कि ''अहले इल्म की एक जमाअत से मंक़ूल है कि ''ला इलाहा इल्लल्लाहु'' पढ़ने वाले को साथ ही (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ) (1/फ़ातिहा : 1) भी पढ़ना चाहिए ताकि इस आयत पर अमल हो जाए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से भी यह मरवी है। (हाकिम : 2/438; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अल्अअमश मुदल्लस व अन्अन) हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं जब तू (فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ) (40/ग़ाफ़िर : 14) पढ़े तो ला इलाहा इल्लल्लाहु कह लिया कर और उसके साथ ही (اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ) (1/फ़ातिहा : 1) पढ़ लिया कर। हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) हर नमाज़ के सलाम के बाद (ला इलाहा इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर. ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाह. ला इलाहा इल्लल्लाहु वला नअबुदु इल्ला इय्याहु लहुन्नअमतु वलहुल फ़ज़्लु वलहुस्सनाउल हसनु ला इलाहा इल्लल्लाहु मुख़्लिसीना लहुद्दीना वलौ करिहल काफ़िरून) पढ़ा करते थे और फ़र्माया करते थे कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) भी इन कलिमात को हर नमाज़ के बाद पढ़ा करते थे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिहबाबुज़्ज़िक्रि बअदस्सलाति व बयानु सिफ़तिही : 594; अबूदाऊद : 1506; इब्ने हिब्बान : 2008)

***

قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ
مِنْ رَّبِّيْ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا
شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِىْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ﴿٦٨﴾

तर्जुमा : "तू कह दे कि मुझे उनकी इबादत से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो इस बिना पर कि मेरे पास मेरे रब की दलीलें पहुँच चुकी हैं। मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं तमाम जहानों के रब का ताबेअ फ़र्मान हो जाऊँ। (66) जिसने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून के लोथड़े से पैदा किया, फिर तुम्हें बच्चा करके निकालता है फिर तुम्हें बढ़ाता है कि तुम पूरी कुव्वत को पहुँच जाओ फिर बूढ़े बड़े हो जाओ तुममें कुछ उससे पहले मर जाते हैं वह तुम्हें छोड़ देता है। ताकि तुम मुद्दते मुअय्यन तक पहुँच जाओ और ताकि तुम सोच समझ लो (67) वही है जो जिलाता और मारता है फिर जब वह किसी काम का करना मुक़र्रर करता है तो उसे सिर्फ़ यह कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है।" (68)

इंसान की पैदाइश का मरहलेवार ज़िक्र (आ. 66 से 68) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम इन मुश्रिकों से कह दो कि अल्लाह तआला अपने सिवा हर किसी की इबादत से अपनी मख़्लूक़ को मना कर चुका है उसके सिवा और कोई इबादत का मुस्तहिक़ नहीं, उसकी बहुत बड़ी दलील उसके बाद की आयत है जिसमें फ़र्माया कि उसी वहदहू ला शरीक लहू ने तुम्हें मिट्टी से, फिर नुत्फ़े से फिर ख़ून की फटकी से पैदा किया। उसी ने तुम्हे माँ के पेट से बच्चे की सूरत में निकाला। इन तमाम हालात को वही बदलता रहा। फिर उसी ने बचपन से जवानी तक तुम्हें पहुँचाया। वही जवानी के बाद बुढ़ापे तक ले जाएगा। यह सब काम उसी एक के हुक्मे तक़्दीर और तदबीर से होते हैं, फिर किस क़द्र नामुरादी है कि उसके साथ दूसरे की इबादत की जाए। कुछ उससे पहले ही फ़ौत हो जाते हैं। यानी कच्चे पने में ही गिर जाते हैं, हमल साक़ित हो जाता है। कुछ बचपन में कुछ जवानी में कुछ अधेड़ उम्र में बुढ़ापे से पहले ही मर जाते हैं। चुनाँचे और जगह कुरआन पाक में है (وَنُقِرُّ فِى الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ) (22/हज्ज : 5) यानी हम माँ के पेट में ठहराते हैं जब तक चाहें। यहाँ फ़र्मान है कि ताकि तुम वक़्ते मुक़र्ररा तक पहुँच जाओ और तुम सोचो समझो। यानी अपनी हालतों के उस इंक़िलाब से तुम ईमान ले आओ कि इस दुनिया के बाद भी तुम्हें नई ज़िन्दगी में एक रोज़ खड़ा होना है। वही जिलाने मारने वाला है। उसके सिवा कोई मौत, ज़िन्दगी पर क़ादिर नहीं। उसके किसी हुक्म को किसी फ़ैसले को किसी तक़र्रुर को किसी इरादे को कोई तोड़ने वाला नहीं। जो वह चाहता है होकर ही रहता है और जो वह न चाहे, नामुम्किन है कि वह हो जाए।

***

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى يُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ
وَالسَّلٰسِلُ ؕ يُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ فِي الْحَمِيْمِ ۙ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ
مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ
قَبْلُ شَيْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي
الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾ اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٦﴾

तर्जुमा : "क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं वह किस तरह फेर दिये जाते हैं। (69) जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जो हमने अपने रसूलों के साथ भेजा उन्हें अभी अभी हक़ीक़ते हाल मालूम हो जाएगी (70) जबकि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और ज़ंजीरें होंगी, घसीटे जाएँगे। (71) खौलते हुए पानी में फिर जहन्नम में आग में जलाये जाएँगे। (72) फिर उनसे पूछा जाएगा कि जिन्हें तुम शरीक करते थे वह कहाँ हैं? (73) जो अल्लाह के सिवा थे वह कहेंगे कि वह तो हमसे बहक गए बल्कि हम तो उससे पहले किसी को भी पुकारते ही न थे। अल्लाह तआला काफ़िरों को इसी तरह गुमराह करता है। (74) यह बदला है उस चीज़ का जो तुम ज़मीन में नाहक़ फूले न समाते थे और बेजा इतराते फिरते थे। (75) अब आओ जहन्नम में हमेशा रहने के लिए उसके दरवाज़ों में चले जाओ। क्या ही बुरी और ज़लील जगह है तकब्बुर करने वालों की।" (76)

अम्बिया (عليهم السلام) को झुठलाने वालों का इब्रतनाक अंजाम (आ. 69 से 76) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! क्या तुम्हें उन लोगों से ताज्जुब नहीं मालूम होता जो अल्लाह की बातों को झुठलाते हैं और अपने बातिल अक़ीदों के सहारे हक़ से अड़ते हैं। तुम नहीं देख रहे कि किस तरह इनकी अक़्लें

मारी गई हैं और भलाई को छोड़कर बुराई को किस बेतरह चिमट गए हैं। फिर उन बद किरदार कुफ़्फ़ार को डरा रहा है कि हिदायत व भलाई को झूठ जानने वाले कलामुल्लाह और कलामे रसूल के मुंकिर अपना अंजाम अभी देख लेंगे। जैसे फ़र्माया, झुठलाने वालों के लिए वैल है जबकि गर्दनों में तौक़ और ज़ंजीरें पड़ी होंगी और दारोग़ा-ए-जहन्नम घसीटते घसीटते फिर रहे होंगे, कभी हमीम में और कभी जहीम में। गर्म खोलेते हुए पानी में से घसीटे जाएँगे और जहन्नम की आग में झुलसाये जाएँगे। जैसे और जगह है यह है वह जहन्नम जिसे गुनहगार लोग झूठा जाना करते थे। अब यह उसके और आग जैसे गर्म पानी के बीच मारे मारे परेशाँ फिरा करें। और आयतों में इनका ज़क्कूम खाना और गर्म पानी पीना बयान करके फ़र्माया (ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ) (37/साफ़्फ़ात : 67) कि फिर इनकी बाज़गश्त तो जहन्नम ही की तरफ़ है। सूरह वाक़िया में अस्हाबे शिमाल का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया "बाएँ हाथ वाले किस क़द्र बुरे हैं वह आग में हैं और गर्म पानी में और स्याह धूएँ के साये में जो न ठण्डा है, न सूदमंद।" आगे चलकर फ़र्माया, "ऐ बहके हुए झुठलाने वालो! अल्बत्ता सेंड का दरख़्त खाओगे उसी से अपने पेट भरोगे फिर उस पर जलता जलता पानी पियोगे और इस तरह जिस तरह तूनस वाला ऊँट पीता है। आज इंसाफ़ के दिन उनकी मेहमानी यही होगी और जगह फ़र्माया (إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ) (44/दुख़ान : 43) यानी यक़ीनन गुनहगारों का खाना ज़क़्क़ूम का दरख़्त है जो मिस्ल पिघले हुए तांबे के है जो पेटों में खोलता रहता है जैसे तेज़ गर्म पानी। उसे पकड़ो और धकेलते हुए बीचों बीच जहन्नमें पहुँचाओ, फिर उसके सर पर तेज़ गर्म जलते जलते पानी का अज़ाब बहाओ। ले चख तू बड़ा ही ज़ी इज़्ज़त और बड़ी ही ता'ज़ीम तकरीम वाला शख़्स था, यही है जिससे तुम शक शुब्हा में थे। मक़्सद यह है कि एक तरफ़ से तो वह यह दुख सह रहे होंगे जिनका बयान हुआ और दूसरी जानिब से उन्हें ज़लीलो ख़ार रूस्याह व नार्हिजार करने के लिए बतौर इस्तिहाज़ा और तमस्ख़ुर के, बतौरे डाँट और डपट के, बतौरे हक़ारत और ज़िल्लत के उनसे यह कहा जाएगा जिसका ज़िक्र हुआ। इब्ने अबी हातिम की एक ग़रीब मरफ़ूअ हदीस में है कि "एक जानिब से काला बादल उठेगा जिसे जहन्नमी देखेंगे और उनसे पूछा जाएगा कि तुम क्या चाहते हो? वह बादल को देखते हुए दुनिया के अंदाज़ पर कहेंगे कि यह चाहते हैं कि यह बरसे, वहीं उसमें से तौक़ और ज़ंजीरें और आग के अंगारे बरसने लगेंगे।(इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ख़ालिद बिन दुरैक लम युदरिक यअला बिन उमय्या (रह.)) जिसके शोले उन्हें जलाएँगे झुलसाएँगे और वह तौक़ व ज़ंजीर उनके तौक़ व ज़ंजीर के साथ इज़ाफ़ा कर दिये जाएँगे।" फिर उनसे कहा जाएगा कि क्यूँ जी दुनिया में अल्लाह तआला के सिवा जिन जिनको पूजते रहे वह सब आज कहाँ हैं? वह तुम्हारी मदद को नहीं आए? क्यूँ तुम्हें यूँ बेकसी और कसमपुर्सी की हालत में छोड़ दिया? तो वह जवाब देंगे कि हाँ! वह तो सब आज नापैद हो गये फिर उन्हें कुछ ख़याल आएगा और कहेंगे नहीं! नहीं! हमने तो उनकी इबादत कभी नहीं की। जैसे ओर आयत में है (وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ) (6/अन्आम : 23) ऐ अल्लाह! हमें तेरी क़सम! हम मुश्रिक न थे। यह कुफ़्फ़ार इस तरह बेकारी में खाये रहते हैं। उनसे फ़रिश्ते कहेंगे कि यह बदला है उसका जो दुनिया में बेवजह ऐंठते अकड़ते फिरते थे, तकब्बुर तजब्बुर पर चुस्त कमर रहते थे, लो अब आ जाओ जहन्नम के इन दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ अब

हमेशा यहीं पड़े रहना। तुम जैसे ऐंठने वालों की ही यह बुरी मंज़िल और बुरी जाये पनाह है। जिस क़द्र तकब्बुर करते थे उतने ही ज़लीलो ख़्वार आज बनोगे जितने चढ़े थे, उतने ही गिरोगे, वल्लाहु अ़अ्लम!

***

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ
وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ
لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا
عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ
فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

तर्जुमा : "पस तू सब्र कर, अल्लाह का वादा सच्चा है उन्हें हमने जो वादे दे रखे हैं उनमें से कुछ हम तुझे दिखाएँ तो या यूँ ही हम तुझे फ़ौत कर लें तो इनका लौटाया जाना तो हमारी ही तरफ़ है। (77) यक़ीनन हम तुझसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं जिनमें से कुछ के वाक़ियात हम तुझे सुना चुके हैं और उनमें से कुछ के क़िस्से तो हमने तुझसे सुनाये ही नहीं। किसी रसूल का यह मक़्दूर न था कि कोई मोजिज़ा अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर ला सके फिर जिस वक़्त अल्लाह का हुक्म आएगा हक़्क़ानियत का फ़ैसला कर दिया जाएगा और उस जगह अहले बातिल ख़सारे में रह जाएँगे। (78) अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाये पैदा किये जिनमें से कुछ पर तुम सवार होते हो और कुछ को तुम खाते हो। (79) और भी तुम्हारे लिए उनमें बहुत से नफ़ा हैं और अपने सीनों में छुपी हुई हाजतों को उन ही पर सवारी करके तुम हासिल करते हो और उन चौपायों और कश्तियों पर सवार कराये जाते हो। (80) अल्लाह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है पस तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इंकार करते रहोगे।" (81)

सब्र करो फ़तह तुम्हारी ही होगी (आ. 77 से 81) : अल्लाह तआला अपने रसूल (ﷺ) को सब्र का हुक्म देता है कि जो तेरी नहीं मानते तुझे झूठा कहते हैं तू उनकी ईज़ाओं (तकलीफ़ों) पर सब्रो सिहार कर। उन सब पर फ़तह व नुसरत तुझे मिलेगी। अंजामकार हर तरह तेरे ही हक़ में बेहतर रहेगा। तू और तेरे मानने वाले ही तमाम दुनिया पर ग़ालिब होकर रहेंगे। और आख़िरत तो सिर्फ़ तुम्हारी ही है पस या तो हम अपने वादे की कुछ चीज़ें तुझे तेरी ज़िन्दगी में दिखा देंगे और यही हुआ भी। बद्र वाले दिन कुफ़्र का धड़ और सर तोड़ दिया गया। कुरेशियों के बड़े बड़े सरदार मारे गए। आख़िरकार मक्का फ़तह हो गया और आप दुनिया से रुख़्सत न हुए जब तक कि तमाम जज़ीर-ए-अरब आपके ज़ेरेनगीं (अण्डर में) न हो गया और आपके दुश्मन आपके सामने ज़लीलोख़ार न हुए और आपकी आँखें रब ने ठण्डी न कर दीं। या अगर हम तुझे फ़ौत ही कर लें तो इनका लौटना तो हमारी ही जानिब है। हम इन्हें आख़िरत के दर्दनाक सख़्त अज़ाब में मुब्तला करेंगे। फिर मज़ीद तसल्ली के तौर पर फ़र्मा रहा है कि तुझसे पहले भी हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं जिनमें से कुछ के हालात हमने तेरे सामने बयान कर दिये हैं और कुछ के क़िस्से हमने बयान भी नहीं किये जैसे कि सूरह निसाअ में भी फ़र्माया गया है पस जिनके क़िस्से मज़्कूर हैं देख लो कि क़ौम से उनकी कैसी कुछ निपटी। और कुछ के वाक़ियात हमने बयान नहीं किये वह बनिस्बत उनके बहुत ज़्यादा हैं जैसे कि हमने सूरह निसाअ की तफ़्सीर के मौक़े पर बयान कर दिया है, वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नत! फिर फ़र्माया यह नामुम्किन है कि कोई रसूल अपनी मर्ज़ी से मोजिज़ात और ख़रक़े आदात दिखाए हाँ! अल्लाह के हुक्म के बाद क्यों कि रसूल (ﷺ) के क़ब्ज़े में कोई चीज़ नहीं। हाँ! जब अज़ाबे इलाही आ जाता है फिर तक्ज़ीब व तर्दीद करने वाले कुफ़्फ़ार बच नहीं सकते, मोमिन नजात पा लेते हैं और बातिल परस्त बातिलकार तबाह हो जाते हैं।

(अन्आम) यानी ऊँट, गाय, बकरी, अल्लाह तआला ने इंसान के तरह तरह के नफ़े के लिए पैदा किये हैं, सवारियों के काम आते हैं, खाये जाते हैं। ऊँट सवारी का काम भी दे, खाया भी जाए, दूध भी दे, बोझ भी उठाये और दूरदराज़ के सफ़र बाआसानी तै करा दे। गाय गोश्त खाने के काम भी आए, दूध भी दे, हल में भी जुते, बकरी का गोश्त भी खाया जाए, और दूध भी पिया जाए। फिर उन सबके बाल बीसियों कामों में आएँ जैसे कि सूरह अन्आम, सूरह नह्ल वग़ैरह में बयान हो चुका है। यहाँ भी यह मुनाफ़े बतौर इन्आम (एवार्ड) गिनवाये जा रहे हैं। दुनिया जहान में और उसके गोशे गोशे में और कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में और ख़ुद तुम्हारी जानों में उस अल्लाह की निशानियाँ मौजूद हैं। सच तो यह है कि उसकी अनगिनत निशानियों में से एक का भी कोई शख़्स सही मअनी में इंकारी नहीं हो सकता। यह और बात है कि हिये की फोड़ ले और आँखों पर ठीकरी रख ले।

***

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ
الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا
بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا
رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

तर्जुमा : "क्या इन्होंने ज़मीन में चल फिरकर अपने से पहलों का अंजाम नहीं देखा? जो इनसे तादाद में ज़्यादा थे, कुव्वत में सख़्त थे, ज़मीन में बहुत सारी यादगार छोड़ी थीं। उनके किये कामों ने उन्हें कुछ भी फ़ायदा न दिया। (82) जब कभी उनके पास उनके रसूल खुली निशानियाँ लेकर आए तो यह अपने पास के इल्म पर इतराने लगे, बिल्आख़िर जिस चीज़ को मज़ाक़ में उड़ा रहे थे वही उन पर उलट पड़ी। (83) हमारा अ़ज़ाब देखते ही कहने लगे कि रब वाहिद पर हम ईमान लाये और जिन जिनको हम शरीके रब बना रहे थे हमने उन सबसे कुफ़्र किया (84) लेकिन हमारे अ़ज़ाब के मुआयने के बाद के ईमान ने उन्हें कोई नफ़ा न दिया। अल्लाह ने अपना मामूल यही मुक़र्रर कर रखा है जो उसके बन्दों में बराबर चला आ रहा है। उस जगह काफ़िर ख़राब व ख़स्ता हुए।" (85)

अ़ज़ाब देखकर ईमान लाने का क्या फ़ायदा (आ. 82 से 85) : अल्लाह तआ़ला उन अगले लोगों की ख़बर दे रहा है जो रसूलों को उससे पहले झुठला चुके हैं। साथ ही बतलाता है कि उसका नतीजा क्या कुछ उन्होंने भुगता। वह क़वी, थे, ज़्यादा थे, ज़मीन में निशानात इमारतें वग़ैरह भी ज़्यादा रखने वाले थे और बड़े मालदार थे लेकिन कोई चीज़ उनके काम न आई किसी ने अल्लाह के अ़ज़ाब को उनसे दूर किया न कम किया न हटाया न टाला। यह थे ही ग़ारत किये जाने के क़ाबिल क्योंकि जब इनके पास अल्लाह के क़ासिद साफ़ साफ़ दलीलें, रोशन हुज्जतें, खुले मोजिज़ात पाकीज़ा ता'लीमात लेकर आए तो उन्होंने आँख भरकर देखा तक नहीं। अपने पास के उ़लूम पर मग़रूर हो गए और रसूलों की ता'लीम की हक़ारत करने लगे। कहने लगे हम ही

ज़्यादा आलिम हैं हिसाब किताब, अज़ाब सवाब कोई चीज़ नहीं। अपनी जिहालत को इल्म समझ बैठे। फिर तो अल्लाह का वह अज़ाब आया कि उनके बनाये कुछ न बनी और जिसे झुठलाते थे जिस पर नाक भँवें चढ़ाते थे जिसे मज़ाक़ में उड़ाते थे उसी ने उन्हें तहस नहस कर दिया, भरकस निकाल डाला, तहो बाला कर दिया, रूई की तरह धुन दिया और भुस की तरह उड़ा दिया। अल्लाह के अज़ाबों को आता हुआ बल्कि आया हुआ देखकर ईमान का इक़रार किया और तौहीद भी तस्लीम कर ली और ग़ैरुल्लाह से साफ़ इंकार भी किया लेकिन उस वक़्त की न तौबा क़बूल, न ईमान लाना क़बूल, न इस्लाम मुसल्लम। फ़िरऔन ने भी डूबते हुए कहा था कि मेरा उस अल्लाह पर ईमान है जिस पर बनी इस्राईल का ईमान है मैं उसके सिवा किसी को लायक़े इबादत नहीं मानता, मैं इस्लाम क़बूल करता हूँ। अल्लाह की तरफ़ से जवाब मिलता है कि अब ईमान लाना बेकार है, बहुत नाफ़र्मानियाँ और शरअंगेज़ियाँ कर चुके हो। हज़रत मूसा (عليه السلام) ने भी उस सरकश के लिए यही बद दुआ की थी कि ऐ अल्लाह! फ़िरऔनियों के दिलों को इस क़द्र सख़्त करदे कि अज़ाबे अलीम देख लेने तक उन्हें ईमान नसीब न हो। पस यहाँ भी फ़र्माने बारी है कि अज़ाबों का मुआयना करने पर ईमान की क़ुबूलियत ने उन्हें कोई फ़ायदा न दिया। यह हुक्मे इलाही आम है। जो भी अज़ाबों को देखकर तौबा करे उसकी तौबा क़बूल नहीं होगी। हदीस शरीफ़ में है "ग़रग़रे से पहले तक की तौबा क़बूल है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब इन्नल्लाह यक़्बलुत्तौबत... : 3537; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4253; शैख़ अल्बानी (रह.) ने इस रिवायत को हसन क़रार दिया है। देखिए (सहीहुल जामेअ : 1903) जब दम सीने में अटका, रूह हल्क़ूम तक पहुँच गई, फ़रिश्तों को देख लिया अब कोई तौबा नहीं।" इसीलिए आख़िर में इर्शाद फ़र्माया कि कुफ़्फ़ार टोटे और घाटे में ही हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह मोमिन की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह हाम मीम अस्सज्दा (फुस्सिलत) - 41

आयात : 54 मक्की पैराग्राफ : 7

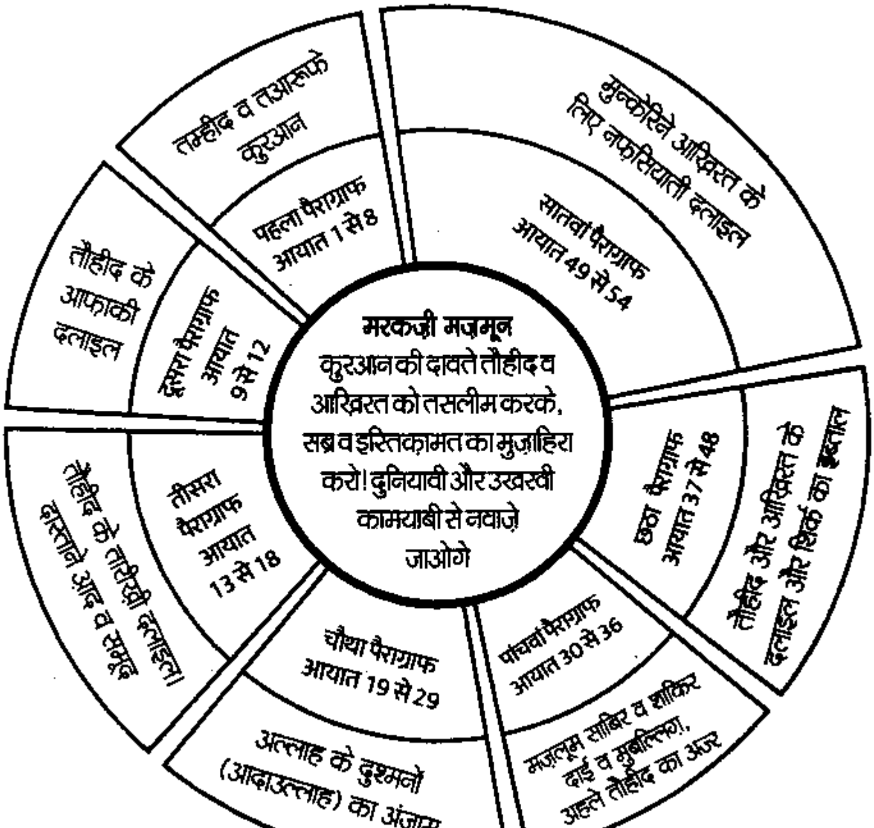

तफ़्सीर सूरह हामीम अस्सज्दा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

حٰمٓ ① تَنۡزِیۡلٌ مِّنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ② کِتٰبٌ فُصِّلَتۡ اٰیٰتُهٗ قُرۡاٰنًا عَرَبِیًّا لِّقَوۡمٍ یَّعۡلَمُوۡنَ ③ بَشِیۡرًا وَّنَذِیۡرًا ۚ فَاَعۡرَضَ اَکۡثَرُهُمۡ فَهُمۡ لَا یَسۡمَعُوۡنَ ④ وَقَالُوۡا قُلُوۡبُنَا فِیۡۤ اَکِنَّةٍ مِّمَّا تَدۡعُوۡنَاۤ اِلَیۡهِ وَفِیۡۤ اٰذَانِنَا وَقۡرٌ وَّمِنۡۢ بَیۡنِنَا وَبَیۡنِكَ حِجَابٌ فَاعۡمَلۡ اِنَّنَا عٰمِلُوۡنَ ⑤

तर्जुमा : ''हामीम!(1) उतारी हुई है बड़े मेहरबान बहुत रह़म करने वाले की तरफ़ से। (2) किताब है जिसकी आयतों की वाज़ेह तफ़्सील की गई है। क़ुरआन अरबी ज़ुबान में है उस क़ौम के लिए जो जानती है।(3) ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और धमकाने वाला फिर भी इनके अक्सरों ने मुँह फेर लिया और वह सुनते ही नहीं। (4) और कहते हैं कि तू जिसकी तरफ़ हमें बुला रहा है हमारे दिल तो उससे पर्दे में हैं और हमारे कानों में गिरानी है और हममें और तुझमें एक हिजाब है। अच्छा तू अब अपना काम किये जा, हम भी यक़ीनन काम करने वाले हैं।'' (5)

कुफ़्फ़ारे मक्का का हुज़ूर (ﷺ) को लालच देना (आ. 1 से 5) : फ़र्माता है कि यह अरबी का क़ुरआन, रब्बे रह़मान का उतारा हुआ है। जैसे और आयत में फ़र्माया, ''इसे तेरे रब के हुक्म से रूहुल अमीन ने ह़क़ के साथ नाज़िल किया है।'' और आयत में है रूहुल अमीन ने इसे तेरे दिल पर इसलिए नाज़िल किया है कि तू लोगों को आगाह करने वाला बन जाए। इसकी आयतें मुफ़स्सल हैं, इनके मआनी ज़ाहिर हैं, अह़काम मज़बूत हैं, अल्फ़ाज़ वाज़ेह और आसान हैं, जैसे और आयत में है (کِتٰبٌ اُحۡکِمَتۡ اٰیٰتُهٗ) (11/हूद : 1) यह किताब है जिसकी आयतें मुह़कम व मुफ़स्सल हैं, यह कलाम है ह़कीम व ख़बीर अल्लाह का। लफ़्ज़ के

ऐतिबार से मुअज्जज़ और मअनी के ऐतिबार से मुअज्जज़। बातिल न उसके आगे से आ सके न पीछे से। हकीम व हमीद रब की तरफ़ से उतरा हुआ है। इस बयान व वज़ाहत को ज़ी इल्म समझ रहे हैं। यह एक तरफ़ मोमिनों को बशारत देता है दूसरी जानिब मुज्रिमों को धमकाता है, कुफ़्फ़ार को डराता है। बावजूद इन ख़ूबियों के फिर भी अक्सर कुरैशी मुँह फेरे हुए और कानों में टेंटियाँ भरे हुए हैं। फिर मज़ीद ढिटाई देखो कि ख़ुद कहते हैं कि तेरी पुकार से तो हमारे दिल पर्दों में हैं। और जो तू लाया है उससे हम तो बहरे हैं। और तेरे और हमारे बीच आड़ है। तेरी बातें न हमारी समझ में आईं न अक़्ल में समाईं। जा तू अपने तरीक़े पर अमल करता चला जा, हम अपना तरीक़ेकार हर्गिज़ न छोड़ेंगे। नामुम्किन है कि हम तेरी मान लें। मुस्नद अब्दुल्लाह बिन हुमैद में हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मंक़ूल है कि एक दिन कुरेशियों ने जमा होकर आपस में मुशाविरत की कि जादू कहानत और शेअरो शायरी में जो सबसे ज़्यादा हो, उसे लेकर उस शख़्स के पास चलें (यानी हुज़ूर स. के पास) जिसने हमारी जमाअत में तफ़रीक़ डाल दी है और हमारे काम में फूट डाल दी है और हमारे दीन में ऐबगीरी शुरू कर दी है। वह उससे मुनाज़िरा करे और उसे हरा दे और लाजवाब कर दे। सबने कहा ऐसा शख़्स तो हममें सिवा उत्बा बिन रबीआ के और कोई नहीं। चुनाँचे यह सब मिलकर उत्बा के पास आये और अपनी मुत्तफ़क़ा ख़्वाहिश ज़ाहिर की। उसने क़ौम की बात रख ली और तैयार होकर हुज़ूर (ﷺ) के पास आया। आकर कहने लगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! यह तो बता तू अच्छा है या अब्दुल्लाह? (यानी आप स. के वालिद साहब) आपने कोई जवाब न दिया। उसने दूसरा सवाल किया कि अच्छा जवाब दे, तू अच्छा है या तेरे दादा अब्दुल मुत्तलिब? हुज़ूर (ﷺ) इस पर भी ख़ामोश रहे। वह कहने लगा, सुन! अगर तू अपने बाप दादों को अच्छा समझता है तब तो तुझे मालूम है कि वह उन ही मअबूदों को पूजते थे जिन्हें हम सब पूजते हैं और जिनकी तू ऐबगीरी करता रहता है। और अगर तू अपने आपको उनसे बेहतर समझता है तो कलाम कर हम भी तेरी बात सुनें। अल्लाह तआला की क़सम! दुनिया में कोई इंसान अपनी क़ौम के लिए तुझसे ज़्यादा ज़रर रिसाँ पैदा नहीं हुआ। तूने हमारी शीराज़ाबन्दी तोड़ दी। तूने हमारे इत्तिफ़ाक़ को निफ़ाक़ से बदल दिया। तूने हमारे दीन को ऐबदार बताया और उसमें बुराई निकाली। तूने सारे अरब में हमें बदनाम और रुस्वा कर दिया। आज हर जगह यही तज़्किरा है कि कुरेशियों में एक जादूगर है, कुरेशियों में एक काहिन है। अब तो यही एक बात बाक़ी रह गयी है कि हममें आपस में सर फिटोल हो, एक दूसरे के सामने हथियार लगाकर आ जाएँ और यूँ ही लड़ा भिड़ाकर तू हम सबको फ़ना कर देना चाहता है। सुन! अगर तुझे माल की ख़्वाहिश है तो ले हम सब मिलकर तुझे इस क़द्र मालदार बना देते हैं कि अरब में तेरे बराबर कोई और अमीर न निकले। और अगर तुझे औरतों की ख़्वाहिश है तो हममें से जिसकी बेटी तुझे पसंद हो तू बता हम एक छोड़ दस दस शादियाँ तेरी करा देते हैं। यह सब कुछ कहकर अब उसने ज़रा साँस लिया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, बस कह चुके हो? उसने कहा हाँ! आप (ﷺ) ने फ़र्माया, अब मेरी सुनो! चुनाँचे आपने (बिस्मिल्लाह) पढ़कर इसी सूरत की तिलावत शुरू की और तक़रीबन डेढ़ रुकूअ (مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّ ثَمُوْدَ) (41/हामीम सज्दा : 13) तक पढ़ा। इतना सुनकर उत्बा बोल उठा, बस कीजिए, बस कीजिए। तेरे पास इसके सिवा कुछ नहीं ? आपने फ़र्माया, नहीं ! अब यह यहाँ से

उठकर चल दिया। क़ुरैश का मज्मआ उसका मुंतज़िर था। उन्होंने देखते ही पूछा, कहो क्या बात रही? उ़त्बा ने कहा, सुनो! तुम सब मिलकर जो कुछ उसे कह सकते थे मैं अकेले ने ही वह सब कुछ कह डाला।

उन्होंने कहा, फिर उसने कुछ जवाब भी दिया? कहा, हाँ! जवाब तो दिया लेकिन बख़ुदा मैं तो एक ह़र्फ़ भी उसका समझ नहीं सका। अल्बत्ता इतना समझा हूँ कि उन्होंने हम सबको अ़ज़ाबे आसमानी से डराया है जो अ़ज़ाब आ़दियों और समूदियों पर आया था। उन्होंने कहा, तुझे अल्लाह की मार, एक शख़्स अ़रबी ज़ुबान में जो तेरी अपनी ज़ुबान है तुझसे बातचीत कर रहा है और तू कहता है मैं समझा ही नहीं कि उसने क्या कहा। उ़त्बा ने जवाब दिया कि मैं सच कहता हूँ सिवा ज़िक्रे अ़ज़ाब के मैं कुछ नहीं समझा। (इब्ने अबी शैबा : 14/295; और इसकी सनद ह़सन है; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1818; ह़ाकिम : 2/253, 254; दलाइलुन्नबुव्वा : 2/202; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/20) बग़वी भी इस रिवायत को लाये हैं उसमें यह भी है कि जब ह़ुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की तो उ़त्बा ने आपके चेहरे मुबारक पर हाथ रख दिया और आपको क़समें देने लगा और रिश्तेदारी याद दिलाने लगा। यहाँ से उल्टे पैर वापिस जाकर घर में बैठ रहा और कुरेशियों की बैठक में आना जाना छोड़ दिया। इस पर अबू जहल ने कहा कि कुरेशियों! मेरा ख़्याल तो यह है कि उ़त्बा भी मुह़म्मद (ﷺ) की त़रफ़ झुक गया है और वहाँ के खाने पीने में ललचा गया, वह था भी ह़ाजतमंद। अच्छा! तुम मेरे साथ हो लो, मैं उसके पास चलता हूँ उसे ठीक कर लूँगा। वहाँ जाकर उसने कहा, उ़त्बा! तुमने जो हमारे पास आना जाना छोड़ दिया इसकी वजह एक और सिर्फ़ एक यही मालूम होती है कि तुझे उसका दस्तरख़्वान पसंद आ गया और तू भी उसकी त़रफ़ झुक गया है ह़ाजतमंदी बुरी चीज़ है। मेरा ख़्याल है कि हम आपस में चंदा करके तेरी ह़ालत ठीक कर दें ताकि इस मुसीबत और ज़िल्लत से तू छूट जाए। उस नए दीन की और नए मज़हब की तुझे ज़रूरत न रहे। इस पर उ़त्बा बहुत बिगड़ा और कहने लगा, मुझे मुह़म्मद (ﷺ) से क्या ग़र्ज़ है? क़सम अल्लाह की अब उससे कभी बात तक न करूँगा और तुम मेरी निस्बत ऐसे ज़लील ख़्यालात ज़ाहिर करते हो ह़ालाँकि तुम्हें मालूम है कि क़ुरैश में मुझसे बढ़कर मालदार कोई नहीं। बात सिर्फ़ यह है कि मैं तुम सबके कहने से उनके पास गया और सारा वाक़िया कह सुनाया बहुत बातें कहीं। मेरे जवाब में फिर जो कलाम उन्होंने पढ़ा, अल्लाह की क़सम! न तो वह शेअ़र था, न कहानत का कलाम था, न जादू वग़ैरह था। वह जब इस सूरत को पढ़ते हुए आयत (فَإِنْ أَعْرَضُوا) (41/ह़ामीम सज्दा : 13) तक पहुँचे तो मैंने उनके मुँह पर हाथ रख दिया और उन्हें रिश्ते नाते याद दिलाने लगा कि अल्लाह के लिए रुक जाईए। मुझे तो डर लगने लगा था कि कहीं उसी वक़्त हम पर अ़ज़ाब न आ जाए और यह तो तुम सबको मालूम है मुह़म्मद (ﷺ) झूठे नहीं।

सीरते इब्ने इस्ह़ाक़ में यह वाक़िया दूसरे त़रीक़ पर है। उसमें है कि कुरेशियों की मज्लिस एक मर्तबा जमा थी और ह़ुज़ूर (ﷺ) ख़ाना-ए-कअ़बा के एक गोशे में बैठे हुए थे। उ़त्बा क़ुरैश से कहने लगा तुम सबका मश्वरा हो तो मैं मुह़म्मद (ﷺ) के पास जाऊँ, उन्हें कुछ समझाऊँ और कुछ लालच दूँ। अगर वह किसी बात को क़बूल कर लें तो हम उन्हें दे दें और उन्हें उनके काम से रोक दें। यह वाक़िया उस वक़्त का है कि ह़ज़रत

हमज़ा (रज़ि.) मुसलमान हो चुके थे और मुसलमानों की तादाद मअ़कूल हो गई थी और रोज़ अफ़्ज़ूँ होती जाती थी। सब क़ुरैशी इस पर रज़ामंद हो गए। यह हुज़ूर (ﷺ) के पास आया और कहने लगा, बिरादरज़ादे! तुम आ़ली नसब वाले हो, तुम हममें से हो, हमारी आँखों के तारे और हमारे कलेजे के टुकड़े हो। अफ़सोस! कि तुम अपनी क़ौम के पास एक अ़जीबो ग़रीब चीज़ लाए, तुमने उनमें फूट डलवा दी। तुमने उनके अ़क़्लमंदों को बेवक़ूफ़ क़रार दिया। तुमने उनके मअ़बूदों की ऐबजूई की। तुमने उनके दीन को बुरा कहना शुरू किया। तुमने उनके बड़े बूढ़ों को काफ़िर बनाया। अब सुन लो आज मैं आपके पास एक आख़िरी और इंतिहाई फ़ैसले के लिए आया हूँ। मैं बहुत सी सूरतें पेश करता हूँ उनमें से जो आपको पसंद हो, क़बूल कीजिए और अल्लाह के वास्ते इस फ़ित्ने को रोक दीजिए। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, जो तुम्हें कहना हो कहो मैं सुन रहा हूँ। उसने कहा सुनो! अगर तुम्हारा इरादा इस चाल से माल जमा करने का है तो हम सब मिलकर तुम्हारे लिए इतना माल जमा कर देते हैं कि तुमसे बढ़कर मालदार सारे क़ुरैश में कोई न हो। और अगर आपका इरादा इससे अपनी सरदारी का है तो हम सब मिलकर तुमको अपना सरदार तस्लीम करते हैं। और अगर आप बादशाह बनना चाहते हैं तो हम मुल्क आपको सौंपकर रिआ़या बनने के लिए भी तैयार हैं और अगर आपको कोई जिन्न वग़ैरह का असर है तो हम अपना माल ख़र्च करके बेहतर से बेहतर तबीब (डॉक्टर) और झाड़ फूँक करने वाले मुहय्या करके आपका इलाज करा देते हैं। ऐसा हो जाता है कि कुछ मर्तबा ताबेअ़ जिन्न अपने आ़मिल पर ग़ालिब आ जाता है तो इसी तरह उससे छुटकारा हासिल किया जाता है। अब उ़त्बा ख़ामोश हो गया तो आपने फ़र्माया, अपनी सब कह चुके हो? कहा, हाँ! फ़र्माया, अब मेरी सुनो, वह मुतवज्जह हो गया। आपने बिस्मिल्लाह पढ़कर इस सूरत की तिलावत शुरू की। उ़त्बा बाअदब सुनता रहा यहाँ तक कि आपने सज्दे की आयत पढ़ी और सज्दा किया। फिर फ़र्माया अबुल वलीद मैं कह चुका अब तुझे इख़्तियार है। उ़त्बा यहाँ से उठा और अपने साथियों की तरफ़ चला। उसके चेहरे को देखते ही हर एक कहने लगा कि उ़त्बा का हाल बदल गया। उससे पूछा, कहो क्या बात रही? उसने कहा, मैंने तो ऐसा कलाम सुना है जो अल्लाह की क़सम! इससे पहले कभी नहीं सुना। बख़ुदा! सुनो क़ुरेशियों! मेरी मान लो और मेरी इस जची तुली बात को क़बूल कर लो। उसे उसके ख़यालात पर छोड़ दो, न मुवाफ़िक़त करो, न मुख़ालिफ़त, जो दावा उसका है उसमें और जो यह कहता है उसमें तमाम अ़रब उसका मुख़ालिफ़ है वह अपनी तमाम ताक़त उसके मुक़ाबले में ख़र्च कर रहा है। या तो वह उस पर ग़ालिब आ जाएँगे तो तुम सस्ते छुटे या यह उन पर ग़ालिब आएगा तो उसका मुल्क तुम्हारा मुल्क कहा जाएगा और उसकी इ़ज़्ज़त तुम्हारी इ़ज़्ज़त होगी और सबसे ज़्यादा उसके नज़दीक मक़बूल तुम ही होओगे। यह सुनकर क़ुरेशियों ने कहा, अबुल वलीद क़सम अल्लाह की! मुहम्मद (ﷺ) ने तुझ पर जादू कर दिया है। उसने जवाब दिया, सुनो! जो मेरी राय थी मैं आज़ादी से कह चुका हूँ अब तुम्हें अपने काम का इख़्तियार है। (बैहक़ी फ़ी दलाइलिन्नबुव्वा :2/204; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दलाइलुन्नबुव्वत लि अबी नुऐमः 185)

***

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ⑥ الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ⑦ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ⑧

तर्जुमा : "तू कह दे कि मैं तो तुम जैसा इंसान हूँ मुझ पर वह्यी नाज़िल की जाती है कि तुम सबका मअबूद एक अल्लाह ही है तो तुम उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ और उससे गुनाहों की माफ़ी चाहो। उन मुश्रिकों के लिए बड़ी ख़राबी है। (6) जो ज़कात नहीं देते और आख़िरत के मुंकिर ही रहते हैं। (7) और जो लोग ईमान लाएँ और भले काम करें उनके लिए अटल और अनथक अज्र है।" (8)

(आयत 6 से 8) : हुक्मे इलाही हो रहा है कि इन झुठलाने वाले मुश्रिकों के सामने ऐ'लान कर दीजिए कि मैं तुम ही जैसा एक इंसान हूँ। मुझे बज़रिये वह्यी इलाही के हुक्म दिया गया है कि तुम सबका मअबूद एक अकेला अल्लाह तआला ही है। तुम जो मुतफ़र्रिक़ और कई एक मअबूद बनाए बैठे हो यह तरीक़ा सरासर गुमराही वाला है। तुम सारी इबादतें उसी एक अल्लाह के लिए बजा लाओ और ठीक उसी तरह जिस तरह तुम्हें उसके रसूल से मालूम हुआ और अपने अगले गुनाहों से तौबा करो, उनकी माफ़ी तलब करो यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला के साथ शिर्क करने वाले हलाक होने वाले हैं जो ज़कात नहीं देते। यानी बक़ौले इब्ने अब्बास (रज़ि.) ला इलाहा इल्लल्लाहु की गवाही नहीं देते।" (तब्री : 21/430) इक्रिमा (रह़.) भी यही फ़र्माते हैं। (तब्री : 21/430) कुरआने करीम में एक जगह है (قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝) (91/शम्स : 9, 10) यानी "उसने फ़लाह़ पाई जिसने अपने नफ़्स को पाक कर लिया और वह हलाक हुआ जिसने उसे दबा दिया।" और आयत में फ़र्माया (قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ۝ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ۝) (87/आ'ला : 14, 15) यानी "उसने नजात ह़ासिल कर ली जिसने पाकीज़गी की और अपने रब का नाम ज़िक्र किया फिर नमाज़ अदा की।" और जगह इर्शाद है (فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝) (79/नाज़िआत : 18-19) "क्या तुझे पाक होने का ख़्याल है?" इन आयतों में ज़कात यानी पाकी से मतलब नफ़्स को बेहूदा अख़्लाक़ से दूर करना है। और सबसे बड़ी और पहली क़िस्म उसकी शिर्क से पाक होना है। इसी तरह आयते मुंदर्जा बाला में भी ज़कात न देने से तौह़ीद का न मानना मुराद है। माल की ज़कात को ज़कात इसलिए कहा जाता है कि यह हुर्मत से पाक कर देती है और ज़्यादती और बरकत और कसरते माल का बाइस बनती है और अल्लाह की राह में उसे ख़र्च की तौफ़ीक़ होती है। लेकिन इमाम सुद्दी (रह़.) ने, मुआविया बिन क़ुर्रह ने, क़तादा (रज़ि.) ने और अक्सर मुफ़स्सिरीन (रह़ि.) ने इसके मअ़नी यह

किये हैं कि माले ज़कात अदा नहीं करते और बज़ाहिर यही मालूम होता है। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) भी इसी को मुख़्तार कहते हैं। (त़ब्री : 21/431) लेकिन यह क़ौल ताम्मुल त़लब है इसलिए कि ज़कात फ़र्ज़ होती है, मदीने में जाकर हिज्रत के दूसरे साल और यह आयत उतरी है मक्का शरीफ़ में। ज़्यादा से ज़्यादा इस तफ़्सीर को मानकर हम यह कह सकते हैं कि सदक़े और ज़कात की असल का हुक्म तो नबुव्वत की इब्तिदा में ही था, जैसे अल्लाह तबारक व तआला का फ़र्मान है (वआतू ह़क़्क़हू यौम ह़सादिही) ''जिस दिन खेत काटो उसका ह़क़ दे दिया करो।'' हाँ! वह ज़कात जिसका निसाब और जिसकी मिक्दार अल्लाह की जानिब से मुक़र्रर है वह मदीने में मुक़र्रर हुई। यह क़ौल ऐसा है जिससे दोनों बातों में तत्बीक़ भी हो जाती है। ख़ुद नमाज़ को देखिए कि तुलूअे आफ़ताब और गुरूबे आफ़ताब से पहले इब्तिदा-ए-नबुव्वत में ही फ़र्ज़ हो चुकी थी लेकिन मेअराज वाली रात हिज्रत से डेढ़ साल पहले पाँचों नमाज़ें बक़ायदा शुरूत़ व अरकान के साथ मुक़र्रर हो गईं और धीरे धीरे उसके तमाम मुतअल्लिक़ात पूरे कर दिये गए, वल्लाहु आलम! उसके बाद अल्लाह तआला जल्ला जलालुहू फ़र्माता है कि अल्लाह तआला के मानने वालों और नबी के इत़ाअत गुज़ारों के लिए वह अज्रो सवाब है जो हमेशगी वाला और कभी न ख़त्म होने वाला है। जैसे और जगह है (مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۙ) (18/कहफ़ : 3) ''जो उसमें हमेशा हमेशा रहने वाले हैं।'' और फ़र्माता है (عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ) (11/हूद : 108) उन्हें जो इन्आम दिया जाएगा वह न टूटने वाला और मुसलसल है। सुद्दी (रह़.) कहते हैं गोया वह उनका ह़क़ है जो उन्हें दिया गया न बतौरे एहसान के। लेकिन कुछ अइम्मा ने इसकी तर्दीद की है क्योंकि अहले जन्नत पर भी अल्लाह तआला का एह़सान यक़ीनन है। ख़ुद कुरआन में है (بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ) (49/हुजुरात : 17) यानी बल्कि अल्लाह का तुम पर एह़सान है कि वह तुम्हें ईमान की हिदायत करता है। जन्नतियों का क़ौल है (فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ) (52/तूर : 27) ''पस अल्लाह ने हम पर एह़सान किया और आग के अज़ाब से बचा लिया।'' रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मगर यह कि अल्लाह मुझे अपनी रह़मत में ले ले और अपने फ़ज़्लो एह़सान में।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब तमन्नल मरीज़ुल मौत : 5673)

***

قُلْ اَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗ
اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا
وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۝ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ

وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ
﴿١١﴾ فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ
الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

तर्जुमा : "तू कह दे कि क्या तुम उस अल्लाह का इंकार करते हो और तुम उसके शरीक मुक़र्रर करते हो जिसने दो दिन में ज़मीन पैदा कर दी। सारे जहानों का परवरदिगार वही है। (9) उसने ज़मीन के ऊपर ज़मीन में से ही पहाड़ पैदा कर दिये और उसमें बरकत रख दी और उसमें रहने वालों की ग़िज़ाओं की तज्वीज़ भी उसी में कर दी, सिर्फ़ चार दिन में ही, सवाल करने वालों का जवाब पूरा हुआ। (10) फिर आसमान की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और वह धुआँ सा था पस उसे और ज़मीन से फ़र्माया कि तुम दोनों ख़ुशी से आओ या ज़बरदस्ती। दोनों ने अर्ज़ किया कि हम बख़ुशी हाज़िर हैं। (11) पस दो दिन में सात आसमान बना दिये और हर आसमान में उसके मुनासिब वही भेज दी और हमने आसमाने दुनिया को सितारों के साथ ज़ीनत दी और निगहबानी की। यह तदबीर अल्लाह ग़ालिब व दाना की है।" (12)

ज़मीनो आसमान किस तर्तीब से पैदा किये गए (आ. 9 से 12) : हर चीज़ का ख़ालिक़, हर चीज़ का मालिक, हर चीज़ का हाकिम, हर चीज़ पर क़ादिर सिर्फ़ अल्लाह तआला है पस इबादतें भी सिर्फ़ उसी की करनी चाहिए। उसने ज़मीन जैसी वसीअ मख़्लूक़ को अपने कमाले कुदरत से सिर्फ़ दो दिन में पैदा कर दिया है। तुम्हें न उसके साथ कुफ़्र करना चाहिए, न शिर्क। जिस तरह सबका पैदा करने वाला भी वही एक है ठीक उसी तरह सबका पालने वाला भी वही एक ही है। यह तफ़्सील याद रहे कि आयतों में ज़मीनो आसमान का छः दिन में पैदा करना बयान हुआ है और यहाँ उनकी पैदाइश का वक़्त अलग बयान हो रहा है पस मालूम हुआ कि पहले ज़मीन बनाई गई। इमारत का क़ायदा यही है कि पहले बुनियादें और नीचे का हिस्सा तैयार किया जाता है फिर ऊपर का हिस्सा और छत बनाई जाती है चुनाँचे कलामुल्लाह शरीफ़ की और आयत में है कि अल्लाह तआला वह है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन में जो कुछ है पैदा करके फिर आसमानों की तरफ़ तवज्जह की और उन्हें ठीक सात आसमान बना दिये। हाँ! सूरह नाज़िआत में (وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَٰلِكَ دَحَاهَا) (79/नाज़िआत : 30) है, पहले आसमान की पैदाइश का ज़िक्र है फिर फ़र्माया है कि ज़मीन को उसके बाद बिछाया। इससे मुराद ज़मीन में से पानी चारा निकालना और पहाड़ों को गाड़ना है जैसे कि इसके बाद ही बयान है। यानी पैदा पहले ज़मीन की गई फिर आसमान, फिर ज़मीन को ठीक ठाक किया। लिहाज़ा दोनों आयतों में कोई फ़र्क़ नहीं। सहीह बुख़ारी में है कि एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि कुरआन की कुछ

आयतों में मुझे इख़्तिलाफ़ सा नज़र आता है। चुनाँचे एक आयत में है (فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ) (23/मोमिनून : 101) यानी "क़ियामत के दिन आपस में नसब न होंगे और न एक दूसरे से सवाल करेगा। दूसरी आयत में है (وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ) (52/तूर : 25) यानी "आपस में एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर पूछताछ करेंगे।" एक आयत में है (وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا) (4/निसाअ : 42) यानी "अल्लाह से कोई बात छुपाएँगे नहीं।" दूसरी आयत में है कि मुश्रिकीन कहेंगे (وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ)(6/अन्आम : 23) "क़सम अल्लाह तआला की हमने शिर्क नहीं किया।" एक आयत में है ज़मीन को आसमान के बाद बिछाया (وَ الْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا) (79/नाज़िआत : 30) दूसरी आयत में है (क़ुल अइन्नकुम) में पहले ज़मीन की पैदाइश फिर आसमान की पैदाइश का ज़िक्र है। एक तो इन आयतों का सही मतलब बताइए जिससे इख़्तिलाफ़ उठ जाए। दूसरे यह जो फ़र्माया है (कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा)(अज़ीज़न हकीमन)(समीअम बसीरन) तो क्या मतलब है कि अल्लाह ऐसा था? उसके जवाब में आपने फ़र्माया कि जिन दो आयतों में से एक में आपस का सवाल जवाब है और एक में उसका इंकार है, यह दो वक़्त हैं। सूर में दो नफ़्ख़े फूँके जाएँगे, एक के बाद आपस की पूछताछ न होगी, एक के बाद आपस में एक दूसरे से सवालात होंगे। जिन दो दूसरी आयतों में एक में बात के न छुपाने का और दूसरी में छुपाने का ज़िक्र है यह भी दो मौक़े हैं। जब मुश्रिकीन देखेंगे कि मुवह्हिदों के गुनाह बख़्श दिये गए तो कहने लगेंगे कि हम मुश्रिक न थे, लेकिन जब मुँह पर मुहर लग जाएगी और बदन के हिस्से गवाही देने लगेंगे तो अब कुछ भी न छुपेगा और ख़ुद अपने करतूत के इक़रारी हो जाएँगे और कहने लगेंगे कि काश! हम ज़मीन के बराबर कर दिये जाते। आसमान व ज़मीन की पैदाइश की तर्तीब के बयान में भी दरअसल कुछ इख़्तिलाफ़ नहीं। पहले दो दिन में ज़मीन बनाई गई फिर आसमान को दो दिन में बनाया गया फिर ज़मीन की चीज़ें पानी, चारा, पहाड़, कंकर, रेत, जमादात, टीले वग़ैरह दो दिन में पैदा किये। यही मअनी लफ़्ज़ (दहाहा) के हैं। पस ज़मीन की पूरी पैदाइश चार दिन में हुई और दो दिन में आसमान। और जो नाम अल्लाह तआला ने मुक़र्रर किये हैं उनका बयान फ़र्माया है। वह हमेशा हमेशा ऐसा ही रहेगा। अल्लाह का कोई इरादा पूरा हुए बग़ैर नहीं रहता। पस क़ुरआन में हर्गिज़ इख़्तिलाफ़ नहीं। इसका एक एक लफ़्ज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तफ़्सीर, सूरह हामीम सज्दा क़ब्ल हदीस : 4816)

ज़मीन को अल्लाह तआला ने दो दिन में पैदा किया है यानी इतवार और सोमवार के दिन। और ज़मीन के ऊपर ही पहाड़ बना दिये, और ज़मीन को उसने बाबरकत बनाया। तुम उसमें बीज बोते हो, दरख़्त और फल वग़ैरह उसमें से पैदा होते हैं। और अहले ज़मीन को जिन चीज़ों की एहतियाज है वह उसी में से पैदा होती रहती हैं, खेतों और बाग़ात की जगहें उसमें उसने बना दी हैं। ज़मीन की यह दुरुस्ती मंगल बुध के दिन हुई। चार दिन में ज़मीन की पैदाइश ख़त्म हुई। जो लोग इसकी मालूमात हासिल करना चाहते थे उन्हें पूरा जवाब मिल गया। ज़मीन के हर हिस्से में उसने वह चीज़ मुहय्या कर दी जो वहाँ वालों के लायक़ थी मस्लन असब यमन में, साबूरी साबूर में, तयालिसा रै में। (तब्री : 21/436) यही मतलब आयत के आख़िरी जुम्ले का है। यह भी

कहा गया है कि जिसकी जो हाजत थी अल्लाह तआला ने उसके लिए मुहय्या कर दी। इसी मअनी की ताईद अल्लाह तआला के इस फ़र्मान से होती है (وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ) (14/इब्राहीम : 34) तुमने जो जो माँगा अल्लाह ने तुम्हें दिया, वल्लाहु आलम! फिर जनाबे बारी ने आसमान की तरफ़ तवज्जह की, वह धूएँ की शक्ल में था, ज़मीन के पैदा किये जाने के वक़्त पानी के जो अब्ख़रात उठे थे, अब दोनों से फ़र्माया कि या तो मेरे हुक्म को मानो और जो मैं कहता हूँ हो जाओ, ख़ुशी से या नाख़ुशी से। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं, मस्लन आमसानों को हुक्म हुआ कि सूरज, चाँद, सितारे तुलूअ करे। ज़मीन से फ़र्माया अपनी नहरें जारी कर, अपने फल उगा वग़ैरह। दोनों फ़र्मांबरदारी के लिए राज़ी ख़ुशी तैयार हो गए और अर्ज़ किया कि हम मअ इस तमाम मख़्लूक़ जिसे तू रचाने वाला है ताबेअ फ़र्मान हैं। और कहा गया है कि उन्हें क़ायम मक़ाम कलाम करने वालों के किया गया। और यह भी कहा गया है कि ज़मीन के उस हिस्से ने कलाम किया जहाँ कअबा बनाया गया है। और आसमान के उस हिस्से ने कलाम किया जो ठीक उसके ऊपर है, वल्लाहु आलम!

इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं कि ''अगर आसमान व ज़मीन में इताअत गुज़ारी का इक़रार न करते तो उन्हें सज़ा मिलती जिसका एहसास भी उन्हें होता।'' पस दो दिन में सातों आसमान उसने बना दिये यानी जुमेरात और जुम्अे का दिन। और हर आसमान में उसने जो जो चीज़ें और जैसे जैसे फ़रिश्ते मुक़र्रर करने चाहे मुक़र्रर कर दिये और आसमाने दुनिया को उसने सितारों से मुज़य्यन कर दिया जो ज़मीन पर चमकते रहते हैं और जो उन शयातीन की निगहबानी करते हैं जो मलए-आ'ला की बातें सुनने के लिए ऊपर चढ़ना चाहते हैं। यह तदबीर व अंदाज़ा उस अल्लाह का है जो सब पर ग़ालिब है जो कायनात के एक एक चप्पे की हर छुपी खुली हरकत को जानता है। इब्ने जरीर (रह.) की रिवायत में है यहूदियों ने हुज़ूर (ﷺ) से आसमान व ज़मीन की पैदाइश की बाबत सवाल किया तो आपने फ़र्माया कि ''इतवार और सोमवार के दिन अल्लाह तआला ने ज़मीन को पैदा किया और पहाड़ों को मंगल के दिन पैदा किया और जितने फ़ायदे उसमें हैं और बुध के दिन दरख़्तों को, पानी को, शहरों को और आबादी और वीराने को पैदा किया तो यह चार दिन हुए। इसे बयान करके फिर आपने इसी आयत की तिलावत की और फ़र्माया कि जुम्अेरात वाले दिन आसमान को पैदा किया और जुम्अे के दिन सितारों को और सूरज चाँद को और फ़रिश्तों को पैदा किया, तीन साअत के बाक़ी रहने तक। फिर दूसरी साअत में हर चीज़ में आफ़त डाली जिससे लोग फ़ायदे उठाते हैं। और तीसरी में आदम (عليه السلام) को पैदा किया, उन्हें जन्नत में बसाया, इब्लीस को उन्हें सज्दा करने का हुक्म दिया और आख़िरी साअत में वहाँ से निकाल दिया। यहूदियों ने कहा, अच्छा हुज़ूर! फिर उसके बाद क्या हुआ? फ़र्माया, फिर अर्श पर मुस्तवी हो गया। उन्होंने कहा, सब तो ठीक कहा लेकिन आख़िरी बात न कही कि फिर आराम हासिल किया। यहूदियों की इस बात से हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सख़्त नाराज़ हुए और यह आयत उतरी (50/क़ाफ़ : 38, 39) यानी ''हमने आसमान व ज़मीन और जो उनके बीच है सबको छः दिन में पैदा किया और हमें कोई थकान नहीं हुई, तू इनकी बातों पर सब्र कर।'' यह हदीस ग़रीब है। और रिवायत में है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''मेरा हाथ पकड़कर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला ने मिट्टी को हफ़्ते के दिन पैदा

किया उसमें पहाड़ों को इतवार के दिन रखा, दरख़्त सोम के दिन पैदा किये, मकरूहात को मंगल के दिन, नूर को बुध के दिन पैदा किया और जानवरों को ज़मीन में जुम्अेरात के दिन फैला दिया और जुम्आ के दिन अ़सर के बाद जुम्अे की आख़िरी साअ़त में हज़रत आदम (عليه السلام) को पैदा किया और ख़िल्क़त पूरी हुई।'' (सहीह़ मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब इब्तिदाउल ख़ल्क़ व ख़ल्क़े आदम (عليه السلام) : 2789) मुस्लिम और नसाई में यह ह़दीस है लेकिन यह भी ग़राइब सह़ीह़ में से है। और इमाम बुख़ारी (रह़.) ने तारीख़ में इसे मुअ़ल्लल बतलाया और फ़र्माया है कि इसे कुछ रावियों ने ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से और ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि .) ने इसे कअ़ब अह़बार (रह़.) से रिवायत किया है और यही ज़्यादा सही है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً مِّثْلَ صَاعِقَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ﴿١٣﴾ إِذْ جَاءَتْهُمُ
الرُّسُلُ مِن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ قَالُوا لَوْ شَاءَ
رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَإِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿١٤﴾ فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي
خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا
صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ
الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ ۖ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ﴿١٦﴾ وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ
عَلَى الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمْ صَاعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾ وَنَجَّيْنَا
الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾ وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُم

بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢٠ وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۗ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ
الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٢١ وَمَا كُنْتُمْ
تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ
ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٢٢ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ
بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٢٣ فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ
وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ۝٢٤

तर्जुमा : "अब भी यह रूगर्दां हों तो, तू कह दे कि मैं तुम्हें उस अ़ज़ाबे आसमानी से डराता हूँ जो मिस्ल आ़दियों और समूदियों के अ़ज़ाब के होगा। (13) उनके पास जब उनके आगे पीछे से पैग़म्बर आए कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो तो उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारा परवरदिगार चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता। हम तो तुम्हारी रिसालत के बिलकुल मुंकिर हैं। (14) अब आ़दियों ने तो बेवजह ज़मीन में सरकशी शुरू कर दी और कहने लगे कि हमसे ज़ोरावर कौन है? क्या इन्हें यह नज़र न आया कि जिसने उन्हें पैदा किया है वह उनसे बहुत ही ज़्यादा ज़ोरावर है। वह आख़िर तक हमारी आयतों का इंकार ही करते रहे। (15) बिल्आख़िर हमने उन पर एक तेज़ो तुंद आँधी मुसीबतनाक दिनों में भेज दी कि उन्हें जीते जी ज़िल्लत के अ़ज़ाब का मज़ा चखा दें। यक़ीन मानो कि आख़िरत का अ़ज़ाब इससे बहुत ज़्यादा रुस्वाई वाला है। उन्हें कोई इम्दाद न दी जाएगी।(16) रहे समूदी तो हमने उनकी रहबरी की फिर भी उन्होंने हिदायत पर अंधापे को तर्जीह दी जिस बिना पर उन्हें (सरापा) ज़िल्लत के अ़ज़ाबे आसमानी ने उनके करतूतों के बाइस पकड़ लिया। (17) हाँ! ईमान वाले पारसाओं को हमने बाल बाल बचा लिया। (18) जिस दिन दुश्मनाने इलाही दोज़ख़ की तरफ़ लाये जाएँगे और उन सबको जमा कर दिया जाएगा। (19) यहाँ तक कि जब बिलकुल जहन्नम के पास आ जाएँगे उन पर उनके कान और उनकी आँखें और उनकी खालें, उनके आमाल की गवाही देंगी। (20) यह अपनी खालों से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यूँ दी? वह जवाब देंगी कि हमें

अल्लाह ने कुव्वते गोयाई अता की जिसने हर चीज़ को बोलने की ताक़त बख़्शी है। उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाए जाओगे। (21) तुम अपनी बद आमालियाँ कुछ पोशीदा रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें गवाही दें हाँ! तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उसमें से बहुत से आमाल से अल्लाह बेख़बर है। (22) तुम्हारी इसी बदगुमानी ने जो तुमने अपने रब से कर रखी थी तुम्हें हलाक कर दिया और बिलआख़िर तुम ज़ियाकारों में हो गए। (23) अब अगर यह सब्र करें तो भी इनका ठिकाना जहन्नम है और अगर यह उज़्र व माफ़ी के ख़्वास्तगार हों तो भी मअ़ज़ूर व माफ़ नहीं रखे जाएँगे।" (24)

हक़ से रूगर्दानी का अंजाम (आ. 13 से 24) : हुक्म होता है जो आपको झुठला रहे हैं और अल्लाह के साथ कुफ़्र कर रहे हैं आप इनसे कह दीजिए कि मेरी ता'लीम से रूगर्दानी तुम्हें किसी मुफ़ीद नतीजे पर नहीं पहुँचाएगी। याद रखो कि जिस तरह अम्बिया की मुख़ालिफ़ उम्मतें तुमसे पहले ज़ेरो ज़बर कर दी गईं कहीं तुम्हारी शामते आमाल भी तुम्हें उन ही में से न कर दे। आदियों और समूदियों के और उन जैसे औरों के हालात तुम्हारे सामने हैं, उनके पास पे दर पे रसूल आए, उस गाँव में इस गाँव में, उस बस्ती में इस बस्ती में, अल्लाह तआला के पैग़म्बर अल्लाह की मुनादी करते फिरे लेकिन उनकी आँखों में वह चर्बी चढ़ी हुई थी और दिमाग़ में वह गूदड़ ठूंसा हुआ था कि किसी एक की भी मानकर न दी। अपने सामने अल्लाह वालों की बेहतरी और दुश्मनाने रसूल की अब्तरी देखते थे लेकिन फिर भी झुठलाने से बाज़ न आये। हुज्जतबाज़ी और कट हुज्जती से न हटे और कहने लगे अगर अल्लाह को रसूल भेजना होता तो किसी फ़रिश्ते को भेज देता। तुम इंसान होकर रसूल कैसे बन बैठे? हम तो इसे हर्गिज़ बावर न करेंगे? उन आदियों ने ज़मीन में फ़साद फैला दिया। उनकी सरकशी उनका ग़ुरूर हद को पहुँच गया। उनकी ला उबालियाँ और बेपरवाहियाँ यहाँ तक पहुँच गईं कि पुकार उठे, हमसे ज़्यादा ज़ोरावर कोई नहीं। हम ताक़तवर, और ठोस हैं। अज़ाबे इलाही हमारा क्या बिगाड़ लेंगे? इस क़द्र फूले कि अल्लाह को भूल गए। यह भी ख़्याल न रहा कि हमारा पैदा करने वाला तो इतना क़वी है कि उसकी ज़ोरावरी का अंदाज़ा भी हम नहीं कर सकते। जैसे फ़र्मान है (وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ) (51/ज़ारियात : 47) "हमने अपने हाथों आसमान को पैदा किया और हम बहुत ही ताक़तवर और ज़ोरावर हैं।" पस उनके इस तकब्बुर पर और अल्लाह के रसूलों के झुठलाने पर और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी करने पर और रब की आयतों के इंकार पर उन पर अज़ाबे इलाही आ पड़ा। तेज़ो तुंद, सर्द, दहशतनाक, सरसराती हुई सख़्त आँधी आई ताकि उनका ग़ुरूर ढह जाए और हवा से वह तबाह कर दिये जाएँ (सरसरन) कहने में हवा का आवाज़ वाली होना पाया जाता है। मश्रिक़ की तरफ़ एक नहर है जो बहुत ज़ोर से आवाज़ के साथ बहती रहती है। इसलिए उसे भी अरब सरसर कहते हैं (नहिसात) से मुराद पे दर पे। एक दम मुसलसल सात रातें और आठ दिन तक यही हवाएँ रहीं। वह मुसीबत जो उन पर मुसीबत वाले दिन आई वह फिर आठ दिन तक न हटी, न टली, जब तक उनमें से एक एक को फ़ना के घाट न उतार दिया और उनका बीज न खो

दिया। साथ ही आख़िरत के अ़ज़ाबों का लुक़्मा बने जिनसे ज़्यादा ज़िल्लत व तौहीन की कोई सज़ा नहीं। न दुनिया में कोई उनकी मदद को पहुँचा, न आख़िरत में कोई मदद के लिए उठे। बे यार व मददगार रह गए। समूदियों की भी हमने रहनुमाई की, हिदायत की उन पर वज़ाहत कर दी, उन्हें भलाई की दावत दी। अल्लाह के नबी हज़रत सालेह (ﷺ) ने उन पर हक़ ज़ाहिर कर दिया, लेकिन उन्होंने मुख़ालिफ़त और तक्ज़ीब की और अल्लाह के नबी की सच्चाई पर, जिस ऊँटनी को अल्लाह ने अ़लामत बनाया था उसकी कूचें काट दीं। पस उन पर भी अ़ज़ाबे इलाही बरस पड़ा। एक ज़बरदस्त कलेजे फाड़ देने वाली चिंघाड़ और दिल चूर चूर कर देने वाले ज़लज़ले ने ज़िल्लत व तौहीन के साथ उनके करतूतों का बदला लिया। उनमें जितने वह लोग थे जिन्हें अल्लाह की ज़ात पर ईमान था, नबियों की तस्दीक़ करते थे, दिलों में अल्लाह का डर रखते थे, उन्हें हमने बचा लिया, उन्हें ज़रा सा भी ज़रर न पहुँचाया और अपने नबी के साथ ज़िल्लत व तौहीन से और अ़ज़ाबे इलाही से नजात पा ली।

क़ियामत के दिन जिस्म के हिस्सों का गवाही देना : यानी उन मुश्रिकों से कहो कि क़ियामत के दिन इनका हश्र जहन्नम की तरफ़ होगा और दारोग़ा जहन्नम इन सबको जमा करेंगे। जैसे फ़र्मान है (وَّ نَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا) (19/मरयम : 86) यानी गुनहगारों को सख़्त प्यास की हालत में हम जहन्नम की तरफ़ हाँक कर ले जाएँगे। उन्हें जहन्नम के किनारे खड़ा कर दिया जाएगा और उनके बदन के हिस्सों और कान और आँखें और पोस्त उनके आमाल की गवाहियाँ देंगे। तमाम अगले पिछले उ़यूब खुल जाएँगे। बदन का हर हिस्सा पुकार उठेगा कि मुझसे इसने यह यह गुनाह किया। उस वक़्त यह अपने हिस्सों की तरफ़ मुतवज्जह होकर उन्हें मलामत करेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यूँ दी? वह कहेंगे, अल्लाह तआ़ला के हुक्म की बजाआवरी के मातहत, उसने हमें बोलने की ताक़त दी और हमने सच सच कह सुनाया। वही तो तुम्हारा इब्तिदाअन पैदा करने वाला है, उसी ने हर चीज़ को ज़ुबान अ़ता की है। ख़ालिक़ की मुख़ालिफ़त और उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कौन कर सकता है? बज़्ज़ार में है कि "हुज़ूर (ﷺ) एक बार मुस्कुराये या हँस दिये। फिर फ़र्माया तुम मेरी हँसी की वजह पूछा नहीं करते? सहाबा (रज़ि.) ने कहा, फ़र्माईए क्या वजह है? आपने फ़र्माया, क़ियामत के दिन बन्दा अपने रब से झगड़ेगा कि ऐ अल्लाह! क्या तेरा वादा नहीं कि तू ज़ुल्म न करेगा। अल्लाह तआ़ला इक़रार करेगा तो बन्दा कहेगा कि मैं तो अपनी बदआमालियों पर किसी की गवाही क़बूल नहीं करता। अल्लाह कहेगा क्या मेरी और मेरे बुज़ुर्ग फ़रिश्तों की भी गवाही नाकाफ़ी है? लेकिन फिर भी वह बार बार अपनी ही कहता चला जाएगा। पस इत्मामे हुज्जत के लिए उसकी ज़ुबान बंद कर दी जाएगी और उसके बदन के हिस्सों से कहा जाएगा कि इसने जो जो किया था उसकी गवाही तुम दो। जब वह साफ़ साफ़ और सच्ची गवाही दे देंगे तो यह उन्हें मलामत करेगा और कहेगा कि मैं तो तुम्हारे ही बचाव के लिए लड़ झगड़ रहा था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल मोमिन व जन्नतुन लिल काफ़िर : 2969) हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) फ़र्माते हैं "काफ़िर व मुनाफ़िक़ को हिसाब के लिए बुलाया जाएगा, उसके आमाल उसके सामने पेश होंगे तो क़समें खा खाकर इंकार करेगा, और कहेगा ऐ अल्लाह! तेरे

फ़रिश्तों ने वह लिख लिया है जो मैंने हर्गिज़ नहीं किया। फ़रिश्ते कहेंगे, क्या फ़लाँ फ़लाँ दिन, फ़लाँ फ़लाँ जगह तूने अमल नहीं किया? यह कहेगा, ऐ अल्लाह! तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैंने हर्गिज़ नहीं किया। अब मुँह पर मुहर मार दी जाएगी और बदन के हिस्से गवाही देंगे। सबसे पहले उसकी दाहिनी रान बोलेगी।'' (इब्ने अबी हातिम)

अबू यअ़ला में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''क़ियामत के दिन काफ़िर के सामने उसकी बद आमालियाँ लाई जाएँगी तो वह इंकार करेगा और झगड़ने लगेगा। अल्लाह तआ़ला कहेगा यह हैं तेरे पड़ौसी जो गवाह हैं। यह कहेगा सब झूठे हैं। कहेगा यह हैं तेरे कुंबे क़बीले वाले जो गवाह हैं। कहेगा यह भी सब झूठे हैं। अल्लाह उनसे क़सम दिलवाएगा वह क़सम खाएँगे लेकिन यह इंकार ही करेगा। अल्लाह तआ़ला सबको चुप करा देगा और ख़ुद उनकी ज़ुबानें उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगी। फिर उन्हें जहन्नम वासिल कर दिया जाएगा। (अबू यअ़ला और इसकी सनद ज़ईफ़ है; दराज की अबुल हैसम से रिवायत ज़ईफ़ होती है और इसमें दूसरी इल्लत भी है।) इब्ने अबी हातिम में है हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''क़ियामत के दिन एक वक़्त तो वह होगा कि न किसी को बोलने की इजाज़त होगी, न उ़ज़्र मअ़ज़िरत करने की। फिर जब इजाज़त दी जाएगी तो बोलने लगेंगे और झगड़ेंगे और इंकार करेंगे और झूठी क़समें खाएँगे। फिर गवाहों को लाया जाएगा आख़िर ज़ुबानें बंद हो जाएँगी और ख़ुद बदन के हिस्से हाथ पैर वग़ैरह गवाही देंगे। फिर ज़ुबानें खोल दी जाएँगी तो अपने बदन के हिस्सों को मलामत करेंगे। वह जवाब देंगे कि हमें अल्लाह तआ़ला ने कुव्वते गोयाई दी और हमने सही सही कहा, पस ज़ुबानी इक़रार भी हो जाएगा।'' इब्ने अबी हातिम में हज़रत राफ़ेअ़ अबुल हसन (रह.) से मरवी है कि ''अपने करतूत के इंकार पर ज़ुबान इतनी मोटी हो जाएगी कि बोला न जाएगा। फिर जिस्म के हिस्सों को हुक्म होगा, तुम बोलो तो हर एक अपना अपना अ़मल बता देगा, कान आँख, खाल, शर्मगाह, हाथ पैर वग़ैरह। और भी इसी तरह की बहुत सी रिवायतें सूरह यासीन की आयत (اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ) (36/यासीन : 65) की तफ़्सीर में गुज़र चुकी हैं जिन्हें दोबारा वारिद करने की ज़रूरत नहीं।

इब्ने अबी हातिम में है हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब हम समुन्द्र की हिज्रत से वापिस आए तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने एक दिन हमसे पूछा, तुमने हब्शा की सरज़मीन पर कोई ताज्जुबख़ेज़ बात देखी हो तो सुनाओ। उस पर एक नौजवान ने कहा, एक बार हम वहाँ बैठे हुए थे, उनके उ़लमा की एक बुढ़िया औरत एक पानी का घड़ा सर पर लिये हुए आ रही थी। उन्हीं में से एक जवान ने उसे धक्का दिया जिससे वह गिर पड़ी और घड़ा टूट गया। वह उठी और उस शख़्स की तरफ़ देखकर कहने लगी, मक्कार! तुझे इसका हाल उस वक़्त मालूम चलेगा जबकि अल्लाह तआ़ला अपनी कुर्सी बिछाएगा और सब अगले पिछलों को जमा करेगा और हाथ पैर गवाहियाँ देंगे और एक एक अ़मल खुल जाएगा, उस वक़्त तेरा और मेरा फ़ैसला भी हो जाएगा। यह सुनकर हुज़ूर (ﷺ) कहने लगे, उसने सच कहा, उसने सच कहा। उस क़ौम कोअल्लाह तआ़ला किस तरह पाक करे जिसमें ज़ोरावर से कमज़ोर का बदला न लिया जाए।'' (और इसकी सनद ज़ईफ़ है अबुज़्ज़ुबेर अ़न्अ़न) यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। इब्ने अबिदुनिया में यही रिवायत दूसरी सनद से भी मरवी है। जब यह अपने हिस्सों को मलामत करेंगे तो अअ़ज़ा जवाब देंगे कि तुम्हारे आमाल

दरअसल कुछ छुपे न थे। अल्लाह के देखते हुए उसके सामने तुम कुफ़्र व मआसी में मुस्तग़रक़ रहते थे और कुछ परवाह नहीं करते थे क्योंकि तुम समझे हुए थे कि हमारे बहुत से आमाल उससे छुपे हैं। इसी फ़ासिद ख़्याल ने तुम्हें तल्फ़ और बर्बाद कर दिया और आज के दिन तुम बर्बाद हो गए। मुस्लिम तिर्मिज़ी वग़ैरह में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है कि "मैं कअबतुल्लाह के पर्दे में छुपा हुआ था जो तीन शख़्स आये। बड़े पेट वाले, कम अक़्ल वाले। एक ने कहा, क्यूँ जी हम जो बोलते चालते हैं उसे अल्लाह सुनता है? दूसरे ने जवाब दिया अगर ऊँची आवाज़ से बोलें तो सुनता है और धीरे से बातें करें तो नहीं सुनता। तीसरे ने कहा अगर कुछ सुनता है तो सब सुनता होगा। मैंने हुज़ूर (ﷺ) से यह वाक़िया बयान किया। इस पर आयत (وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ) (41/हामीम सज्दा : 22) नाज़िल हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हामीम अस्सज्दा बाब क़ौलुहू (वमा कुन्तुम तस्ततिरूना अंय्यशहदा अलयकुम...) : 4816; सहीह मुस्लिम : 2775; तिर्मिज़ी : 3248; अहमद : 1/443; इब्ने हिब्बान : 390) अब्दुर्रज़ाक़ में है मुँह बंद होने के बाद सबसे पहले पैर और हाथ बोलेंगे। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़ाक़ : 20115; और इसकी सनद हसन है; सुननुल कुब्रा : 6/439; हाकिम : 2/439; अहमद : 5/4; और इसकी सनद हसन है।) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं जनाब बारी अज़्ज़ इस्मुहू का इर्शाद है कि मेरे साथ मेरा बंदा जो गुमान करता है मैं उसके साथ वही मामला करता हूँ और जब वह मुझे पुकारता है मैं उसके साथ होता हूँ।" हज़रत हसन बसरी (रह.) इतना फ़र्माकर कुछ ताम्मुल करके कहने लगे जिसका जैसा गुमान अल्लाह के साथ होता है वैसा ही उसका अमल भी होता है। मोमिन चूँकि अल्लाह तआला के साथ नेक ज़न होता है वह आमाल भी अच्छे करता है और काफ़िर मुनाफ़िक़ चूँकि अल्लाह के साथ बदज़न होते हैं वह आमाल भी बुरे करते हैं फिर आपने यही आयत तिलावत की। मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ हदीस में है "तुममें से कोई शख़्स न मरे मगर इस हाल में कि वह अल्लाह के साथ नेक ज़न हो।" जिन लोगों ने अल्लाह के साथ बुरे ख़्यालात रखे अल्लाह ने उन्हें तह व बाला कर दिया फिर यही आयत आपने पढ़ी। (अहमद : 3/390, 391; और इसकी सनद ज़ईफ़ रावी है।) जहन्नम की आग में सब्र से पड़े रहना और बेसब्री करना उनके लिये एक जैसा है। न उनकी उज़्र मअज़िरत मक़्बूल न उनके गुनाह माफ़। यह दुनिया की तरफ़ अगर लौटना चाहें तो वह राह भी बंद। जैसे और जगह है जहन्नमी कहेंगे, ऐ अल्लाह! हम पर हमारी बदबख़्ती छा गई यक़ीनन हम बेराह थे। ऐ अल्लाह! अब तू यहाँ से नजात दे। अगर अब ऐसा करें तो फिर हमें हमारे ज़ुल्म की सज़ा देना। लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब आएगा कि अब यह मंसूबे बेकार हैं। धुत्कारे हुए यहीं पड़े रहो, ख़बरदार! जो मुझसे बात की होगी।

***

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ
الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ
﴿٢٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ
﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ۭ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''हमने उनके कुछ हमनशीन मुक़र्रर कर रखे थे जिन्होंने उनके अगले पिछले आमाल उनकी निगाहों में ख़ूबसूरत बना रखे थे और उनके हक़ में भी क़ौले इलाही उन उम्मतों के साथ पूरा हुआ जो उनसे पहले जिन्नों इंसानों की गुज़र चुकी हैं यक़ीनन वह ज़ियाँकार साबित हुए। (25) काफ़िरों ने कहा इस क़ुरआन को सुनो ही मत, इसके पढ़े जाने के वक़्त बेहूदा गोई करो क्या अजब कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26) पस यक़ीनन हम इन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएँगे और इन्हें इनके बदतरीन आमाल का बदला ज़रूर ज़रूर देंगे। (27) दुश्मनाने अल्लाह की सज़ा यही दोज़ख़ की आग है जिसमें उनका हमेशगी का घर है। यह बदला है हमारी आयतों से इंकार करने का। (28) काफ़िर लोग कहेंगे, ऐ अल्लाह! हमें जिन्नों इंसानों के उन दोनों फ़रीक़ को दिखा जिन्होंने हमें गुमराह किया ताकि हम उन्हें अपने क़दमों तले डालकर उन्हें निहायत और सबसे नीचे कर दें।'' (29)

क़ुरआन को ख़ामोशी से सुनना चाहिए (आ. 25 से 29) : अल्लाह तआला बयान करता है कि मुश्रिकीन को उसने गुमराह कर दिया है और यह उसकी मशिय्यत और क़ुदरत से है। वह अपने तमाम काम में हिक्मत वाला है। उसने कुछ जिन्न व इंस ऐसे उनके साथ कर दिये थे जिन्होंने उनके बुरे आमाल उन्हें अच्छे

करके दिखाए। उन्होंने समझ लिया कि दौरे माज़ी के लिहाज़ से और आइन्दा आने वाले ज़माने के लिहाज़ से भी उनके आमाल ही अच्छे हैं। जैसे और आयत में है (وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 36) उन पर कलिम-ए-अज़ाब सादिक़ आ चुका है जैसे उन लोगों पर जो इनसे पहले इन जैसे थे। नुक़्सान और घाटे में यह और वह एक जैसे हो गए। कुफ़्फ़ार ने आपस में मश्वरा करके इस पर इत्तिफ़ाक़ कर लिया है कि वह कलामुल्लाह को मानेंगे नहीं, उसके अह्काम की पैरवी ही न करेंगे। बल्कि एक दूसरे से कह रखा है कि जब कुरआन पढ़ा जाए तो शोरोगुल करो और उसे न सुनो, तालियाँ बजाओ, सीटियाँ बजाओ, आवाज़ें निकालो। चुनाँचे कुरैशी यही करते थे, ऐबजोई करते थे, इंकार करते थे, दुश्मनी करते और उसे अपने ग़ल्बे का बाइस जानते थे। यही हाल हर जाहिल काफ़िर का है कि उसे कुरआन का सुनना अच्छा नहीं लगता। इसीलिए उसके बरख़िलाफ़ अल्लाह तआला ने मोमिनों को हुक्म फ़र्माया है कि (وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ) (7/आ'राफ़ : 204) "जब कुरआन पढ़ा जाए तो सुनो और चुप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।" इन काफ़िरों को धमकाया जा रहा है कि कुरआने करीम से मुख़ालिफ़त करने की बिना पर इन्हें सख़्त सज़ा दी जाएगी और इनकी बद अमली का मज़ा इन्हें ज़रूर चखाया जाएगा। इन दुश्मनाने इलाही का बदला दोज़ख़ की आग है जिसमें इनके लिए हमेशगी का घर है। यह इसका बदला है जो वह आयाते इलाही का इंकार करते थे। इसके बाद की आयत का मतलब हज़रत अली (रज़ि.) से मरवी है कि "जिन्न से मुराद इब्लीस और इंस से मुराद हज़रत आदम (عليه السلام) का वह लड़का है जिसने अपने भाई को मार डाला था।" (तब्री : 21/462) और रिवायत में है कि इब्लीस तो हर मुश्रिक को पुकारेगा और हज़रत आदम (عليه السلام) का यह लड़का हर कबीरा गुनाह करने वाले को पुकारेगा। पस इब्लीस शिर्क की तरफ़ और तमाम गुनाहों की तरफ़ लोगों को दावत देने वाला है और अव्वले रसूल हज़रत आदम (عليه السلام) का यह लड़का जो अपने भाई का क़ातिल है। (तब्री : 21/462) चुनाँचे हदीस में है कि "रूए ज़मीन पर जो क़त्ले नाहक़ होता है उसका गुनाह हज़रत आदम (عليه السلام) के उस पहले फ़रज़न्द पर भी होता है।" (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब ख़ल्के आदम व ज़ुर्रियतुहू : 3335; सहीह मुस्लिम : 1677) क्यों कि क़त्ले बेजा का शुरू करने वाला यह है। पस कुफ़्फ़ार क़ियामत के दिन जिन्न व इंस जो उन्हें गुमराह करने वाले थे उन्हें नीचे के तब्क़े में दाख़िल कराना चाहेंगे ताकि उन्हें सख़्त अज़ाब हों, वह दर्के अस्फ़ल में चले जाएँ और उनसे ज़्यादा सज़ा भुगतें। सूरह आ'राफ़ में भी यह बयान गुज़र चुका है कि यह मानने वाले जिनकी मानते थे उनके लिए क़ियामत के दिन दोहरे अज़ाब की दरख़्वास्त करेंगे जिस पर कहा जाएगा कि हर एक दुगुने अज़ाब में ही है लेकिन तुम बेशऊर हो। हर एक को उसके आ'माल के मुताबिक़ सज़ा हो रही है। जैसे और आयत में है (اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ) (16/नहल : 88) यानी "जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह तआला की राह से रोका उन्हें हम उनके फ़साद की वजह से अज़ाब पर अज़ाब करेंगे।"

***

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا
وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ أَوْلِيَآؤُكُمْ فِي الْحَيَوٰةِ
الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِيٓ أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ
﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "जिन लोगों ने कहा कि हमारा परवरदिगार अल्लाह है फिर उसी पर क़ायम हो रहे उनके पास फ़रिश्ते यह कहते हुए आते हैं कि तुम कुछ भी अंदेशा और ग़म न करो बल्कि उस जन्नत की बशारत सुन लो जिसका तुम वादा दिये गए हो। (30) तुम्हारी दुनिया की ज़िन्दगी में भी हम तुम्हारे रफ़ीक़ थे और आख़िरत में भी रहेंगे जिस चीज़ को तुम्हारा जी चाहे और जो कुछ तुम माँगो सब जन्नत में मौजूद है। (31) ग़फ़ूरुर रहीम अल्लाह की तरफ़ से यह सब कुछ बतौरे मेहमानी के है।" (32)

इस्तिक़ामत का मअनी व मफ़्हूम (आ. 30 से 32) : जिन लोगों ने अल्लाह तआला के रब होने का यानी उसकी तौहीद का इक़रार किया फिर उस पर जमे रहे यानी फ़र्माने इलाही के मातहत अपनी ज़िन्दगी गुज़ारी। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, "बहुत से लोगों ने अल्लाह के रब होने का इक़रार करके फिर कुफ़्र कर लिया, जो मरते दम तक उसे कहता है वह है जिसने इस पर इस्तिक़ामत की।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरति हामीम अस्सज्दा : 3250; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे अबी यअ़ला : 3495; इसकी सनद में सुहैल बिन अबी हज़्म ज़ईफ़ रावी है (अत्तक़रीब : 1/338; रक़म : 576; नसाई वग़ैरह) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के सामने जब इस आयत की तिलावत होती थी तो आप (रज़ि.) फ़र्माते थे इससे मुराद कलिमा पढ़कर फिर कभी भी शिर्क न करने वाले हैं। एक रिवायत में है कि ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन ने एक बार लोगों से इस आयत की तफ़्सीर पूछी तो उन्होंने कहा, इस्तिक़ामत से मुराद गुनाह न करना है। आपने फ़र्माया, "तुमने इसे ग़लत समझा, इससे मुराद अल्लाह की रुबूबियत का इक़रार करके फिर दूसरे की तरफ़ कभी भी इल्तिफ़ात न करना है।" हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सवाल किया गया कि कुरआन में हुक्म और जज़ा के लिहाज़ से सबसे ज़्यादा आसान आयत कौनसी है? आपने इस आयत की तिलावत की कि तौहीदे इलाही पर ताउम्र क़ायम रहना। हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.)ने मिम्बर पर इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया, "अल्लाह की क़सम! यह वह लोग हैं जो अल्लाह की इताअत पर

जम जाते हैं और लोमड़ी की चाल नहीं चलते कि कभी इधर कभी उधर।'' इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''फ़राइज़े इलाही की अदायगी करते हैं।'' हज़रत क़तादा (रह.) यह दुआ माँगा करते थे (अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बुना फ़र्ज़ुक़्नल इस्तिक़ामत) ''ऐ अल्लाह! तू हमारा रब है हमें इस्तिक़ामत और पुख़्तगी अ़ता फ़र्मा।'' इस्तिक़ामत से मुराद दीन और अमल का ख़ुलूस है। हज़रत अबुल आलिया (रह.) ने कहा है एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया कि मुझे इस्लाम का कोई ऐसा अम्र बतलाइए कि फिर किसी से पूछने की ज़रूरत न रहे। आपने फ़र्माया, ''ज़ुबान से इक़रार कर कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया फिर उस पर जम जा। उसने फिर पूछा, अच्छा यह तो अमल हुआ अब बचूँ किस चीज़ से? तो आपने ज़ुबान की तरफ़ इशारा किया।'' (अहमद : 3/413; और इसकी सनद सही है; दारमी : 2/296; इब्ने हिब्बान : 5698)

फ़रिश्ते मोमिन को जन्नत की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं : उनके पास उनकी मौत के वक़्त फ़रिश्ते आते हैं और उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि तुम अब आख़िरत की मंज़िल की तरफ़ जा रहे हो, बेख़ौफ़ रहो, तुम पर वहाँ कोई खटका नहीं। तुम अपने पीछे जो दुनिया छोड़े जा रहे हो उस पर भी कोई ग़म व रंज न करो। तुम्हारे अहलो अयाल की, मालो मताअ की, दीनो दयानत की, हिफ़ाज़त हमारे ज़िम्मे है। हम तुम्हारे ख़लीफ़ा हैं। तुम्हें हम ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि तुम जन्नती हो, तुम्हें सच्चा और सही वादा दिया गया था वह पूरा होकर रहेगा। पस वह अपने इंतिक़ाल के वक़्त ख़ुश हो जाते हैं कि तमाम बुराइयों से बचे और तमाम भलाइयाँ हासिल हुईं। हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मोमिन की रूह से फ़रिश्ते कहते हैं ऐ पाक रूह! जो पाक जिस्म में थी, चल अल्लाह तआला की बख़्शिश, इन्आम और उसकी नेअमत की तरफ़ चल, उस अल्लाह के पास जो तुझ पर नाराज़ नहीं।'' (अहमद : 4/287; वहुव हदीसुन हसन) यह भी मरवी है कि जब मुसलमान अपनी क़ब्रों से उठेंगे उसी वक़्त फ़रिश्ते उनके पास आएँगे और उन्हें बशारतें सुनाएँगे। हज़रत साबित (रज़ि.) जब इस सूरत को पढ़ते हुए इस आयत तक पहुँचे तो ठहर गए और फ़र्माया, हमें यह ख़बर मिली है कि मोमिन बन्दा जब क़ब्र से उठेगा तो वह दो फ़रिश्ते जो दुनिया में उसके साथ थे उसके पास आएँगे और उससे कहेंगे डर नहीं, घबरा नहीं, ग़मगीन न हो, तू जन्नती है, ख़ुश हो जा तुझसे अल्लाह के जो वादे थे, पूरे होंगे। ग़र्ज़ ख़ौफ़ अमन से बदल जाएगा, आँखें ठण्डी हो जाएँगी, दिल मुत्मइन हो जाएगा, क़ियामत का तमाम डर, दहशत और वहशत दूर हो जाएगी। आमाले सालिहा का बदला अपनी आँखों से देखेगा और ख़ुश होगा। अल्हासिल मौत के वक़्त क़ब्र में और क़ब्र से उठते हुए हर वक़्त रहमत के फ़रिश्ते उसके साथ रहेंगे और हर वक़्त बशारतें सुनाते रहेंगे। उनसे फ़रिश्ते यह भी कहेंगे कि ज़िन्दगानी दुनिया में हम तुम्हारे रफ़ीक़ व वली थे, तुम्हें नेकी की राह सुझाते थे, ख़ैर की रहनुमाई करते थे, तुम्हारी हिफ़ाज़त करते थे। ठीक इसी तरह आख़िरत में भी हम तुम्हारे साथ रहेंगे, तुम्हारी वहशत व दहशत दूर करते रहेंगे, क़ब्र में, हश्र में, मैदाने क़ियामत में पुल सिरात पर ग़र्ज़ हर जगह हम तुम्हारे रफ़ीक़ और दोस्त और साथी हैं। नेअमतों वाली जन्नतों में पहुँचा देने तक तुमसे अलग न होंगे। वहाँ जो तुम चाहोगे तुम्हें मिलेगा जो ख़्वाहिश होगी पूरी होगी। यह मेहमानी यह अता यह इन्आम यह ज़ियाफ़त उस अल्लाह जल्ल व अला की तरफ़ से है जो बख़्शने वाला और मेहरबानी करने वाला है। उसका लुत्फ़ो रहम उसकी बख़्शिश और करम बहुत वसीअ है।

जन्नत के बाज़ार और दीदारे इलाही : हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) और हज़रत अबू हुरेरा(रज़ि.) की मुलाक़ात हुई तो हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआला हम दोनों को जन्नत के बाज़ार में मिलाए। इस पर हज़रत सईद (रह.) ने पूछा कि जन्नत में भी बाज़ार होंगे? फ़र्माया मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़बर दी है कि ''जन्नती जब जन्नत में जाएँगे और अपने अपने मरातिब के मुताबिक़ दर्जे पाएँगे तो दुनिया के अंदाज़ से जुम्अे वाले दिन उन्हें एक जगह जमा होने की इजाज़त मिलेगी। जब सब जमा हो जाएँगे तो अल्लाह तआला उन पर तजल्ली करेगा, उसका अर्श ज़ाहिर होगा। वह सब जन्नत के बाग़ीचे में नूर के और लुअ लुअ और याक़ूत के और ज़बरजुद और सोने चाँदी के मिम्बरों पर बैठेंगे। कुछ और जो नेकियों के एतिबार से कम दर्जे के हैं लेकिन जन्नती होने के एतिबार से कोई किसी से कमतर नहीं वह मुश्क के और काफ़ूर के टीलों पर होंगे लेकिन अपनी जगह इतने ख़ुश होंगे कि कुर्सी वालों को अपने से अफ़ज़ल मज्लिस में नहीं जानते हों। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने हुज़ूर (ﷺ)से सवाल किया कि क्या हम अपने रब को देखेंगे? आपने फ़र्माया, हाँ! हाँ! देखोगे। आधे दिन के सूरज और चौदहवीं रात के चाँद को जिस तरह साफ़ देखते हो उसी तरह अल्लाह तआला को देखोगे। उस मज्लिस में एक एक से अल्लाह बातें करेगा। यहाँ तक कि किसी से कहेगा याद है फ़लाँ दिन तुमने मेरा फ़लाँ ख़िलाफ़ किया था। वह कहेगा क्यूँ जनाबे बारी! तू तो वह ख़ता माफ़ कर चुका था फिर उसका क्या ज़िक्र? कहेगा, हाँ! ठीक है उसी मेरी मग़्फ़िरत की वुस्अत की वजह से ही तो तू इस दर्जे पर पहुँचा है। यह उसी हालत में होंगे कि उन्हें एक अब्र ढाँप लेगा और उससे ऐसी ख़ुश्बू बरसेगी कि कभी किसी ने नहीं सूँघी थी। फिर रब्बुल आलमीन अज़्ज़ व जल्ल कहेगा कि उठो और मैंने जो इन्आम व इकराम तुम्हारे लिए तैयार कर रखे हैं उन्हें लो। फिर यह सब एक बाज़ार में पहुँचेंगे जिसे चारों तरफ़ से फ़रिश्ते घेरे हुए होंगे। वहाँ वह चीज़ें देखेंगे जो न कभी देखी थीं न सुनी थीं, न कभी ख़्याल में गुज़री थीं। जो शख़्स जो चीज़ चाहेगा ले लेगा, ख़रीदो फ़रोख़्त वहाँ न होगी बल्कि इन्आम होगा। वहाँ तमाम अहले जन्नत एक दूसरे से मुलाक़ात करेंगे। एक कम दर्जे का जन्नती आ'ला दर्जे के जन्नती से मुलाक़ात करेगा तो उसके लिबास वग़ैरह को देखकर जी में ख़्याल करेगा। वहीं अपने जिस्म की तरफ़ देखकर जी में ख़्याल करेगा कि इससे भी अच्छे कपड़े इसके हैं। क्योंकि वहाँ किसी को कोई रंजो ग़म न होगा। अब हम सब लौटकर अपनी अपनी मंज़िलों में जाएँगे। वहाँ हमारी बीवियाँ हमें मरहबा कहेंगे और कहेंगे कि जिस वक़्त आप यहाँ से गए थे तब यह तरोताज़गी और यह नूरानियत आपमें न थी लेकिन इस वक़्त तो जमाल व ख़ूबी और ख़ुश्बू और ताज़गी बहुत ही बढ़ी हुई है। यह जवाब देंगे कि हाँ! ठीक है हम आज अल्लाह तआला की मज्लिस में थे और यक़ीनन हम बहुत ही बढ़ चढ़ गए।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सूक़िल जन्ना : 2549; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; हिशाम बिन अम्मार रावी का आख़िर में हाफ़िज़ा ख़राब हो गया था। इब्ने माजहम : 4336; अस्सुन्ना : 785) मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जो अल्लाह की मुलाक़ात को पसंद करे अल्लाह भी उससे मिलने को चाहता है और जो अल्लाह की मुलाक़ात को बुरा जाने अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को नापसंद करता है। सहाबा (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम तो मौत को मकरूह

जानते हैं। आपने फ़र्माया इससे मुराद मौत की कराहत नहीं बल्कि मोमिन की सकरात के वक़्त उसके पास अल्लाह की तरफ़ से ख़ुशख़बरी आती है जिसे सुनकर उसके नज़दीक अल्लाह की मुलाक़ात से ज़्यादा महबूब चीज़ कोई नहीं रहती, पस अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को पसंद करता है और फ़ाजिर या काफ़िर की सकरात के वक़्त जब उसे उस बुराई की ख़बर दी जाती है जो उसे अब पहुँचने वाली है तो वह अल्लाह की मुलाक़ात को मकरूह रखता है पस अल्लाह भी उसकी मुलाक़ात को मकरूह रखता है।'' (अहमदः 3/107; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; वला किन्नहू सहीह बिश्शवाहिद इस मअनी की रिवायत सहीह बुख़ारी : 6507; सहीह मुस्लिम 2683 में मौजूद है।)

***

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ
بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا
يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ
بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : ''उससे ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये और नेक काम करे और कहे कि मैं यक़ीनन मुसलमानों में से हूँ। (33) नेकी और बुराई बराबर नहीं होती। बुराई को भलाई से दूर कर फिर तेरा दुश्मन ऐसा हो जाएगा जैसे वली दोस्त। (34) यह बात उन्हीं को नसीब होती है जो सब्र करें और उसे सिवा बड़े नसीबे वालों के कोई नहीं पा सकता। (35) और अगर शैतान की तरफ़ से कोई वस्वसा आए तो अल्लाह से पनाह तलब कर लिया कर। यक़ीनन वह बहुत ही सुनने वाला और जानने वाला है।'' (36)

सबसे अच्छी दावत किसकी है? (आ.33 से 36) : फ़र्माता है जो अल्लाह तआला के बन्दों को अल्लाह की तरफ़ बुलाए और ख़ुद भी नेकी करे, इस्लाम क़बूल करे, उससे ज़्यादा अच्छी बात और किसकी होगी? यह है जिसने अपने आपको नफ़ा पहुँचाया और अल्लाह की मख़्लूक़ को भी अपनी ज़ात से नफ़ा

पहुँचाया। यह उनमें से नहीं जो मुँह के बड़े बातूनी होते हैं। जो दूसरों को कहते हैं मगर ख़ुद नहीं करते। यह तो ख़ुद भी करता है और दूसरों को भी कहता है। यह आयत आम है। रसूलुल्लाह (ﷺ) सबसे औला तौर पर इसके मिस्दाक़ हैं। कुछ ने कहा है इसके मिस्दाक़ अज़ान देने वाले हैं जो नेककार भी हों। चुनाँचे सहीह मुस्लिम में है "क़ियामत के दिन मुअज़्ज़िन सब लोगों से ज़्यादा लम्बी गर्दनों वाले होंगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब फ़ज़्लुल अज़ान व हर्बुश्शैतान इन्द समाइही : 387; इब्ने माजा : 725; अहमद : 4/95) सुनन में है इमाम ज़ामिन है और मुअज़्ज़िन अमानतदार है। अल्लाह तआला इमामों को राहे रास्त दिखाए और मुअज़्ज़िनों को बख़्शे। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मा यजिबु अलल मुअज़्ज़िन मन तआहदल वक़्त : 517; वहुव हसन; तिर्मिज़ी : 207; मुस्नदे तयालिसी : 2404; अहमद : 2/419; इब्ने हिब्बान : 1672; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 1839; सहीह इब्ने ख़ुज़ैमा : 1531) इब्ने अबी हातिम में है हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अज़ान देने वालों का हिस्सा क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के नज़दीक मिस्ले जिहाद करने वालों के हिस्से के है। अज़ान व इक़ामत के बीच उसकी वह हालत है जैसे कोई जिहाद में राहे इलाही में अपने ख़ून में लतपत हो रहा हो।" हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो फिर मुझे हज्ज व उमरे और जिहाद की इतनी ज़्यादा परवाह न होती।" हज़रत उमर (रज़ि.) से मंक़ूल है "अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो मेरी आरज़ू पूरी हो जाती और मैं रात के नफ़्ली क़ियाम और दिन के नफ़्ली रोज़ों की इस क़द्र तगो दो न करता। मैंने सुना है अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने तीन बार मुअज़्ज़िनों की बख़्शिश की दुआ की। इस पर मैंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! आपने अपनी दुआ में हमें याद न किया हालाँकि हम अज़ान कहने पर तलवारें तान लेते हैं। आपने फ़र्माया, हाँ! लेकिन ऐ उमर! ऐसा ज़माना भी आने वाला है कि मुअज़्ज़िनी ग़रीब मिस्कीन लोगों तक रह जाएगी। सुनो उमर! जिन लोगों का गोश्त पोस्त जहन्नम पर हराम है उनमें मुअज़्ज़िन भी हैं।" हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं इस आयत में भी मुअज़्ज़िन की ता'रीफ़ है। इसका हय्या अलस्सलाति कहना अल्लाह की तरफ़ बुलाना है। इब्ने उमर (रज़ि.) और इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं यह आयत मुअज़्ज़िनों के बारे में उतरी है और यह जो फ़र्माया कि वह अमले सालेह करता है इससे मुराद अज़ान व तक्बीर के बीच दो रकअत पढ़ना है। जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) का इर्शाद है दो अज़ानों के बीच नमाज़ है, दो अज़ानों के बीच नमाज़ है.... जो चाहे, (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब अस्सलातु क़ब्लल मग़्रिब : 1183; सहीह मुस्लिम : 838; अबूदाऊद : 1283; तिर्मिज़ी : 185; इब्ने माजा : 1162; इब्ने हिब्बान : 1559; अहमद : 4/86) एक हदीस में है कि अज़ान व इक़ामत के बीच की दुआ रद्द नहीं होती।" (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब फ़िद्दुआइ बैनल अज़ान वल इक़ामत : 521; और वह सही है; तिर्मिज़ी : 212; अमलल यौम वल्लैलत लिन्नसाई : 68; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 1909; इब्ने अबी शैबा : 10/225; अहमद : 3/119) सही बात यह है कि आयत अपने उमूम के लिहाज़ से मुअज़्ज़िन ग़ैर मुअज़्ज़िन हर उस शख़्स को शामिल है जो अल्लाह की तरफ़ दावत दे। यह याद रहे कि इस आयत के नाज़िल होने के वक़्त तो सिरे से अज़ान शुरू ही न थी। इसलिए कि यह आयत मक्के में उतरी है और अज़ान मदीने पहुँच जाने के बाद मुक़र्रर हुई है जबकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ेद बिन अब्दे रिबा (रज़ि.) ने

अपने ख़्वाब में अज़ान देते देखा और सुना और हुज़ूर (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया, बिलाल (रज़ि.) को सिखाओ वह बुलंद आवाज़ हैं। (अबूदाऊद : 499 और इसकी सनद हसन है।) पस सही बात यही है कि यह आयत आम है इसमें मुअज़्ज़िन भी शामिल हैं।

हज़रत हसन बसरी (रह.) इस आयत को पढ़कर फ़र्माते थे यही लोग हैं हबीबुल्लाह, यही औलिया अल्लाह हैं, यही सबसे ज़्यादा अल्लाह के पसंदीदा हैं, यही सबसे ज़्यादा अल्लाह के महबूब हैं कि इन्होंने अल्लाह की बातें मान लीं फिर दूसरों से मनवाने लगे और अपने मानने में नेकियाँ करते रहे और अपने मुसलमान होने का ऐलान करते रहे यही अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं। भलाई और बुराई, नेकी और बदी बराबर बराबर नहीं है बल्कि उनमें बेहद फ़र्क़ है। जो तुझसे बुराई करे तू उससे भलाई कर और उसकी बुराई को इस तरह दूर कर। हज़रत उमर (रज़ि.) का फ़र्मान है "तेरे बारे में जो शख़्स अल्लाह तआला की नाफ़र्मानी करे तो तू उसके बारे में अल्लाह तआला की फ़र्माबरदारी कर उससे बड़ी कोई चीज़ नहीं।" अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐसा करने से तेरा जानी दुश्मन दिली दोस्त बन जाएगा। इस वसिय्यत पर अमल उसी से होगा जो साबिर हो नफ़्स पर इख़्तियार रखता हो और हो भी नसीब वाला कि दीनों दुनिया की बेहतरी उसकी तक़्दीर में हो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ईमान वालों को अल्लाह का हुक्म है कि वह गुस्से के वक़्त सब्र करें और दूसरे की जिहालत पर अपनी बुर्दबारी का सबूत दें और दूसरे की बुराई से दरगुज़र करें। ऐसे लोग शैतानी दाँव से महफ़ूज़ रहते हैं और उनके दुश्मन भी फिर तो उनके दोस्त बन जाते हैं। यह तो हुआ इंसानी शर से बचने का तरीक़ा, अब शैतानी शर से बचने का तरीक़ा बयान हो रहा है कि अल्लाह की तरफ़ झुक जाया करो उसी ने उसे यह ताक़त दे रखी है कि वह दिल में वसाविस डाल देता है और उसी के इख़्तियार में है कि वह उसके शर से महफ़ूज़ रखे। नबी (ﷺ) अपनी नमाज़ में फ़र्माते थे (अऊज़ुबिल्लाहिस्समीइल अलीमि मिनश्शैतानिर्रजीम मिन हम्ज़िही व नफ़्ख़िही व नफ़्सिह) (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मन रअल इस्तिफ़्ताह बि सुब्हानक... : 775; और इसकी सनद हसन है।) पहले हम बयान कर चुके हैं कि इस मक़ाम जैसा ही मक़ाम सिर्फ़ सूरह आ'राफ़ में है जहाँ इर्शाद है (خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ) (7/आ'राफ़ : 199) और सूरह मोमिनून की आयत (इदफ़अ् बिल्लती....) में हुक्म हुआ है कि दरगुज़र करने की आदत डालो और अल्लाह की पनाह में आ जाया करो, बुराई का बदला भलाई से दिया करो वग़ैरह।

***

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ

وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا

فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئَمُوْنَ
۝٣٨ (السجدہ) وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ
اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٣٩

तर्जुमा : "दिन रात और सूरज चाँद भी उसी की निशानियों में से हैं। तुम सूरज को या चाँद को सज्दा न करो बल्कि सज्दा उस अल्लाह के सामने करो जो उन सबका पैदा करने वाला है। अगर तुम्हें उसी की इबादत करनी है। (37) तो फिर भी अगर यह जी चुराएँ तो वह फ़रिश्ते जो अल्लाह के नज़दीक हैं वह तो रात दिन उसकी तस्बीह बयान कर रहे हैं और किसी वक़्त भी नहीं उकताते। (38) उस अल्लाह की निशानियों में से यह भी है कि तू ज़मीन को दबी दबाई देखता है फिर जब हम उस पर बारिश बरसाते हैं तो वह तरोताज़ा होकर उभरने लगती है। जिसने उसे ज़िन्दा किया वही यक़ीनी तौर पर मुर्दों को भी ज़िन्दा करेगा। बेशक वह हर हर चीज़ पर क़ादिर है।" (39)

दिन रात, चाँद सूरज, उसी ने बनाए (आ. 37 से 39) : अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ को अपनी अज़ीमुश्शान कुदरत और बेमिसाल ताक़त दिखाता है कि वह जो करना चाहे कर डालता है। सूरज चाँद, दिन रात उसकी कुदरते कामिला के निशानात हैं। रात को उसके अंधेरों समेत, दिन को उसके उजालों समेत, उसने बनाए है। कैसे यके बाद दीगरे आते जाते हैं। सूरज को और उसकी रोशनी और चमक को, चाँद को और उसकी नूरानियत को देख लो, उनकी भी मंज़िलें और आसमान मुक़र्रर हैं। उनके तुलूअ व गुरूब से दिन रात का फ़र्क़ हो जाता है। महीने और बर्सों की गिनती मालूम हो जाती है, जिससे इबादात, मामलात और हुक़ूक़ की बाक़ायदा अदायगी होती है। चूँकि आसमान व ज़मीन में ज़्यादा ख़ूबसूरत और मुनव्वर सूरज और चाँद था इसलिए उन्हें ख़ुसूसियत से अपना मख़्लूक़ होना बतलाया और फ़र्माया कि अगर अल्लाह के बन्दे हो तो सूरज चाँद के सामने माथा न टेकना, इसलिए कि वह मख़्लूक़ हैं। मख़्लूक़ सज्दा करने के क़ाबिल नहीं होती, सज्दा किये जाने के लायक़ वह है जो सबका ख़ालिक़ है पस तुम अल्लाह तआला की इबादत किये चले जाओ। लेकिन अगर तुमने अल्लाह के सिवा उसकी मख़्लूक़ की भी इबादत कर ली तो तुम उसकी नज़रों में गिर जाओगे और फिर तो वह तुम्हें कभी नहीं बख़्शेगा। जो लोग सिर्फ़ उसकी इबादत नहीं करते बल्कि किसी और की भी इबादत कर लेते हैं वह यह न समझें कि अल्लाह के आबिद वही हैं, अगर वह उसकी इबादत छोड़ दें तो और कोई उसका आबिद नहीं रहने का। नहीं! नहीं! अल्लाह तआला उनकी इबादतों से सिर्फ़ बेपरवाह है। उसके फ़रिश्ते दिन रात उसकी पाकीज़गी के बयान और उसकी ख़ालिस इबादतों में बेथके और बिन उकताए हर वक़्त मशग़ूल रहते हैं। जैसे और आयत में है अगर यह कुफ़्र करें तो हमने एक क़ौम ऐसी भी मुक़र्रर कर रखी है जो कुफ़्र न करेगी। हुज़ूर (ﷺ)

फ़र्माते हैं, "रात दिन को सूरज चाँद को और हवा को बुरा न कहो, यह चीज़ें कुछ लोगों के लिए रहमत और कुछ के लिए ज़हमत हैं।" (मुस्नदे अबी यअ़ला : 2194; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अल्मुअजमुल औसत : 6791; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/71; इसकी इस्नाद में इब्ने अबी लैला सीउल हिफ़्ज़ (अल्मीज़ान : 3/613; रक़म : 7825) और सईद बिन बशीर मुतकल्लम फ़ीह है (मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/71) उसकी इस कुदरत की निशानी कि वह मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है अगर देखना चाहते हो तो मुर्दा ज़मीन का बारिश से जी उठना देख लो कि वह ख़ुश्क चटयल और बेघास पात होती है। बारिश बरसते ही खेतियाँ, फल, सब्ज़ा, घास और फूल वग़ैरह उग आते हैं और वह एक अ़जीब अंदाज़ से अपने सब्ज़े के साथ लहलहाने लगती है। उसे ज़िन्दा करने वाला ही तुम्हें भी ज़िन्दा करेगा यक़ीन मानो कि वह जो चाहे उसकी कुदरत में है।

***

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِيٓ ءَايَٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَآ ۗ أَفَمَن يُلْقَىٰ فِى النَّارِ خَيْرٌ أَم
مَّن يَأْتِيٓ ءَامِنًا يَوْمَ الْقِيَٰمَةِ ۚ اعْمَلُوا۟ مَا شِئْتُمْ ۖ إِنَّهُۥ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤٠﴾ إِنَّ
الَّذِينَ كَفَرُوا۟ بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُۥ لَكِتَٰبٌ عَزِيزٌ ﴿٤١﴾ لَّا يَأْتِيهِ الْبَٰطِلُ
مِنۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِۦ ۖ تَنزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ﴿٤٢﴾ مَّا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا
قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

तर्जुमा : "जो लोग हमारी आयतों में कजरवी करते हैं वह कुछ हमसे मख़फ़ी नहीं है। बतलाओ जो आग में डाला जाए वह अच्छा है या वह जो अम्नो अमान के साथ क़ियामत के दिन आए? तुम जो चाहो करते चले जाओ, वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है। (40) जिन लोगों ने अपने पास कुरआन पहुँच जाने के बावजूद उससे कुफ़्र किया (वह भी हमसे पोशीदा नहीं) यह बड़ी बावक़्अत किताब है (41) जिसके पास बातिल फटक ही नहीं सकता। न उसके आगे से न उसके पीछे से। यह है नाज़िलकर्दा हिक्मतों वाले ख़ूबियों वाले अल्लाह की। (42) तुझसे वही कहा जाता है जो तुझसे पहले रसूलों से भी कहा गया है यक़ीनन तेरा परवरदिगार मआ़फ़ी वाला भी है और दर्दनाक अ़ज़ाब वाला भी है।" (43)

क़ुरआन में बातिल की मिलावट नहीं हो सकती (आ. 40 से 43) : (इल्हाद) के मअ़नी इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से ''कलाम को उसकी जगह से हटाकर दूसरी जगह रखने के ''मरवी हैं। और क़तादा (रह़.) वग़ैरह से इल्हाद के मअ़नी कुफ़्रो इनाद के। फ़र्माता है कि मुल्हिद लोग हमसे मख़्फ़ी नहीं। हमारे अस्मा व सिफ़ात को इधर से उधर कर देने वाले हमारी निगाहों में हैं। उन्हें हम बदतरीन सज़ाएँ देंगे। समझ लो कि क्या जहन्नम वासिल होने वाला और तमाम ख़तरों से बच रहने वाला बराबर हैं? हर्गिज़ नहीं, बदकार काफ़िरों! जो चाहो अ़मल करते चले जाओ, मुझसे तुम्हारा कोई अ़मल पोशीदा नहीं। बारीक से बारीक चीज़ भी मेरी नज़रों से ओझल नहीं। (ज़िक्र) से मुराद बक़ौले ज़ह्हाक, सुद्दी और क़तादा (रह़.) क़ुरआन है। वह बाइज़्ज़त बा तौक़ीर है। उसके मिस्ल किसी का कलाम नहीं। उसके आगे पीछे से यानी किसी त़रफ़ से उससे बात़िल मिल नहीं सकता। यह रब्बुल आ़लमीन की त़रफ़ से नाज़िलशुदा है। जो अपने क़ौलो व अफ़्आ़ल में ह़कीम है। उसके तमाम हुक्म अह़काम बेहतरीन अंजाम वाले हैं। तुझसे जो कुछ तेरे ज़माने के कुफ़्फ़ार कहते हैं यही तुझसे अगले नबियों को उनकी काफ़िर उम्मतों ने कहा था। पस जैसे उन पैग़म्बरों ने स़ब्र किया तुम भी स़ब्र किया करो। जो भी तेरे रब की त़रफ़ रुजूअ़ करे वह उसके लिए बड़ी बख़्शिशों वाला है। और जो अपने कुफ़्र व ज़िद्द पर अड़ा रहे, मुख़ालिफ़ते ह़क़ और तक्ज़ीबे रसूल से बाज़ न आए, उस पर वह सख़्त दर्दनाक सज़ाएँ करने वाला है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं अगर अल्लाह तआ़ला की बख़्शिश और माफ़ी न होती तो दुनिया में एक भी मुतनफ़्फ़िस जी नहीं सकता था और अगर उसकी पकड़ धकड़, अ़ज़ाब सज़ा न होती तो हर शख़्स मुत्मइन होकर टेक लगाकर बेख़ौफ़ हो जाता। (यह रिवायत मुर्सल है और इसके अ़लावा इसकी सनद में अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआ़न सीउल ह़िफ़्ज़ रावी है। (अत्तक़रीब : 2/37; रक़म : 342) लिहाज़ा ज़ईफ़ व मर्दूद है।)

***

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ۗ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ
عَمًى ؕ اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ
فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : "अगर हम इसे अ़ज्मी ज़ुबान का क़ुरआन बनाते तो कहते कि इसकी आयतें साफ़ साफ़ बयान क्यूँ न की गईं? यह क्या कि अ़ज्मी किताब और अ़रबी रसूल, तू कह दे कि यह तो ईमान वालों के लिए हिदायत व शिफ़ा है और जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में तो बहरापन और बोझ है और यह उन पर अँधापा है यह वह लोग हैं जो किसी बहुत दूर दराज़ जगह से पुकारे जा रहे हैं। (44) यक़ीनन हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी थी, तो उसमें भी इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर वह बात न होती जो तेरे रब की त़रफ़ से पहले ही मुक़र्रर हो चुकी है तो इनके बीच कभी का फ़ैसला हो चुका होता। यह लोग तो उससे शकी हैं और बेचैन हैं।" (45)

क़ुरआन की ज़ुबान अ़रबी क्यूँ है? (आ. 44, 45) : क़ुरआने करीम की फ़साहत व बलाग़त, उसके हुक्म अहकाम, उसके लफ़्ज़ी व मअ़नवी फ़वाइद का बयान करके उस पर ईमान न लाने वालों को सरकशी ज़िद्द और अ़दावत का बयान फ़र्मा रहा है। जैसे और आयत में इर्शाद है (وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ﴿﴾ فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿﴾) (26/शोअ़रा : 198, 199) मत़लब यह है कि न मानने के बीसियों ह़ीले हैं न यूँ चैन न वूँ चैन। अगर क़ुरआन किसी अ़ज्मी ज़ुबान में उतरता तो बहाना करते कि हम तो इसे साफ़ साफ़ समझ नहीं सकते। मुख़ात़ब जब अ़रबी ज़ुबान के हैं तो इन पर जो किताब उतरती है वह ग़ैर अ़रबी ज़ुबान में क्यूँ उतरती है? और अगर कुछ अ़रबी में होती और कुछ दूसरी ज़ुबान में तो भी इनका यही ऐतिराज़ होता कि इसकी क्या वजह? ह़ज़रत ह़सन बसरी (रह़.) की क़िरअत (अअ़जमिय्यु) है) सईद बिन ज़ुबैर (रह़.) भी यही मत़लब बयान करते हैं। इससे उनकी सरकशी मालूम होती है फिर फ़र्मान है कि यह क़ुरआन ईमान वालों के दिल की हिदायत और उनके सीनों की शिफ़ा है। उनके तमाम शक इससे ज़ाइल हो जाते हैं और जिन्हें इस पर ईमान नहीं वह तो इसे समझ ही नहीं सकते, जैसे कोई बहरा हो। न इसके बयान की त़रफ़ उन्हें हिदायत हो जैसे कोई अँधा हो। और आयत में है (وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا خَسَارًا) (17/बनी इस्राईल : 82) "हमारा नाज़िल किया हुआ यह क़ुरआन ईमान वालों के लिए शिफ़ा और रह़मत है। हाँ ज़ालिमों को तो उनका नुक़्सान ही बढ़ाता है।" उनकी मिसाल ऐसी है जैसे कोई दूर से किसी से कुछ कह रहा है कि न उसके कानों तक सही अल्फ़ाज़ पहुँचते हैं न वह ठीक त़रह़ मत़लब समझता है। जैसे और आयत में है (وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ) (2/बक़रह : 171) यानी काफ़िरों की मिसाल उसकी त़रह़ है जो पुकारता है मगर आवाज़ और पुकार के सिवा कुछ और उसके कान में नहीं पड़ता। बहरे गूँगे अँधे हैं फिर कैसे समझ लेंगे? ह़ज़रत ज़ह्ह़ाक (रह़.) ने यह मानी किया है कि क़ियामत के दिन उन्हें उनके बदतरीन नामों से पुकारा जाएगा। "ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) एक मुसलमान के पास बैठे हुए थे जिसका आख़िरी वक़्त था। उसने यकायक लब्बैक लब्बैक पुकारी। आपने फ़र्माया, क्या तुझे कोई दिखाई दे रहा है या कोई पुकार रहा है? उसने कहा हाँ! समुन्द्र के उस किनारे से कोई बुला रहा है तो आपने यही जुम्ला पढ़ा (41/ह़ामीम अस्सज्दा : 44) (इब्ने अबी ह़ातिम) फिर फ़र्माता है हमने मूसा (عليه السلام) को किताब दी लेकिन उसमें भी इख़्तिलाफ़ किया गया। उन्हें भी झुठलाया गया और सताया गया। पस जैसे उन्होंने स़ब्र किया

आपको भी सब्र करना चाहिए। चूँकि पहले ही से तेरे रब ने इस बात का फ़ैसला कर लिया है कि एक वक़्त मुक़र्रर यानी क़ियामत तक अज़ाब हटे रहेंगे। इसलिए यह मोहलत में हैं वरना इनके करतूत ऐसे न थे कि यह छोड़ दिये जाएँ और खाते पीते रहें, अभी ही हलाक कर दिये जाते। यह अपनी तक्ज़ीब में भी किसी यक़ीन पर नहीं बल्कि शक में ही पड़े हुए हैं, लरज़ रहे हैं और डाँवा डोल हो रहे हैं, वल्लाहु आलम!

***

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٤٦

तर्जुमा : ''जो शख़्स नेक काम करेगा वह अपने नफ़ा के लिए और जो बुरा काम करेगा उसका वबाल भी उसी पर है। तेरा रब बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं।''(46)

(आयत46) : इस आयत का मतलब बहुत साफ़ है। भलाई करने वाले के आमाल का नफ़ा उसी को होता है और बुराई करने वाले की बुराई का वबाल भी उसी की तरफ़ लौटता है। परवरदिगार की ज़ात ज़ुल्म से पाक है। एक के गुनाह पर दूसरे को वह नहीं पकड़ता। नाकर्दा गुनाह की वह सज़ा नहीं देता, पहले अपने रसूल भेजता है, अपनी किताब उतारता है, अपनी हुज्जत ख़त्म करता है, अपनी बातें पहुँचा देता है। अब भी जो न माने वह मुस्तहिक़े अज़ाब व सज़ा हो जाता है।

अल्हम्दु लिल्लाह! 24वें पारे की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ
أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا
مِن شَهِيدٍ ﴿٤٧﴾ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن
مَّحِيصٍ ﴿٤٨﴾

तर्जुमा : "क़ियामत का इल्म अल्लाह ही की तरफ़ लौटाया जाता है और जो फल अपने शगूफ़ों में से निकलते हैं और जो मादा हमल से होती है और जो बच्चे उन्हें होते हैं सबका इल्म उसे है। जिस दिन अल्लाह तआला इन मुश्रिकों को बुलाकर पूछेगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं? वह जवाब देंगे कि हमने तो तुझे कह सुनाया कि हममें से तो कोई इसका मुद्दई नहीं। (47) यह जिन जिनकी पूजा उससे पहले करते थे वह उनकी निगाह से गुम हो गए और उन्होंने समझ लिया कि अब उनके लिए कोई बचाव नहीं।" (48)

इल्मे ग़ेब (छुपी बातों का इल्म) सिर्फ़ अल्लाह ही के पास है (आ. 47, 48) : अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है कि क़ियामत कब आएगी? उसका इल्म उसके सिवा किसी और को नहीं। तमाम इंसानों के सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा(ﷺ) से जब फ़रिश्तों के सरदारों में से एक सरदार हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ने क़ियामत के आने का वक़्त पूछा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि, "जिससे पूछा जा रहा है वह भी पूछने वाले से ज़्यादा नहीं जानता।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब सवाल जिब्राईलन्नबी (ﷺ) अनिल ईमान वल इस्लाम : 50; सहीह मुस्लिम : 9) कुरआने करीम की और आयत में है (إِلَىٰ رَبِّكَ مُنتَهَاهَا) (79/नाज़िआत:44) यानी क़ियामत कब होगी? उसके इल्म का मदार तेरे रब की तरफ़ ही है। इसी तरह अल्लाह अज्ज व जल्ल ने और जगह फ़र्माया है (لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ) (7/आ'राफ़ : 187) मतलब यही है कि क़ियामत के वक़्त को अल्लाह तआला के सिवा और कोई नहीं जानता। फिर फ़र्माता है कि हर चीज़ को उस अल्लाह का इल्म घेरे हुए है, यहाँ तक कि जो फल शगूफ़ा खिलाकर निकले जिस औरत को हमल रहे, जो बच्चा उसे हो, यह सब उसके इल्म में है ज़मीनो आसमान का एक ज़र्रा उसके वसीअ इल्म से बाहर नहीं। और आयत में है (وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا) (6/अन्आम : 59) यानी जो पत्ता झड़ता है उसे भी वह जानता है। हर मादा को जो हमल रहता है और रहम जो कुछ घटाते बढ़ाते रहता है अल्लाह तआला ख़ूब जानता है। उसके पास हर चीज़ का अंदाज़ा है। उम्रें जो घटीं बढ़ीं वह भी किताब में लिखी होती हैं। ऐसा कोई

काम नहीं जो अल्लाह तआला पर मुश्किल हो क़ियामत के दिन मुश्रिकों से तमाम मख़्लूक़ के सामने अल्लाह तआला सवाल करेगा कि जिन्हें तुम मेरे साथ पूजा करते थे वह आज कहाँ हैं? वह जवाब देंगे कि हम तो तुझे मालूम करा चुके कि आज तो हममें से कोई भी इसका इक़रार न करेगा कि कोई तेरा शरीक भी है। आज उनके मअबूदाने बातिल सब गुम हो जाएँगे। कोई नज़र न आएगा जो उन्हें नफ़ा पहुँचा सके और यह ख़ुद जान लेंगे कि आज अल्लाह के अ़ज़ाबों से छुटकारे की कोई सूरत नहीं। यहाँ ज़न्न यक़ीन के मअ़नी में है।

कुरआने करीम की और आयत में इस मज़्मून को इस तरह बयान किया गया है (وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا) (18/कहफ़ : 53) यानी गुनहगार जहन्नम को देख लेंगे और उन्हें यक़ीन हो जाएगा कि वह उसमें गिरने वाले हैं। और उससे बचने की कोई राह न पाएँगे।

***

لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ۫ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ﴿٤٩﴾ وَلَئِنْ
اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ
قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٥٠﴾ وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ
اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ دُعَآءٍ عَرِيْضٍ ﴿٥١﴾

तर्जुमा : "भलाई के माँगने से इंसान थकता नहीं और अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँच जाए तो मायूस और नाउम्मीद हो जाता है। (49) और जो मुसीबत उसे पहुँच चुकी है उसके बाद अगर हम उसे किसी रहमत का मज़ा चखाएँ तो वह कह उठता है कि इसका तो मैं हक़दार ही था और मैं तो बावर नहीं कर सकता। क़ियामत क़ायम हो और अगर मैं अपने रब के पास वापिस किया गया तो भी यक़ीनन मेरे लिए उसके पास भी बेहतरी है यक़ीनन हम उन कुफ़्फ़ार को उनके आमाल से बाख़बर करेंगे और उन्हें सख़्त अ़ज़ाब का मज़ा चखाएँगे। (50) और जब हम इंसान पर अपना इन्आम करते हैं तो वह मुँह फेर लेता है और करवट बदल लेता है और जब उसे मुसीबत पड़ती है तो बड़ी लम्बी चौड़ी दुआएँ करने वाला बन जाता है।" (51)

इंसान की ख़ुदग़र्ज़ी (आ. 49 से 51) : अल्लाह तआला बयान करता है कि माल सेहत वग़ैरह भलाईयों की दुआओं से तो इंसान थकता ही नहीं और अगर उस पर बला आ पड़े या फ़क्रो फ़ाक़ा का मौक़ा आ जाए तो इस क़द्र हरासाँ और मायूस हो जाता है कि गोया अब किसी भलाई का मुँह नहीं देखने का। और अगर किसी बुराई या सख़्ती के बाद उसे कोई राहत मिल जाए तो कहने बैठ जाता है कि अल्लाह तआला पर यह तो मेरा हक़ था। मैं इसी के लायक़ था। अब इस नेअमत पर फूलता है अल्लाह तआला को भूलता है और साफ़ मुंकिर बन जाता है क़ियामत के आने का साफ़ इंकार कर जाता है। माल व दौलत राहत व आराम उसके कुफ़्र का सबब बन जाता है।

जैसे और आयत में है (كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۙ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۗ) (96/अलक़ : 6, 7) यानी इंसान ने जहाँ आसाइश व आराम पाया वहीं उसने सर उठाया और सरकशी की। फिर फ़र्माता है कि इतना ही नहीं बल्कि इस बदआमालियों पर भी भली उम्मीदें करता है और कहता है कि बिल्फ़र्ज़ अगर क़ियामत आई भी और मैं वहाँ खड़ा भी किया गया तो जिस तरह यहाँ सुख चैन में हूँ वहाँ भी रहूँगा। ग़र्ज़ इंकारे क़ियामत भी करता है। मरने के बाद जीने को भी मानता नहीं और फिर उम्मीदें लम्बी बाँधता है और कहता है जैसे मैं यहाँ हूँ वैसे ही वहाँ भी रहूँगा। फिर उन लोगों को डराता है कि जिनके यह आमाल व अक़ाइद हों उन्हें हम सख़्त सज़ा देंगे। फिर फ़र्माता है कि जब इंसान अल्लाह की नेअमतें पा लेता है तो इताअत से और फिर जाता है और मानने से जी चुराता है। जैसे फ़र्माया فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ(51/ज़ारियात : 39) और जब उसे कुछ नुक़सान पहुँचता है तो बड़ी लम्बी चौड़ी दुआएँ करने लगता है। अरीज़ कलाम उसे कहते हैं जिसके अल्फ़ाज़ बहुत ज़्यादा हों और मअनी बहुत कम हों और जो कलाम उसके ख़िलाफ़ हो यानी अल्फ़ाज़ थोड़े हों और मअनी ज़्यादा हों तो उसे वजीज़ कलाम कहते हैं वह बहुत कम और बहुत काफ़ी होता है। इसी मज़्मून को और जगह इस तरह बयान किया गया है (وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ) (10/यूनुस : 12) जब इंसान को मुसीबत पहुँचती है तो अपने पहलू पर लेटकर और बैठकर और खड़े होकर ग़र्ज़ हर वक़्त हमसे मुनाजात करता रहता है और जब वह तक्लीफ़ हम दूर कर देते हैं तो उस बेपरवाही से चला जाता है गोया उस मुसीबत के वक़्त उसने हमें पुकारा ही न था।

***

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۭ
بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ
اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٥٣﴾ اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ

رَبِّهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطٌ ﴿۵۴﴾

तर्जुमा : ''तू कह दे कि भला यह तो बताओ कि अगर यह क़ुरआन अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ हो फिर तुमने इसे न माना बस उससे बढ़कर बहका हुआ कौन होगा जो हक़ से दूर पड़कर मुख़ालिफ़त में रह जाए। (52) अन्क़रीब हम उन्हें अपनी निशानियाँ आफ़ाक़े आलम में भी दिखाएँगे और ख़ुद उनकी अपनी ज़ातों में भी यहाँ तक कि उन पर खुल जाए कि हक़ यही है। क्या तेरे रब का हर चीज़ से वाक़िफ़ व आगाह होना काफ़ी नहीं। (53) यक़ीन जानो कि यह लोग अपने रब के रूबरू जाने से शक में हैं, याद रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ का एहाता किये हुए है।'' (54)

क़ुरआन की हक़्क़ानियत का इंकार करने वालों का अंजाम (आ. 52 से 54) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि क़ुरआन के झुठलाने वालों मुश्रिकों से कह दो कि मान लो कि यह क़ुरआन सचमुच अल्लाह तआला ही की तरफ़ से हो और तुम इसे झुठला रहे हो तो अल्लाह तआला के यहाँ तुम्हारा क्या हाल होगा? उससे बढ़कर गुमराह और कौन होगा जो अपने कुफ़्र और अपनी मुख़ालिफ़त की वजह से राहे हक़ और मस्लके हिदायत से बहुत दूर जा पड़ा हो। फिर अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि क़ुरआने करीम की हक़्क़ानियत की निशानियाँ और हुज्जतें उन्हें उनके गर्दो नवाह में दुनिया के चारों तरफ़ दिखा देंगे। इस्लामियों को फ़तूहात होंगी, वह सल्तनतों के सुल्तान बनेंगे। तमाम और दीनों पर इस दीन को ग़ल्बा होगा। फ़तहे बद्र और फ़तहे मक्का की निशानियाँ ख़ुद उनकी अपनी जानों में होंगी कि यह लोग तादाद में और शानो शौकत में बहुत ज़्यादा होंगे फिर भी मुट्ठी भर अहले हक़ उन्हें ज़ेरो ज़बर कर देंगे। और मुम्किन है यह मुराद हो कि हिक्मते इलाही की हज़ारों निशानियाँ ख़ुद इंसान के अपने वजूद में मौजूद हैं। उसकी सन्अत व बनावट उसकी तर्कीब व जिबिल्लत उसके जुदागाना अख़्लाक़ और मुख़्तलिफ़ सूरतें और रंग रूप वग़ैरह उसके ख़ालिक़ व सानेअ की बेहतरीन यादगारें हर वक़्त उसके सामने हैं बल्कि उसकी अपनी ज़ात में मौजूद हैं। उसका हेर फेर कभी कोई हालत बचपन जवानी बुढ़ापा बीमारी तंदुरुस्ती फ़राख़ी व रंजो राहत वग़ैरह औसाफ़ जो उस पर तारी होते हैं।

शैख़ अबू जअफ़र क़ुरशी ने अपने अश्आर में भी इसी मज़्मून को अदा किया है। अल्ग़र्ज़ यह बेरूनी और अंदुरूनी आयाते क़ुदरत इस क़द्र हैं कि इंसान अल्लाह की बातों की हक़्क़ानियत के मानने पर मजबूर हो जाता है। अल्लाह तआला की गवाही बस है और बिलकुल काफ़ी है वह अपने बन्दों के क़ौल व फ़ेअल से बख़ूबी वाक़िफ़ है वह जब फ़र्मा रहा है कि पैग़म्बर (ﷺ) सच्चे हैं फिर तुम्हें क्या हो गया जैसे इर्शाद है (لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا) (4/निसाअ : 166) लेकिन अल्लाह तआला बज़रिया इस किताब के जिसको तुम्हारे पास भेजी है और अपने इल्म के साथ

नाज़िल फ़र्माई है ख़ुद गवाही दे रहा है और फ़रिश्ते उसकी तस्दीक़ कर रहे हैं और अल्लाह तआला की गवाही काफ़ी है। फिर फ़र्माता है कि दरअसल इन लोगों को क़ियामत के क़ायम होने का यक़ीन ही नहीं इसीलिए बेफ़िक्र हैं। नेकियों से ग़ाफ़िल हैं। बुराइयों से बचते नहीं हालाँकि उसका आना यक़ीनी है।

इब्ने अबिदुनिया में है कि ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह़.) मिम्बर पर चढ़े और अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया लोगों! मैंने तुम्हें किसी नई बात के लिए जमा नहीं किया। बल्कि सिर्फ़ इसलिए तुम्हें जमा किया कि तुम्हें यह सुना दूँ कि रोज़े जज़ा के बारे में मैंने ख़ूब ग़ौर किया। मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि इसे सच्चा जानने वाला अहमक़ है और इसे झूठा जानने वाला हलाक होने वाला है। फिर आप मिम्बर से उतर आये। आपके इस फ़र्मान का कि उसे सच्चा जानने वाला अहमक़ है यह मतलब है कि सच जानता है फिर तैयारी नहीं करता और इसकी दिल हिला देने वाली दहशतनाक हालतों से ग़ाफ़िल है उससे डरकर आमाल नहीं करता जो उसे उस रोज़ के डर से अम्न दे सकें। फिर अपने आपको इसका सच्चा जानने वाला भी कहता है लह व लइब ग़फ़्लत व शहवत गुनाह और हिमाक़त में मुब्तला है और क़ियामत के क़रीब हो रहा है, वल्लाहु आलम!

फिर रब्बुल आलमीन अपनी कुदरते कामिला को बयान कर रहा है कि हर चीज़ पर उसका एहाता है। क़ियामे क़ियामत उसके लिए बिलकुल आसान है सारी मख़्लूक़ उसके क़ब्ज़े में है जो चाहे करे कोई उसका हाथ थाम नहीं सकता। जो उसने चाहा हुआ जो चाहेगा होकर रहेगा। उसके सिवा कोई हक़ीक़ी हाकिम नहीं, न उसके सिवा इबादत के लायक़ कोई ज़ात है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह हामीम अस्सज्दा की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह शूरा - 42

आयात : 53 मक्की पैराग्राफ : 7

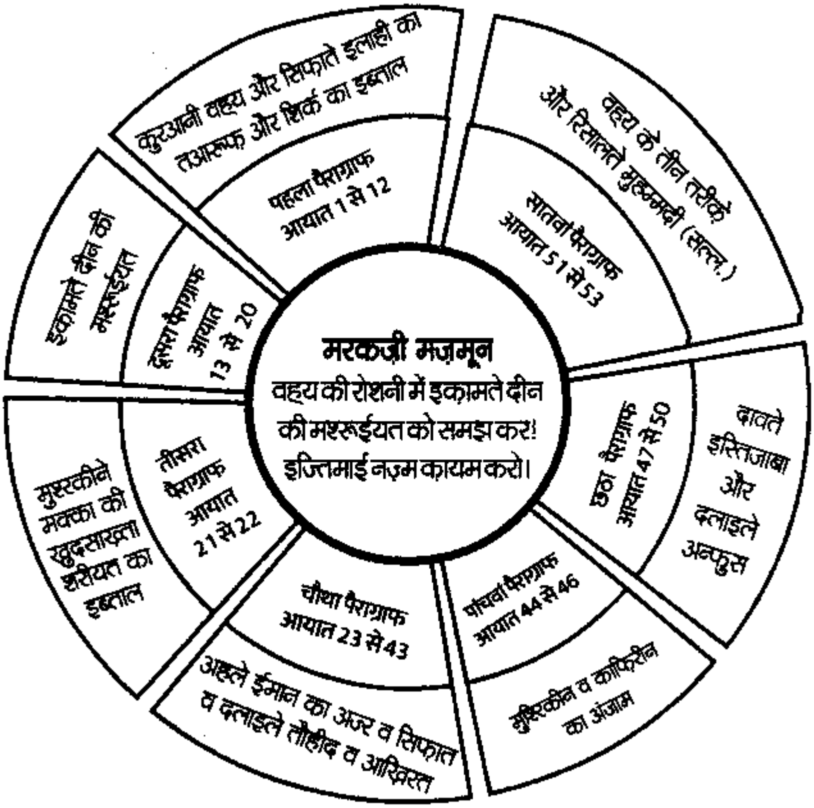

जमानए नुज़ूल

सूरह शूरा ये "**हवामीम**" के सिलसिले की तीसरी सूरत है। रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के आख़री दौर में, यानी ग़ालिबन 13 नबवी में नाज़िल हुई। ये वही जमाना है, जब सूरह "**ज़ुमर**" सूरह "**अन्आम**" और सूरह "**आराफ**" भी नाज़िल हुई, जिस में रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कत्ल की इज्तिमाई फैसले और साज़िश का ज़िक्र है। जब कुरैशे मक्का रसूलुल्लाह (सल्ल.) की दावत के बारे में बदस्तूर शक में मुब्तला थे। मौलाना इस्लाही (रह.) ने लिखा है कि ये "**विदाई ख़िताब**" की सी हैसियत रखती है। दरअसल ये सूरत मदीना मुनव्वरा में इस्लामी हुकूमत के कयाम की तम्हीद है, जिस में अल्लाह के कानून यानी अल्लाह की शरीयत को नाफ़िज करने के लिए और इकामते दीन के लिये शूराइयत पर मुश्तमिल आदिलाना इज्तिमाई नज़्म "**इस्लामी रियासत**" कायम करने की हिदायत दी गई। इस सूरह में शरीयते ख़ुदावन्दी और ख़ुदसाख़्ता शरीयते इंसानी का फ़रीक बता कर "**तौहीदे हाकिमियत**" की वज़ाहत की गई है।

तफ़्सीर सूरह शूरा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

حٰمٓ ① عٓسٓقٓ ② كَذٰلِكَ يُوۡحِىۡۤ اِلَيۡكَ وَاِلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۙ اللّٰهُ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ
③ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَهُوَ الۡعَلِىُّ الۡعَظِيۡمُ ④ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ
يَتَفَطَّرۡنَ مِنۡ فَوۡقِهِنَّ وَالۡمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ وَيَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِمَنۡ فِى
الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ⑤ وَالَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءَ
اللّٰهُ حَفِيۡظٌ عَلَيۡهِمۡ ۖ وَمَاۤ اَنۡتَ عَلَيۡهِمۡ بِوَكِيۡلٍ ⑥

तर्जुमा : "हामीम! (1) ऐन सीन क़ाफ़ (2) अल्लाह तआला जो ज़बरदस्त है और हिक्मत वाला है इसी तरह तेरी तरफ़ और तुझसे अगलों की तरफ़ वही भेजता रहा है। (3) आसमानों की तमाम चीज़ें और जो कुछ ज़मीन में है सब उसी का है। वह बरतर और अज़ीमुश्शान है। (4) क़रीब है आसमान अपने ऊपर से फट पड़ें तमाम फ़रिश्ते अपने रब की पाकी ता'रीफ़ के साथ बयान कर रहे हैं और ज़मीन वालों के लिए इस्तिग़फ़ार कर रहे हैं। ख़ूब समझ रखो कि अल्लाह तआला ही माफ़ करने वाला, रहमत वाला है। (5) जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरों को कारसाज़ बना लिया है अल्लाह तआला उन्हें ख़ूब देखभाल रहा है तू उनका ज़िम्मेदार नहीं है।" (6)

हुरूफ़े मुक़त्तआत के बारे में बहस (आ. 1 से 6) : हुरूफ़े मुक़त्तआत की बहस पहले गुज़र चुकी है। इब्ने जरीर (रह.) ने यहाँ पर एक अजीबो ग़रीब असर वारिद किया है। इसमें है कि एक शख़्स इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास आया उस वक़्त आपके पास हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि.) भी थे उसने उन हुरूफ़ की तफ़्सीर आपसे पूछी आपने ज़रा सी देर सर नीचा कर लिया फिर मुँह फेर लिया। उस शख़्स ने दोबारा यही सवाल किया। आपने फिर भी मुँह फेर लिया और उसके सवाल को बुरा जाना। उसने फिर तीसरी बार पूछा,

आपने फिर भी कोई जवाब न दिया। इस पर हज़रत हुज़ेफ़ा (रज़ि.) ने कहा, मैं तुझे बताता हूँ और मुझे यह मालूम है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इसे क्यूँ नापसंद कर हे हैं। उनके अहले बैत में से एक शख़्स के बारे में यह नाज़िल हुई है जिसे अ़ब्दुल इलाहा, और अ़ब्दुल्लाह कहा जाता होगा। वह मश्रिक़ की नहरों में से एक नहर के पास उतरेगा और वहाँ दो शहर बसाएगा। नहर को काटकर दोनों शहरों में ले जाएगा। जब अल्लाह तआ़ला उनके मुल्क के ज़वाल का और उनकी दौलत के इस्तीसाल का इरादा करेगा और उनका वक़्त ख़त्म होने को होगा तो उन दोनों शहरों में से एक पर रात के वक़्त आग आएगी जो उसे जलाकर भस्म कर देगी। वहाँ के लोग सुबह को देखकर ताज्जुब करेंगे। यह मालूम होगा कि गोया यहाँ कुछ था ही नहीं। सुबह ही सुबह वहाँ तमाम बड़े बड़े सरकश मुतकब्बिर मुख़ालिफ़े हक़ लोग जमा होंगे, उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला उन सबको उस शहर समेत ग़ारत कर देगा। यही मअ़नी हैं हामीम ऐन सीन क़ाफ़ के यानी अल्लाह की तरफ़ से यह अ़ज़ीमत यानी ज़रूरी है यह फ़ित्ना क़ज़ा किया हुआ यानी फ़ैसलशुदा है अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐन से मुराद अ़दल सीन से मुराद सयकून यानी यह अन्क़रीब होकर रहेगा। क़ाफ़ से मुराद वाक़ेअ़ होने वाला। उन दोनों शहरों में उससे भी ज़्यादा ग़ुर्बत वाली एक और रिवायत मुस्नदे हाफ़िज़ अबू यअ़ला की दूसरी जिल्द में मुस्नद इब्ने अ़ब्बास में है जो मरफ़ूअ़ भी है लेकिन इसकी सनद बिलकुल ज़ईफ़ है और मुन्क़तअ़ भी है, इसमें है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मिम्बर पर चढ़े और लोगों से पूछा कि तुममें से किसी ने इन हुरूफ़ की तफ़्सीर हुज़ूर (ﷺ) से सुनी है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) जल्दी खड़े हुए और फ़र्माया, हाँ! मैंने सुनी है हामीम अल्लाह तआ़ला के नामों में से एक नाम है ऐन से मुराद आ़यनल मुवल्लूना अ़ज़ाब यौमि बद्रिन है। सीन से मुराद (سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَىَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ) (26/शोअ़रा : 227) क़ाफ़ से क्या मुराद है इसे आप न बतला सके तो हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) खड़े हुए और हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर के मुताबिक़ तफ़्सीर की और फ़र्माया कि क़ाफ़ से मुराद क़ारिया आसमानी है जो तमाम लोगों को ढाँप लेगा। तर्जुमा यह हुआ कि बद्र के दिन पीठ फेरकर भागने वाले कुफ़्फ़ार ने अ़ज़ाब का मज़ा चख लिया। उन ज़ालिमों को अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि उनका कितना बुरा अंजाम हुआ? उन पर आसमानी अ़ज़ाब आएगा जो उन्हें तबाह व बर्बाद कर देगा। फिर फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! जिस तरह तुम पर इस कुरआन की वही नाज़िल हुई है उसी तरह तुमसे पहले के पैग़म्बरों पर किताबें और सहीफ़े नाज़िल हो चुके हैं। यह सब उस अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उतरे हैं जो अपना इंतिक़ाम लेने में ग़ालिब और ज़बरदस्त है। जो अपने अफ़्आ़ल और अक़्वाल में हिक्मत वाला है।

हज़रत हारिस बिन हिशाम (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया कि आप पर वही किस तरह नाज़िल होती है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''कभी घण्टी की मुसलसल आवाज़ की तरह जो मुझ पर बहुत भारी पड़ती है। जब वह ख़त्म होती है तो मुझे जो कुछ कहा गया वह सब याद होता है और कभी फ़रिश्ता इंसानी शक्ल में मेरे पास आता है मुझसे बातें करता है और जो वह कहता है मैं उसे याद रख लेता हूँ। हज़रत आ़इशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि सख़्त जाड़ों के मौसम में भी जब आप (ﷺ) पर वही उतरती थी तो

शिद्दते वही से आप (ﷺ) पानी पानी हो जाते थे। यहाँ तक कि पेशानी से पसीने की बूँदें टपकने लगती थीं।'' (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वही, बाब कैफ़ा कान बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) :2; सहीह मुस्लिम : 3333; मौता : 1/202; इब्ने हिब्बान : 38) मुस्नदे अहमद की हदीस में है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से वही की कैफ़ियत पूछी तो आपने फ़र्माया, मैं एक ज़ंजीर की सी घड़घड़ाहट सुनता हूँ फिर कान लगाता हूँ ऐसी वही में मुझ पर इतनी शिद्दत होती है कि हर बार अपनी रूह निकल जाने का गुमान होता है।'' (मुस्नद अहमद : 2/222; और इसकी सनद ज़ई फ़ है) शरह सहीह बुख़ारी के शुरू में हम कैफ़ियते वही पर मुफ़स्सल कलाम कर चुके हैं , फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

फिर फ़र्माता है कि ज़मीनो आसमान की तमाम मख़्लूक़ उसकी गुलाम है। उसकी मिल्कियत है, उसके दबाव तले और उसके सामने आजिज़ो मजबूर है। वह बुलंदियों वाला और बड़ाइयों वाला है, वह बहुत बड़ा और बहुत बुलंद है, वह ऊँचाई वाला और किब्रियाई वाला है, उसकी अज़्मत व जलाल का यह हाल है कि क़रीब है आसमान फट पड़ें। फ़रिश्ते उसकी अज़्मत से कपकपाये हुए उसकी पाकी और ता'रीफ़ बयान करते रहते हैं और ज़मीन वालों के लिए मग़्फ़िरत तलाश करते रहते हैं। जैसे और जगह इर्शाद है (اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ) (40/मोमिन : 7) यानी हामिलाने अर्श और उसके क़ुर्बो जवार के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह और हम्द बयान करते रहते हैं , उस पर ईमान रखते हैं और ईमान वालों के लिए इस्तिग़्फ़ार करते रहते हैं कि ऐ हमारे रब! तूने अपनी रहमत व इल्म से हर चीज़ को घेर रखा है पस तू इन्हें बख़्श दे जिन्होंने तौबा की है और तेरे रास्ते के ताबेअ हैं उन्हें अज़ाबे जहन्नम से भी बचा ले। फिर फ़र्माया कि जान लो अल्लाह ग़फ़ूरुर रहीम है। फिर फ़र्माया है कि मुश्रिकों के आमाल की देखभाल मैं ख़ुद कर रहा हूँ और उन्हें ख़ुद ही पूरा पूरा बदला दूँगा। तेरा काम सिर्फ़ उन्हें आगाह कर देना है, तू कुछ उन पर दारोग़ा नहीं।

***

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ
يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ فَرِيْقٌ فِى الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِى السَّعِيْرِ ۞ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ
لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ
مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۞

तर्जुमा : ''इसी तरह तेरी तरफ़ अरबी क़ुरआन की वह्यी की है इसलिए कि तू मक्का वालों को और उसके आसपास के लोगों को आगाह कर दे और जमा हो चुके दिन से जिसके आने में कोई शक नहीं डरा दे। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक जहन्नम में होगा। (7) अगर अल्लाह तआला चाहता तो उन सबको एक ही तरीक़े का बना देता लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है। ज़ालिमों का हामी और मददगार कोई नहीं।

मक्का मुकर्रमा की फ़ज़ीलत और क़ियामत का ज़िक्र (आ. 7, 8): यानी जिस तरह ऐ नबी आख़िरुज़्ज़माँ तुमसे पहले अम्बिया पर वह्यी इलाही आती रही तुम पर भी यह क़ुरआन वह्यी के ज़रिये नाज़िल किया गया है, यह अरबी ज़ुबान में बहुत वाज़ेह बिलकुल खुला हुआ और सुलझे हुए बयान वाला है ताकि तू शहरे मक्का के रहने वालों को अल्लाह के अहकाम और अल्लाह के अज़ाबों से आगाह कर दे। नीज़ तमाम अतराफ़े आलम के आसपास से मुराद मश्रिक़ व मग़रिब की हर सिम्त मक्का मुकर्रमा को उम्मुलरा इसलिए कहा गया है कि यह तमाम शहरों से अफ़ज़ल व बेहतर है इसके दलाइल बहुत सारे हैं जो अपनी अपनी जगह मज़्कूर हैं। हाँ! यहाँ पर एक दलील जो मुख़्तसर भी है और साफ़ भी है सुन लीजिए। तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा, मुस्नद अहमद वग़ैरह में है कि ''हज़रत अब्दुल्लाह बिन अदी बिन हमरा ज़ोहरी (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैंने ख़ुद रसूलुल्लाह की ज़ुबाने मुबारक से सुना आप (ﷺ) मक्का मुकर्रमा के बाज़ार ख़ज़ूरा में खड़े हुए फ़र्मा रहे थे कि ऐ मक्का! क़सम है अल्लाह की तू अल्लाह की सारी ज़मीन से अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा महबूब और ज़्यादा अफ़ज़ल है अगर मैं तुझमें से न निकाला जाता तो क़सम है अल्लाह की हर्गिज़ तुझे न छोड़ता।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी फ़ज़्ले मक्का : 3925; और वह सहीह है; इब्ने माजा : 3108; अहमद : 4/305; इब्ने हिब्बान : 3708)

इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस हदीस को हसन सहीह फ़र्माते हैं और इसलिए कि तू क़ियामत के दिन से सबको डरावे जिस दिन तमाम पहले और आख़िर के लोग एक मैदान में जमा होंगे। जिस दिन के आने में कोई शक शुब्हा नहीं। जिस दिन कुछ लोग जन्नती होंगे और कुछ जहन्नमी यह वह दिन होगा कि जन्नती नफ़ा में रहेंगे और जहन्नमी घाटे में।

दूसरी आयत में फ़र्माया गया है (ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ لَّهُ النَّاسُ) (11/हूद : 103) यानी उन वाक़ियात में उस शख़्स के लिए बड़ी इब्रत है जो आख़िरत के अज़ाब से डरता हो। आख़िरत का वह दिन है जिसमें तमाम लोग जमा किये जाएँगे और वह सबकी हाज़िरी का दिन है हम तो उसे थोड़ी सी मुद्दत मालूम के लिए मुअख़्ख़र किये हुए हैं उस दिन कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह तआला की इजाज़त के बात तक न कर सकेगा फिर उनमें से कुछ तो बदक़िस्मत होंगे और कुछ ख़ुशनसीब।

मुस्नदे अहमद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा (रज़ि.) के पास एक बार दो किताबें दोनों

हाथों में लेकर आए और हमसे पूछा जानते हो यह क्या है? हमने कहा, हमें तो ख़बर नहीं, आप फ़र्माइए। आपने अपनी दाहिने हाथ की किताब की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, यह रब्बुल आलमीन की किताब है जिसमें जन्नतियों के नाम हैं मअ उनके वालिद के और उनके क़बीले के नाम के और आख़िर में हिसाब करके मीज़ान लगा दी गई है अब उनमें न एक बढ़े और न एक घटे। फिर अपने बाईं हाथ की किताब की तरफ़ इशारा करके फ़र्माया, यह दोज़ख़ियों के नामों का रजिस्टर है उनके नाम उनकी वलदियत और उनकी क़ौम सब उसमें लिखी हुई है फिर आख़िर में मीज़ान लगा दी गई। उनमें भी कमी बेशी नामुम्किन है। सहाबा (रज़ि.) ने पूछा फिर हमें अमल की क्या ज़रूरत है? जबकि सब लिखा जा चुका है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ठीक ठाक रहो। भलाई की नज़दीकी लिए रहो। अहले जन्नत का ख़ात्मा नेकियों और भले अहवाल पर होगा। भले वह कैसे ही आमाल करता हो। और अहले नार का ख़ात्मा जहन्नमी आमाल पर ही होगा भले वह कैसे ही कामों का मुर्तकिब रहा हो। फिर आपने अपनी दोनों मुट्ठियाँ बंद कर लीं और फ़र्माया, तुम्हारा रब अज़्ज़ व जल्ल बन्दों के फ़ैसलों से फ़राग़त हासिल कर चुका है। एक फ़िर्क़ा जन्नत में है और एक जहन्नम में उसके साथ ही आपने अपने दाएँ बाएँ हाथों से इशारा किया। गोया कोई चीज़ फेंक रहे हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ इन्नल्लाह कुतिब किताबन लि अहलिल जन्नत व अहलिन्नारः 2141 और इसकी सनद हसन है; सुननुल कुब्रा :11473; अहमद : 2/167)

यह भी हदीस तिर्मिज़ी और नसाई में है। बक़ौले हज़रत इमाम तिर्मिज़ी (रह.) यह हदीस हसन सहीह ग़रीब है। यही हदीस और किताबों में भी है।

किसी में यह भी है कि तमाम अदल ही अदल है हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला ने जब आदम (ﷺ) को पैदा किया और उनकी तमाम औलाद उनमें से निकाली और चींटियों की तरह वह मैदान में फैल गई तो उसे अपनी दोनों मुट्ठियों में ले लिया और फ़र्माया एक हिस्सा नेकों का दूसरा बुरों का।

फिर उन्हें ला दिया दोबारा उन्हें समेट लिया और इसी तरह अपनी मुट्ठियों में लेकर फ़र्माया एक हिस्सा जन्नती और दसूरा जहन्नमी। यह रिवायत मौक़ूफ़ ही ठीक है, वल्लाहु आलम!

मुस्नद अहमद की हदीस में है कि ''हज़रत अबू अब्दुल्लाह नामी सहाबी बीमार थे हम लोग उनकी बीमारपुर्सी के लिए गए देखा कि रो रहे हैं। तो कहा कि आप क्यूँ रोते हैं? आपसे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि अपनी मूँछें कम रखा करो यहाँ तक कि मुझसे मिलो। इस पर सहाबी (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह तो ठीक है लेकिन मुझे तो हदीस रुला रही है कि मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है अल्लाह तआला ने अपनी दाएँ मुट्ठी में मख़्लूक ली और इसी तरह दूसरे हाथ की मुट्ठी के लिए हैं यानी जहन्नम के लिए और मुझे कुछ परवाह नहीं।'' पस मुझे ख़बर नहीं कि अल्लाह की किस मुट्ठी में था। (अहमदः5/68; और इसकी सनद सहीह है कशफ़ुल अस्तार : 2142)

इस तरह की इस्बाते तक़्दीर की और भी बहुत सी हदीसें हैं। फिर फ़र्माता है अगर अल्लाह तआला को मंज़ूर होता तो सबको एक ही तरीक़े पर कर देता यानी या तो हिदायत पर या गुमराही पर लेकिन रब तआला ने

उनमें तफ़ावुत रखा कुछ को हक़ की हिदायत की और कुछ को उससे भुला दिया। अपनी हिक्मत को वही जानता है। वह जिसे चाहे अपनी रहमत तले खड़ा कर ले ज़ालिमों का हिमायती और मददगार कोई नहीं।

इब्ने जरीर में है ''अल्लाह तआला से हज़रत मूसा (عليه السلام) ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब! तूने अपनी मख़्लूक़ को पैदा किया। फिर तू इनमें से कुछ को तो जन्नत में ले जाएगा और कुछ औरों को जहन्नम में। क्या अच्छा होता कि सब ही जन्नत में जाते। जनाब बारी तआला ने इर्शाद फ़र्माया, मूसा (عليه السلام)! अपना पैराहन ऊँचा करो। आपने ऊँचा किया। फिर फ़र्माया और ऊँचा करो। आपने और ऊँचा किया। फ़र्माया और ऊपर को उठाओ। जवाब दिया ऐ अल्लाह! अब तो सारे जिस्म से ऊँचा कर लिया सिवा उस जगह के जिसके ऊपर से हटाने में ख़ैर नहीं। फ़र्माया पस इसी तरह मैं भी अपनी तमाम मख़्लूक़ को जन्नत में दाख़िल करूँगा सिवा उनके जो जो बिलकुल ही ख़ैर से ख़ाली हैं।''

***

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩﴾ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِن شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ﴿١٠﴾ فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنفُسِكُمْ
أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ۖ يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۖ وَهُوَ
السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿١١﴾ لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ
وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٢﴾

तर्जुमा : ''क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवा और कारसाज़ बना लिए हैं। हक़ीक़तन तो अल्लाह ही कारसाज़ है। वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर क़ादिर है। (9) और जिस जिस चीज़ में तुम्हारा इख़्तिलाफ़ हुआ उसका फ़ैसला अल्लाह तआला ही की तरफ़ है। यही अल्लाह मेरा पालने वाला है जिस पर मैंने भरोसा कर रखा है और जिसकी तरफ़ मैं झुकता हूँ। (10) वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिंस के

जोड़े बना दिये हैं और चौपायों के जोड़े बनाए हैं। तुम्हें वह उसमें फैला रहा है। उस जैसी कोई चीज़ नहीं। (11) वह सुनता देखता है। आसमानों और ज़मीन की चाबियाँ उसी की हैं। जिसकी चाहे रोज़ी कुशादा कर दे और तंग कर दे। यक़ीनन वह हर चीज़ को जानने वाला है।'' (12)

हक़ीक़ी ख़ालिक़ और मअ़बूद अल्लाह तआ़ला ही है (आ. 9 से 12) : अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीन के उस मुश्रिकाना काम की क़बाहत बयान करता है जो वह अल्लाह के साथ शरीक किया करते थे और दूसरों की पूजा करते थे और बयान करता है कि सच्चा वली और ह़क़ीक़ी कारसाज़ तो मैं हूँ। मुर्दों का ज़िन्दा करना मेरी सिफ़त है। हर चीज़ पर क़ाबू और कुदरत रखना मेरा वस्फ़ है। फिर मेरे सिवा और की इ़बादत कैसी? फिर फ़र्माता है जिस किसी अम्र में तुममें इख़्तिलाफ़ रूनुमा हो जाए उसका फ़ैसला अल्लाह की त़रफ़ ले जाओ। यानी तमाम दीनी और दुनियावी इख़्तिलाफ़ के फ़ैसले की चीज़ किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) को मानो। जैसे फ़र्माने आ़लीशान है (فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ) (4/निसाअ : 59 अगर तुममें कोई झगड़ा हो तो उसे अल्लाह तआ़ला की और उसके रसूल (ﷺ) की त़रफ़ लौटा ले जाओ फिर फ़र्माता है कि वह अल्लाह जो हर चीज़ पर ह़ाकिम है वही मेरा रब है, मेरा तवक्कल उसी पर है और मैं अपने तमाम काम उसी पर सौंपता हूँ और हर वक़्त उसी की जानिब रुजूअ़ करता हूँ। वह आसमान व ज़मीन और उसके बीच की कुल मख़्लूक़ का ख़ालिक़ है। उसका एह़सान देखो कि उसने तुम्हारी ही जिंस और तुम्हारी ही शक्ल के तुम्हारे जोड़े बना दिए। यानी मर्द व औ़रत और चौपायों के भी जोड़े पैदा किये जो आठ हैं। वह उसी पैदाइश में तुम्हें पैदा करता है। यानी इसी स़िफ़त पर यानी जोड़ जोड़ पैदा करता जा रहा है नस्लें की नस्लें फैला दीं। क़रनों गुज़र गए और सिलसिला इसी त़रह़ चला आ रहा है इधर इंसानों का उधर जानवरों का। बग़वी (रह़.) फ़र्माते हैं मुराद रह़म में पैदा करना है। कुछ कहते हैं पेट में। कुछ कहते हैं इसी त़रीक़ पर फैलाना है। ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) फ़र्माते हैं नस्लें फैलानी मुराद है।

कुछ कहते हैं यहाँ फ़ीही मअ़नी में बिही के है यानी मर्द और औ़रत के जोड़े से नस्ले इंसानी को वह फैला और पैदा कर रहा है। ह़क़ यह है कि ख़ालिक़ जैसा कोई और नहीं। वह फ़र्द व स़मद है। वह बेनज़ीर है वह समीअ़ व बस़ीर है, आसमान व ज़मीन की कुँजियाँ उसी के हाथों में हैं।

सूरह ज़ुमर में इसकी तफ़्सीर गुज़र चुकी है। मक़्स़द यह है कि सारे आ़लम का मुतस़र्रिफ़ मालिक ह़ाकिम वही यक्ता ला शरीक है जिसे चाहे कुशादा रोज़ी दे। जिस पर चाहे तंगी कर दे उसका कोई काम ह़िक्मत से ख़ाली नहीं। किसी ह़ालत में वह किसी पर ज़ुल्म करने वाला नहीं, उसका वसीअ़ इ़ल्म सारी मख़्लूक़ को घेरे हुए है।

***

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا
بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى
الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۭ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ
يُّنِيْبُ ۝ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَلَوْلَا
كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا
الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝

तर्जुमा : "अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए वही शरीअत मुक़र्रर कर दी है जिसके क़ायम करने का उसने नूह (عليه السلام) को हुक्म दिया था और जो बज़रिया वही के हमने तेरी तरफ़ भेज दी है और जिसका ताकीदी हुक्म हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा (عليهم السلام) को दिया था कि उस दीन को क़ायम रखना और उसमें फूट न डालना। जिस चीज़ की तरफ़ तू इन्हें बुला रहा है वह तो इन मुश्रिकीन पर बड़ी गिराँ गुज़रती है। अल्लाह तआला जिसे चाहे अपना बरगुज़ीदा बना ले और जो भी उसकी तरफ़ रुजूअ करे वह उसकी सही रहनुमाई करता है। (13) इन लोगों ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद ही इख़्तिलाफ़ किया और वह भी बाहमी ज़िद बहस से ही। और अगर तेरे रब की बात एक वक़्ते मुक़र्ररा तक के लिए पहले ही से क़रार पा गई हुई न होती तो यक़ीनन उनका फ़ैसला हो चुका होता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई है वह भी उसकी तरफ़ से शक और तरद्दुद में पड़े हुए हैं।" (14)

तौहीद तमाम अम्बिया (عليهم السلام) की मुश्तरका दावत (आ. 13, 14) : अल्लाह तआला ने जो इन्आम इस उम्मत पर किया है उसका ज़िक्र यहाँ फ़र्माता है कि तुम्हारे लिए जो शरअ मुक़र्रर की है वह वह है जो हज़रत आदम (عليه السلام) के बाद दुनिया के सबसे पहले पैग़म्बर और दुनिया के सबसे आख़िरी पैग़म्बर और उनके बीच ऊलुल अज़्म पैग़म्बरों की थी।

पस यहाँ जिन पाँच पैग़म्बरों का ज़िक्र हुआ है इन्हीं पाँच का ज़िक्र सूरह अहज़ाब में भी किया गया है (وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ) (33/अहज़ाब : 7) वह दीन जो तमाम नबियों का मुश्तरक तौर पर है

वह अल्लाह वाहिद की इबादत है। जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है (وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِیْٓ اِلَیْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ) (21/अम्बिया : 25) यानी तुझसे पहले जितने भी रसूल आए उन सबकी तरफ़ हमने यही वही की है कि माबूद मेरे सिवा कोई नहीं पस तुम सब मेरी ही इबादत करते रहो। हदीस में है कि अम्बिया (عليهم السلام) की जमाअत आपस में अल्लाती भाईयों की तरह हैं। हम सबका दीन एक ही है। जैसे अल्लाती भाईयों का बाप एक होता है। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वज़्कुर फ़िल किताबि मरयम...) : 3443; सहीह मुस्लिम : 2365)

अल्गर्ज़ अहकामे शरअ में भले जुज़्वी इख़्तिलाफ़ हो लेकिन उसूली तौर पर दीन एक ही है और वह तौहीदे बारी तआला अज़्ज़ इस्मुहू है। फ़र्माने इलाही है (لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا) (5/माइदा : 48) तुममें से हर एक के लिए हमने शरीअत व राह बना दी है। यहाँ इस वही की तफ्सील यूँ बयान हो रही है कि दीन को क़ायम रखो। जमाअत बंदी के साथ इत्तिफ़ाक़ से रहो। इख़्तिलाफ़ और फूट न करो। फिर फ़र्माता है यहाँ तौहीद की सदाएँ इन मुश्रिकों को नागवाहर गुज़रे। हक़ यह है कि हिदायत अल्लाह के हाथ में है जो मुस्तहिक़्क़े हिदायत होता है वह रब की तरफ़ रुजूअ करता है और अल्लाह उसका हाथ थामकर हिदायत के रास्ते पर ला खड़ा करता है। और जो अज़्ख़ुद बुरे रास्ते को इख़्तियार कर लेता है और साफ़ राह छोड़ देता है अल्लाह तआला भी उसके माथे पर ज़लालत लिख देता है जब उनके पास हक़ आ गया। हुज्जत उन पर क़ायम हो चुकी। उस वक़्त आपस की जिद्द बहस की बिना पर आपस में मुख़्तलिफ़ हुए। अगर क़ियामत का दिन हिसाब किताब जज़ा सज़ा के लिए मुक़र्ररशुदा न होता तो उनके हर बुरे अमल की सज़ा उन्हें यहीं इसी वक़्त मिल जाया करती। फिर फ़र्माता है कि यह पिछले जो पहलों से किताबें पाये हुए हैं, यह सिर्फ़ तक़्लीदी तौर पर मानते हैं। और ज़ाहिर है कि मुक़ल्लिद का ईमान शक शुब्हा से ख़ाली नहीं होता। उन्हें ख़ुद यक़ीन नहीं दलील व हुज्जत की बिना पर उनका ईमान नहीं। बल्कि यह अपने अगलों के जो हक़ के झुठलाने वाले थे मुक़ल्लिद हैं।

***

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ؕ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ؕ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ؕ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

तर्जुमा : ''पस तू लोगों को उसी तरफ़ बुलाता रह और जो कुछ तुझसे कहा गया है उस पर मज़बूती से जम जा और उनकी ख़्वाहिशों पर न चल। और कह दे कि अल्लाह तआला ने

जितनी किताबें नाज़िल की हैं मेरा उन पर ईमान है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि तुममें इंसाफ़ करता रहूँ। हमारा और तुम सबका परवरदिगार अल्लाह तआला ही है। हमारे आमाल हमारे लिए हैं और तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए हैं। हम तुममें कोई बातचीत नहीं। अल्लाह तआला हम सबको जमा करेगा और उसी की तरफ़ लौटना है।'' (15)

दस मुस्तक़िल कलिमे (आ. 15) : इस आयत में एक लतीफ़ा है जो कुरआने करीम की सिर्फ़ एक और आयत में पाया जाता है बाक़ी किसी और आयत में नहीं। वह यह कि इसमें दस कलिमे हैं जो सब मुस्तक़िल हैं। अलग अलग एक एक कलिमा अपनी ज़ात में एक मुस्तक़िल हुक्म है यही बात दूसरी आयत यानी आयतल कुर्सी में भी है पस

1. पहला हुक्म तो यह होता है कि वही तुझ पर नाज़िल की गई है और वही वह्यी तुझसे पहले के तमाम अम्बिया पर आती रही है और शरअ तेरे लिए मुक़र्रर की गई है और वही तुझसे अगले तमाम अम्बिया किराम के लिए भी मुक़र्रर की गई थी। तू तमाम लोगों को उसकी दावत दे। हर एक को इसी की तरफ़ बुला और इसके मनवाने और फैलाने की कोशिश में लगा रह।

2. और अल्लाह तआला की इबादत व वह्दानियत पर तो आप इस्तिक़ामत कर और अपने मानने वालों से इस्तिक़ामत करा।

3. मुश्रिकीन ने जो कुछ इख़्तिलाफ़ कर रखे हैं जो तक्ज़ीब और इफ़्तिरा का शेवा है जो इबादते ग़ैरुल्लाह उनकी आदत है। ख़बरदार! तू हर्गिज़ हर्गिज़ उनकी ख़्वाहिशों और उनकी चाहतों में न आना उनकी एक भी न मानना।

4. और अलल ऐलान अपने इस अक़ीदे की तब्लीग़ कर कि अल्लाह की नाज़िलकर्दा तमाम किताबों पर मेरा ईमान है। मेरा यह काम नहीं कि एक मानूँ और दूसरी से इंकार कर दूँ एक को लूँ और एक को छोड़ूँ।

5. मैं तुममें वही अह्काम जारी करना चाहता हूँ जो अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल हुए हैं और जो सरासर अदल और यकसर इंसाफ़ पर मब्नी हैं।

6. मअबूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है। हमारा तुम्हारा मअबूदे बरहक़ वही है और वही सबका पालनहार है। भले कोई अपनी ख़ुशी से उसके सामने न झुके लेकिन दरअसल हर शख़्स बल्कि हर चीज़ उसके आगे झुकी हुई है और सज्दे में पड़ी हुई है।

7. हमारे अमल हमारे साथ तुम्हारी करनी तुम्हें भरनी। हम तुममें कोई रिश्ता नहीं। जैसे और आयत में अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने फ़र्माया है अगर तुझे झुठलाएँ तो तू कह दे कि मेरे लिए मेरे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। तुम मेरे आमाल से बरी और मैं तुम्हारे आमाल से बरी और मैं तुम्हारे आमाल से बेज़ार।

8. हम तुममें कोई ख़ुसूमत और झगड़ा नहीं किसी बह्स मुबाहिसे की ज़रूरत नहीं। हज़रत सुद्दी (रह़.)

फ़र्माते हैं यह हुक्म तो मक्का में था लेकिन मदीना में जिहाद के अहकाम उतरे मुम्किन है ऐसा ही हो क्योंकि यह आयत मक्की है और जिहाद की आयतें हिज्रत के बाद की हैं।

9. क़ियामत के दिन अल्लाह तआला हम सबको जमा करेगा जैसे और आयत में है (قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا) (34/सबा : 26) यानी तू कह दे कि हमें हमारा रब जमा करेगा फिर हममें हक़ के साथ फ़ैसला करेगा। और वही फ़ैसला करने वाला और इल्म वाला है।

10. फिर फ़र्माता है लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है।

***

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۱۶﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿۱۷﴾ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿۱۸﴾

तर्जुमा : "जो लोग अल्लाह तआला की बातों में झगड़ा डालते हैं इसके बाद कि मख़्लूक़ उसे मान चुकी उनकी कट हुज्जती अल्लाह तआला के नज़दीक बातिल है और उन पर ग़ज़ब है और उनके लिए सख़्त मार है। (16) अल्लाह तआला ने हक़ के साथ किताब नाज़िल फ़र्माई है और तराज़ू भी उतारी है। और तुझे क्या ख़बर शायद क़ियामत क़रीब ही हो। (17) उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उसे नहीं मानते और जो उस पर यक़ीन रखते हैं वह तो उससे लरज़ाँ व तरसाँ हैं उन्हें उसके हक़ होने का पूरा इल्म है। याद रखो जो लोग क़ियामत के मामले में लड़ झगड़ रहे हैं वह दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।" (18)

मुसलमान क़ियामत से डरते रहते हैं (आ. 16 से 18) : अल्लाह तबारक व तआला उन लोगों को डराता है जो ईमान वालों से फ़िज़ूल हुज्जतें किया करते हैं। उन्हें राहे हिदायत से बहकाना चाहते हैं। और दीने इलाही में झगड़े डालते हैं। उनकी हुज्जत बातिल है उन पर परवरदिगार ग़ज़बनाक है और उन्हें क़ियामत के दिन

सख़्त नाक़ाबिले बर्दाश्त मार मारी जाएगी। उनकी तमअ पूरी होनी यानी मुसलमानों में फिर दोबारा जाहिलियत की ख़ू, बू आनी महाल है। ठीक इसी तरह यहूद व नसारा का भी जादू नहीं चलने देगा। नामुम्किन है कि मुसलमान इनके मौजूदा दीन को अपने सच्चे सच्चे असली और बे मलूनी के दीन पर तर्जीह दें और उस दीन को लें जिसमें झूठ मिला हुआ है जो तहरीफ़सुदा (जाली) है। फिर फ़र्माता है अल्लाह तआला ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की और अदलो इंसाफ़ उतारा। जैसे फ़र्माने बारी तआला है (لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ) (57/हदीद : 25) यानी हमने रसूलों को ज़ाहिर दलीलों के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान उतारा ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ायम हो जाएँ। और आयत में है (وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا) (55/रहमान : 7) यानी आसमान को उसी ने ऊँचा किया और तराज़ू को उसी ने रखा ताकि तुम तोलने में कमी बेशी न करो। और इंसाफ़ के साथ वज़न को ठीक रखो और तोल को मत घटाओ। फिर फ़र्माता है कि तू नहीं जान सकता कि क़ियामत बिलकुल क़रीब है। इसमें ख़ौफ़ और लालच दोनों ही हैं। और इसमें दुनिया से बेरग़बत करना भी मक़सूद है। फिर फ़र्माया इसके मुंकिर तो जल्दी मचा रहे हैं कि क़ियामत क्यूँ नहीं आती? वह कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो क़ियामत क़ायम कर दो क्योंकि उनके नज़दीक क़ियामत का होना महाल है। लेकिन उनके बरख़िलाफ़ ईमान वाले उससे काँप रहे हैं क्योंकि उनका अक़ीदा है कि रोज़े जज़ा का आना ज़रूरी और हत्मी है यह उससे डरकर वह आमाल बजा ला रहे हैं जो उन्हें उस दिन काम दें। एक बिलकुल सहीह हदीस में है जो तक़रीबन तवातुर के दर्जे को पहुँची हुई है कि "एक शख़्स ने बुलंद आवाज़ से रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़ियामत कब होगी? यह वाक़िया सफ़र का है वह हुज़ूर (ﷺ) से कुछ दूर थे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, "हाँ! हाँ! वह यक़ीनन आने वाली है तू बता कि तूने उसके लिए क्या तैयारी कर रखी है?" उसने कहा अल्लाह तआला और उसके रसूल से मुहब्बत। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "तू उनके साथ होगा जिनसे तू मुहब्बत रखता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अलामतुल हुब्ब फ़िल्लाहि.... : 6171; सहीह मुस्लिम : 2639; तिर्मिज़ी : 3536; मुस्नदे तयालिसी : 1167; इब्ने हिब्बान : 562) और हदीस में है हुज़ूर (स.) का फ़र्मान है कि "हर शख़्स उसके साथ होगा जिससे वह मुहब्बत रखता था।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब अलामतुल हुब्ब फ़िल्लाहि.... : 6170; सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब अल्मरउ मअ मन अहब्ब : 2641) यह हदीस यक़ीनन मुतवातिर है। अल्ग़र्ज़ हुज़ूर (ﷺ) ने इस सवाल के जवाब में क़ियामत के वक़्त की तअयीन नहीं की। बल्कि सवाल करने वाले को उस दिन के लिए तैयारी करने को कहा। पस क़ियामत के आने के वक़्त का इल्म सिवा अल्लाह तआला के किसी और को नहीं। फिर फ़र्माता है कि क़ियामत के आने में जो लोग झगड़ रहे हैं और उसके मुंकिर हो रहें हैं उसे महाल जानते हैं वह निरे जाहिल हैं। सच्ची समझ सहीह अक़्ल से दूर पड़े हुए हैं। सीधे रास्ते से भटककर बहुत दूर निकल गए हैं। ताज्जुब है कि ज़मीन व आसमान का इब्तिदाई ख़ालिक़ अल्लाह तआला को मानें और इंसान को मार डालने के बाद दोबारा ज़िन्दा कर देने पर उसे क़ादिर न जानें जिसने बग़ैर किसी नमूने के और बग़ैर किसी जुज़ के पहली बार उसे पैदा कर दिया तो दोबारा जबकि उसके हिस्से भी किसी न किसी सूरत में कुछ न कुछ मौजूद हैं उसे पैदा करना उस पर क्या मुश्किल है। बल्कि अक़्ले सलीम भी तस्लीम करती है कि अब तो और भी आसान है।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿١٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ
حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا
لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿٢٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ
يَأْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ﴿٢١﴾ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ ذٰلِكَ هُوَ
الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : ''अल्लाह तआला अपने बन्दों पर बड़े ही लुत्फ़ करने वाला है जिसे चाहता है कुशादा रोज़ी देता है। वह बड़ी ताक़त और बड़े ग़ल्बे वाला है। (19) जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और तरक़्क़ी देंगे और जो दुनिया की खेती की तलब रखता हो हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे। ऐसे शख़्स का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं। (20) क्या इन लोगों ने ऐसे अल्लाह के शरीक मुक़र्रर कर रखे हैं, जिन्होंने ऐसे अहकामे दीन मुक़र्रर कर दिये हैं जो अल्लाह के फ़र्माए हुए नहीं हैं। अगर फ़ैसले के दिन का वादा न होता तो (अभी ही) इनमें फ़ैसला कर दिया जाता। यक़ीनन इन ज़ालिमों के लिए ही दर्दनाक अ़ज़ाब हैं। (21) तू देखेगा कि यह ज़ालिम अपने आमाल से डर रहे होंगे जो यक़ीनन इन पर वाक़ेअ होने वाले हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये वह बहिश्तों के बाग़ात में होंगे। वह जो चाहत करें अपने रब के पास मौजूद पाएँगे यही है बड़ा फ़ज़्ल। (22)

तमाम मख़्लूक़ का राज़िक़ अल्लाह तआला है (आ. 19 से 22) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि वह अपने बन्दों पर बड़ा मेहरबान है। एक को दूसरे के हाथ रोज़ी पहुँचा रहा है। एक भी नहीं जिसे अल्लाह तआला भूल जाए नेक बद हर एक उसके यहाँ का वज़ीफ़ा ख़्वार है जैसे फ़र्माया (وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا) (11/हूद : 6) ज़मीन पर चलने वाले तमाम जानदारों की रोज़ियों का ज़िम्मेदार अल्लाह

ही है। वह हर एक की रहने सहने की जगह को बख़ूबी जानता है और सब कुछ लोहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ भी है वह जिसके लिए चाहता है कुशादा रोज़ी मुक़र्रर करता है, वह ताक़तवर ग़ालिब है जिसे कोई चीज़ मग़लूब नहीं कर सकती। फिर फ़र्माता है जो आख़िरत के आमाल की तरफ़ तवज्जह करता है हम ख़ुद उसकी मदद करते हैं। उसे कुव्वत ताक़त देते हैं। उसकी नेकियाँ बढ़ाते रहते हैं, किसी नेकी को दस गुनी कर देते हैं, किसी को सात सौ गुनी किसी को उससे भी ज़्यादा। अल्ग़र्ज़ आख़िरत की चाहत जिस दिल में होती है। उस शख़्स को नेक आमाल की तौफ़ीक़ अल्लाह तआला की तरफ़ से अता की जाती है और जिसकी तमाम कोशिश दुनिया हासिल करने की होती है आख़िरत की तरफ़ उसकी तवज्जह नहीं होती तो वह दोनों जहान से महरूम रह जाता है। दुनिया का मिलना अल्लाह तआला के इरादे पर मौक़ूफ़ है मुम्किन है वह हज़ारों जतन करे और दुनिया से भी महरूम रह जाए। बदनिय्यती की वजह से (आख़िरत) तो बर्बाद कर ही चुका था दुनिया भी न मिली तो दोनों जहान से गया गुज़रा। और अगर थोड़ी सी दुनिया मिल भी गई तो क्या।

दुनिया का तालिब और आख़िरत को चाहने वाला : चुनाँचे दूसरी आयत में इस मज़्मून को मुक़य्यद बयान किया गया है फ़र्मान है (مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ) (17/बनी इस्राईल : 18) यानी जो शख़्स दुनिया तलब होगा ऐसों में से हम जिसे चाहें और जितना चाहें दे देंगे फिर उसके लिए जहन्नम तज्वीज़ करेंगे जिसमें वह बदहाल और राँदा दरगाह होकर दाख़िल होगा और जो आख़िरत की तलब करेगा और उसके लिए जो कोशिश करनी चाहिए करेगा और होगा भी वह बाईमान तो नामुम्किन है कि ऐसों की कोशिश की क़द्रदानी न की जाए। दुनियावी बख़्शिश व अता तो आम है उससे उनकी सबकी इम्दाद हम किया करते हैं और तेरे रब की यह दुनियावी अता किसी पर बंद नहीं। ख़ुद देख लो कि हमने एक को दूसरे पर किस तरह फ़ोक़ियत दे रखी है। यक़ीन मान लो कि दर्जों के ऐतिबार से भी और फ़ज़ीलत की हैसियत से भी आख़िरत बहुत बड़ी है। हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "इस उम्मत को बरतरी और बुलंदी की नुसरत और सल्तनत की ख़ुशख़बरी हो। उनमें से जो शख़्स दीनी अमल दुनिया के लिए करेगा। उसे आख़िरत में कोई हिस्सा न मिलेगा।" (अहमद : 5/134; ह : 21223; और इसकी सनद हसन है; इब्ने हिब्बान : 405; हाकिम : 4/311; शुअबुल ईमान : 6834; दलाइलुन्नबुव्वा : 6/317; शरहस्सुन्ना : 4145) फिर फ़र्माता है कि यह मुश्रिकीन दीने अल्लाह तआला की तो पैरवी करते नहीं बल्कि जिन शयातीन और इंसानों को इन्होंने अपना बड़ा समझ रखा है, यह जो अहकाम उन्हें बताते हैं यह उन ही अहकाम के मज्मूअे को दीन समझते हैं। हलाल व हराम अपने उन बड़ों के कहने पर समझते हैं, इबादतों के तरीक़े उन्हीं के इजाद कर्दा हैं जो यह बरत रहे हैं। इसी तरह माल के अहकाम भी अज़्ख़ुद तराश लिये हैं जिन्हें शरई समझ बैठे हैं। चुनांचे जाहिलियत में कुछ जानवरों को इन्होंने अज़्ख़ुद हराम कर लिया था। मस्लन वह जानवर जिसका कान चीरकर अपने मअबूदाने बातिल के नाम पर छोड़ देते थे, और दाग़ देकर साँड छोड़ देते थे और मादा बच्चे को हमल की सूरत में ही उनके नाम कर देते थे। जिस ऊँट से दस बच्चे हासिल कर लें उसे उनके नाम छोड़ देते थे फिर उन्हें उनकी ता'ज़ीम के ख़्याल से अपने ऊपर हराम समझते थे। और कुछ चीज़ों को हलाल कर लिया था जैसे मुरदार और

ख़ून और जुआ। सहीह हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैंने अम्र बिन लुहय बिन कुम्आ को देखा कि वह जहन्नम में अपनी आँतें घसीट रहा था। यही वह शख़्स है जिसने सबसे पहले ग़ैरुल्लाह के नाम पर जानवरों का छोड़ना बतलाया।". (सहीह बुख़ारी; किताबुल मनाक़िब, बाब क़िस्सा ख़ुज़ाआ : 3521; सहीह मुस्लिम : 2856) यह शख़्स ख़ुज़ाआ के बादशाहों में से एक था। इसी ने सबसे पहले इन कामों की ईजाद की थी जो जाहिलियत के अरबों में मुरव्वज थे। इसी ने कुरैशियों को बुतपरस्ती में डाल दिया। अल्लाह तआला उस पर अपनी फिटकार नाज़िल करे। फ़र्माता है कि अगर मेरी यह बात पहले ही से मेरे यहाँ तै शुदा न होती कि मैं गुनहगारों को क़ियामत के आने तक ढील दूँगा तो मैं आज ही इन कुफ़्फ़ार को अपने अज़ाब में धर घसीटता। अब इन्हें क़ियामत के दिन जहन्नम के अलमनाक और बड़े सख़्त अज़ाब होंगे। मैदाने क़ियामत में तुम देखोगे कि यह ज़ालिम लोग अपने करतूतों से लरज़ा व तरसाँ होंगे। मारे डर के तरसाँ होंगे लेकिन आज कोई चीज़ न होगी जो इन्हें बचा सके। आज तो यह आमाल का मज़ा चख कर ही रहेंगे। इनके बिलकुल बरअक्स ईमान वाले नेकोकार लोगों का हाल होगा कि वह अमन चैन से जन्नतों के बाग़ात में मज़े कर रहे होंगे। उनकी ज़िल्लत, रुस्वाई, डर, ख़ौफ़, इनकी इज़्ज़त, बड़ाई, अमन चैन को ख़्याल कर लो। वह तरह तरह की मुसीबतों तक्लीफ़ों में होंगे। यह तरह तरह की राहतों और लज़्ज़तों में होंगे, उम्दा बेहतरीन ग़िज़ाएँ बेहतरीन लिबास बेहतरीन मकानात, बेहतरीन बीवियाँ और बेहतरीन साज़ो सामान उन्हें मिले होंगे जिनका देखना सुनना तो कहाँ किसी इंसान के ज़हन ओर तसव्वुर में भी यह चीज़ें नहीं आ सकतीं। हज़रत अबू तैबा (रज़ि.) फ़र्माते हैं जन्नतियों के सरों पर अब्र आएगा और उन्हें निदा होगी कि बतलाओ किस चीज़ का बरसना चाहते हो? पस जो लोग जिस चीज़ का बरसना चाहेंगे वही चीज़ उन पर उस बादल से बरसेगी। यहाँ तक कि कहेंगे हम पर उभरे हुए सीने वाली हम उम्र औरतें बरसाई जाएँ। चुनाँचे वही बरसेंगी। इसीलिए फ़र्माया कि फ़ज़्ले कबीर यानी ज़बरदस्त कामयाबी कामिल नेअमत यही है।

***

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ
عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى
قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾

तर्जुमा : ''यही वह है जिसकी बशारत अल्लाह तआला अपने बन्दों को दे रहा है जो ईमान लाए। और सुन्नत के मुताबिक़ अमल किये। तू कह दे कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर मुहब्बत रिश्तेदारी की। जो शख़्स कोई नेकी करे हम उसके लिए उसकी नेकी में और हुस्न बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह तआला बहुत बख़्शने वाला और बहुत क़द्रदान है। (23) क्या यह कहते हैं कि पैग़म्बर (ﷺ) ने अल्लाह पर झूठ इफ़्तिरा कर लिया है अगर अल्लाह तआला चाहे तो तेरे दिल पर मोहर लगा दे। अल्लाह तआला अपनी बातों से झूठ को मिटा देता है और सच को साबित रखता है। वह सीने की बातों को जानने वाला है।'' (24)

क़राबतदारी का मफ़्हूम (आ. 23, 24) : ऊपर की आयतों में जन्नत की नेअमतों का ज़िक्र करके बयान कर रहा है कि ईमान वाले नेकोकार बन्दों को उसकी बशारत हो। फिर अपने नबी से फ़र्माता है कि कुरैश के इन मुश्रिकीन से कह दो कि इस तब्लीग़ पर और इस तुम्हारी ख़ैरख़्वाही पर मैं तुमसे कुछ तलब तो नहीं कर रहा। तुम्हारी भलाई तो एक तरफ़ रही तुम अगर अपनी बुराई से ही टल जाओ और मुझे रब की रिसालत पहुँचाने दो और क़राबतदारी के रिश्ते को सामने रखकर मेरी ईज़ारसानी से ही रुक जाओ तो यही बहुत है। सहीह बुख़ारी में है कि ''हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस आयत की तफ़्सीर पूछी गई तो हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) ने कहा इससे मुराद क़राबते आले मुहम्मद (ﷺ) है। यह सुनकर आपने फ़र्माया, तुमने उज्लत से काम लिया। सुनो! कुरैश के जिस क़द्र क़बीले थे सबके साथ हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की रिश्तेदारी थी तो मतलब यह है कि तुम उस रिश्तेदारी का लिहाज़ रखो जो मुझमें और तुममें है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरत शूरा, बाब क़ौलुहू (इल्लल मवद्दत फ़िल क़ुर्बा) : 4818)

हज़रत मुजाहिद, हज़रत इक्रिमा, हज़रत क़तादा, सुद्दी, अबू मालिक, अब्दुर्रहमान (रहि.) वग़ैरह भी इस आयत की यही तफ़्सीर करते हैं। तब्रानी में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कुफ़्फ़ारे कुरैश से कहा कि मैं तुमसे इसकी कोई उज्रत तलब नहीं करता। मगर यह कि तुम इस क़राबतदारी का ख़्याल रखो जो मुझ में और तुममें है। इस मेरी क़राबत का हक़ जो तुम पर है वह अदा करो।'' (अल्मुअजमुल औसत : 3347; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ख़सीफ़ुल जज़्री ज़ईफ़ व फ़ीही इल्लतनु आख़र)

मुस्नदे अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि ''मैंने तुम्हें जो दलीलें दी हैं जिस हिदायत का रास्ता बतलाया है उस पर कोई अज्र तुमसे नहीं चाहता। सिवा इसके कि तुम अल्लाह तआला को चाहने लगो और उसकी इताअत की वजह से क़ुर्ब और नज़दीकी हासिल कर लो।'' (अहमद : 1/268; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; क़ुज़अा बिन सुवैद ज़ईफ़ कमा फ़ित्तक़रीब वग़ैरुहू; हाकिम : 2/444; (अल्मीज़ान : 3/389; रक़म : 6894) हज़रत हसन बसरी (रह.) से भी यही तफ़्सीर मंक़ूल है। तो यह दूसरा क़ौल हुआ। पहला क़ौल हुज़ूर (ﷺ) का अपनी रिश्तेदारी को याद दिलाना।

दूसरा क़ौल आपकी यह तलब कि अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल कर लें। तीसरा क़ौल जो

हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) की रिवायत से गुज़रा कि तुम मेरी क़राबत के साथ एहसान और नेकी करो। अबुद्दैलम का बयान है कि जब हज़रत अली बिन हुसैन (रह.) को क़ैद करके लाया गया और दमिश्क़ के बालाख़ाने में रखा गया तो एक शामी ने कहा, अल्लाह तआला का शुक्र है कि इसने तुम्हें क़त्ल कराया और तुम्हारा नास करा दिया और फ़ित्ना की तरक़्क़ी को रोक दिया। यह सुनकर आपने फ़र्माया, क्या तूने क़ुरआन भी पढ़ा है? उसने कहा, क्यूँ नहीं! फ़र्माया, उसमें हामीम वाली सूरतें भी पढ़ी हैं? उसने कहा वाह सारा क़ुरआन पढ़ लिया और हामीम वाली सूरतें नहीं पढ़ीं? आपने फ़र्माया, फिर क्या उनमें इस आयत की तिलावत तूने नहीं की (क़ुल ला अस्अलुकुम अलैहि अज्रन इल्लल मवद्दता फ़िल क़ुर्बा) यानी मैं तुमसे कोई अज्र तलब नहीं करता मगर मुहब्बते क़राबत की। उसने कहा फिर क्या तुम वो हो? आपने फ़र्माया, हाँ! हज़रत अम्र बिन शुऐब (रह.) से जब इस आयत की तफ़सीर पूछी गई तो आपने फ़र्माया, मुराद क़राबते रसूल (ﷺ) है।

इब्ने जरीर मे हैं कि अंसार (रज़ि.) ने अपनी ख़िदमाते इस्लाम गिनावाईं गोया फ़ख़्र के तौर पर। इस पर इब्ने अब्बास (रज़ि.) या हज़रत अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया, हम तुमसे अफ़ज़ल हैं। जब यह ख़बर हुज़ूर (ﷺ) को मिली तो आप उनकी मज्लिस में आए और फ़र्माया, "अंसारियो! क्या तुम ज़िल्लत की हालत में न थे? फिर अल्लाह ने तुम्हें मेरी वजह से इज़्ज़त बख़्शी। उन्होंने कहा, बेशक आप (ﷺ) सच्चे हैं। फ़र्माया, क्या तुम गुमराह न थे फिर अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरी वजह से हिदायत की? उन्होंने कहा, हाँ! बेशक आप (ﷺ) ने सच फ़र्माया। फिर फ़र्माया, अब तुम मुझे क्यूँ नहीं कहते? उन्होंने कहा, क्या कहें? फ़र्माया, क्यूँ नहीं कहते कि क्या तेरी क़ौम ने तुझे निकाल नहीं दिया था? उस वक़्त हमने तुझे पनाह दी। क्या उन्होंने तुझे झुठलाया न था? उस वक़्त हमने तेरी तस्दीक़ की। क्या उन्होंने तुझे पस्त करना नहीं चाहा था उस वक़्त हमने तेरी मदद की? इसी तरह की आप (ﷺ) ने और भी बहुत सी बातें कहीं यहाँ तक कि अंसार (रज़ि.) अपने घुटनों पर झुक गए और उन्होंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! हमारी औलादें और जो कुछ हमारे पास है सब अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) के लिए है।"

फिर यह आयत (क़ुल ला अस्अलुकुम) नाज़िल हुई। इब्ने अबी हातिम में भी इसी के क़रीब ज़ईफ़ सनद से मरवी है। बुख़ारी व मुस्लिम में यह हदीस है (तब्री, और इसकी सनद में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ुल हदीस रावी है जबकि इस मअ़नी की रिवायत सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा ताईफ़ : 4330; सहीह मुस्लिम : 1061 में है।) उसमें है कि यह वाक़िया हुनैन की ग़नीमत की तक़्सीम के वक़्त पेश आया था और उसमें आयत के उतरने का भी ज़िक्र नहीं और इस आयत को मदीना में नाज़िलशुदा मानने में भी क़द्रे ताम्मुल है इसलिए कि यह सूरह मक्की है। फिर जो वाक़िया हदीस में मज़्कूर है उस वाक़िया में और उस आयत में कुछ ऐसी ज़्यादा ज़ाहिर मुनासिबत भी नहीं। एक रिवायत में है कि लोगों ने पूछा इस आयत से कौन लोग मुराद हैं? जिनकी मुहब्बत रखने का हमें हुक्म जारी हुआ है। आपने फ़र्माया हज़रत फ़ातिमा और उनकी औलाद। (तब्रानी : 12384; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है) लेकिन इसकी सनद ज़ईफ़ है और इसका रावी मुब्हम है जो मअ़रूफ़ नहीं। फिर उसका उस्ताद एक शिया है जो बिलकुल सक़ाहत से गिरा हुआ है उसका

नाम हुसैन अशक़र है। इस जैसी ह़दीस भला इनकी रिवायत से कैसे मान ली जाएगी? फिर मदीने में आयत का नाज़िल होना मुस्तअबद (दूर की बात) है। सच तो यह है कि आयत मक्की है और मक्का मुकर्रमा में ह़ज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) का अक़्दे निकाह ही न हुआ था फिर औलाद कैसी? आपका अक़्द तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ जंगे बद्र के बाद सन 2 हिज्री में हुआ। स़ह़ीह़ तफ़्सीर इसकी वही है जो ह़िब्रुल उम्मा तर्जुमानुल क़ुरआन ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने की है जो बह़वाला बुख़ारी पहले गुज़र चुकी है। हम अहले बैत के साथ ख़ैरख़्वाही करने के मुंकिर नहीं। हम मानते हैं कि उनके साथ एह़सान सुलूक और उनका इकराम व एह़तिराम ज़रूरी चीज़ है। रूए ज़मीन पर उनसे ज़्यादा पाक और स़ाफ़ सुथरा घराना और नहीं। ह़सब व नसब में और फ़ख़्र व मुबाहात में बिला शक यह सबसे आ़ला हैं। बिल्ख़ुसूस़ उनमें से वह जो मुत्तबेअ़ सुन्नते नबी हों जैसे कि अस्लाफ़ की रविश थी यानी ह़ज़रत अ़ब्बास और आले अ़ब्बास और ह़ज़रत अ़ली और आले अ़ली (रज़ि.) की। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया है मैं तुममें दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ किताबुल्लाह और मेरी सुन्नत और यह दोनों जुदा न होंगे जब तक कि ह़ौज़ पर मेरे पास न आ जाएँ। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले स़ह़ाबा, बाब फ़ज़ाइले अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) : 2408; बि तस़र्रुफ़िन यसीर, तिर्मिज़ी : 3788)

मुस्नद अह़मद में है कि "एक बार ह़ज़रत अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से शिकायत की कि क़ुरैशी जब आपस में मिलते हैं तो बड़ी ख़ंदा पेशानी से मिलते हैं। लेकिन हमसे हँसी ख़ुशी के साथ नहीं मिलते। यह सुनकर आप (ﷺ) बहुत रंजीदा हुए और फ़र्माने लगे, अल्लाह की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है किसी के दिल में ईमान दाख़िल नहीं हो सकता जब तक वह अल्लाह तआ़ला के लिए और उसके रसूल की वजह से तुमसे मुह़ब्बत न रखे।" (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब मनाक़िबु अबी फ़ज़्ल अ़म्मुन्नबी (ﷺ) : 3758; अह़मद : 1/207; ह़ाकिम : 3/333; तारीख़ुल मदीना : 2/639; दलाइलुन्नबुव्वा : 1/167; इसकी सनद में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ मुदल्लस रावी है (अल्मीज़ान : 4/423; रक़म : 9695)

और रिवायत में है कि ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा क़ुरैशी बातें करते होते हैं हमें देखकर चुप हो जाते हैं। उसे सुनकर मारे गुस़्से के आप (ﷺ) की पेशानी पर बल पड़ गए और फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! किसी मुसलमान के दिल में ईमान जागुज़ीं नहीं होगा जब तक कि वह अल्लाह तआ़ला के लिए और मेरी क़राबतदारी की वजह से मुह़ब्बत न रखे।" (अह़मद : 1/207, 208; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में यज़ीद बिन अबी ज़ियाद ज़ईफ़ है।) स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि "ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने फ़र्माया, लोगों! ह़ुज़ूर का लिह़ाज़, ह़ुज़ूर (ﷺ) के अहले बेत में रखो।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस़्ह़ाबिन्नबी (ﷺ) बाब मनाक़िबु क़राबते रसूलुल्लाह (ﷺ) : 3713) एक और स़ह़ीह़ रिवायत में है कि "आप (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ली (रजि.) से फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़राबतदारों से सुलूक करना मुझे अपने क़राबतदारों के सुलूक से भी प्यारा है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले

अस्हाबिन्नबी (ﷺ) बाब मनाक़िबु क़राबते रसूलुल्लाह (ﷺ) : 3712; सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (ला नूरिसु मा तरक्ना फ़हुवा सदक़तुन) : 1709) हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने हज़रत अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया, "अल्लाह की क़सम! तुम्हारा इस्लाम लाना मुझे अपने वालिद ख़त्ताब के इस्लाम लाने से भी ज़्यादा अच्छा लगा। इसलिए कि तुम्हारा इस्लाम हुज़ूर (ﷺ) को ख़त्ताब के इस्लाम से ज़्यादा महबूब था।" (इब्ने इस्हाक़ फ़िस्सीरत (सीरते इब्ने हिशाम : 4/45) और इसकी सनद ज़ईफ़ है; ज़ोहरी अन्अन) पस इस्लाम के इन दो चमकते सितारों का मुसलमानों के इन दोनों सय्यदों का जो मामला आले रसूल और अक़रबा पैग़म्बर के साथ था वही इज़्ज़त व मुहब्बत का मामला मुसलमानों को आप (ﷺ) के अहले बैत और क़राबतदारों से रखना चाहिए। क्योंकि नबियों और रसूलों के बाद तमाम दुनिया से अफ़ज़ल यही दोनों बुज़ुर्ग खलीफ़-ए-रसूल थे। पस मुसलमानों को उनकी पैरवी करके हुज़ूर (ﷺ) के अहले बैत और कुंबे क़बीले के साथ हुस्ने अक़ीदत से पेश आना चाहिए। अल्लाह तआला इन दोनों ख़लीफ़ा से और अहले बैत से और हुज़ूर (ﷺ) के कुल सहाबा (रज़ि.) से ख़ुश हो जाए और सबको अपनी रज़ामंदी में ले ले।

सहीह मुस्लिम वग़ैरह में हदीस है कि "यज़ीद बिन हय्यान और हुसैन बिन मैसरा और उमर बिन मुस्लिम, हज़रत ज़ेद बिन अरक़म (रज़ि.) के पास गए। हज़रत हुसैन (रह.) ने कहा, ऐ हज़रत! आपको तो बड़ी बड़ी ख़ैरा बरकत मिल गई। आपने अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) को अपनी आँखों से देखा। आपने अल्लाह तआला के पैग़म्बर (ﷺ) की बातें अपने कानों से सुनीं। आप (ﷺ) के साथ जिहाद किये। आप (ﷺ) के साथ नमाज़ें पढ़ीं। हक़ तो यह है कि बड़ी बड़ी फ़ज़ीलतें आपने समेट लीं। अच्छा! अब कोई हदीस हमें भी तो सुनाइए। इस पर हज़रत ज़ेद (रज़ि.) ने फ़र्माया, मेरे भतीजे सुनो! मेरी उम्र अब बड़ी हो गई। हुज़ूर (ﷺ) की रहलत को अर्सा गुज़र चुका कुछ चीज़ें ज़हन में महफ़ूज़ भी नहीं रहीं। अब तो यही रखो जो अज़्ख़ुद सुना दूँ उसे मान लिया करो वरना मुझे तक्लीफ़ न दो कि तकल्लुफ़ से बयान करना पड़े।

अहले बैत की फ़ज़ीलत : फिर आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मक्के और मदीने के बीच पानी की जगह के पास जिसे ख़ुम कहा जाता था, खड़े होकर अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) ने हमें यह ख़ुत्बा सुनाया। अल्लाह तआला की हम्दो सना की वअज़ व पंद किया। फिर फ़र्माया, "लोगो! मैं एक इंसान हूँ क्या अजब कि अभी अभी मेरे पास अल्लाह तआला का क़ासिद पहुँच जाए और मैं उसकी मान लूँ। सुनो! मैं तुममें दो चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ।एक तो किताबुल्लाह जिसमें नूर व हिदायत है। तुम अल्लाह तआला की किताब को मज़बूत थाम लो और उस पर चंगुल मारे रहो। पस उसकी बड़ी रग़बत दिलाई और बहुत कुछ ताकीदें कीं। फिर फ़र्माया, मेरी अहले बैत में तुम्हें अपनी अहले बैत के बारे में अल्लाह तआला को याद दिलाता हूँ, यह सुनकर हुसैन (रह.) ने हज़रत ज़ेद (रज़ि.) से पूछा, ऐ ज़ेद! आपके अहले बैत कौन हैं? क्या आपकी बीवियाँ अहले बैत में दाख़िल नहीं? फ़र्माया, बेशक आपकी बीवियाँ भी आपके अहले बैत में हैं लेकिन आपके अहले बैत वह हैं जिन पर आप (ﷺ) के बाद सदक़ा हराम है पूछा वह कौन हैं ? फ़र्माया, आले अली, आले अक़ील,

आले जअफ़र, आले अ़ब्बास, पूछा क्या इन सब पर सदक़ा हराम है? फ़र्माया, हाँ!'' (अहमद : 4/466; सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा (रज़ि.), बाब मिन फ़ज़ाइले अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) : 2408) तिर्मिज़ी में है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम उसे मज़बूत थामे रहो तो बहकोगे नहीं। एक दूसरी से ज़्यादा अ़ज़्मत वाली है। किताबुल्लाह जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक लटकाई हुई रस्सी है जो आसमान से ज़मीन तक आई है और दूसरी चीज़ मेरी इत्रत मेरी अहले बैत है और यह दोनों जुदा न होंगी यहाँ तक कि दोनों मेरे पास हौज़े कौसर पर आएँ। पस देख लो कि मेरे बाद किस तरह उनमे मेरी जानशीनी करते हो?'' (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी मनाक़िबे अहले बैतिन्नबी (ﷺ) : 3788; वहुव सहीहुन) इमाम साहब (रह.) फ़र्माते हैं कि यह हदीस हसन ग़रीब है। सिर्फ़ तिर्मिज़ी ही में यह रिवायत है। हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की रिवायत से तिर्मिज़ी में है कि अ़रफ़े वाले दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर जिसे क़सवा कहा जाता था ख़ुत्बा दिया। जिसमें फ़र्माया, ''लोगों! मैं तुममें ऐसी चीज़ छोड़े जा रहा हूँ कि अगर तुम उसे लिए रहे तो हर्गिज़ गुमराह नहीं होओगे। किताबुल्लाह और मेरी इत्रते अहले बैत।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी मनाक़िबे अहले बैतिन्नबी (ﷺ) : 3786; और वह सहीह है।) तिर्मिज़ी की और रिवायत में है कि अल्लाह की नेअ़मतों को मद्देनज़र रखकर तुम लोग अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत रखो। और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत की वजह से मुझसे मुहब्बत रखो। और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहले बैत से मुहब्बत रखो। (तिर्मिज़ी, किताबुल मनाक़िब, बाब फ़ी मनाक़िबे अहले बैतिन्नबी (ﷺ) : 3789; और वह सनद हसन है।) यह हदीस और ऊपर की हदीस हसन ग़रीब है। इस मज़्मून की और अहादीस हमने (إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ) (33/अहज़ाब : 33) की तफ़्सीर में वारिद कर दी हैं। यहाँ इनके दोहराने की ज़रूरत नहीं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! एक ज़ईफ़ हदीस मुस्नदे अबू यअ़ला में है कि हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) ने बैतुल्लाह के दरवाज़े का कुण्डा थामे हुए फ़र्माया, लोगों! जो मुझे जानते हैं वह तो जानते ही हैं जो नहीं पहचानते वह अब पहचान लें कि मेरा नाम अबू ज़र है। सुनो! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि तुममें मेरे अहले बैत की मिसाल मिस्ल नूह (عليه السلام) की कश्ती के है। उसमें जो चला गया उसने नजात पा ली और जो उसमें दाख़िल न हुआ, हलाक हुआ। (हाकिम : 2/343; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) फिर फ़र्माता है जो नेक अ़मल करे हम उसका सवाब और बढ़ा देते हैं। जैसे और आयत में फ़र्माया अल्लाह तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर ज़ुल्म नहीं करता। अगर नेकी हो तो और बढ़ा देता है और अपने पास से अज्रे अ़ज़ीम इनायत करता है। कुछ सलफ़ का क़ौल है कि नेकी का सवाब उसके बाद नेकी है और बुराई का बदला उसके बाद बुराई है। फिर फ़र्मान हुआ कि अल्लाह तआ़ला गुनाहों को बख़्शने वाला है और नेकियों की क़द्रदानी करने वाला है। उन्हें बढ़ा चढ़ा कर देता है। फिर फ़र्माता है कि यह जाहिल कुफ़्फ़ार जो कहते हैं कि क़ुरआन तूने गढ़ लिया है और अल्लाह तआ़ला के नाम लगा दिया है ऐसा नहीं। अगर होता तो अल्लाह तआ़ला तेरे दिल पर मुहर लगा देता और तुझे कुछ याद न रहता। जैसे फ़र्मान है (وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا) (69/हाक़्क़ा : 44) यानी अगर रसूल हमारे ज़िम्मे कुछ बातें लगा देते तो हम

उनका दाहिना हाथ पकड़कर उनके दिल की रग काट डालते और तुममें से कोई उन्हें उस सज़ा से न बचा सकता। यानी यह अगर हमारे कलाम में कुछ ज़्यादती करते तो ऐसा इंतिक़ाम लेते कि दुनिया की कोई हस्ती उसे न बचा सकती। उसके बाद का जुम्ला यम्हुल्लाहु.... यख़्तिम पर मअ़तूफ़ नहीं बल्कि यह मुब्तदा है और मुब्तदा होने की वजह से मरफ़ूअ है (यख़्तिम) पर अ़त्फ़ नहीं जो मजज़ूम हो। वाव का किताब में न आना यह सिर्फ़ इमाम के रस्मे ख़त़ की मुवाफ़िक़त की वजह से है जैसे (سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ) (96/अलक़ : 18) में वाव लिखने में नहीं आई और (وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ) (17/बनी इस्राईल : 11) में वाव नहीं लिखी गई। हाँ! उसके बाद के जुम्ले (व युहिक़्क़ुल हक़्क़) का अ़त्फ़ (यम्हुल्लाह) पर है यानी अल्लाह तआला हक़ को वाज़ेह और मुबीन कर देता है अपने कलिमात से यानी दलाइल बयान करके हुज्जत पेश करके वह ख़ूब दाना बीना है। दिलों के राज़ सीनों के भेद उस पर खुले हुए हैं।

***

وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ
فَضْلِهٖ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا
فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ
الَّذِىْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ۭ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और गुनाहों से दरगुज़र फ़र्माता है और जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है। (25) ईमान वालों और नेकोकार लोगों की सुनता है। और उन्हें अपने फ़ज़्ल से और ज़्यादती अ़ता फ़र्माता है। और कुफ़्फ़ार के लिए सख़्त मार है। (26) अगर अल्लाह तआ़ला अपने सब बन्दों की रोज़ी फ़राख़ कर देता तो वह ज़मीन में फ़साद बरपा कर देते लेकिन वह अंदाज़े के साथ जो कुछ चाहता है नाज़िल फ़र्माता है। वह अपने बन्दों से पूरा ख़बरदार है और ख़ूब देखने वाला है। (27) वही है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है। वही है कारसाज़ और क़ाबिले हम्दो सना।'' (28)

सच्ची तौबा गुनाहों को मिटा देती है (आ. 25 से 28) : अल्लाह तआ़ला अपना एहसान और अपना करम बयान करता है कि वह अपने गुलामों पर इस क़द्र मेहरबान है कि बुरे से बुरा गुनहगार भी जब अपनी बदकिरदारी से बाज़ आए और ख़ुलूस के साथ उसके सामने झुके और सच्चे दिल से तौबा करे तो वह अपने करम व रह़म से उसकी पर्दापोशी करता है। उसके गुनाह माफ़ कर देता है। और अपना फ़ज़्ल उसके शामिले ह़ाल कर देता है। जैसे और आयत में है (وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا اَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ) (4/निसाअ : 110) जो शख़्स बदअमली करे या अपनी जान पर ज़ुल्म करे फिर अल्लाह तआ़ला से बख़्शिश त़लब करे तो वह अल्लाह तआ़ला को ग़फ़ूरुर रह़ीम पाएगा।

स़ह़ीह़ मुस्लिम में है "अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबा से उससे ज़्यादा खुश होता है जिसकी ऊँटनी जंगल बयाबान में गुम हो गई हो जिस पर उसका खाना पीना भी हो यह उसकी जुस्तजू करके आ़जिज़ आकर दरख़्त तले पड़ रहा और अपनी जान से भी हाथ धो बैठा ऊँटनी से बिलकुल मायूस हो गया कि यकायक वह देखता है कि ऊँटनी उसके पास ही खड़ी है यह फ़ौरन ही उठ बैठता है उसकी नकेल थाम लेता है और इस क़द्र ख़ुश होता है कि बेतह़ाशा उसकी जुबान से निकल जाता है कि या अल्लाह! बेशक तू मेरा गुलाम है और मैं तेरा रब हूँ। वह अपनी ख़ुशी की वजह से ख़त़ा कर जाता है।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब अत्तौबा : 6309; मुख़्तस़रन; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2747) एक मुख़्तस़र ह़दीस में है कि "अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे की तौबा से इस क़द्र ख़ुश होता है कि उतनी खुशी उसको भी नहीं होती जो ऐसी जगह में हो जहाँ प्यास के मारे हलाक हो रहा हो और वहीं उसकी सवारी का जानवर गुम हो गया हो जो उसे दफ़अतन मिल जाए।" (यह रिवायत मुन्क़त़अ यानी ज़ईफ़ है।) ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से जब यह मसला पूछा गया कि एक शख़्स एक औरत से बुरा काम करता है फिर उससे निकाह़ कर सकता है? आपने फ़र्माया, निकाह़ में कोई ह़र्ज नहीं फिर आपने यही आयत पढ़ी। (त़ब्री : 21/533) तौबा तो मुस्तक़्बिल के लिए क़बूल होती है और बुराइयाँ गुज़िश्ता माफ़ कर दी जाती हैं। तुम्हारे हर क़ौल व फ़ेअ़ल और हर अ़मल का उसे इ़ल्म है। बावजूद इसके कि झुकने वाले की त़रफ माइल होता है और क़बूल कर लेता है। वह ईमान वालों और नेककारों की दुआ़ क़बूल करता है वह ख़्वाह अपने लिए दुआ़ करें ख़्वाह दूसरों के लिए। ह़ज़रत मुआ़ज़ (रज़ि.) मुल्के शाम में ख़ुत़्बा पढ़ते हुए अपने मुजाहिद साथियों से फ़र्माते हैं "तुम ईमान वाले हो और जन्नती हो और मुझे उम्मीद है कि यह रूमी और फ़ारसी जिन्हें तुम क़ैद कर लाते हो। क्या अ़जब कि यह भी जन्नत में पहुच जाएँ। क्योंकि इनमें से जब तुम्हारा कोई काम कोई कर देता है तो तुम उसे कहते हो अल्लाह तआ़ला तुझ पर रह़म करे तूने बहुत अच्छा काम किया अल्लाह तुझे बरकत दे तूने बहुत अच्छा किया वग़ैरह और क़ुरआन का वादा है कि अल्लाह तआ़ला ईमान लाने और नेक अ़मल करने वालों की दुआ़ क़बूल करता है। फिर आपने यही आयत तिलावत फ़र्माई।" (ह़ाकिम : 2/444; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अल्अअमश अ़न्अ़न) मअ़नी इसके यह हैं कि अल्लाह तआ़ला उनकी सुनता है (الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ) (39/ज़ुमर : 18) की यह तफ़्सीर की गई है कि जो बात को मान लेते हैं और उसकी इत्तिबाअ़ करते हैं और जैसे फ़र्माया (اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ

(يَسْتَمِعُوْنَ) (6/अन्आम : 36) इब्ने अबी हातिम में है कि अपने फ़ज़्ल से ज़्यादती देना यह है कि उनके हक़ में ऐसे लोगों की सिफ़ारिश क़बूल करेगा जिनके साथ उन्होंने कुछ सुलूक किया हो। (और इसकी सनद ज़ईफ़ है वफ़ीहि इलल मिन्हा ज़ुअफ़ इस्माईल बिन अब्दुल्लाह कुंदी व अन्अनतुल अअमश)

हज़रत इब्राहीम नख़ई (रह.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माया है वह अपने भाईयों की सिफ़ारिश करेंगे और उन्हें ज़्यादा फ़ज़्ल मिलेगा यानी भाईयों के भाईयों की शफ़ाअत की इजाज़त हो जाएगी। (तब्री : 21/534) मोमिनों की इस इज़्ज़त व शान को बयान करके कुफ़्फ़ार की बदहाली बयान की कि उन्हें सख़्त दर्दनाक और घबराहट वाले अज़ाब होंगे। फिर फ़र्माया अगर इन बन्दों को रोज़ियों में वस्अत मिल जाती, उनकी ज़रूरत से ज़्यादा उनके पल्ले पड़ जाता तो यह ख़र मस्ती में आकर दुनिया में हुल्लड़ मचा देता और दुनिया के अम्न को आग लगा देते, एक दूसरे को फूँक देना भून खाना सरकशी और तुग़ियान तकब्बुर और बेपरवाही हद से बढ़ जाती। इसीलिए हज़रत क़तादा (रह.) का फ़ल्सफ़याना मक़ूला है कि "ज़िन्दगी का सामान उतना ही अच्छा है जितने में सरकशी और लाउबालीपन न आए।" इस मज़्मून की पूरी हदीस कि मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा डर्र दुनिया की नुमाइश का है पहले बयान हो चुकी है। फिर फ़र्माता है वह एक अंदाज़े से रोज़िया पहुँचा रहा है। बन्दे की सलाहियत का उसे इल्म है। ग़िना और फ़क़ीरी के मुस्तहिक़ को वह ख़ूब जानता है।

कुदसी हदीस में है "मेरे बन्दे ऐसे भी हैं जिनकी सलाहियत मालदारी में है। अगर मैं उन्हें फ़क़ीर बना दूँ तो वह दीनदारी से भी जाते रहेंगे। और मेरे कुछ बन्दे ऐसे भी हैं कि उनके लायक़ फ़क़ीरी ही है। अगर वह माल हासिल कर लें और अमीर बन जाएँ तो उस हालत में मैं गोया उनका दीन फ़ासिद कर दूँ।" (तफ़्सीर अल्बग़वी : 1877; और इसकी सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा है।) फिर इर्शाद होता है कि लोग बाराने रहमत का इंतिज़ार करते करते मायूस हो जाते हैं। ऐसी पूरी हाजत और सख़्त मुसीबत के वक़्त में मैं बारिश बरसाता हूँ। उनकी नाउम्मीदी और ख़ुश्क साली कट जाती है और आम तौर पर मेरी रहमत फैल जाती है।

अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन फ़ारूक़े अ'ज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से एक शख़्स कहता है अमीरुल मोमिनीन! क़हतसाली हो गई और अब तो लोग बारिश से बिलकुल मायूस हो गए हैं तो आपने फ़र्माया, जाओ अब बारिश इंशाअल्लाह ज़रूर होगी। फिर इसी आयत की तिलावत की। (तब्री : 21/537) वली व हमीद है यानी मख़्लूक़ात के तसर्रुफ़ात उसी के क़ब्ज़े में हैं उसके काम क़ाबिले सताइश व ता'रीफ़ हैं मख़्लूक़ के भले को वह जानता है और उनके नफ़ा का उसे इल्म है उसके काम नफ़ा से ख़ाली नहीं।

***

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : "उसकी निशानियों में से आसमान व ज़मीन की पैदाइश है और उनमें जानदारों का फैलाना है। वह उस पर भी क़ादिर है कि जब चाहे उन्हें जमा कर दे। (29) तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहुँचती हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का बदला है और अभी तो बहुत सी बातों से दरगुज़र कर लेता है। (30) तुम हमें ज़मीन में आजिज़ करने वाले नहीं हो। तुम्हारे लिए सिवा अल्लाह तआला के न कोई कारसाज़ है, न मददगार।" (31)

मुसीबत व परेशानी गुनाहों की माफ़ी का ज़रिया है (आ. 29 से 31) : अल्लाह तआला की अज़्मत कुदरत और सल्तनत का बयान हो रहा है कि आसमान व ज़मीन उसी के पैदा किये हुए हैं। और इनमें सारी मख़्लूक़ भी उसी की रचाई हुई है। फ़रिश्ते इंसान जिन्नात और मुख़्तलिफ़ क़िस्मों के हैवानात जो कोने कोने में फैले हुए हैं, क़ियामत के दिन वह उन सबको एह ही मैदान में जमा करेगा जबकि उनके हवास उड़े हुए होंगे और उनमें अदलो इंसाफ़ किया जाएगा। फिर फ़र्माता है ऐ लोगों! तुम्हें जो कुछ मुसीबतें पहुँचती हैं वह सब दरअसल तुम्हारे अपने किये हुए गुनाहों का बदला है और अभी तो वह गफ़ूरुर रहीम अल्लाह तुम्हारी बहुत सी हुक्म अदूलियों से चश्मपोशी किये हुए है और उन्हें माफ़ कर देता है अगर हर गुनाह पर पकड़े तो तुम ज़मीन पर चल फिर भी न सको। सहीह हदीस में है कि "मोमिन को जो तक्लीफ़ सख़्ती ग़म और परेशानी होती है उसकी वजह से अल्लाह तआला उसकी ख़ताएँ माफ़ कर देता है यहाँ तक कि एक कांटा लगने के बदले भी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मर्ज़ा, बाब मा जाअ फ़ी कफ़्फ़ारतिल मर्ज़ : 5642; सहीह मुस्लिम : 2573) जब आयत (فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا) (99/ज़िल्ज़ाल : 7) उतरी उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) खाना खा रहे थे आपने उसे सुनकर खाने से हाथ हटा लिया और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हर हर बुराई भलाई का बदला दिया जाएगा?आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो!! तबीयत के ख़िलाफ़ जो चीज़ें होती हैं यह सब बुराइयों के बदले हैं और सारी नेकियाँ अल्लाह तआला के पास जमाशुदा हैं" हज़रत अबू इदरीस (रह.) फ़र्माते हैं यही मज़्मून इस आयत में बयान हुआ है। (तब्री यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं "आओ मैं तुम्हें किताबुल्लाह की अफ़ज़लतरीन आयत सुनाऊँ और

साथ ही हदीस भी। हुज़ूर (ﷺ) ने हमारे सामने यह आयत तिलावत की और मेरा नाम लेकर फ़र्माया, सुन! मैं इसकी तफ़्सीर भी तुझे बता दूँ, तुझे जो बीमारियाँ सख़्तियाँ और बलाएँ आफ़तें दुनिया में पहुँचती हैं वह सब बदला हे तुम्हारे अपने आमाल का। अल्लाह तआला का हिल्म इससे बहुत ज़्यादा है कि फिर उन ही पर आख़िरत में भी सज़ा करे और अक्सर बुराइयाँ माफ़ कर देता है तो उसके करम से यह बिलकुल नामुम्किन है कि दुनिया में माफ़ की हुई ख़ताओं पर आख़िरत में पकड़े।'' (अहमद : 1/85; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; फ़ीही ज़ईफ़ुन व मज्हूलुन; मुस्नदे अबी यअला : 453; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/104)

इब्ने अबी हातिम में यही रिवायत हज़रत अली (रज़ि.) ही के क़ौल से मरवी है उसमें है कि अबू जुहैफ़ा (रज़ि.) जब हज़रत अली (रज़ि.) के पास गए तो आपने फ़र्माया, ''मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस सुनाता हूँ जिसे याद रखना हर मोमिन का फ़र्ज़ है। फिर यह तफ़्सीर अपनी तरफ़ से इस आयत की सुनाई।'' मुस्नद अहमद में है कि ''मुसलमान के जिस्म में जो तक्लीफ़ होती है उसकी वजह से अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ़ करता है।'' (अहमद : 4/98; और इसकी सनद हसन है।) मुस्नद ही की और हदीस में है कि ''जब ईमान वाले बन्दे के गुनाह बढ़ जाते हैं और उसके कफ़्फ़ारे की कोई चीज़ उसके पास नहीं होती तो अल्लाह तआला उसे किसी रंजो ग़म में मुब्तला कर देता है और वही उसके उन गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है।'' (अहमद : 6/157; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; लैस बिन अबी सुलैम ज़ईफ़ रावी है; बज़्ज़ार : 3260) इब्ने अबी हातिम में हज़रत हसन बसरी (रह.) से मरवी है कि इस आयत के उतरने पर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''उस अल्लाह तआला की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (ﷺ) की जान है कि उस लकड़ी की ज़रा सी खुरच हड्डी की ज़रा सी तक्लीफ़ यहाँ तक कि क़दम का फिसलना भी किसी न किसी गुनाह पर है और अभी अल्लाह तआला के माफ़ किये हुए बहुत से गुनाह तो यूँ ही मिट जाते हैं।'' (यह मुर्सल यानी ज़ईफ़ रिवायत है।) इब्ने अबी हातिम में है कि जब हज़रत इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) के जिस्म में तक्लीफ़ हुई और लोग उनकी एयादत को गए तो हज़रत हसन (रह.) ने कहा कि आपकी यह हालत तो देखी ही नहीं जाती हमें बड़ा सदमा हो रहा है। आपने फ़र्माया, ''ऐसा न करो जो तुम देख रहे हो यह सब गुनाहों का कफ़्फ़ारा है और अभी बहुत से गुनाह तो अल्लाह तआला माफ़ कर चुका है। फिर इसी आयत की तिलावत की।'' (हाकिम : 2/445; और इसकी सनद ज़ईफ़ अल्हसन बसरी अन्अन) अबुल बिलाद (रह.) कहते हैं कि मैंने हज़रत अलाअ बिन बद्र (रह.) से कहा कि कुरआन में तो यह आयत है और मैं अभी नाबालिग़ बच्चा हूँ और अँधा हो गया हूँ। आपने फ़र्माया, यह तेरे मा बाप के गुनाहों का बदला है। हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं कि कुरआन पढ़कर भूल जाने वाला यक़ीनन अपने गुनाह में पकड़ा गया है उसकी और कोई वजह नहीं। फिर आपने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया बतलाओ तो उससे बड़ी मुसीबत और क्या होगी कि इंसान याद करके कलामुल्लाह भूल जाए।

***

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا
كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۝ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ
مَّحِيْصٍ ۝

तर्जुमा : ''दरिया में चलने वाली पहाड़ों जैसी कश्तियाँ उसकी निशानियों में से हैं। (32) अगर वह चाहे तो हवा बंद कर दे और यह कश्तियाँ समुन्द्रों पर रुकी रह जाएँ। यक़ीनन इसमें हर सब्र करने वाले शुक्रगुज़ार के लिए निशानियाँ हैं। (33) या इन्हें इनके करतूतों के बाइस तंबाह कर दे वह तो बहुत सी तक़्सीरों से दरगुज़र फ़र्माया करता है (34) ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं वह मालूम कर लें कि उनके लिए कोई छुटकारा नहीं।'' (35)

दरियाओं में कश्तियों का आना जाना अल्लाह तआला की क़ुदरत की निशानी (आ. 32 से 35) : अल्लाह तबारक व तआला अपनी क़ुदरत के निशान अपनी मख़्लूक़ के सामने रखता है कि उसने समुन्द्रों को मुसख़्ख़र कर रखा है ताकि कश्तियाँ उनमें बराबर आएँ जाएँ। बड़ी बड़ी कश्तियाँ समुन्द्रों में ऐसी ही मालूम होती है जैसे ज़मीन में ऊँचे पहाड़। उन कश्तियों को इधर से उधर ले जाने वाली हवाएँ उसके क़ब्ज़े में हैं अगर वह चाहे तो उन हवाओं को रोक ले। फिर तो बादबान बेकार हो जाएँ और कश्ती रुककर खड़ी हो जाए। हर वह शख़्स जो सख़्तियों में सब्र का और आसानियों में शुक्र का आदी हो उसके लिए तो बड़ी इब्रत की जगह है। वह रब्बे तआला की अज़ीमुश्शान क़ुदरत और उसकी बेपायाँ सल्तनत को इन निशानियों से समझ सकता है और जिस तरह हवाएँ बंद करके कश्तियों को खड़ा कर लेना और रोक लेना उसके बस में है उसी तरह उन पहाड़ों जैसी कश्तियों को दम भर में डुबा देना भी उसके हाथ में है। अगर वह चाहे तो अहले कश्ती के गुनाहों की वजह से उन्हें डुबो दे। अभी तो वह बहुत से गुनाहों से दरगुज़र कर लेता है और अगर सब गुनाहों पर पकड़े तो जो भी कश्ती में बैठे सीधा समुन्द्र में डूबे। लेकिन उसकी बेपायाँ रहमत उनको इस पार से उस पार कर देती है। उलम-ए-तफ्सीर ने यह भी फ़र्माया है कि अगर वह चाहे तो उसी हवा को नामुवाफ़िक़ कर दे तेज़ो तुंद आँधी चला दे जो कश्ती को सीधी राह चलने ही न दे। इधर से उधर कर दे, संभाले न संभल सके। जहाँ जाना है उस तरफ़ जा ही न सके और यूँ ही सरगश्ता व हैरान होकर अहले कश्ती तबाह हो जाएँ। अल्ग़र्ज़ अगर बंद कर दे तो खड़े खड़े नाकाम रहें अगर तेज़ कर दे तो नाकामी। लेकिन यह उसका लुत्फ़ो करम है कि खुशगवार

मुवाफ़िक़ हवाएँ चलाता है और लम्बे लम्बे सफ़र उन कश्तियों के ज़रिये बनी आदम तै करता है और अपने मक़्सद को पा लेता है। यही हाल पानी का है कि अगर बिलकुल न बरसाये ख़ुश्कसाली रहे, दुनिया तबाह हो जाए अगर बहुत ही बरसा दे तो तरसाली कोई चीज़ पैदा न होने दे और दुनिया हलाक हो जाए। साथ ही बारिश की ज़्यादती का मकानों के गिरने का और पूरी बर्बादी का सबब बन जाए। यहाँ तक कि रब्बे तआला की मेहरबानी से जिन शहरों में और जिन ज़मीनों में ज़्यादा बारिश की ज़रूरत है वहाँ कसरत से बारिश बरसाता है और जहाँ कम की ज़रूरत है वहाँ कमी से। फिर फ़र्माता है कि हमारी निशानियों में झगड़ने वाले ऐसे मौक़ों पर तो मान लेते हैं कि वह हमारी क़ुदरत से बाहर नहीं, हम अगर इंतिक़ाम लेना चाहें हम अगर अ़ज़ाब करना चाहें तो वह छूट नहीं सकते सब हमारी क़ुदरत और मशिय्यत तले हैं, फ़सुब्हानहू मा आ'ज़मा शानुहू!

***

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾

तर्जुमा : ''तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह ज़िन्दगानी दुनिया का कुछ यूँ ही सा अस्बाब है और अल्लाह तआ़ला के पास जो है वह उससे दरजहा बेहतर है और पायदार है। वह उनके लिए है जो ईमान लाए और सिर्फ़ अपने रब्बे तआ़ला ही पर भरोसा रखते हैं। (36) और कबीरा गुनाहों से और बेहयाइयों से बचते रहते हैं और ग़ुस्से के वक़्त भी माफ़ कर देते हैं। (37) और अपने रब्बे तआ़ला के फ़र्मान को क़बूल करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और उनका हर काम आपस के मश्वरे से होता है और जो हमने उन्हें दे रखा है उसमें से हमारे नाम देते रहते हैं। (38) और जब उन पर ज़ुल्मो ज़्यादती हो तो वह सिर्फ़ बदला ले लेते हैं।'' (39)

दुनिया की मज़म्मत (आ. 36 से 39) : अल्लाह तआ़ला ने दुनिया की बेक़द्री और उसकी हक़ारत बयान की कि उसे जमा करके किसी को फूलना न चाहिए क्यों कि यह फ़ानी चीज़ है बल्कि आख़िरत की तरफ़

रग़बत करना चाहिए नेक आमाल करके सवाब जमा करना चाहिए जो सर्मदी और बाक़ी चीज़ है पस फ़ानी को बाक़ी पर कमी को ज़्यादती पर तर्जीह देना अक़्लमंदी नहीं। अब इस सवाब के हासिल करने के तरीक़े बतलाए जाते हैं कि ईमान मज़बूत हो ताकि दुनियावी लज़्ज़तों के छोड़ने पर सब्र हो सके, अल्लाह तआला पर कामिल भरोसा हो ताकि सब्र पर उसकी इम्दाद मिले और अहकामे इलाही की बजाआवरी और नाफ़र्मानियों से इज्तिनाब आसान हो जाए। कबीरा गुनाहों और फ़ोहश कामों से परहेज़ चाहिए। इस जुम्ला की तफ़्सीर सूरह आराफ़ में गुज़र चुकी है। गुस्सा पर क़ाबू चाहिए कि ऐन गुस्से और ग़ज़ब की हालत में भी ख़ुशख़ल्क़ी और दरगुज़र की आदत न छूटे। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कभी भी अपने नफ़्स का बदला किसी से नहीं लिया। हाँ! अगर अल्लाह तआला के अहकाम की बेइज़्ज़ती और बेतौक़ीरी होती हो तो और बात है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब सिफ़तुन्नबी (ﷺ) : 3560; सहीह मुस्लिम : 2327; अबूदाऊद : 4785) और हदीस में है कि "बहुत ज़्यादा गुस्सा की हालत में भी आप (ﷺ) की ज़बाने मुबारक से उसके सिवा और कुछ अल्फ़ाज़ न निकलते कि फ़र्माते इसे क्या हो गया है। इसके हाथ ख़ाक आलूद हों।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब लम यकुनिन्नबी (ﷺ) फ़हशन वला मुतफ़ह्हिशन : 6031) हज़रत इब्राहीम (रह.) फ़र्माते हैं कि "मुसलमान पस्त व ज़लील होना तो पसंद नहीं करते थे लेकिन ग़ालिब आकर इंतिक़ाम भी नहीं लेते थे बल्कि दरगुज़र कर जाते और माफ़ कर देते।" उनकी और सिफ़त यह है कि यह अल्लाह तआला का कहा करते हैं रसूल (ﷺ) की इत्तिबाअ करते हैं। जिसका वह हुक्म करे बजा लाते हैं जिससे वह रोके रुक जाते हैं। नमाज़ के पाबंद होते हैं जो सबसे आला इबादत है।

अहले इल्म से रहनुमाई तलब करो : बड़े बड़े उमूर में बग़ैर आपस के मुशाविरत के हाथ नहीं डालते। ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) को हुक्मे इलाही होता है कि (شَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ) (3/आले इमरान : 159) यानी उनसे मश्वरा कर लिया करो। इसीलिए हुज़ूर (ﷺ) की आदते मुबारका थी कि जिहाद वग़ैरह के मौक़ों पर लोगों से मश्वरा कर लिया करते ताकि उनके जी ख़ुश हो जाएँ और इसी बिना पर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) ने जबकि आपको ज़ख़्मी कर दिया गया और वफ़ात का वक़्त क़रीब था छः आदमी मुक़र्रर कर दिये कि यह अपने मश्वरे से किसी को मेरा जानशीन मुक़र्रर करें। उन छः बुज़ुर्गों के नाम यह हैं, उस्मान, अली, तलहा, ज़ुबैर, सअद और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.)।

पस सबने एक राय हज़रत उस्मान (रज़ि.) को अपना अमीर मुक़र्रर किया। फिर उनका जिनके लिए आख़िरत की तैयारी और वहाँ के सवाब हैं एक और वस्फ़ बयान किया कि जहाँ यह अल्लाह तआला के हक़ अदा करते हैं वहाँ लोगों के हुक़ूक़ की अदायगी में भी कमी नहीं करते। अपने माल में मोहताजों का हिस्सा भी रखते हैं और दर्जा बदर्जा अपनी ताक़त के मुताबिक़ हर एक के साथ सुलूक व एहसान करते रहते हैं। और यह ऐसे ज़लील व पस्त और बेहिम्मते नहीं होते कि ज़ालिम के ज़ुल्म की कोई रोकथाम न कर सकें बल्कि इतनी कुव्वत अपने अंदर रखते हैं कि ज़ालिमों से इंतिक़ाम लें और मज़्लूम को उसके पंजे से नजात दिलवाएँ लेकिन हाँ! अपनी भुल मंसाहत की वजह से ग़ालिब आकर फिर छोड़ देते हैं। जैसे कि अल्लाह के नबी हज़रत यूसुफ़

(ﷺ) ने अपने भाईयों पर क़ाबू पाकर फ़र्मा दिया कि जाओ तुम्हे मैं कोई डाँट डपट नहीं करता बल्कि मेरी ख़्वाहिश है और दुआ है कि अल्लाह तआला भी तुम्हें माफ़ कर दे। और जैसे कि सरदारे अम्बिया रसूलुल्लाह अहमद मुज्तबा हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने हुदेबिया में किया जबकि अस्सी (80) कुफ़्फ़ार ग़फ़्लत का मौक़ा ढूँढ़कर चुपचाप लश्करे इस्लाम में घुस आए जब यह पकड़े लिये गए और गिरफ़्तार होकर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में पेश कर दिये गए तो आपने उन सबको माफ़ी दे दी और छोड़ दिया।

और जैसे कि आपने ग़ौरस बिन हारिस को माफ़ कर दिया। यह वह शख़्स है कि हुज़ूर (ﷺ) के सोते हुए उसने आपकी तलवार पर क़ब्ज़ा कर लिया। जब आप जागे और उसे डाँटा और तलवार उसके हाथ से छूट गई और आपने तलवार ले ली और वह मुज्रिम गर्दन झुकाये आपके सामने खड़ा हो गया। आप (ﷺ) ने सहाबा (रज़ि.) को बुलाकर यह मंज़र भी दिखाया और यह क़िस्सा भी सुनाया फिर उसे माफ़ कर दिया और जाने दिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वते ज़ातुर्रिक़ाक़ : 4135; सहीह मुस्लिम : 843) इसी तरह लबीद बिन आसिम ने जब आप (ﷺ) पर जादू किया तो बावजूद इल्म व कुदरत के आपने उससे दरगुज़र फ़र्मा लिया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तिब्ब, बाबुस्सिहर : 5763; सहीह मुस्लिम : 2189) और इसी तरह जिस यहूदिया औरत ने आप (ﷺ) को ज़हर दिया था आप (ﷺ) ने उससे भी बदला न लिया। और बावजूद क़ाबू पाने और मालूम हो जाने के भी आपने इतने बड़े वाक़िया को आना जाना कर दिया। उस औरत का नाम ज़ेनब था। यह मरहब यहूदी की बहन थी जो जंगे ख़ैबर में हज़रत महमूद बिन मुस्लिमा (रज़ि.) के हाथों मारा गया था। उसने बकरी के शाने के गोश्त में ज़हर मिलाकर ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) के सामने पेश किया था। ख़ुद शाने ने ही हुज़ूर (ﷺ) को अपने ज़हरआलूद होने की ख़बर दी थी। जब आप (ﷺ) ने उसे बुलाकर पूछा तो उसने इक़रार किया था और वजह यह बयान की थी कि अगर आप सच्चे नबी हैं तो यह आपको कुछ नुक़्सान न पहुँचा सकेगा और अगर आप अपने दावे में झूठे हैं तो हमें आपसे राहत हासिल हो जाएगी। यह मालूम हो जाने पर और उसके इक़बाले जुर्म कर लेने पर भी अल्लाह तआला के रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे छोड़ दिया और माफ़ कर दिया। भले बाद में वह क़त्ल कर दी गई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब इज़ा ग़दरल मुश्रिकूना बिल मुस्लिमीन : 3169; अबूदाऊद : 4510) इसलिए कि उसी ज़हर से और उसी ज़हरीले खाने से हज़रत बिश्र बिन बराअ (रज़ि.) फ़ौत हो गए तब क़िसासन यह यहूदिया औरत भी क़त्ल करा दी गई। और भी हुज़ूर (ﷺ) के ऐसे वाक़ियात बहुत से हैं।

***

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾ ؕ اِنَّمَا

السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۞ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۞

तर्जुमा : "बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है ओर जो माफ़ कर दे और सुलह करे उसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। फ़िल्वाक़ेअ अल्लाह तआला ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40) और जो शख़्स अपने मज़्लूम होने के बाद बराबर का बदला ले ले तो ऐसे लोगों पर इल्ज़ाम का कोई रास्ता नहीं। (41) यह रास्ता सिर्फ़ उन लोगों पर है जो ख़ुद दूसरों पर ज़ुल्म करें और ज़मीन में नाहक़ फ़साद करते फिरें। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अ़ज़ाब हैं। (42) जो शख़्स सब्र कर ले और माफ़ कर दे यक़ीनन यह बड़ी हिम्मत के कामों में से एक काम है।" (43)

किसी की ईज़ारसानी पर बदला का ज़िक्र या माफ़ी (आ. 40 से 43) : इर्शाद होता है कि बुराई का बदला लेना जाइज़ है जैसे फ़र्माया (فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ) (2/बक़रह : 194) और आयत में है (وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ) (16/नह्ल : 126) इन सब आयात का मतलब यही है। लेकिन अफ़ज़लियत इसी में है कि अफ़्वो दरगुज़र किया जाए। जैसे फ़र्माया (وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ) (5/माइदा : 45) यानी ख़ास ज़ख़्मों का भी बदला है फिर जो शख़्स उसे माफ़ कर दे तो वह उसके लिए कफ़्फ़ारा हो जाएगा। यहाँ भी फ़र्माया जो शख़्स माफ़ कर दे और सुलह व सफ़ाई करे उसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। हदीस में है दरगुज़र करने की वजह से अल्लाह तआला बन्दे की इज़्ज़त और बढ़ा देता है। (इस मअनी की रिवायत सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब इस्तिहबाबुल अफ़्व वत्तवाज़ोअ : 2588 में है।) लेकिन जो बदले में असल जुर्म से बढ़ जाए वह अल्लाह का दुश्मन है। फिर बुराई की इब्तिदा उसी की तरफ़ से समझी जाएगी। फिर फ़र्माता है जिस पर ज़ुल्म हुआ उसे बदला लेने में कोई गुनाह नहीं। इब्ने औन (रह.) फ़र्माते हैं मैं इस लफ़्ज़ (इंतसर) की तफ़्सीर की तलब में था तो मुझसे अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआन ने बरिवायत अपनी वालिदा उम्मे मुहम्मद के जो हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास आया जाया करती थीं बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ हुज़ूर(ﷺ) गए। उस वक़्त हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) वहाँ मौजूद थीं। आप (ﷺ) को मालूम न था। आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) की तरफ़ जब आप (ﷺ) ने हाथ बढ़ाया तो सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने इशारे से बताया। उस वक़्त आप (ﷺ) ने अपना हाथ खींच लिया। हजरत ज़ेनब (रज़ि.) ने हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) को बुरा भला कहना शुरू किया। हुज़ूर (ﷺ) की मुमानिअत पर भी ख़ामोश न हुईं तो आप (ﷺ) ने हजरत आइशा (रज़ि.) को इजाज़त दी कि जवाब दें। अब जो जवाब हुआ तो हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) आजिज़ आ गईं और सीधी हज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास गईं और कहा कि आइशा तुम्हें यूँ यूँ कहती हैं और ऐसा ऐसा करती हैं।

यह सुनकर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) हाज़िरे हुज़ूर (ﷺ) हुईं। आपने उनसे फ़र्माया, क़सम रब्बे कअ़बा की, आइशा से मुहब्बत रखता हूँ यह तो उसी वक़्त वापिस चली गईं और हज़रत अ़ली (रज़ि.) से सारा वाक़िया कह सुनाया। फिर हज़रत अ़ली (रज़ि.) आए और आपसे बातें कीं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल इंतिसार : 4898; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अ़ली बिन ज़ेद बिन जिदआ़न ज़ईफ़ और उम्मे मुहम्मद मज्हूल राविया है।)

यह रिवायत इब्ने जरीर में इसी तरह है। लेकिन उसके रावी अपनी रिवायतों में उमूमन मुंकर हदीसें लाया करते हैं और यह रिवायत भी मुंकर है। नसाई और इब्ने माजा में इस तरह है कि ''हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) गुस्से में भरी हुई बिला इत्तिलाअ़ हज़रत आइशा (रज़ि.) के घर चली आईं और हुज़ूर (ﷺ) से हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) की निस्बत कुछ कहा। फिर हज़रत आइशा (रज़ि.) से लड़ने लगीं। लेकिन माई साहिबा (रज़ि.) ने ख़ामोशी इख़्तियार की। जब वह कह चुकीं तो आप (ﷺ) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) से फ़र्माया तू अपना बदला ले ले। फिर सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने जवाब देने शुरू किये तो हज़रत ज़ेनब (रज़ि.) का थूक ख़ुश्क हो गया कोई जवाब न दे सकीं और हुज़ूर (ﷺ) के चेहरे से वह सदमा हट गया।'' (इब्ने माजा, किताबुन्निकाह, बाब हुस्न मुआशिरतन नसाइ : 1981; वहुव हसन; अहमद : 6/97; अल्अदबुल मुफ़रद : 558) अल्ग़ार्ज़ इख़्तिसार यह है कि मज़्लूम ज़ालिम को जवाब दे और अपना बदला ले ले। बज़्ज़ार में है कि ज़ालिम के लिए जिसने बद्दुआ की उसने बदला ले लिया। यही हदीस तिर्मिज़ी में है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मन दआ़ अ़ला मिन ज़ुल्मिही फ़क़द इंतसरा : 3552; और इसकी सनद ज़ईफ़ है मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा : 6/74; अख़बार अस्बिहान 2/89 इसकी सनद में अबू हम्ज़ा मैमून क़स्साब ज़ईफ़ रावी है।) लेकिन इसके रावी में कुछ कलाम है। फिर फ़र्माता है हर्ज व गुनाह उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करें ज़मीन में बिला वजह शर व फ़साद करें।

चुनाँचे सहीह हदीस में है ''दो बुरा कहने वाले जो कुछ कहें सबका बोझ शुरू करने वाले पर है। जब तक कि मज़्लूम बदले की हद से आगे न निकले। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब अन्नही अ़निस्सबाब : 2587; अबूदाऊद : 4894; तिर्मिज़ी : 1981; अहमद : 2/235; इब्ने हिब्बान : 5728; अल्अदबुल मुफ़रद : 423) ऐसे फ़सादी कियामत के दिन दर्दनाक अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाएँगे'' हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ़ (रह.) फ़र्माते हैं ''मैं मक्के में जाने लगा तो देखा कि ख़ंदक़ पर पुल बना हुआ है। मैं अभी वहीं था जो गिरफ़्तार कर लिया गया और अमीरे बसरा मरवान बिन महलब के पास पहुँचा दिया गया। उसने मुझसे कहा, अबू अ़ब्दुल्लाह! तुम क्या चाहते हो, मैंने कहा यही कि अगर तुमसे हो सके तो बनू अ़दी के भाई जैसे बन जाओ। पूछा वह कौन है? कहा अ़लाअ़ बिन ज़ियाद कि अपने एक दोस्त को एक बार किसी सेग़ा पर आमिल बनाया तो उन्होंने उसे लिखा कि हम्दो सलात के बाद अगर तुझसे हो सके तो यह करना कि तेरी कमर बोझ से ख़ाली रहे तेरा पेट हराम से बच जाए, तेरे हाथ मुसलमानों के ख़ून व माल से आलूदा न हों। तू जब यह करेग तो तुझ पर कोई गुनाह की राह बाक़ी न रहेगी। यह राह तो उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करें और बेवजह नाहक़ ज़मीन में फ़साद फैलाएँ। मरवान ने कहा अल्लाह जानता है उसने सच कहा और ख़ैरख़्वाही की बात कही अच्छा! अब क्या आरज़ू है? फ़र्माया, यही कि तुम मुझे मेरे घर पहुँचा दो। मरवान ने कहा बहुत अच्छा''

(इब्ने अबी ह़ातिम) पस ज़ुल्म व अहले ज़ुल्म की मज़म्मत बयान करके बदले की इजाज़त देकर अब अफ़ज़लियत की त़रफ़ रग़बत देते हुए फ़र्माता है कि जो ईज़ा सह ले और बुराई से दरगुज़र कर ले उसने बड़ी बहादुरी का काम किया है। जिस पर वह बड़े सवाब और पूरे बदले का मुस्तह़िक़ है। ह़ज़रत फ़ुज़ैल बिन अ़याज़ (रह़.) का फ़र्मान है कि जब तुमसे आकर कोई शख़्स किसी और की शिकायत करे तो उसे तल्क़ीन करो कि भाई माफ़ कर दो। माफ़ी में ही बेहतरी है और यही परहेज़गारी का सबूत है। अगर वह न माने और अपने दिल की कमज़ोरी का इज़्हार करे तो ख़ैर कह दो कि जाओ बदला ले लो लेकिन उस सूरत में कि फिर कहीं तुम बढ़ न जाओ वरना हम तो अब भी यही कहेंगे कि माफ़ कर दो यह दरवाज़ा बहुत वुस्अ़त वाला है और बदले की राह बहुत तंग है। सुनो! माफ़ कर देने वाला तो बाआराम मीठी नींद सो जाता है और बदले की धुन वाला दिन रात मुतफ़क्किर रहता है और तोड़ जोड़ सोचता है। मुस्नदे अह़मद में है कि एक शख़्स ने ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को बुरा भला कहना शुरू किया। हुज़ूर (ﷺ) भी वहीं तशरीफ़ फ़र्मा थे आप मुस्कुराने लगे। ह़ज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ख़ामोश थे लेकिन जब उसने बहुत गालियाँ दीं तो आपने भी कुछ का जवाब दिया इस पर हुज़ूर (ﷺ) नाराज़ होकर वहाँ से चल दिये। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से न रहा गया आप (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह मुझे बुरा कहता रहा तो आप बैठे रहे, सुनते रहे और जब मैंने उसकी दो एक बातों का जवाब दिया तो आप नाराज़ होकर उठ चले? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, सुनो! जब तक तुम ख़ामोश थे फ़रिश्ता तुम्हारी त़रफ़ से जवाब देता था जब तुम ख़ुद बोलने लगे तो फ़रिश्ता हट गया और शैत़ान बीच में आ गया। फिर भला मैं शैत़ान की मौजूदगी में कैसे बैठा रहता? फिर फ़र्माया, सुनो अबूबक्र! तीन चीज़ें बिलकुल बरह़क़ हैं जिस पर कोई ज़ुल्म किया जाए और वह उससे चश्मपोशी करे तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला उसे इ़ज़्ज़त देगा और उसकी मदद करेगा जो शख़्स सुलूक व एह़सान का दरवाज़ा खोलेगा और सिला रह़मी के इरादे से लोगों को देता रहेगा अल्लाह तआ़ला उसे बरकत देगा और ज़्यादती अ़त़ा करेगा। और जो शख़्स बढ़ाने के लिए सवाल का दरवाज़ा खोलेगा उससे, इससे माँगता फिरेगा अल्लाह तआ़ला उसके यहाँ बेबरकती कर देगा और कमी में ही मुब्तला रखेगा।'' (अह़मद : 2/436; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िलइंतिसार : 4896; वहुव ह़सन) यह रिवायत अबूदाऊद में भी है और मज़्मून के ऐतिबार से यह बड़ी प्यारी ह़दीस है।

***

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿۴۴﴾ وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۗ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : ''जिसे अल्लाह तआला बहका दे उसका उसके बाद कोई चारासाज़ नहीं। तू देखेगा कि ज़ालिम लोग अज़ाबों को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापिस जाने की कोई राह है? (44) और तू उन्हें देखेगा कि वह जहन्नम के सामने ला खड़े किये जाएँगे मारे ज़िल्लत के कुबड़े हुए जाते होंगे और झुकी हुई आँख के गोशे से देख रहे होंगे। ईमान वाले साफ़ कहेंगे कि हक़ीक़ी ज़ियाँकार वह हैं जिन्होंने आज क़ियामत के दिन अपने आपको और अपने घरवालों के तईं नुक़्सान में डाल दिया। याद रखो कि यक़ीनन ज़ालिम लोग दाइमी अज़ाब में हैं। (45) उनके कोई मददगार नहीं जो अल्लाह तआला से अलग उनकी इम्दाद कर सकें। जिसे अल्लाह तआला गुमराह कर दे उसके लिए कोई रास्ता ही नहीं।'' (46)

जहन्नम को देखकर ज़ालिमों की बदहवासी (आ. 44 से 46) : अल्लाह तआला बयान करता है कि वह जो चाहता है होता है उसे कोई रोक नहीं सकता और जो नहीं चाहता, नहीं होता, और न उसे कोई कर सकता है। वह जिसे चाहे राहे रास्त दिखा दे उसे कोई नहीं बहका सकता। और जगह फ़र्मान है (وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا) (18/कहफ़ : 17) जिसे वह गुमराह कर दे उसका कोई चारासाज़ और रहबर नहीं। फिर फ़र्माता है यह मुश्रिकीन क़ियामत के अज़ाबों को देखकर दोबारा दुनिया में आने की तमन्ना करेंगे। जैसे और जगह है (وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ) (6/अन्आम : 27) काश कि तू इन्हें देखता जबकि यह दोज़ख़ के पास खड़े किये जाएँगे और कहेंगे, हाय! क्या अच्छी बात हो कि हम दोबारा वापिस भेज दिये जाएँ तो हम हर्गिज़अपने रब की आयतों को झूठ न बतलाएँ बल्कि ईमान ले आएँ। सच तो यह है यह लोग जिस चीज़ को इससे पहले पोशीदा किये हुए थे वह इनके सामने आ गई। बात यह है कि अगर यह दोबारा भी भेज दिये जाएँ तब भी वही करेंगे जिससे मना किये जाते हैं यक़ीनन यह झूठे हैं। फिर फ़र्माया यह जहन्नम के पास लाए जाएँगे और अल्लाह तआला की नाफ़र्मानियों की वजह से इन पर ज़िल्लत बरस रही होगी। आजिज़ी से झुके हुए होंगे और नज़रें बचाकर जहन्नम को तक रहे होंगे। लेकिन जिससे डर रहे हैं उससे बच न सकेंगे। न सिर्फ़ इतना ही बल्कि उनके वहम व गुमान से भी ज़्यादा अज़ाब उन्हें होगा, अल्लाह तआला हमें महफ़ूज़ रखे, आमीन! उस वक़्त ईमान वाले लोग कहेंगे कि

हक़ीक़ी नुक़्सान उठाने वाले वह लोग हैं जिन्होंने अपने साथ अपने वालों को भी जहन्नम में डलवा दिया। यहाँ की आज की अबदी नेअ़मतों से महरूम रहे और उन्हें भी महरूम रखा। आज वह सब अलग अलग अ़ज़ाब में मुब्तला हैं। दाइमी अबदी और सर्मदी सज़ाएँ भुगत रहे हैं और यह नाउम्मीद हो जाएँ। आज कोई ऐसा नहीं जो उन अ़ज़ाबों से छुड़ा सके या तख़्फ़ीफ़ दिला सके। उन गुमराहों को ख़ुलासी देने वाला कोई नहीं।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ
مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿۴۷﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ
حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿۴۸﴾

तर्जुमा : "अपने रब का हुक्म मान लो इससे पहले कि वह अल्लाह का दिन आ जाए जिसका हट जाना नामुम्किन है तुम्हें उस दिन न तो कोई पनाह की जगह मिलेगी, न छुपकर अंजान बन जाने की। (47) अगर यह मुँह फेर लें तो हमने तुझे इन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। तेरे ज़िम्मे तो सिर्फ़ पैग़ाम का पहुँचा देना है। हम जब कभी इंसान को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखाते हैं तो वह उस पर इतरा जाता है। और अगर उन्हें उनके आमाल की वजह से कोई मुसीबत पहुँचती है तो बेशक इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है।" (48)

जहन्नम से बचाव की तदबीर (आ. 47, 48) : चूँकि ऊपर यह ज़िक्र गुज़र चुका है कि क़ियामत के दिन बड़े हेबतनाक वाक़ियात होंगे वह सख़्त मुसीबत का दिन होगा। तो अब यहाँ उससे डरा रहा है और उस दिन के लिए तैयार रहने को फ़र्माता है कि उस अचानक आ जाने वाले दिन से पहले ही पहले फ़र्माने इलाही पर पूरी तरह अ़मल कर लो। जब वह दिन आ जाएगा तो तुम्हें न तो कोई जाय पनाह मिलेगी, न ही ऐसी जगह कि वहाँ अंजान बनकर ऐसे छुप जाओ कि पहचाने न जाओ और न नज़र पड़े। फिर फ़र्माता है कि अगर यह मुश्रिक न मानें तो आप इन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजे गए हैं। इन्हें हिदायत पर ला खड़ा करना आपका ज़िम्मा नहीं। यह काम अल्लाह तआ़ला का है, आप पर सिर्फ़ तब्लीग़ है हिसाब हम ख़ुद ले लेंगे। इंसान की हालत यह है कि राहत में बदमस्त हो जाता है और तक्लीफ़ में नाशुक्रापन करता है। उस वक़्त अगली नेअ़मतों का भी मुंकिर बन जाता है। हदीस में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने औरतों से फ़र्माया, सदक़ा किया करो मैंने तुम्हें ज़्यादा तादाद में जहन्नम में देखा है।" किसी ने पूछा, यह किस वजह से, आप (स.) ने फ़र्माया, "तुम्हारी शिकायत की ज़्यादती और अपने शौहरों की नाफ़र्मानी की वजह से। अगर तू उनमें से किसी के साथ एक ज़माना तक

एह्सान करता रहे फिर एक दिन छोड़ दे तो कह देगी कि मैंने तो तुझमें कभी कोई राह़त देखी ही नहीं।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुन्निकाह़, बाब कुफ़रानुल अ़शीर : 5197; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 79) ह़क़ीक़त में अक्सर औरतों का यही ह़ाल है लेकिन जिस पर अल्लाह तआ़ला रह़म करे और नेकी की तौफ़ीक़ दे दे और ह़क़ीक़ी ईमान नसीब करे फिर तो उसका यह ह़ाल होता है कि हर राह़त पर शुक्र हर रंज पर स़ब्र। पस हर ह़ाल में नेकी ह़ासिल करती है और यह वस्फ़ सिवा मोमिन के किसी और में नहीं होता।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ
لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ
يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۵۱﴾ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَاۤ
اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ
جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ
تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

तर्जुमा : '' आसमानों की और ज़मीन की सल्तनत अल्लाह तआ़ला ही के लिए है वह जो चाहता है पैदा करता है। जिसको चाहता है बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है बेटे देता है (49) या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियाँ भी और जिसे चाहे बाँझ कर देता है। वह बड़े इल्म वाला और कामिल क़ुदरत वाला है।'' (50) नामुम्किन है कि किसी बन्दे से अल्लाह तआ़ला कलाम करे मगर बत़ौरे वह़ी के या पर्दे के पीछे से या किसी फ़रिश्ते को भेजे और वह बहुक्मे इलाही जो वह चाहे वह़ी करे बेशक वह बुज़ुर्ग है ह़िक्मत वाला है। (51) और इसी त़रह़ हमने तेरी त़रफ़ अपने हुक्म से रूह़ को उतारा है। तू इससे पहले यह भी नहीं जानता था कि किताब

क्या चीज़ होती है? लेकिन हमने उसे नूर बनाकर उसके ज़रिये से अपने बन्दों में से जिसे चाहा हिदायत कर दी। बेशक तू राहे रास्त की रहबरी कर रहा है। (52) उस बारी तआला की राह की जिसकी मिल्कियत में है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है आगाह रहो सब काम अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौटते हैं।(53)

पूरी कायनात का तसर्रुफ़ अल्लाह के इख़्तियार में है (आ. 49 से 50) : फ़र्माता है कि ख़ालिक़ मालिक और मुतसर्रिफ़ ज़मीनो आसमान का सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है जो चाहता है होता है जो नहीं चाहता नहीं होता जिसे चाहे दे जिसे चाहे न दे, जो चाहे पैदा करे और बनाए जिसे चाहे सिर्फ़ लड़कियाँ दे जैसे हज़रत लूत (عليه السلام) और जिसे चाहे सिर्फ़ लड़के ही अता करता है जैसे हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) और जिसे चाहे लड़के लड़कियाँ सब कुछ देता है जैसे हज़रत मुहम्मद(ﷺ) और जिसे चाहे औलाद ही न दे जैसे हज़रत यह्या और हज़रत ईसा (عليه السلام)। पस यह चार क़िस्में हुईं लड़कियों वाले, लड़कों वाले, दोनों वाले और बाँझ (दोनों से खाली हाथ) वह अलीम है हर मुस्तह़िक़ को जानता है। क़ादिर है जिस तरह का चाहे तफ़ावुत रखता है। पस यह मक़ाम भी मिस्ल उस फ़र्माने इलाही के है जो हज़रत ईसा (عليه السلام) के बारे में है कि ताकि हम उसे लोगों के लिए निशान यानी दलीले क़ुदरत बनाएँ और दिखा दें कि हमने मख़्लूक़ को चार तौर पर पैदा किया है। हज़रत आदम (عليه السلام) सिर्फ़ मिट्टी से पैदा हुए न माँ न बाप। हज़रत हव्वा (عليها السلام) सिर्फ़ मर्द से पैदा हुईं। बाक़ी कुल इंसान मर्द औरत दोनों से सिवा हज़रत ईसा (عليه السلام) के कि वह सिर्फ़ औरत से बग़ैर मर्द के पैदा किये गए। पस आपकी पैदाइश से यह चारों क़िस्में पूरी हो गईं। पस यह मक़ाम माँ बाप के बारे में था और वह मक़ाम औलाद के बारे में, इसकी भी चार क़िस्में और इसकी भी चार क़िस्में। सुब्हानल्लाह यह है उस अल्लाह तआला के इल्म व क़ुदरत की निशानी।

वह़ी की मुख़्तलिफ़ सूरतें (आ. 51 से 53) : मक़ामात व मरातिब व कैफ़ियाते वह़ी का बयान हो रहा है कि कभी तो हुज़ूर (ﷺ) के दिल में वह़ी डाल दी जाती है जिसके वह़ी इलाही होने में आप (ﷺ) को कोई शक नहीं रहता। जैसे सह़ीह़ इब्ने ह़िब्बान की ह़दीस में है कि रूहुल क़ुदूस ने मेरे दिल में यह बात फूँकी है कि कोई शख़्स भी जब तक अपनी रोज़ी और अपना वक़्त पूरा न करे हर्गिज़ नहीं मरता। पस अल्लाह तआला से डरो और रोज़ी की तलब में अच्छाई इख़्तियार करो। (ह़ाकिम : 2/4; लम अजिदहू इन्द इब्ने ह़िब्बान व रवाहुल बग़वी फ़ी शरह़िस्सुन्ना : 4112; वल क़ज़ाई फ़ी मुस्नदे शिहाब : 1151; और इसकी सनद ज़ईफ़ व लिल्ह़दीसि शवाहिद ज़ईफ़तुन इन्दल ह़ाकिम 2/4 व ग़ैरुहू) या पर्दे की ओट से जैसे हज़रत मूसा (عليه السلام) से बातचीत हुई। क्योंकि उन्होंने कलाम सुनकर जमाल देखना चाहा लेकिन वह पर्दे में था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से फ़र्माया था कि ''अल्लाह तआला ने किसी से कलाम नहीं किया मगर पर्दे के पीछे से लेकिन तेरे बाप से आमने सामने कलाम किया।'' (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति आले इमरान : 3010; और इसकी सनद ह़सन है; इब्ने माजा : 190) यह जंगे उहुद मे

कुफ़्फ़ार के हाथों से शहीद हो गए थे। लेकिन यह याद रहे कि यह कलाम आलमे बरज़ख़ का है और जिस कलाम का ज़िक्र है उससे मुराद दारे दुनिया का कलाम है या अपने क़ासिद को भेजकर अपनी बात उस तक पहुँचाए जैसे हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) वग़ैरह फ़रिश्ते रसूलों के पास आते रहे। वह उलू और बुलंदी और बुज़ुर्गी वाला है। साथ ही हकीम और हिक्मत वाला है। रूह से मुराद कुरआन है फ़र्माता है कि इस कुरआन को बज़रिये वही के हमने तेरी तरफ़ उतारा है। किताब और ईमान को इस तफ़सील के साथ जो हमने अपनी किताब में की है तू इससे पहले जानता भी न था लेकिन हमने इस कुरआन को नूर बनाया है। ताकि इसके ज़रिये से हम अपने ईमान वाले बन्दों को राहे रास्त दिखलाएँ जैसे और आयत में है (قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا) (41/हामीम सज्दा : 44) कह दे कि यह ईमान वालों के वास्ते हिदायत व शिफ़ा है। और बेईमानों के कान बहरे और आँखें अँधी हैं। फिर फ़र्माया कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम सरीह और मज़बूत हक़ की रहनुमाई कर रहे हो। फिर सिराते मुस्तक़ीम की तशरीह की और फ़र्माया इसे शरअ मुक़र्रर करने वाला ख़ुद अल्लाह तआला है जिसकी शान यह है कि आसमानों ज़मीनों का मालिक और अल्लाह तआला वही है। उनमें तसर्रुफ़ करने वाला और हुक्म चलाने वाला भी वही है कोई उसके किसी हुक्म को टाल नहीं सकता। तमाम उमूर उसकी तरफ़ फेरे जाते हैं वही सब कामों के फ़ैसले करता है और हुक्म करता है। वह पाक और बरतर है हर उस चीज़ से जो उसकी निस्बत ज़ालिम और मुंकिरीन कहते हैं। वह बुलंदियों और बड़ाईयों वाला है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह शूरा की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह ज़ुख़रूफ़ - 43

आयात : 89 मक्की पैराग्राफ : 9

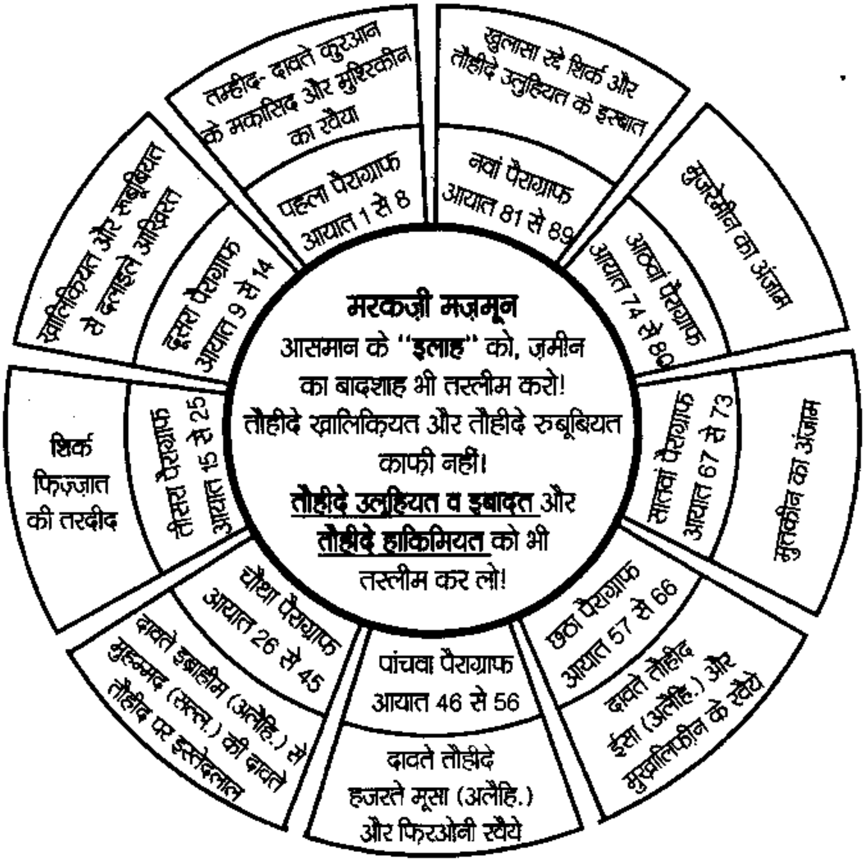

तफ़्सीर सूरह ज़ुख़रुफ़

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

حٰمٓ ① وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ② اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ③ وَاِنَّهٗ فِىۡۤ
اُمِّ الۡكِتٰبِ لَدَيۡنَا لَعَلِىٌّ حَكِيۡمٌ ④ اَفَنَضۡرِبُ عَنۡكُمُ الذِّكۡرَ صَفۡحًا اَنۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا
مُّسۡرِفِيۡنَ ⑤ وَكَمۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ نَّبِىٍّ فِى الۡاَوَّلِيۡنَ ⑥ وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ نَّبِىٍّ اِلَّا كَانُوۡا
بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ⑦ فَاَهۡلَكۡنَاۤ اَشَدَّ مِنۡهُمۡ بَطۡشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الۡاَوَّلِيۡنَ ⑧

तर्जुमा : "हामीम! (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की। (2) हमने अरबी ज़ुबान का क़ुरआन नाज़िल किया है कि तुम समझ लो। (3) यक़ीनन यह लोहे महफ़ूज़ में है और हमारे नज़दीक बुलंद मर्तबा हिक्मत वाली है। (4) क्या हम इस नसीहत को तुमसे इस बिना पर हटा लें कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (5) और हमने अगले लोगों में भी बहुत से नबी भेजे। (6) जो नबी उनके पास आया उन्होंने उसे हँसी मज़ाक़ में उड़ाया। (7) पस हमने उनके ज़्यादा ज़ोरावरों को तबाह कर डाला और अगलों की हक़ीक़त गुज़र चुकी है।"(8)

क़ुरआन की नूरानियत और अज़मत (आ. 1 से 8) : क़ुरआन की क़सम खाई जो वाज़ेह है जिसके मआनी रोशन हैं जिसके अल्फ़ाज़ नूरानी हैं जो सबसे ज़्यादा फ़सीह व बलीग़ ज़ुबान अरबी में नाज़िल हुआ है। यह इसलिए कि लोग सोचें समझें और वअ़ज़ व पंद नसीहत व इब्रत हासिल करें। हमने इस क़ुरआन को अरबी ज़ुबान में नाज़िल किया है। जैसे और जगह है वाज़ेह अरबी ज़ुबान में इसे नाज़िल किया है। इसकी शराफ़त व मर्तबत जो आलमे बाला में है उसे बयान करता है कि ज़मीन वाले इसकी मंज़िलत व तौक़ीर मालूम कर लें। फ़र्माया कि यह लोहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है (लदैना) से मुराद हमारे पास (लअ़ल्लियुन) से मुराद मर्तबे वाला इज़्ज़त वाला शराफ़त और फ़ज़ीलत वाला है (हकीमुन) से मुराद मुहकम मज़बूत जो बातिल के मिलने और नाहक़ से ख़लत मलत हो जाने से पाक है और आयत में इस पाक कलाम की बुज़ुर्गी का बयान इन अल्फ़ाज़ में है (اِنَّهٗ لَقُرۡاٰنٌ كَرِيۡمٌ) (56/वाक़िया : 77) और जगह है (كَلَّاۤ اِنَّهَا تَذۡكِرَةٌ) (80/अबस :

11) यानी यह क़ुरआने करीम लोहे मह़फ़ूज़ में दर्ज है इसे सिवा पाक फ़रिश्तों के और कोई हाथ लगाने नहीं पाता। यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से उतरा हुआ है।

और फ़र्माया क़ुरआन नसीह़त की चीज़ है जिसका जी चाहे इसे क़ुबूल करे। वह ऐसे स़ह़ीफ़ों में है जो मुअ़ज़्ज़ज़ हैं बुलंद मर्तबा हैं और मुक़द्दस हैं जो ऐसे लिखने वालों के हाथों में हैं जो ज़ी इ़ज़्ज़त और पाक हैं। इन दोनों आयतों से उ़लमा ने इस्तिम्बात़ किया है कि बेवुज़ू क़ुरआन को हाथ में नहीं लेना चाहिए जैसे कि एक ह़दीस में भी आया है (ह़दीसि ला युमस्सुल क़ुर्आनु इल्ला त़ाहिरुन) की त़रफ़ इशारा है और यह रिवायत मौत़ा इमाम मालिक : 1/199 वहुव ह़दीसुन ह़सन में मौजूद है इसकी तख़रीज सूरह वाक़िया आयत 75 के तह़त आ रही है।) बशर्ते कि वह स़ह़ीह़ साबित हो जाए। इसलिए कि आ़लमे बाला में फ़रिश्ते इस किताब की इ़ज़्ज़त व ता'ज़ीम करते हैं। जिसमें यह क़ुरआन लिखा हुआ है। पस इस आ़लम में हमें बत़ौरे औला इसकी बहुत ज़्यादा ता'ज़ीम व तक्रीम करनी चाहिए। क्योंकि यह ज़मीन वालों की त़रफ़ ही भेजा गया है और इसका ख़ित़ाब उन ही से है तो उन्हें इसकी बहुत ज़्यादा ता'ज़ीम और अदब करना चाहिए और साथ ही इसके अह़काम को तस्लीम करके उन पर आ़मिल बन जाना चाहिए क्योंकि रब्बे तआ़ला का फ़र्मान है कि यह हमारे यहाँ उम्मुल किताब में है और बुलंद पाया और बाह़िक्मत है। उसके बाद की आयत के एक मअ़नी तो यह किये गए हैं कि क्या तुमने यह समझ रखा है कि बावजूद इत़ाअ़त गुज़ारी और फ़र्मांबरदारी न करने के हम तुमको छोड़ देंगे और तुम्हें अ़ज़ाब न करेंगे।

दूसरे मअ़नी यह हैं कि इस उम्मत के अगलों ने जब इस क़ुरआन को झुठलाया उसी वक़्त अगर यह उठा लिया जाता तो तमाम दुनिया हलाक कर दी जाती। लेकिन अल्लाह तआ़ला की वसीअ़ रह़मत ने पसंद न किया और बराबर बीस साल से ज़्यादा तक यह क़ुरआन उतरता रहा। इस क़ौल का मत़लब यह है कि यह अल्लाह तआ़ला की लुत़्फ़ो रह़मत है कि वह न मानने वालों के इंकार और बद बात़िन लोगों की शरारत की वजह से उन्हें नसीह़त व मौइ़ज़त करनी नहीं छोड़ता ताकि जो उनमें नेकी वाले हैं वह दुरुस्त हो जाएँ और जो दुरुस्त नहीं होते उन पर हुज्जत तमाम हो जाए। फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने नबी अकरम ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को तसल्ली देता है और फ़र्माता है कि आप अपनी क़ौम की तक्ज़ीब पर न घबराएँ स़ब्रो सिहार करें। इनसे पहले की जो क़ौमें थीं उनके पास हमने अपने रसूल व नबी भेजे थे और सबने ही अपने अपने नबियों से तमस्ख़ुर किया। फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। वह आप (ﷺ) के ज़माने के लोगों से ज़्यादा ज़ोरावर बाहिम्मत और दराज़ दस्त थे जैसे और आयत में है क्या इन्होंने ज़मीन में चल फिरकर नहीं देखा कि इनसे अगले लोगों का क्या अंजाम हुआ? जो इनसे तादाद में और क़ुव्वत में बहुत ज़्यादा बढ़े हुए थे। और भी आयतें इस मज़्मून की बहुत सी हैं। फिर फ़र्माता है अगलों की मिसालें गुज़र चुकीं यानी आ़दतें सज़ाएँ इ़ब्रतें। जैसे इस सूरह के आख़िर में फ़र्माया है कि हमने उन्हें गुज़रे हुए और बाद वालों के लिए इ़ब्रतें बना दिये और जैसे फ़र्मान है (سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِیْ) (40/मोमिन : 85) यानी अल्लाह तआ़ला का त़रीक़ा जो अपने बन्दों में पहले से चला आया है और तू उसे बदलता हुआ न पाएगा।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ
⑨ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ
⑩ وَالَّذِىْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذٰلِكَ
تُخْرَجُوْنَ ⑪ وَالَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ
مَا تَرْكَبُوْنَ ⑫ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ
عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ⑬ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا
لَمُنْقَلِبُوْنَ ⑭

तर्जुमा : ''अगर तू इनसे पूछे कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया? तो यक़ीनन इनका यही जवाब होगा कि इन्हें ग़ालिब व दाना अल्लाह तआला ने ही पैदा किया। (9) वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और बिछौना बनाया और इसमें तुम्हारे लिए रास्ते कर दिये ताकि तुम राह पा लिया करो। (10) उसी ने आसमान से एक अंदाज़ के मुताबिक़ पानी नाज़िल किया उसने मुर्दा शहर को ज़िन्दा किया। इसी तरह तुम निकाले जाओगे। (11) जिसने तमाम चीज़ों के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए कश्तियाँ बनाईं और तुम्हारी सवारी के लिए चौपाये जानवर पैदा किये। (12) ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर सवार हुआ करो फिर अपने रब्बे तआला की नेअमत को याद करो जब ठीक ठाक बैठ जाओ और कहो पाक ज़ात है उस अल्लाह की जिसने इसे हमारे बस में कर दिया बावजूद यह कि हमें इसे क़ाबू में करने की ताक़त न थी। (13) और बिल्यक़ीन हम अपने रब्बे तआला की तरफ़ लौटर जाने वाले हैं।'' (14)

ख़ालिक़े हक़ीक़ी अल्लाह तआला ही है (आ. 9 से 14) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! अगर तुम इन मुश्रिकीन से पूछोगे तो यह लोग इस बात का इक़रार करेंगे कि ज़मीन व आसमान का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है उसकी वहदानियत को जानते और मानते उसकी इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं जिसने ज़मीन को फ़र्श और क़रारगाह ठहरी हुई और साबित व मज़बूत बनाई जिस पर तुम चलो फिरो रहो

सहो उठो बैठो सोओ जागो हालाँकि यह ज़मीन ख़ुद पानी पर है। लेकिन मज़बूत पहाड़ों के साथ इसे हिलने डुलने से रोक दिया गया है और इसमें रास्ते बना दिये हैं ताकि तुम एक शहर से दूसरे शहर को एक मुल्क से दूसरे मुल्क को पहुँच सको। उसी ने आसमान से ऐसे अंदाज़ से बारिश बरसाई जो किफ़ायत हो जाए खेतियाँ और बाग़ात सरसब्ज़ रहें फलें फूलें और पानी तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के पीने में भी काम आए। फिर उस बारिश में से मुर्दा ज़मीन ज़िन्दा कर दी ख़ुश्की तरी से तब्दील हो गई जंगल लहलहा उठे फल फूल उगने लगे और तरह तरह के ख़ुशगवार मेवे पैदा हो गए। फिर उसे दलील बनाई मुर्दा इंसानों के जी उठने की और फ़र्माया, इसी तरह तुम क़ब्रों से उठाये जाओगे। उसने हर क़िस्म के जोड़े पैदा किये। खेतियाँ फल फूल तरकारियाँ और मेवे वग़ैरह तरह तरह की चीज़ें उसने पैदा कर दीं। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हैवानात तुम्हारे नफ़े के लिए पैदा किये। कश्तियाँ समुन्द्रों के सफ़र को, चौपाये जानवर, ख़ुश्की के सफ़र को मुहय्या कर दिये उनमें से बहुत से जानवरों के गोश्त तुम खाते हो बहुत से तुम्हें दूध देते हैं, बहुत से तुम्हारी सवारियों में काम आते हैं, तुम्हारे बोझ ढोते हैं, तुम उन पर सवारियाँ करते हो और ख़ूब मज़े से उन पर सवार होते हो। अब तुम्हें चाहिए कि जमकर बैठ जाने के बाद अपने रब्बे तआला की नेअमत याद करो कि उसने कैसे कैसे ताक़तवर वुजूद तुम्हारे क़ाबू में कर दिये और यूँ कहो कि वह अल्लाह तआला पाक ज़ात वाला है जिसने इसे हमारे क़ाबू में कर दिया अगर वह इसे हमारा मुतीअ न करता तो हम इस क़ाबिल न थे, न हममें इतनी ताक़त थी और हम अपनी मौत के बाद उसी की तरफ़ जाने वाले हैं। इस आने जाने से और इस मुख़्तसर सफ़र से सफ़रे आख़िरत याद करो। जैसे कि दुनिया के तोशे का ज़िक्र करके अल्लाह तआला ने आख़िरत के तोशे की जानिब तवज्जह दिलाई और फ़र्माया, तोशा ले लिया करो लेकिन बेहतरीन तोशा आख़िरत का तोशा है और दुनियावी लिबास के ज़िक्र के मौक़े पर आख़िरत के लिबास की तरफ़ ध्यान दिलाया और फ़र्माया तक़्वे का लिबास अफ़ज़ल व बेहतर है।

सवार होने की दुआ : सवारी पर सवार होने के वक़्त की दुआओं की हदीसें। हज़रत अली बिन रबीआ (रह.) फ़र्माते हैं हज़रत अली (रज़ि.) जब अपनी सवारी पर सवार होने लगे तो रकाब में पैर रखते ही फ़र्माया (बिस्मिल्लाह) जब जमकर बैठ गए तो फ़र्माया (अल्हम्दु लिल्लाहि सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़रा लना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुंक़लिबून) फिर तीन बार (अल्हम्दु लिल्लाह) कहा और तीन बार (अल्लाहु अकबर) कहा। फिर फ़र्माया (सुब्हानका ला इलाहा इल्ला अन्ता क़द ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर-ली) फिर हँस दिये। मैंने पूछा, अमीरुल मोमिनीन! आप हँसे क्यूँ? फ़र्माया, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यही सवाल किया। आपने जवाब दिया कि जब बन्दे के मुँह से अल्लाह तआला सुनता है कि वह कहता है रब्बिग़्फ़िर ली मेरे रब्बे तआला! मुझे बख़्श दे तो वह बहुत ही ख़ुश होता है और फ़र्माता है मेरा बन्दा जानता है कि मेरे सिवा कोई गुनाहों को बख़्श नहीं सकता। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब मा यक़ूलुर्रजुल इज़ा रकिबा : 2602; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3446; अहमद : 1/97; इब्ने हिब्बान : 2698)

यह हदीस अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई और मुस्नदे अहमद में भी है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह बतलाते हैं। और हदीस में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) को

अपनी सवारी पर अपने पीछे बिठाया। ठीक जब बैठ गए तो आप (ﷺ) ने तीन बार (अल्लाहु अकबर) कहा और तीन बार (अल्हम्दु लिल्लाह) कहा और तीन बार (सुब्हानल्लाह) कहा और एक मर्तबा (ला इलाहा इल्लल्लाह) कहा फिर उस पर चित्त लेटने की तरह होकर हँस दिये और हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे जो शख़्स किसी जानवर पर सवार होकर उस तरह जिस तरह मैंने किया करे तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल उसकी तरफ़ मुतवज्जह होकर उसी तरह हँस देता है जिस तरह मैं तेरी तरफ़ देखकर हँसा।'' (अहमद : 1/330; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इसकी सनद में अबूबक्र अब्दुल्लाह बिन अबी मरयम ग़स्सानी ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 4/497; रक़म : 10006) नीज़ अली बिन अबी तलहा का इब्ने अब्बास (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''नबी (ﷺ) जब कभी अपनी सवारी पर सवार होते तो तीन बार तक्बीर कहकर इन दोनों आयाते कुरआनी की तिलावत करते फिर यह दुआ माँगते (अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका फ़ी सफ़री हाज़ल बिर्र वत्तक़्वा वमिनल अमलि मा तर्ज़ा अल्लाहुम्मा हव्विन अलैनस्सफ़रा व अत्विलनल बुअदा अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फ़िस्सफ़रि वल ख़लीफ़तु फ़िल अहलि अल्लाहुम्मस्हब्ना फ़ी सफ़रिना वख़्लुफ़्ना फ़ी अहलिना) या अल्लाह! मैं तुझसे अपने इस सफ़र में नेकी और परहेज़गारी का तालिब हूँ और उन आमाल का जिनसे तू ख़ुश हो जाए ऐ अल्लाह! हम पर हमारा सफ़र आसान कर दे और हमारे लिए दूरी को लपेट ले। परवरदिगार! तू ही सफ़र का साथी और अहलो अयाल का निगहबान है, मेरे मअबूद! हमारे सफ़र में हमारा साथ दे और हमारे घरों में हमारा जानशीनी फ़र्मा। और जब सफ़र से आप (ﷺ) वापिस घर की तरफ़ लौटते तो कहते (आसिबूना ताइबूना इंशाअल्लाहु आबिदूना लि रब्बिना हामिदून) यानी वापिस लौटने वाले तौबा करने वाले। इंशाअल्लाह इबादतें करने वाले अपने रब की ता'रीफ़ें करने वाले।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाब इस्तिहबाबुज़्ज़िक्र इज़ा रकिब दाब्बतहू... : 1342; अबूदाऊद : 2599; इब्ने हिब्बान : 2696) अबू लास ख़ुज़ाई (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि ''सदक़ा के ऊँटों में से एक ऊँट रसूलुल्लह (ﷺ) ने हमारी सवारी के लिए हमें अता किया कि हम उस पर सवार होकर हज्ज को जाएँ। हमने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम नहीं देखते कि आप हमें उस पर सवार कराएँ। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हर ऊँट की कोहान में शैतान होता है तुम जब इस पर सवार हो तो जिस तरह मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ अल्लाह तआला का नाम याद करो फिर उसे अपने लिए ख़ादिम बना लो। याद रखो अल्लाह तआला ही सवार कराता है।'' (अहमद : 4/221; और इसकी सनद हसन है; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/131) हज़रत अबू लास का नाम मुहम्मद बिन अस्वद बिन ख़ल्फ़ है (रज़ि.)। मुस्नद की एक और हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं हर ऊँट की पीठ पर शैतान है तो तुम जब उस पर सवारी करो तो अल्लह तआला का नाम लिया करो फिर अपनी हाजतों में कमी न करो।'' (अहमद : 3/494; और इसकी सनद हसन है; दारमी : 2/285; इब्ने हिब्बान : 1703; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/131)

وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ
بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ
مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ مَا لَهُمْ
بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : ''इन्होंने अल्लाह तआ़ला के कुछ ग़ुलामों को उसका साझेदार ठहरा दिया। यक़ीनन इंसान खुल्लम खुल्ला नाशुक्रा है। (15) क्या अल्लाह तआ़ला ने अपनी मख़्लूक़ में से बेटियाँ तो ख़ुद रख लीं और तुम्हें बेटों से नवाज़ दिया। (16) उनमें से किसी को जब उस चीज़ की ख़बर दी जाए, जिसकी मिसाल उसने अल्लाह रहमान के लिए बयान की है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और ग़मगीन हो जाता है। (17) क्या (अल्लाह की औलाद लड़कियाँ हैं?) जो ज़ेवरात की नुमाइश में पलीं और झगड़े में ज़ाहिर न हो सकीं? (18) इन्होंने अल्लाह रहमान के इबादत गुज़ार फ़रिश्तों को औरतें क़रार दे दिया। क्या उनकी पैदाइश के मौक़े पर यह मौजूद थे। इनकी यह गवाही लिख ली जाएगी और इनसे उस चीज़ की पूछताछ की जाएगी। (19) कहते हैं अगर अल्लाह तआ़ला चाहता तो हम इनकी इबादत न करते। इन्हें उसकी कुछ ख़बर नहीं। यह तो सिर्फ़ अटकल पच्चू झूठ बातें कहते हैं।'' (20)

मुश्रिकों की ख़ुद साख़्ता तक़्सीम (आ. 15 से 20) : अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों के इस इफ़्तिरा और किज़्ब का बयान फ़र्माता है जो इन्होंने अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे बाँध रखा है। जिसका ज़िक्र सूरह अन्आम की आयत (وَجَعَلُوا لِلّٰهِ) (6/अन्आम : 136) में है यानी अल्लाह तआ़ला ने जो खेती और मवेशी पैदा किये हैं इन मुश्रिकीन ने उनमें से कुछ हिस़्सा तो अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया और अपने तौर पर कह दिया कि यह तो अल्लाह तआ़ला का है और यह हमारे मअबूदों का। अब जो इनके मअबूदों के नाम का है वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ नहीं पहुँचता और जो चीज़ अल्लाह तआ़ला की होती है वह इनके

मअबूदों को पहुँच जाती है। कैसी बुरी इनकी यह तज्वीज़ है? इसी तरह मुश्रिकीन ने लड़के लड़कियों की तक़्सीम करके लड़कियाँ तो अल्लाह तआला के लिए साबित कीं जो उनके ख़्याल में ज़लीलो ख़्वार थीं और लड़के अ पने लिए पसंद किये।

जैसे कि बारी तआला का फ़र्मान है (أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۝ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ) (53/नज्म : 21, 22) क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हों और अल्लाह तआला के लिए बेटियाँ? यह तो बड़ी बेढंगी तक़्सीम है। पस यहाँ भी फ़र्माता है कि इन मुश्रिकीन ने अल्लाह तआला के बन्दों को अल्लाह तआला का जुज़ क़रार दे लिया है।

फिर फ़र्माता है कि इनकी इस बदतमीज़ी को देखो कि जब यह लड़कियों को ख़ुद अपने लिए नापसंद करें फिर अल्लाह तआला के लिए कैसे पसंद करते हैं? इनकी यह हालत है कि जब इनमें से किसी को यह ख़बर पहुँचती है कि तेरे यहाँ लड़की पैदा हुई तो मुँह बिसोर लेता है गोया एक शर्मनाक अंदोहनाक ख़बर सुन ली किसी से ज़िक्र तक नहीं करता अंदर ही अंदर घुटता रहता है। ज़रा सा मुँह निकल आता है लेकिन फिर अपनी हिमाक़त का मुज़ाहिरा करने बैठता है और कहता है कि अल्लाह तआला की लड़कियाँ हैं। यह ख़ूब मज़े की बात है कि ख़ुद जिस चीज़ से घबराएँ अल्लाह तआला के लिए वह साबित करें।

औरत की फ़ित्री कमज़ोरियाँ : फिर फ़र्माता है औरतें जो नाक़िस समझी जाती हैं जिनके नुक़्सानात की तलाफ़ी ज़ेवरात और आराइश से की जाती है और बचपन से मरते दम तक वह बनाव सिंगार की मोहताज समझी जाती है। फिर बहस मुबाहिसे और लड़ाई झगड़े के वक़्त उसकी ज़ुबान नहीं चलती, दलील नहीं दे सकती। आजिज़ रह जाती है मग़्लूब हो जाती है ऐसी चीज़ को जनाब बारी तआला अली व अज़ीम की तरफ़ मंसूब करते हैं जो ज़ाहिरी और बातिनी नुक़्सान अपने अंदर रखती है जिसके ज़ाहिरी नुक़्सान को ज़ीनत और ज़ेवरात से दूर करने की कोशिश की जाती है जैसे कि कुछ अरब शायरों के अश्आर हैं,

وما الحلى الا زينة من نقيصة ، يتمم من حسن اذا الحسن قصرا .

واما اذا كان الجمال موفرا، كحسنك لم يحتج الى ان يزورا

यानी ज़ेवरात कमी हुस्न को पूरा करने के लिए होते हैं। भरपूर जमाल को ज़ेवरात की क्या ज़रूरत? और बातिनी नुक़्सानात भी हैं जैसे बदला न ले सकना, न ज़ुबान से न हिम्मत से। इस मज़्मून को भी अरबों ने अदा किया है कि यह सिर्फ़ रोने धोने से ही मदद कर सकती है और चोरी छुपे कोई भलाई कर सकती है। फिर फ़र्माता है कि इन्हों ने फ़रिश्तों को औरतें समझ रखा है इनसे पूछो कि क्या जब वह पैदा किये गए तो तुम वहाँ मौजूद थे? तुम यह न समझो कि हम तुम्हारी इन बातों से बेख़बर हैं सब हमारे पास लिखी हुई हैं और क़ियामत के दिन तुमसे इनका सवाल भी होगा जिससे तुम्हें डरना चाहिए और होशियार रहना चाहिए। फिर इनकी मज़ीद

हिमाक़त बयान करता है कि कहते हैं कि हमने फ़रिश्तों को औरतें समझा फिर उनकी मूर्तियाँ बनाईं और फिर उन्हें पूज रहे हैं। अगर अल्लाह तआला चाहता तो हममें उनमें हाइल हो जाता और हम उन्हें न पूज सकते। पस जबकि हम उन्हें पूज रहे हैं और अल्लाह तआला हममें और उनमें हाइल नहीं होता तो ज़ाहिर है कि हमारी यह पूजा ग़लत नही बल्कि सहीह है। पस पहली ख़ता तो इनकी यह कि अल्लाह तआला के लिए औलाद साबित की। दूसरी ख़ता यह कि फ़रिश्तों को अल्लाह तआला की लड़कियाँ क़रार दीं। तीसरी ख़ता यह की कि उन्हीं की पूजा पाठ शुरू कर दी जिस पर कोई दलील व हुज्जत नहीं सिर्फ़ अपने बड़ों और अगलों और बाप दादों की अंधी तक़लीद है। चौथी ख़ता यह की कि उसे अल्लाह तआला की तरफ़ से मुक़र्रर माना और उससे यह नतीजा निकाला कि अगर अल्लाह तआला इससे नाख़ुश होता तो हमें इतनी ताक़त ही न देता कि हम इनकी परसतिश करें और यह इनकी सरीह जिहालत व ग़बावत है। अल्लाह तआला इससे सरासर नाख़ुश है। एक एक पैग़म्बर इसकी तर्दीद करता रहा। एक एक किताब इसकी बुराई बयान करती रही। जैसे फ़र्मान है (وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ) (16/नह्ल : 36) यानी हर उम्मत में हमने रसूल भेजा कि अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके सिवा दूसरे की इबादत से बचो। फिर कुछ तो ऐसे निकले जिन्हें अल्लाह तआला ने हिदायत की और कुछ ऐसे भी निकले जिन पर गुमराही की बात साबित हो चुकी। तुम ज़मीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का कैसा बुरा हश्र हुआ? और आयत में है (وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا) (43/ज़ुख़रुफ़ : 45) यानी तू इन रसूलों से पूछ ले जिन्हें हमने तुझसे पहले भेजा था। क्या हमने अपने सिवा दूसरों की पूजा करने की इजाज़त दी थी? फिर फ़र्माता है यह दलील तो इनकी बड़ी बूदी है यूँ है कि यह बेइल्म हैं बातें बना लेते हैं और झूठ बोल लेते हैं यानी यह अल्लाह तआला की उस पर क़ुदरत है उसे नहीं जानते।

***

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا
عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾ وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ
مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم
مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾ قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا
أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٤﴾ فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : "क्या हमने इन्हें इससे पहले कोई और किताब दी है जिसे यह मज़बूत थामे हुए हैं? (21) नहीं नहीं बल्कि यह तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादों को एक मज़हब पर पाया और हम उन ही के क़दमों पर राह याफ़्ता हैं। (22) इसी तरह तुझसे पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा वहाँ के आसूदा हाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हमने अपने बाप दादों को एक राह पर और एक दीन पर पाया और हम तो उन ही के नक़्शे क़दम की पैरवी करने वाले हैं। (23) नबी (ﷺ) ने कहा भी कि अगरचे मैं उससे बहुत ज़्यादा मक़्सूद तक पहुँचाने वाला तरीक़ा लेकर आया हूँ जिस पर तुमने अपने बाप दादों को पाया। तो उन्होंने जवाब दिया कि हम इसके मुंकिर हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है। (24) पस हमने उनसे इंतिक़ाम लिया और देख ले झुठलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ? (25)

बाप दादों के अंधे मुक़ल्लिद (आ. 21 से 25) : जो लोग अल्लाह तआला के सिवा किसी और की इबादत करते हैं उनका बेदलील होना बयान किया जा रहा है कि क्या हमने इनके इस शिर्क से पहले कोई किताब दे रखी है। जिससे वह सनद लाते हों यानी हक़ीक़त में ऐसा नहीं जैसे फ़र्माया। (أَمْ أَنزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا)(30/रूम : 35) यानी क्या हमने इन पर ऐसी सुल्तान (दलील)उतारी है जो इनसे शिर्क को कहे? यानी ऐसा नहीं है। फिर फ़र्माता है यह तो नहीं बल्कि शिर्क की सनद इनके पास एक और सिर्फ़ एक है और वह अपने बाप दादों की तक़्लीद कि वह जिस दीन पर थे उसी पर हम हैं और रहेंगे। उम्मत से मुराद यहाँ दीन है। और आयत (كَذَٰلِكَ مَا أَتَى الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّن رَّسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ) (51/ज़ारियात : 52) यानी इनसे अगलों के पास भी जो रसूल आए उनकी उम्मतों ने उन्हें भी जादूगर और दीवाना बतलाया। पस गोया कि अगले पिछलों के मुँह में यह अल्फ़ाज़ भर गए हैं हक़ीक़त यह है कि सरकशी में यह सब यक्साँ हैं। फिर इर्शाद होता है कि गोया यह मालूम कर लें और जान लें कि नबियों की ता'लीम बाप दादों की तक़्लीद से बदर्जहा बेहतर है। ताहम इनका बुरा क़सद और ज़िद्द और हठधर्मी इन्हें हक़ की क़बूलियत की तरफ़ नहीं आने देती। पस ऐसे अड़ियल लोगों से हम भी इनकी बातिल परस्ती का इंतिक़ाम नहीं छोड़ते। मुख़्तलिफ़ सूरतों से इन्हें तहो बाला कर दिया करते हैं। इनके क़िस्से मज़्कूर व मशहूर हैं ग़ौरो ताम्मुल के साथ देख पढ़ लो और सोच समझ लो कि किस तरह कुफ़्फ़ार बर्बाद किये जाते हैं और किस तरह मोमिन नजात पाते हैं।

***

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي

فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾ بَلْ

مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾ وَلَمَّا جَآءَهُمُ
الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى
رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ
مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ
بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ
النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ
وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿٣٤﴾
وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''जबकि इब्राहीम (ﷺ) ने अपने वालिद से और अपनी क़ौम से फ़रमाया कि मैं उन चीज़ों से बेज़ार हूँ जिनकी तुम इबादत करते हो।(25) सिवा उस अल्लाह तआला के जिसने मुझे पैदा किया है और वही मुझे हिदायत भी करेगा। (27) इब्राहीम (ﷺ) उसी को अपनी औलाद में भी बाक़ी रहने वाली बात पर क़ायम कर गए ताकि लोग बाज़ आते रहें। (28) बल्कि मैंने उन लोगों को और उनके बाप दादों को सामान और अस्बाब दिया यहाँ तक कि उनके पास हक़ और साफ़ साफ़ सुनाने वाला रसूल आ गया। (29) हक़ के पहुँचते ही यह बोल पड़े कि यह तो जादू है हम इसके मुंकिर हैं। (30) और कहने लगे, यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों से किसी बड़े आदमी पर क्यूँ न नाज़िल किया गया। (31) क्या तेरे रब्बे तआला की रहमत को यह तक़सीम करते हैं? हमने ही इनकी ज़िन्दगानी दुनिया की रोज़ी इनमें तक़सीम की है

और एक को दूसरे से बुलंद किया है ताकि एक दूसरे को मातहत कर ले। जिसे यह लोग समेटते फिरते हैं उससे तेरे रब्बे तआला की रहमत ही बेहतर है। (32) अगर यह बात न होती कि तमाम लोग एक ही गिरोह हो जाएँ तो अल्लाह रहमान के साथ कुफ़्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते और ज़ीनों को भी जिन पर चढ़ा करते। (33) और उनके घरों के दरवाज़ों और तख़्त भी जिन पर वह तकिया लगा लगाकर बैठते हैं। (34) और सोने के भी। और यह सब कुछ यूँ ही सा दुनियावी फ़ायदा है। आख़िरत तो तेरे रब्बे तआला के नज़दीक सिर्फ़ परहेज़गारों के लिए ही है।'' (35)

शिर्क का क़ला क़मअ करना सुन्नते इब्राहीमी है (आ. 26 से 35) : कुरैशी कुफ़्फ़ार नसब के और दीन के ऐतिबार से चूँकि ख़लीलुल्लह इमामुल हुनफ़ा हज़रत इब्राहीम (ﷺ) की तरफ़ मंसूब थे इसलिए अल्लाह तआला ने सुन्नते इब्राहीम उनके सामने रखी कि देखो जो अपने बाद आने वाले तमाम नबियों के बाप अल्लाह तआला के रसूल इमामुल मुवह्हिदीन थे। उन्होंने खुले लफ़्ज़ों में न सिर्फ़ अपनी क़ौम से बल्कि अपने सगे बाप से भी कह दिया कि मुझमें तुममें कोई रिश्ता नहीं। मैं सिवा अपने सच्चे अल्लाह तआला के जो मेरा ख़ालिक़ और मेरा हादी है तुम्हारे इन मअबूदों से बेज़ार हूँ सबसे बेताल्लुक़ हूँ। अल्लाह तआला ने भी उनकी इन जुर्अते हक़गोई और जोशे तौहीद का बदला यह दिया कि कलिमए तौहीद को उनकी औलाद में हमेशा के लिए बाक़ी रख लिया। नामुम्किन है कि आपकी औलाद में इस पाक कलिमे के क़ाइल न हों, इन ही की औलाद इस तौहीदी कलिमा की इशाअत करेगी और सईद रूहें और नेक नसीब लोग इसी घराने से तौहीद सीखेंगे। ग़र्ज़ इस्लाम और तौहीद का मुअल्लिम यह घराना क़रार पाया गया। फिर फ़र्माता है बात यह है कि यह कुफ़्फ़ार कुफ़्र करते रहे और मैं इन्हें मताअे दुनिया देता रहा यह और बहकते गए और इस क़द्र बदमस्त बन गए कि जब इनके पास दीने हक़ और रसूले हक़ गो आए तो इन्होंने हाँक लगाई कि कलामुल्लाह और मोजिज़ाते अम्बिया जादू हैं और हम इनके मुंकिर हैं। सरकशी और ज़िद में आकर कुफ़्र कर बैठे। इनाद और बुग़्ज़ से हक़ के मुक़ाबले पर उतर आए और बातें बनाने लगे कि क्यूँ साहब अगर यह कुरआन सचमुच अल्लाह तआला ही का कलाम है तो फिर मक्के और ताइफ़ के किसी रईस पर किसी बड़े आदमी पर किसी दुनियावी वजाहत वाले पर क्यूँ न उतरा और बड़े आदमी से इनकी मुराद वलीद बिन मुग़ीरह, उर्वा बिन मसऊद, उमेर बिन अम्र, उत्बा बिन रबीआ, हबीब बिन अम्र, इब्ने अब्दे यालील, किनाना बिन अम्र वग़ैरह से थी। ग़र्ज़ यह थी कि इन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े मर्तबे वाले आदमी पर कुरआन नाज़िल होना चाहिए था।

इस ऐतिराज़ के जवाब में फ़र्माने बारी सरज़द होता है कि क्या रहमते इलाही के यह मालिक हैं जो यह इसे तक़सीम करने बैठे हैं। अल्लाह तआला की चीज़ अल्लाह तआला की मिल्कियत वह जिसे जब जितना चाहे दे फिर कहाँ उसका इल्म और कहाँ तुम्हारा इल्म? उसे बख़ूबी इल्म है कि रिसालते इलाही का हक़दार सही मअनी में कौन है? यह नेअमत उसको दी जाती है जो तमाम मख़्लूक़ से ज़्यादा पाक दिल हो सबसे ज़्यादा

पाक नफ़्स हो। सबसे बढ़कर अशरफ़ घर का हो और सबसे ज़्यादा पाक असल का हो।

फिर फ़र्माता है कि यह रहमते इलाही के तक़सीम करने वाले कहाँ से हो गए? अपनी रोज़ियाँ भी इनके अपने क़ब्ज़े की नहीं। वह भी इनमें हम बाँटते हैं। और फ़र्क़ व तफ़ावुत के साथ जिसे जब जितना चाहें दें। जिससे जब जो चाहें छीन लें। अक़्ल, फ़हम, कुव्वत, ताक़त वग़ैरह भी हमारी ही दी हुई है और इसमें भी मरातिब जुदागाना हैं। इसमें एक हिक्मत यह भी है कि एक दूसरे से काम ले क्योंकि इसकी उसे और उसकी इसे ज़रूरत और हाजत रहती है। एक एक के मातहत रहे। फिर इर्शाद हुआ कि तुम जो कुछ दुनिया में जमा कर रहे हो उससे रब्बे तआला की रहमत बहुत ही बेहतर और अफ़ज़ल है। इसके बाद अल्लाह सुब्हानहू व तआला फ़र्माता है कि अगर यह बात न होती कि लोग माल को मेरा फ़ज़्ल और मेरी रज़मांदी की दलील जानकर मालदारों की मिस्ल बन जाएँ तो मैं तो कुफ़्फ़ार को यह दुनिया का माल इतना देता कि उनके घरों की छतें बल्कि उनके कोठों की सीढ़ियाँ भी चाँदी की होतीं जिनके ज़रिये यह बालाख़ानों पर पहुँचते और उनके दरवाज़े उनके बैठने के तख़्त भी चाँदी के होते और सोने के भी। मेरे नज़दीक दुनिया कोई क़द्र की चीज़ नहीं, यह फ़ानी है ज़ाइल (ख़त्म) होने वाली है और सारी मिल जाए जब भी आख़िरत के मुक़ाबले में बहुत ही कम है। इन लोगों की अच्छाई के बदले इन्हें यहीं मिल जाते हैं। खाने पीने रहने सहने बरतने बरताने में कुछ सहूलतें बहम पहुँच जाती हैं। आख़िरत में तो सिर्फ़ ख़ाली हाथ होंगे। एक नेकी बाक़ी न होगी जो अल्लाह तआला से कुछ हासिल कर सकें।

जैसे कि सहीह हदीस में वारिद हुआ है कि ''अगर दुनिया की क़द्र अल्लाह तआला के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को यहाँ पानी का एक घूँट भी न पिलाता।'' (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़ी हवानिद्दुनिया अलल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल : 2320; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4110; हाकिम : 4/306) फिर फ़र्माया आख़िरत की भलाईयाँ सिर्फ़ उनके लिए हैं जो दुनिया में फूँक फूँक कर क़दम रखते रहे। डर डरकर ज़िन्दगी गुज़ारते रहे। वहाँ रब्बे तआला की ख़ास नेअमतें और मख़्सूस रहमतें जो उन्हें मिलेंगी उनमें कोई उनका शरीक न होगा। चुनाँचे ''जब हज़रत उमर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आपके बालाख़ाने में गए। और आप (ﷺ) ने उस वक़्त अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात से ईला कर रखा था तो देखा कि आप (ﷺ) एक चटाई के टुकड़े पर लेटे हुए हैं जिसके निशान आप (ﷺ) के जिस्मे मुबारक पर नुमायाँ हैं तो रो दिये और कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह क़ैसर व किसरा किस आन बान और किस शौकत व शान से ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं और आप अल्लाह तआला के बरगुज़ीदा प्यारे रसूल होकर किस हाल में हैं? हुज़ूर (ﷺ) या तो तकिया लगाए हुए बैठे थे या फ़ौरन तकिया छोड़ दिया और कहने लगे ऐ इब्ने ख़त्ताब (रज़ि.)! क्या तू शक में है? यह तो वह लोग हैं जिनकी नेकियाँ जल्दी से इन्हें यहीं मिल गईं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब अल्ग़ुर्फ़तु वल उल्यतु अलल मुश्रिफ़ा... : 2468; सहीह मुस्लिम : 1479) एक और रिवायत में है कि ''क्या तू इससे ख़ुश नहीं कि इन्हें दुनिया मिले और हमें आख़िरत।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह तहरीम, बाब (तब्तग़ी मरज़ाति अज़्वाजिक) : 4913; सहीह मुस्लिम

: 1479) बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं सोने चाँदी के बरतनों में खाओ पीयो नहीं, यह दुनिया में उनके लिए हैं और आख़िरत में हमारे लिए हैं।''(सहीह बुख़ारी, किताबुल अत्इमा, बाब अल्अकलु फ़ी इनाइ मुफ़ज़्ज़ : 5426; सहीह मुस्लिम : 2067; इब्ने हिब्बान : 5339) और दुनिया में यह इनके लिए यूँ हैं कि रब्बे तआला की नज़रों में दुनिया ज़लीलो ख़्वार है। तिर्मिज़ी वग़ैरह की एक हसन सहीह हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर दुनिया अल्लाह तआला के नज़दीक मच्छर के पर के बराबर भी वक़्अत रखती तो किसी काफ़िर को अल्लाह तआला पानी का एक घूँट भी न पिलाता।'' (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़ी हवानिद्दुनिया अलल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल : 2320; वहुव हसन; इब्ने माजा : 4110)

***

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾ وَاِنَّهُمْ
لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ
يٰلَيْتَ بَيْنِىْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ
اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى
الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ
﴿٤١﴾ اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِىْٓ
اُوْحِىَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ
تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ
الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : "और जो शख़्स अल्लाह तआला की याद से ग़फ़्लत करे हम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं वही उसका साथी रहता है। (36) वह उन्हें राह से रोकते हैं और यह इसी ख़्याल में रहते हैं कि यह राहयाफ़्ता है। (37) यहाँ तक कि जब हमारे पास आएगा कहेगा काश! मेरे और तेरे बीच मश्रिक़ और मग़रिब की दूरी होती तू बड़ा बुरा साथी है। (38) जबकि तुम ज़ालिम ठहर चुके तो तुम्हें आज हर्गिज़ तुम्हारा सबका अज़ाब में शामिल होना कोई नफ़ा न देगा। (39) क्या पस तू बहरे को सुना सकता है या अँधे को राह दिखा सकता है और उसे जो खुली गुमराही में हो (40) हम अगर तुझे यहाँ से ले भी जाएँ तो भी हम इनसे बदला लेने वाले हैं। (41) या जो कुछ इनसे वादा किया है वह तुझे दिखा दें यक़ीनन हम इस पर भी क़ुदरत रखते हैं। (42) पस जो वह्यी तेरी जानिब की गई तू उसे मज़बूत थामे रह। यक़ीन मान कि तू राहे रास्त पर है। (43) और यक़ीनन यह ख़ुद तेरे लिए और तेरी क़ौम के लिए नसीहत है और अन्क़रीब तुम पूछे जाओगे। (44) और हमारे उन नबियों का हाल मालूम करो जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था कि क्या हमने सिवा रहमान के और मअबूद मुक़र्रर किये थे जिनकी इबादत की जाए? (45)

अल्लाह के ज़िक्र से ग़फ़्लत का नतीजा (आ. 36 से 45) : इर्शाद होता है कि जो शख़्स अल्लाह तआला रहीमो करीम के ज़िक्र से ग़फ़्लत व बेरग़बती करे उस पर शैतान क़ाबू पा लेता है और उसका साथी बन जाता है। आँख की बीनाई की कमी को अरबी ज़ुबान में अश्युन फ़िल ऐनि कहते हैं। यही मज़्मून क़ुरआने करीम की और भी बहुत सी आयतों में है। जैसे फ़र्माया (وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ) (4/निसाअ : 115) यानी जो शख़्स हिदायत ज़ाहिर हो चुकने के बाद मुख़ालिफ़ते रसूल करके मोमिनों की राह के सिवा और राह की पैरवी करे हम उसे वहीं छोड़ेंगे और जहन्नम में दाख़िल करेंगे जो बड़ी बुरी जगह है। और आयत में इर्शाद है (فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ) (61/सफ़्फ़ : 5) यानी जब वह टेढ़े हो गए अल्लाह तआला ने उनके दिल भी कज (टेढ़ा) कर दिये। और आयत में है (وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ) (41/हामीम अस्सज्दा : 25) यानी उनके जो हमनशीन हमने मुक़र्रर कर दिये हैं वह उनके आगे पीछे की चीज़ों को ज़ीनत वाली बनाकर उन्हें दिखाते हैं। यहाँ इर्शाद होता है कि ऐसे ग़ाफ़िल लोगों पर शैतानअपना क़ाबू कर लेता है और उन्हें राहे अल्लाह तआला से रोकता है और उनके दिल में यह ख़्याल जमा देता है कि उनकी रविश बहुत अच्छी है। यह बिलकुल सहीह दीन पर क़ायम हैं। क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला के सामने हाज़िर होगा और मामला खुल जाएगा तो अपने उस शैतान से जो उसका साथी था बराअत ज़ाहिर करेगा और कहेगा काश मेरे और तेरे बीच इतना फ़ासला होता जितना मश्रिक़ व मग़रिब के बीच है। यहाँ बाऐतिबार ग़ल्बे के मश्रिक़ैन यानी दो मश्रिक़ों का लफ़्ज़ कह दिया गया है जैसे सूरज चाँद को क़मरैन यानी दो चाँद कह दिया जाता है। और माँ बाप को अबवैन यानी दो बाप कह दिया जाता है।

एक क़िरअत में (जाआ ना) भी है यानी शैतान और यह ग़ाफ़िल इंसान दोनों जब हमारे पास आएँगे।

हज़रत सईद जरीरी (रह.) फ़र्माते हैं कि "काफ़िर के अपनी क़ब्र से उठते ही शैतान आकर उसके हाथ से हाथ मिला लेता है फिर जुदा नहीं होता। यहाँ तक कि जहन्नम में भी दोनों को साथ ही डाला जाता है।"

फिर फ़र्माता है जहन्नम में तुम सबका जमा होना और वहाँ के अज़ाबों में सबका शरीक होना तुम्हारे लिए नफ़ा देने वाला नहीं। उसके बाद अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि अज़्ली बहरों के कान में तू हिदायत की सदा नहीं डाल सकता। मादरज़ाद अँधों को तू राह नहीं दिखा सकता। सरीह गुमराही में पड़े हुए तेरी हिदायत नहीं क़बूल कर सकते। यानी तुझ पर हमारी जानिब से यह फ़र्ज़ नहीं कि ख़्वाह मख़्वाह हर हर शख़्स मुसलमान हो ही जाए। हिदायत तेरे क़ब्ज़े की चीज़ नहीं। जो हक़ की तरफ़ कान ही न लगाए जो सीधी राह की तरफ़ आँख ही न उठाए जो बहके और उसी में ख़ुश रहे तो तुझे उनकी बाबत इतना क्यूँ ख़्याल है? तुझ पर ज़रूरी काम सिर्फ़ तब्लीग़ करना है हिदायत व ज़लालत हमारे हाथ की चीज़ हैं हम आदिल हैं। हम हकीम हैं, हम जो चाहेंगे करेंगे तुम तंगदिल न हो जाया करो। फिर फ़र्माता है कि अगरचे हम तुझे यहाँ से ले जाएँ फिर भी हम इन ज़ालिमों से बदला लिए बग़ैर तो रहें नहीं। या अगर हम तुझे तेरी आँखों से वह दिखा दें जिसका वादा हमने इनसे किया है तो हम इससे आजिज़ नहीं। ग़र्ज़ इस तरह और इस तरह दोनों सूरतों में कुफ़्फ़ार पर अज़ाब तो आएगा ही। लेकिन फिर वह सूरत पसंद की गई जिसमें पैग़म्बर (ﷺ) की इज़्ज़त ज़्यादा थी यानी अल्लाह तआला ने आपको फ़ौत न किया जब तक कि आप (ﷺ) के दुश्मनों को हरा न दिया। आपकी आँखें ठण्डी न कर दीं। आप उनकी जानों और मालों और मिल्कियतों के मालिक न बन गए। यह तो है तफ़्सीर हज़रत सुद्दी (रह.) वग़ैरह की। लेकिन हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला के नबी (ﷺ) दुनिया से उठा लिए गए और इंतिक़ाम बाक़ी रह गया। अल्लाह तआला ने अपने रसूल को आपकी उम्मत में ज़िन्दगी में वह मामलात न दिखाए जो आपको नापसंदीदा थे। सिवा हुज़ूर (ﷺ) के और तमाम अम्बिया (عليهم السلام) के सामने उनकी उम्मतों पर अज़ाब आए। हमसे यह भी कहा गया है कि जबसे हुज़ूर (ﷺ) को यह मालूम करा दिया गया कि आपकी उम्मत पर क्या क्या वबाल आएँगे। उस वक़्त से लेकर विसाल के वक़्त तक कभी हुज़ूर (ﷺ) खिल खिलाकर हँसते हुए देखे न गए। (तब्री, यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) हज़रत हसन (रह.) से भी इसी तरह की रिवायत है। एक हदीस में है सितारे आसमान के बचाव का सबब हैं। जब सितारे झड़ जाएँगे तो आसमान पर मुसीबत आ जाएगी। मैं अपने अस्हाब का ज़रियए अम्न हूँ। मेरे जाने के बाद मेरे अस्हाब पर वह आ जाएगा जिसका यह वादा दिये जाते हैं। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब बयानु अन बक़ाइन्नबी (ﷺ) अमानुन लि अस्हाबिही : 2531; अहमद : 4/398; मुस्नदे अबी यअला : 7276)

फिर इर्शाद होता है कि जो कुरआन तुझ पर नाज़िल किया गया है सरासर हक़ व सिद्क़ है। जो हक़्क़ानियत की सीधी और साफ़ राह की रहनुमाई करता है। तू इसे मज़बूती के साथ लिए रह, यही जन्नते नईम और राहे मुस्तक़ीम का रहबर है इस पर चलने वाला इसके अहकाम को थामने वाला बहक और भटक नहीं सकता। यह तेरे लिए और तेरी क़ौम के लिए ज़िक्र है। यानी शर्फ़ और बुज़ुर्गी है। बुख़ारी में है कि "हुज़ूर

(ﷺ) ने फ़र्माया, यह अम्र (यानी ख़िलाफ़त व इमामत) कुरैश में ही रहेगा जो उनसे झगड़ेगा और छीनेगा उसे अल्लाह तआला ओंधे मुँह गिराएगा जब तक दीन को क़ायम रखें।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अहकाम, बाब अल्अम्रु मिन कुरैश : 7139; अहमद : 4/94) इसलिए भी आपकी शराफ़ते क़ौमी इसमें है कि क़ुरआन आप (ﷺ) ही की ज़ुबान में उतरा है। लुग़ते कुरैश में ही नाज़िल हुआ है ज़ाहिर है कि सबसे ज़्यादा इसे यही समझेंगे। इन्हें लायक़ है कि सबसे ज़्यादा मज़बूती के साथ अमल भी इन ही का इस पर रहे बिलख़ुसूस इसमें बड़ी भारी बुज़ुर्गी है उन मुहाजिरीने किराम (रज़ि.) की जिन्होंने पहले पहल सब्क़त करके इस्लाम कुबूल किया और हिज्रत में भी सबसे आगे आगे रहे और जो इनके क़दम ब क़दम चले। ज़िक्र के मअ़नी नसीहत के भी लिए गए हैं इस सूरत में यह याद रहे कि आपकी क़ौम के लिए इसका नसीहत होना दूसरों के लिए नसीहत न होने के मअ़नी नहीं। जैसे फ़र्मान है (لَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ) (21/अम्बिया : 10) यानी बिल्यक़ीन हमने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है जिसमें तुम्हारे लिए नसीहत है क्या पस तुम अक़्ल नहीं रखते? और आयत में है (وَأَنذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ) (26/शोअ़रा : 214) यानी अपने ख़ानदानी क़राबतदारों को होशियार कर दे। ग़र्ज़ नसीहते क़ुरआनी, रिसालते नबवी (ﷺ) आम है, कुंबे वालों को क़ौम को और दुनिया के कुल लोगों को शामिल है। फिर फ़र्माता है तुमसे अन्क़रीब सवाल होगा कि कहाँ तक कलामुल्लाह पर अमल किया और कहाँ तक इसे माना? तमाम रसूलों ने अपनी अपनी क़ौम को वही दावत दी जो ऐ आख़िरी रसूल (ﷺ)! आप अपनी उम्मत को दे रहे हैं। कुल अम्बिया (अ.) के दावत नामों का ख़ुलासा सिर्फ़ इस क़द्र है कि उन्होंने तौहीद फैलाई और शिर्क को मिटाया। जैसे ख़ुद क़ुरआन में है कि हमने हर उम्मत में रसूल भेजा कि अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके सिवा औरों की इबादत न करो। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरअत में यह आयत इस तरह है (وَاسْأَلِ الَّذِينَ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ رُسُلَنَا) (तबरी : 21/611) वल्लाहु आलम! तो मतलब यह हुआ कि उनसे पूछ ले जिनमें तुझसे पहले हम अपने और रसूलों को भेज चुके हैं। अब्दुर्रहमान (रह.) फ़र्माते हैं नबियों से पूछ ले। यानी मेअ़राज वाली रात को जबकि अम्बिया (عليهم السلام) आप (ﷺ) के सामने जमा थे कि हर नबी तौहीद सिखाने और शिर्क मिटाने की ही ता'लीम लेकर हमारी जानिब से मब्ऊस होता रहा।

***

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيهِم مِّنْ
آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوا

يَاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : "हमने मूसा (عليه السلام) को अपने दलाइल देकर फ़िरऔन और उसके उमरा के पास भेजा मूसा (عليه السلام) ने कहा, मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ। (46) जब हमारी निशानियाँ लेकर उनके पास आए तो वह बेसाख़्ता उन पर हँसने लगे। (47) हम उन्हें जो निशानी दिखाते थे वह दूसरी से बढ़ी चढ़ी होती थी। और हमने उन्हें अ़ज़ाब में पकड़ा ताकि वह बाज़ आ जाएँ। (48) वह कहने लगे, ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब्बे तआ़ला से इसकी दुआ़ कर जिसका उसने तुझसे वादा कर रखा है यक़ीन मान कि हम राह पर लग जाएँगे। (49) फिर जब हमने वह अ़ज़ाब उनसे हटा लिया उन्होंने उसी वक़्त अपना क़ौलो क़रार तोड़ दिया।" (50)

मूसा (عليه السلام) दलाइल व बराहीन के साथ फ़िरऔन की तरफ़ (आ. 46 से 50) : हज़रत मूसा (عليه السلام) को जनाबे बारी तआ़ला ने अपना रसूल व नबी बनाकर फ़िरऔन और उसके उमरा और उसकी रिआ़या, क़िब्तियों और बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा ताकि आप (عليه السلام) उन्हें तौहीद सिखाएँ और शिर्क से बचाएँ। आप (عليه السلام) को बड़े बड़े मोजिज़े भी अ़ता किये। जैसे कि हाथ का रोशन हो जाना, लकड़ी का अज़्दहा बन जाना वग़ैरह लेकिन फ़िरऔनियों ने अपने नबी (عليه السلام) की कोई क़द्र न की बल्कि तक्ज़ीब की और मज़ाक उड़ाया। इस पर अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब आया ताकि उन्हें इब्रत भी हो और नबुव्वते मूसा पर दलील भी हो। पस तूफ़ान आया, टिड्डियाँ आईं, जूएँ आईं। मेंढक आए और खेत, माल जान, फल वग़ैरह की कमी में मुब्तला हुए। जब कोई अ़ज़ाब आता तो तिलमिला उठते। हज़रत मूसा (عليه السلام) की ख़ुशामद करते उन्हें रज़ामंद करते, उनसे क़ौलो क़रार करते आप (عليه السلام) दुआ़ माँगते अ़ज़ाब हट जाता फिर सरकशी पर उतर आते। फिर अ़ज़ाब आता फिर यही होता। साहिर यानी जादूगर से वह बड़ा आ़लिम मुराद लेते थे। उनके ज़माने के उ़लमा का यही लक़ब था और उन ही लोगों में इल्म था। और उनके ज़माने में यह इल्म मज़्मूम नहीं समझा जाता था बल्कि क़द्र की निगाह से देखा जाता था। पस उनका जनाब मूसा (عليه السلام) को ऐ जादूगर! कहकर ख़िताब करना बतौरे इ़ज़्ज़त के था ऐतिराज़ के तौर पर न था क्योंकि उन्हें तो अपना काम निकालना था। हर बार इक़रार करते थे कि हम मुसलमान हो जाएँगे और बनी इस्राईल को भी तुम्हारे साथ कर देंगे। फिर जब अ़ज़ाब हट जाता तो वादाख़िलाफ़ी करते और क़ौलो क़रार तोड़ डालते। जैसे और आयत (فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ) (7/आराफ़ : 133) में इस पूरे वाक़िये का ज़िक्र बयान किया है।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ تَجْرِىْ
مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ
يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَآ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾
فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا
مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾

तर्जुमा : ''फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में मुनादी (ऐलान) कराई और कहा ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र का मुल्क मेरा नहीं? और मेरे महलों के नीचे यह नहरें बह रही हैं क्या तुम देखते नहीं रहे? (51) बल्कि मैं बेहतर हूँ बनिस्बत उसके जो बेतौक़ीर है। और साफ़ बोल भी नहीं सकता। (52) अच्छा इस पर सोने के कंगन क्यूँ नहीं आ पड़े या इसके साथ पर बाँधकर फ़रिश्ते ही आ जाते। (53) इसने अपनी क़ौम की अक़्ल खो दी और इन्होंने इसी की मान ली। यक़ीनन यह सारे ही बेहुक्म लोग थे। (54) फिर जब इन्होंने हमें ग़ुस्सा दिलाया तो हमने इनसे इंतिक़ाम लिया और सबको डुबो दिया। (55) पस हमने गया गुज़रा कर दिया और पिछलों के लिए मिसाल बना दी।'' (56)

फ़िरऔन का तकब्बुर और सरकशी (आ. 51 से 56) : फ़िरऔन की सरकशी और ख़ुद बीनी बयान हो रही है कि उसने अपनी क़ौम को जमा करके उनमें डींग ली और कहा क्या मैं तंहा मुल्के मिस्र का बादशाह नहीं हूँ? क्या मेरे बाग़ात और महल्लात में नहरें जारी नहीं? क्या तुम मेरी अज़्मत और सल्तनत को देख नहीं रहे? फिर मूसा (عليه السلام) और उसके साथियों को देखो जो फ़क़ीर और ज़ुअफ़ा हैं।

कलामे पाक में और जगह है उसने जमा करके सबसे कहा, मैं तुम्हारा बुलंद व बाला रब हूँ, जिस पर अल्लाह तआला ने इसे यहाँ के और वहाँ के अ़ज़ाबों में गिरफ़्तार किया। (अम) मअ़नी में बल के है। कुछ क़ारियों की क़िरअत (अमा अना) भी है। (तबरी : 21/618) इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं ''अगर यह क़िरअत सहीह हो जाए तो मअ़नी तो बिलकुल वाज़ेह और साफ़ हो जाते हैं लेकिन यह क़िरअत तमाम शहरों की क़िरअत के ख़िलाफ़ है। सबकी क़िरअत (अम) इस्तिफ़्हाम का है।'' (तबरी : 21/618) हासिल यह है कि फ़िरऔन मल्ऊन अपने आपको हज़रत कलीमुल्लाह (عليه السلام) से बेहतर व बरतर बता रहा है और यह दरअसल उस मल्ऊन का झूठ है (मुहीन) के मअ़नी हक़ीर ज़ईफ़ बेमाल बेशान के हैं।

फिर कहता है कि मूसा तो साफ़ बोलना भी नहीं जानता। इसका कलाम फ़सीह़ नहीं वह अपना मा फ़िज़मीर (अपने दिल की बात) अदा नहीं कर सकता। कुछ कहते हैं बचपन में आप (ﷺ) ने अपने मुँह में अंगारा रख लिया था जिसका असर ज़ुबान पर बाक़ी रह गया था। यह भी फ़िरऔन का मकर झूठ और दजल है। ह़ज़रत मूसा (ﷺ) साफ़ गो सह़ीह़ कलाम करने वाले ज़ी इ़ज़्ज़त रौब वक़ार वाले थे। लेकिन चूँकि यह मल्ऊन अपनी कुफ़्र की आँख से नबियुल्लाह को देखता था इसलिए उसे यही दिखता था। ह़क़ीक़तन ज़ली व ग़बी ख़ुद था। भले ह़ज़रत मूसा (ﷺ) की ज़ुबान में बवजह उस अंगारे के जिसे बचपन में मुँह में रख लिया था कुछ लुक्नत थी लेकिन आप (ﷺ) ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ माँगी और आपकी ज़ुबान की गिरह खुल गई ताकि आप लोगों को बाआसानी अपना मुद्दा समझा सकें। और अगर मान लिया जाए कि ताहम कि कुछ बाक़ी रह गई थी क्योंकि दुआ़ कलीमुल्लाह में इतना ही था कि मेरी ज़ुबान की इस क़द्र गिरह खुल जाए कि लोग मेरी बात समझ लें तो यह भी कोई ऐ़ब की बात नहीं। अल्लाह तआ़ला ने जिस किसी को जैसा बना दिया वह वैसा ही है। इसमें ऐ़ब की कौनसी बात है? दरअस़ल फ़िरऔ़न एक कलाम बनाकर एक मसोदा गढ़कर अपनी जाहिल रिआ़या को भड़काना और बहकाना चाहता था।

देखिए वह आगे चलकर कहता है कि क्यूँ जी! इस पर आसमान से हुन क्यूँ नहीं बरसता। मालदारी तो इसे इतनी होनी चाहिए कि हाथ सोने से पुर हों लेकिन यह तो मह़ज़ मुफ़्लिस है। अच्छा यह भी नहीं तो अल्लाह इसके साथ फ़रिश्ते ही कर देता जो कम अज़्कम हमें बावर करा देते कि यह अल्लाह के नबी हैं। ग़र्ज़ हज़ार जतन करके लोगों को बेवक़ूफ़ बना लिया और उन्हें अपना हमख़्याल और हम सुख़न कर लिया, यह ख़ुद फ़ासिक़ फ़ाजिर थे।

फ़िस्क़ो फ़िजूर की पुकार पर फ़ौरन रीझ गए। पस जब उनका पैमाना छलक गया और उन्होंने दिल खोलकर नाफ़र्मानी रब्बे तआ़ला कर ली और रब्बे तआ़ला को ख़ूब नाराज़ कर दिया तो फिर इलाही कोड़ा उनकी पीठ पर बरसा और अगले पिछले सारे करतूत पकड़ लिए गए। जहाँ एक साथ पानी में ग़र्क़ कर दिये गए वहाँ जहन्नम में जलते झुलसते रहेंगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि, ''जब किसी इंसान को अल्लाह दुनिया देता चला जाए और वह अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानियों पर जमा हुआ हो तो समझ लो कि अल्लाह तआ़ला ने उसे ढील दे रखी है। फिर ह़ुज़ूर (ﷺ) ने यही आयत तिलावत की।'' (और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने लहीआ़ मुदल्लस व अ़न्अ़न)

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के सामने जब अचानक मौत का ज़िक्र आया तो आपने फ़र्माया, ईमान वाले पर यह तख़्फ़ीफ़ है और काफ़िर पर ह़सरत है। फिर आपने इसी आयत को पढ़कर सुनाया। (अद्दुर्रुल मंसूर : 7/384) ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह़.) फ़र्माते हैं इंतिक़ाम ग़फ़्लत के साथ है। फिर अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआ़ला फ़र्माता है कि हमने इन्हें नमूना बना दिया कि इनके लिए काम करने वाले इनके अंजाम को देख लें। और यह मिसाल यानी बाइसे इ़ब्रत बन गए कि पिछले इनके वाक़ियात में ग़ौर करें और अपना बचाव ढूँढ़ें।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ
اَمْ هُوَ ۭ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ
اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً
فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ۭ هٰذَا
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا جَآءَ
عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ
تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾

तर्जुमा : ''जब इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो इससे तेरी क़ौम पुकार उठी। (57) और कहने लगे कि हमारे मअबूद अच्छे हैं या वह? तुझसे इनका यह कहना सिर्फ़ झगड़े की ग़र्ज़ से है बल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू। (58) ईसा (عليه السلام) भी सिर्फ़ बन्दा ही है जिस पर हमने एहसान किया और इसे बनी इस्राईल के लिए निशाने कुदरत बनाया। (59) अगर हम चाहते तो तुम्हारे बदले फ़रिश्ते कर देते जो ज़मीन में जानशीनी करते। (60) और यक़ीनन ईसा (عليه السلام) क़ियामत की अलामत है पस तुम क़ियामत के बारे में शक न करो और मेरी ताबेदारी करो यही सीधी राह है। (61) शैतान तुम्हें रोक न दे। यक़ीनन वह तुम्हारा सरीह दुश्मन है। (62) जब ईसा (عليه السلام) मोजिज़े लाए और कह दिया कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत लाया हूँ और इसलिए आया हूँ कि जिन कुछ चीज़ों में तुम मुख़्तलिफ़ हो उन्हें वाज़ेह कर दूँ। पस तुम अल्लाह तआला से डरो

और मेरा कहा मानो। (63) मेरा और तुम्हारा रब फ़क़त अल्लाह तआला ही है। पस तुम सब उसकी इबादत करो। राहे रास्त यही है (64) फिर बनी इस्राईल की जमाअतों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया। पस ज़ालिमों के लिए ख़राबी है दुख देने वाले दिन की आफ़त से।'' (65)

मुश्रिकीन के कौनसे मअबूद जहन्नमी हैं? (आ. 57 से 65) : (यसिद्दूना) के मअनी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.), मुजाहिद, इक्रिमा और ज़ह्हाक (रह.) ने किये हैं कि वह हँसने लगे यानी उससे उन्हें ताज्जुब मालूम हुआ।

क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं घबराकर बोल पड़े। (तब्री : 21/627) इब्राहीम नख़ई (रह.) का क़ौल है मुँह फेरने लगे। इसकी वजह जो इमाम मुहम्मद बिन इस्हाक़ (रह.) ने अपनी सीरत में बयान की है वह यह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) वलीद बिन मुग़ीरह वग़ैरह कुरेशियों के पास तशरीफ़ फ़र्मा थे जो नज़र बिन हारिस भी आ गया और आप (ﷺ) से कुछ बातें करने लगा, जिसमें वह लाजवाब हो गया। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने कुरआने करीम की आयत (إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ) (21/अम्बिया : 98) कई आयतों तक पढ़कर सुनाईं यानी तुम और तुम्हारे मअबूद सब जहन्नम में झोंक दिये जाओगे। फिर हुज़ूर (ﷺ) वहाँ से चले गए। थोड़ी ही देर में अब्दुल्लाह बिन ज़बअरी तमीमी आया तो वलीद बिन मुग़ीरह ने उससे कहा कि नज़र बिन हारिस तो इब्ने अब्दुल मुत्तलिब से हार गया और बिल्आख़िर इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हमें और हमारे मअबूदों को जहन्नम का ईंधन कहते हुए चले गए। उसने कहा अगर मैं होता तो ख़ुद उन्हें लाजवाब कर देता जाओ ज़रा उनसे पूछो तो कि जब हम और हमारे मअबूद दोज़ख़ी हैं तो लाज़िम आया कि सारे फ़रिश्ते और हज़रत उ़ज़ेर (عليه السلام) और हज़रत मसीह (عليه السلام) भी जहन्नम में जाएँगे क्योंकि हम फ़रिश्तों को पूजते हैं। यहूद हज़रत उ़ज़ेर (عليه السلام) और ईसाई हज़रत ईसा (عليه السلام) की इबादत करते हैं। इस पर मज्लिस के कुफ़्फ़ार बहुत ख़ुश हुए और कहा हाँ! यह जवाब ठीक है। लेकिन जब हुज़ूर (ﷺ) तक यह बात पहुँची तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, ''हर वह शख़्स जो ग़ैरुल्लाह की इबादत करे और हर वह शख़्स जो अपनी इबादत अपनी ख़ुशी से कराये यह दोनों आबिद मअबूद जहन्नमी हैं। फ़रिश्तों या नबियों ने न अपनी इबादत का हुक्म दिया, न वह इससे ख़ुश हैं। उनके नाम से दरअसल यह शैतान की इबादत करते हैं वही उन्हें शिर्क का हुक्म देता है और यह बजा लाते हैं।'' इस पर आयत (إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ) (21/अम्बिया : 101) नाज़िल हुई। यानी हज़रत ईसा और हज़रत उ़ज़ेर (عليه السلام) और उनके अलावा जिन अह्बार व रुहबान की पूजा यह लोग करते हैं और ख़ुद वह अल्लाह तआला की इताअत पर थे शिर्क से बेज़ार और उससे रोकने वाले थे और उनके बाद उन गुमराहों जाहिलों ने उन्हें मअबूद बना लिया तो वह सिर्फ़ बेक़सूर हैं। और फ़रिश्तों को जो मुश्रिकीन अल्लाह तआला की बेटियाँ मानकर पूजते थे उनकी तर्दीद में (وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَٰنُ وَلَدًا) (21/अम्बिया : 26) से कई आयतों तक नाज़िल हुईं और उनके इस बातिल अक़ीदे की पूरी तर्दीद कर दी। और हज़रत ईसा (عليه السلام) के बारे में उसने जो जवाब दिया था जिस पर मुश्रिकीन ख़ुश हुए थे यह आयतें उतरीं कि तेरे इस क़ौल को सुनते ही

कि मअबूदाने बातिल भी अपने आबिदों के साथ जहन्नम में जाएँगे इन्होंने झट से हज़रत ईसा (अलैहि.) की ज़ाते गिरामी को पेश कर दिया और यह सुनते ही मारे ख़ुशी के आप (अलैहि.) की क़ौम के मुश्रिक उछल पड़े और बढ़ चढ़कर बातें बनाने लगे कि हमने दबा लिया इनसे कहो कि हज़रत ईसा (अलैहि.) ने किसी से अपनी या किसी और की पूजा नहीं कराई। वह तो ख़ुद बराबर हमारी गुलामी में लगे रहे और हमने भी उन्हें अपनी बहुत सी नेअमतें अता कीं। उनके हाथों जो मोजिज़ात दुनिया को दिखाए वह क़ियामत की दलील थे। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इब्ने जरीर में है कि "मुश्रिकीन ने अपने मअबूदों का जहन्नमी होना हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी सुनकर कहा कि फिर आप इब्ने मरयम की निस्बत क्या कहेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, वह अल्लाह तआला के बन्दे हैं और उसके रसूल हैं। अब कोई जवाब इनके पास न रहा तो कहने लगे, अल्लाह की क़सम! यह तो चाहते हैं कि जिस तरह ईसाइयों ने हज़रत ईसा (अलैहि.) को अल्लाह मान लिया है हम भी इन्हें रब मान लें। अल्लाह तआला फ़र्माता है यह तो सिर्फ़ बकवास है, खिसयाने होकर बेजोड़ बातें कहने लगे हैं। (तब्री : 21/625)

मुस्नद अहमद में है कि "एक बार हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि कुरआन में एक आयत है मुझसे किसी ने इसकी तफ़्सीर नहीं पूछी। मैं नहीं जानता कि क्या हर एक उसे जानता है या न जानकर फिर भी जानने की कोशिश नहीं करते? फिर और बातें बयान करते रहे यहाँ तक कि मज्लिस ख़त्म हुई और आप चले गए। अब हमें बड़ा अफ़सोस होने लगा कि वह आयत फिर भी रह गई। और हममें से किसी ने पूछा ही नहीं। इस पर इब्ने अक़ील अंसारी के मौला अबू यह्या ने कहा कि अच्छा! कल सुबह जब तशरीफ़ लाएँगे तो मैं पूछ लूँगा। दूसरे दिन जो आए तो मैंने उनकी कल की बात दोहराई और उनसे पूछा कि वह कौनसी आयत है? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया, हाँ! सुनो हुज़ूर (ﷺ) ने एक बार कुरैश से फ़र्माया, "कोई ऐसा नहीं जिसकी इबादत अल्लाह तआला के सिवा की जाती हो और उसमें ख़ैर हो।"

इस पर कुरैश ने कहा, क्या ईसाई हज़रत ईसा (अलैहि.) की इबादत नहीं करते? और क्या आप हज़रत ईसा (अलैहि.) को अल्लाह का नबी और उसका बरगुज़ीदा नेक बंदा नहीं मानते? फिर यह कहने का क्या मतलब है कि अल्लाह के सिवा जिसकी इबादत की जाती है वह ख़ैर से ख़ाली है? इस पर यह आयतें उतरीं कि जब ईसा बिन मरयम (अलैहि.) का ज़िक्र आया तो यह लोग हँसने लगे वह क़ियामत का इल्म हैं। यानी ईसा बिन मरयम (अलैहि.) का क़ियामत के दिन से पहले निकलना।" (अहमद: 1/317; और वह हसन है; इब्ने हिब्बान: 6817)

इब्ने अबी हातिम में भी यह रिवायत पिछले जुम्ले के अलावा है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं इनके इस क़ौल का कि क्या हमारे मअबूद बेहतर हैं या यह? मतलब यह है कि हमारे मअबूद मुहम्मद (ﷺ) से बेहतर हैं, यह तो अपने आपको बचवाना चाहते हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत में (अम हाज़ा) है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि यह इनका मुनाज़िरा नहीं, बल्कि मुजादिला और मुकाबिरा है। यानी बेदलील झगड़ा और बेवजह हुज्जतबाज़ी है। ख़ुद यह जानते हैं कि न यह मतलब है न हमारा ऐतिराज़ इस पर वारिद होता है। इसलिए कि पहले तो आयत में लफ़्ज़ (मा) है जो ग़ैर ज़विल उक़ूल के लिए है दूसरे यह कि आयत में

ख़िताब कुफ़्फ़ारे क़ुरैश से है जो अस्नाम व अंदाद को बुतों और पत्थरों को पूजते थे। वह मसीह (अलैहिस्सलाम) के पुजारी न थे जो यह ऐतिराज़ बरमहल माना जाए। पस यह सिर्फ़ जदल है यानी वह बात कहते हैं जिसके ग़ैर सहीह होने को उनका अपना दिल भी जानता है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में फ़र्माने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) है कि "कोई क़ौम उस वक़्त तक हलाक नहीं होती जब तक बेदलील हुज्जतबाज़ी उनमें न आ जाए। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने इसी आयत की तिलावत की।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिज़्ज़ुख़रुफ़ : 3253; और इसकी सनद हसन है; इब्ने माजा : 48; अहमद : 5/252; हाकिम : 2/448) इब्ने अबी हातिम में इस हदीस के शुरू में यह भी है कि हर उम्मत की गुमराही की पहली बात अपने नबी के बाद तक़्दीर का इंकार करना है। (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने मख़्ज़ूम नामालूम है और बाक़ी सनद हसन है।) इब्ने जरीर में है कि "एक बार हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सहाबा (रज़ि.) के मज्मअे में आए उस वक़्त वह क़ुरआन की आयतों में नज़ाअ कर रहे थे। आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) सख़्त ग़ज़बनाक हुए और फ़र्माया, इस तरह अल्लाह तआला की किताब की आयतों को एक दूसरे के साथ न टकराओ। याद रखो जिदाल की इसी आदत ने अगले लोगों को गुमराह कर दिया। फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने (मा ज़रबू लका इल्ला जदलन बल हुम क़ौमुन ख़सिमून) की तिलावत फ़र्माई। (तब्री : 21/629; और इसकी सनद बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ है; फ़ीही जअफ़र बिन ज़ुबैर ज़ईफ़ुन जिद्दा)

फिर इर्शाद होता है कि हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के बन्दों में से एक बंदे थे जिन पर नबुव्वत व रिसालत का इन्आमे बारी तआला हुआ था। और उन्हें क़ुदरते बारी तआला की एक निशानी बनाकर बनी इस्राईल की तरफ़ भेजा गया था ताकि वह जान लें कि अल्लाह तआला जो चाहे उस पर क़ादिर है। फिर इर्शाद होता है कि अगर हम चाहते तो तुम्हारे जानशीन बनाकर फ़रिश्तों को इस ज़मीन में आबाद कर देते। या यह कि जिस तरह तुम एक दूसरे के जानशीन होते हो। यही बात उनमें कर देते। मतलब दोनों सूरतों में एक ही है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं यानी बजाय तुम्हारे ज़मीन की आबादी उनसे होती। (तब्री : 21/630) उसके बाद जो फ़र्माया है कि वह क़ियामत की निशानी है इसका मतलब जो इब्ने इस्हाक़ (रह.) ने बयान किया है वह कुछ ठीक नहीं। और इससे भी ज़्यादा दूर की बात यह है कि बक़ौले क़तादा, हज़रत हसन बसरी और हज़रत सईद बिन ज़ुबैर (रह.) कहते हैं कि 'हू' ज़मीर का मरजअ क़ुरआन है यह दोनों क़ौल ग़लत हैं बल्कि सही बात यह है कि ज़मीर आइद है हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) पर। यानी हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) क़ियामत की एक निशानी हैं। इसलिए कि ऊपर से ही आप (अलैहिस्सलाम) का बयान चला आ रहा है। और यह वाज़ेह रहे कि मुराद यहाँ हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) का क़ियामत से पहले का नाज़िल होना है जैसे कि अल्लाह तबारक व तआला ने फ़र्माया (وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ) (4/निसाअ : 159) यानी उनकी मौत से पहले एक एक अहले किताब उन पर ईमान लाएगा। यानी हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) की मौत से पहले फिर क़ियामत के दिन यह उन पर गवाह होंगे। इस मतलब की पूरी वज़ाहत इसी आयत की दूसरी क़िरअत से होती है जिसमें है (इन्नहू ल इल्मुल्लिस्साअति) यानी जनाब रूहुल्लाह निशान और अलामत हैं क़ियामत के क़ायम होने की। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं "यह निशान हैं क़ियामत के यानी हज़रत ईसा बिन मरयम (अलैहिस्सलाम) का क़ियामत से

पहले आना। (तब्री : 21/632) इसी तरह रिवायत की गई है हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से और हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से और यही मरवी है अबुल आलिया, अबू मालिक, इक्रिमा, हसन, क़तादा, ज़ह्हाक (रह.) वग़ैरह से। (तब्री : 21/632) और मुतवातिर अहादीस में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़बर दी है कि क़ियामत के दिन से पहले हज़रत ईसा (عليه السلام) इमामे आदिल और हाकिम बाइंसाफ़ होकर नाज़िल होंगे पस तुम क़ियामत का होना यक़ीनी जानो उसमें शक शुब्हा न करो और जो ख़बरें तुम्हें दे रहा हूँ उसमें मेरी ताबेदारी करो यही सिराते मुस्तक़ीम है। कहीं ऐसा न हो कि शैतान जो तुम्हारा खुला दुश्मन है तुम्हें सहीह राह से और मेरी वाजिब इत्तिबाअ से रोक दे। हज़रत ईसा (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से कहा था कि मैं हिक्मत यानी नबुव्वत लेकर तुम्हारे पास आया हूँ और दीनी उमूर में जो इख़्तिलाफ़ात तुमने डाल रखे हैं मैं उसमें जो हक़ है उसे ज़ाहिर करने के लिए भेजा गया हूँ। इब्ने जरीर (रह.) यही फ़र्माते हैं और यही क़ौल बेहतर और पुख़्ता है फिर इमाम साहब ने उन लोगों के क़ौल की तर्दीद की है जो कहते हैं कि कुछ का लफ़्ज़ यहाँ पर (कुल) के मअनी में है। और इसकी दलील में लबीद शायर का एक शेअर पेश करते हैं लेकिन वहाँ भी कुछ से मुराद क़ाइल का ख़ुद अपना नफ़्स है न कि सब नफ़्स। इमाम साहब (रह.) ने शेअर का जो मतलब बयान किया है यह भी मुम्किन है। फिर फ़र्माया जो मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ उसमें अल्लाह तआला का लिहाज़ रखो उससे डरते रहो और मेरी इताअत गुज़ारी करो। जो लाया हूँ उसे मानो। यक़ीन मानो कि तुम सब और ख़ुद मैं उसके गुलाम हैं उसके मोहताज हैं , उसके दर के फ़क़ीर हैं। उसकी इबादत हम सब पर फ़र्ज़ है। वह वाहिद है ला शरीक है। बस यही तौहीद की राह राहे मुस्तक़ीम है। अब लोग आपस में मुतफ़र्रिक़ हो गए। कुछ तो कलिमतुल्लाह को अल्लाह तआला का बन्दा और रसूल ही कहते थे और यही हक़ वाली जमाअत थी और कुछ ने उनकी निस्बत दावा किया कि अल्लाह तआला के फ़रज़न्द हैं और कुछ ने कहा कि आप (عليه السلام) ही अल्लाह हैं, नऊज़ुबिल्लाह! अल्लाह तआला उनके इन दोनों दावों से पाक है और बुलंद व बरतर है। इसीलिए इर्शाद फ़र्माता है कि इन ज़ालिमों के लिए ख़राबी है। क़ियामत के दिन इन्हें अलमनाक अज़ाब और दर्दनाक सज़ाएँ होंगी।

***

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّآءُ
يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ
وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ
وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا

مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ

اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾

तर्जुमा : "यह लोग सिर्फ़ क़ियामत के मुंतज़िर हैं कि वह अचानक इन पर आ पड़े और इन्हें ख़बर भी न हो। (66) उस दिन गहरे दोस्त भी एक दूसरे के दुश्मन बन जाएँगे सिवा परहेज़गारों के। (67) मेरे बन्दों! आज न तो तुम पर कोई ख़ौफ़ व हरास है और न तुम बद दिल और ग़मज़दा होंगे। (68) जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और थे भी वह फ़र्मांबरदार मुसलमान (69) तुम और तुम्हारी जोड़ के लोग हश्शाश बश्शाश राज़ी ख़ुशी जन्नत में चले जाओ। (70) उनके चारों तरफ़ से सोने की रकाबियाँ और सोने के ग्लासों का दौर लगा दिया जाएगा। उनके जी जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगे और जिससे उनकी आँखें ठण्डी रहें सब वहाँ होगा। और तुम यहाँ हमेशा रहोगे। (71) यही वह बहिश्त है कि तुम अपने आमाल के बदले उसके वारिस बनाए गए हो। (72) यहाँ तुम्हारे लिए बकसरत मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे।" (73)

ग़ैरुल्लाह की दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी में बदल जाएगी (आ. 66 से 73) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि देखो तो यह मुश्रिक क़ियामत का इंतिज़ार कर रहे हैं जो सिर्फ़ बेसूद है इसलिए कि उसके आने का किसी को सहीह वक़्त तो मालूम नहीं वह अचानक यूँ ही बेख़बरी की हालत में आ जाएगी। उस वक़्त भले नादिम हों लेकिन उससे क्या फ़ायदा यह भले उसे नामुम्किन समझे हुए हैं लेकिन वह न सिर्फ़ मुम्किन बल्कि यक़ीनन आने वाली ही है और उस वक़्त का यह उसके बाद का कोई अमल किसी को कुछ नफ़ा न देगा। उस दिन तो जिनकी दोस्तियाँ ग़ैरुल्लाह के लिए थीं वह सब अदावत से बदल जाएँगी। हाँ! जो दोस्ती सिर्फ़ अल्लाह तआला के वास्ते थी वह बाक़ी और दाइमी रहेगी। जैसे ख़लीलुर्रहमान (عليه السلام) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया था कि तुमने बुतों से जो दोस्तियाँ कर रखी हैं यह सिर्फ़ दुनिया के रहने तक ही हैं, क़ियामत के दिन तो एक दूसरे का न सिर्फ़ इंकार करेंगे बल्कि एक दूसरे पर लअनत भेजेंगे और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम होगा और कोई न होगा जो तुम्हारी मदद करे। इब्ने अबी हातिम में मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं "दो ईमान वाले जो आपस में दोस्त होते हैं जब उनमें से एक का इंतिक़ाल हो जाता है और अल्लाह तआला की तरफ़ से उसे जन्नत की ख़ुशख़बरी मिलती है तो वह अपने दोस्त को याद करता है और कहता है, ऐ अल्लाह! फ़लाँ शख़्स मेरा दिली दोस्त था जो मुझे तेरी और तेरे रसूल (ﷺ) की इताअत का हुक्म देता था भलाई की हिदायत करता था, बुराई से रोकता था और मुझे यक़ीन दिलाया करता था कि एक दिन अल्लाह तआला से मिलना है पस ऐ बारी तआला! तू उसे राहे हक़ पर साबित क़दम रख यहाँ तक कि उसे भी तू वह दिखाए जो तूने मुझे दिखाया है और उससे भी तू उसी तरह राज़ी हो जाए जिस तरह मुझसे राज़ी हुआ है।

अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिलता है तू ठण्डे कलेजों चला जा। उसके लिए जो कुछ मैंने तैयार किया है अगर तू उसे देख लेता तो तू बहुत हँसता और बिलकुल आजुरदा न होता। फिर जब दूसरा दोस्त मरता है और उनकी रूहें मिलती हैं तो कहा जाता है कि तुम आपस में एक दूसरे का तअल्लुक़ बयान करो। पस हर एक दूसरे से कहता है कि यह मेरा बड़ा अच्छा भाई था और निहायत नेक साथी था और बहुत बेहतर दोस्त था। दो काफ़िर जो आपस में एक दूसरे के दोस्त थे जब उनमें से एक मरता है और जहन्नम की ख़बर दिया जाता है तो उसे भी अपना दोस्त याद आता है और कहता है बारी तआला! फ़लाँ शख़्स मेरा दोस्त था तेरी और तेरे नबी की नाफ़र्मानी की मुझे ता'लीम देता था, बुराइयों की रग़बत दिलाता था, भलाइयों से रोकता था और तेरी मुलाक़ात न होने का मुझे यक़ीन दिलाता था पस तू उसे मेरे बाद हिदायत न करना कि वह भी वही देखे जो मैंने देखा और उस पर तू उसी तरह नाराज़ हो जिस तरह मुझ पर ग़ज़बनाक हुआ। फिर जब दूसरा दोस्त मरता है और उनकी रूहें जमा होती हैं तो कहा जाता है कि तुम दोनों एक दूसरे के औसाफ़ बयान करो तो हर एक कहता है तू बड़ा ही बुरा भाई था और बुरा साथी था और बदतरीन दोस्त था।'' हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत मुजाहिद और क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं हर दोस्ती क़ियामत के दिन दुश्मनी से बदल जाएगी मगर परहेज़गारों की दोस्ती। इब्ने असाकिर में है कि ''जिन दो शख़्सों ने अल्लाह तआला के लिए आपस में दोस्ती कर रखा है ख़्वाह एक मश्रिक़ में हो और दूसरा मग़रिब में लेकिन क़ियामत के दिन अल्लाह तआला उन्हें जमा करेगा कि यही है जिसे तू मेरी वजह से चाहता था।'' (इब्ने असाकिर, लम अजिदहू, और इसकी सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा है।)

फिर फ़र्माया कि इन मुत्तक़ीन से क़ियामत के दिन कहा जाएगा कि तुम ग़म व हरास से दूर रहो, हर तरह से अम्नो चैन से रहो सहो। यह है तुम्हारे ईमान व इस्लाम का बदला यानी बातिन में यक़ीन व ऐतिक़ादे कामिल और ज़ाहिर में शरीअत पर अमल। हज़रत मुअतमिर बिन सुलेमान (रह.) अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि ''क़ियामत के दिन जबकि लोग अपनी अपनी क़ब्रों से खड़े किये जाएँगे तो सबके सब घबराहट और बेचैनी में होंगे। उस वक़्त एक मुनादी निदा करेगा कि ऐ मेरे बन्दे! आज के दिन न तुम पर ख़ौफ़ है, न हरास तो सारे के सारे उसे आम समझकर ख़ुश हो जाएँगे। वहीं मुनादी कहेगा जो दिल से ईमान लाए थे और जिस्म से नेक काम किये थे उस वक़्त सिवा सच्चे पक्के, मुसलमानों के बाक़ी सब मायूस हो जाएँगे।'' फिर उनसे कहा जाएगा कि तुम और तुम जैसे नेअमत व सआदत के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओ। सूरह रूम में इसकी तफ़्सीर गुज़र चुकी है। चारों तरफ़ से उनके सामने तरह तरह के लज़ीज़ मुर्ग़न ख़ुश ज़ायक़ा मरग़ूब खानों की तश्तियाँ रकाबियाँ और क़ाबें पेश होंगी और छलकते हुए जाम हाथों में लिए हुए ग़िलमान इधर उधर गर्दिश कर रहे होंगे (तश्तहीहिल अंफ़ुस) और (तश्तहिल अंफ़ुस) दोनों क़िराअतें हैं।

यानी उन्हें मज़ेदार ख़ुश्बू वाले अच्छी रंगत वाले मनमाने खाने पीने मिलेंगे। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''सबसे नीचे दर्जा का जन्नती जो सबसे आख़िर में जाएगा उसकी नज़र सौ साल के रास्ते तक जाती होगी लेकिन बराबर वहाँ तक उसे अपने ही डेरे ख़ेमे और महल सोने के और ज़मर्रुद के नज़र आएँगे जो तमाम के तमाम क़िस्म क़िस्म और रंग बिरंग के साज़ो सामान से पुर होंगे। सुबह शाम सत्तर सत्तर हज़ार रकाबियाँ

प्याले अलग अलग वज़अ के खाने से पुर उसके सामने रखे जाएँगे जिनमें से हर एक उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ होगा और पहले से आख़िर तक उसकी इश्तिहा बराबर और यक्साँ रहेगी। अगर वह रूए ज़मीन वालों की दावत करे तो सबको किफ़ायत हो जाए और कुछ न घटे।'' (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।)

इब्ने अबी ह़ातिम में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने जन्नत का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया कि ''जन्नती एक लुक़्मा उठाएगा और उसके दिल में ख़्याल आएगा कि फ़लाँ क़िस्म का खाना होता, चुनाँचे वह निवाला उसके मुँह में वही चीज़ बन जाएगा जिसकी उसने ख़्वाहिश की थी। फिर आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की।'' (यह रिवायत मुन्क़तअ यानी ज़ईफ़ है।) मुस्नद अह़मद में है कि ''अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) फ़र्माते हैं सबसे अदना मर्तबा के जन्नती के बालाख़ाने की सात मंज़िलें होंगी। यह छटी मंज़िल में होगा और उसके ऊपर सातवीं होगी। उसके तीस ख़ादिम होंगे जो सुबह़ शाम तीन सौ सोने के बरतनों में उसके लिए खाना व शराब पेश करेंगे हर एक में अलग अलग क़िस्म का अजीबो ग़रीब और निहायत लज़ीज़ खाना होगा। पहले से आख़िर तक उसे खाने की इश्तिहा वैसी ही रहेगी इसी त़रह़ तीन सौ सोने के प्यालों और कटोरों और ग्लासों में उसे पीने की चीज़ें दी जाएँगी। वह भी एक से एक सिवा होगी। यह कहेगा कि ऐ अल्लाह! अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं तमाम जन्नतियों की दावत करूँ सब भी अगर मेरे यहाँ खा जाएँ तो भी मेरे खाने में कमी नहीं आ सकती। और उसकी बहत्तर बीवियाँ हूरे ईन में से होंगी और दुनिया की और बीवियाँ अलग होंगी। उनमें से एक एक मील मील भर की जगह में बैठी होंगी। (अह़मद : 2/537; और इसकी सनद ह़सन है; अन्निहाया बि तह़क़ीक़ी : 1412; वला अदरी लि अय्यि शैइन क़ालल ह़ाफ़िज़ु इब्ने कसीर फ़िन्नहाया, ''व फ़ीहि इंक़िताअ'' शहर बिन हुवेशिब ह़सनुल ह़दीस वलम युसब्बित तदलीसा, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/400; सिफ़तुल जन्नत लि अबी नुऐम : 229 मुख़्तसरन) फिर साथ ही उनसे कहा जाएगा कि यह नेअमतें भी हमेशगी वाली हैं और तुम भी यहाँ हमेशा ही रहोगे, न मौत आए, न घाटा आए, न जगह बदले न तक्लीफ़ पहुँचे। फिर उन पर अपना फ़ज़्लो एह़सान बतलाया जाता है कि तुम्हारे आमाल का बदला मैंने अपनी वसीअ रह़मत से तुम्हें यह दिया है क्योंकि कोई शख़्स बग़ैर अल्लाह की रह़मत के सिर्फ़ अपने आमाल की बिना पर नहीं जा सकता। हाँ! अल्बत्ता जन्नत के दर्जों में तफ़ावुत (डिफ़्रेन्स) जो होगा वह नेक आमाल की वजह से।''

इब्ने अबी ह़ातिम में है कि ''रसूले मक़्बूल (ﷺ) फ़र्माते हैं जहन्नमी अपनी जन्नत की जगह जहन्नम में से देखेंगे और ह़सरत व अफ़सोस से कहेंगे अगर अल्लाह तआला मुझे भी हिदायत करता तो मैं भी मुत्तक़ियों में हो जाता। और हर एक जन्नती भी अपनी जहन्नम की जगह जन्नत में से देखेंगे और अल्लाह तआला का शुक्र करते हुए कहेगा कि हम ख़ुद अपने तौर पर राहे रास्त के ह़ासिल करने पर क़ादिर न थे अगर अल्लाह तआला ख़ुद हमारी रहनुमाई न करता।'' आप (ﷺ) फ़र्माते हैं ''हर हर शख़्स की एक जगह जन्नत में है और एक जगह जहन्नम में। पस काफ़िर मोमिन की जहन्नम की जगह का वारिस होगा और मोमिन काफ़िर की जन्नत की जगह का वारिस होगा।'' (और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अअमश मुदल्लस हैं।) यही फ़र्माने बारी तआला है कि उस जन्नत के वारिस तुम बसबबे अपने आमाल के बनाए गए हो।

खाने पीने के ज़िक्र के बाद अब मेवों और तरकारियों का बयान हो रहा है कि यह भी बकसरत मरग़ूब तबअ उन्हें मिलेंगी जिस क़िस्म की यह चाहें और इनकी ख़्वाहिश हो। ग़र्ज़ भरपूर नेअमतों के साथ रब्बे तआला की रज़ामंदी के घर में हमेशा रहेंगे। अल्लाह तआला हमें भी नसीब करे, आमीन।

***

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَلِدُونَ ﴿٧٤﴾ لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ﴿٧٥﴾
وَمَا ظَلَمْنَٰهُمْ وَلَٰكِن كَانُوا هُمُ الظَّٰلِمِينَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يَٰمَٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ
قَالَ إِنَّكُم مَّٰكِثُونَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنَٰكُم بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَٰرِهُونَ ﴿٧٨﴾ أَمْ
أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ﴿٧٩﴾ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَىٰهُم بَلَىٰ
وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

तर्जुमा : ''बेशक गुनहगार लोग अज़ाबे दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे। (74) यह अज़ाब कभी भी उनसे हल्का न किया जाएगा और वह उसी में मायूस पड़े रहेंगे। (75) और हमने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि यह ख़ुद ही ज़ालिम थे। (76) और पुकार पुकारकर कहेंगे कि ऐ मालिक! तेरा रब्बे तआला हमारा काम ही तमाम कर दे। वह कहेगा कि तुम्हें तो हमेशा रहना है। (77) हम तो तुम्हारे पास हक़ ले आए लेकिन तुममें से अक्सर लोग हक़ से नफ़रत रखने वाले हैं। (78) क्या इन्होंने किसी काम का पुख़्ता इरादा कर लिया है तो यक़ीन मानो कि हम भी पुख़्ता काम करने वाले हैं। (79) क्या इनका यह ख़्याल है कि हम इनकी पोशीदा बातों को और उनके मश्वरों को नहीं सुनते? बराबर सुन रहे हैं बल्कि हमारे भेजे हुए इनके पास ही लिख रहे हैं।'' (80)

जहन्नमी मौत की तमन्ना करेंगे (आ. 74 से 80) : ऊपर चूँकि नेक लोगों का ह़ाल बयान हुआ था इसलिए यहाँ बदबख़्तों का ह़ाल बयान हो रहा है कि यह गुनहगार जहन्नम के अ़ज़ाबों में हमेशा रहेंगे। एक साअ़त भी उन्हें उन अ़ज़ाबों में छूट न होगी और उसमें वह नाउम्मीद से अपनी जान पर आप ही ज़ुल्म किया। हमने रसूल भेजे किताबें नाज़िल कीं। हुज्जत क़ायम कर दी लेकिन यह अपनी सरकशी से इस्यान से तुग़ियान से बाज़ न आये उस पर यह बदला पाया। उस पर अल्लाह तआला का कोई ज़ुल्म नहीं और न अल्लाह तआला अपने बन्दों पर ज़ुल्म करता है। यह जहन्नमी मालिक को यानी दारोग़ा जहन्नम को पुकारेंगे। स़ह़ीह़ बुख़ारी में है

कि "हुज़ूर (ﷺ) ने मिम्बर पर इस आयत की तिलावत की। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ : 4819; सहीह मुस्लिम : 871) और फ़र्माया यह मौत की तमन्ना करेंगे ताकि अज़ाब से छूट जाएँ।" लेकिन अल्लाह तआला का यह फ़ैसला हो चुका है कि (لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ عَذَابِهَا) (35/फ़ातिर : 36) यानी न तो इन्हें मौत आएगी और न अज़ाब में छूट मिलेगी। और फ़र्माने बारी तआला है (وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرَىٰ ﴿١٢﴾ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿١٣﴾) (78/आला : 11 से 13) यानी वह बदबख़्त उस नसीहत से अलग हो जाएगा जो बड़ी सख़्त आग में पड़ेगा फिर वहाँ न मरेगा और न जियेगा। पस जब यह दारोग़ा जहन्नम से निहायत लजाजत से कहेंगे कि आप हमारी मौत की दुआ अल्लाह तआला से कीजिए। तो वह जवाब देगा कि तुम इसी में पड़े रहने वाले हो मरोगे नहीं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं म क स एक हज़ार साल है। यानी न मरोगे, न छुटकारा पाओगे, न भाग सकोगे। फिर उनकी स्याहकारी का बयान हो रहा है कि जब हमने उनके सामने हक़ को पेश किया वाज़ेह कर दिया तो उन्होंने उसे मानना तो एक तरफ़ उससे नफ़रत की उनकी तबीअत ही उस तरफ़ माइल न हुई, हक़ और हक़ वालों से नफ़रत करते रहे उससे रुकते रहे। हाँ! नाहक़ की तरफ़ माइल रहे नाहक़ वालों से उनकी ख़ूब बनती रही। पस तुम अपने नफ़्स को ही मलामत करो और अपने ऊपर ही अफ़सोस करो। लेकिन आज का अफ़सोस भी बेफ़ायदा है।

फिर फ़र्माता है कि इन्होंने बदतरीन मकर और ज़बरदस्त दाव खेलना चाहा तो हमने भी इनके साथ यही किया। हज़रत मुजाहिद (रह.) की यही तफ़्सीर है और इसकी शहादत इस आयत में है (وَمَكَرُوا مَكْرًا وَمَكَرْنَا مَكْرًا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ) (27/नम्ल : 50) यानी इन्होंने मकर किया और हमने भी इस तरह मकर किया कि इन्हें पता भी न चला। मुश्रिकीन हक़ को टालने के लिए तरह तरह की हीलासाज़ी करते रहते थे अल्लाह तआला ने भी उन्हें धोखे में ही रखा और उसका वबाल जब तक उनके सरों पर न आ गया उनकी आँखें न खुलीं। इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया कि क्या इनका गुमान है कि हम इनकी पोशीदा बातें और ख़ुफ़िया सरगोशियाँ सुन नहीं रहे। इनका यह गुमान बिलकुल ग़लत है। हम तो इनकी सरिश्त तक से वाक़िफ़ हैं बल्कि हमारे मुक़र्ररकर्दा फ़रिश्ते भी इनके पास बल्कि इनके साथ हैं जो न सिर्फ़ देख ही रहे हैं बल्कि लिख भी रहे हैं।

***

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَٰنِ وَلَدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾ سُبْحَانَ رَبِّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿٨٢﴾ فَذَرْهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾ وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ وَهُوَ

الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ
الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾
فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

तर्जुमा : ''कह दे कि अगर बिल्फ़र्ज़ रहमान की औलाद हो तो मैं सबसे पहले इबादतगुज़ार होता। (81) आसमान व ज़मीन और अर्श का रब जो कुछ यह बयान करते हैं उससे बहुत पाक है। (82) अब तो इन्हें इसी बहस मुबाहिसे और खेल कूद में छोड़ दे यहाँ तक कि इन्हें उस दिन से सामना पड़ जाए जिनका यह वादा दिये जाते हैं। (83) वही आमसानों में भी मअ़बूद है और ज़मीन में भी वही क़ाबिले इबादत है और वह बड़ी हिक्मत वाला और पूरे इल्म वाला है। (84) और वह बहुत बरकतों वाला है जिसके पास आसमान व ज़मीन और उनके बीच की बादशाहत है। क़ियामत का इल्म भी उसी के पास है। और उसी की जानिब तुम सब लौटाए जाओगे। (85) जिन्हें यह लोग अल्लाह तआ़ला के सिवा पुकारते हैं वह शफ़ाअ़त करने का इख़्तियार नहीं रखते। हाँ! मुस्तहिक़े शफ़ाअ़त वह हैं जो हक़ बात का इक़रार करें और उन्हें इल्म भी हो। (86) अगर तू इनसे पूछे कि इन्हें किसने पैदा किया है? तो यक़ीनन जवाब देंगे कि अल्लाह तआ़ला ने, फिर यह कहाँ उल्टे जाते हैं। (87) और पैग़म्बर का अक्सर यह कहना कि ऐ मेरे रब! यक़ीनन यह वह लोग हैं जो ईमान नहीं लाते। (88) पस तू इनसे मुँह फेर ले और रुख़्सतन सलाम कह दे। उन्हें ख़ुद ही मालूम हो जाएगा।'' (89)

अल्लाह तआ़ला की सिफ़ाते कामिला और कुफ़्फ़ार की हठधर्मी का बयान (आ. 81 से 89) : ऐ नबी (ﷺ)! आप ऐलान कर दीजिए कि अगर बिल्फ़र्ज़ अल्लाह तआ़ला की औलाद हो तो मुझे सिर झुकाने में क्या ताम्मुल है? न मैं उसके फ़र्मान से सरताबी करूँ न उसके किसी हुक्म को टालूँ अगर ऐसा होता तो सबसे पहले मैं उसे मानता और उसका इक़रार करता। लेकिन अल्लाह तआ़ला की ज़ात ऐसी नहीं जिसका कोई हमसर और जिसका कोई कुफ़ू (बराबरी) हो। याद रहे कि बतौर शर्त के जो कलाम वारिद किया

जाए उसका वक़ूअ ज़रूरी नहीं बल्कि इम्कान भी ज़रूरी नहीं। जैसे फ़र्मान बारी तआला है (لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَن يَتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ) (39/ज़ुमर : 4) यानी अगर अल्लाह जल्ल व अला औलाद की ख़्वाहिश करता तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसे चाहता चुन लेता लेकिन वह इससे पाक है। उसकी शाने वहदानियत इसके ख़िलाफ़ है उसका तंहा ग़ल्बा और क़हहारियत उसकी सरीह मनाफ़ी है कुछ मुफ़स्सिरीन ने (आबेदीन) के मअनी इंकारी के भी किये हैं जैसे हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.)। सहीह बुख़ारी में है कि (आबिदीन) नून से मुराद यहाँ अव्वलुल जाहिदीन है यानी पहला इंकार करने वाला। और यह अबिदा यअबुदु के बाब से है और जो इबादत के मअनी में होता है वह अबद यअबुदु से होता है। इसी की शहादत में यह वाक़िया भी है कि एक औरत के निकाह के छः माह बाद बच्चा हुआ। हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने उसे रजम करने का हुक्म दिया। लेकिन हज़रत अली (रज़ि.) ने उसकी मुख़ालिफ़त की और फ़र्माया, अल्लाह तआला की किताब में है (व हम्लुहू व फ़िसालुहू सलासूना शहरन) यानी हमल की और दूध छुटाई की मुद्दत ढाई साल की है। और जगह है अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया (व फ़िसालुहू फ़ी आमैन) दो साल के अंदर अंदर दूध छूड़ाने की मुद्दत है। हज़रत उस्मान(रज़ि. इनका इंकार न कर सके और फ़ौरन आदमी भेजा कि उस औरत को वापिस करो। यहाँ भी लफ़्ज़ अबिदा है यानी इंकार न कर सके, इब्ने वहब कहते हैं अबिदा के मअनी न मानना, इंकार करना है। शायर के शेअर में भी अबिदा इंकार के और न मानने के मअनी में है। लेकिन इस क़ौल में नज़र है इसलिए कि शर्त के जवाब में यह कुछ ठीक तौर पर लगता नहीं। इसे मानने के बाद मतलब यह हो जाएगा कि अगर रहमान की औलाद है तो मैं पहले इंकारी हूँ। और इसमें कलाम की ख़ूबसूरती क़ायम नहीं रहती, हाँ! सिर्फ़ यह कह सकते हैं कि इन शर्त के लिए नहीं बल्कि नफ़ी के लिए है। जैसे कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मंक़ूल भी है। तो अब मज़्मूने कलाम यह होगा कि चूँकि रहमान की औलाद नहीं पस मैं उसका पहला गवाह हूँ। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि ''यह कलाम अरब के मुहावरे के मुताबिक़ है यानी न रहमान की औलाद न मैं इसका क़ाइल व आबिद।'' अबू सख़र (रह.) फ़र्माते हैं कि मतलब यह है कि ''मैं तो पहले ही उसका आबिद हूँ कि उसकी औलाद है ही नहीं और मैं उसकी तौहीद को मानने में भी आगे आगे हूँ।'' मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''मैं उसका पहला इबादतगुज़ार हूँ और मुवह्हिद हूँ और तुम्हारी तक्ज़ीब करने वाला हूँ।'' इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं मैं पहला इंकारी हूँ। यह दोनों लुग़त हैं आबिद और अबिदा और पहले ही ज़्यादा क़रीब है इस वजह से कि यह शर्त व जज़ा है लेकिन है यह मुम्तनिअ और महाल महज़ नामुम्किन । सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं अगर उसकी औलाद होती तो मैं उसे पहले मान लेता कि उसकी औलाद है लेकिन वह इससे पाक है। इब्ने जरीर (रह.) इसी को पसंद करते हैं और जो लोग इनको नाफ़िया बतलाते हैं उनके क़ौल की तर्दीद करते हैं इसीलिए बारी तआला फ़र्माता है कि आसमान व ज़मीन और तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ इससे पाक बहुत दूर और बिलकुल मुनज़्ज़ा है कि उसकी औलाद हो वह फ़र्द वाहिद व समद है उसकी नज़ीर कुफ़ू औलाद कोई नहीं। इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! इन्हें अपनी जिहालत में पड़े रहने दे और दुनिया के खेल तमाशों में लगे रहने दे। इसी ग़फ़्लत में इन पर क़ियामत टूट पड़ेगी उस वक़्त अपना अंजाम मालूम कर लेंगे। फिर ज़ाते हक़ की

बुज़ुर्गी और अज़्मत और जलाल का मज़ीद बयान होता है कि ज़मीनो आसमान की तमाम मख़्लूक़ात उसकी आबिद है उसके सामने पस्त और आजिज़ है वह हकीम व अलीम है, जैसे और आयत में है कि ज़मीनो आसमान में अल्लाह तआला वही है। हर पोशीदा और ज़ाहिर को और तुम्हारे हर हर अमल को जानता है। वह सबका ख़ालिक़ व मालिक सबका रचाने और बनाने वाला, सब पर हुकूमत और सल्तनत रखने वाला, बड़ी बरकतों वाला है, वह तमाम ऐबों से, कुल नुक़्सानात से पाक है, वह सबका मालिक है, बुलंदियों वाला और अज़्मतों वाला है, कोई नहीं जो उसका हुक्म टाल सके कोई नहीं जो उसकी मर्ज़ी बदल सके हर एक पर क़ाबिज़ वही है हर एक काम उसकी क़ुदरत के मातहत है। क़ियामत के आने के वक़्त को वही जानता है उसके सिवा किसी को उसके आने का ठीक वक़्त का इल्म नहीं। सारी मख़्लूक़ उसी की तरफ़ लौटाई जाएगी वह हर एक को अपने अपने आमाल का बदला देगा।

फिर इर्शाद होता है कि इन कुफ़्फ़ारों के मअबूदाने बातिल जिन्हें यह अपना सिफ़ारिशी ख़्याल किये बैठे हैं उनमें से कोई भी सिफ़ारिश के लिए आगे बढ़ नहीं सकता किसी की सिफ़ारिश उन्हें काम न आएगी। उसके बाद का इस्तिस्ना मुन्क़तअ है यानी लेकिन जो शख़्स हक़ का इक़रारी और शाहिद हो और वह ख़ुद भी बसीरत व बसारत पर यानी इल्म व मअरिफ़त वाला हो उसे अल्लाह तआला के हुक्म से नेक लोगों की शफ़ाअत कारआमद होगी। उनसे अगर तू पूछे कि उनका ख़ालिक़ कौन है? तो यह इक़रार करेंगे कि अल्लाह तआला ही है। अफ़सोस कि ख़ालिक़ उसी एक को मानकर फिर इबादत दूसरों की भी करते हैं जो सिर्फ़ मजबूर और बिलकुल बेक़ुदरत हैं और कभी अपनी अक़्ल को काम में नहीं लाते कि जब पैदा उसी एक ने किया तो हम दूसरे की इबादत क्यूँ करें? जिहालत व ग़बावत कुंद ज़हनी और बेवक़ूफ़ी इतनी बढ़ गई है कि ऐसी सीधी सी बात मरते दम तक समझ में न आई बल्कि समझाने से भी न समझे। इसीलिए ताज्जुबन इर्शाद हुआ कि इतना मानते हुए फिर क्यूँ औंधे हुए जाते हो? फिर इर्शाद है कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपना यह कहना कहा यानी अपने रब्बे तआला की तरफ़ शिकायत की और अपनी क़ौम की तक्ज़ीब का बयान किया कि यह ईमान क़बूल नहीं करते जैसे और आयत में है (وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَٰذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا) (25/फ़ुरक़ान : 30) यानी रसूल (ﷺ) की यह शिकायत अल्लाह तआला के सामने होगी कि मेरी उम्मत ने इस क़ुरआन को छोड़ रखा था। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी यही तफ़्सीर करते हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते है, इब्ने मसऊद (रज़ि.) की क़िरअत (वक़ालर्रसूलु या रब्बि हाउलाइ...) है। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं, "अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने नबी (ﷺ) का क़ौल नक़्ल कर रहा है।"

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि "यह तुम्हारे नबी (ﷺ) का क़ौल है अपने रब्बे तआला के सामने अपनी क़ौम की शिकायत पेश करते हैं। इब्ने जरीर (रह.) ने (क़ीलिही) की दूसरी क़िरअत लाम के ज़बर के साथ भी नक़्ल की है। इसकी एक तौजीह तो यह हो सकती है कि यह (नस्मउ सिर्रहुम व नज्वाहुम) पर मअतूफ़ है। दूसरे यह कि यहाँ फ़ेअल मुक़द्दर माना जाए यानी (क़ाल) को मुक़द्दर माना जाए। दूसरी क़िरअत यानी लाम के ज़ेर के साथ जब हो तो यह अत्फ़ होगा (व इन्दहू इल्मुस्साअत) पर, तो तक़्दीर यूँ होगी

कि क़ियामत का इल्म और इस क़ौल का इल्म उसके पास है। ख़त्म सूरह पर इर्शाद होता है कि मुश्रिकीन से मुँह मोड़ लो और उनकी बदज़ुबानी का बदकलामी का जवाब न दो। बल्कि उनके दिल को माइल करने की ख़ातिर क़ौल में और फ़ेअल में दोनों में नर्मी बरतो। कह दो कि सलाम है। उन्हें अभी हक़ीक़त मालूम हो जाएगी। इसमें रब्बे क़ुद्दूस की तरफ़ से मुश्रिकीन को बड़ी धमकी है और यही होकर भी रहा कि उन पर अज़ाब आया जो उनसे टल न सका। हज़रत हक़ जल्ल व अला ने अपने दीन को बुलंद बाला किया अपने कलिमे को चारों तरफ़ फैला दिया। अपने मुवह्हिद मोमिन और मुस्लिम बन्दों को क़वी कर दिया और फिर उन्हें जिहाद के और जिला वतन करने के अहकाम देकर इस तरह दुनिया में ग़ालिब कर दिया कि ख़ुदा तआला के दीन में बेशुमार आदमी दाख़िल हुए और मश्रिक़ व मग़्रिब में इस्लाम फैल गया, फ़ल्हम्दु लिल्लाह, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! अल्लाह के फ़ज़्लो करम से सूरह ज़ुख़रुफ़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह दुख़ान - 44

आयात : 59 मक्की पैराग्राफ : 8

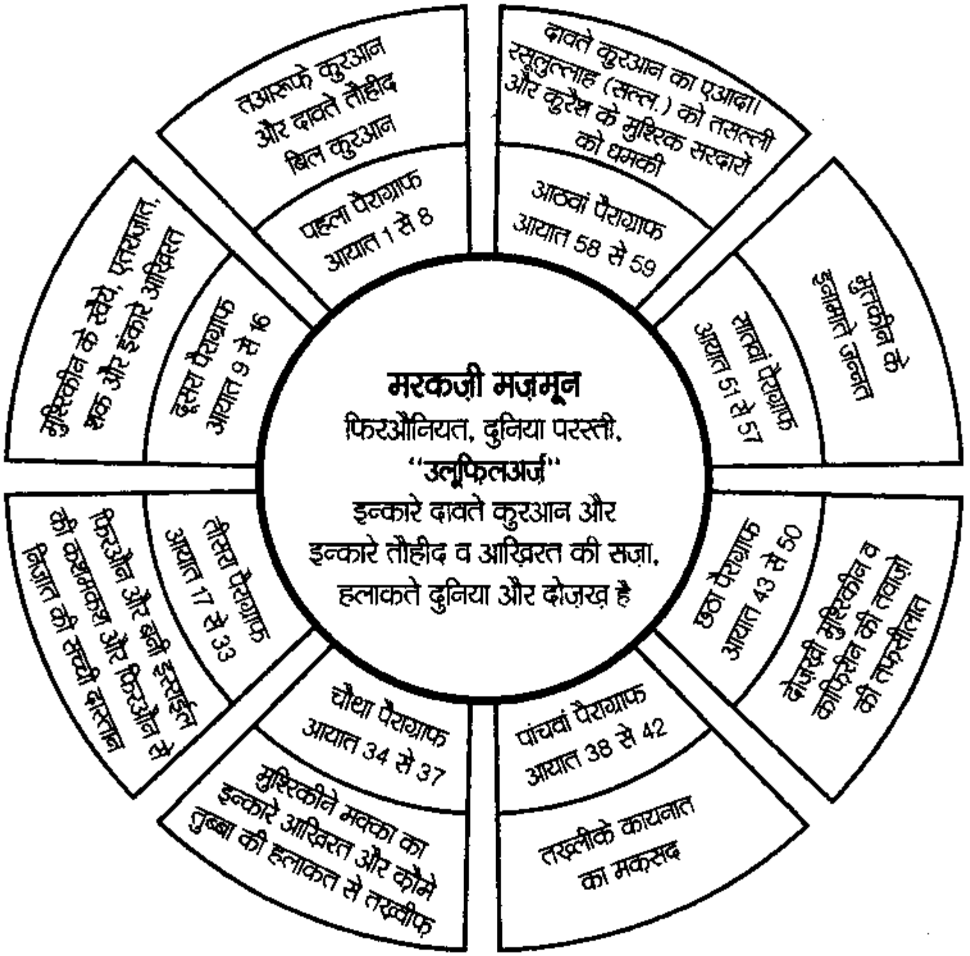

तफ़्सीर सूरह दुख़ान

जामेअ तिर्मिज़ी में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि जो शख़्स रात को सूरह हामीम दुख़ान पढ़े उसके लिए सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं।'' (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइले कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि हामीम अद्दुख़ान : 2888; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है, शुअबुल ईमान : 2475; किताबुल मौज़ूआत 1/248 इसकी सनद में उमर बिन अबी ख़स्अम ज़ईफ़ रावी है।) यह हदीस ग़रीब है और इसके एक रावी उमर बिन अबी ख़स्अम ज़ईफ़ है। इमाम बुख़ारी (रह.) इन्हें मुंकरुल हदीस कहते हैं। तिर्मिज़ी की एक और हदीस में है कि जिसने इस सूरह को जुम्आ की रात पढ़ा उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइले कुरआन, बाब मा जाअ फ़ी फ़ज़्लि हामीम अद्दुख़ान : 2889; और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है, शुअबुल ईमान : 2475; किताबुल मौज़ूआत 1/247 इसकी सनद में हिशाम बिन ज़ियाद मतरूक रावी है। (अत्तक़रीब : 2/318; रक़म : 79) यह हदीस भी ग़रीब है और इसके एक रावी अबुल मिक़्दाम हिशाम ज़ईफ़ हैं और दूसरे रावी हसन का हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इब्ने सय्याद के सामने अपने दिल में सूरह दुख़ान को पोशीदा करके उससे पूछा कि बता मेरे दिल में क्या है? उसने कहा, दुख। आपने फ़र्माया, बस परे हट जाना मुराद रह गया जो अल्लाह तआला चाहता है होता है। फिर आप (ﷺ) लौट गए। (बज़्ज़ार : 3399; और इसकी सनद ज़ईफ़ मुन्क़तअ है; तबरानी : 4666; और इसकी सनद मुत्तसिल वलाकिन फ़ीही इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह बिन ईसा तनूख़ी लम यूसिक़हू ग़ैर इब्ने हिब्बान फ़स्सनदु ज़ईफ़; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/7; अल्औसत लित्तब्रानी : 4/520, 521; ह : 3887)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

حٰمٓ ⓵ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ⓶ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ⓷ فِيْهَا
يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ⓸ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ⓹ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ⓺ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ
مُّوْقِنِيْنَ ⓻ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ⓼

तर्जुमा : "हामीम! (1) क़सम है इस वाज़ेह किताब की। (2) यक़ीनन हमने इसे बाबरकत रात में उतारा है। बेशक हम होशियार कर देने वाले हैं। (3) इसी रात में हर एक मज़बूत काम का फ़ैसला किया जाता है।(4) हमारे पास से हुक्म होकर। हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले। (5) तेरे रब्बे तआला की मेहरबानी से। वह है बहुत बड़ा सुनने वाला जानने वाला। (6) जो रब है आसमानों का और ज़मीन का और जो कुछ उनके बीच है अगर तुम यक़ीन करने वाले हो। (7) कोई मअबूद नहीं उसके सिवा वही जिलाता है और मारता है। वही तुम्हारा रब्बे तआला है और तुम्हारे अगले बाप दादों का।" (8)

लैलतुल क़द्र रमज़ान में है न कि शअबान में (आ. 1 से 8) : अल्लाह तबारक व तआला बयान करता है कि इस अज़ीमुश्शान कुरआने करीम को बाबरकत रात यानी लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया है। जैसे इर्शाद है (إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ) (97/क़द्र : 1) हमने इसे लैलतुल क़द्र में नाज़िल किया है। और यह रात रमज़ानुल मुबारक में है जैसे और आयत में है (شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ)(2/बक़रह : 185) रमज़ान का महीना वह महीना है जिसमें कुरआने करीम उतारा गया है। सूरह बक़रह में इसकी पूरी तफ़्सीर गुज़र चुकी है इसलिए दोबारा नहीं लिखते। कुछ लोगों ने यह भी कहा है कि लैलतुल मुबारका जिसमें कुरआने करीम नाज़िल हुआ वह शअबान की पन्द्रहवीं रात है लेकिन यह क़ौल सरासर तकल्लुफ़ वाला है इसलिए कि नस्से कुरआन में कुरआन का रमज़ान में नाज़िल होना साबित है। और जिस हदीस में मरवी है कि शअबान में अगले शअबान तक के तमाम काम मुक़र्रर कर दिये जाते हैं यहाँ तक कि निकाह का और औलाद का और मय्यित का होना भी। वह हदीस मुर्सल है और ऐसी अहादीस में से नस्से कुरआनी का मुआरज़ा नहीं किया जा सकता। हम लोगों को आगाह कर देने वाले हैं यानी उन्हें ख़ेरो शर्र नेकी और बदी मालूम करा देने वाले हैं ताकि मख़्लूक़ पर हुज्जत साबित हो जाए और लोग इल्मे शरई हासिल कर लें इसी रात हर मुहकम काम तै किया जाता है यानी लोहे महफ़ूज़ से कातिब फ़रिश्तों के हवाले किया जाता है तमाम साल के कुल अहम काम उम्र, रोज़ी वग़ैरह सब तै कर ली जाती है। हकीम के मअनी मुहकम और मज़बूत के हैं जो बदले नहीं। वह सब हमारे हुक्म से होता है, हम रसूलों को इर्साल करते हैं ताकि वह अल्लाह तआला की आयतें अल्लाह तआला के बन्दों को पढ़कर सुनाएँ जिसकी उन्हें सख़्त ज़रूरत और पूरी हाजत है। यह तेरे रब्बे तआला की रहमत है उस रहमत का करने वाला कुरआन को उतारने वाला और रसूलों को भेजने वाला वह अल्लाह तआला है जो आस्मान ज़मीन और कुल चीज़ का मालिक है और सबका ख़ालिक़ है। तुम अगर यक़ीन करने वाले हो तो उसके बावर करने के काफ़ी वुजूहात मौजूद हैं। फिर इर्शाद हुआ कि मअबूदे बरहक़ भी वही है उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। हर एक की मौत ज़ीस्त उसी के हाथ है और तुम्हारा और तुमसे अगलों का सबका पालने पोसने वाला वही है। इस आयत का मज़्मून इस आयत जैसा है (قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا) (7/आराफ़ : 158)यानी तू ऐलान कर दे कि ऐ लोगों! मैं तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ वो अल्लाह तआला जिसकी बादशाहत है आसमान व ज़मीन की। जिसके सिवा कोई मअबूद नहीं जो जिलाता और मारता है।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝٩ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝١٠ يَّغْشَى
النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١١ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ اَنّٰى لَهُمُ
الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝١٤ اِنَّا
كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝١٥ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا
مُنْتَقِمُوْنَ ۝١٦

तर्जुमा : "बल्कि वह शक में हैं खेल में पड़े हैं। (9) तू उस दिन का इंतिज़ार कर जबकि आसमान ज़ाहिर धुआँ लाए (10) जो लोगों को घेर ले। यह है दुख की मार। (11) कहेंगे कि ऐ हमारे रब! यह आफ़त हमसे दूर कर हम ईमान क़बूल करते हैं। (12) उनके लिए नसीहत कहाँ है? खोल खोलकर बयान करने वाले पैग़म्बर इनके पास आ चुके (13) फिर भी इन्होंने उनसे मुँह मोड़ा और कहा कि सिखाया पढ़ाया हुआ बावला है। (14) हम अ़ज़ाब को कुछ दिनों दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। (15) जिस दिन हम बड़ी सख़्त पकड़ पकड़ेंगे। बिल्यक़ीन हम बदला लेने वाले हैं।" (16)

मुश्रिकीने मक्का पर धुएँ का अ़ज़ाब (आ. 9 से 16) : फ़र्माता है कि हक़ आ चुका और यह शक शुब्हा में और लहो लइब (मोजमस्ती) में मशग़ूल मसरूफ़ हैं। इन्हें उस दिन से आगाह कर दे जिस दिन आसमान से सख़्त धुआँ आएगा। हज़रत मसरूक़ (रह.) फ़र्माते हैं कि "हम एक बार कूफ़ा की मस्जिद में गए जो कन्दा के दरवाज़ों के पास है तो देखा कि एक हज़रत अपने साथियों में क़िस्सागोई करते हुए फ़र्माते हैं कि इस आयत में जिस धुएँ का ज़िक्र है उससे मुराद वह धुआँ है जो क़ियामत के दिन मुनाफ़िक़ों के कानों और आँखों में भर जाएगा और मोमिनों को मिस्ल ज़ुकाम के हो जाएगा। हम वहाँ से जब वापिस लौटे और हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से इसका ज़िक्र किया तो आप लेटे लेटे बेताबी के साथ बैठ गए और कहने लगे, अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया है मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं चाहता और मैं तकल्लुफ़ करने वालों में नहीं हूँ। यह भी इल्म है कि इंसान जिस चीज़ को न जानता हो कह दे कि अल्लाह तआ़ला जाने। सुनो! मैं तुम्हें इस आयत का सहीह मतलब सुनाऊँ जबकि क़ुरैशियों ने इस्लाम क़बूल करने में ताख़ीर की और हुज़ूर (ﷺ) को सताने लगे तो आपने उन पर बद् दुआ की कि यूसुफ़ (عليه السلام) के ज़माने जैसा क़हत़ इन पर आए

चुनाँचे वह दुआ क़बूल हुई और ऐसी ख़ुश्कसाली आई कि उन्होंने हड्डियाँ और मुरदार चबाना शुरू कर दिया और आसमान की तरफ़ निगाहें डालते थे तो धुएँ के सिवा कुछ दिखाई न देता था।'' एक रिवायत में है कि बवजह भूख के उनकी आँखों में चक्कर आने लगा जब आसमान की तरफ़ नज़र उठाते तो बीच में एक धुआँ नज़र आता। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह दुख़ान, बाब (युग़शन्नासा हाज़ा अज़ाबुन अलीम) : 4821, 4822; सहीह मुस्लिम : 2798; तिर्मिज़ी : 3254) इसी का बयान इन दो आयतों में है लेकिन फिर इसके बाद लोग हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी हलाकत की शिकायत की। आपको रहम आ गया और आप (ﷺ) ने जनाबे बारी तआला में इल्तिजा की चुनाँचे बारिश बरसी। उसी का बयान उसके बाद वाली आयत में है कि अज़ाब के हटते ही यह फिर कुफ़्र करने लगेंगे। इससे साफ़ साबित है कि यह दुनिया का अज़ाब है क्योंकि आख़िरत के अज़ाब तो हटते खुलते और दूर होते नहीं। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है कि पाँच चीज़ें गुज़र चुकीं। दुख़ान, रूम, क़मर, बतशा और लिज़ाम (सहीह बुख़ारी, , किताबुत्तफ़्सीर, सूरह दुख़ान, बाब (युग़शन्नासा हाज़ा अज़ाबुन अलीम) : 4820; सहीह मुस्लिम : 2798) यानी आसमान से धुएँ का आना, रूमियों का अपनी हार के बाद ग़ल्बा पाना, चाँद का दो टुकड़े होना, बद्र की लड़ाई में कुफ़्फ़ार का पकड़ा जाना और हारना और चिमट जाने वाला अज़ाब। बड़ी सख़्त पकड़ से मुराद बद्र के दिन की लड़ाई है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) जो मुराद धुएँ से लेते हैं यही क़ौल मुजाहिद, अबुल आलिया, इब्राहीम नख़ई, ज़ह्हाक, अतिया औफ़ी (रहि.) वग़ैरह का है। (तबरी : 22/16) और इसी को इब्ने जरीर (रह.) भी तर्जीह देते हैं। अब्दुर्रहमान अअरज (रह.) से मरवी है कि यह फ़तहे मक्का के दिन हुआ। यह क़ौल ग़रीब बल्कि मुंकर है।

क़ियामत का धुआँ : और कुछ हज़रात कहते हैं यह गुज़र नहीं गया बल्कि क़ुर्बे क़ियामत के आएगा। पहले हदीस गुज़र चुकी है कि जब सहाबा (रज़ि.) क़ियामत का ज़िक्र कर रहे थे और हुज़ूर (ﷺ) आ गए तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया ''जब तक दस निशानात तुम न देख लो क़ियामत नहीं आने की। सूरज का मग़रिब से निकलना, धुआँ, याजूज माजूज का आना, हज़रत ईसा बिन मरियम का आना, दज्जाल का आना, मश्रिक़ मग़रिब और जज़ीरा अरब में ज़मीन का धँसाया जाना, आग का अदन से निकलकर लोगों को हाँककर यकजा करना, जहाँ यह रात गुज़ारेंगे आग भी गुज़ारेगी और जहाँ यह दोपहर को सोयेंगे आग भी क़ैलूला करेगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब फ़िल आयातिल्लती तकूनु क़ब्लस्साअत : 2901; मुस्नदे हुमैदी : 827; अहमद : 4/6; इब्ने अबी शैबा : 15/163) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इब्ने सय्याद के लिए दिल में (फ़र्तक़िब यौमा तातिस्समाउ बि दुख़ानिम मुबीन) छुपाकर उससे पूछा कि बता मैंने अपने दिल में क्या छुपा रखा है? उसने कहा, दुख़। आपने फ़र्माया बस बर्बाद हो उससे आगे तेरी नहीं चलने की।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब इज़ा अस्लमस्सबिय्यु फ़माता हल युसल्ला अलैहि : 1354; सहीह मुस्लिम : 2930) इसमें भी एक क़िस्म का इशारा है कि अभी इसका इंतिज़ार बाक़ी है और यह कोई आने वाली चीज़ है। चूँकि इब्ने सय्याद बतौर काहिनों के कुछ बातें दिल की ज़ुबान से बताने का मुद्दई था उसके

झूठ को ज़ाहिर करने के लिए आप (ﷺ) ने यह किया और जब वह पूरा न बता सका तो आप (ﷺ) ने लोगों को उसकी ह़ालत से वाक़िफ़ कर दिया कि उसके साथ शैत़ान है। कलाम सिर्फ़ चुरा लेता है और यह उससे ज़्यादा पर क़ुदरत नहीं पाने का। इब्ने जरीर में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''क़ियामत की अव्वलीन निशानियाँ यह हैं दज्जाल का आना, और ईसा (عليه السلام) का नाज़िल होना और आग का बीच अ़दन से से निकलना जो लोगों को मह़शर की त़रफ़ ले जाएगी। क़ैलूला के वक़्त और रात की नींद के वक़्त भी उनके साथ रहेगी और धूएँ का आना। ह़ज़रत ह़ुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने सवाल किया कि हुज़ूर (ﷺ) धुआँ कैसा? आप (ﷺ) ने इसी आयत की तिलावत की और फ़र्माया, यह धुआँ चालीस दिन तक घटा रहेगा जिससे मुसलमानों को तो मिस्ल नज़ले के हो जाएगा और काफ़िर बेहोश बदह़वास हो जाएगा उसके नथुनों से कानों से और दूसरी जगहों से धुआँ निकलता रहेगा।'' (और इसकी सनद बहुत ज़ईफ़ है; रवाद बिन जर्राह़ व तुरिक कमा फ़ितक़रीब मुलख़्ख़सन) यह ह़दीस अगर सही होती फिर तो दुख़ान के मअ़ने मुक़र्रर हो जाने में कोई बात बाक़ी न रहती लेकिन इसकी सेह़त की गवाही नहीं दी जा सकती। इसके रावी रवाद से मुह़म्मद बिन ख़ल्फ़ अ़स्क़लानी ने सवाल किया कि क्या सुफ़्यान सौरी (रह़.) से तूने ख़ुद यह ह़दीस सुनी है? उसने इंकार किया। पूछा क्या तूने पढ़ी और उसने सुनी है कहा नहीं। पूछा अच्छा तुम्हारी मौजूदगी में उनके सामने यह ह़दीस पढ़ी गई? कहा नहीं। कहा इस ह़दीस को कैसे बयान करते हो? कहा मैंने तो बयान नहीं की मेरे पास कुछ लोग आए इस रिवायत को पेश किया फिर जाकर मेरे नाम से उसे बयान करनी शुरू कर दी। बात भी यही है। यह ह़दीस बिलकुल मौज़ूअ़ है।

इब्ने जरीर (रह़.) इसे कई जगह लाए हैं और इसमें बहुत से मुंकिरात हैं ख़ुसूसन मस्जिदे अक़्सा के बयान में जो सूरह बनी इस्राईल के शुरू में है, वल्लाहु आलम! और ह़दीस में है कि तुम्हारे रब्ब तआला ने तुम्हें तीन चीज़ों से डराया है धुआँ जो मोमिन को ज़ुकाम कर देगा और काफ़िर का तो सारा जिस्म फुला देगा रोयें रोयें से धुआँ उठेगा (दाब्बतुल अर्ज़) और दज्जाल, इसकी सनद बहुत उ़म्दा है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''धुआँ फैल जाएगा मोमिन को तो मिस्ल ज़ुकाम के लगेगा और काफ़िर के जोड़ जोड़ से निकलेगा।'' यह ह़दीस ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) के क़ौल से भी मरवी है और ह़ज़रत ह़सन (रह़.) के अपने क़ौल से भी मरवी है। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) फ़र्माते हैं दुख़ान गुज़र नहीं गया बल्कि अब आएगा। ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) से धुएँ की बाबत ऊपर की ह़दीस की त़रह़ रिवायत है। इब्ने अबी मुलैका (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''एक दिन सुबह़ के वक़्त मैं ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) के पास गया तो आप फ़र्माने लगे, रात को मैं बिलकुल नहीं सोया। मैंने पूछा, क्यूँ? फ़र्माया इसीलिए कि लोगों से सुना कि दुमदार सितारा निकला है तो मुझे अंदेशा हुआ कि कहीं यही दुख़ान न हो पस सुबह़ तक मैंने आँख से आँख नहीं मिलाई।'' इसकी सनद स़ह़ीह़ है और ह़िब्रूल उम्मत तर्जुमानुल क़ुरआन ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के साथ स़ह़ाबा (रज़ि.) और ताबेईन भी हैं और मरफ़ूअ़ ह़दीसें भी हैं जिनमें स़ह़ीह़ ह़सन और हर त़रह़ की हैं और इनसे साबित होता है कि दुख़ान एक अ़लामते क़ियामत है जो आने वाली है। ज़ाहिरी अल्फ़ाज़े क़ुरआन भी इसी की ताईद करते हैं क्योंकि क़ुरआन ने इसे वाज़ेह़ और ज़ाहिर धुआँ कहा है जिसे हर शख़्स देख सके। और भूख के धूएँ से इसे ता'बीर करना ठीक नहीं।

क्योंकि वह तो एक ख़्याली चीज़ है भूख प्यास की सख़्ती की वजह से धुआँ सा आँखों के आगे छाने लगता है जो दरअसल धुआँ नहीं। और कुरआन के अल्फ़ाज़ हैं दुख़ानुम मुबीन के फिर यह फ़र्मान कि लोगों को ढाँक लेगा। यह भी इब्ने अब्बास (रज़ि.) की तफ़्सीर की ताईद करता है क्योंकि भूख के उस धूएँ ने सिर्फ़ अहले मक्का को ढाँका था न कि तमाम लोगों को।

फिर फ़र्माता है कि यह है अलमनाक अज़ाब यानी उनसे यूँ कहा जाएगा जैसे और आयत में है (يَوْمَ يُدَعُّونَ) (52/तूर : 13) जिस दिन उन्हें जहन्नम की तरफ़ धकेला जाएगा कि यह वह आग है जिसे तुम झुठला रहे थे या यह मतलब कि वह ख़ुद एक दूसरे से यूँ कहेंगे, काफ़िर जब उस अज़ाब को देखेंगे तो अल्लाह तआला से उसके दूर होने की दुआ करेंगे। जैसे कि इस आयत में है (وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ) (6/अन्आम : 27) यानी काश कि तू इन्हें देखता जब यह आग के पास खड़े किये जाएँगे और कहेंगे काश कि हम लौटाए जाते तो हम अपने रब की आयतों को न झुठलाते और बाईमान बनकर रहते। और आयत में है कि लोगों को डरावे के साथ आगाह कर दे जिस दिन इनके पास अज़ाब आएगा उस दिन गुनहगार कहेंगे परवरदिगार! हमें थोड़े से वक़्त तक और ढील दे दे तो हम तेरी पुकार पर लब्बैक कह लें और तेरे रसूलों की फ़र्मांबरदारी कर लें। पस यहाँ यही कहा जाता है कि इनके लिए नसीहत कहाँ? इनके पास मेरे पैग़ाम्बर आ चुके उन्होंने उनके सामने मेरे अहकाम वाज़ेह तौर पर रख दिये लेकिन मानना तो कुजा? इन्होंने परवाह तक न की बल्कि इन्हें झूठा कहा इनकी ता'लीम को ग़लत कहा और साफ़ कह दिया कि यह तो सिखाये पढ़ाये हैं इन्हें जुनून हो गया है। जैसे और आयत में है उस दिन इंसान नसीहत हासिल करेगा लेकिन अब उसके लिए नसीहत कहाँ है? और जगह फ़र्माया (وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ) (34/सबा : 52) यानी उस दिन अज़ाबों को देखकर ईमान लाना सरासर बेकार है। फिर जो इर्शाद होता है उसके दो मअनी हो सकते हैं एक तो यह कि अगर बिल्फ़र्ज़ हम अज़ाब हटा लें और तुम्हें दोबारा दुनिया में भेज दें तो भी तुम वहाँ जाकर यही करोगे जो इससे पहले करके आए हो। जैसे फ़र्माया (وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِم مِّن ضُرٍّ) (23/मोमिनून : 75) यानी अगर हम इन पर रहम करें और अज़ाब इनसे हटा लें तो फिर यह अपनी सरकशी में आँखें बंद करके मुन्हमिक हो जाएँ।

और जैसे फ़र्माया (وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ) (6/अन्आम : 28) यानी अगर यह लौटाए जाएँ तो क़त्अन दोबारा फिर हमारी नाफ़र्मानियाँ करने लगेंगे और सिर्फ़ झूठे साबित होंगे। दूसरे मअनी यह भी हो सकते हैं कि अगर अज़ाब के अस्बाब क़ायम हो चुकने और अज़ाब आ जाने के बाद भी गो हम इसे थोड़ी देर ठहरा लें ताहम यह अपने बद बातिनी और ख़बासत से बाज़ नहीं आने के। इससे यह लाज़िम नहीं आता कि अज़ाब उन्हें लग गया फिर हट गया, जैसे क़ौमे यूनुस की, हक़ तबारक व तआला का फ़र्मान है कि क़ौमे यूनुस जब ईमान लाई हमने उनसे अज़ाब हटा लिया। पस अज़ाब उन्हें होना शुरू नहीं हुआ था हाँ! उसके अस्बाब मौजूद व फ़राहम हो चुके थे। उन तक अज़ाबे बारी तआला पहुँच चुका था और उससे यह भी लाज़िम नहीं आता कि वह अपने कुफ़्र से हट गए थे फिर उसकी तरफ़ लौट गए। चुनाँचे हज़रत शुऐब (عليه السلام) और उन पर ईमान लाने वालों से जब क़ौम ने कहा कि या तो तुम हमारी बस्ती छोड़ दो या हमारे मज़हब में लौट आओ

तो जवाब में अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया कि गो हम इसे बुरा जानते हों जबकि अल्लाह तआला ने हमें इससे नजात दे रखी है। फिर भी अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएँ तो हमसे बढ़कर झूठा और अल्लाह तआला के ज़िम्मे बोहतान बाँधने वाला और कौन होगा ज़ाहिर है कि हज़रत शुऐब (ﷺ) ने इससे पहले भी कभी कुफ़्र में क़दम न रखा था।

हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि तुम लौटने वाले हो इससे मतलब अज़ाबे अल्लाह तआला की तरफ़ लौटना है। बड़ी और सख़्त पकड़ से मुराद जंगे बद्र है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) और आपके साथ की वह जमाअत जो दुख़ान को हो चुका हुआ मानती है वह तो बतशा के मअनी यही करती है बल्कि हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) से हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) और एक जमाअत से यही मंक़ूल है गो यह मतलब भी हो सकता है लेकिन बज़ाहिर तो यह मालूम होता है कि इससे मुराद क़ियामत के दिन की पकड़ है गो बद्र का दिन भी पकड़ का और कुफ़्फ़ार पर सख़्त दिन था। इब्ने जरीर में है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि गो हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) इसे बद्र का दिन बताते हैं लेकिन मेरे नज़दीक तो इससे मुराद क़ियामत का दिन है। इसकी इस्नाद सहीह है। हज़रत हसन बसरी (रह.) और इक्रिमा से भी दोनों रिवायतों में से ज़्यादा सही रिवायत यही है, वल्लाहु आलम!

***

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ
اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٨﴾ وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ﴿١٩﴾ وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿٢٠﴾ وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ
﴿٢١﴾ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿٢٢﴾ فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٢٥﴾
وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٢٦﴾ وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ ۫ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا
اٰخَرِيْنَ ﴿٢٨﴾ فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ﴿٢٩﴾ وَلَقَدْ

نَجَّيْنَا بَنِيٓ إِسْرَآءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝٣٠ مِن فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ عَالِيًا مِّنَ
الْمُسْرِفِينَ ۝٣١ وَلَقَدِ اخْتَرْنَٰهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَى الْعَٰلَمِينَ ۝٣٢ وَءَاتَيْنَٰهُم مِّنَ الْءَايَٰتِ
مَا فِيهِ بَلَٰٓؤٌا مُّبِينٌ ۝٣٣

तर्जुमा : "यक़ीनन इनसे पहले हम क़ौमे फ़िरऔन को भी आज़मा चुके हैं जिनके पास अल्लाह का ज़ी इज़्ज़त रसूल आया (17) कि अल्लाह तआला के बन्दों को मेरे हवाले कर दो यक़ीन मानो कि मैं तुम्हारा अमानतदार रसूल हूँ। (18) तुम अल्लाह तआला के सामने सरकशी न करो। मैं तुम्हारे पास खुली सनद लाने वाला हूँ। (19) और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ इससे कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझसे अलग रहो। (21) फिर अपने रब से दुआ की कि यह सब गुनहगार लोग हैं। (22) हमने कह दिया कि रातों रात तू मेरे बन्दों को लेकर निकल यक़ीनन तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23) तू दरिया को साकिन छोड़कर चला जा। बिला शुब्हा यह लश्कर डुबो दिया जाएगा। (24) वह बहुत से बाग़ात और चश्मे छोड़ गए। (25) और खेतियाँ और बेहतरीन मकानात (26) और वह आराम की चीज़ें जिनमें ऐश कर रहे थे। (27) इसी तरह हो गया और हमने उन सबका वारिस दूसरी क़ौम को बना दिया। (28) तो उन पर न तो आसमान व ज़मीन रोये और न उन्हें मोहलत मिली। (29) बेशक हमने ही बनी इस्राईल को सख़्त ज़लील सज़ा से नजात दी। (30) जो फ़िरऔन की तरफ़ से हो रही थी। वाक़ेअ में वह सरकश और हद से गुज़र जाने वालों में था। (31) और हमने दानिस्ता तौर पर बनी इस्राईल को दुनिया जहान वालों पर फ़ौक़ियत दी। (32) और हमने उन्हें ऐसी निशानियाँ दीं जिनमें सरीह आज़माइश थी।" (33)

नेक आदमी की वफ़ात पर ज़मीन व आसमान रोते हैं (आ. 17 से 33) : इर्शाद होता है कि इन मुश्रिकीन से पहले मिस्र के क़िब्तियों को हमने जाँचा। उनकी तरफ़ अपने बुज़ुर्ग रसूल हज़रत मूसा (عليه السلام) को भेजा। उन्होंने मेरा पैग़ाम पहुँचाया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ कर दो और उन्हें दुख न दो। मैं अपनी नबुव्वत पर गवाही देने वाले मोजिज़े अपने साथ लाया हूँ और हिदायत के मानने वाले सलामती से रहेंगे। मुझे अल्लाह तआला ने अपनी वही का अमानतदार बनाकर तुम्हारी तरफ़ भेजा है। मैं तुम्हें उसका पैग़ाम पहुँचा रहा हूँ तुम्हें रब्बे तआला की बातों के मानने से सरकशी न करनी चाहिए। उसके बयानकर्दा दलाइल व अहकाम के सामने सरे तस्लीम ख़म करना चाहिए। उसकी इबादतों से जी चुराने वाले ज़लील ख़्वार होकर जहन्नम वासिल होते हैं। मैं तो तुम्हारे सामने खुली दलील और वाज़ेह आयत रखता हूँ। मैं तुम्हारी बदगोई और बोहतान से अल्लाह

तआला की पनाह लेता हूँ। इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अबू सालेह (रह.) तो यही कहते हैं। (तब्री : 22/26) और क़तादा (रह.) कहते हैं मुराद पथराव करना, पत्थरों से मार डालना है। यानी ज़ुबानी ईज़ा से और दस्ती ईज़ा से मैं अपने रब्बे तआला की जो तुम्हारा भी मालिक है पनाह चाहता हूँ। (तब्री : 22/27) अच्छा अगर तुम मेरी नहीं मानते मुझ पर भरोसा नहीं करते अल्लाह तआला पर ईमान नहीं लाते तो कम अज़्कम मेरी तक्लीफ़देही और ईज़ारसानी से तो बाज़ (दूर) रहो। और उस वक्त के मुंतज़िर रहो जबकि ख़ुद अल्लाह तआला हममें तुममें फ़ैसला कर देगा। फिर जब अल्लाह तआला के नबी कलीमुल्लाह हज़रत मूसा (عليه السلام) ने एक लम्बी मुद्दत उनमें गुज़ारी ख़ूब दिल खोलकर तब्लीग़ कर ली हर तरह ख़ैरख़्वाही की उनकी हिदायत के लिए हर चंद जतन किये और देखा कि वह रोज़ बरोज़ अपने कुफ़्र में बढ़ते जा रहे हैं तो अल्लाह तआला से उनके लिए बद् दुआ की। जैसे और आयत में है कि हज़रत मूसा (عليه السلام) ने कहा, ऐ हमारे रब! तूने फ़िरऔन और उसके उमरा को दुनियावी नुमाइश और मालो मताअ दे रखी है ऐ अल्लाह! यह इससे दूसरों को भी तेरी राह से भटका रहे हैं तू इनका माल ग़ारत कर और इनके दिल और सख़्त कर दे ताकि दर्दनाक अज़ाबों के मुआयना तक इन्हें ईमान नसीब ही न हो। अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिला कि ऐ मूसा (عليه السلام)! और ऐ हारून (عليه السلام)! मैंने तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली। अब तुम इस्तिक़ामत पर तुल जाओ। यहाँ फ़र्माता है कि हमने मूसा (عليه السلام) से कहा कि मेरे बन्दों यानी बनी इस्राईल को रातों रात फ़िरऔन और फ़िरऔनियों की बेख़बरी में यहाँ से लेकर चले जाओ यह कुफ़्फ़ार तुम्हारा पीछा करेंगे लेकिन तुम बेख़ौफ़ व ख़तर चलते जाओ मैं तुम्हारे लिए दरिया को ख़ुश्क कर दूँगा। उसके बाद जब हज़रत मूसा (عليه السلام) बनी इस्राईल को लेकर चल पड़े फ़िरऔनी लश्कर मअ फ़िरऔन के उनके पकड़ने को चला बीच में दरिया हाइल हुआ। आप (عليه السلام) बनी इस्राईल को लेकर उसमें उतर गए। दरिया का पानी सूख गया और आप (عليه السلام) अपने साथियों समेत पार हो गए तो चाहा कि दरिया पर लकड़ी मारकर उससे कह दें कि अब तू अपनी रवानी पर आ जा ताकि फ़िरऔन इस पार न आ सके। वहीं अल्लाह तआला ने वही भेजी कि इसे इसी हाल में सकून के साथ ही रहने दो, साथ ही इसकी वजह भी बतला दी कि यह सब इसी में डूब मरेंगे। फिर तुम सब बिलकुल ही मुत्मइन और बेख़ौफ़ हो जाओगे। ग़र्ज़ हुक्म हुआ था कि दरिया को ख़ुश्क छोड़कर चल दें (रहवन) के मअनी सूखा रास्ता जो अपनी असली हालत पर हो। मक़्सद यह है कि पार होकर दरिया को रवानी का हुक्म न देना। यहाँ तक कि दुश्मनों में से हर एक उसमें न आ जाए। अब उसे जारी होने का हुक्म मिलते ही सबको डुबोदेगा। अल्लाह तआला फ़र्माता है देखो कैसे ग़ारत हो गए। बाग़ात, खेतियाँ, नहरें , मकानात और बैठकें सब छोड़कर फ़ना हो गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं "मिस्र का दरिया-ए-नील मश्रिक़ व मग़्रिब के दरियाओं का सरदार है और सब नहरें उसके मातहत हैं जब उसकी रवानी अल्लाह तआला को मंज़ूर होती है तो तमाम नहरों को उसमें पानी पहुँचाने का हुक्म होता है। जहाँ तक रब्बे तआला को मंज़ूर हो उसमें पानी आ जाता है फिर अल्लाह तबारक व तआला और नहरों को रोक देता है और हुक्म दे देता है कि अब अपनी अपनी जगह चली जाओ।" उन फ़िरऔनियों के यह बाग़ात दरिया-ए-नील के दोनों किनारों पर मुसलसल चले गए थे,

अस्वान से लेकर रशीद तक इसका सिलसिला था और इसकी नौ ख़लीजें थीं। ख़लीजे इस्कन्द्रिया, ख़लीजे दुमियात़, ख़लीजे मुनफ़, ख़लीजे फ़ुयूम, ख़लीजे मुन्तहा और इन सब में इत्तिसाल था एक दूसरे से मुत्तसिल थी और पहाड़ों के दामन में खेतियाँ थीं जो मिस्र से लेकर दरिया तक बराबर चली आई थीं। इन तमाम को भी दरिया सैराब करता था। बड़े अमन चैन की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे लेकिन मग़रूर हो गए और आख़िर सारी नेअ़मतें यूँ ही छोड़कर तबाह कर दिये गए। माल व औलाद, जाह व मनाल, सल्तनत व इज़्ज़त एक ही रात में छूट गई और भुस की त़रह़ उड़ा दिये गए और गुज़िश्ता कल की त़रह़ बेनिशान कर दिये गए ऐसे डुबोये गए कि उभर न सके, जहन्नम वासिल हो गए और बदतरीन जगह पहुँच गए। उनकी तमाम चीज़ें अल्लाह तआ़ला ने बनी इस्राईल को दे दीं। जैसे और आयत में फ़र्माया है कि हमने उन कमज़ोरों को उनके स़ब्र के बदले उस सरकश क़ौम की कुल नेअ़मतें अ़ता कर दीं और बेईमानों का भरकस निकाल डाला। यहाँ भी दूसरी क़ौम जिसे वारिस बनाया उससे मुराद बनी इस्राईल हैं।

फिर इर्शाद होता है कि इन पर ज़मीनो आसमान न रोये, क्योंकि उन पापियों के नेक आ़माल थे ही नहीं , जो आसमानों पर चढ़ते हों और अब उनके न चढ़ने की वजह से वह अफ़सोस करें। न ज़मीन में उनकी ऐसी जगहें थीं कि जहाँ बैठकर यह अल्लाह तआ़ला की इ़बादतें करते हों और आज उन्हें न पाकर ज़मीन की वह जगह उनका मातम करे, उन्हें मोहलत ही न दी गई। मुस्नदे अबू यअ़ला मूसली में है "हर बन्दे के लिए आसमान में दो दरवाज़े हैं, एक से उसकी रोज़ी उतरती है, दूसरे से उसके आ़माल और उसके कलाम चढ़ते हैं। जब यह मर जाता है और वह अ़मल व रिज़्क़ को गुमशुदा पाते हैं, तो रोते हैं। फिर इसी आयत की हुज़ूर (ﷺ) ने तिलावत की।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति ह़ामीम दुख़ान : 3255; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4133; इसकी सनद में मूसा बिन उ़बैदह और यज़ीद बिन अबान रक़्क़ाशी दोनों ज़ईफ़ रावी हैं।) इब्ने अबी ह़ातिम में फ़र्माने रसूल (ﷺ) है कि "इस्लाम गुर्बत से शुरू हुआ और फिर गुर्बत पर आ जाएगा। याद रखो मोमिन कहीं अंजान मुसाफ़िर की त़रह़ नहीं। मोमिन जहाँ कहीं सफ़र में मरता है, जहाँ उसका कोई रोने वाला न हो, वहाँ भी उसके रोने वाले आसमान व ज़मीन मौजूद हैं।" फिर हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत करके फ़र्माया यह दोनों कुफ़्फ़ार पर नहीं रोते। (यह रिवायत मुर्सल है।) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से किसी ने पूछा कि आसमान व ज़मीन कभी किसी पर रोये भी हैं? आपने फ़र्माया, "आज तूने वह बात पूछी है कि तुझसे पहले मुझसे इसका सवाल किसी ने न किया। सुनो हर बन्दे के लिए ज़मीन में एक नमाज़ की जगह होती है और एक जगह आसमान में उसके अ़मल के चढ़ने की होती है, और आले फ़िरऔ़न के नेक आ़माल ही न थे, इस वजह से न ज़मीन उन पर रोई न आसमान को उन पर रोना आया, और न उन्हें ढील दी गई कि कोई नेकी कर सकें।" ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से यह सवाल हुआ तो आपने क़रीब क़रीब यही जवाब दिया। (त़बरी : 22/34) बल्कि आपसे मरवी है कि चालीस दिन तक ज़मीन मोमिन पर रोती रहती है। (ह़ाकिम : 2/449; और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) ह़ज़रत मुजाहिद (रह़.) ने जब यह बयान किया तो किसी ने इस पर ताज्जुब का इज़्हार किया। आपने फ़र्माया, सुब्हानल्लाह! इसमें तअज्जुब की कौनसी

बात है जो बन्दा ज़मीन को अपने रुकू व सुजूद से आबाद रखता था जिस बन्दे की तक्बीर व तस्बीह की आवाज़ें आसमान बराबर सुनता रहता था। भला यह दोनों उस अल्लाह के आबिद पर रोएँगे नहीं? हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं फ़िरओनियों जैसे ज़लीलो ख़्वार लोगों पर क्यूँ रोते?

शहादते हुसैन (रज़ि.) के बारे में मुबालग़ा आराई : हज़रत इब्राहीम (रह.) फ़र्माते हैं, दुनिया जबसे रचाई गई है तबसे आसमान सिर्फ़ दो शख़्सों पर रोया है। उनके शागिर्द से सवाल हुआ कि क्या आसमान व ज़मीन हर ईमान वाले पर रोते नहीं? फ़र्माया सिर्फ़ उतना हिस्सा जिस हिस्से से उसका नेक अमल चढ़ता था। सुन आसमान का रोना उसका लाल होना और मिस्ल निरी के गुलाबी रंग हो जाना है, तो यह हाल दो शख़्सों की शहादत पर हुआ है। हज़रत यह्या (عليه السلام) के क़त्ल के मौक़े पर तो आसमान लाल हो गया और ख़ून बरसाने लगा और दूसरे हज़रत हुसैन (रज़ि.) के क़त्ल पर भी आसमान का रंग लाल हो गया था। (इब्ने अबी हातिम) यज़ीद बिन अबू ज़ियाद का क़ौल है कि "क़त्ले हुसैन (रज़ि.) की वजह से चार माह तक आसमान के किनारे लाल रहे और यही लाली उसका रोना है।" हज़रत अता (रह.) फ़र्माते हैं कि उसके किनारों का लाल हो जाना उसका रोना है। यह भी ज़िक्र किया गया है कि क़त्ले हुसैन (रज़ि.) के दिन जिस पत्थर को उल्टा जाता था उसके नीचे जमा हुआ ख़ून निकलता था। उस दिन सूरज को भी ग्रहण लगा हुआ था। आसमान के किनारे भी लाल थे और पत्थर गिरे थे। लेकिन यह सब बातें बेबुनियाद हैं और शियों के गढ़े हुए अफ़साने हैं। उनमें कोई शक नहीं कि नवासा रसूल (ﷺ) की शहादत का वाक़िया निहायत दर्द अंगेज़ और हसरत व अफ़सोस वाला है, लेकिन इस पर शियों ने जो हाशिया चढ़ाया है और गढ़गढ़ाकर जो बातें फैला दी हैं वह सिर्फ़ झूठ और बिलकुल गप हैं। ख़्याल तो कीजिए कि इससे बहुत ज़्यादा अहम वाक़ियात हुए और क़त्ले हुसैन (रज़ि.) से बहुत बड़ी वारदातें हुईं लेकिन उनके होने पर भी आमसान व ज़मीन वग़ैरह में यह इंक़िलाब न हुआ। आप (रज़ि.) के ही वालिद माजिद हज़रत अली (रज़ि.) भी क़त्ल किये गए जो बिल इज्माअ आपसे अफ़ज़ल थे। न तो पत्थर तले ख़ून निकला न और कुछ हुआ। हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को घेर लिया जाता है और निहायत बेदर्दी से बिला वजह ज़ुल्मो सितम के साथ उन्हें शहीद किया जाता है। फ़ारूक़े आ'ज़म उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को सुबह की नमाज़ पढ़ते हुए नमाज़ की जगह ही शहीद किया जाता है यह वह ज़बरदस्त मुसीबत थी कि इससे पहले मुसलमान कभी ऐसी मुसीबत नहीं पहुँचाए गए थे। लेकिन इन वाक़ियात में से किसी वाक़िया के वक़्त इनमें से एक भी बात नहीं हुई जो शियों ने मक़्तले हुसैन (रज़ि.) की निस्बत मशहूर कर रखी हैं। इन सबको भी जाने दीजिए। तमाम इंसानों के दीनी और दुनियावी सरदार सय्यदुल बशर रसूलुल्लाह (ﷺ) को लीजिए। जिस रोज़ आप (ﷺ) रहलत फ़र्माते हैं, उनमें से कुछ भी नहीं होता। और सुनिए जिस दिन हुज़ूर (ﷺ) के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम (रज़ि.) का इंतिक़ाल होता है इत्तिफ़ाक़न उसी दिन सूरज ग्रहण होता है और कोई कह देता है कि इब्राहीम (रज़ि.) के इंतिक़ाल की वजह से सूरज को ग्रहण लगा है तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ग्रहण की नमाज़ अदा करके फ़ौरन ख़ुत्बा पर खड़े हो जाते हैं और फ़र्माते हैं, चाँद और सूरज अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं। किसी की मौत ज़िन्दगी की वजह से इन्हें ग्रहण

नहीं लगता। (सहीह बुख़ारी, किताबुल कुसूफ़, बाब अस्सलातु फ़ी कुसूफ़िश्शम्स : 1043; सहीह मुस्लिम : 915) इसके बाद की आयत में अल्लाह तआला बनी इस्राईल पर अपना एहसान जताता है कि हमने उन्हें फ़िरऔन जैसे मुतकब्बिर मुस्रिफ़ के ज़लील अज़ाबों से नजात दी। उसने बनी इस्राईल को पस्त व ख़्वार कर रखा था। ज़लील ख़िदमतें उनसे लेता था और सख़्त बेगारी के काम बग़ैर मुआवज़ा के उनसे कराता था। अपने नफ़्स को तोलता रहता था। ख़ुदी और ख़ुदबीनी में लगा हुआ था। बेवक़ूफ़ी से किसी चीज़ की हदबंदी का ख़्याल नहीं करता था। अल्लाह तआला की ज़मीन में सरकशी किये हुए था और उन बदकारियों में उसकी क़ौम भी उसके साथ थी। फिर बनी इस्राईल पर एक और मेहरबानी का ज़िक्र कर रहा है कि उस ज़माने के तमाम लोगों पर उन्हें फ़ज़ीलत अता कीं। हर ज़माने को आलम कहा जाता है। यह मुराद नहीं कि अगलों पिछलों पर उन्हें बुज़ुर्गी दी। यह आयत भी इस आयत की तरह है जिसमें फ़र्मान है (يَا مُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ) (7/आराफ़ : 144) ऐ मूसा (عليه السلام)! मैंने तुम्हें लोगों पर बुज़ुर्गी अता की, यानी उस ज़माने के लोगों पर। जैसे हज़रत मरियम (عليها السلام) के लिए फ़र्माया (وَاصْطَفَاكِ عَلَىٰ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ) (3/आले इमरान : 42) इससे भी यही मतलब है कि उस ज़माने की तमाम औरतों पर आपको फ़ज़ीलत है। इसलिए उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) उनसे यक़ीनन अफ़ज़ल हैं या कम अज़्कम बराबर। इसी तरह हज़रत आसिया बिन्ते मज़ाहिम (रज़ि.) जो फ़िरऔन की बीवी थीं। और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत तमाम औरतों पर ऐसी ही है जैसी फ़ज़ीलत शोरबे में भिगोई रोटी की और खानों पर। फिर बनी इस्राईल पर एक और एहसान बयान हो रहा है कि हमने उन्हें वह हुज्जत व बुरहान दलील व निशान व मोजिज़ात व करामात अता किये जिनमें हिदायत की तलाश करने वालों के लिए साफ़ साफ़ इम्तिहान था।

***

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾ فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾ أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : "यह लोग तो यही कहते हैं (34) कि आख़िरी चीज़ यही हमारा दुनिया से मर जाना है और फिर दोबारा उठाए नहीं जाएँगे। (35) अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को ले आओ। (36) क्या यह लोग बेहतर हैं या तुब्बअ की क़ौम के और जो उनसे भी पहले थे? हमने उन सबको हलाक कर दिया यक़ीनन वह गुनहगार थे।" (37)

क़ौमे तुब्बअ़ का ज़िक्र (आ. 34 से 37) : यहाँ मुश्रिकीन का इंकारे क़ियामत और उसकी दलील बयान करके अल्लाह तआला उसकी तर्दीद करता है। इनका ख़्याल था कि क़ियामत आनी नहीं, मरने के बाद जीना नहीं, हश्रो नश्र सब ग़लत है। दलील यह पेश करते थे कि हमारे बाप दादा जो मर गए वह क्यूँ दोबारा जी कर नहीं आए? ख़्याल कीजिए यह किस क़द्र बूदी और बेहूदा दलील है। दोबारा उठ खड़ा होना मरने के बाद का जीना क़ियामत को होगा, न कि दुनिया में फिर लौटा दिये जाएँ उस दिन यह ज़ालिम जहन्नम का ईंधन बनेंगे उस वक़्त यह उम्मत अगली उम्मतों पर गवाही देगी, और उन पर उनके नबी (ﷺ) गवाही देंगे। फिर अल्लाह तआला उन्हें डरा रहा है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारे जो अ़ज़ाब इसी जुर्म पर अगली क़ौमों पर आए वह तुम पर भी आ जाएँ और इनकी तरह बेनामो निशान कर दिये जाओ। इनके वाक़ियात सूरह सबा में गुज़र चुके हैं। वह लोग भी क़हतान के अ़रब थे जैसे कि यह अ़दनान के अ़रब हैं।

हिम्यर जो सबा के थे वह अपने बादशाह को तुब्बअ़ कहते थे, जैसे फ़ारस के हर बादशाह को किसरा और रूम के हर बादशाह को क़ैसर और मिस्र के हर बादशाह को फ़िरऔन और हब्शा के हर बादशाह को नज्जाशी कहा जाता है। उनमें से एक तुब्बअ़ यमन से निकला और ज़मीन में फिरता रहा समरक़ंद पहुँच गया। हर जगह के बादशाहों को हरा देता और अपना बहुत बड़ा मुल्क कर लिया। ज़बरदस्त लश्कर और बेशुमार रईयत उसके मातहत थी। उसने हीरा नामी बस्ती बसाई यह अपने ज़माने में मदीना में भी आया था और यहाँ के बाशिन्दों से भी लड़ा लेकिन इसे लोगों ने उससे रोका। ख़ुद अहले मदीना का भी इससे यह सुलूक रहा कि दिन को तो लड़ते थे और रात को उनकी मेहमानदारी करते थे। आख़िर उसको भी लिहाज़ आ गया और लड़ाई बंद कर दी। उसके साथ यहाँ के यहूदी आ़लिम हो गए थे जो हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के सच्चे दीन के आ़मिल भी थे वह उसे हर वक़्त भलाई बुराई समझाते रहते थे। उन्होंने कहा कि आप मदीना को ताख़्तो ताराज नहीं कर सकते क्योंकि यह आख़िर ज़माना के पैग़म्बर की हिज्रतगाह है। पस यह यहाँ से चला गया और दोनों आ़लिमों को अपने साथ लेता चला। जब यह मक्का पहुँचा तो उसने बैतुल्लाह को गिराना चाहा लेकिन उन दोनों ने उसे रोका। और उस पाक घर की अ़ज़्मत व हुर्मत उसके सामने बयान की और कहा कि उसके बानी ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) हैं और उस नबी आख़िरुज़्ज़माँ के हाथों फिर इसकी अ़सली अ़ज़्मत आशकार हो जाएगी। चुनाँचे यह अपने इरादे से बाज़ आया बल्कि बैतुल्लाह की बड़ी ता'ज़ीम तक्रीम की, तवाफ़ किया, ग़िलाफ़ चढ़ाया और यहाँ से वापिस यमन चला गया। ख़ुद हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के दीन में दाख़िल हुआ, और तमाम यमन में यही दीन फैलाया। उस वक़्त तक हज़रत मसीह (अ़लैहिस्सलाम) का भी ज़ुहूर न हुआ था और उस ज़माने वालों के लिए यही सच्चा दीन था। उस तुब्बअ़ के वाक़ियात बहुत तफ़्सील से सीरते इब्ने इस्हाक़ में मौजूद हैं और हाफ़िज़ इब्ने अ़साकिर भी अपनी किताब में बहुत बस्त (विस्तार) के साथ लाये हैं। इसमें है कि इसका पाये तख़्त दमिश्क़ था। उसके लश्करों की सफ़ें दमिश्क़ से लेकर यमन तक पहुँचती थीं।

एक हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं मैं नहीं जान सका कि हद लगने से गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है या नहीं? और न मुझे यह मालूम है कि तुब्बअ़ मल्ऊन था या नहीं? और न मुझे यह ख़बर है कि

जुल्क़रनैन नबी थे या बादशाह।'' (हाकिम : 2/450; बैहक़ी : 8/329; और इसकी सनद सहीह है।) और रिवायत में है कि यह भी फ़र्माया कि हज़रत उज़ेर (ﷺ) पैग़म्बर थे या नहीं। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब फ़ित्तख़्यीर बैनल अम्बिया (ﷺ) : 4674; और इसकी सनद सहीह है।) (इब्ने अबी हातिम) दारे क़ुत्नी (रह.) फ़र्माते हैं कि इस हदीस की रिवायत सिर्फ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ से ही है। और सनद से मरवी है कि हज़रत उज़ेर (ﷺ) का नबी होना न होना मुझे मालूम नहीं, न मैं यह जानता हूँ कि तुब्बअ पर लअनत करूँ या नहीं? इसे वारिद करने के बाद हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) ने वह रिवायतें दर्ज की हैं जिनमें तुब्बअ को गाली देने और लअनत करने से मुमानिअत आई है जैसे कि हम अभी वारिद करेंगे, इंशाअल्लाह तआला!

मालूम होता है कि यह पहले काफ़िर थे फिर मुसलमान हो गए। यानी हज़रत मूसा कलीमुल्लाह (ﷺ) के दीन में दाख़िल हो गए और उस ज़माने के उलमा के हाथों ईमान क़बूल किया। बिअसते मसीह (ﷺ) से पहले का यह वाक़िया है, जुरहुम के ज़माने में बैतुल्लाह का हज्ज भी किया, ग़िलाफ़ भी चढ़ाया और बड़ी ता'ज़ीम व तकरीम की छः हज़ार ऊँट अल्लाह के नाम क़ुर्बान किये और भी बहुत बड़ा तवील वाक़िया है जो हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.), हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है और असल क़िस्सा का दारोमदार हज़रत कअब अहबार (रह.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) पर है। वहब बिन मुनब्बा ने भी इस क़िस्से को वारिद किया है। हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) ने उस तुब्बआ के क़िस्से के साथ दूसरे तुब्बअ के क़िस्से को भी मिला दिया है जो उनके बहुत बाद था। उसकी क़ौम तो उसके हाथ पर मुसलमान हो गई थी फिर उनके इंतिक़ाल के बाद वह कुफ़्र की तरफ़ लौट गई और दोबारा आग और बुतों की पूजा शुरू कर दी जैसे कि सूरह सबा में मज़्कूर है इसी की तफ़्सीर में हमने भी वहाँ उसकी पूरी तफ़्सील कर दी, फ़ल्हम्दु लिल्लाह। हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं ''उस तुब्बअ ने कअबा पर ग़िलाफ़ चढ़ाया था। आप लोगों को मना करते थे कि उस तुब्बअ को बुरा न कहो यह दरम्यान का तुब्बअ है उसका नाम अस्अद अबू कुरैब बिन मुलैकर्ब यमानी है, उसकी सल्तनत तीन सौ छब्बीस साल तक रही उससे ज़्यादा लम्बी मुद्दत उन बादशाहों में से किसी ने नहीं पाई। हुज़ूर (ﷺ) से तक़रीबन सात सौ साल पहले उसका इंतिक़ाल हुआ है।'' मुअर्रिख़ीन ने यह भी बयान किया है कि उन दोनों मूसवी आलिमों ने जो मदीना के थे उन्होंने जब तुब्बअ बादशाह को यक़ीन दिलाया कि यह शहर नबी आख़िरुज़्ज़मान हज़रत अहमद (ﷺ) का हिज्रतगाह है तो उसने एक क़सीदा कहा था और अहले मदीना को बतौरे अमानत दे गया था जो उनके पास ही रहा और बतौरे मीरास के एक दूसरे के हाथ लगता रहा। और इसकी रिवायत सनद के साथ बराबर चली आती रही यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) की हिज्रत के वक़्त उसके हाफ़िज़ हज़रत अबू अय्यूब ख़ालिद बिन ज़ैद (रज़ि.) थे और इत्तिफ़ाक़ से बल्कि बहुक्मे इलाही हुज़ूर (ﷺ) का नुज़ूल इज्लाल भी यहीं हुआ था। इस क़सीदे के यह अश्आर मुलाहिज़ा हों,

شهدت على احمد انه — رسول من الله بارى النسيم

शहिदत्तु अ़ला अह़मद अन्नहू — रसूलुम मिनल्लाहि बारिन्निसम

فلو مد عمرى الى عمره — لكنت وزيرا له و ابن عم

फ़लौमुद्द उ़मरी इला उ़म्रिही — लकुन्तुम वज़ीरल्लहू वब्न आ़म्मी

وجاهدت بالسيف اعداءه — وفرجت عن صدره كل غم

जाहद्तु बिस्सैफ़ि अअ़दाअहू — व फ़र्रज्तु अ़न स़दरिही कुल्ल ग़मी

यानी मेरी तहे दिल से गवाही है कि (ह़ज़रत) अह़मद मुज्तबा (ﷺ) उस अल्लाह तआ़ला के सच्चे रसूल हैं जो अल्लाह तमाम जानदारों का पैदा करने वाला है। अगर मैं आपके ज़माने तक ज़िन्दा रहा तो क़सम अल्लाह की आपका साथी और आपका मुआ़विन बनकर रहूँगा और आपके दुश्मनों से तलवार के साथ जिहाद करूँगा और किसी खटके और ग़म को आपके क़रीब तक न फटकने दूँगा। इब्ने अबिद्दुनिया में है कि दौरे इस्लाम में स़न्आ शहर में इत्तिफ़ाक़ से क़ब्र खुद गई तो देखा गया कि औरतें दफ़न हैं जिनके जिस्म बिलकुल सही सालिम हैं और सिरहाने पर चाँदी की एक तख़्ती लगी हुई है जिसमें सोने के हुरूफ़ से यह लिखा हुआ है कि यह क़ब्र ह़ुय्यी और तमीस की है। और एक रिवायत में उनके नाम ह़ुय्यी और तमाज़िर हैं। यह दोनों तुब्बअ़ की बहनें हैं,यह दोनों मरते वक़्त तक इस बात की गवाह रहीं कि लायक़े इ़बादत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है। यह दोनों अल्लाह तआ़ला के साथ किसी को शरीक नहीं करती थीं। इनसे पहले के तमाम नेक स़ालेह़ लोग भी इस गवाही के अदा करते हुए इंतिक़ाल करते रहे हैं। सूरह सबा में हमने इस वाक़िया के बारे में सबा के अश्आ़र भी नक़्ल कर दिये हैं। ह़जरत कअ़ब (रह़.) फ़र्माया करते थे तुब्बअ़ की ता'रीफ़ क़ुरआन से इस त़रह़ मालूम होती है कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी क़ौम की मज़म्मत की, उनकी नहीं की। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से मंक़ूल है कि तुब्बअ़ को बुरा न कहो वह नेक शख़्स था। (ह़ाकिम : 2/450; इसकी सनद ज़ईफ़ है; ज़ोहरी अ़न्अ़न) मुस़न्नफ़ इब्ने अबी ह़ातिम में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुब्बअ़ को गाली न दो वह मुसलमान हो चुका था, त़ब्रानी और मुस्नद अह़मद में भी यह रिवायत है। (अह़मद : 5/340; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; अबू ज़रआ, अ़म्र बिन जाबिर ज़ईफ़ है; त़ब्रानी : 6013) अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "मुझे मालूम नहीं कि तुब्बअ़ नबी थे या न थे?" और रिवायत इससे पहले गुज़र चुकी कि मैं नहीं जानता तुब्बअ़ मल्ऊ़न था या नहीं?फ़ल्लाहु आ़लम! यही रिवायत ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से भी मरवी है। (त़ब्रानी औसत़ : 2) ह़ज़रत अ़ता बिन अबी रिबाह़ (रह़.) फ़र्माते हैं "तुब्बअ़ को गाली न दो, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें बुरा कहने से मना किया है।" (और इसकी सनद ज़ईफ़ है।) वल्लाहु आ़लम!

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٠﴾ يَوْمَ لَا

يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ اِنَّهٗ هُوَ

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾

तर्जुमा : ''हमने ज़मीनो आसमान और उनके बीच की चीज़ों को फ़ेअले अबस करते हुए पैदा नहीं किया। (38) बल्कि हमने उन्हें दुरुस्त तदबीर के साथ ही पैदा किया है हाँ! अल्बत्ता उनमें के अक्सर लोग बेइल्म हैं। (39) यक़ीनन फ़ैसले का दिन उन सबके वादे का है। (40) जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम न आएगा और न उनकी मदद की जाएगी (41) मगर जिस पर अल्लाह की मेहरबानी हो जाए, वह ज़बरदस्त और रहम वाला है।'' (42)

कायनात की तख़्लीक़ बेकार नहीं (आ. 38 से 42) : यहाँ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने अदल का बयान कर रहा है और बेफ़ायदा लग्व और अबस कामों से अपनी पाकी का इज़्हार करता है। जैसे और आयत में इर्शाद है कि हमने अपनी मख़्लूक़ को बातिल पैदा नहीं किया ऐसा गुमान हमारी निस्बत सिर्फ़ उनका है जो कुफ़्फ़ार हैं और जिनका ठिकाना जहन्नम है। और इर्शाद है (أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ) (23/मोमिनून : 115) यानी क्या तुमने यह समझ रखा है कि हमने तुम्हें बेकार व अबस पैदा किया है और तुम लौटकर हमारी तरफ़ आने ही के नहीं? अल्लाह हक़, मालिक, बुलंदियों वाला और बुज़ुर्गियों वाला है। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं वह अर्शे करीम का रब है। फ़ैसलों का दिन यानी क़ियामत का दिन जिस दिन बारी तआला अपने बन्दों के बीच हक़ फ़ैसले करेगा। काफ़िरों को सज़ा और मोमिनों को जज़ा मिलेगी। उस दिन तमाम अगले पिछले अल्लाह तआला के सामने जमा होंगे। यह वह वक़्त होगा कि एक दूसरे से जुदा हो जाएगा। रिश्तेदार रिश्तेदार को कोई नफ़ा न पहुँचा सकेगा। जैसे अल्लाह सुब्हानहू व तआला का फ़र्मान है (فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ) (23/मोमिनून : 101) यानी जब सूर फूँक दिया जाएगा तो न तो कोई नसब बाक़ी रहेगा, न पूछगछ। और आयत में है कोई दोस्त उस दिन अपने दोस्त को परेशान हाली में देखते हुए भी कुछ न पूछेगा और न कोई उस दिन किसी की किसी तरह मदद करेगा, न और कोई बैरूनी इम्दाद आएगी, मगर हाँ रहमते इलाही जो मख़्लूक़ पर शामिल। वह बड़ा ग़ालिब और वसीअ रहमत वाला है।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الْأَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ
الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَأْسِهٖ مِنْ عَذَابِ
الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾ ذُقْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ إِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

तर्जुमा : ''बेशक ज़क़्क़ूम का दरख़्त (43) गुनहगार का खाना है (44) जो मिस्ल तलछट के है और पेट में खोलता रहता है (45) मिस्ल तेज़ गर्म पानी खोलने के। (46) उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए बीच जहन्नम तक पहुँचाओ। (47) फिर इसके सिर पर सख़्त गर्म पानी का अज़ाब बहाओ। (48) चखता जा तू तो बड़ा ज़ी इज़्ज़त और बड़े इकराम वाला था (49) यही वह चीज़ है जिसमें तुम शक किया करते थे।'' (50)

मुंकिरीने क़ियामत की होलनाक सज़ा (आ. 43 से 50) : मुंकिरीने क़ियामत को जो सज़ा वहाँ दी जाएगी उसका बयान हो रहा है कि उन मुज्रिमों को जो अपने क़ौल और फ़ेअल को गुनहगारी में मुलव्विस किये हुए थे, आज ज़क़्क़ूम का दरख़्त खिलाया जाएगा। कुछ कहते हैं इससे मुराद अबू जहल है, गो दरअस्ल वह भी इस आयत की वईद में दाख़िल है, लेकिन यह न समझा जाए कि आयत सिर्फ़ उसी के हक़ में नाज़िल हुई है। हज़रत अबू दर्दा (रज़ि.) एक शख़्स को यह आयत पढ़ा रहे थे। मगर उसकी ज़ुबान से लफ़्ज़े (असीम) अदा नहीं होता था, और वह बजाय उसके यतीम कह दिया करता था, तो आपने उसे तआमुल फ़ाजिर) पढ़वाया। (तब्री : 22/43) यानी उसे उसके सिवा खाने को और कुछ न दिया जाएगा। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि अगर उस ज़क़्क़ूम का एक क़तरा (बूँद) भी ज़मीन पर टपक जाए तो तमाम ज़मीन वालों की मआश (खाने की चीज़ें) ख़राब कर दे। (तब्री : 22/43) एक मरफ़ूअ हदीस में भी यह आया है जो पहले बयान हो चुकी है। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तु जहन्नम, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति शराबि अहलिन्नार : 2585; वहुव सहीहुन; इब्ने माजा : 4325) यह मिस्ल तलछट के होगा। अपनी हरारत, बदमज़गी और नुक़्सान के बाइस पेट में जोश मारता रहेगा। अल्लाह तआला जहन्नम के दारोग़ों से कहेगा कि इस काफ़िर को पकड़ लो। वहीं सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दौड़ेंगे। उसे औंधा करके मुँह के बल घसीट ले जाओ और बीच जहन्नम में डाल दो फिर उसके सर पर जोश मारता हुआ गर्म पानी डालो। जैसे फ़र्माया (يُصَبُّ مِن فَوْقِ) (22/हज्ज : 19) यानी इनके सरों पर जहन्नम का जोश मारता गर्म पानी बहाया जाएगा, जिससे उनकी खालें और पेट के अंदर की तमाम चीज़ें सोख़्त हो जाएँगी और यह भी हम पहले बयान कर आये हैं कि फ़रिश्ते उन्हें लोहे के हथोड़े मारेंगे जिनसे उनके दिमाग़ पाश पाश हो जाएँगे फिर ऊपर से यह हमीम उन पर डाला जाएगा। यह जहाँ जहाँ पहुँचेगा हड्डियों को खाल से जुदा कर देगा यहाँ तक कि इसकी आँतें काटता हुआ पिण्डलियों तक पहुँच जाएगा

अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे। फिर उन्हे शर्मसार करने के लिए और ज़्यादा पशेमान बनाने के लिए कहा जाएगा कि लो मज़ा चखो तुम हमारी निगाहों में न इज़्ज़त वाले हो, न बुज़ुर्गी वाले। मग़ाज़ी उमवी में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू जहल मल्ऊन से कहा कि मुझे अल्लाह तआला का हुक्म हुआ है कि तुझसे कह दूँ तेरे लिए वैल है। तुझ पर अफ़सोस है। फिर बार बार कहता हूँ कि तेरे लिए ख़राबी और अफ़सोस है। उस पाजी ने अपना कपड़ा आपके हाथ से घसीटते हुए कहा, जा तू औ तेरा रब मेरा क्या बिगाड़ सकते हो, इस तमाम वादी में सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व तकरीम वाला मैं हूँ।" पस अल्लाह तआला ने बद्र वाले दिन क़त्ल कराया और उसे ज़लील किया और उससे कहा जाएगा कि ले अब अपनी इज़्ज़त का और अपनी तकरीम का और अपनी बुज़ुर्गी और बड़ाई का लुत्फ़ उठा। (मग़ाज़ी लिल उमवी और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ और बातिल है।) और इन काफ़िरों से कहा जाएगा कि यह है जिसमें तुम हमेशा शक व शुब्हा में पड़े रहे। जैसे और आयतों में है कि जिस दिन उन्हें धक्के देकर जहन्नम पहुँचाया जाएगा और कहा जाएगा कि यह वह दोज़ख़ है जिसे तुम झुठलाते थे, क्या यह जादू है या तुम देख नहीं रहे? इसी को यहाँ भी फ़र्माया कि यह है जिसमें तुम शक किया करते थे।

***

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ﴿٥١﴾ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٢﴾ يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ
وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ
فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ
بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾

तर्जुमा : "बेशक अल्लाह से डरने वाले अमन चैन की जगह में होंगे (51) बाग़ों और चश्मों में (52) बारीक और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। (53) यह इसी तरह है और हम बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से उनका निकाह कर देंगे। (54) दिल जमई के साथ वहाँ हर तरह के मेवों की फ़र्माइश करते होंगे (55) वहाँ वह मौत चखने के नहीं हाँ पहली मौत जो वह मर चुके, उन्हें अल्लाह तआला ने दोज़ख़ की सज़ा से बचा दिया। (56) यह सिर्फ़ तेरे रब का फ़ज़्ल है। यही है बड़ी मुराद मिलनी। (57) हमने इस क़ुरआन को तेरी ज़ुबान में आसान कर दिया ताकि वह नसीहत हासिल करें (58) अब तू मुंतज़िर रह यह लोग भी इंतिज़ार में हैं।" (59)

जन्नती ख़ूराक और लिबास (आ. 51 से 59) : बदबख़्तों का ज़िक्र करके अब नेक बख़्तों का हाल बयान हो रहा है, इसीलिए क़ुरआने करीम को मसानी कहा गया है। दारे दुनिया में जो अल्लाह तआला मालिक व ख़ालिक़ व क़ादिर से डरते रहे वह क़ियामत के दिन जन्नत में निहायत अम्नो अमान से होंगे, मौत से, वहाँ से निकलने से, ग़म रंज से, घबराहट और मुश्किलों से, दुख दर्द से, तक्लीफ़ और मशक़्क़त से, शैतान और उसके मकर से, रब की नाराज़गी से ग़र्ज़ तमाम आफ़तों और मुसीबतों से निडर बेफ़िक्र मुत्मइन और बेअंदेशा होंगे। उन्हें तो ज़क़्क़ूम का दरख़्त और आग जैसा गर्म पानी मिलेगा और इन्हें जन्नतें और नहरें मिलेंगी, मुख़्तलिफ़ क़िस्म के रेशमी लिबास इन्हें पहनने को मिलेंगे, जिनमें नर्म बारीक भी होगा और दबीज़ चमकदार भी होगा। यह तख़्तों पर बड़े तमत्तराक़ से तकिये लगाये बैठे होंगे और किसी की किसी की तरफ़ पीठ न होगी, बल्कि सब एक दूसरे के सामने बैठे हुए होंगे, उस अ़ता के साथ ही उन्हें हूरें दी जाएँगी जो गोरे चिट्टे पिण्डे की बड़ी बड़ी रसीली आँखों वाली होंगी जिनके पाक जिस्म को उनसे पहले किसी ने न छुआ होगा। वह याक़ूत व मरजान की तरह होंगी। और क्यूँ न हो जब उन्होंने अल्लाह तआला का डर दिल में रखा और दुनिया की ख़्वाहिशों की चीज़ों से सिर्फ़ फ़र्माने बारी तआला को मद्देनज़र रखकर बचे रहे, तो अल्लाह तआला उनके साथ यह बेहतरीन सुलूक क्यूँ न करता? एक मरफ़ूअ हदीस में है कि "उन हूरोंमें से कोई खारी समुन्द्र में थूक दे तो उसका सारा पानी मीठा हो जाए।" (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है।) फिर वहाँ यह जिस मेवे की तलब करेंगे मौजूद होगा। जो माँगेंगे मिलेगा। इधर इरादा किया उधर मौजूद हुआ, ख़्वाहिश हुई और हाज़िर हुआ। फिर निहायत बेफ़िक्री से कमी का ख़ौफ़ नहीं ख़त्म हो जाने का खटका नहीं। फिर फ़र्माया वहाँ उन्हें कभी मौत न आने की, फिर इस्तिस्ना मुन्क़तअ लाकर इनकी ताकीद कर दी। बुख़ारी व मुस्लिम में है कि "मौत भेड़ की शक्ल में लाकर जन्नत व दोज़ख़ के बीच ज़िब्ह कर दिया जाएगा और निदा कर दी जाएगी कि जन्नतियों अब हमेशगी है कभी मौत नहीं और ऐ जहन्नमियों! तुम्हारे लिए भी हमेशगी है कभी मौत न आएगी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह काफ़ हा या ऐन साद, बाब क़ौलुल्लाहि अ़ज़्ज़ व जल्ल (व अंज़िरहुम यौमल हसरत...) : 4730; सहीह मुस्लिम : 2849) सूरह मरियम की तफ़्सीर में भी यह हदीस गुज़र चुकी है। सहीह मुस्लिम वग़ैरह में है कि "जन्नतियों से कह दिया जाएगा कि तुम हमेशा तन्दुरुस्त रहोगे। कभी बीमार न पड़ोगे और हमेशा ज़िन्दा रहोगे कभी मरोगे नहीं और हमेशा नेअमतों में रहोगे, कभी कमी न होगी और हमेशा नौजवान रहोगे, कभी बूढ़े न होओगे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी दवामि नईमे अहलिल जन्ना : 2837) और हदीस में है "जो अल्लाह तआला से डरता रहेगा, जन्नत में जाएगा जहाँ नेअमतें पाएगा कभी मोहताज न होगा, जहाँ जियेगा, कभी मरेगा नहीं। जहाँ कपड़े मेले न होंगे और जवानी फ़ना न होगी। (अबूबक्र बिन अबी दाऊद सजिस्तानी और इसकी सनद ज़ईफ़ है; क़तादा मुदल्लस व अ़न्अ़न व फ़ीहि इल्लतुन उख़रा, सिफ़तुल जन्नत लि अबी नुऐम : 101) हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ कि जन्नती सोएँगे भी? आपने फ़र्माया नींद मौत की बहन है। जन्नती सोयेंगे नहीं हर वक़्त राहत व लज़्ज़त में मशग़ूल रहेंगे।" (अल्मुअजमुल औसत : 923; और इसकी सनद ज़ईफ़ुन जिद्दा है अन्नहाया बि तहक़ीक़ी :

1494; सिफ़तुल जन्ना : 3/84) यह हदीस और सनदों से भी मरवी है और इससे पहले सनदों का ख़िलाफ़ गुज़र चुका है, वल्लाहु आलम! इस राहत व नेअमत के साथ यह भी बड़ी नेअमत है कि उन्हें परवरदिगारे आलम ने अज़ाबे जहन्नम से नजात दे दी है, तो मत्लूब हासिल है और ख़ौफ़ ज़ाइल है, इसीलिए साथ ही फ़र्माया कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला का एहसान व फ़ज़्ल है। सहीह हदीस में है कि "तुम ठीक ठाक रहो क़रीब क़रीब रहो और यक़ीन मानो कि किसी के आमाल उसे जन्नत में नहीं ले जा सकते। लोगों ने कहा क्या आपके आमाल भी? फ़र्माया हाँ! मेरे आमाल भी मगर यह कि अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और उसकी रहमत मेरे शामिले हाल हो।" (इस मअनी की रिवायत सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्क़सदु वल मुदावमतु अलल अमल : 6467; सहीह मुस्लिम : 2818; में भी है।)

हमने अपने नाज़िलकर्दा इस कुरआने करीम को बहुत सहल और बिलकुल आसान साफ़ ज़ाहिर बहुत वाजेह मुदल्लल और रोशन करके तुझ पर तेरी ज़ुबान में नाज़िल किया है जो बहुत फ़सीह व बलीग़ बड़ी शीरीं और पुख़्ता है, ताकि लोग आसानी के साथ समझ लें और बख़ुशी अमल करें। बावजूद इसके भी जो लोग इसे झुठलाएँ, न मानें तू उन्हें होशियार कर दे और कह दे कि अच्छा! अब तुम भी इंतिज़ार करो मैं भी मुंतज़िर हूँ, तुम देख लोगे कि अल्लाह तआला की तरफ़ से किसकी ताईद होती है? किसका कलिमा बुलंद होता है? किसे दुनिया और आख़िरत मिलती है? मतलब यह है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम तसल्ली रखो फ़तह व ज़फ़र तुम्हें होगी। मेरी आदत है कि अपने नबियों और उनके मानने वालों को ऊँचा करूँ जैसा इर्शाद है (كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِىْ) (58/मुजादिला : 21) यानी अल्लाह तआला ने यह लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। और आयत में है (اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا) (40/मोमिन : 51) यानी यक़ीनन हम अपने पैग़म्बरों की और ईमान वालों की दुनिया में भी मदद करेंगे, और क़ियामत के दिन भी जिस दिन गवाह क़ायम होंगे। और ज़ालिमो को उनके उज़्र नफ़ा न देंगे उन पर लअनत होगी और उनके लिए बुरा घर होगा।

(अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह दुख़ान की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह जासिया - 45

आयात : 37 मक्की पैराग्राफ : 7

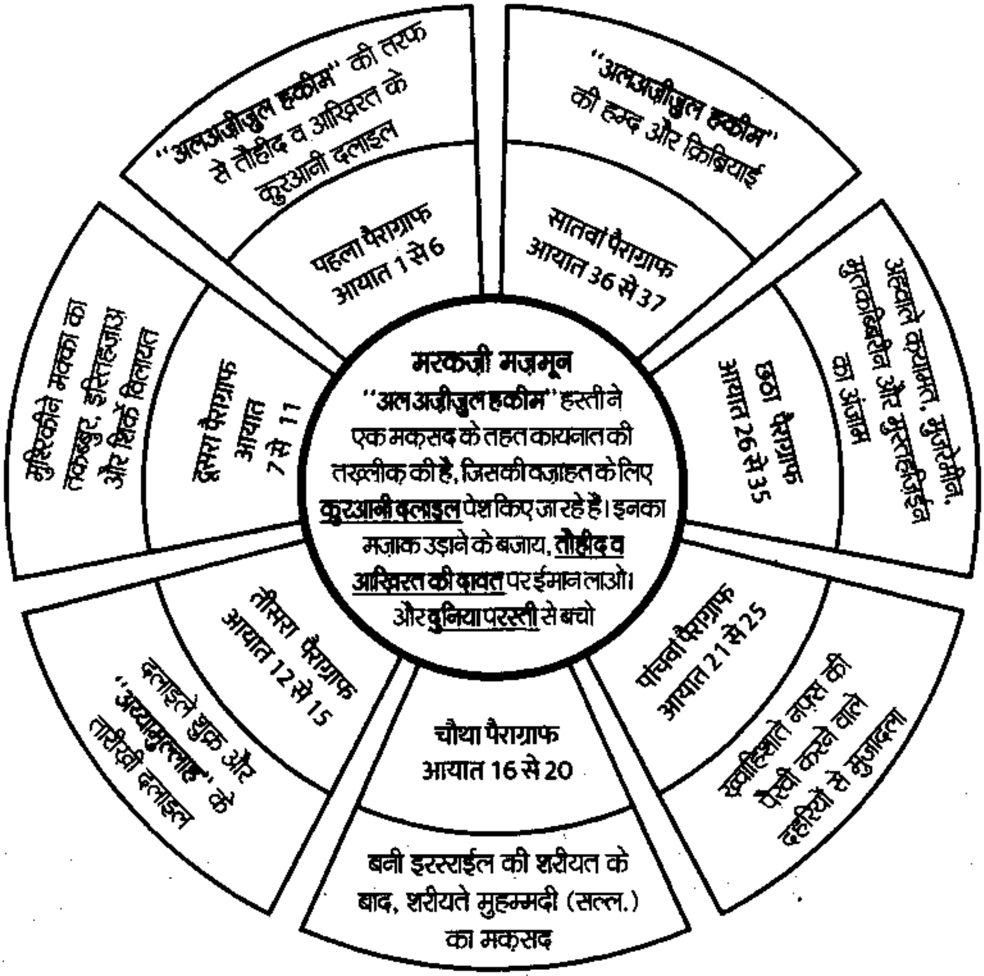

तफ़्सीर सूरह जासिया

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

***

حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ تَنۡزِیۡلُ الۡکِتٰبِ مِنَ اللّٰہِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَکِیۡمِ ﴿۲﴾ اِنَّ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ لِّلۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۳﴾ وَ فِیۡ خَلۡقِکُمۡ وَ مَا یَبُثُّ مِنۡ دَآبَّۃٍ اٰیٰتٌ لِّقَوۡمٍ یُّوۡقِنُوۡنَ ﴿۴﴾ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ النَّہَارِ وَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰہُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ رِّزۡقٍ فَاَحۡیَا بِہِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِہَا وَ تَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ اٰیٰتٌ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۵﴾

तर्जुमा : ''हामीम! (1) यह किताब अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाले की तरफ़ से नाज़िल हुई है (2) आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिए यक़ीनन बहुत से दलाइल हैं। (3) और ख़ुद तुम्हारी पैदाइश में और जानवरों के फैलाने में यक़ीन रखने वाली क़ौम के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं (4) और रात दिन के बदलने में और जो कुछ रोज़ी अल्लाह तआला आसमान से नाज़िल करके ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है उसमें और हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो अक़्ल रखते हैं दलाइल हैं।'' (5)

ग़ौर करो तो हर तरफ़ उसकी क़ुदरत नज़र आती है (आ. 1 से 5) : अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ को हिदायत करता है कि वह क़ुदरत की निशानियों में ग़ौरो फ़िक्र करें। अल्लाह तआला की नेअमतों को जानें और पहचानें फिर उनका शुक्र बजा लाएँ। देखें कि अल्लाह कितनी बड़ी क़ुदरतों वाला है जिसने आसमान व ज़मीन और मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तमाम मख़्लूक़ को पैदा किया है। फ़रिश्ते, जिन्न, चौपाये, परिन्द, जंगली जानवर, दरिन्द, कीड़े पतंगे सब उसी के पैदा किये हुए हैं। समुन्द्र की बेशुमार मख़्लूक़ का ख़ालिक़ भी वही एक है। दिन को रात के बाद और रात को दिन के पीछे वही ला रहा है। रात का अंधेरा दिन का उजाला उसी के क़ब्ज़े की चीज़ें हैं। हाजत के वक़्त अंदाज़ के मुताबिक़ बादलों से पानी वही बरसाता है। रिज़्क़ से मुराद बारिश

है इसलिए कि उसी से खाने की चीज़ें उगती हैं। ख़ुश्क, बंजर ज़मीन सब्ज़ व शादाब हो जाती है और तरह तरह की पैदावार उगाती है। शिमाली जुनूबी, पुरवा पछवा, तर व ख़ुश्क, कमो बेश, रात और दिन की हवाएँ वही चलाता है। कुछ हवाएँ बारिश को लाती हैं। कुछ बादलों को पानी वाला कर देती हैं। कुछ रूह की ग़िज़ा बनती हैं और उनके सिवा और कामों के लिए चलती हैं। पहले फ़र्माया कि इसमें ईमान वालों के लिए निशानियाँ हैं, फिर यक़ीन वालों के लिए फ़र्माया। फिर अक़्ल वालों के लिए फ़र्माया, यह एक इज़्ज़त वाले हाल से दूसरे इज़्ज़त वाले हाल की तरफ़ तरक़्क़ी करना है। इसी के मिस्ल सूरह बक़रह की आयत (إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ) (2/बक़रह : 164) है। इमाम इब्ने अबी हातिम ने यहाँ पर एक लम्बा असर वारिद किया है लेकिन वह ग़रीब है उसमें इंसान को चार क़िस्म के अख़्लात से पैदा करना भी है, वल्लाहु आलम!

***

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ
⑥ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ⑦ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ
لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑧ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۗ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑨ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا
شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑩ هٰذَا هُدًى ۚ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑪

तर्जुमा : ''यह हैं अल्लाह की आयतें जिन्हें हम तुझे रास्ती से सुना रहे हैं। पस अल्लाह तआला और उसकी आयतों के बाद यह किस पर ईमान लाएँगे। (6) वैल और अफ़सोस है हर एक झूठे गुनहगार पर। (7) जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी ग़ुरूर करता हुआ इस तरह अड़ा रहे कि गोया सुनी ही नहीं तो ऐसे लोगों को दर्द देने वाले अज़ाब की ख़बर पहुँचा दे। (8) वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पा लेता है तो उसकी हँसी उड़ाता है, यही लोग हैं जिनके लिए रुस्वाई की मार है (9) उनके पीछे दोज़ख़ है जो कुछ उन्होंने हासिल किया था वह उन्हें कुछ भी नफ़ा न देगा और न वह कुछ काम आएँगे जिनको उन्होंने

अल्लाह के सिवा दोस्त बना रखा था उनके लिए तो बहुत बड़ा अ़ज़ाब है।(10) यह सरतापा हिदायत है, और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों को न माना उनके लिए बहुत सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब है।'' (11)

अगर क़ुरआन पर नहीं तो किस चीज़ पर ईमान लाएँगे? (आ. 6 से 11) : मत़लब यह है कि क़ुरआन जो ह़क़ की त़रफ़ से निहायत स़फ़ाई और वज़ाह़त से नाज़िल हुआ है, उसकी आयतें तुझ पर तिलावत की जा रही हैं जिसे यह सुन रहे हैं और फिर भी ईमान लाते हैं, न अ़मल करते हैं तो फिर आख़िर ईमान किस चीज़ पर लाएँगे। इनके लिए वैल है और इन पर अफ़सोस है जो जुबान के झूठे काम के गुनहगार और दिल के काफ़िर हैं। अल्लाह की बातें सुनते हुए अपने कुफ़्र इंकार और बद बात़िनी पर अड़े हुए हैं। गोया सुना ही नहीं। उन्हें सुना दो कि इनके लिए अल्लाह तआ़ला के यहाँ दुख की मार है। क़ुरआन की आयतें इनके मज़ाक़ की चीज़ रह गई हैं। तो जिस त़रह़ यह मेरे कलाम की आज एहानत करते हैं, कल मैं इन्हें ज़िल्लत की सज़ा दूँगा। ह़दीस में है कि ''क़ुरआन लेकर दुश्मनों के मुल्क में न जाओ ऐसा न हो कि वह उसकी एहानत व बेक़द्री करें।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब कराहयतुस्सफ़र इला....: 2990; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 1869; अबूदाऊद : 2610; इब्ने माजा : 2879; इब्ने ह़िब्बान : 4715) फिर उस ज़लील करने वाले अ़ज़ाब का बयान फ़र्माया कि इन ख़स्लतों वाले लोग जहन्नम में डाले जाएँगे। इनके माल व औलाद और इनके वह झूठे मअ़बूद जिन्हें यह ज़िन्दगी भर पूजते रहे उन्हें कुछ काम न आएँगे। उन्हें ज़बरदस्त और बहुत बड़े अ़ज़ाब भुगतने पड़ेंगे। फिर इर्शाद हुआ कि यह क़ुरआन सरासर हिदायत है और इसकी आयतों से जो इंकार करे उनके लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब हैं, वल्लाहु आ़लम!

***

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا
يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۴﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلِنَفْسِهٖ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۵﴾

तर्जुमा : "अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए दरिया को मुतीअ बना दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियाँ चलें और तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो और मुम्किन है कि तुम अल्लाह का शुक्र बजा लाओ, (12) और आसमान व ज़मीन की हर हर चीज़ को भी उसने अपनी तरफ़ से तुम्हारी मुतीअ कर दी है। जो गौर करें यक़ीनन वह उसमें बहुत सी दलीलें पा लेंगे (13) तू ईमान वालों से कह दे कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के दिनों की तवक़्क़अ नहीं रखते ताकि अल्लाह तआला एक क़ौम को उनके करतूतों का बदला दे (14) जो नेकी करेगा वह अपने ज़ाती भले के लिए, और जो बुराई करेगा उसका वबाल उसी पर है, फिर तुम सब अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटाए जाओगे।" (15)

तिजारत के ज़रायेअ अल्लाह तआला ने पैदा किये हैं (आ. 12 से 15) अल्लाह तआला अपनी नेअमतें बयान कर रहा है कि उसी के हुक्म से समुन्द्र में अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ सफ़र तै करते हो, बड़ी बड़ी कश्तियाँ माल से और सवारी से लदी हुई इधर से उधर ले जाते हो। तिजारतें और कमाई करते हो। यह इसलिए भी है कि तुम शुक्र बजा लाओ, नफ़ा हासिल करके रब का एहसान मानो। फिर उसने आसमान की चीज़ जैसे सूरज चाँद सितारे और ज़मीन की चीज़ जैसे पहाड़ नहरेंऔर तुम्हारे फ़ायदे की बेशुमार चीज़ें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दीं, यह सब उसका फ़ज़्लो एहसान इन्आम व इकराम है और उसी एक की तरफ़ से है, जैसे इर्शाद है (وَمَا بِكُم مِّن نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللَّهِ) (16/नहल : 53) यानी तुम्हारे पास जो नेअमतें हैं सब अल्लाह तआला की दी हुई हैं। और अब भी तुम सख़्ती के वक़्त उसकी तरफ़ गिड़गिड़ाते हो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं हर चीज़ अल्लाह ही की तरफ़ से है और यह नाम उसमें नाम है उसके नामों में से, पस यह सब उसी की जानिब से है। कोई नहीं जो उससे छीना झपटी या झगड़ा कर सके। हर एक उस यक़ीन पर है कि वह इसी तरह है। (तबरी : 22/65) एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से सवाल किया कि मख़्लूक़ किस चीज़ से बनाई गइ है। आपने फ़र्माया, नूर से और आग से और अंधेरे से और मिट्टी से और कहा जाओ इब्ने अब्बास (रज़ि.) को अगर देखो तो उनसे भी पूछ लो। उसने आपसे भी पूछा, यही जवाब पाया। फिर फ़र्माया, वापिस उनके पास जाओ और पूछो कि यह सब किस चीज़ से पैदा किये गए। वह लौटा और सवाल किया तो आपने यही आयत पढ़ सुनाई। (हाकिम : 2/452; और इसकी सनद ज़ईफ़ है हाफ़िज़ ज़हबी ने इसे मुंकर क़रार दिया है।) यह असर ग़रीब है और साथ ही मुंकर भी है। ग़ौरो फ़िक्र रखने वालों के लिए इसमें भी बहुत सी निशानियाँ हैं। फिर फ़र्माता है, सब्रो तहम्मुल की आदत डालो मुंकिरीने क़ियामत की कड़वी कसैली सुन लिया करो। मुश्रिक और अहले किताब की ईज़ाओं को सिहार लिया करो। यह हुक्म शुरू इस्लाम में था लेकिन बाद में जिहाद और जिला वतनी के अहकाम नाज़िल हुए अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते यानी अल्लाह की नेअमतों के हासिल करने की कोशिश नहीं करते। फिर फ़र्माया कि इनसे तुम चश्मपोशी करो इनके आमाल की सज़ा ख़ुद हम इन्हें देंगे। इसीलिए इसके बाद ही फ़र्माया कि तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे और हर नेकी बदी की जज़ा सज़ा पाओगे। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا اِلَّا مِنْۢ
بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١٧ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰي شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ
اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٨ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝١٩ هٰذَا بَصَاۗىِٕرُ لِلنَّاسِ
وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٢٠

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने बनी इस्राईल को किताब हुकूमत और नबुव्वत दी थी और हमने उन्हें पाकीज़ा और नफ़ीस रोज़ियाँ दी थीं और उन्हें दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत दी थी (16) और हमने उन्हें दीन की साफ़ साफ़ दलीलें दीं, फिर उन्होंने अपने पास इल्म के पहुँच जाने के बाद आपस की ज़िद्द बहस से ही इख़्तिलाफ़ बरपा कर डाला, यह जिन जिन चीज़ों में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उनका फ़ैसला क़ियामत के दिन उनके बीच ख़ुद अल्लाह तआला कर लेगा। (17) फिर हमने तुझे दीन की ज़ाहिर राह पर क़ायम कर दिया है सो तू उसी पर लगा रह और नादानों की ख़्वाहिशों की पैरवी में न पड़ (18) याद रख यह लोग अल्लाह के किसी अ़ज़ाब को तुझसे हटा नहीं सकते। समझ ले कि ज़ालिम लोग आपस में एक दूसरे के दोस्त होते हैं और परहेज़गारों का दोस्त अल्लाह तआला है (19) यह क़ुरआन उन लोगों के लिए दानिशमंदियाँ और हिदायत व रहमत है उस जमाअ़त के लिए जो यक़ीन रखती है।'' (20)

बनी इस्राईल पर इन्आमात का ज़िक्र (आ. 16 से 20) : बनी इस्राईल पर जो नेअ़मतें रहीमो करीम अल्लाह तआला ने की थीं, उनका ज़िक्र कर रहा है कि किताबें उन पर उतारीं, रसूल उनमें भेजे, हुकूमत उन्हें दी, बेहतरीन ग़िज़ाएँ और साफ़ सुथरी चीज़ें उन्हें अ़ता कीं और उस ज़माने के और लोगों पर उन्हें बरतरी दी और उन्हें अम्रे दीन की उ़म्दा और खुली हुई दलीलें पहुँचा दीं और उन पर हुज्जते रब क़ायम हो गई। फिर उन

लोगों ने फूट डाली और मुख़्तलिफ़ गिरोह बन गए और इसका बाइस सिवा नफ़्सानियत और ख़ूदी के और कुछ न था। ऐ नबी (ﷺ)! तेरा रब उनके उन इख़्तिलाफ़ात का फ़ैसला क़ियामत के दिन ख़ुद ही कर देगा। उसमें इस उम्मत को चौकन्ना किया गया है कि ख़बरदार! तुम उन जैसे न होना, उनकी चाल न चलना।

इसीलिए अल्लाह जल्ल व अ़ला ने फ़र्माया कि तू अपने रब की वह़ी का ताबेदार बना रह मुश्रिकों से कोई मत़लब न रख, बेइल्मों की रेस न कर, यह तुझे अल्लाह तआ़ला के यहाँ क्या काम आएँगे, इनकी दोस्तियाँ तो इनमें आपस में ही हैं यह तो अपने मिलने वालों को नुक़्सान ही पहुँचाया करते हैं। परहेज़गारों का वली व नासिर रफ़ीक़ व कारसाज़ ख़ुद परवरदिगारे आ़लम है। जो इन्हें अंधेरियों से हटाकर नूर की त़रफ़ ले जाता है और काफ़िरों के दोस्त शयात़ीन हैं जो उन्हें रोशनी से हटाकर अंधेरियों में झोंकते हैं। यह क़ुरआन उन लोगों के लिए जो यक़ीन रखते हैं दलाइल के साथ ही हिदायत व रह़मत है।

***

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۭ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾ وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ
مَنِ اتَّخَذَ اِلٰـهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى
بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ۭ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : "क्या इन लोगों का जो बुरे काम करते हैं यह गुमान है कि हम इन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और नेक काम किये कि उनका मरना जीना यक्साँ हो जाए, बुरा हुक्म लगा रहे हैं (21) आसमान व जमीन को अल्लाह तआ़ला ने बहुत ही अ़दल के साथ पैदा किया है और ताकि हर शख़्स को उसके किये हुए काम का पूरा बदला दिया जाए, उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (22) क्या तूने उसे भी देखा? जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना मअ़बूद बना रखा है और बावजूद समझ बूझ के अल्लाह ने गुमराह कर दिया है और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर भी पर्दा डाल दिया है, अब ऐसे शख़्स को अल्लाह के बाद कौन हिदायत दे सकता है? क्या अब भी तुम नसीहत नहीं पकड़ते?" (23)

दोज़ख़ी और जन्नती हर्गिज़ बराबर नहीं (आ. 21 से 23) : अल्लाह तबारक व तआला इर्शाद फ़र्माता है कि मोमिन व काफ़िर बराबर नहीं, जैसे और आयत में है कि दोज़ख़ी और जन्नती बराबर नहीं। जन्नती कामयाब हैं। यहाँ भी फ़र्माता है कि ऐसा नहीं हो सकता कि कुफ़्र व बुराई वाले और ईमान व अच्छाई वाले मौत व जीस्त में दुनिया व आख़िरत में बराबर हो जाएँ। यह तो हमारी ज़ात और हमारी सिफ़ते अदल के साथ परले दर्जे की बदगुमानी है। मुस्नदे अबू यअला में है हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) फ़र्माते हैं "चार चीज़ों पर अल्लाह तआला ने अपने दीन की बुनियाद रखी है, जो इनसे हट जाए और इन पर आमिल न हो, वह अल्लाह तआला से फ़ासिक़ होकर मुलाक़ात करेगा। पूछा गया कि वह चारों क्या हैं? फ़र्माया यह कि कामिल अक़ीदा रखे कि हलाल व हराम, हुक्म व मुमानिअत यह चारों सिर्फ़ अल्लाह तआला के इख़्तियार में हैं। उसके हलाल को हलाल उसके हराम बताये हुए को हराम मानना उसके हुक्मों को क़ाबिले ता'मील और लायक़े तस्लीम जानना, उसके मना किये हुए कामों से बाज़ आ जाना और हलालो हराम अम्र व नही का मालिक सिर्फ़ उसी को जानना बस यह दीन की असल है।" हज़रत अबुल क़ासिम (ﷺ) का फ़र्मान है कि "जिस तरह बबूल के दरख़्त से अंगूर पैदा नहीं हो सकते उसी तरह बदकार लोग नेककारों का दर्जा हासिल नहीं कर सकते।" (अबू यअला और इसकी सनद बहुत ज़्यादा ज़ईफ़ है; मुक्बिर बिन उस्मान मुंकरुल हदीस) यह हदीस ग़रीब है। सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि कअबतुल्लाह की नींव में से एक पत्थर निकला था जिस पर लिखा हुआ था कि तुम बुराइयाँ करते हुए नेकियों की उम्मीद रखते हो यह बिलकुल ऐसा ही है जैसे कोई ख़ारदार दरख़्त में से अंगूर चुनना चाहता हो। तब्रानी में है कि "हज़रत तमीम दारी (रज़ि.) रात भर तहज्जुद में इसी आयत को बार बार पढ़ते रहे यहाँ तक कि सुबह हो गई।"

फिर फ़र्माया है कि अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन को अदल के साथ पैदा किया। वह हर एक शख़्स को उसके किये का बदला देगा और किसी पर उसकी तरफ़ से ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जाएगा। फिर अल्लाह तआला जल्ल व अला फ़र्माता है कि तुमने उन्हें भी देखा जो अपनी ख़्वाहिशों को इलाह बनाए हुए हैं। जिस काम की तरफ़ तबीयत झुकी कर डाला जिससे दिल रुका छोड़ दिया। यह आयत मुअतज़िला के उस उसूल का रद्द करती है कि अच्छाई बुराई अक़्ली है। हज़रत इमाम मालिक (रह.) इसकी तफ़्सीर करते हुए फ़र्माते हैं कि "जिसकी इबादत का उसके जी में ख़्याल गुज़रता है, उसी को पूजने लगता है। उसके बाद के जुम्ले के दो मअनी हैं एक तो यह कि अल्लाह तआला ने अपने इल्म की बिना पर उसे मुस्तहिक़्क़े गुमराही जानकर गुमराह कर दिया, दूसरा मअनी यह कि उसके पास इल्म व हुज्जत दलील व सनद आ गई। फिर उसे गुमराह किया। यह दूसरी बात पहली को भी मुस्तल्ज़िम है और पहली दूसरी को मुस्तल्ज़िम नहीं। इसके कानों पर मुहर है नफ़ा देने वाली शरई बात सुनता ही नहीं। उसके दिल पर मुहर है हिदायत की बात दिल में उतरती ही नहीं। उसकी आँखों पर पर्दा है कोई दलील उसे नज़र ही नहीं आती। भला अब अल्लाह के बाद उसे कौन राह दिखाए क्या तुम इब्रत हासिल नहीं करते? जैसे फ़र्माया (مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ) (7/आराफ़ : 186) जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसका हादी कोई नहीं, वह उन्हें छोड़ देता है कि अपनी सरकशी में बहकते रहें।

وَقَالُوْا مَا هِیَ اِلَّا حَیَاتُنَا الدُّنْیَا نَمُوْتُ وَنَحْیَا وَمَا یُهْلِکُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا
لَهُمْ بِذٰلِکَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا یَظُنُّوْنَ ﴿۲۴﴾ وَاِذَا تُتْلٰی عَلَیْهِمْ اٰیٰتُنَا بَیِّنٰتٍ
مَّا کَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۲۵﴾ قُلِ اللّٰهُ
یُحْیِیْکُمْ ثُمَّ یُمِیْتُکُمْ ثُمَّ یَجْمَعُکُمْ اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ لَا رَیْبَ فِیْهِ وَلٰکِنَّ اَکْثَرَ
النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾

तर्जुमा : ''इन्होंने कहा कि ज़िन्दगी तो सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी ही है। मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ़ ज़माना ही मार डालता है दरअसल इन्हें इसकी कुछ ख़बर ही नहीं। यह तो सिर्फ़ क़यास और अटकल से ही काम ले रहे हैं। (24) और जब इनके सामने हमारी वाज़ेह और रोशन आयतों की तिलावत की जाती है तो इनके पास इस क़ौल के सिवा कोई दलील नहीं होती कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को लाओ (25) तू कह दे कि अल्लाह तआला ही तुम्हें ज़िन्दा करता है। फिर तुम्हें मार डालता है फिर तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा जिसमें कोई शक नहीं लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते।'' (26)

फ़ल्सफ़ियों और दहरियों का रद्द (आ. 24 से 26) : दहरिया कुफ़्फ़ार और उनके हम अक़ीदा मुश्रिकीने अ़रब का बयान हो रहा है कि यह क़ियामत के इंकारी हैं और कहते हैं कि दुनिया ही इब्तिदा और इंतिहा है, कुछ जीते हैं, कुछ मरते हैं, क़ियामत कोई चीज़ नहीं, फ़लासिफ़ा और इल्मे कलाम के क़ाइल भी यही कहते थे। यह लोग इब्तिदा इंतिहा के क़ाइल न थे, और फ़लासिफ़ा में से जो लोग दहरिया और दोरिया थे वह ख़ालिक़ के भी इंकारी थे, इनका ख़्याल था कि हर छत्तीस हज़ार साल के बाद ज़माने का एक दौर ख़त्म होता है और हर चीज़ अपनी अस़ली ह़ालत पर आ जाती है, और ऐसे कई दौर के वह क़ाइल थे। दरअस़ल यह मअ़क़ूल से भी बेकार झगड़ते थे और मंक़ूल से भी रूगर्दानी करते थे और कहते थे कि गर्दिशे ज़माना ही हलाक करने वाली है न कि अल्लाह तआ़ला। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, इसकी कोई दलील इनके पास नहीं और सिवा वहम व ख़्याल के कोई वह सनद पेश नहीं कर सकते। अबू दाऊद वग़ैरह की सही ह़दीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ''अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है मुझे इब्ने आदम ईज़ा देता है। वह दहर को (यानी ज़माने को) गालियाँ देता है। दरअस़ल दहर मैं हूँ तमाम काम मेरे हाथ में हैं। दिन रात का हेर फेर मैं करता हूँ।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह जासिया : 4826; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2246) एक रिवायत में है ''दहर को गाली न दो, अल्लाह तआ़ला ही दहर है।''

(सहीह मुस्लिम, किताबुल अल्फ़ाज़ मिनल अदबि वग़ैरुहा, बाब अन्नही अन सब्बिद्दहर : 2246) इब्ने जरीर (रह.) ने इसे एक बिलकुल ग़रीब सनद से वारिद किया है। इसमें है, अहले जाहिलियत का ख़्याल था कि हमें दिन रात ही हलाक करते हैं, वही हमें मारते जिलाते हैं। पस अल्लाह तआला ने अपनी किताबे करीम में नक़्ल किया। वह ज़माना को बुरा कहते थे पस अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया मुझे इब्ने आदम ईज़ा पहुँचाता है। वह ज़माने को बुरा कहता है और ज़माना मैं हूँ। मेरे हाथ में सब काम हैं, मैं दिन रात का ले आने ले जाने वाला हूँ। (तब्री : 22/79) इब्ने अबी हातिम में है ''इब्ने आदम ज़माने को गालियाँ देता है, मैं ज़माना हूँ, दिन रात मेरे हाथ में हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब ला तसुब्बुवद्दहर : 6181; सहीह मुस्लिम : 2246; इब्ने हिब्बान : 5714) और हदीस में है मैंने अपने बन्दे से क़र्ज़ तलब किया उसने मुझे न दिया। मुझे मेरे बन्दे ने गालियाँ दीं वह कहता है हाय हाय ज़माना और ज़माना मैं हूँ। (तब्री : 22/79; और इसकी सनद ज़ईफ़ है; हाकिम : 2/453; मुख़्तसरन और इसकी सनद ज़ईफ़ है; इब्ने इस्हाक़ अन्अन) इमाम शाफ़ेई (रह.) और अबू उबैदह (रह.) वग़ैरह अइम्मा लुग़त व तफ़सीर इस हदीस की शरह में फ़र्माते हैं कि जाहिलियत के अरबों को जब कोई बला और शिद्दत व तक्लीफ़ पहुँचती तो वह उसे ज़माने की तरफ़ निस्बत करते और ज़माने को बुरा कहते। दरअसल ज़माना ख़ुद तो कुछ करता नहीं। हर काम का करता धरता अल्लाह तआला ही है इसलिए उनका ज़माने को गाली देना फ़िल्वाक़ेअ उसे बुरा कहना था जिसके हाथ में और जिसके बस में ज़माना है, जो राहत व रंज का मालिक है और वह ज़ात बारी तआला अज़्ज़ व जल्ल है पस वह गाली हक़ीक़ी फ़ाइल यानी अल्लाह तआला पर पड़ती है इसलिए इस हदीस में अल्लाह के नबी (ﷺ) ने यह फ़र्माया और लोगों को इससे रोक दिया। यही शरह बहुत ठीक और बिलकुल दुरुस्त है। इमाम इब्ने हज़्म (रह.) वग़ैरह ने इस हदीस से जो यह समझ लिया है कि दहर अल्लाह के अस्मा-ए-हुस्ना में से एक नाम है, यह बिलकुल ग़लत है, वल्लाहु आलम! फिर इन बेइल्मों की कट हुज्जती बयान हो रही है कि क़ियामत क़ायम होने की और दोबारा ज़िन्दा किये जाने की बिलकुल साफ़ दलीलें जब इन्हें दी जाती हैं और क़ाइल मअ़क़ूल कर दिया जाता है तो चूँकि कोई जवाब बन नहीं पड़ता झट से कह देते हैं कि अच्छा फिर हमारे मुर्दा बाप दादाओं परदादाओं को ज़िन्दा करके, हमें दिखा दो तो हम मान लेंगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है तुम अपना पैदा किया जाना और मर जाना तो अपनी आँखों से देख रहे हो कि तुम कुछ न थे और उसने तुम्हें मौजूद कर दिया। फिर वह तुम्हें मार डालता है, तो जो शुरू में पैदा करने पर क़ादिर है वह दोबारा ज़िन्दा करने पर कैसे क़ादिर न होगा? बल्कि अक़्लन बदाहम के साथ यह बात साबित है कि जो शुरू शुरू किसी चीज़ को बना दे उस पर दोबारा उसका बनाना बनिस्बत पहली बार के बहुत ही आसान होता है। पस यहाँ फ़र्माया कि फिर वह तुम्हें क़ियामत के दिन जिसके आने में कोई शक नहीं जमा करेगा। वह दुनिया में तुम्हें दोबारा लाने का नहीं जो तुम कह रहे हो कि हमारे बाप दादों को ज़िन्दा कर लाओ। यह तो दारे अमल है दारे जज़ा क़ियामत का दिन है। यहाँ तो हर एक को थोड़ी बहुत ताख़ीर मिल जाती है जिसमें वह अगर चाहे उस दूसरे घर के लिए तैयारियाँ कर सकता है। पस अपनी बेइल्मी की बिना पर तुम्हें इसका इंकार न करना चाहिए। तुम गो उसे दूर जान रहे हो लेकिन दरअसल वह क़रीब ही है। तुम गो उसका आना महाल समझ रहे हो लेकिन फ़िल्वाक़ेअ उसका आना यक़ीनी है। जो मोमिन बाइल्म और ज़ी अक़्ल हैं वह उस पर यक़ीने कामिल रखकर अमल में लगे हुए हैं।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾

तर्जुमा : "आसमान व ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है जिस दिन क़ियामत क़ायम होगी उस दिन अहले बातिल बड़े नुक़्सान में पड़ेंगे। (27) तू देखेगा कि हर उम्मत घुटनों पर गिरी हुई होगी हर फ़िर्क़ा अपने नामा-ए-आमाल की तरफ़ बुलाया जाएगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जाएगा। (28) यह है हमारी किताब जो तुम्हारे बारे में सच सच बोल रही है हम तुम्हारे आमाल लिखवाते जाते हैं।" (29)

जिस दिन हश्र बपा होगा (आ. 27 से 29) : अब से लेकर हमेशा तक और आज से पहले भी तमाम आसमानों का कुल ज़मीनों का मालिक बादशाह सुल्तान अल्लाह तआला ही है। अल्लाह के और उसकी किताबों के और उसके रसूलों के मुंकिर क़ियामत के रोज़ बड़े घाटे में रहेंगे। हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.) जब मदीना में तशरीफ़ लाए तो आपने सुना कि मुआफ़िरी एक ज़रीफ़ शख़्स हैं लोगों को अपने कलाम से हँसाया करते हैं, तो आपने उन्हें नसीहत की और फ़र्माया, क्यूँ जनाब क्या आपको मालूम नहीं कि एक दिन आएगा जिसमें बातिल वाले ख़सारे में पड़ेंगे। उसका बहुत अच्छा असर हुआ और हज़रत मुआफ़िरी (रह.) मरते दम तक इस नसीहत को न भूले। (इब्ने अबी हातिम) वह दिन ऐसा होलनाक और सख़्ततर होगा कि हर शख़्स घुटनों पर गिरा हुआ होगा, यह उस वक़्त जबकि जहन्नम सामने लाई जाएगी और वह एक झुरझुरी लेगी जिससे हर शख़्स काँप उठेगा और अपने घुटनों पर गिर जाएगा यहाँ तक कि ख़लीलुल्लाह हज़रत इब्राहीम और रूहुल्लाह हज़रत ईसा (عليه السلام) भी। उनकी ज़ुबान से भी उस वक़्त नफ़्सी नफ़्सी निकलेगा। साफ़ कह देंगे कि अल्लाह तआला आज हम तुझसे और कुछ नहीं माँगते सिर्फ़ अपनी सलामती चाहते हैं। हज़रत ईसा (عليه السلام) फ़र्माएँगे कि आज मैं अपनी वालिदा के लिए भी तुझसे कुछ अर्ज़ नहीं करता बस तू मुझे बचा ले। गो कुछ मुफ़स्सिरीन ने कहा कि मुराद यह है कि हर गिरोह जुदागाना अलग अलग होगा। लेकिन उससे औला और बेहतर तफ़्सीर वही है जो हमने की यानी हर एक अपने ज़ानू पर गिरा हुआ होगा। इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं गोया मैं तुम्हें जहन्नम के पास ज़ानू पर झुके हुए देख रहा हूँ।" (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) और मरफ़ूअ हदीस में जिसमें सूर वग़ैरह का बयान है यह भी है कि फिर लोग जुदा जुदा कर दिये

जाएँगे और तमाम उम्मतें ज़ानू पर झुक पड़ेंगी। (यह मशहूर ज़ईफ़ हदीस है जिसे हदीसुस्सूर कहते हैं कई बार गुज़र चुकी है।) यही फ़र्माने इलाही है (व तरा कुल्ला उम्मतिन जासिया...) इसमें दोनों हालतें जमा कर दीं हैं। पस दरअसल दोनों तफ़्सीरों में एक दूसरे का ख़िलाफ़ नहीं, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माया हर गिरोह अपने नामाए आमाल की तरफ़ बुलाया जाएगा। जैसे इर्शाद है (وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجِيءَ بِالنَّبِيِّينَ) (39/ज़ुमर : 69) नामाए-आमाल रखा जाएगा और नबियों और गवाहों को लाया जाएगा। आज तुम्हें तुम्हारे हर हर अमल का बदला भरपूर दिया जाएगा। जैसे फ़र्मान है (يُنَبَّأُ الْإِنسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ) (75/क़ियामा : 13) इंसान को हर उस चीज़ से बाख़बर कर दिया जाएगा जो उसने आगे भेजी और पीछे छोड़ी। उसके अगले पिछले तमाम आमाल से बल्कि ख़ुद इंसान अपने हाल पर ख़ूब ख़बरदार हो जाएगा गो अपने तमामतर हीले सामने ला डाले। यह आमाल नामा जो हमारे हुक्म से हमारे अमीन और सच्चे फ़रिश्तों ने लिखा है वह तुम्हारे आमाल को तुम्हारे सामने पेश कर देने के लिए काफ़ी वाफ़ी है। जैसे इर्शाद हैं (وَوُضِعَ الْكِتَابُ فَتَرَى الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا فِيهِ)(18/कहफ़ : 49) यानी नामा-ए-आमाल सामने रख दिया जाएगा तो तू देखेगा कि गुनहगार उससे डर जाएँगे और कहेंगे हाय! हमारी कमबख़्ती इस अमलनामा की तो सिफ़त यह है कि किसी छोटे बड़े अमल को क़लमबंद किये बग़ैर छोड़ा ही नहीं है जो कुछ उन्होंने किया था सब सामने हाज़िर पा लेंगे। तेरा रब किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। फिर फ़र्माता है कि हमने मुहाफ़िज़ फ़रिश्तों को हुक्म दे दिया था कि वह तुम्हारे आमाल लिखते रहा करें। हज़रत अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि फ़रिश्ते बन्दों के आमाल लिखते हैं फिर उन्हें लेकर आसमान पर चढ़ते हैं। आसमान के दीवान अमल के फ़रिश्ते उस नामा-ए-आमाल को लोहे महफ़ूज़ में लिखे हुए आमाल से मिलाते हैं जो हर रात उसकी मिक़्दार के मुताबिक़ उन पर ज़ाहिर होता है जिसे अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ की पैदाइश से पहले ही लिखा है तो एक हर्फ़ की कमी ज़्यादती नहीं पाते, फिर आपने उसी आख़िरी जुम्ले की तिलावत की।

***

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ
الْفَوْزُ الْمُبِينُ ﴿٣٠﴾ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا أَفَلَمْ تَكُنْ آيَاتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ
فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ لَا
رَيْبَ فِيهَا قُلْتُم مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ إِن نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ

بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝٣٢ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٣ وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا
وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٣٤ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا
وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝٣٥
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٦ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣٧

तर्जुमा : "पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन्हें उनका रब अपनी रहमत तले ले लेगा यही सरीह कामयाबी है। (30) लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया (उनसे मैं कहूँगा) क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनाई नहीं जाती थीं? फिर भी तुम तकब्बुर करते रहे और तुम थे ही गुनहगार लोग। (31) और जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा यक़ीनन सच्चा है और क़ियामत के आने में कोई शक नहीं। तो तुम जवाब देते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें यूँ ही सा ख़्याल हो जाता है लेकिन हमें यक़ीन नहीं। (32) अब उन पर अपने आमाल की बुराइयाँ खुल गईं और जिसे वह मज़ाक़ में उड़ा रहे थे उसने उन्हें घेर लिया (33) और कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसे कि तुमने अपने उस दिन से मिलने को भुला दिया था तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और तुम्हारा मददगार कोई नहीं। (34) यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह की आयतों की हँसी उड़ाई थी और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था पस आज के दिन न तो यह दोज़ख़ से निकाले जाएँ और न उनसे अल्लाह की ख़फ़्गी का तदारुक तलब किया जाए। (35) पस अल्लाह की ता'रीफ़ है जो आसमानों और ज़मीन और तमाम जहान का पालनहार है। (36) तमाम बुज़ुर्गी और बड़ाई आसमानों और ज़मीन में उसी की है और वही ग़ालिब और हिक्मत वाला है।" (37)

क़ियामत के दिन सच्चे फ़ैसले होंगे (आ. 30 से 37) :इन आयतों में अल्लाह तबारक व तआला अपने उस फ़ैसले की ख़बर देता है जो वह आख़िरत के दिन अपने बन्दों के बीच करेगा, जो लोग अपने दिल से ईमान

लाए और अपने हाथ पैर से मुताबिक़े शरअ नेक निय्यती के साथ अच्छे अ़मल किये उन्हें अपने करम व रह़म से जन्नत अ़ता करेगा रह़मत से मुराद जन्नत है जैसे सह़ीह़ ह़दीस में है कि "अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से फ़र्माया तू मेरी रह़मत है जिसे मैं चाहूँ अ़ता करूँगा।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब क़ौलुहू (तक़ूलु हल मिम्मज़ीद) : 4850; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2846; तिर्मिज़ी : 2561; अह़मद : 2/450; इब्ने ह़िब्बान : 72) खुली कामयाबी और ह़क़ीक़ी मुराद को ह़ासिल कर लेना यही है और जो लोग ईमान से रुक गए बल्कि कुफ़्र किया उनसे क़ियामत के दिन बतौर डाँट डपट के कहा जाएगा कि क्या अल्लाह तआ़ला की आयतें तुम्हारे सामने नहीं पढ़ी जाती थीं, यानी यक़ीनन पढ़ी जाती थीं और तुम्हें सुनाई जाती थीं फिर भी तुमने ग़ुरूर व नुख़ुव्वत में आकर उनकी इत्तिबाअ़ न की बल्कि उनसे मुँह फेरे रहे अपने दिलों में अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान की तक्ज़ीब लिये हुए तुमने ज़ाहिरन अपने अफ़्आ़ल में भी उसकी नाफ़र्मानी की, गुनाहों पर गुनाह दिलेरी से करते चले गए और जब ईमान वाले तुमसे कहते कि अल्लाह तआ़ला का वादा यक़ीनन सच्चा है और क़ियामत ज़रूर क़ायम होगी उसके आने में कोई शक नहीं तो तुम पलटकर जवाब दे दिया करते थे कि हम नहीं जानते क़ियामत किसे कहते हैं? हमें गो कुछ यूँ ही सा वहम होता है लेकिन हमें हर्गिज़ यक़ीन नहीं कि क़ियामत ज़रूर आएगी ही। अब इनकी बद आ़मालियों की सज़ा इनके सामने आ गई। अपनी आँखों अपने करतूत का बदला देख चुके और जिस अ़जाब के इंकारी थे जिसे मज़ाक़ में उड़ाते थे जिसका होना नामुम्किन समझ रहे थे उन अ़ज़ाबों ने उन्हें चारों त़रफ़ से घेर लिया और उन्हें हर क़िस्म की भलाई से मायूस करने के लिए कह दिया गया कि हम तुम्हारे साथ वही मामला करेंगे जैसे कोई किसी को भूल जाता है यानी जहन्नम में झोंक कर। फिर कभी तुम्हें अच्छाई से याद भी न करेंगे यह बदला है उसका कि तुम उस दिन की मुलाक़ात को भुलाए हुए थे, इसके लिए तुमने कोई अ़मल न किया क्योंकि तुम उसके आने की स़दाक़त के क़ाइल न थे अब तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है और कोई नहीं जो तुम्हारी किसी क़िस्म की मदद कर सके। स़ह़ीह़ ह़दीस में है कि "अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से क़ियामत के दिन कहेगा क्या मैंने तुझे बाल बच्चे नहीं दिये थे, क्या मैंने तुझ पर दुनिया में इन्आ़म व इकराम नहीं किये थे? क्या मैंने तेरे लिए ऊँटों और घोड़ों को मुत़ीअ़ और फ़र्मांबरदार नहीं कर दिया था? और तुझे छोड़ दिया था कि सुरूर व ख़ुशी के साथ अपने मकानात और ह़वेलियों में आज़ादी की ज़िन्दगी बसर करे? यह जवाब देगा कि मेरे परवरदिगार! यह सब सच है। बेशक तेरे यह तमाम एह़सानात मुझ पर थे। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा पस आज मैं तुझे उसी त़रह़ भुला दूँगा जिस त़रह़ तू मुझे भूल गया था।" (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल्मोमिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2968)

फिर फ़र्माता है यह सज़ाएँ तुम्हें इसलिए दी गई हैं कि तुमने अल्लाह तआ़ला की आयतों का ख़ूब मज़ाक़ उड़ाया था और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था तुम उसी पर मुत्मइन थे और इस क़द्र तुमने बेफ़िक्री बरती कि आख़िर आज नुक़्सान और ख़सारे में पड़ गए अब तुम दोज़ख़ से निकाले न जाओगे और न तुमसे हमारी नाराज़गी के दूर करने की कोई वजह त़लब की जाएगी। यानी इस अ़ज़ाब से तुम्हारा छुटकारा भी मह़ाल और अब मेरी रज़ामंदी का तुम्हें ह़ासिल होना भी नामुम्किन, जैसे कि मोमिन बग़ैर अ़ज़ाब

व हिसाब के जन्नत में जाएँगे ऐसे ही तुम बेहिसाब अज़ाब किये जाओगे और तुम्हारी तौबा बेकार रहेगी। अपने इस फ़ैसला को जो मोमिनों और काफ़िरों में होगा बयान करके अब इर्शाद फ़र्माता है कि तमाम हम्द, ज़मीनो आसमान और हर चीज़ के मालिक, अल्लाह तआला के लिए है जो कुल जहान का पालनहार है उसकी किब्रियाई यानी सल्तनत और बड़ाई आसमानों और ज़मीन में है। वह बड़ी अज़्मत और बुज़ुर्गी वाला है हर चीज़ उसके सामने पस्त है हर एक उसका मोहताज है। सहीह मुस्लिम की हदीसे क़ुदसी में है ''अल्लाह तआला जल्ल व अला फ़र्माता है अज़्मत मेरा तहमद है और किब्रियाई मेरी चादर है जो शख़्स इनमें से किसी को भी मुझसे लेना चाहेगा मैं उसे जहन्नम में डाल दूँगा।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तहरीमुल किब्र : 2620; अबूदाऊद : 4090; इब्ने माजा : 4174; अहमद : 2/414; इब्ने हिब्बान : 328; अल्अदबुल मुफ़रद : 552) यानी बड़ाई और तकब्बुर करने वाला दोज़ख़ी है। वह अज़ीज़ है यानी ग़ालिब है जो कभी किसी से मग़्लूब नहीं होने का। कोई नहीं जो उस पर रोक टोक कर सके उसके सामने पड़ सके। वह हकीम है उसका कोई क़ौल, कोई फ़ेअल उसकी शरीअत का कोई मसला उसकी लिखी हुई तक़्दीर का कोई हर्फ़ हिक्मत से ख़ाली नहीं वह बुलंदी वाला और बरतरी वाला है। उसके सिवा कोई मअबूद नहीं न उसके सिवा कोई मस्जूद।

(अल्लाह के फ़ज़्लो करम से सूरह जासिया की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह अहकाफ - 46

आयात : 35 मक्की पैराग्राफ : 10

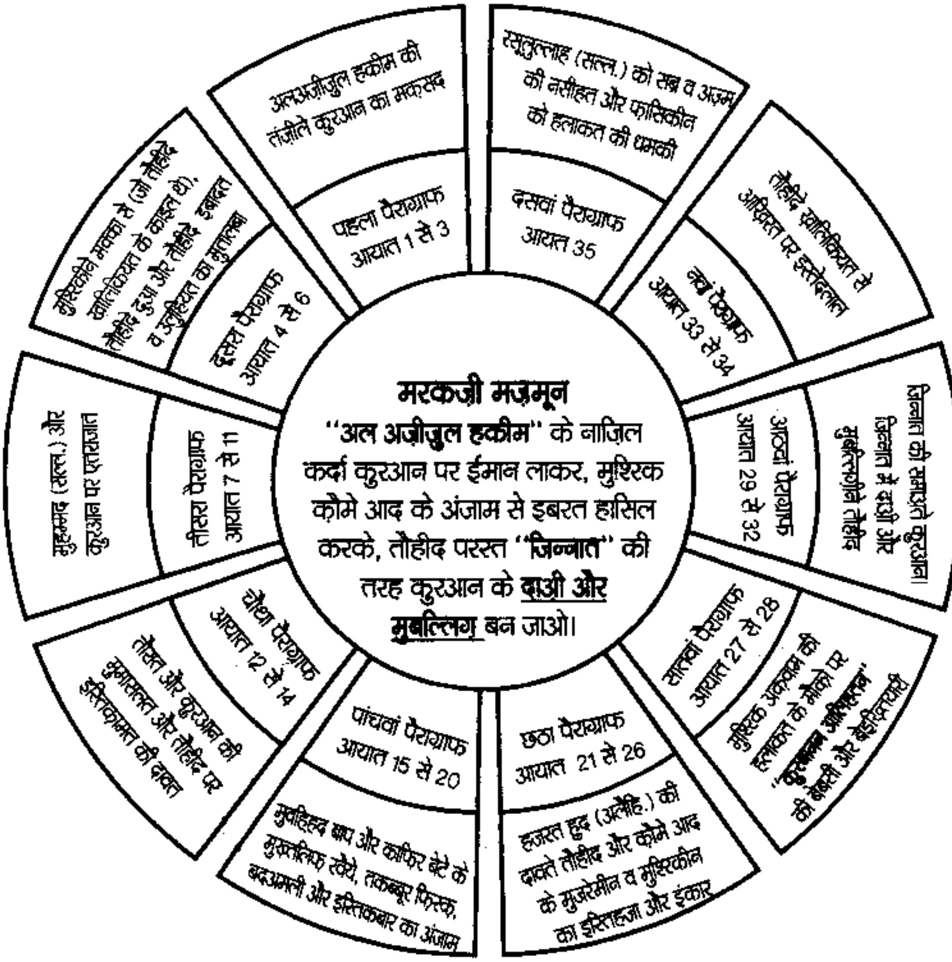

ज़मानए नुज़ूल

"**सूरह अहकाफ**" ग़ालिबन "**सूरह अल्जिन्न**" के साथ, ग़ालिबन दौर-ए-ताइफ से वापसी पर नख़ला के मुकाम पर (शव्वाल 10 नबवी में) हिजरते मदीना से तीन साल पहले नाज़िल हुई, जब रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर "**सिहर**" और "**इफतरा**" के इल्ज़ामात की बाज़गश्त थी। किताबी एतबार से ये "**हवामीम**" के सिलसिले की सातवीं और आख़री सूरह है।

तफ़्सीर सूरह अहक़ाफ़

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

حٰمٓ ① تَنۡزِیۡلُ الۡکِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَکِیۡمِ ② مَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ
وَمَا بَیۡنَهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ وَالَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا عَمَّاۤ اُنۡذِرُوۡا مُعۡرِضُوۡنَ ③
قُلۡ اَرَءَیۡتُمۡ مَّا تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اَرُوۡنِیۡ مَاذَا خَلَقُوۡا مِنَ الۡاَرۡضِ اَمۡ
لَهُمۡ شِرۡکٌ فِی السَّمٰوٰتِ ؕ اِیۡتُوۡنِیۡ بِکِتٰبٍ مِّنۡ قَبۡلِ هٰذَاۤ اَوۡ اَثٰرَةٍ مِّنۡ عِلۡمٍ اِنۡ
کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ ④ وَمَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ یَّدۡعُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَنۡ لَّا یَسۡتَجِیۡبُ لَهٗۤ
اِلٰی یَوۡمِ الۡقِیٰمَةِ وَهُمۡ عَنۡ دُعَآئِهِمۡ غٰفِلُوۡنَ ⑤ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ کَانُوۡا لَهُمۡ
اَعۡدَآءً وَّکَانُوۡا بِعِبَادَتِهِمۡ کٰفِرِیۡنَ ⑥

तर्जुमा : "हामीम! (1) इस किताब का उतारना अल्लाह तआला ग़ालिब हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (2) हमने आसमान व ज़मीन और इन दोनों के बीच की तमाम चीज़ों को बेहतरीन तदबीर के साथ ही, एक म्यादे मुअय्यन के लिए तैयार किया है, काफ़िर लोग जिस चीज़ से डराये जाते हैं मुँह मोड़ लेते हैं। (3) तू कह भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने ज़मीन का कौनसा टुकड़ा बनाया है? या आसमानों में उनका कौनसा हिस्सा है? अगर तुम सच्चे हो तो इससे पहले ही की कोई किताब या कोई नक़्ली इल्म ही मेरे पास लाओ। (4) उससे बढ़कर गुमराह कौन होगा? जो अल्लाह के सिवा ऐसों को

पुकारता है जो क़ियामत तक उसकी दुआ क़बूल न कर सकें बल्कि उनके पुकारने से सिर्फ़ बेख़बर हों। (5) और जब लोगों का हश्र किया जाएगा तो यह उनके दुश्मन हो जाएँगे और उनकी पूजा से साफ़ इंकार कर जाएँगे।'' (6)

ग़ैरुल्लाह की इबादत का कोई सबूत नहीं है (आ. 1 से 6) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि इस क़ुरआने करीम को उसने अपने बन्दे और अपने सच्चे रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल किया है और बयान फ़र्माया है कि रब तआला ऐसी बड़ी इज़्ज़त वाला है जो कभी ज़ाइल नहीं होगा और ऐसी ज़बरदस्त हिक्मत वाला है जिसका कोई क़ौल कोई फ़ेअल हिक्मत से ख़ाली नहीं। फिर इर्शाद होता है कि आसमान व ज़मीन वग़ैरह तमाम चीज़ें उसने अबस और बातिल पैदा नहीं कीं बल्कि सरासर हक़ के साथ और बेहतरीन तदबीर के साथ बनाई हैं और उन सबके लिए वक़्ते मुक़र्रर है जो न घटे न बढ़े। इस रसूल से, इस किताब से और रब तआला से डरावे की और निशानियों से जो बदबातिन लोग बेपरवाही और लाउबाली करते हैं उन्हें अन्क़रीब मालूम हो जाएगा कि उन्होंने किस क़द्र ख़ुद अपना ही नुक़्सान किया।

फिर फ़र्माता है ज़रा इन मुश्रिकीन से पूछो तो अल्लाह तआला के सिवा जिनके नाम तुम जीते हो जिन्हें तुम पुकारते हो और जिनकी इबादत करते हो, ज़रा मुझे भी तो उनकी ताक़त क़ुदरत दिखाओ बतलाओ तो ज़मीन में किस टुकड़े को ख़ुद उन्होंने बनाया है? या साबित तो करो कि आसमानों में उनकी शिर्कत कितनी है और कहाँ है? हक़ीक़त यह है कि आसमान हों या ज़मीनें हों या और चीज़ें हों उन सबका पैदा करने वाला सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है सिवा उसके किसी को एक ज़र्रे का भी इख़्तियार नहीं। तमाम मुल्क का मालिक वही है हर चीज़ पर कामिल तसर्रुफ़ और क़ब्ज़ा रखने वाला वही है। तुम उसके सिवा दूसरों की इबादत क्यूँ करते हो क्यूँ उसके सिवा दूसरों को अपनी मुसीबतों में पुकारते हो तुम्हें यह ता'लीम किसने दी? किसने यह शिर्क तुम्हें सिखाया? दरअसल किसी भले और समझदार शख़्स की यह ता'लीम नहीं हो सकती न अल्लाह तआला ने यह ता'लीम दी है। अगर तुम अल्लाह तआला के सिवा औरों की पूजा पर कोई आसमानी दलील रखते हो तो अच्छा इस किताब को तो जाने दो और कोई आसमानी सहीफ़ा ही पेश कर दो। अच्छा न सही अपने इस मस्लक पर कोई और दलील इल्म ही क़ायम करो। लेकिन यह तो जब हो सकता है कि तुम्हारा यह काम सही भी हो, इस बातिल फ़ेअल पर न तो तुम कोई नक़्ली दलील पेश कर सकते हो न अक़्ली, एक क़िरअत में (अव असरतिम मिन इल्मिन) है यानी कोई सही इल्म की नक़्ल अगलों से ही पेश करो। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं मतलब यह है कि किसी को पेश करो जो इल्म की नक़्ल करे। (तब्री : 22/94) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस अम्र की कोई भी दलील ले आओ। मुस्नद अहमद में है इससे मुराद इल्मी तहरीर है। (अहमद : 1/226; और इसकी सनद सही है व फ़ीहि क़ाल सुफ़्यान, ला अअ़लमहू इल्ला अनिन्नबी (ﷺ) तब्रानी : 10725; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/108; हाकिम : 2/454) रावी कहते हैं मेरा तो ख़्याल है कि यह हदीस मरफ़ूअ है। हज़रत अबूबक्र बिन अयाश (रह.) फ़र्माते हैं मुराद बक़िया इल्म है।

हज़रत हसन बसरी (रह़.) फ़र्माते हैं किसी मख़्फ़ी दलील को ही पेश कर दो और उन बुजुर्गों से यह भी मंक़ूल है कि मुराद इससे अगली तहरीरें हैं। हज़रत क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं कोई ख़ास इल्म और यह सब क़ौल क़रीब क़रीब हम मअनी हैं मुराद वही है जो हमने शुरू में बयान कर दी। इमाम इब्ने जरीर (रह़.) ने भी इसी को इख़्तियार किया है। फिर फ़र्माता है इससे बढ़कर कोई राह गुमकर्दा नहीं जो अल्लाह तआला को छोड़कर बुतों को पुकारे और उनसे हाजतें तलब करे जिन हाजतों के बरलाने की उनमें ताक़त ही नहीं, बल्कि वह तो उससे भी बेख़बर हैं कि कोई उन्हें पुकार रहा है, क़ियामत तक यह पुकारते रहें लेकिन वह ग़ाफ़िल ही हैं, न सुनते हैं, न देखते हैं सिर्फ़ बेख़बर हैं न किसी चीज़ को ले दे सकते हैं इसलिए कि वह तो पत्थर हैं, जमादात में से हैं। क़ियामत के दिन जब सब लोग इकट्ठे किये जाएँगे तो यह मअबूदाने बातिल अपने आबिदों के दुश्मन बन जाएँगे और इस बात से कि यह लोग उनकी पूजा करते थे साफ़ इंकार कर जाएँगे जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का और जगह इर्शाद है (وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً) (19/मरयम : 81) यानी इन लोगों ने अल्लाह के सिवा और मअबूद बना रखे हैं ताकि वह उनकी इज़्ज़त का बाइस बनें। वाक़िया ऐसा नहीं बल्कि वह तो उनकी इबादत का इंकार कर जाएँगे और उनके पूरे मुख़ालिफ़ हो जाएँगे। यानी जबकि यह उनके पूरे मोहताज होंगे उस वक्त वह उनसे मुँह फेर लेंगे। हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने अपनी उम्मत से फ़र्माया था (إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا) (29/अन्कबूत : 25) यानी तुमने अल्लाह के सिवा बुतों से जो ताल्लुक़ात दुनिया में क़ायम कर लिए हैं उसका नतीजा क़ियामत के दिन देख लोगे जबकि तुम एक दूसरे से इंकार कर जाओगे और तुम्हारी जगह जहन्नम मुक़र्रर और मुतअय्यन हो जाएगी और तुम अपना मददगार किसी को न पाओगे।

***

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَٰذَا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑦ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۖ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ
شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۖ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۖ وَهُوَ
الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧ قُلْ مَا كُنتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي
وَلَا بِكُمْ ۖ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑨

तर्जुमा : "इन्हें जब हमारी वाज़ेह आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुंकिर लोग सच्ची बात को जबकि उनके पास आ चुकी कह देते हैं कि यह तो स़रीह जादू है (7) बल्कि कह देते हैं कि इसे तो इसने ख़ुद बना लिया है तू कह अगर मैं ही इसे बना लाया हूँ तो तुम मेरे लिए अल्लाह की तरफ़ से किसी चीज़ का इख़्तियार नहीं रखते, तुम इस क़ुरआन के बारे में जो कुछ कह सुन रहे हो उसे अल्लाह तआला ख़ूब जानता है। मेरे और तुम्हारे बीच इज़्हारे हक़ करने वाला वही काफ़ी है और वह बख़्शिश करने वाला मेहरबान है। (8) तू कह दे कि मैं कोई बिलकुल नया पैग़म्बर तो नहीं, न मुझे यह मालूम है कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वही भेजी जाती है और मैं तो सिर्फ़ अलल ऐलान आगाह कर देने वाला हूँ।" (9)

फ़र्माने रसूल (ﷺ) मुझे नहीं मालूम कि मेरे साथ क्या किया जाएगा (आ. 7 से 9) मुश्रिकों की सरकशी और उनका कुफ़्र बयान हो रहा है कि जब उन्हें अल्लाह तआला की ज़ाहिर व बाहिर वाज़ेह और साफ़ आयतें सुनाई जाती हैं तो यह कह देते हैं कि यह तो स़रीह जादू है। तक्ज़ीब व इफ़्तिरा ज़लालत व कुफ़्र गोया इनका शेवा हो गया है। जादू कहकर ही बस नहीं करते बल्कि यूँ भी कहते हैं कि इसे तो ख़ुद मुहम्मद (ﷺ) ने गढ़ लिया है पस नबी की ज़ुबानी अल्लाह तआला ख़ूब जवाब दिलवाता है कि अगर मैंने ही इस क़ुरआन को बना लिया है और मैं इसका सच्चा नबी नहीं तो यक़ीनन वह मुझे मेरे इस झूठ और बोहतान पर सख़्ततर अज़ाब करेगा और फिर तुम तो क्या सारे जहान में कोई ऐसा नहीं जो मुझे उसके अज़ाबों से छुड़ा सके। जैसे और जगह है (قُلْ إِنِّي لَن يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ) (72/जिन्न : 22) यानी तू कह दे कि मुझे अल्लाह के हाथ से कोई नहीं बचा सकता और न उसके सिवा कहीं और मुझे सिरकने की जगह मिल सकेगी लेकिन मैं अल्लाह तआला की तब्लीग़ और उसकी रिसालत को बजा लाता हूँ। और जगह है (وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا) (69/हाक़्क़ा : 44) यानी अगर यह हम पर कोई बात बना लेता तो हम इसका दाहिना हाथ पकड़कर इसकी रगे गर्दन काट डालते, और तुममें से कोई भी इसे न बचा सकता। फिर कुफ़्फ़ार को धमकाया जा रहा है कि तुम्हारी बातचीत का पूरा इल्म उस अलीम अल्लाह तआला को है, वही मेरे और तुम्हारे बीच फ़ैसला करेगा। उस धमकी के बाद उन्हें तौबा और अनाबत की रग़बत दिलाई जा रही है और फ़र्माता है वह ग़फ़ूर व रहीम है, अगर तुम उसकी तरफ़ रुजूअ करो अपने करतूत से बाज़ आओ तो वह भी तुम्हें बख़्श देगा और तुम पर रह्म करेगा। सूरह फ़ुरक़ान में भी इसी मज़्मून की आयत है। फ़र्मान है (وَقَالُوا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اكْتَتَبَهَا) (25/फ़ुरक़ान : 5) यानी यह कहते हैं कि यह अगलों की कहानियाँ हैं जिन्हें उसने लिख लिया है और सुबह शाम लिखाई जा रही हैं। तू कह दे कि इसे उस अल्लाह तआला ने उतारा है जो हर पोशीदगी को जानता है ख़्वाह आसमानों में हो ख़्वाह ज़मीन में हो, वह ग़फ़ूर व रहीम है।

फिर इर्शाद होता है कि दुनिया में मैं कोई पहला नबी तो नहीं? मुझसे पहले भी तो दुनिया में लोगों की

तरफ़ रसूल आते रहे फिर मेरे आने से तुम्हें इस क़द्र हैरत क्यूँ? मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा? बक़ौले हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) इस आयत के बाद आयत (لِيَغْفِرَ لَكَ اللهُ) (48/फ़तह : 2) उतरी है। (तब्री : 22/99) इसी तरह हज़रत इक्रिमा, हज़रत हसन, हज़रत क़तादा (रह.) भी इसे मंसूख़ बतलाते हैं यह भी मरवी है कि जब आयते बख़्शिश उतरी जिसमें फ़र्माया गया ताकि अल्लाह तेरे अगले पिछले गुनाह बख़्शे, तो एक सहाबी ने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह तो अल्लाह ने बयान कर दिया कि वह आपके साथ क्या करने वाला है पस वह हमारे साथ क्या करने वाला है? इस पर आयत (لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ) (48/फ़तह : 5) उतरी। (तब्री : 22/100) यानी ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसी जन्नतों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बहती हैं। सहीह हदीस से भी यह तो साबित है कि मोमिनों ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको मुबारक हो फ़र्माइए हमारे लिए क्या है? इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4172; बि तसर्रुफ़िन) हज़रत ज़हहाक (रह.) इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि "मतलब यह है कि मुझे नहीं मालूम कि मैं क्या हुक्म दिया जाऊँ और किस चीज़ से रोक दिया जाऊँ?" इमाम हसन बसरी (रह.) का क़ौल है कि इस आयत से मुराद यह है कि आख़िरत का अंजाम तो मुझे क़तअन मालूम है कि मैं जन्नत में जाऊँगा , हाँ! दुनियावी हाल मालूम नहीं कि अगले कुछ अम्बिया की तरह शहीद कर दिया जाऊँ या अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे करके अल्लाह तआला के यहाँ जाऊँ? और इसी तरह मैं नहीं कह सकता कि तुम्हें धंसा दिया जाए या तुम पर पत्थर बरसाये जाएँ। इमाम इब्ने जरीर (रह.) इसी को मुअतबर कहते हैं और फ़िल्वाक़ेअ है भी यह ठीक आप बिल्यक़ीन जानते थे कि आप और आपके पैरो जन्नत में ही जाएँगे और दुनिया की हालत के अंजाम से आप बेख़बर थे कि अंजामकार आपका और आपके मुख़ालिफ़ीन क़ुरैश का क्या हाल होगा? आया वह ईमान लाएँगे या कुफ़्र पर ही रहेंगे और अज़ाब किये जाएँगे या बिलकुल ही हलाक कर दिये जाएँगे। लेकिन जो हदीस मुस्नद अहमद में है हज़रत उम्मुल अला अंसारिया (रज़ि.) फ़र्माती हैं "जिन्होंने हुज़ूर (ﷺ) से बेअत की थी कि जिस वक़्त मुहाजिरीन बज़रिया क़ुरआ अंदाज़ी अंसारियों में तक़्सीम हो रहे थे उस वक़्त हमारे हिस्से में हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) आए, आप हमारे यहाँ बीमार हुए और फ़ौत भी हो गए। जब हम आपको कफ़न पहना चुके, और हुज़ूर (ﷺ) भी तशरीफ़ ला चुके तो मेरे मुँह से निकल गया ऐ अबुस्साइब! अल्लाह तुझ पर रहम करे मेरी तो तुझ पर गवाही है कि अल्लाह तआला यक़ीनन तेरा इकराम ही करेगा। इस पर जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें कैसे मालूम हो गया कि अल्लाह तआला यक़ीनन इसका इकराम ही करेगा। मैंने कहा हुज़ूर (ﷺ) पर मेरे माँ बाप क़ुर्बान हों मुझे कुछ मालूम नहीं। पस आपने फ़र्माया, सुनो! उनके पास तो उनके रब की तरफ़ का यक़ीन आ पहुँचाऔर मुझे उनके लिए भलाई और ख़ैर की उम्मीद है, क़सम है अल्लाह की! बावजूद रसूलुल्लाह (ﷺ) होने के मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा?इस पर मैंने कहा, अल्लाह तआला की क़सम! अब इसके बाद मैं किसी की बराअत नहीं करूँगी और मुझे इसका बड़ा सदमा लगा लेकिन मैंने ख़्वाब में देखा कि हज़रत उस्मान बिन

मज़ऊन (रज़ि.) की एक नहर बह रही है। मैंने आकर हुज़ूर (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया यह उनके आमाल हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब अद्दुख़ूलु अलल मय्यित बअ़दल मौत : 1243; अहमद : 6/436) मुस्लिम में नहीं और इसकी एक सनद में है ''मैं नहीं जानता बावजूद यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ कि इनके साथ क्या किया जाएगा?'' (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादात, बाब अल क़िरअ़तु फ़िल मुश्किलात : 2687) दिल को तो ऐसी लगती है कि यही अल्फ़ाज़ मौक़े के लिहाज़ से ठीक हैं क्योंकि इसके बाद ही यह जुम्ला है कि मुझे इस बात से बड़ा सदमा हुआ। अल्ग़र्ज़ यह हदीस और इसी की हम मअ़नी और हदीसें दलालत हैं इस अम्र पर कि किसी मुअ़य्यन शख़्स के जन्नती होने का क़तई इल्म किसी को नहीं न किसी को ऐसी बात ज़ुबान से निकालनी चाहिए। सिवा उन बुज़ुर्गों के जिनका नाम लेकर शारेअ़ (ﷺ) ने उन्हें जन्नती कहा है जैसे अ़शरा मुबश्शरा और हज़रत इब्ने सलाम और उमैसा और बिलाल और सुराक़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम जो हज़रत जाबिर के वालिद हैं और वह सत्तर क़ारी जो बीरे मऊना की जंग में शहीद किये गए और ज़ैद बिन हारिसा और जअ़फ़र और इब्ने रवाहा और इन जैसे और बुज़ुर्ग (रज़ि.) फिर फ़र्माता है ऐ नबी (ﷺ)! तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ़ उस वही का मुतीअ़ हूँ जो अल्लाह तआ़ला की जनाब से मेरी जानिब आए और मैं तो सिर्फ़ डराने वाला हूँ कि खोल खोलकर हर शख़्स को आगाह कर रहा हूँ, हर अ़क़्लमंद मेरे मंसब से बाख़बर है, वल्लाहु आलम!

***

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَ كَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَقَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَاۤ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ
فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَاۤ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿۱۱﴾ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰۤى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا
كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖۗ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ
الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۳﴾
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾

तर्जुमा : "तू कह अगर यह क़ुरआन अल्लाह तआ़ला ही की त़रफ़ से हो और तुमने इसे न माना हो और बनी इस्राईल का एक गवाह इसकी गवाही भी दे चुका हो और वह ईमान भी ला चुका हो और तुमने सरकशी की हो बेशक अल्लाह तआ़ला सितमगार गिरोह को राह नहीं दिखाता। (10) काफ़िरों ने ईमान वालों की निस्बत कहा कि अगर यह दीन बेहतर होता तो यह लोग उसकी त़रफ़ हमसे सब्क़त करने न पाते और चूँकि इन्होंने इस क़ुरआन से हिदायत नहीं पाई तो यह तो कह देंगे कि क़दीमी झूठ है। (11) और इससे पहले मूसा (ﷺ) की किताब पेशवा और रहमत थी और यह किताब है सच्चा करने वाली अ़रबी ज़ुबान में ताकि सितमगारों को डराये और नेककारों को बशारत हो। (12) बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है फिर उस पर जमे रहे तो उन पर न तो कोई डर होगा और न ग़मगीन होंगे। (13) यह तो अहले जन्नत हैं जो सदा उसी में रहेंगे उन आ़माल के बदले जो किया करते थे।" (14)

सरकशी और तकब्बुर की मज़म्मत (आ. 10 से 14) अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि इन मुश्रिकीन काफ़िरीन से कहो कि अगर यह क़ुरआन सच मुच रब तआ़ला की त़रफ़ से है और फिर भी तुम इसका इंकार कर रहे हो तो बतलाओ तो तुम्हारा क्या हाल होगा? वह अल्लाह तआ़ला जिसने मुझे ह़क़ के साथ तुम्हारी त़रफ़ यह पाक किताब देकर भेजा है वह तुम्हें कैसी कुछ सज़ाएँ करेगा? तुम इसका इंकार करते हो इसे झूठा बतलाते हो ह़ालाँकि इसकी सच्चाई और सेह़त की शहादत वह किताबें भी दे रही हैं जो इससे पहले वक़्तन फ़ौक़तन अगले अम्बिया पर नाज़िल होती रहीं और बनी इस्राईल के जिस शख़्स ने इसकी सच्चाइ की गवाही दी उसने ह़क़ीक़त को पहचानकर उसे माना और इस पर ईमान लाया लेकिन तुमने इसकी इत्तिबाअ़ से जी चुराया और तकब्बुर किया, यह भी मतलब बयान किया गया है कि उस गवाह ने अपने नबी पर और उसकी किताब पर यक़ीन कर लिया, लेकिन तुमने अपने नबी और अपनी किताब के साथ कुफ़्र किया। अल्लाह तआ़ला ज़ालिम गिरोह को हिदायत नहीं करता।(शाहिदुन) का लफ़्ज़ इस्मे जिंस है और यह अपने आ़म मअ़नी के लिहाज़ से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) वग़ैरह सबको शामिल है। यह याद रहे कि यह आयत मक्की है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) के इस्लाम से पहले की है। इसी जैसी और आयत यह भी है (وَإِذَا يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ قَالُوٓا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ) (28/क़सस : 53) यानी जब इन पर तिलावत की जाती है तो इक़रार करते हैं कि यह हमारे रब की जानिब से सरासर बरह़क़ है हम तो इससे पहले ही मुसलमान हैं। और फ़र्मान है (إِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مِن قَبْلِهِ) (17/बनी इस्राईल : 107) यानी जिन लोगों को इससे पहले इल्म दिया गया है उनपर जब तिलावत की जाती है तो वह बिला पशोपेश सज्दे में गिर पड़ते हैं और ज़ुबान से कहते हैं हमारा रब पाक है उसके वादे यक़ीनन सच्चे और होकर रहने वाले हैं। मसरूक़ और शअ़बी (रह़ि.) फ़र्माते हैं यहाँ इस आयत से मुराद ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) नहीं इसलिए कि आयत मक्का में उतरती है और आप मदीना की हिज्रत के बाद इस्लाम क़बूल करते हैं। ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) फ़र्माते हैं किसी शख़्स के बारे में जो ज़िन्दा हो और ज़मीन पर चल फिर रहा हो मैंने ह़ुज़ूर

(ﷺ) की ज़ुबानी उसका जन्नती होना नहीं सुना। सिवा (हज़रत) अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम के, उन्हीं के बारे में आयत (شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۢ بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ) नाज़िल हुई है। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब मनाक़िबे अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) : 3812; सहीह मुस्लिम : 2483; नसाई : 148; अहमद : 1/169; इब्ने हिब्बान : 7163) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) और मुजाहिद, ज़ह्हाक, क़तादा, इक्रिमा, यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हिलाल बिन बश्शार, सुद्दी सौरी, मालिक बिन अनस, इब्ने ज़ेद (रहि.) का क़ौल है कि इससे मुराद हज़रत इब्ने सलाम (रज़ि.) हैं। (तब्री : 22/104) यह कुफ़्फ़ार कहा करते हैं कि अगर क़ुरआन बेहतरी की चीज़ होती तो तुम हम जैसे शरीफ़ इंसान जो अल्लाह के मक़्बूल बन्दे हैं उन पर भला यह नीचे दर्जे के लोग जैसे बिलाल, अ़म्मार, सुहैब, ख़ब्बाब और इन ही जैसे और गिरे पड़े लौण्डी ग़ुलाम कैसे सबक़त कर जाते फिर तो अल्लाह तआ़ला सबसे पहले हमें ही नवाज़ता। हालाँकि यह क़ौल यक़ीनन बातिल है। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़र्माता है (وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ) (6/अन्आ़म : 53) यानी हमने इसी तरह कुछ को कुछ के साथ फ़ित्ने में डाला ताकि कहें क्या यही लोग हैं कि हम सबमें से इन ही पर अल्लाह तआ़ला ने अपना एहसान किया? यानी इन्हें ता'ज्जुब मालूम होता है कि यह लोग कैसे हिदायत पा गए? अगर यह चीज़ भली होती तो हम इसकी तरफ़ लपक कर जाते पस यह ख़्याल इनका तो ख़ाम था लेकिन इतनी बात यक़ीनी है कि नेक समझ वाले, सलामत रवी वाले, हमेशा भलाई की तरफ़ सबक़त करते हैं इसीलिए अहले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि जो क़ौल व फ़ेअ़ल सहाबा रसूल से साबित न हो वह बिदअ़त है इसलिए कि अगर उसमें बेहतरी होती तो वह पाक जमाअ़त जो किसी चीज़ में पीछे रहने वाली न थी वह उसे तर्क न करती। चूँकि अपनी बदनसीबी के बाइस यह गिरोह क़ुरआन पर ईमान नहीं लाया इसलिए यह अपनी ख़जालत दूर करने को क़ुरआन ही पर नाम धरता है और कहता है कि यह तो पुराने लोगों की पुरानी ग़लत बातें हैं यह कहकर वह क़ुरआन वालों को तअ़ना देते हैं। यही वह तकब्बुर है जिसकी बाबत हदीस में है कि तकब्बुर नाम है हक़ को हटा देने और लोगों को हक़ीर समझने का। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमुल किब्र व बयानुहू) फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़र्माता है इससे पहले हज़रत मूसा (عليه السلام) पर नाज़िलशुदा किताब तौरात इमाम व रहमत थी और यह किताब यानी क़ुरआन मजीद अपने से पहले की तमाम किताबों को मुनज़्ज़ल मिनल्लाह और सच्ची किताबें मानता है। यह अ़रबी फ़सीह और बलीग़ ज़ुबान में निहायत वाज़ेह किताब है। इसमें कुफ़्फ़ार के लिए डरावा है और ईमान वालों के लिए बशारत है। इसके बाद की आयत की पूरी तफ़्सीर सूरह हामीम अस्सज्दा में गुज़र चुकी है। इन पर ख़ौफ़ न होगा यानी आइन्दा और यह ग़म न खाएँगे यानी छोड़ी हुई चीज़ों का यह हमेशा जन्नत में रहने वाले जन्नती हैं इनके पाकीज़ा आमाल थे ही ऐसे कि रहमते रहीम, करमे करीम की बदलियाँ इन पर झूम झूमकर मूसलाधार बारिश बरसाएँ, वल्लाहु आ़लम!

***

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسٰنًا ۖ حَمَلَتْهُ أُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ
وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ۖ حَتّٰٓى إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهٗ وَبَلَغَ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِيْٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٥﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ
أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ﴿١٦﴾

तर्जुमा : ''और हमने इंसान को अपने माँ बाप के साथ सुलूक करने का हुक्म दिया है। उसकी माँ ने उसे तक्लीफ़ झेलकर पेट में रखा और तक्लीफ़ बर्दाश्त करके उसे जना। उसके हमल का और उसके दूध छूड़ाने का ज़माना तीस महीने का है। यहाँ तक कि जब वह अपनी कमाले कुव्वत के ज़माने को और चालीस साल की उम्र को पहुँचा तो कहने लगा, ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नेअ़मत का शुक्र बजा लाऊँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर इन्आम की है और यह कि मैं ऐसे नेक अ़मल करूँ जिनसे तू ख़ुश हो जाए और तू मेरी औलाद में भी सलाहियत पैदा कर। मैं तेरी तरफ़ रुजूअ़ करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ। (15) यही वह लोग हैं जिनके नेक आमाल तो हम क़ुबूल कर लेते हैं और जिनके बुरे आमाल से दरगुज़र कर लेते हैं जन्नती लोगों में हैं मुताबिक़ उस सच्चे वादे के जो उनसे किया जाता था।'' (16)

कम से कम हमल की मुद्दत छः माह हो सकती है (आ. 15, 16) : इससे पहले चूँकि रब्बे तआ़ला की तौहीद का और उसकी इबादत के इख़्लास का और उस पर इस्तिक़ामत करने का हुक्म हुआ था इसलिए यहाँ माँ बाप के हुक़ूक़ की बजाआवरी का हुक्म हो रहा है। इसी मज़्मून की और बहुत सी आयतें कुरआन पाक में मौजूद हैं। जैसे फ़र्माया (وَقَضٰى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا) (17/बनी इस्राईल : 23)

यानी तेरा रब ये फ़ैसला कर चुका है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और माँ बाप के साथ एहसान करो और आयत में है। (أَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ إِلَيَّ الْمَصِيْرُ) मेरा शुक्र कर और अपने वालदैन का, लौटना तो मेरी ही तरफ़ है। और भी इस मज़्मून की बहुत सी आयतें हैं। पस यहाँ इर्शाद होता है कि हमने इंसान

को हुक्म किया है कि माँ बाप के साथ एहसान करो उनसे बतवाज़ोअ पेश आओ। अबू दाऊद तयालिसी में हदीस है कि "हज़रत सअद (रज़ि) की वालिदा ने आपसे कहा कि क्या माँ बाप की इताअत का हुक्मे इलाही नहीं, सुन मैं न खाऊँगी , न पानी पियूँगी जब तक कि तू अल्लाह के साथ कुफ्र न करे। हज़रत सअद (रज़ि.) के इंकार पर उसने यही किया कि खाना पीना छोड़ दिया यहाँ तक कि लकड़ी से उसका मुँह खोलकर जबरन पानी वग़ैरह छुआ देते थे," इस पर आयत उतरी। (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब फ़ी फ़ज़्लि सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) : 1748) माँ ने हालते हमल में कैसी तक्लीफ़ें बर्दाश्त की हैं? इसी तरह बच्चा होने के वक़्त कैसी कैसी मुसीबतों का वह शिकार बनी है? हज़रत अली (रज़ि.) ने इस आयत से और इसके साथ सूरह लुक़्मान की आयत (व फ़िसालुहू फ़ी आमैन) और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान (وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ) (2/बक़रह : 233) यानी माएँ अपने बच्चों को दो साल कामिल दूध पिलाएँ, उनके लिए जो दूध पिलाने की मुद्दत पूरी करना चाहें , मिलाकर इस्तिदलाल किया है कि हमल की कम से कम मुद्दत छः माह है। यह इस्तिदलाल बहुत क़वी और बिलकुल सही है। हज़रत उस्मान (रज़ि.) और सहाबा किराम (रज़ि.) की जमाअत ने भी इसी की ताईद की है। हज़रत मअमर बिन अब्दुल्लाह जोहनी फ़र्माते हैं कि "हमारे क़बीले के एक शख़्स ने जुहैना की एक औरत के पास आदमी भेजा वह तैयार होकर आने लगी तो उनकी बहन ने गिरयावज़ारी शुरू कर दी। उस पर बीवी साहिबा ने अपनी बहन को तस्कीन दी और फ़र्माया, क्यूँ रोती हो, अल्लाह तआला की क़सम! मख़्लूके ख़ालिक़ में से किसी से मैं नहीं मिली, मैंने कभी कोई बुरा काम नहीं किया, तो देखो कि अल्लाह तआला का फ़ैसला मेरे बारे में क्या होता है। जब हज़रत उस्मान (रज़ि.) के पास यह आईं तो आपने उन्हें रजम करने का हुक्म दिया। जब हज़रत अली (रज़ि.) को यह बात मालूम हुई तो आपने ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन से पूछा कि यह आप क्या कर रहे हैं? आपने जवाब दिया कि इस औरत को निकाह के छः महीने के बाद बच्चा हुआ है जो नामुम्किन है। यह सुनकर हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, क्या आपने कुरआन नहीं पढ़ा? फ़र्माया, हाँ! पढ़ा है। फ़र्माया, क्या यह आयत नहीं पढ़ी? (व हमलुहू व फ़िसालुहू सलासूना शहरन) और साथ ही यह आयत भी (हौलैनि कामिलैनि) पस मुद्दते हमल और मुद्दते दूध पिलाई दोनों के मिलकर तीस महीने और उसमें से जब दूध पिलाई की कामिल मुद्दत दो साल के चौबीस महीने वज़अ कर दिये जाएँ तो बाक़ी छः महीने रह जाते हैं तो कुरआने करीम से मालूम हुआ हमल की कम अज़्कम मुद्दत छः माह है और उस बीवी साहिबा को भी इतनी ही मुद्दत में बच्चा हुआ फिर उस पर ज़िना का इल्ज़ाम कैसे क़ायम कर रहे हो? हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! यह बात बहुत ठीक है। अफ़सोस! मेरा ख़्याल ही इस तरफ़ नहीं गया। जाओ उस औरत को ले आओ, पस लोगों ने उस औरत को इस हाल पर पाया कि उससे फ़रागत हासिल हो चुकी थी। हज़रत मअमर (रह.) फ़र्माते हैं, अल्लाह की क़सम! एक कौआ दूसरे कौऐ से और एक अण्डा दूसरे अण्डे से भी इतना मुशाबेह नहीं होता जितना उस औरत का यह बच्चा अपने बाप से मुशाबेह था ख़ुद उसके वालिद ने भी उसे देखकर कहा, अल्लाह की क़सम! इस बच्चे के बारे में मुझे अब कोई शक नहीं रहा। और इसे अल्लाह तआला ने एक नासूर के साथ मुब्तला किया जो उसके चेहरे पर था वह ही

उसे घुलाता रहा यहाँ तक कि वह मर गया।'' (अद्दुर्रुल मंसूर : 9/62) यह रिवायत दूसरी सनद से (فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ) (43/ज़ुख़रुफ़ : 81) की तफ़्सीर में हमने वारिद की है।

हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब किसी औरत को नौ महीने में बच्चा हो तो उसकी दूध पिलाई की मुद्दत इक्कीस (21) माह काफ़ी हैं और जब सात महीने में हो तो मुद्दते रज़ाअत (23) माह और जब छः माह में बच्चा हो जाए तो मुद्दते रज़ाअत दो साल कामिल इसलिए कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है कि हमल और दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस माह है।'' जब वह अपनी पूरी कुव्वत के ज़माने को पहुँचा यानी क़वी हो गया जवानी की उम्र में पहुँच गया मर्दों की गिनती में आया और चालीस साल का हुआ अक़्ल पूरी आई फ़हमे कमाल को पहुँचा, हिल्म और बुर्दबारी आ गई, यह कहा जाता है कि चालीस साल की उम्र में जो हालत उसकी होती है उमूमन फिर बाक़ी उम्र वही हालत रहती है। हज़रत मसरूक़ (रह.) से पूछा गया कि इंसान कब अपने गुनाहों पर पकड़ा जाता है?तो फ़र्माया जब तू चालीस साल का हो जाए तो अपना बचाव मुहय्या कर ले। अबू यअ़ला मूसली में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''जब मुसलमान बन्दा चालीस साल का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके हिसाब में तख़्फ़ीफ़ कर देता है और जब साठ साल का हो जाता है तो आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं और जब अस्सी साल का हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी नेकियाँ साबित रखता है और उसकी बुराइयाँ मिटा देता है और जब नब्बे (90) साल का होता है तो अल्लाह तआ़ला उसके अगले पिछले गुनाह माफ़ करता है और उसके घराने के आदमियों के बारे में उसकी सिफ़ारिश करने वाला बनाता है और आसमानों मे लिख दिया जाता है कि यह अल्लाह तआ़ला की ज़मीन में उसका क़ैदी है।'' (मुस्नदे अहमद : 2/89; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; वस्सनदु मुसलसल बिल इलल मिन्हा ज़ुअफ़ फ़ुरज बिन फ़ुज़ाला, बज़्ज़ार : 3587; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4246; ज़ुहद लिल बैहक़ी : 642) बनू उमय्या के दमिश्क़ी गवर्नर हज्जाज बिन अब्दुल्लाह हलीमी फ़र्माते हैं कि ''चालीस साल की उम्र में तो मैंने नाफ़र्मानियों और गुनाहों को लोगों की शर्मो हया से छोड़ा था उसके बाद गुनाहों के छोड़ने का बाइस ख़ुद ज़ाते इलाही से हया थी।'' अरब शायर कहता है कि बचपने में नासमझी की हालत में तो जो कुछ हो गया हो गया लेकिन जिस वक़्त बुढ़ापे ने मुँह दिखाया तो सिर की सफ़ेदी ने ख़ुद बुराइयों से कह दिया कि अब तुम कूच कर जाओ। फिर उसकी दुआ का बयान हो रहा है कि उसने कहा मेरे परवरदिगार! मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेअ़मत का शुक्र करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर इन्आम की और मैं वह आमाल करूँ जिनसे तू मुस्तक़्बिल में ख़ुश हो जाए और मेरी औलाद में मेरे लिए इस्लाह कर दे यानी मेरी नस्ल और मेरे पीछे वालों में मैं तेरी तरफ़ रुजूअ करता हूँ और मेरा इक़रार है कि मैं फ़र्मांबरदारों में हूँ। इसमें इर्शाद है कि चालीस साल की उम्र को पहुँचकर इंसान को पुख़्ता दिल से अल्लाह की तरफ़ तौबा करनी चाहिए और नए सिरे से अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजूअ व रग़बत करके उस पर जम जाना चाहिए। अबूदाऊद में है कि ''सहाबा (रज़ि.) को हुज़ूर (ﷺ) अत्तहिय्यात में पढ़ने के लिए इस दुआ की ता'लीम किया करते थे (अल्लाहुम्मा अल्लिफ़ बैना कुलूबिहिम व अस्लिह ज़ाता बैनिना वहदिना सुबुलस्सलामि व नज्जिना मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व जन्निब्नल

फ़वाहिशा मा ज़हर मिन्हा वमा बतना व बारिक लना फ़ी अस्माइना व अब्सारिना व क़ुलूबिना व अज़्वाजिना व ज़ुर्रियातिना वतुब अलैना इन्नका अन्तत्तव्वाबुर रहीम. वज्अल्ना शाकिरीना लि निअ़मतिका मुस्नीना बिहा अलैका क़ाबिलीहा व अत्मिम्हा अ़लैना) यानी "ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में उल्फ़त डाल और हमारे आपस में इस्लाह़ कर दे और हमें सलामती की राह दिखा और हमें अंधेरों से बचाकर नूर की तरफ़ नजात दे और हमें हर बुराई से बचा ले ख़्वाह वह ज़ाहिर हो ख़्वाह छुपी हुई और हमें हमारे कानों में और आँखों में और दिलों में और बीवी बच्चों में बरकत दे और हम पर रुजूअ फ़र्मा यक़ीनन तू रुजूअ करने वाला मेहरबान है, ऐ अल्लाह! हमें अपनी नेअ़मतों का शुक्रगुज़ार और उनके बाइस अपना सना ख़्वाँ और नेअ़मतों का इक़रारी बना और अपनी भरपूर नेअ़मतें हमें अ़ता फ़र्मा।" (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब तशह्हुद : 969; और वह सही है।)

फिर फ़र्माता है कि यह जिनका बयान गुज़रा जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ तौबा करने वाले और जो नेकियाँ छूट जाएँ उन्हें कसरते इस्तिग़फ़ार से पा लेने वाले ही वह हैं जिनकी अकसर लग़्ज़िशें हम माफ़ कर देते हैं और उनके थोड़े आमाल के बदले हम उन्हें जन्नती बना देते हैं। इनका यही हुक्म है जैसे कि वादा किया और फ़र्माया यह वह सच्चा वादा है जो इनसे किया जाता था। इब्ने जरीर में है हुज़ूरे अकरम (ﷺ) बरिवायत रूहुल अमीन (عليه السلام) फ़र्माते हैं "इंसान की नेकियाँ और बुराईयाँ लाई जाएँगी और एक को एक के बदले में किया जाएगा पस अगर एक नेकी भी बच गई तो अल्लाह तआ़ला उसी के बदले उसे जन्नत में पहुँचा देगा।" रावी ह़दीस ने अपने उस्ताद से पूछा, अगर तमाम नेकियाँ ही बुराइयों के बदले में चली जाएँ तो? आपने फ़र्माया, उनकी बुराइयों से अल्लाह तआ़ला तजावुज़ फ़र्मा लेता है। दूसरी सनद में बफ़र्माने बारी तआ़ला मरवी है। यह ह़दीस ग़रीब है और इसकी सनद बहुत ही पुख़्ता है।

ह़ज़रत यूसुफ़ बिन सअ़द (रह़.) फ़र्माते हैं कि "जब ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) अहले बसरा पर ग़ालिब आ गए उस वक़्त मेरे पास (ह़ज़रत) मुहम्मद बिन ह़ातिब (रह़.) आए एक दिन मुझसे फ़र्माने लगे मैं ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास था और उस वक़्त ह़ज़रत अ़म्मार, ह़ज़रत सअ़सअ़ा, ह़ज़रत अश्तर, ह़ज़रत मुहम्मद बिन अबूबक्र भी थे।

कुछ लोगों ने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) का ज़िक्र निकाला और कुछ गुस्ताख़ी की, ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) उस वक़्त तख़्त पर बैठे हुए थे हाथ में छड़ी थी। ह़ाज़िरीने मज्लिस में से किसी ने कहा कि आपके सामने तो आपकी इस बह़स का सही मुह़ाकिमा करने वाले मौजूद ही हैं, चुनाँचे सब लोगों ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से सवाल किया। उस पर आपने फ़र्माया ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) उन लोगों में से थे जिनके बारे में अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है (ऊलाइकल्लज़ीना नतक़ब्बलु अ़न्हुम...) क़सम अल्लाह तआ़ला की यह लोग जिनका ज़िक्र इस आयत में है। ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) हैं और उनके साथी, तीन बार यही फ़र्माया।" रावी यूसुफ़ कहते हैं मैंने मुहम्मद बिन ह़ातिब से पूछा सच कहो तुम्हें रब की क़सम! तुमने ख़ुद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की ज़ुबानी यह सुना है? फ़र्माया, हाँ! क़सम अल्लाह तआ़ला की मैंने ख़ुद ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से यह सुना है।

وَالَّذِىْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَاۤ اَتَعِدٰنِنِیْۤ اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ
قَبْلِیْ ۚ وَهُمَا یَسْتَغِیْثٰنِ اللّٰهَ وَیْلَكَ اٰمِنْ ۖ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚۖ فَیَقُوْلُ مَا هٰذَاۤ اِلَّاۤ
اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ ۝۱۷ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ حَقَّ عَلَیْهِمُ الْقَوْلُ فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِیْنَ ۝۱۸ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ
وَلِیُوَفِّیَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ۝۱۹ وَیَوْمَ یُعْرَضُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا عَلَى
النَّارِ ؕ اَذْهَبْتُمْ طَیِّبٰتِكُمْ فِیْ حَیَاتِكُمُ الدُّنْیَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْیَوْمَ تُجْزَوْنَ
عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ
تَفْسُقُوْنَ ۝۲۰

तर्जुमा : ''जिसने अपने माँ बाप से कहा कि तुमसे मैं तंग आ गया क्या तुम मुझसे यही कहते रहोगे कि मैं मरने के बाद फिर ज़िन्दा किया जाऊँगा बावजूद यह कि मुझसे पहले भी ज़माने गुज़र चुके हैं , वह दोनों जनाबे बारी में फ़रियाद करते हैं और कहते हैं तुझे ख़राबी हो, तू ईमान वाला बन जा बेशक अल्लाह का वादा हक़ है वह जवाब देता है कि यह तो सिर्फ़ अगलों के अफ़साने हैं (17) यह वह लोग हैं जिन पर अल्लाह के अज़ाब का वादा सादिक़ आ गया, मिन्जुम्ला उन जिन्नात व इंसानों के गिरोह के जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं । जो यक़ीनन नुक़्सान उठाने वाले थे। (18) और हर एक को अपने अपने आमाल के मुताबिक़ दर्जे मिलेंगे ताकि उन्हें उनके आमाल के पूरे बदले दे और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (19) और जिस दिन कुफ़्फ़ार जहन्नम के सिरे पर लाये जाएँगे (कहा जाएगा) तुमने अपनी नेकियाँ दुनिया की ज़िन्दगी में ही बर्बाद कर दीं और उनसे फ़ायदा उठा चुके पस आज तुम्हें ज़िल्लत के अज़ाबों की सज़ा दी जाएगी इसी बाइस कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर किया करते थे और इस बाइस भी कि तुम हुक्म की नाफ़र्मानी किया करते थे।'' (20)

नाफ़र्मान औलाद का वालदेन से रवय्या (आ. 17 से 20) : चूँकि ऊपर उन लोगों का हाल बयान हुआ था जो अपने माँ बाप के हक़ में नेक दुआएँ करते हैं और उनकी ख़िदमतें करते रहते हैं और साथ ही उनके आख़िरत के दरजात का और वहाँ नजात पाने और अपने रब की नेअ़मतों से मालामाल होने का ज़िक्र हुआ था। इसलिए उसके बाद उन बदबख़्तों का बयान हो रहा है जो अपने माँ बाप के नाफ़र्मान हैं, उन्हें बातें सुनाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि यह आयत हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के साहबज़ादे हज़रत अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) के हक़ में नाज़िल हुई है जैसे कि औफ़ी बरिवायत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते हैं जिसकी सेहत में भी कलाम है और जो क़ौल निहायत कमज़ोर है, इसलिए कि हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र (रज़ि.) तो मुसलमान हो गए थे और बहुत अच्छे इस्लाम वालों में से थे बल्कि अपने ज़माने के बेहतरीन लोगों में से थे। कुछ मुफ़स्सिरीन का भी यह क़ौल है लेकिन ठीक यही है कि यह आयत आ़म है। इब्ने अबी हातिम में है कि ''मरवान ने अपने ख़ुत्बे में कहा कि अल्लाह तआ़ला ने अमीरुल मोमिनीन को यज़ीद के बारे में एक अच्छी राय सुझाई है अगर वह उन्हें अपने बाद बतौरे ख़लीफ़ा के नामज़द कर जाएँ तो हज़रत अबूबक्र और हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने भी तो अपने बाद ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया ही है। इस पर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र (रज़ि.) बोल उठे कि क्या हिरक़्ल के दस्तूर पर और ईसाईयों के क़ानून पर अ़मल करना चाहते हो? क़सम है अल्लाह तआ़ला की न तो ख़लीफ़ा अव्वल ने अपनी औलाद में से किसी को ख़िलाफ़त के लिए चुना, न अपने कुंबे क़बीले वालों में से किसी को नामज़द किया और मुआविया (रज़ि.) ने जो इसे किया वह सिर्फ़ बेटे की इज़्ज़त अफ़्ज़ाई और बच्चों पर रहम खाकर। यह सुनकर मरवान कहने लगा क्या तू वही नहीं जिसने अपने वालदेन को उफ़ कहा था? तो अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने फ़र्माया, क्या तू एक मल्ऊ़न शख़्स की औलाद में से नहीं? तेरे वालिद पर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लअ़नत की थी। हज़रत सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने यह सुनकर मरवान से कहा, तूने (हज़रत) अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) से जो कहा वह बिलकुल झूठ है वह आयत इनके बारे में नहीं बल्कि वह फ़लाँ बिन फ़लाँ के बारे में नाज़िल हुई है। फिर मरवान जल्दी ही मिम्बर से उतरकर आपके हुज्रे के दरवाज़े पर आया और कुछ बातें करके लौट गया।'' (इब्ने अबी हातिम और इसकी सनद ज़ईफ़ है।)

बुख़ारी में यह हदीस दूसरी सनद से और दूसरे अल्फ़ाज़ के साथ है, उसमें यह भी है कि हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़्यान (रज़ि.) की तरफ़ से मरवान हिजाज़ का अमीर बनाया गया था। उसमें यह भी है कि ''मरवान ने हज़रत अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) को गिरफ़्तार कर लेने का हुक्म अपने सिपाहियों को दिया लेकिन यह दौड़कर अपनी हमशीरा साहिबा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) के हुज्रे में चले गए इस वजह से इन्हें कोई पकड़ न सका और उसमें यह भी है कि हज़रत सिद्दीक़ा कुब्रा (रज़ि.) ने पर्दा में से फ़र्माया कि हमारे बारे में सिवा मेरी पाकदामनी की आयतों के और कोई आयत नहीं उतरी। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह अहक़ाफ़ बाब (वल्लज़ी क़ाल लि वालिदैहि उफ़्फ़िल लकुमा...) : 4827) नसाई की रिवायत में है कि इस ख़ुत्बे से मक़सद यज़ीद की तरफ़ से बेअ़त हासिल करना था। हज़रत आइशा (रज़ि.) के फ़र्मान में यह भी है कि मरवान अपने इस क़ौल में झूठा है जिसके बारे में यह आयत उतरी है मुझे बख़ूबी उसका नाम मालूम है

लेकिन मैं इस वक़्त उसे ज़ाहिर करना नहीं चाहती लेकिन हाँ! रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मरवान के बाप को मल्ऊन कहा है और मरवान उसकी पुश्त में था पस यह उस लअ़नते इलाही का बक़िया है। (सुननुल कुब्रा : 11491; इसकी सनद में मुहम्मद बिन ज़ियाद है जिसका हज़रत आइशा (रज़ि.) से सुनना साबित नहीं। लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।) यह बेटा अपने माँ बाप की बेअदबी करता है वहाँ रब्बे तआ़ला की बेअदबी से भी नहीं चूकता। मरने के बाद की ज़िन्दगी को झुठलाता है और अपने माँ बाप से कहता है कि तुम मुझे उस ज़िन्दगी से क्या डराते हो मुझसे पहले सैंकड़ों ज़माने गुज़र गए लाखों करोड़ों इंसान मरे मैंने तो किसी को दोबारा ज़िन्दा होते हुए नहीं देखा उनमें से एक भी तो लौटकर ख़बर देने नहीं आया। माँ बाप बेचारे उससे तंग आकर जनाबे बारी से उसकी हिदायत चाहते हैं उसकी बारगाह में अपनी फ़रियाद करते हैं और फिर उससे कहते हैं कि बदनसीब अभी कुछ नहीं बिगड़ा, अब भी मुसलमान बन जा, लेकिन यह मग़रूर फिर जवाब देता है कि जिसे तुम मानने को कहते हो मैं तो उसे एक देरीना क़िस्सा से ज़्यादा वक़अ़त की नज़र से नहीं देख सकता। अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि यह लोग अपने जैसे गुज़िश्ता जिन्नात और इंसानों के ज़ुमरे में दाख़िल हो गए, जिन्होंने अपना नुक़्सान भी किया और अपने वालों को भी बर्बाद किया। अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान में यहाँ लफ़्ज़ (ऊलाइक) है हालाँकि इससे पहले लफ़्ज़ (वल्लज़ी) है इससे भी हमारी तफ़्सीर की पूरी ताईद होती है कि मुराद इससे आम है जो भी ऐसा हो यानी माँ बाप का बेअदब और क़ियामत का इंकारी, उसके लिए यही हुक्म है। चुनाँचे हज़रत हसन और हज़रत क़तादा (रह.) भी यही फ़र्माते हैं कि इससे मुराद काफ़िर, फ़ाजिर माँ बाप का नाफ़र्मान और मरकर जी उठने का इंकारी है। (तब्री : 22/118) इब्ने असाकिर की एक ग़रीब हदीस में है कि "चारों शख़्सों पर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने अपने अ़र्श पर से लअ़नत की है और उस पर फ़रिश्तों ने आमीन कही है, जो किसी मिस्कीन को बहकाये कहे कि मैं तुझे कुछ दूँगा और जब वह आये तो कह दे कि मेरे पास तो कुछ नहीं और जो बरतने की चीज़ की बाबत कहे हालाँकि उसके आगे कुछ न हो। और वह लोग जो किसी को उसके उस सवाल के जवाब में कि फ़लाँ का मकान कौनसा है? किसी दूसरे का मकान बता दें और वह जो अपने माँ बाप को मारे यहाँ तक कि वह तंग आ जाएँ और चीख़ पुकार करने लगें।" (इब्ने असाकिर और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है, वफ़िस्सनदि इ़ल्लल मिन्हा ख़ालिद बिन ज़ुबरक़ान व हम्माद बिन अ़ब्दुर्रहमान व हुमा मज्रूहान)

फिर फ़र्माता है हर एक के लिए उसकी बुराई के मुताबिक़ सज़ा है, रब्बे तआ़ला एक ज़र्रे के बराबर बल्कि उससे भी कम किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। हज़रत अ़ब्दुर्रहमान फ़र्माते हैं जहन्नम के दर्जे नीचे हैं और जन्नत के दर्जे ऊँचे हैं। (तब्री : 22/119) फिर फ़र्माता है कि जब जहन्नमी जहन्नम पर ला खड़े किये जाएँगे उन्हें बतौरे डाँट डपट के कहा जाएगा कि तुम अपनी नेकियाँ दुनिया में ही वसूल कर चुके उनसे फ़ायदा वहीं उठा लिया।" हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने बहुत ज़्यादा मरग़ूब और लतीफ़ ग़िज़ा से इसी आयत को पेशे नज़र रखकर इज्तिनाब कर लिया था और फ़र्माते थे मुझे डर है कहीं मैं उन लोगों में से न हो जाऊँ जिन्हें अल्लाह तआ़ला डाँट डपट के साथ यह कहेगा।" (हाकिम : 2/455; और इसकी सनद बहुत ही ज़ईफ़ है; इमाम ज़हबी कहते हैं इसकी सनद में क़ासिम बिन अ़ब्दुल्लाह "वाह" है।) हज़रत अबू जअ़फ़र (रह.) फ़र्माते

हैं कि "कुछ लोग ऐसे भी हैं जो दुनिया में की हुई अपनी नेकियाँ क़ियामत के दिन गुम पाएँगे और उनसे यही कहा जाएगा।" फिर फ़र्माता है आज उन्हें ज़िल्लत के अज़ाबों की सज़ा दी जाएगी। उनके तकब्बुर और उनके फ़िस्क़ की वजह से जैसा अमल था वैसा ही बदला मिला। दुनिया में यह नाज़ो नेअ़मत से अपनी जानों को पालने वाले और नुख़ुव्वत व बड़ाई से इत्तिबाअ़े हक़ को छोड़ने वाले और बुराइयों और नाफ़र्मानियों में हमातन मशग़ूल रहने वाले थे तो आज क़ियामत के दिन उन्हें एहानत और रुस्वाई वाले अ़ज़ाब और सख़्त दर्दनाक सज़ाएँ और हाय वाय और अफ़सोस व हसरत के साथ जहन्नम के नीचे के तब्क़ों में जगह मिलेगी। अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला हमें इन सब बातों से महफ़ूज़ रखे, आमीन!

***

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝۲۱
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ
۝۲۲ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُوْنَ ۝۲۳ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ
مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝۲۴ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ
رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝۲۵

तर्जुमा : "आ़दियों के भाई को याद करो जबकि उसने अपनी क़ौम को अह़क़ाफ़ में डराया और यक़ीनन उससे पहले भी डराने वाले गुज़र चुके हैं और उसके बाद भी यह कि तुम अल्लाह के सिवा औरों की इबादत न करो, बेशक मैं तो तुम पर बड़े दिन के अ़ज़ाब से ख़ौफ़ खाता हूँ। (21) क़ौम ने जवाब दिया कि आप हमारे पास इसलिए आए हैं कि हमें अपने मअ़बूदों की पूजा करने से रोक दें? पस अगर आप सच्चे हैं तो जिन अ़ज़ाबों का आप हमसे वादा करते हैं उन्हें

हम पर ला डालो? (22) (हज़रत हूद ﷺ ने) कहा (इसका) इल्म तो अल्लाह ही के पास है मैं तो जो पैग़ाम देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम नादानी कर रहे हो। (23) फिर जब उन्होंने अज़ाब को बसूरते बादल देखा जो उनके मैदानों का रुख़ किये हुए था तो कहने लगे यह बादल हम पर बरसने वाला है। (नहीं) बल्कि दरअसल यह बादल वह चीज़ है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे, हवा है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है। (24) जो अपने रब के इल्म से हर चीज़ को हलाक कर रही थी पस वह ऐसे हो गए कि सिवा उनके मकानात के और कुछ दिखाई न देता था गुनहगारों के गिरोह को हम यूँ ही सज़ा दिया करते हैं।'' (25)

अहक़ाफ़ का मअनी व मतलब (आ. 21 से 25) : जनाब रसूल (ﷺ) की तसल्ली के लिए अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है कि अगर आपकी क़ौम आपको झुठलाये तो आप अगले अम्बिया के वाक़ियात याद कर लीजिए कि उनकी क़ौम ने भी उनकी तक्ज़ीब की थी। आदियों के भाई से मुराद हज़रत हूद (ﷺ) हैं। उन्हें अल्लाह तबारक व तआला ने आदे ऊला की तरफ़ भेजा था जो अहक़ाफ़ में रहते थे। अहक़ाफ़ जमा है हक़फ़ की और हक़फ़ कहते हैं रेत के पहाड़ को। मुत्लक़ पहाड़, ग़ार और हज़रमौत की वादी जिसका नाम बरहूत है जहाँ कुफ़्फ़ार की रूहें डाली जाती हैं। यह मतलब भी अहक़ाफ़ का बयान किया गया है। क़तादा (रह.) का क़ौल है कि ''यमन में समुन्द्र के किनारे रेत के टीलों में एक जगह थी जिसका नाम शहर था, यहाँ यह लोग आबाद थे।'' (तब्री : 22/124) इमाम इब्ने माजा (रह.) ने बाब बाँधा है कि जब दुआ माँगे तो अपने नफ़्स से शुरू करे, उसमें एक हदीस लाये हैं कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला हम पर और आदियों के भाई पर रहम करे। (इब्ने माजा, किताबुद्दुआ, बाब इज़ा दआ अहदुकुम फ़ल्युब्दिउ बि नफ़्सिही : 3852; और इसकी सनद ज़ईफ़ है इसकी सनद में सुफ्यान सौरी मुदल्लस रावी है (अत्तक़रीब : 1/311; रक़म : 312) और सिमाअ की सराहत नहीं।) फिर फ़र्माता है कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने इनके आसपास के शहरों में भी अपने रसूल मब्ऊस फ़र्माये थे। जैसे और आयत में है (فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا) (2/बक़रह : 66) और जैसे अल्लाह जल्ल व अला का फ़र्मान है (فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صَاعِقَةً) (41/हामीम अस्सज्दा : 13) फिर फ़र्माता है कि हज़रत हूद (ﷺ) ने अपनी क़ौम से फ़र्माया कि तुम मुवह्हिद बन जाओ वरना तुम्हें उस बड़े भारी दिन में अज़ाब होगा जिस पर क़ौम ने कहा, क्या तू हमें हमारे मअबूदों से रोक रहा है? जा जिस अज़ाब से तू हमें डरा रहा है उसे ले आ। यह तो अपने ज़हन में उसे महाल जानते थे तो जुर्अत करके जल्द तलब किया। जैसे कि और आयत में है (يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا) (42/शूरा : 18) यानी ईमान न लाने वाले हमारे अज़ाबों के जल्द आने की ख़्वाहिश करते हैं। इसके जवाब में उनके पैग़म्बर ने कहा कि अल्लाह ही को बेहतर इल्म है अगर वह तुम्हें इसी लायक़ जानेगा तो तुम पर अज़ाब भेज देगा। मेरा मंसब तो सिर्फ़ इतना ही है कि मैं अपने रब की रिसालत तुम्हें पहुँचा दूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम बिलकुल कमअक़्ल और बेवक़ूफ़ लोग हो। अब अज़ाबे रब्बानी आ गया। उन्होंने देखा कि एक काला बादल उनकी तरफ़ बढ़ता चला आ रहा है चूँकि ख़ुश्कसाली थी गर्मी सख़्त थी यह ख़ुशियाँ मनाने लगे कि

अच्छा हुआ बादल चढ़ा है और इसी तरफ़ रुख़ है अब बारिश बरसेगी। दरअसल बादल की सूरत में यह वह क़हरे इलाही था जिसके आने की जल्दी मचा रहे थे उसमें वह अज़ाब था जिसे हज़रत हूद (ﷺ) से यह तलब कर रहे थे। वह अज़ाब उनकी बस्तियों की तमाम उन चीज़ों को जिनकी बर्बादी होने वाली थी तहस नहस करता हुआ आया और उसी का उसे हुक्मे इलाही था। जैसे और आयत में है (مَا تَذَرُ مِن شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيمِ) (51/ज़ारियात : 42) यानी जिस चीज़ पर वह गुज़र जाती थी उसे चूरा चूरा कर देती थी। पस सबके सब हलाक व तबाह हो गए एक भी न बच सका।

फिर फ़र्माता है हम इसी तरह उनका फ़ैसला करते हैं जो हमारे रसूलों को झुठलाएँ और हमारे अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करें। एक बहुत ही ग़रीब हदीस में इनका जो क़िस्सा आया है वह भी सुन लीजिए। हज़रत हारिस बक्री कहते हैं ''मैं अलाअ बिन हज़रमी (रज़ि.) की शिकायत लेकर रसूलुल्लाह की ख़िदमत में जा रहा था रब्ज़ा में मुझे बनू तमीम की एक बुढ़िया मिली जिसके पास सवारी वग़ैरह न थी मुझसे कहने लगी, ऐ अल्लाह के बन्दे! मेरा एक काम अल्लाह के पैग़म्बर से है क्या तू मुझे हुज़ूर (ﷺ) तक पहुँचा देगा? मैंने इक़रार किया और उन्हें अपनी सवारी पर बिठा लिया और मदीना मुनव्वरा पहुँचा। मैंने देखा कि मस्जिदे नबवी लोगों से खचाखच भरी हुई है स्याह रंग का झण्डा लहरा रहा है और हज़रत बिलाल(रज़ि.) तलवार लटकाये हुए हुज़ूर (ﷺ) के सामने खड़े हैं। मैंने पूछा, क्या बात है? तो लोगों ने मुझसे कहा हुज़ूर (ﷺ) अम्र बिन आस (रज़ि.) को किसी तरफ़ भेजना चाहते हैं, मैं एक तरफ़ बैठ गया। जब हुज़ूर (ﷺ) अपनी मंज़िल या अपने ख़ेमे में तशरीफ़ ले गए तो मैं भी गया इजाज़त चाही और इजाज़त मिलने पर आपकी ख़िदमत में बारयाब हुआ, सलाम की तो आपने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हारे और बनू तमीम के बीच कुछ रंजिश थी? मैंने कहा, हाँ और हम उन पर ग़ालिब रहे थे और अब मेरे इस सफ़र में बनू तमीम की एक नादार बुढ़िया रास्ते में मुझे मिली और यह ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि मैं उसे अपने साथ आपकी ख़िदमत में पहुँचाऊँ, चुनाँचे मैं उसे अपने साथ लाया हूँ और वह दरवाज़े पर इंतिज़ार में है। आपने फ़र्माया उसे भी अंदर बुला लो। चुनाँचे वो आ गईं, मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगर आप हममें और बनू तमीम में कोई रोक कर सके तो उसे कर दीजिए, इस पर बुढ़िया को हमिय्यत लाहिक़ हुई और वह भर्राई हुई आवाज़ में बोल उठी कि फिर या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपका मुज़्तर कहाँ क़रार करेगा? मैंने कहा सुब्हानल्लाह! मेरी तो वही मसल हुई कि अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी मुझे क्या ख़बर थी कि यह मेरी ही मुख़ालिफ़त करेगी वरना मैं इसे लाता ही क्यूँ? अल्लाह तआला की पनाह कहीं ऐसा न हो कि मैं भी मिस्ल आदियों के क़ासिद के हो जाऊँ। आपने पूछा कि आदियों के क़ासिद का क्या वाक़िया है? बावजूद यह कि हुज़ूर (ﷺ) उस वाक़िये से बनिस्बत मेरे बहुत ज़्यादा वाक़िफ़ थे लेकिन आपके फ़र्मान पर मैंने वह क़िस्सा बयान किया कि आदियों की बस्तियों में जब सख़्त क़हतसाली हुई तो उन्होंने अपना एक क़ासिद क़ील नामी रवाना किया। यह रास्ते में मुआविया बिन बक्र के यहाँ आकर ठहर गया और शराब पीने और उसकी दोनों कनीज़ों का गाना सुनने में जिनका नाम जुरादा था इस क़द्र मशग़ूल हुआ कि महीने भर तक यहीं पड़ा रहा, फिर चला और जिबाले मेहरा में जाकर उसने दुआ की कि या अल्लाह!

तू ख़ूब जानता है कि मैं किसी मरीज़ की दवा के लिए या किसी क़ैदी का फ़िदया अदा करने के लिए तो आया ही नहीं , इलाही! आदियों को वह पिला जो तू उन्हें पिलाने वाला है। चुनाँचे चंद स्याह रंग बादल उठे और उनमें से एक आवाज़ आई कि इनमें से जिसे तू चाहे पसंद कर ले, चुनाँचे उसने सख़्त काला बादल पसंद किया, उसी वक़्त उसमें से आवाज़ आई कि इसे राख और ख़ाक बनाने वाला करके ले ताकि आदियों में से कोई बाक़ी न रहे। कहा और मुझे जहाँ तक इल्म हुआ है यही है कि हवाओं के मख़ज़न में से सिर्फ़ इतने ही सूराख़ से हवा छोड़ी गई थी जैसे मेरी इस अंगूठी का हल्क़ा इसी से सब हलाक हो गए।" अबू वाइल कहते हैं, यह बिलकुल ठीक नक़्ल है। अरब में दस्तूर था कि जब किसी क़ासिद को भेजते तो कह देते कि आदियों के क़ासिद की तरह न आना। (अहमद : 3/482; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिज़्ज़ारियात : 3273; वहुव हसन; इब्ने माजा : 2816) जैसे कि सूरह आराफ़ की तफ़्सीर में गुज़रा। मुस्नद अहमद में हज़रत आइशा (रज़ि.) से मरवी है कि "मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को कभी खिलखिलाकर हँसते हुए नहीं देखा कि आपके मसूड़े नज़र आएँ। आप तबस्सुम फ़र्माया करते थे और जब बादल उठता और आँधी चलती तो आपके चेहरे से फ़िक्र के आसार नमूदार हो जाते। चुनाँचे एक दिन मैंने आपसे कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! लोग तो बादल और हवा को देखकर कहाँ ख़ुश होते हैं कि अब बारिश बरसेगी लेकिन आपकी उसके बिलकुल बरअक्स हालत हो जाती है। आपने फ़र्माया, आइशा! मैं इस बात से कि कहीं उसमें अज़ाब हो, कैसे मुत्मइन हो जाऊँ? एक क़ौम हवा ही से हलाक की गई, एक क़ौम ने अज़ाब के बादलों को देखकर कहा था कि यह बादल है जो हम पर बारिश करेगा।" (अहमद : 6/66; सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (फ़लम्मा रऔहु आरिज़म् मुस्तक़्बिला अवदियतिहिम) : 4828, 4829; सहीह मुस्लिम : 899; इसमें (सय्यिबन हनीअन) के अल्फ़ाज़ हैं।) मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) जब कभी आसमान के किनारे से बादल उठता हुआ देखते तो अपने तमाम काम छोड़ देते अगरचे नमाज़ में हों और यह दुआ पढ़ते (अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिका मिन शर्रि मा फ़ीहि) ऐ अल्लाह! मैं तुझसे उस बुराई से पनाह चाहता हूँ जो इसमें है पस अगर खुल जाता तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की हम्द करते और अगर बरस जाता तो यह दुआ पढ़ते (अल्लाहुम्मा सय्यिबन नाफ़िआ, ऐ अल्लाह! नफ़ा देने वाला बरसने वाला बना दे। (अहमद : 6/190; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इज़ा हाजतिर्रीह : 5099; वहुवा सहीहुन; इब्ने माजा : 3899) (अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका ख़ैरहा व ख़ैरा मा फ़ीहा ख़ैरा मा अर्सल्ता बिही व अऊज़ुबिका मिन शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा व शर्रि मा अर्सल्ता बिही) या अल्लाह! मैं तुझसे इसकी और इसमें जो है उसकी और जिसको यह साथ लेकर आई है उसकी भलाई चाहता हूँ और तुझसे उसकी और उसमें जो है उसकी और जिस चीज़ के साथ यह भेजी गई है उसकी बुराई से पनाह चाहता हूँ। और जब बादल उठता तो आपका रंग बदल जाता कभी अंदर कभी बाहर कभी आते कभी जाते जब बारिश हो जाती तो आपकी यह फ़िक्रमंदी दूर हो जाती। हज़रत आइशा (रज़ि.) ने इसे समझ लिया और आपसे एक बार सवाल किया तो आपने जवाब दिया कि आइशा! ख़ौफ़ इस बात का होता है कि कहीं यह उसी तरह न हो जिस तरह क़ौमे हूद ने अपनी तरफ़ बादल को बढ़ता हुआ देखकर ख़ुशी से कहा था

कि यह बादल हमें सैराब कर देगा। सूरह आराफ़ में आदियों की हलाकत का और हज़रत हूद (عليه السلام) का पूरा वाक़िया गुज़र चुका है इसलिए हम इसे यहाँ नहीं दोहराते, फ़लिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नत। तब्रानी की मरफ़ूअ हदीस में है कि आदियों पर इतनी ही हवा खोली गई थी जितना अंगूठी का हल्क़ा होता है। यह हवा पहले देहात वालों और बादिया नशीनों पर आई वहाँ से शहरी लोगों पर आई जिसे देखकर यह कहने लगे कि यह बादल जो हमारी तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है यह ज़रूर हम पर बारिश करेगा लेकिन उसमें जंगली लोग थे जो उन शहरियों पर गिरा दिये गए थे और सब हलाक हो गए। हवा के ख़ज़ांचियों पर हवा की सरकशी उस वक़्त इतनी थी कि दरवाज़ों के सूराख़ों से वह निकली जा रही थी। (तब्रानी : 12416; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/113; इसकी सनद में मुस्लिम मलाई ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/106; रक़म : 8506) वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आ'लम!

***

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۖ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۗ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : "बिल्यक़ीन हमने क़ौमे आद को वह मक़्दूर दिये थे जो तुम्हें तो दिये भी नहीं और हमने उन्हें कान, आँखें और दिल भी दे रखे थे लेकिन उनके कानों और दिलों ने उन्हें कुछ भी तो नफ़ा न दिया जबकि वह अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करने लगे और जिस चीज़ का वह मज़ाक़ बनाया करते थे वही उन पर उलट पड़ी। (26) यक़ीनन हमने तुम्हारे आसपास की बस्तियाँ तबाह कर दीं और तरह तरह की हमने अपनी निशानियाँ बयान कर दीं ताकि वह रुजूअ

कर लें (27) पस कुर्बे इलाही हासिल करने के लिए उन्होंने अल्लाह तआला के सिवा जिन जिनको अपना मअबूद बना रखा था उन्होंने उनकी मदद क्यूँ न की बल्कि वह तो उनसे खोये गए बल्कि दरअसल यह उनका महज़ झूठ और बिलकुल बोहतान था।'' (28)

क़ौमे आद के वाक़िये में इब्रत व नसीहत है (आ. 26 से 28) : इर्शाद होता है कि अगली उम्मतों को जो अस्बाबे दुनियावी माल और औलाद वग़ैरह हमारी तरफ़ से दिये गए थे वैसे तो तुम्हें अब तक मुहय्या भी नहीं उनके भी कान आँखें और दिल थे लेकिन जिस वक़्त उन्होंने हमारी आयतों का इंकार किया और हमारे अज़ाबों का मज़ाक़ बनाया तो बिल्आख़िर उनके ज़ाहिरी अस्बाब उन्हें कुछ काम न आये और वह सज़ाएँ उन पर बरस पड़ीं जिनकी यह हमेशा हँसी किया करते थे, पस तुम्हें उनकी तरह न होना चाहिए, ऐसा न हो कि उनके से अज़ाब तुम पर भी आ जाए और तुम भी उनकी तरह जड़ से काट दिये जाओ। फिर इर्शाद होता है ऐ अहले मक्का! तुम अपने आसपास ही एक नज़र डालो और देखो कि किस क़द्र क़ौमें नेस्तो नाबूद कर दी गई हैं और किस तरह उन्होंने अपने करतूत के बदले पाये हैं। अह्क़ाफ़ जो यमन के पास ही हज़रमौत के इलाक़े में है यहाँ के बसने वाले आदियों के अंजाम पर नज़र डालो, तुम्हारे और शाम के बीच समूदियों का जो हश्र हुआ उसे देखो, अहले यमन और अहले मदयन की क़ौम सबा के नतीजे पर ग़ौर करो, तुम तो अक्सर ग़ज़्वात और तिजारत वग़ैरह के लिए वहाँ से आते जाते रहते हो। बहीरा क़ौम लूत से इब्रत हासिल करो वह भी तुम्हारे रास्ते में ही पड़ता है फिर फ़र्माता है हमने अपनी निशानियों और आयतों को ख़ूब वाज़ेह और ज़ाहिर कर दिया है ताकि लोग बुराइयों से भलाइयों की तरफ़ लौट आएँ। फिर फ़र्माता है कि इन लोगों ने रब्बे तआला के सिवा जिन जिन मअबूदाने बातिल की पूजा शुरू कर रखी थी भले उसमें उनका ख़्याल यह था कि उनकी वजह से हम कुर्बे इलाही हासिल कर लेंगे, लेकिन क्या हमारे अज़ाबों के वक़्त जबकि उनको उनकी मदद की पूरी ज़रूरत थी उन्होंने उनकी किसी तरह मदद की? हर्गिज़ नहीं! बल्कि उनकी एहतियाज और मुसीबत के वक़्त वह तो गुम हो गए, उनसे भाग गए उनका पता भी न चला। अल्ग़र्ज़ उनका पूजना सरीह ग़लती थी, सिर्फ़ झूठ था और सिर्फ़ मज़ाक़ और फ़िज़ूल बोहतान था कि यह उन्हें मअबूद समझ रहे थे। पस उनकी इबादत करने में और उन पर एतिमाद करने में यह धोखे में और नुक़्सान ही में रहे, वल्लाहु आलम!

***

وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْٓا
اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾ قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا
كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى

طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۞ يٰقَوْمَنَآ اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ
ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۞ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ۗ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۞

तर्जुमा : "और याद कर जबकि हमने जिन्नों की एक जमाअ़त को तेरी तरफ़ मुतवज्जह किया वह क़ुरआन सुन रहे थे, पस जब नबी के पास पहुँच गए तो एक दूसरे से कहने लगे, ख़ामोश हो जाओ, फिर जब ख़त्म हो गया तो अपनी क़ौम को आगाह करने के लिए वापिस लौट गए (29) कहने लगे, ऐ हमारी क़ौम! हमने यक़ीनन वह किताब सुनी है जो मूसा (عليه السلام) के बाद नाज़िल हुई है जो अपने से पहली किताबों की तस्दीक़ करने वाली है जो सच्चे दीन की और राहे रास्त की रहबरी करती है। (30) ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह के बुलाने वाले का कहा मानो उस पर ईमान ले आओ तो अल्लाह तुम्हारे कुछ गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें अलमनाक अ़ज़ाब से पनाह देगा। (31) और जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के बुलाने वाले का कहा न मानेगा पस वह ज़मीन में कहीं भागकर अल्लाह तआ़ला को थका नहीं सकता और न अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई उसके मददगार होंगे, यह लोग खुली गुमराही में हैं।" (32)

जिन्नात की हक़ीक़त और क़ुरआन सुनना नीज़ हुज़ूर (ﷺ) जिन्नात के भी नबी हैं (आ. 29 से 32) : मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है कि यह वाक़िया नख़ला का है। रसूलुल्लाह (ﷺ) उस वक़्त नमाज़े इशा अदा कर रहे थे। यह सब जिन्नात सिमटकर आपके आसपास भीड़ की शक्ल में खड़े हो गए। (अहमद : 1/167; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इंक़िताअ़ है इक्रिमा का सय्यदना ज़ुबैर (रज़ि.) से लिक़ा साबित नहीं।) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत में है कि यह जिन्नात नसीबैन के थे तादाद में सात थे। किताब दलाइलुन्नबुव्वा में यह रिवायत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "न तो हुज़ूर (ﷺ) ने जिन्नात को सुनाने की ग़र्ज़ से क़ुरआन पढ़ा था, न आपने उन्हें देखा आप तो अपने सहाबा (रज़ि.) के साथ उ़काज़ के बाज़ार जा रहे थे। उधर यह हुआ कि शयातीन के और आसमान की ख़बरों के बीच रोक हो गई थी और उन पर शोले बरसने शुरू हो गए थे। शयातीन ने आकर अपनी क़ौम को यह ख़बर दी तो उन्होंने कहा कोई न कोई नई बात पैदा हुई है। जाओ तलाश करो, पस यह निकल खड़े हुए। उनमें की जो जमाअ़त अ़रब की तरफ़ मुतवज्जह हुई थी वह जब यहाँ पहुँची तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उ़काज़ की तरफ़ जाते हुए नख़ला में अपने अस्हाब को सुबह की नमाज़ पढ़ा रहे थे। उनके कानों में जब आपकी तिलावत की आवाज़ पहुँची तो यह ठहर गए और कान लगाकर बग़ौर सुनने लगे, उसके बाद उन्होंने फ़ैसला कर लिया

कि बस यही वह चीज़ है जिसकी वजह से तुम्हारा आसमानों तक पहुँचना मौक़ूफ़ कर दिया गया है। यहाँ से यह फ़ौरन ही वापिस लौटकर अपनी क़ौम के पास पहुँचे और उनसे कहने लगे हमने अजीब क़ुरआन सुना जो नेकी का रहबर है। हम तो इस पर ईमान ले आए और इक़रार करते हैं कि अब नामुम्किन है कि अल्लाह तआला के साथ हम किसी और को शरीक करें। इस वाक़िया की ख़बर अल्लाह तआला ने अपने नबी को सूरह जिन्न में दी।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्जहरु बिल क़िरअति सलातिस्सुब्ह : 773; सहीह मुस्लिम : 449; तिर्मिज़ी : 3323; अहमद : 1/252; दलाइलुन्नबुव्वा : 3/226) मुस्नद अहमद में है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "जिन्नात वही इलाही सुना करते थे। एक कलिमा जब उनके कान में पड़ जाता तो वह उसमें दस और मिला लिया करते, पस वह एक तो हक़ निकलता बाक़ी सब झूठ निकलते और उससे पहले उन पर तारे फेंके नहीं जाते थे। पस जब हुज़ूर (ﷺ) मब्ऊस हुए तो उन पर शोलेबारी होने लगी, यह अपने बैठने की जगह पहुँचते और उन पर शोला गिरता और यह ठहर न सकते, उन्होंने आकर इब्लीस से शिकायत की तो उसने कहा कि कोई नई बात ज़रूर हुई है। चुनाँचे उसने अपने लश्करों को उसकी तहक़ीक़ात के लिए चारों तरफ़ फैला दिया। उन्होंने नबी (ﷺ) को नख़ला की दोनों पहाड़ियों के बीच नमाज़ पढ़ते हुए पाया और जाकर उन्होंने ख़बर दी, उसने कहा बस यही वजह है जो आसमान महफ़ूज़ कर दिया गया और तुम्हारा जाना बंद हुआ।" (अहमद : 1/274, 323; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल जिन्न : 3324; वहुव सहीहुन; तबरानी : 12431) हसन बसरी (रह.) का क़ौल भी यही है कि इस वाक़िया की ख़बर तक रसूलुल्लाह (ﷺ) को न थी जब आप पर वही आई तब आपने यह मालूम किया। सीरते इब्ने इस्हाक़ में मुहम्मद बिन कअब (रह.) का एक लम्बा बयान मंक़ूल है जिसमें हुज़ूर (ﷺ) का ताइफ़ जाना, उन्हें इस्लाम की दअवत देना, उनका इंकार करना वग़ैरह पूरा वाक़िया बयान है। हज़रत हसन (रह.) ने इस दुआ का भी ज़िक्र किया है जो आपने उस तंगी के वक़्त की थी जो यह है

اَللّٰهُمَّ اِلَيْكَ اَشْكُوْ ضَعْفَ قُوَّتِيْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِيْ وَهَوَانِيْ عَلَى النَّاسِ يَا اَرْحَمَ
الرّٰحِمِيْنَ اَنْتَ رَبُّ الْمُسْتَضْعَفِيْنَ وَاَنْتَ رَبِّيْ اِلٰى مَنْ تَكِلُنِيْ اِلٰى بَعِيْدٍ
يَتَجَهَّمُنِيْ اَمْ اِلٰى عَدُوٍّ مَلَّكْتَهٗ اَمْرِيْ اِنْ لَّمْ يَكُنْ بِكَ عَلَيَّ غَضَبٌ فَلَا اُبَالِيْ
وَلٰكِنَّ عَافِيَتَكَ هِيَ اَوْسَعُ لِيْ اَعُوْذُ بِنُوْرِ وَجْهِكَ الَّذِيْ اَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ
عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ مِنْ اَنْ تُنْزِلَ بِيْ غَضَبَكَ اَوْ يَحِلَّ عَلَيَّ سَخَطُكَ لَكَ
الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ

यानी अपनी कमज़ोरी और बेसरोसामानी और कस्मपुर्सी की शिकायत सिर्फ़ तेरे सामने करता हूँ। ऐ अरह़मुर्राह़िमीन! तू दरअस़ल सबसे ज़्यादा रह़मो करम करने वाला है और कमज़ोरों का रब तू ही है। मेरा पालनहार भी तू ही है। तू मुझे किसको सौंप रहा है, किसी दूरी वाले दुश्मन को जो मुझे आजिज़ कर दे या किसी क़रीब वाले दोस्त को जिसे तूने मेरे बारे में इख़्तियार दे रखा हो, अगर तेरी कोई ख़फ़्गी मुझ पर न हो तो मुझे इस दर्द दुख की कोई परवाह नहीं लेकिन ताहम अगर तू मुझे आफ़ियत के साथ ही रखे तो वह मेरे लिए बहुत ही राह़त रसाँ है। मैं तेरे चेहरे के उस नूर के बाइस जिसकी वजह से तमाम अंधेरियाँ जगमगा उठी हैं और दीनो दुनिया के तमाम उमूर की स़लाह़ का मदार उसी पर है। तुझसे इस बात की पनाह त़लब करता हूँ कि मुझ पर तेरा एताब और तेरा ग़ुस़्सा नाज़िल हो या तेरी नाराज़ी मुझ पर आ जाए। मुझे तेरी ही रज़ामंदी और ख़ुशनुदी दरकार है और नेकी करने और बुराई से बचने की त़ाक़त तेरी ही मदद से है। इसी सफ़र की वापसी में आपने नख़्ला में रात गुज़ारी और उसी रात क़ुरआन की तिलावत करते हुए नसीबन के जिन्नात ने आपको सुना। (इब्ने हिशाम : 2/61; अल् मुअ़जमुल कबीर : 13/50, 51; ह़ : 181; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/35; इसकी सनद में इब्ने इस्ह़ाक़ मुदल्लस रावी है लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।) यह है तो सही लेकिन इसमें यह क़ौल ताम्मुल त़लब है, इसलिए कि जिन्नात का कलामुल्लाह सुनने का वाक़िया वह़्ी शुरू होने के ज़माने का है, जैसे कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की ऊपर वाली ह़दीस से साबित हो रहा है और आपका त़ाइफ़ जाना अपने चचा अबू त़ालिब के इंतिक़ाल के बाद हुआ है जो हिज्रत के एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो साल पहले का वाक़िया है जैसे कि सीरते इब्ने इस्ह़ाक़ वग़ैरह में है, वल्लाहु आ़लम! इब्ने अबी शैबा में उन जिन्नात की गिनती नौ की है जिनमें से एक का नाम ज़ौबआ़ है। उन्हीं के बारे में यह आयतें नाज़िल हुईं। (दलाइलुन्नबुव्वता लिल बैहक़ी : 2/228; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी अ़न्अ़न) पस यह रिवायत और इससे पहले की ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत का इक़्तिज़ा यह है कि इस बार जो जिन्न आये थे उनकी मौजूदगी का ह़ुज़ूर (ﷺ) को इल्म न था। यह तो आपकी बेख़बरी में ही आपकी ज़ुबानी क़ुरआन सुनकर वापिस लौट गए। उसके बाद बत़ौर वफ़्द फ़ौजें की फ़ौजें और जत्थे के जत्थे उनके ह़ुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, जैसे कि इस ज़िक्र के अह़ादीस व आसार अपनी जगह आ रहे हैं, इंशाअल्लाह तआ़ला!

बुख़ारी व मुस्लिम में है ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान (रह़.) ने ह़ज़रत मसरूक़ (रह़.) से पूछा कि जिस रात जिन्नात ने ह़ुज़ूर (ﷺ) से क़ुरआन सुना था उस रात किस ने ह़ुज़ूर (ﷺ) से उनका ज़िक्र किया था? तो फ़र्माया मुझसे तेरे वालिद ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा है, उनकी आगाही ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) को एक दरख़्त ने दी थी। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंस़ार, बाब ज़िक्रुल जिन्न : 3859; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 450) तो मुम्किन है कि यह ख़बर पहली बार की हो और इस्बात को हम नफ़ी पर मुक़द्दम मान लें और यह भी एह़तिमाल है कि जब वह सुन रहे थे आपको तो कोई ख़बर न थी, यहाँ तक कि उस दरख़्त ने आपको उनके इज्तिमाअ़ की ख़बर दी, वल्लाहु आ़लम! और यह भी हो सकता है कि यह वाक़िया उसके बाद वाले कई वाक़ियात में से एक हो, वल्लाहु आ़लम! इमाम ह़ाफ़िज़ बैहक़ी (रह़.) फ़र्माते हैं कि पहली बार तो रसूलुल्लाह

(ﷺ) ने जिन्नों को देखा न ख़ास उनके सुनाने के लिए क़ुरआन पढ़ा। हाँ! अल्बत्ता उसके बाद जिन्न आपके पास आए और आपने उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की तरफ़ बुलाया। जैसे कि हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से मरवी है। इसकी रिवायतें सुनिए। हज़रत अ़ल्क़मा हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से पूछते हैं कि "क्या तुममें से कोई उस रात हुज़ूर (ﷺ) के साथ मौजूद था? तो आपने जवाब दिया कि कोई न था। आप रात भर हमसे ग़ायब रहे और हमें रह रहकर बार बार यही ख़्याल गुज़रा करता था कि शायद किसी दुश्मन ने आपको धोखा दे दिया, अल्लाह न करे आपके साथ कोई ऐसा ही नाख़ुशगवार वाक़िया पेश आये, वह रात हमारी बड़ी बुरी तरह कटी। सुबह सादिक़ से कुछ ही पहले हमने देखा कि आप ग़ारे हिरा से वापिस आ रहे हैं पस हमने रात की अपनी सारी कैफ़ियत बयान कर दी तो आपने फ़र्माया मेरे पास जिन्नात का क़ासिद आया था जिसके साथ जाकर मैंने उन्हें क़ुरआन सुनाया। चुनाँचे आप हमें लेकर गए और उनके निशानात और उनकी आग के निशानात हमें दिखाए।" शअ़बी (रह.) कहते हैं उन्होंने आपसे तोशा तलब किया था। आ़मिर कहते हैं यानी मक्का में और यह जिन्न जज़ीरे के थे तो आपने फ़र्माया "हर वह हड्डी जिस पर अल्लाह का नाम ज़िक्र किया गया हो वह तुम्हारे हाथों में पहले से ज़्यादा गोश्त वाली होकर पड़ेगी और लीद और गोबर तुम्हारे जानवरों का चारा बनेगा। पस ऐ मुसलमानों! इन दोनों चीज़ों से इस्तिंजा न करो, यह तुम्हारे जिन्न भाईयों की ख़ुराक है। (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाबुल जहर बिल क़िरअति फ़िस्सुब्ह : 450; अबूदाऊद : 85; तिर्मिज़ी : 3258; अहमद : 1/476) दूसरी रिवायत में है कि "उस रात हुज़ूर (ﷺ) को न पाकर हम बहुत ही घबरा गए थे और तमाम वादियों और घाटियों में तलाश कर आये थे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाबुल जहर बिल क़िरअति फ़िस्सुब्ह : 450) और हदीस में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, आज रात मैं जिन्नात को क़ुरआन सुनाता रहा और जिन्नों में ही उसी शुग़्ल में रात गुज़ारी।" (अहमद : 1/416; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसके इत्तिसाल में नज़र है। तब्री : 26/33; मुस्नदे अबी यअ़ला : 5062; अल्अ़ज़्मतु : 1121)

इब्ने जरीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) की रिवायत है कि "आपने फ़र्माया तुममें से जो चाहे आज की रात जिन्नात के अम्र में मेरे साथ रहे। पस मैं मौजूद हो गया। आप मुझे लेकर चले जब मक्का मुअ़ज़्ज़मा के ऊँचे वाले हिस्से में पहुँचे तो आपने अपने पैर से एक ख़त्त खींच दिया और मुझसे फ़र्माया, बस यहीं बैठे रहो। फिर आप चले और एक जगह खड़े होकर आपने क़िरअत शुरू की फिर तो इस क़द्र जमाअ़त आपके आसपास ठुट लगाकर खड़ी हो गई कि मैं तो आपकी क़िरअत सुनने से भी रह गया। फिर मैंने देखा कि जिस तरह बादल के टुकड़े फटते हैं उस तरह वह इधर उधर जाने लगे और यहाँ तक कि अब बहुत थोड़े रह गए। पस हुज़ूरे अकरम (ﷺ) सुबह के वक़्त फ़ारिग़ हुए और आप वहाँ से दूर निकल गए और हाजत से फ़ारिग़ होकर मेरे पास तशरीफ़ लाए और पूछने लगे वह बाक़ी के कहाँ हैं? मैंने कहा, वह यह हैं पस आपने उन्हें हड्डी और लीद दी। फिर आपने मुसलमानों को इन दोनों चीज़ों से इस्तिंजा करने से मना कर दिया।" (व सनदुहू ज़ईफ़ुन; ज़ौहरी अ़न्अ़न) इस रिवायत की दूसरी सनद में है कि जहाँ हुज़ूर (ﷺ) ने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) को बिठा दिया था वहाँ बिठाकर फ़र्मा दिया था कि ख़बरदार! यहाँ से निकलना नहीं वरना हलाक हो

जाओगे और रिवायत में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने सुबह के वक़्त आकर उनसे पूछा कि तुम सो गए थे? आपने फ़र्माया, नहीं! नहीं! अल्लाह तआला की क़सम! मैंने तो कई बार चाहा कि लोगों से फ़रियाद करूँ लेकिन मैंने सुन लिया कि आप उन्हें अपनी लकड़ी से धमका रहे थे और फ़र्माते जाते थे कि बैठ जाओ। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया अगर तुम यहाँ से बाहर निकलते तो मुझे तो डर था कि उनमें के कुछ तुम्हें उचक न ले जाएँ। फिर आपने पूछा कि अच्छा! तुमने कुछ देखा भी? मैंने कहा, हाँ! लोग थे काले अंजान ख़ौफ़नाक सफ़ेद कपड़े पहने हुए। आपने फ़र्माया, यह नसीबैन के जिन्न थे उन्हों ने मुझसे तौशा तलब किया था पस मैंने हड्डी और लीद दिया। मैंने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! उससे उन्हें क्या फ़ायदा? आपने फ़र्माया हर हड्डी उनके हाथ लगते ही ऐसे हो जाएगी जैसे उस वक़्त थी जब खाई गई थी यानी गोश्त वाली होकर उन्हें मिलेगी और लीद में भी वह ही दाने पाएँगे जो उस दिन थे जब वह दाने खाए गए थे। पस हममें से कोई शख़्स बैतुलख़ला से निकलकर हड्डी और लीद और गोबर से इस्तिंजा न करे।" (तब्री : 22/138; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) इस रिवायत की दूसरी सनद में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया पन्द्रह जिन्नात जो आपस में चचाज़ाद और फूफीज़ाद भाई हैं आज रात मुझसे कुरआन सुनने के लिए आने वाले हैं उसमें हड्डी और लीद के साथ कोयले का लफ़्ज़ भी है।" इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं "दिन निकले मैं उस जगह गया तो देखा कि वह कोई साठ ऊँट बैठने की जगह है। (दलाइलुन्नबुव्वत लिल्बैहक़ी : 2/231; व सनदुहू ज़ईफ़ुन) और रिवायत में है कि जब जिन्नात का इज़्दहाम हो गया तो उनके सरदार वरदान ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं इन्हें इधर उधर करके आपको इस तक्लीफ़ से बचा लेता हूँ, तो आपने फ़र्माया अल्लाह से ज़्यादा मुझे कोई बचाने वाला नहीं। आप फ़र्माते हैं जिन्नात वाली रात में मुझसे हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या तुम्हारे पास पानी है? मैंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! पानी तो नहीं अल्बत्ता एक डोलची में नबीज़ है, तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्दा खजूरें और पाकीज़ा पानी।" (अबूदाऊद, किताबुत्तहारत, बाबुल वुज़ूइ बिन्नबीज़ : 84; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू ज़ेद रावी मज्हूल है। तिर्मिज़ी : 88; इब्ने माजा : 384; अहमद : 1/449) मुस्नद अहमद की इस हदीस में है कि "आपने फ़र्माया, मुझे उससे वुज़ू कराओ। चुनाँचे आपने वुज़ू किया और फ़र्माया, यह तो पीने की और पाक चीज़ है।" (अहमद : 1/398; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; दारे कुत्नी : 1/76) मुस्नद अहमद में है कि जब आप लौटकर आए तो साँस चढ़ रहा था मैंने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! क्या बात है? आपने फ़र्माया मेरे पास मेरे इंतिक़ाल की ख़बर आई है। (अहमद : 1/449; व सनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा इसकी सनद में मैना बिन अबी मैना मतरूक रावी है इसके बारे में अबू हातिम ने यक्ज़िब और दारे कुत्नी ने मतरूक कहा है (अल्मीज़ान : 4/237; रक़म : 8981) यही हदीस क़द्रे ज़्यादती के साथ हाफ़िज़ अबू नुऐम (रह.) की किताब दलाइलुन्नबुव्वा में भी है, इसमें है कि "मैंने यह सुनकर कहा फिर या रसूलल्लाह (ﷺ)! अपने बाद किसी को ख़लीफ़ा नामज़द कर जाइए। आपने कहा, किसको? मैंने कहा, अबूबक्र को। इस पर आप ख़ामोश हो गए। चलते चलते फिर कुछ देर बाद यही हालत तारी हुई। मैंने वही सवाल किया आपने वही जवाब दिया। मैं ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने को कहा, आपने पूछा किसे? मैंने कहा, उमर को। इस पर आप ख़ामोश हो गए। कुछ दूर चलने के बाद फिर यही हालत और यही सवाल जवाब हुए अबकी

बार मैंने हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) का नाम पेश किया तो आप फ़र्माने लगे, उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर लोग उनकी इताअत करें तो सब जन्नत में चले जाएँ।'' (तब्रानी : 9970; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मज्मउज़्ज़वाइद : 5/188; इसकी सनद में भी मैना मतरूक रावी है।) लेकिन यह हदीस बिलकुल ही ग़रीब है और बहुत मुम्किन है कि यह महफ़ूज़ न हो और अगर सेहत तस्लीम कर ली जाए तो इस वाक़िया को मदीना का वाक़िया मानना पड़ेगा। वहाँ भी आपके पास जिन्नों के वुफ़ूद आये थे जैसे कि हम अन्क़रीब इंशाअल्लाह! बयान करेंगे इसलिए कि आपका आख़िरी वक़्त फ़तहे मक्का के बाद था जबकि दीने इलाही में इंसानों और जिन्नों की फ़ौजें की फ़ौजें दाख़िल हो गईं और सूरह (इज़ा जाअ...) उतर चुकी जिसमें आपको ख़बरे इंतिक़ाल दी गई थी, जैसे कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है और अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की इस पर मुवाफ़िक़त है, जो हदीसें हम इसी सूरह की तफ़्सीर में लाएँगे, इंशाअल्लाह! वल्लाहु आलम!

मुंदर्जा बाला हदीस दूसरी सनद से भी मरवी है। लेकिन उसकी इस्नाद भी ग़रीब और स्याक़ भी ग़रीब है। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं यह जिन्नात जज़ीरा मूसिल के थे। उनकी तादाद बारह हज़ार की थी। इब्ने मसऊद (रज़ि.) उस ख़त कशीदा जगह में बैठे हुए थे लेकिन जिन्नात के खजूरों के दरख़्तों के बराबर के क़दो क़ामत वग़ैरह देखकर डर गए और भाग जाना चाहा लेकिन फ़र्माने रसूल (ﷺ) याद आ गया कि इस हद से बाहर न निकलना। जब हुज़ूर (ﷺ) से यह ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया अगर तुम उस हद से बाहर आ जाते तो क़ियामत तक हमारी तुम्हारी मुलाक़ात न हो सकती। (यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) और रिवायत में है कि जिन्नात की यह जमाअत जिनका ज़िक्र आयत (वइज़ सरफ़्ना) में है नैनवा की थी। आपने फ़र्माया था कि ''मुझे हुक्म दिया गया कि इन्हें कुरआन सुनाऊँ। तुममें से मेरे साथ कौन चलेगा इस पर सब ख़ामोश हो गए, दोबारा पूछा फिर ख़ामोशी रही तीसरी बार पूछा तो क़बीला हुज़ैल के शख़्स हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) तैयार हुए। हुज़ूर (ﷺ) उन्हें साथ लेकर जिहून की घाटी में गए। एक लकीर खींचकर उन्हें यहाँ बिठा दिया और आप आगे बढ़ गए। यह देखने लगे कि गधों की तरह के ज़मीन से बिलकुल क़रीब उड़ते हुए कुछ जानवर से आ रहे हैं। थोड़ी देर बाद गुल ग़प्पाड़ा सुनाई देने लगा। यहाँ तक कि मुझे हुज़ूर (ﷺ) की ज़ात पर डर लगने लगा। जब हुज़ूर (ﷺ) आए तो मैंने कहा, हुज़ूर! यह शोर क्या था? आपने फ़र्माया, इनके एक मक़्तूल का क़िस्सा था जिसमें यह मुख़्तलिफ़ थे। उनके बीच सहीह फ़ैसला कर दिया गया।'' (तब्री : 22/136; व सनदुहू ज़ईफ़ुन मुर्सल)

यह वाक़ियात साफ़ हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने क़सदन जाकर जिन्नात को कुरआन सुनाया, उन्हें इस्लाम की तरफ़ दावत दी और जिन मसाइल की उस वक़्त उन्हें ज़रूरत थी वह सब बता दिये। हाँ! पहली बार जब जिन्नात ने आपकी जुबानी कुरआन सुना उस वक़्त आपको मालूम न था न आपने उन्हें सुनाने की ग़र्ज़ से कुरआन पढ़ा था जैसे कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं। उसके बाद वफ़ूद की सूरत में आए और हुज़ूर (ﷺ) अमदन तशरीफ़ ले गए और उन्हें कुरआन सुनाया। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के

साथ उस वक़्त न थे जबकि आपने उनसे बातचीत की, उन्हें इस्लाम की दावत दी। अल्बत्ता कुछ फ़ासले पर दूर बैठे हुए थे। आपके साथ इस वाक़िया में सिवा हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) के और कोई न था और दूसरी तत्बीक़ इन रिवायात में जिनमें है कि आपके साथ इब्ने मसऊद (रज़ि.) थे और जिनमें है कि न थे, यह भी हो सकती है कि पहली बार न थे दूसरी बार थे, वल्लाहु आलम! यह भी मरवी है नख़्ला में जिन जिन्नों ने आपसे मुलाक़ात की थी वह नैनवा के थे और मक्का मुकर्रमा में जो आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए थे वह नसीबैन के थे, और यह जो रिवायतों में आया है कि हमने वह रात बहुत बुरी तरह बसर की, उससे मुराद इब्ने मसऊद (रज़ि.) के सिवा और सहाबा (रज़ि.) हैं जिन्हें इस बात का इल्म न था कि हुज़ूर (ﷺ) जिन्नात को क़ुरआन सुनाने गए हैं लेकिन यह तावील है ज़रा दूर की, वल्लाहु आलम! बैहक़ी में है कि "हुज़ूर (ﷺ) की हाजत और वुज़ू के लिए आपके साथ साथ हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) पानी की डोलची लिए हुए जाया करते थे। एक दिन यह पीछे पीछे पहुँचे। आपने पूछा कौन है? जवाब दिया कि मैं अबू हुरैरा हूँ। फ़र्माया मेरे इस्तिंजा के लिए पत्थर लाओ लेकिन हड्डी और लीद न लाना। मैं अपनी झोली में पत्थर भर लाया और आपके पास रख दिये। जब आप फ़ारिग़ हो चुके और चलने लगे, मैं भी आपके पीछे चला और पूछा, हुज़ूर (ﷺ)! क्या वजह है?जो आपने हड्डी और लीद से मना फ़र्मा दिया। आपने जवाब दिया मेरे पास नसीबैन के जिन्नो का वफ़्द आया था और उन्होंने मुझसे तौशा तलब किया था तो मैंने अल्लाह तबारक व तआला से दुआ की कि वह जिस लीद और हड्डी पर गुज़रें उसे खाना पाएँ।" (बैहक़ी : 1/107; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में सुवैद बिन सईद है इमाम बुख़ारी, नसाई वग़ैरह ने इसे ज़ईफ़ कहा है (अल्मीज़ान : 2/248; रक़म : 3631) इस मअनी की सहीह रिवायत बुख़ारी 3860 में मौजूद है।) सहीह बुख़ारी में भी इसी के क़रीब क़रीब मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब ज़िक्रुल जिन्न : 3860) पस यह हदीस और इससे पहले की हदीसें दलालत करती हैं कि जिन्नात का वफ़्द आपके पास उसके बाद भी आया था।

अब हम उन अहादीस का बयान करते हैं जो दलालत करती है कि जिन्नात आपके पास कई बार आये थे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से जो रिवायत इससे पहले बयान हो चुकी है उसके सिवा भी आपसे दूसरी सनद से मरवी है। इब्ने जरीर में है आप फ़र्माते हैं, 'यही सात जिन्न थे नसीबैन के रहने वाले उन्हें अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) ने अपनी तरफ़ से क़ासिद बनाकर जिन्नात की तरफ़ भेजा था। मुजाहिद (रह.) कहते हैं यह जिन्नात तादाद में सात थे और नसीबैन के थे। उन्हें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तीन को अहले हर्रान से कहा और चार को अहले नसीबैन से, उनके नाम यह हैं, हुसी, हसा, मनसी, सासिर, नासिर, अल्अर्दुब्यान, अल्अहतम। अबू हम्ज़ा शुमाली (रह.) फ़र्माते हैं, उन्हें बनू शीसान कहते हैं, यह क़बीला जिन्नात के और क़बीलों से तादाद में बहुत ज़्यादा था और यह उनमें नसब के भी शरीफ़ माने जाते थे और उमूमन यह इब्लीस के लश्करों में से थे। इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह नौ थे, उनमें से एक का नाम ज़ौबआ था, असल नख़्ला से आए थे। कुछ हज़रात से मरवी है कि यह पन्द्रह थे और एक रिवायत में है कि साठ ऊँटों पर आए थे उनके सरदार का नाम वरदान था। और कहा गया है कि तीन सौ थे और यह भी मरवी है कि बारह हज़ार (12000) थे। उन सब में

तत्बीक़ यह है कि चूँकि वुफ़ूद कई बार आये थे मुम्किन है कि किसी में छः सात नौ ही हों किसी में ज़्यादा किसी में कम उससे भी ज़्यादा। इस पर दलील सहीह बुख़ारी की रिवायत भी है कि ''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) जिस चीज़ की निस्बत जब कभी कहते कि मेरे ख़याल में यह इस तरह होगी तो वह उमूमन उसी तरह निकलती। एक बार आप बैठे हुए थे कि एक हसीन शख़्स गुज़रा। आपने उसे देखकर फ़र्माया अगर मेरा गुमान ग़लत न हो तो यह शख़्स अपने जाहिलियत के ज़माने में लोगों का काहिन था जाना ज़रा उसे ले आना, जब वह आ गया तो आपने अपना यह ख़याल उस पर ज़ाहिर किया। वह कहने लगा, मुसलमानों में इस ज़िहानत व फ़तानत का कोई शख़्स आज तक मेरी नज़र से नहीं गुज़रा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, अब मैं तुझसे कहता हूँ कि तू अपनी कोई सही और सच्ची ख़बर सुना, उसने कहा, बहुत अच्छा सुनिए। मैं जाहिलियत के ज़माने में उनका काहिन था मेरे पास मेरा जिन्न जो सबसे ज़्यादा ताज्जुबख़ेज़ ख़बर लाया वह सुनिए मैं एक बार बाज़ार में जा रहा था कि वह आ गया और सख़्त घबराहट में था और कहने लगा, क्या तूने जिन्नों की बर्बादी, मायूसी और उनके फैलने के बाद सिमट जाना और उनकी दुर्गत नहीं देखी? हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माने लगे यह सच्चा है, एक बार मैं इनके बुतों के पास सोया हुआ था एक शख़्स ने वहाँ एक बछड़ा चढ़ाया कि अचानक एक सख़्त पुरज़ोर आवाज़ आई, ऐसी कि इतनी बड़ी बुलंद और करख़्त आवाज़ मैंने कभी नहीं सुनी। उसने कहा, ऐ जुलैह! नजात देने वाला अम्र आ चुका एक शख़्स है जो फ़सीह ज़ुबान से ला इलाहा इल्लल्लाह की मुनादी कर रहा है। सब लोग तो मारे डर के भाग गए लेकिन मैं वहीं बैठा रहा कि देखूँ आख़िर यह है क्या कि दोबारा फिर उसी तरह वही आवाज़ सुनाई दी और उसने वही कहा पस कुछ ही दिन गुज़रे थे जो नबी (ﷺ) की नबुव्वत की आवाज़ें हमारे कानों में पड़ने लगीं।'' (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब इस्लामु उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) : 3866; दलाइलुन नबुव्वता लिल्बैहक़ी : 2/243) इस रिवायत के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ से तो यह मालूम होता है कि ख़ुद हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि.) ने यह आवाज़ उस ज़िब्ह शुदा बछड़े से सुनी और एक ज़ईफ़ रिवायत में सरीह तौर पर यह भी आ गया है लेकिन बाक़ी और रिवायतें यह बतला रही हैं कि उसी काहिन ने अपने देखने सुनने का एक वाक़िया यह भी बयान किया, वल्लाहु आलम! इमाम बैहक़ी (रह.) ने यही कहा है और यही कुछ अच्छा मालूम होता है, उस शख़्स का नाम सुवाद बिन क़ारिब था जो शख़्स इस वाक़िया की पूरी तफ़्सील देखना चाहता हो वह मेरी किताब सीरते उमर (रज़ि.) देख ले, वलिल्लाहिल हम्दु वल मिन्नतु। इमाम बैहक़ी (रह.) फ़र्माते हैं मुम्किन है यही वह काहिन हो जिसका ज़िक्र बग़ैर नाम के सहीह हदीस में है। ''हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) मिम्बरे नबवी पर एक बार ख़ुत्बा सुना रहे थे, उसी में पूछा, क्या सुवाद बिन क़ारिब यहाँ मौजूद हैं लेकिन उस पूरे साल तक किसी ने हाँ नहीं कही अगले साल आपने फिर पूछा तो हज़रत बराअ (रज़ि.) ने कहा सुवाद बिन क़ारिब कौन है? इससे क्या मतलब है?आपने फ़र्माया उसके इस्लाम लाने का क़िस्सा अजीबो ग़रीब है, अभी यह बातें हो ही रही थीं जो हज़रत सुवाद बिन क़ारिब (रज़ि.) आ गए, हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा, सुवाद! अपने इस्लाम लाने का वाक़िया बयान करो, आपने फ़र्माया, हाँ! सुनिए, मैं हिन्द गया हुआ था मेरा साथी जिन्न एक रात मेरे पास

आया। मैं उस वक़्त सोया हुआ था। मुझे उसने जगा दिया और कहने लगा उठ और अगर कुछ अ़क़्ल व होश हैं तो सुन ले और समझ ले और सोच ले, क़बीला लुई बिन ग़ालिब में से अल्लाह तआ़ला के रसूल मब्ऊ़स हो चुके हैं , मैं जिन्नात की ह़िस्स और उनके बोरिया बिस्तर बाँधने पर ताज्जुब कर रहा हूँ, अगर तू त़ालिबे हिदायत है तो फ़ौरन मक्के चला जा। समझ ले कि बेहतर और बदतर जिन्न यक्साँ नहीं , जा जल्दी जा और बनू हाशिम के दुलारे के मुनव्वर चेहरे पर नज़रें डाल ले, मुझे फिर गुनूदगी त़ारी हो गई तो उसने दोबारा जगाया और कहने लगा ऐ सुवाद बिन क़ारिब! अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने अपना रसूल भेज दिया है। तुम उनकी ख़िदमत में पहुँचो और हिदायत और भलाई समेट लो, दूसरी रात फिर आया और मुझे जगाकर कहने लगा मुझे जिन्नात के जुस्तजू करने और जल्द जल्द पालान और झोलें कसने पर ताज्जुब मालूम होता है । अगर तू भी हिदायत का त़ालिब है तो मक्का का क़स्द कर। समझ ले कि उसके दोनों क़दम उसकी दुमों की त़रह़ नहीं। तू उठ और जल्दी जल्दी बनू हाशिम के उस पसंदीदा शख़्स की ख़िदमत में पहुँच और अपनी आँखें उसके दीदार से मुनव्वर कर। तीसरी रात फिर आया और कहने लगा मुझे जिन्नात के बाख़बर हो जाने और उनके क़ाफ़िलों के फ़ौरन तैयार हो जाने पर ताज्जुब हो रहा है। वह सब त़लबे हिदायत के लिए मक्का की त़रफ़ दौड़े हुए जा रहे हैं। उनमें के बुरे भलों की बराबरी नहीं कर सकते, तू भी उठ और उस बनू हाशिम के चुनिन्दा शख़्स की त़रफ़ चल खड़ा हो, मोमिन जिन्नात काफ़िरों की त़रह़ नहीं। तीन रातों तक बराबर यही सुनते रहने के बाद मेरे दिल में भी दफ़्अ़तन इस्लाम का वल्वला उठा और हुज़ूर (ﷺ) की वक़्अ़त और मुह़ब्बत से दिल पुर हो गया। मैंने अपनी साँडनी पर कजावा कसा और बग़ैर किसी और जगह क़याम किये सीधा रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। आप उस वक़्त शहरे मक्का में थे और लोग आपके आसपास ऐसे थे जैसे घोड़े पर अयाल, मुझे देखते ही यक्बारगी अल्लाह के पैग़म्बर (ﷺ) ने फ़र्माया, सुवाद बिन क़ारिब को मरह़बा हो, आओ हमें मालूम है कि कैसे और किस लिए और किसके कहने सुनने से आ रहे हो? मैंने कहा हुज़ूर (ﷺ)! मैंने कुछ अश्आ़र कहे हैं अगर इजाज़त हो तो पेश करूँ? आपने फ़र्माया, सुवाद शौक़ से कहो। तो ह़ज़रत सुवाद (رضي الله عنه) ने वह अश्आ़र पढ़े जिनका मज़्मून यह है। मेरे पास मेरा जिन्न मेरे सो जाने के बाद रात को आया और उसने मुझे एक सच्ची ख़बर सुनाई तीन रातें बराबर वह मेरे पास आता रहा और हर रात कहता रहा कि लुई बिन ग़ालिब में अल्लाह के रसूल मब्ऊ़स हो चुके हैं। मैंने भी सफ़र की तैयारी कर ली और जल्द जल्द राह तै करता यहाँ पहुँच ही गया अब मेरी गवाही है कि अल्लाह के सिवा कोई और रब नहीं और आप अल्लाह तआ़ला के अमानतदार रसूल हैं, आपसे शफ़ाअ़त का आसरा सबसे ज़्यादा है, ऐ बेहतरीन बुज़ुर्गों और पाक लोगों की औलाद! ऐ तमाम रसूलों से बेहतर रसूल! जो हुक्मे आसमानी आप हमें पहुँचाएँगे वह कितना ही मुश्किल और त़बीयत के ख़िलाफ़ क्यूँ न हों नामुम्किन है कि हम उसे टाल दें आप क़ियामत के दिन ज़रूर मेरे सिफ़ारिशी बनना क्योंकि वहाँ सिवा आपके। सुवाद बिन क़ारिब का सिफ़ारिशी और कौन होगा? इस पर हुज़ूर (ﷺ) बहुत हँसे और कहने लगे, सुवाद! तुम कामयाब हो गये। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने यह वाक़िया सुनकर पूछा क्या वह जिन्न अब भी तेरे पास आता है? उसने कहा जबसे मैंने क़ुरआन पढ़ा वह नहीं आता और अल्लाह का बड़ा शुक्र है कि

उसके बदले मैंने रब की पाक किताब पा ली।'' (इसकी सनद में तुरास और ज़ियाद मज्हूल रावी हैं। लिहाज़ा यह रिवायत मर्दूद है।)

और अब जिस ह़दीस को हम ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम की किताब दलाइलुन्नबुव्वा से नक़्ल करते हैं उसमें भी इसका बयान है कि मदीना मुनव्वरा में भी जिन्नात का वफ़्द हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में बारयाब हुआ था। ह़ज़रत अ़म्र बिन ग़ीलान सक़फ़ी (रह़.), ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के पास जाकर उनसे पूछा करते हैं कि मुझे यह मालूम हुआ है कि जिस रात जिन्नात का वफ़्द ह़ाज़िरे हुज़ूर हुआ था उस रात हुज़ूर (ﷺ) के साथ आप भी थे जवाब दिया कि हाँ! ठीक कहा। मैंने कहा ज़रा वाक़िया तो सुनाइए फ़र्माया सुफ़्फ़ा वाले मसाकीन स़ह़ाबा (रज़ि.) को लोग अपने अपने साथ शाम का खाना खिलाने के लिए ले गए और मैं यूँ ही रह गया। मेरे पास से हुज़ूर (ﷺ) का गुज़र हुआ, पूछा कौन हो? मैंने कहा, इब्ने मसऊ़द। फ़र्माया, तुम्हें कोई ले नहीं गया? फ़र्माया, अच्छा मेरे साथ चलो शायद कुछ मिल जाए तो दे दूँगा। मैं साथ हो लिया, आप ह़ज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) के हुज्रे में गए मैं बाहर ही ठहर गया। थोड़ी देर में अंदर से एक लौण्डी आई और कहने लगी, हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं हमने अपने घर में कोई चीज़ नहीं पाई तुम अपनी ख़्वाबगाह में चले जाओ, मैं वापिस मस्जिद में आ गया और मस्जिद में कंकरियों का एक छोटा सा ढेर करके उस पर सिर रखकर अपना कपड़ा लपेटकर सो गया। थोड़ी देर गुज़री होगी जो वही लौण्डी फिर आई और कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) आपको याद फ़र्मा रहे हैं। मैं साथ हो लिया और मुझे उम्मीद पैदा हो गई कि अब तो खाना ज़रूर मिलेगा। जब मैं अपनी जगह पहुँचा तो हुज़ूर (ﷺ) घर से बाहर तशरीफ़ लाए। आपके हाथ में खजूर के दरख़्त की एक तर छड़ी थी जिसे मेरे सीने पर रखकर फ़र्माने लगे जहाँ मैं जा रहा हूँ क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे? मैंने कहा, जो अल्लाह ने चाहा हो, तीन बार यही सवाल जवाब हुए फिर आप चले और मैं भी आपके साथ चलने लगा, थोड़ी देर में बक़ीअ़े ग़रक़द जा पहुँचे। फिर क़रीब क़रीब वही बयान है जो ऊपर की रिवायतों में गुज़र चुका है। इसकी इस्नाद ग़रीब है और इसकी सनद में एक मुब्हम रावी है जिनका नाम ज़िक्र नहीं किया गया। दलाइले नबुव्वा में ह़ाफ़िज़ अबू नुऐम (रह़.) फ़र्माते हैं कि मदीना की मस्जिद में रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने सुबह़ की नमाज़ अदा की और लौटकर लोगों से कहा, आज रात को जिन्नात के वफ़्द की त़रफ़ तुममें से कौन मेरे साथ चलेगा? किसी ने जवाब न दिया तीन बार के फ़र्मान पर भी कोई न बोला। हुज़ूर (ﷺ) मेरे पास से गुज़रे और मेरा हाथ थामकर अपने साथ ले चले, मदीने के पहाड़ोंसे बहुत आगे निकलकर स़ाफ़ चटयल मैदान में पहुँच गए, अब नेज़ों के बराबर लम्बे लम्बे क़द के आदमी नीचे नीचे कपड़े पहने हुए आने शुरू हुए हैं तो उन्हें देखकर मारे डर के काँपने लगा। फिर और वाक़िया मिस्ल ह़दीसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) के बयान किया। यह ह़दीस भी ग़रीब है, वल्लाहु आ़लम! इसी किताब में एक ग़रीब ह़दीस में है कि ''ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) के साथी ह़ज्ज को जा रहे थे, रास्ते में हमने देखा कि एक सफ़ेद रंग साँप रास्ते में लोट रहा है और उससे मुश्क की ख़ुश्बू आ रही है। इब्राहीम (रह़.) कहते हैं मैंने अपने साथियों से कहा तुम सब जाओ मैं यहाँ ठहर जाता हूँ। देखूँ तो इस साँप का क्या होता है? चुनाँचे वह चल दिये और मैं ठहर गया। थोड़ी ही देर गुज़री होगी जो वह

साँप मर गया। मैंने एक सफ़ेद कपड़ा लेकर उसमें लपेटकर रास्ते के एक तरफ़ दफ़न कर दिया और रात के खाने के वक़्त अपने क़ाफ़िले में पहुँच गया। अल्लाह की क़सम! मैं बैठा हुआ था जो चार औरतें मग़रिब की तरफ़ से आईं उनमें से एक ने पूछा अम्र को किसने दफ़न किया? हमने कहा, कौन अम्र? उसने कहा तुममें से किसी ने एक साँप को दफ़न किया है? मैंने कहा, हाँ! मैंने दफ़न किया है। कहने लगी, क़सम है अल्लाह तआला की! तुमने बड़े रोज़ेदार बड़े पुख़्ता नमाज़ी को दफ़न किया है जो तुम्हारे नबी को मानता था और जिसने आपके नबी होने से चार सौ साल पेशतर आसमान से आपकी सिफ़त सुनी थी। इब्राहीम (रह.) कहते हैं उस पर हमने अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना की। फिर हज्ज से फ़ारिग़ होकर जब हम फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और मैंने आपको यह सारा वाक़िया सुनाया। तो आपने फ़र्माया उस औरत ने सच कहा, मैंने जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि मुझ पर ईमान लाया था मेरी नबुव्वत के चार सौ साल पहले।'' यह हदीस भी ग़रीब है वल्लाहु आ'लम! एक रिवायत में है कि दफ़न कफ़न करने वाले हज़रत सफ़्वान बिन मुअत्तल (रज़ि.) थे। कहते हैं कि यह साहब जो यहाँ दफ़न किये गए यह उन नौ जिन्नात में से एक हैं जो हुज़ूर (ﷺ) के पास कुरआन सुनने के लिए वफ़्द बनकर आये थे, उनका इंतिक़ाल उन सबसे अख़ीर में हुआ। अबू नुऐम में एक रिवायत है कि एक शख़्स हज़रत उस्मान जुन्नूरैन (रज़ि.) की ख़िदमत में आए और कहने लगे, अमीरुल मोमिनीन! मैं एक जंगल में था, मैंने देखा कि दो साँप आपस में ख़ूब लड़ रहे हैं। यहाँ तक कि एक ने दूसरे को मार डाला। अब मैं उन्हें छोड़कर जहाँ मअरका हुआ था वहाँ गया। देखा तो बहुत से साँप क़त्ल किये हुए पड़े हैं और कुछ में इस्लाम की ख़ुश्बू आ रही है पस मैंने एक एक को सूँघना शुरू किया। यहाँ तक कि एक ज़र्द रंग के दुबले पतले साँप में से मुझे इस्लाम की ख़ुश्बू आने लगी। मैंने अपने अमामे में लपेटकर उसे दफ़ना दिया। अब मैं चला जा रहा था, जो मैंने एक आवाज़ सुनी कि ऐ अल्लाह के बन्दे! तुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से हिदायत दी गई। यह दोनों साँप जिन्नात के क़बीले बनू शैबान और बनू क़ैस में से थे, उन दोनों में जंग हुई और फिर जिस क़द्र क़त्ल हुए वह तुमने ख़ुद देख लिए। उन ही में एक शहीद जिन्हें तुमने दफ़न किया वह थे जिन्होंने ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) की जुबानी वह्यी इलाही सुनी थी। हज़रत उस्मान (रज़ि.) उस क़िस्से को सुनकर कहने लगे ऐ शख़्स! अगर तू सच्चा है तो इसमें शक नहीं कि तूने अजब वाक़िया देखा और अगर तू झूठा है तो झूठ का बोझ तुझ पर है।

अब आयत की तफ़्सीर सुनिए। इर्शाद है कि जब हमने तेरी तरफ़ जिन्नात के एक गिरोह को फेरा जो कुरआन सुन रहा था। जब वह हाज़िर हो गए और तिलावत शुरू होने को थी तो उन्होंने आपस में एक दूसरे को यह अदब सिखाया कि ख़ामोशी से सुनो। उनका एक और अदब भी हदीस में आया है। तिर्मिज़ी वग़ैरह में है कि ''एक बार हुज़ूर (ﷺ) ने सहाबा किराम (रज़ि.) के सामने सूरह रहमान की तिलावत की, फिर फ़र्माया, क्या बात है? जो तुम सब ख़ामोश ही रहे, तुमसे तो बहुत अच्छे जवाब देने वाले जिन्नात साबित हुए जब भी मेरे मुँह से उन्होंने यह आयत (فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ) (55/रहमान : 13) सुनी तो उन्होंने जवाब में कहा (ला बि शैइम मिन निअमिका रब्बना नुकज़्ज़िबु वलकल हम्द) (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब

वमिन सूरतिर्रहमान : 3291; वहुव हसन; हाकिम : 2/437) फिर फ़र्माता है जब फ़राग़त हासिल की गई। (क़ुज़िय) के मअनी इन आयतों में भी यही हैं (فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ) (62/जुम्आ : 10) और (فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ) (41/हामीम अस्सज्दा : 12) और (فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ) (2/बकर : 200) फिर फ़र्माया और वह अपनी क़ौम को धमकाने और उन्हें आगाह करने के लिए वापिस उनकी तरफ़ चले। जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है (لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ) (9/तौबा : 122) यानी वह दीन की समझ हासिल करें। और जब वापिस अपनी क़ौम के पास पहुँचे तो उन्हें भी होशियार कर दें, बहुत मुम्किन है कि वह बचाव इख़्तियार कर लें। इस आयत से इस्तिदलाल किया गया है कि जिन्नात में भी अल्लाह तआला की बातों को पहुँचाने वाले और डर सुनाने वाले हैं लेकिन उनमें से रसूल नहीं बनाए गए यह बात बिला शक साबित है कि जिन्नों में पैग़म्बर नहीं हैं। फ़र्माने बारी है (وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا) (12/यूसुफ़ : 109) यानी हमने तुझसे पहले भी जितने रसूल भेजे वह सब बस्तियों के रहने वाले इंसान ही थे जिनकी तरफ़ हम अपनी वही भेजा करते थे। और आयत में है (وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُونَ الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ) (25/फ़ुरक़ान : 20) यानी तुझसे पहले हमने जितने रसूल भेजे वह सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते फिरते थे। इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) की निस्बत क़ुरआन में है (وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ) (29/अन्कबूत : 27) यानी हमने उनकी औलाद में नबुव्वत और किताब रख दी। पस आपके बाद जितने भी नबी आए वह आप ही के ख़ानदान और आप ही की नस्ल में से हुए हैं। लेकिन सूरह अन्आम में आयत (يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ) (6/अन्आम : 130) यानी ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुममें से रसूल नहीं आए थे? इसका मतलब और इससे मुराद यह दोनों जिंस हैं। पस इसका मिस्दाक़ सिर्फ़ एक जिंस ही हो सकती है। जैसे फ़र्मान है (يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ) (55/रहमान : 22) यानी उन दोनों समुन्द्रों में से मोती और मूँगा निकलता है हालाँकि दरअसल एक में से ही निकलता है। अब बयान हो रहा है जिन्नात के उस वअज़ का जो उन्होंने अपनी क़ौम में किया। फ़र्माया कि हमने उस किताब को सुना है जो हज़रत मूसा (عليه السلام) के बाद नाज़िल हुई है। हज़रत ईसा (عليه السلام) की किताब इंजील का ज़िक्र इसलिए छोड़ दिया कि वह दरअसल तौरात को पूरा करने वाली थी। उसमें ज़्यादा तर वअज़ के और दिल को नर्म करने के बयानात थे। हराम हलाल के मसाइल बहुत कम थे। पस असल चीज़ तौरात ही रही। इसीलिए उन मुस्लिम जिन्नात ने उसी का ज़िक्र किया और उसी बात को पेशेनज़र रखकर हज़रत वरक़ा बिन नौफ़िल ने जिस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) के पहली बार आने का हाल सुना तो कहा था कि वाह वाह! यही तो वह मुबारक वजूद अल्लाह तआला के भेदी का है जो हज़रत मूसा (عليه السلام) के पास आया करते थे, काश! कि मैं कुछ और ज़माना ज़िन्दा रहता....। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल वही, बाब कैफ़ा काना बदउल वही इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) : 3; मुस्लिम : 160) फिर क़ुरआन की और सिफ़त बयान हो रही है कि वह अपने से पहले की तमाम आसमानी किताबों की तस्दीक़ करती है, वह ऐतिक़ादी मसाइल और अख़बारी मसाइल में हक़ की जानिब रहनुमाई करती है और आमाल में राहे रास्त दिखाती है।

क़ुरआन में दो चीज़ें हैं या ख़बर या तलब पस उसकी ख़बर सच्ची और उसकी तलब अदल वाली। जैसे फ़र्मान है (وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا) (6/अन्आम : 115) यानी तेरे रब का कलिमा सच्चाई और अदल के लिहाज़ से बिलकुल पूरा ही है। और आयत में अल्लाह सुब्हानहू व तआ़ला फ़र्माता है (هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ) (9/तौबा : 33) वह अल्लाह जिसने अपने रसूल को हिदायत और हक़ दीन के साथ भेजा है। पस हिदायत नफ़ा देने वाला इल्म है और दीने हक़ नेक अमल है, यही मक़्सद जिन्नात का था।

फिर कहते हैं , ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह तआ़ला के दाई की दावत पर लब्बैक कहो। उसमें दलालत है उस अम्र की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जिन्न व इंस की दोनों जमाअ़तों की तरफ़ रसूल बनाकर भेजे गए हैं इसलिए कि आपने जिन्नात को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ दावत दी और उनके सामने क़ुरआने करीम की वह सूरत पढ़ी जिसमें उन दोनों जमाअ़तों को मुख़ातब किया गया है और उनके नाम अहकाम जारी किये हैं और वादा वईद बयान किया है, यानी सूरह रहमान। फिर फ़र्माते हैं ऐसा करने से वह तुम्हारे कुछ गुनाह बख़्श देगा। लेकिन यह इस सूरत में हो सकता है जब लफ़्ज़ अम्मन को ज़ायदा न मानें, चुनाँचे एक क़ौल मुफ़स्सिरीन का यह भी है और क़ायदे के मुताबिक़ इस्बात के मौक़े पर लफ़्ज़े मन बहुत ही कम ज़ाइद आता है और अगर ज़ाइद मान लिया जाए तो मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआ़ला तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा और तुम्हें अपने अलमनाक अज़ाबों से रिहाई देगा। इस आयत से कुछ उलमा ने इस्तिदलाल किया है कि ईमान वाले जिन्नों को भी जन्नत नहीं मिलेगी हाँ! अज़ाब से छुटकारा पा लेंगे। यही उनकी नेक अमलों का बदला है और अगर उससे ज़्यादा मर्तबा भी उन्हें मिलने वाला होता तो इस जगह पर यह मोमिन जिन्न उसे ज़रूर बयान कर देते। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.)का क़ौल है कि मोमिन जिन्न जन्नत में नहीं जाएँगे इसलिए कि वह इब्लीस की औलाद से हैं और औलादे इब्लीस जन्नत में नहीं जाएगी। लेकिन हक़ यह है कि मोमिन जिन्न मिस्ल ईमान वाले इंसानों के हैं और वह जन्नत में जगह पाएँगे जैसा कि सलफ़ की एक जमाअ़त का मज़हब है। कुछ लोगों ने इस पर इस आयत से इस्तिदलाल किया है (لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ) (55/रहमान : 56) यानी हूर उन बहिश्ती को अहले जन्नत से पहले न किसी इंसान का हाथ लगा न किसी जिन्न का। लेकिन इस इस्तिदलाल में नज़र है। इससे बहुत बेहतर इस्तिदलाल तो अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के इस फ़र्मान से है (وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَانِ ﴿٤٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ﴿٤٧﴾) (55/रहमान : 46, 47) यानी जो कोई अपने रब के सामने खड़ा होने से डर गया उसके लिए दो दो जन्नतें हैं। फिर ऐ जिन्नों और इंसानों! तुम अपने परवरदिगार की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? इस आयत में अल्लाह तआ़ला इंसानों और जिन्नों पर अपना एहसान जताता है कि उनके नेककार का बदला जन्नत है, और इस आयत को सुनकर मुसलमान इंसानों से बहुत ज़्यादा शुक्रिया मुसलमान जिन्नों ने किया और उसे सुनते ही कहा कि अल्लाह तआ़ला हम तेरी नेअ़मतों में से किसी के इंकारी नहीं हम तेरे बहुत बहुत शुक्रगुज़ार हैं। ऐसा तो नहीं हो सकता कि उनके सामने उन पर वह एहसान जताया जाए जो दरअसल उन्हें मिलने का नहीं। और भी हमारी एक दलील सुनिए जब काफ़िर जिन्नात को जहन्नम में डाला जाएगा जो मक़ामे अदल है तो मोमिन जिन्नात को जन्नत में क्यूँ न ले जाया जाए? जो मक़ामे फ़ज़्ल है बल्कि

यह बहुत ज़्यादा लायक़ और बतौरे औला होने के क़ाबिल है और इस पर वह आयतें भी दलील हैं जिनमें आम तौर पर ईमान वालों को जन्नत की ख़ुशख़बरी दी गई है मस्लन (إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا) (18/कहफ़ : 107) वग़ैरह वग़ैरह।

यानी ईमान वालों का मेहमान ख़ाना यक़ीनन जन्नतुल फ़िरदौस है। अल्हम्दु लिल्लाह! मैंने इस मसले को बहुत कुछ वज़ाहत के साथ अपनी एक मुस्तक़िल तस्नीफ़ में बयान कर दिया है। और सुनिए जन्नत का तो यह हाल है कि ईमान वालों के कुल के दाख़िल हो जाने के बाद भी उसमें बे हदो हिसाब जगह बच रहेगी और फिर एक नई मख़्लूक़ पैदा करके उन्हें उसमें आबाद किया जाएगा फिर कोई वजह नहीं कि ईमान वाले और नेक अमल करने वाले जिन्नात जन्नत में भेजे जाएँ। और सुनिए यहाँ दो बातें बयानकी गई हैं, गुनाहों की बख़्शिश और अज़ाबों से रिहाई और जब यह दोनों चीज़ें हैं तो यक़ीनन यह मुस्तल्ज़िम हैं दुख़ूले जन्नत को इसलिए कि आख़िरत में या जन्नत है या जहन्नम। पस जो शख़्स जहन्नम से बचा लिया गया वह क़तअन जन्नत में जाना चाहिए और कोई नस्से सरीह या ज़ाहिर इस बात के बयान में वारिद नहीं हुई कि मोमिन जिन्न बावजूद दोज़ख़ से बच जाने के जन्नत में नहीं जाएँगे। अगर कोई इस क़िस्म की साफ़ दलील हो तो बेशक हम उसके मानने के लिए तैयार हैं, वल्लाहु आलम! नूह (عليه السلام) को देखिए अपनी क़ौम से फ़र्माते हैं अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाहों को (बवजह ईमान लाने के) बख़्श देगा और एक वक़्ते मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा तो यहाँ भी दुख़ूले जन्नत का जिक्र न होने से यह लाज़िम नहीं आता कि हज़रत नूह (عليه السلام) की क़ौम के मुसलमान जन्नत में नहीं जाएँगे बल्कि बिल्इत्तिफ़ाक़ वह सब जन्नती हैं, पस इसी तरह यहाँ भी समझ लीजिए अब चंद और क़ौल भी इस मसले में सुन लीजिए। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) से मरवी है कि "बीच जन्नत में तो यह पहुँचेंगे नहीं अल्बत्ता किनारों पर और इधर उधर रहेंगे।" कुछ लोग कहते हैं जन्नत में तो वह होंगे लेकिन दुनिया के बिलकुल बरअक्स इंसान उन्हें देख सकेंगे और यह इंसानों को देख नहीं सकेंगे। कुछ लोगों का क़ौल है कि वह जन्नत में खाएँगे पियेंगे नहीं सिर्फ़ तस्बीह तहमीद व तक़्दीस उनका खाना होगा। जैसे फ़रिश्ते इसलिए कि यह भी उन्हीं की जिंस हैं। लेकिन इन तमाम क़ौल में नज़र है और सब बेदलील हैं। फिर मोमिन वाइज़ फ़र्माते हैं कि जो अल्लाह तआला के दाई की दावत क़बूल न करेगा वह ज़मीन में अल्लाह तआला को हरा नहीं सकता बल्कि क़ुदरते इलाही उस पर शामिल और उसे घेरे हुए है, उसके अज़ाबों से उन्हें कोई बचा नहीं सकता, यह खुले बहकावे में हैं, ख़याल कीजिए कि तब्लीग़ का यह तरीक़ा कितना प्यारा और किस क़द्र मुअस्सिर है, रग़बत भी दिलाई और धमकाया भी, इसलिए उनमें के अक्सर ठीक हो गए और क़ाफ़िले के क़ाफ़िले और फ़ौजें की फ़ौजें बनकर कई कई बार अल्लाह तआला के रसूल (ﷺ) की ख़िदमत में बारयाब हुए और इस्लाम क़बूल किया। जैसे कि पहले मुफ़स्सलन हमने बयान कर दिया है, जिस पर हम जनाबे बारी के एहसान के शुक्रगुज़ार हैं, वल्लाहु आलम!

***

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ
عَلٰٓى اَنْ يُّحْیِۦَ الْمَوْتٰىؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۳۳﴾ وَیَوْمَ یُعْرَضُ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا عَلَى النَّارِؕ اَلَیْسَ هٰذَا بِالْحَقِّؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَاؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿۳۴﴾ فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ
لَّهُمْؕ كَاَنَّهُمْ یَوْمَ یَرَوْنَ مَا یُوْعَدُوْنَۙ لَمْ یَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍؕ بَلٰغٌۚ
فَهَلْ یُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿۳۵﴾

तर्जुमा : "क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा कर दिया और उनके पैदा करने से वह न थका वह यक़ीनन मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है? बेशक वह ऐसा ही है वह यक़ीनन हर चीज़ पर क़ादिर है (33) वह लोग जिन्होंने कुफ़्र किया जिस दिन जहन्नम के सामने लाए जाएँगे, और उनसे कहा जाएगा कि क्या यह हक़ नहीं है? तो वह जवाब देंगे कि हाँ! क़सम है हमारे रब की! हक़ है अल्लाह कहेगा अब अपने कुफ़्र के बदले के अज़ाब का मज़ा चखो। (34) पस (ऐ पैग़म्बर स.)! तुम ऐसा सब्र करो जैसा सब्र आली हिम्मत रसूलों ने किया और उनके लिए अज़ाब तलब करने में जल्दी न करो, यह जिस दिन उस अज़ाब को देख लेंगे जिसका वादा दिये जाते हैं तो यह मालूम होने लगेगा कि दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे, यह है पैग़ाम पहुँचा देना, बदकारों के सिवा कोई हलाक न किया जाएगा।" (35)

ज़मीनो आसमान की पैदाइश इंसानी पैदाइश से बड़ी है (आ. 33 से 35) : अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है कि क्या इन लोगों ने जो मरने के बाद जीने के इंकारी हैं और क़ियामत के दिन जिस्मों समेत जी उठने को महाल (असंभव) जानते हैं, यह नहीं देखते कि अल्लाह सुब्हानहू व तआला ने कुल आसमानों को और तमाम ज़मीनों को पैदा किया और उनकी पैदाइश ने उसे कुछ न थकाया बल्कि सिर्फ़ हो जा के कहने से ही हो गईं। कौन था जो उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी करता या मुख़ालिफ़त करता बल्कि हुक्मबरदारी से राज़ी ख़ुशी डरते दबते सब मौजूद हो गए क्या इतनी कामिल क़ुदरत व क़ुव्वत वाला अल्लाह मुर्दों के ज़िन्दा कर देने

की सकत नहीं रखता? चुनाँचे दूसरी आयत में है (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ) (40/मोमिन : 57) यानी इंसानों की पैदाइश से तो बहुत भारी और मुश्किल और बहुत बड़ी अहम पैदाइश आसमान व ज़मीन की है लेकिन अक्सर लोग बेसमझ हैं। जब ज़मीन व आसमान को उसने पैदा किया तो इंसान का पैदा कर देना ख़्वाह इब्तिदाअन हो ख़्वाह दोबारा हो उस पर क्या मुश्किल है? इसीलिए यहाँ भी फ़र्माया कि हाँ! वह हर चीज़ पर क़ादिर है और उन ही में से मौत के बाद ज़िन्दा करना है कि इस पर भी वह सहीह तौर पर क़ादिर है। फिर अल्लाह जल्ल व अला काफ़िरों को धमकाता है कि क़ियामत वाले दिन जहन्नम में डाले जाएँ उससे पहले जहन्नम के किनारे पर उन्हें खड़ा करके एक बार और लाजवाब और बेइज्ज़त किया जाएगा और कहा जाएगा क्यूँ जी हमारे वादे और यह दोज़ख़ के अ़ज़ाब अब तो सही निकले या अब भी शक व शुब्हा और इंकार व तक्ज़ीब है? यह जादू तो नहीं तुम्हारी आँखें तो अँधी नहीं हो गईं जो देख रहे हो सही देख रहे हो या दरहक़ीक़त सही नहीं? अब सिवा इक़रार के कुछ न बन पड़ेगा जवाब देंगे कि हाँ! हाँ! सब हक़ है जो कहा गया था वही निकला। क़सम अल्लाह तआ़ला की अब हमें रत्ती बराबर भी शक नहीं। अल्लाह कहेगा अब दो घड़ी पहले के कुफ़्र का मज़ा चखो। फिर अल्लाह तआ़ला अपने रसूल को तसल्ली दे रहा है कि आपकी क़ौम ने आपको झुठलाया, आपकी क़द्र न की, आपकी मुख़ालिफ़त की ईज़ारसानी के दर पे हुए तो यह कोई नई बात थोड़ी ही है? अगले ऊलुल अ़ज़्म पैग़म्बरों को याद करो कि कैसी कैसी ईज़ाएँ और मुसीबतें और तक्लीफ़ें सहीं और किन किन ज़बरदस्त मुख़ालिफ़ों की मुख़ालिफ़त को सब्र से बर्दाश्त किया। उन रसूलों के नाम यह हैं, नूह़, इब्राहीम, मूसा, ईसा (ﷺ) और ख़ातिमुन्नबिय्यीन (ﷺ)। अम्बिया के बयान में उनके नाम ख़ुसूसियत से सूरह अहज़ाब और सूरह शूरा में मज़्कूर हैं और यह भी हो सकता है कि ऊलुल अ़ज़्म रसूल से मुराद सब पैग़म्बर हों, तो मिनर्रुसुल का मिन बयाने जिंस के लिए होगा, वल्लाहु आलम! इब्ने अबी ह़ातिम में है "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रोज़ा रखा फिर भूखे ही रहे। फिर रोज़ा रखा फिर भूखे ही रहे और फिर रोज़ा रखा फिर कहने लगे, आइशा! मुह़म्मद और आले मुह़म्मद के लायक़ तो दुनिया है ही नहीं, आइशा! दुनिया की बलाओं और मुसीबतों पर सब्र करने और दुनिया की ख़्वाहिश की चीज़ों से अपने आपको बचाये रखने का हुक्म ऊलुल अ़ज़्म रसूल किये गए और वही तक्लीफ़ मुझे भी दी गई है जो उन आली हिम्मत रसूलों को दी गई थी। अल्लाह तआ़ला की क़सम! मैं भी उन्हीं की तरह अपनी ताक़त भर सब्रो सिहार से ही काम लूँगा। अल्लाह की कुव्वत के भरोसे पर यह बात जुबान से निकाल रहा हूँ।" (शरहस्सुन्ना : 4046; मुख़्तसरन बि बअ़ज़िही व सनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में मुजालिद बिन सईद ज़ईफ़ रावी है (अज़्ज़ुअफ़ाइ वल मतरूकीन : 3/35) फिर फ़र्माया ऐ नबी (ﷺ)! यह लोग अ़ज़ाबों में मुब्तला किये जाएँ उसकी जल्दी न करो। जैसे और आयत में है (وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ) (73/मुज़्ज़म्मिल : 11) मुझे और इन झुठलाने वाले पेट भरों मालदारों को छोड़ दे और इन्हें कुछ मोहलत दे और फ़र्मान (فَمَهِّلِ الْكَافِرِينَ) (86/तारिक़ : 17) यानी काफ़िरों को मोहलत दो इन्हें थोड़ी देर छोड़ दो। फिर फ़र्माता है जिस दिन यह उन चीज़ों का मुशाहिदा कर लेंगे जिनके वादे आज दिये जाते हैं। उस दिन इन्हें यह मालूम होने लगेगा कि दुनिया में

सिर्फ़ दिन का कुछ ही हिस्सा गुज़रा है। और आयत में है (كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا) (79/नाज़िआत : 46) यानी जिस दिन यह क़ियामत को देख लेंगे तो ऐसा मालूम होगा कि गोया दुनिया में सिर्फ़ एक सुबह या एक शाम ही गुज़ारी थी। (وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ) (10/यूनुस : 45) यानी जिस दिन हम इन्हें जमा करेंगे तो यह महसूस करने लगेंगे कि गोया दिन की एक साअत ही दुनिया में रहे थे। फिर फ़र्माया पहुँचा देना है। इसके दो मअनी हो सकते हैं। एक तो यह कि दुनिया का ठहरना सिर्फ़ हमारी तरफ़ से हमारी बातों के पहुँचा देने के लिए था। दूसरे यह कि यह कुरआन सिर्फ़ पहुँचा देने के लिए है, यह खुली तब्लीग़ है, फिर फ़र्माता है सिवा फ़ासिक़ों के और को हलाकी नहीं। यह अल्लाह जल्ल व अ़ला का अ़दल है जो ख़ुद हलाक हुआ उसे ही वह हलाक करता है, अ़ज़ाब उसी को कहते हैं जो ख़ुद अपने हाथों अपने लिए अ़ज़ाब मुहय्या करे और अपने आपको मुस्तहिक़े अ़ज़ाब कर दे, वल्लाहु आ़लम!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह अह़क़ाफ़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्शा-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह मुहम्मद - 47

आयात : 38 मदनी पैराग्राफ : 6

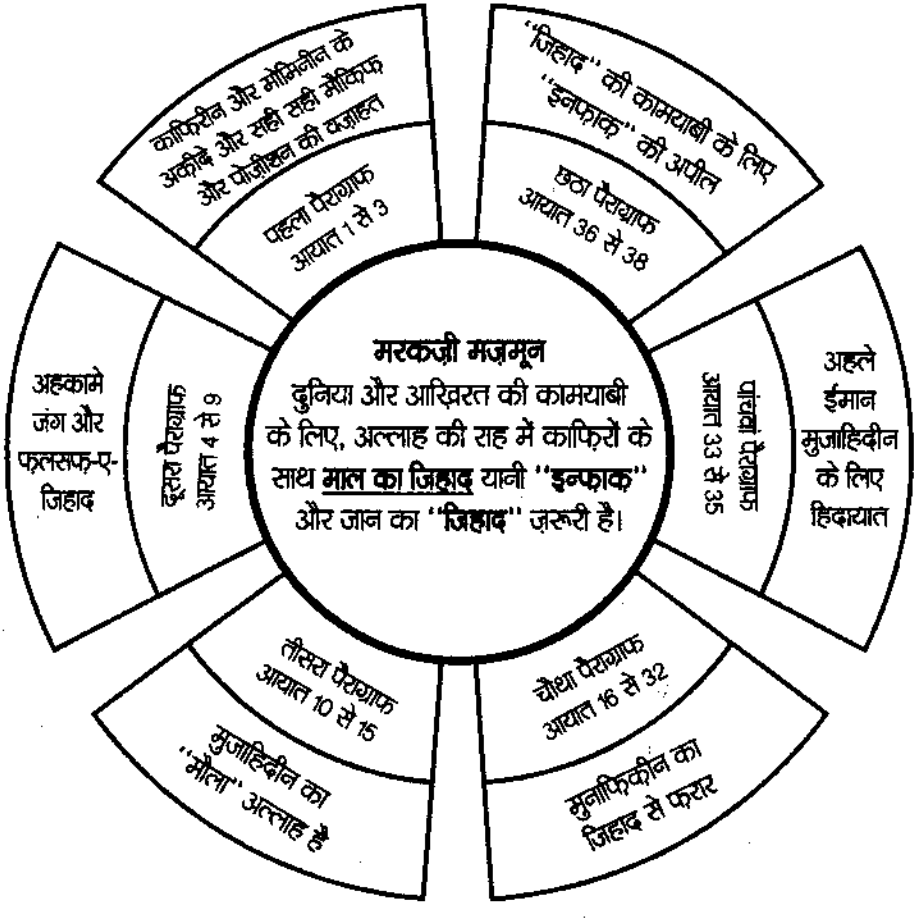

तफ़्सीर सूरह मुहम्मद

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

اَلَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَصَدُّوۡا عَنۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعۡمَالَهُمۡ ① وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوۡا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ ۙ كَفَّرَ عَنۡهُمۡ
سَيِّاٰتِهِمۡ وَاَصۡلَحَ بَالَهُمۡ ② ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الۡبَاطِلَ وَاَنَّ
الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الۡحَقَّ مِنۡ رَّبِّهِمۡ‌ؕ كَذٰلِكَ يَضۡرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمۡثَالَهُمۡ ③

तर्जुमा : "जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह तआला की राह से रोका अल्लाह ने उनके आमाल बर्बाद कर दिये। (1) और जो लोग ईमान लाए और भले काम किये और उस पर भी यक़ीन किया जो मुहम्मद (ﷺ) पर उतारी गई है और दरअसल उनके रब की तरफ़ से सच्चा दीन वही है अल्लाह ने उनके गुनाह दूर कर दिये और उनके हाल की इस्लाह कर दी। (2) यह इसलिए कि काफ़िरों ने बातिल की पैरवी की और मोमिनों ने उस दीने हक़ की इत्तिबाअ की जो उनके अल्लाह तआला की तरफ़ से है, अल्लाह तआला लोगों को उनके अहवाल इसी तरह बताता है।" (3)

कुफ़्फ़ार के आमाले ख़ैर बर्बाद हैं (आ. 1 से 3) : इर्शाद होता है कि जिन लोगों ने ख़ुद भी अल्लाह की आयतों का इंकार किया और दूसरों को भी राहे इलाही से रोका, अल्लाह तआला ने उनके आमाल ज़ाया कर दिये, उनकी नेकियाँ बेकार हो गईं। जैसे फ़र्मान है हमने उनके आमाल पहले से ही ग़ारत व बर्बाद कर दिये हैं और जो लोग ईमान लाए दिल से और मुताबिक़े शरअ आमाल किये बदन से यानी ज़ाहिर बातिन दोनों अल्लाह तआला की तरफ़ झुका दिये और वही इलाही को भी मान लिया जो मौजूदा आख़िरुज़्ज़माँ पैग़म्बर (ﷺ) पर उतारी गई है और फ़िल्वाक़ेअ रब की तरफ़ से ही है और जो सरासर हक़ व सदाक़त ही है उनकी

बुराइयाँ बर्बाद हैं और उनके ह़ाल की इस्लाह़ का ज़िम्मेदार ख़ुद रह़मान है, इससे मालूम हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) के नबी हो चुकने के बाद ईमान की शर्त आप पर और क़ुरआन पर ईमान लाना भी है ह़दीस में हुक्म है कि जिसकी छींक पर ह़म्द करने का जवाब दिया गया हो उसे चाहिए कि (यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिह़ बालकुम) (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब इज़ा अ़तस कैफ़ा युश्मित : 6224) कहे यानी अल्लाह तआ़ला तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारी ह़ालत संभाले, फिर फ़र्माता है कुफ़्फ़ारे आमाल ग़ारत कर देने की और मोमिनों की बुराइयाँ माफ़ कर देने और उनकी शान सँवार देने की वजह यह है कि कुफ़्फ़ार तो नाह़क़ को इख़्तियार करते हैं ह़क़ को छोड़कर और मोमिन नाह़क़ को परे फेंककर ह़क़ की पाबन्दी करते हैं। इसी त़रह़ अल्लाह तआ़ला लोगों के अंजाम को बयान फ़र्माता है और सुब्ह़ानहू व तआ़ला ख़ूब जानने वाला है।

***

فَإِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَثْخَنتُمُوهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَاءً حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَانتَصَرَ مِنْهُمْ وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُم بِبَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

तर्जुमा : "जब काफ़िरों से घमसान का रन पड़ जाए तो गर्दनों पर वार मारो, जब उनका ख़ूब कटाओ कर चको तो अब ख़ूब मज़बूत क़ैदो बन्द से गिरफ़्तार करो फिर इख़्तियार है कि ख़्वाह एह़सान रखकर छोड़ दो या फ़िदया बदला लेकर यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे। यही हुक्म है और अगर अल्लाह चाहता तो ख़ुद ही इनसे बदला ले लेता लेकिन उसकी चाहत यह है

कि तुममें से एक का इम्तिहान दूसरे से ले ले, जो लोग राहे इलाही में शहीद कर दिये जाते हैं अल्लाह तआ़ला उनके आमाल हर्गिज़ ज़ाया नहीं करेगा। (4) उन्हें राह दिखाएगा और उनके ह़ालात की इस्लाह़ कर देगा। (5) और उन्हें उस जन्नत में ले जाएगा जिससे उन्हें शनासा कर दिया है। (6) ऐ ईमान वालों! अगर तुम अल्लाह के दीन की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हें साबित क़दम रखेगा। (7) और जो लोग काफ़िर हुए उन्हें हलाकी हो अल्लाह उनके आमाल ग़ारत कर देगा। (8) यह इसलिए कि अल्लाह तआ़ला की नाज़िलकर्दा चीज़ से यह नाख़ुश हुए पस अल्लाह तआ़ला ने भी उनके आमाल ज़ाया कर दिये।'' (9)

जिहाद और उसके कुछ अह़काम (आ. 4 से 9) : यहाँ ईमान वालों को जंगी अह़काम दिये जाते हैं कि जब काफ़िरों से मुठभेड़ हो जाए और दस्ती लड़ाई शुरू हो जाए तो उनकी गर्दनें उड़ाओ तलवारें चलाकर गर्दन धड़ से अलग कर दो, फिर जब देखो कि दुश्मन हारा उसके आदमी काफ़ी कट चुके तो बाक़ी माँदा को मज़बूत क़ैदो बंद के साथ मुक़य्यद कर लो, जब लड़ाई ख़त्म हो चुके और मअ़रका पूरा हो जाए तो फिर तुम्हें (सिर्फ़ दो बातों का) इख़्तियार है या क़ैदियों को बतौरे एह़सान बग़ैर कुछ लिए छोड़ दो या फिर उनसे तावाने जंग वसूल करके छोड़ दो। बज़ाहिर मालूम हुआ कि बद्र के ग़ज़्वे के बाद यह आयत उतरी है क्योंकि बद्र के मअ़रका में ज़्यादातर मुख़ालेफ़ीन को क़ैद करने और क़ैद करने की कमी करने में मुसलमानों पर एताब किया गया था और फ़र्माया था (مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى) (8/अन्फ़ाल : 67) नबी को लायक़ न था कि उसके पास क़ैदी हों जब तक कि एक बार जी खोलकर मुख़ालिफ़ीन में मौत की गर्म बाज़ारी न हो ले, क्या तुम दुनियावी अस्बाब की चाहत में हो? अल्लाह का इरादा तो आख़िरत का है और अल्लाह अ़ज़ीज़ो ह़कीम है। अगर पहले ही से अल्लाह तआ़ला का लिखा हुआ न होता तो जो तुमने किया उसकी बाबत तुम्हें बड़ा अ़ज़ाब होता। कुछ उ़लमा का क़ौल है कि यह इख़्तियार मंसूख़ है और यह आयत नासिख़ है (فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ) (9/तौबा : 5) यानी हुर्मत वाले महीने जब गुज़र जाएँ तो मुश्रिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो लेकिन अक्सर उ़लमा का फ़र्मान है कि मंसूख़ नहीं। अब कुछ तो कहते हैं कि इमाम को दो बातों में से एक का इख़्तियार है यानी या तो एह़सान रखकर छोड़ दे या फ़िदया लेकर छोड़ दे (और यह लोग कहते हैं कि लौण्डी गुलाम के बारे में यह आख़िरी हुक्म है उसके बाद उनका रखना और उनसे फ़ायदा उठाना मंसूख़ हो गया है, लेकिन जुम्हूर इसके ख़िलाफ़ लौण्डी गुलाम के जवाज़ के क़ाइल हैं) लेकिन कुछ कहते हैं कि क़त्ल कर डालने का भी इख़्तियार है, इसकी दलील यह है कि बद्र के केदियों में से नज़्र बिन ह़ारिस और उ़क़्बा बिन अबी मुईत़ को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़त्ल करा दिया था और यह भी इसकी दलील है कि सुमामा बिन उसाल (रज़ि.) ने जबकि वह असीरी की ह़ालत में थे और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे पूछा था कि कहो, सुमामा! क्या ख़्याल है? तो उन्होंने कहा अगर आप क़त्ल करेंगे तो एक ख़ून वाले को क़त्ल करेंगे और अगर आप एह़सान रखेंगे तो एक शुक्रगुज़ार पर एह़सान रखेंगे और अगर माल त़लब करते हैं तो जो आप माँगें मिल जाएगा। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़्द बनी ह़नीफ़ा व ह़दीसे सुमामा बिन उसाल : 4372;

सहीह मुस्लिम : 1764; अबूदाऊद : 2679; अहमद : 2/453; इब्ने हिब्बान : 1239) हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) एक चौथी बात का भी इख़्तियार बतलाते हैं यानी क़त्ल का एहसान का बदले का और गुलाम बनाकर रख लेने का। इस मसले के बस्त की जगह फ़ुरूई मसाइल की किताबें हैं और हमने भी अल्लाह के फ़ज़्लो करम से किताबुल अहकाम में इसके दलाइल बयान कर दिये हैं। फिर फ़र्माता है यहाँ तक कि लड़ाई अपने हथियार रख दे यानी बक़ौले मुजाहिद (रह.) हज़रत ईसा (عليه السلام) नाज़िल हो जाएँ। (तब्री : 22/157) मुम्किन है हज़रत मुजाहिद (रह.) की नज़रें उस हदीस पर हों जिसमें है मेरी उम्मत हमेशा हक़ के साथ ज़ाहिर रहेगी यहाँ तक कि उनका आख़िरी शख़्स दज्जाल से लड़ेगा। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ी दवामिल जिहाद : 2484; वहुव सहीहुन) मुस्नद अहमद व नसाई में है कि ''हज़रत सलमा बिन नुफ़ैल (रज़ि.) ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे मैंने घोड़ों को छोड़ दिया और हथियार अलग कर दिये और लड़ाई से अपने हथियार रख दिये और मैंने कह दिया कि अब लड़ाई है ही नहीं, हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें फ़र्माया, अब लड़ाई आ गई, मेरी उम्मत में से एक जमाअत हमेशा लोगों पर ज़ाहिर रहेगी जिन लोगों के दिल टेढ़े हो जाएँगे, यह उनसे लड़ेंगे और अल्लाह तआला उनसे रोज़ियाँ देगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला का अम्र आ जाए और वह उसी हालत पर होंगे, मोमिनों की ज़मीन शाम में है। घोड़ों की अयाल में क़ियामत तक के लिए ख़ैर रख दी है।'' (अहमद : 4/104; नसाई, किताबुल ख़ेल, बाब अल्ख़ेलु मअक़ूद फ़ी नवासीहल ख़ैरि इला यौमिल क़ियामा : 3591; व सनदुहू सहीहुन) यह हदीस इमाम बग़वी (रह.) ने भी वारिद की है और हाफ़िज़ अबू यअला मूसली (रह.) ने भी, इसकी ताईद इससे भी होती है कि जो लोग इस आयत को मंसूख़ नहीं बतलाते गोया कि यह हुक्म मशरूअ है जब तक कि लड़ाई बाक़ी रहेगी यह आयत मिस्ल इस आयत के है (وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ) (2/बक़रह : 193) यानी इनसे लड़ते रहो जब तक कि फ़ित्ना बाक़ी है और जब तक कि दीन अल्लाह ही के लिए न हो जाए। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं लड़ाई के हथियार रख देने से मुराद शिर्क का बाक़ी न रहना है और कुछ से मरवी है कि मुश्रिकीन अपने शिर्क से तौबा कर लें और यह भी कहा गया है कि वह अपनी कोशिशें अल्लाह तआला की इताअत में सर्फ़ करने लग जाएँ।

फिर फ़र्माता है कि अगर अल्लाह तआला चाहता तो आप ही कुफ़्फ़ार को बर्बाद कर देता अपने पास से उन पर अज़ाब भेज देता लेकिन वह तो यह चाहता है कि तुम्हें आज़मा ले इसीलिए जिहाद के अहकाम जारी किये हैं। सूरह आले इमरान और सूरह तौबा में भी इस मज़्मून का बयान किया है आले इमरान में है (أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ) (3/आले इमरान : 142) क्या तुम्हारा यह गुमान है कि बग़ैर इस बात के कि अल्लाह तआला जान ले कि तुममें से मुजाहिद कौन है और तुममें से सब्र करने वाले कौन हैं तुम जन्नत में चले जाओगे? सूरह तौबा में है (قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ) (9/तौबा : 14) इनसे जिहाद करो अल्लाह तुम्हारे हाथों इन्हें अज़ाब करेगा और तुम्हें इन पर मदद देगा और ईमान वालों के सीने शिफ़ा वाले कर देगा और अपने दिलों के वल्वले निकालने का उन्हें मौक़ा देगा और जिसकी चाहेगा तौबा क़बूल करेगा अल्लाह बड़ा अलीम व हकीम है। अब चूँकि यह भी था कि जिहाद में मोमिन भी शहीद हों इसलिए फ़र्माता है कि शहीदों के आमाल एकारत नहीं जाएँगे बल्कि बहुत

बढ़ा चढ़ाकर सवाब उन्हें दिये जाएँ। कुछ को तो क़ियामत तक के सवाब मिलेंगे। मुस्नद अह़मद की ह़दीस में है कि "शहीद को छः इन्आमात ह़ासिल होते हैं, उसके ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही उसके कुल गुनाह माफ़ हो जाते हैं, उसे उसका जन्नत का मकान दिखला दिया जाता है और निहायत ख़ूबसूरत बड़ी बड़ी आखों वाली हूरों से उसका निकाह़ करा दिया जाता है, वह बड़ी घबराहट से अम्न में रहता है, वह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाता है, उसे ईमान के ज़ेवर से आरास्ता कर दिया जाता है।" (अह़मद : 4/200; व सनदुहू ह़सन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 5/293; शुअ़बुल ईमान : 4252; मुस्नदे शामिय्यीन : 204) एक और ह़दीस में यह भी है कि "उसके सिर पर वक़ार का ताज रखा जाता है जो याक़ूत का जड़ाव होता है जिसमें का एक याक़ूत दुनिया की तमाम चीज़ों से गिराँ बहा है। उसे बहत्तर (72) हूरे ईन मिलती हैं और अपने ख़ानदान के सत्तर शख़्सों के बारे में उसकी सिफ़ारिश क़बूल की जाती है।" (तिर्मिज़ी, किताब फ़ज़ाइलुल जिहाद, बाब फ़िस्सवाबि लिश्शहीद : 1663; वहुव ह़सन; इब्ने माजा : 2799; अह़मद : 4/131) स़ह़ीह़ मुस्लिम में है सिवा क़र्ज़ के शहीदों के सब गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब मन क़ुतिला फ़ी सबीलिल्लाहि कुफ़्फ़िरत ख़त़ायाहू इल्लद्दैना : 1886) शहीदों के फ़ज़ाइल की ह़दीसें और भी बहुत हैं। फिर फ़र्माता है उन्हें अल्लाह तआ़ला जन्नत की राह सुझा देगा, जैसे यह आयत (إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ) (10/यूनुस : 9) यानी जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किये उनके ईमान के बाइ़स उनका रब उन्हें उन जन्नतों की त़रफ़ रहबरी करेगा, जो नेअ़मतों से पुर हैं और जिनके चप्पे चप्पे में चश्मे बह रहे हैं अल्लाह उनके ह़ाल और उनके काम सँवार देगा और जिन जन्नतों की पहले ही वह पहचान करा चुका है और जिनकी त़रफ़ उनकी रहबरी कर चुका है आख़िर उन्हीं में उन्हें पहुँचाएगा। यानी हर शख़्स अपने मकान और अपनी जगह को जन्नत में इस त़रह़ पहचान लेगा जैसे दुनिया में पहचान लेता था। उन्हें किसी से पूछने की ज़रूरत न पड़ेगी यह मालूम होगा गोया शुरू पैदाइश से यहीं मुक़ीम हैं। इब्ने अबी ह़ातिम में है कि "जिस इंसान के साथ उसके आ़माल का मुह़ाफ़िज़ जो फ़रिश्ता था वही उसके आगे आगे चलेगा। जब यह अपनी जगह पहुँचेगा तो अज़्ख़ुद पहचान लेगा कि मेरी जगह यही है यूँ ही फिर अपनी ज़मीन में सैर करता हुआ जब सब देख चुकेगा तब फ़रिश्ता हट जाएगा और यह अपनी लज़्ज़तों में मशग़ूल हो जाएगा।" स़ह़ीह़ बुख़ारी की मरफ़ूअ़ ह़दीस में है जब मोमिन अगा से छूट जाएँगे तो जन्नत दोज़ख़ के बीच एक पुल पर रोक लिए जाएँगे और आपस में एक दूसरे पर जो मज़ालिम थे उनके बदले उतार लिए जाएँगे जब बिलकुल पाक साफ़ हो जाएँगे तो जन्नत में जाने की इजाज़त मिल जाएगी, अल्लाह तआ़ला की क़सम! जिस त़रह़ तुममें से हर एक शख़्स अपने दुनियावी घर की राह जानता है और घर को पहचानता है उससे बहुत ज़्यादा वह लोग अपनी मंज़िल और अपनी जगह से वाक़िफ़ होंगे। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब क़िसासु यौमिल क़ियामा : 6535; अह़मद : 3/13; इब्ने ह़िब्बान : 7434) फिर फ़र्माता है ईमान वालों! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम मज़बूत कर देगा जैसे और जगह है (وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ) (22/ह़ज्ज : 40) अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की करेगा इसलिए कि जैसा अ़मल होता है वैसी ही जज़ा होती है और वह तुम्हारे क़दम भी मज़बूत कर देगा। ह़दीस में है जो शख़्स किसी इख़्तियार वाले के सामने एक ऐसे ह़ाजतमंद की ह़ाजत पहुँचाए जो ख़ुद वहाँ न पहुँच सकता हो तो क़ियामत के

दिन अल्लह तआला पुलसिरात पर उसके क़दम मज़बूती से जमा देगा। फिर फ़र्माता है काफ़िरों का हाल बिलकुल उल्टा है यह क़दम क़दम पर ठोकरें खाएँगे। हदीस में है बेदीनार व दिरहम और कपड़े लत्ते का बन्दा ठोकर खा गया वह बर्बाद हुआ और हलाक हुआ, वह अगर बीमार पड़ जाए तो अल्लाह तआला करे उसे शिफ़ा भी न हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल हिरासतु फ़िल्ग़ज़्वति फ़ी सबीलिल्लाहि : 2887) ऐसों के नेक आमाल भी एकारत हैं इसलिए कि यह कुरआन व हदीस से नाख़ुश हैं न उसकी इज़्ज़त व अज़्मत इनके दिल में न इनका क़स्दो तस्लीम का इरादा। पस इनके जो कुछ अच्छे काम थे अल्लाह ने उन्हें भी ग़ारत कर दिये।

***

اَفَلَمۡ يَسِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ فَيَنۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ‌ؕ
دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيۡهِمۡ‌ۖ وَلِلۡكٰفِرِيۡنَ اَمۡثَالُهَا ﴿۱۰﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوۡلَى الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَاَنَّ
الۡكٰفِرِيۡنَ لَا مَوۡلٰى لَهُمۡ ﴿۱۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُدۡخِلُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ‌ؕ وَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يَتَمَتَّعُوۡنَ وَيَاۡكُلُوۡنَ كَمَا تَاۡكُلُ
الۡاَنۡعَامُ وَالنَّارُ مَثۡوًى لَّهُمۡ ﴿۱۲﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ هِىَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنۡ قَرۡيَتِكَ
الَّتِىۡۤ اَخۡرَجَتۡكَ‌ۚ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ فَلَا نَاصِرَ لَهُمۡ ﴿۱۳﴾

तर्जुमा : ''क्या इन लोगों ने ज़मीन में चल फिरकर उसका मुआयना नहीं किया कि इनसे पहले के लोगों का नतीजा क्या हुआ? अल्लाह ने उन्हें हलाक कर दिया और काफ़िरों के लिए इसी तरह की सज़ाएँ हैं। (10) यह इसलिए कि ईमान वालों का कारसाज़ ख़ुद रब्बे तआला है। और इसलिए कि काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11) जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल किये उन्हें अल्लाह तआला यक़ीनन ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके दरख़्तों के नीचे नहरें जारी हैं। और जो लोग काफ़िर हुए वह (दुनिया ही का) फ़ायदा उठा रहे हैं और मिस्ल चौपायों के खा रहे हैं उनका असल ठिकाना जहन्नम है। (12) हमने कितनी एक बस्तियों को जो ताक़त में तेरी उस बस्ती से ज़्यादा थीं जिसने तुझे निकाला, हलाक कर दिया है जिनकी मददगार कोई न उठा।'' (13)

मोमिन एक आँत में खाता है और काफ़िर सात आँतों में (आ. 10 से 13) : अल्लाह तआला फ़र्माता है। उन लोगों ने जो अल्लाह तआला का शरीक ठहराते हैं और उसके रसूल को झुठलाते हैं ज़मीन की सैर नहीं की? जो यह मालूम कर लेते और अपनी आँखों से देख लेते कि उनसे अगले जो उन जैसे थे उनके अंजाम किया हुए? किस तरह वह ताख़्त ताराज कर दिये गए और उनमें से सिर्फ़ इस्लाम व ईमान वाले ही नजात पा सके। काफ़िरों के लिए उसी मिस्ल अज़ाब आया करते हैं। फिर बयान फ़र्माता है मुसलमानों का ख़ुद अल्लाह तआला वाली है और कुफ़्फ़ार बेवली हैं। इसीलिए उहुद वाले दिन मुश्रिकीन के सरदार अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब ने फ़ख़्र के साथ जब नबी (ﷺ) और आपके दोनों ख़लीफ़ों की निस्बत सवाल किया और कोई जवाब न पाया तो कहने लगा कि यह सब हलाक हो गए। फिर उसे फ़ारूके आ'ज़म (रज़ि.) ने जवाब दिया और फ़र्माया जिनकी ज़िन्दगी तुझे ख़ार की तरह खटकती है अल्लाह ने उन सबको अपने फ़ज़्ल से ज़िन्दा ही रखा है। अबू सुफ़्यान कहने लगा, सुनो! यह दिन बदले का दिन है और लड़ाई तो मिस्ल डोलोंके है कभी कोई ऊपर कभी किसी का ऊपर। तुम अपने मक़्तूलीन में कुछ ऐसे भी पाओगे जिनके नाक कान वग़ैरह उनके मरने के बाद काट लिये गए हैं। मैंने ऐसा हुक्म नहीं दिया था लेकिन मुझे कुछ बुरा भी नहीं लगा। फिर उसने रजज़ के अश्आर फ़ख़्रिया पढ़ने शुरू किये कहने लगा उअलु हुबल उअलु हुबल। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम उसे जवाब क्यूँ नहीं देते? सहाबा (रज़ि.) ने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! क्या जवाब दें? फ़र्माया कहो (अल्लाहु आ'ला व अजल्लु) यानी वह कहता था हुबल बुत का बोलबाला हो जिसके जवाब में कहा गया सबसे ज़्यादा बुलंदी वाला और सबसे ज़्यादा इज़्ज़त व करम वाला अल्लाह ही है। अबू सुफ़्यान ने फिर कहा लनल उज़्ज़ा वला उज़्ज़ा लकुम हमारा उज़्ज़ा (बुत) है और तुम्हारा नहीं। उसके जवाब में बफ़र्माने हुज़ूर कहा गया (अल्लाहु मौलाना वला मौला लकुम) अल्लाह हमारा मौला है और तुम्हारा मौला कोई नहीं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मा यकरहू मिनत्तनाज़ेअ वल इख़्तिलाफ़ फ़िल्हर्ब : 3039) फिर जनाब बारी ख़बर देते हैं कि ईमान वाले क़ियामत के दिन जन्नत नशीन होंगे और कुफ़्र करने वाले दुनिया में तो ख़्वाह कुछ यूँ ही सा नफ़ा उठा लें लेकिन उनका असली ठिकाना जहन्नम है। दुनिया में उनकी ज़िन्दगी का मक़्सद सिर्फ़ खाना पीना और पेट भरना है, उसे यह लोग मिस्ल जानवरों के पूरा कर रहे हैं जिस तरह वह इधर उधर मुँह मारकर गीला सूखा पेट में भरने का ही इरादा रखता है उसी तरह यह है कि हलाल हराम की उसे कुछ तमीज़ नहीं, पेट भरना मक़्सूद है। हदीस में है मोमिन एक आँत में खाता है और काफ़िर सात आँतों में। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अत्इमा, बाब अल्मोमिनु यअकुल फ़ी मअयिन वाहिद : 5393; सह़ीह़ मुस्लिम : 2060; इब्ने माजा : 3256) जज़ा वाले दिन अपने उस कुफ़्र की पादाश में उनके लिए जहन्नम की गू ना गूँ सज़ाएँ हैं। फिर कुफ़्फ़ारे मक्का को धमकाता है और अपने अज़ाबों से डराता है कि देखो जिन बस्तियों वाले तुमसे बहुत ज़्यादा ताक़त वाले थे उनको हमने बसबब हमारे नबियों को झुठलाने और हमारे अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने के तहस नहस कर दिया तो तुम जो उनसे कमज़ोर और कम ताक़त हो उस रसूल को झुठलाते और ईज़ाएँ पहुँचाते हो जो ख़ातिमुल अम्बिया और सय्यदुल मुर्सलीन हैं समझ लो कि तुम्हारा अंजाम क्या होगा? माना कि उस नबी रहमत के मुबारक वुजूद

की वजह से अगर दुनियावी अ़ज़ाब तुम पर न भी आये तो आख़िरत का ज़बरदस्त अ़ज़ाब तो तुमसे दूर नहीं हो सकते? जब अहले मक्का ने रसूले करीम (ﷺ) को निकाला और आपने ग़ार में आकर अपने आपको छुपाया उस वक़्त मक्का की तरफ़ तवज्जह की और फ़र्माने लगे, ऐ मक्का! तू तमाम शहरों से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला को प्यारा है और इसी तरह मुझे भी तमाम शहरों से ज़्यादा प्यारा तू है अगर मुश्रिकीन मुझे तुझमें से न निकालते तो मैं हर्गिज़ न निकलता। (तब्री : 22/165) पस तमाम हद से गुज़र जाने वालों में सबसे बड़ा हद से गुज़र जाने वाला वह है जो अल्लाह तआ़ला की हदों से आगे निकल जाए या हरमे इलाही में किसी क़ातिल के सिवा किसी और को क़त्ल करे या जाहिलियत के तास्सुब की बिना पर क़त्ल करे, पस अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) पर यह आयत उतारी।

***

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِۦ كَمَن زُيِّنَ لَهُۥ سُوٓءُ عَمَلِهِۦ وَٱتَّبَعُوٓا۟ أَهْوَآءَهُم ﴿١٤﴾
مَّثَلُ ٱلْجَنَّةِ ٱلَّتِى وُعِدَ ٱلْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَآ أَنْهَٰرٌ مِّن مَّآءٍ غَيْرِ ءَاسِنٍ وَأَنْهَٰرٌ مِّن لَّبَنٍ
لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُۥ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّٰرِبِينَ وَأَنْهَٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ
فِيهَا مِن كُلِّ ٱلثَّمَرَٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۖ كَمَنْ هُوَ خَٰلِدٌ فِى ٱلنَّارِ وَسُقُوا۟
مَآءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ ﴿١٥﴾

तर्जुमा : "क्या पस वह शख़्स जो अपने परवरदिगार की तरफ़ से दलील पर हो उस शख़्स जैसा हो सकता है? जिसके लिए उसका बुरा काम ज़ीनत दिया गया हो और वह अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों का पैरू हो? (14) उस जन्नत की सिफ़त जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें हैं जो बदबू करने वाला नहीं, और दूध की नहरें हैं जिनका मज़ा नहीं बदला, और शराब की नहरें हैं जिनमें पीने वालों को बड़ी लज़्ज़त है, और नहरें हैं शहद की जो बहुत साफ़ हैं। और उनके लिए वहाँ हर क़िस्म के मेवे हैं और उनके रब की तरफ़ से मग़्फ़िरत है, क्या यह मिस्ल उसके हैं जो हमेशा आग में रहने वाला है? और जिन्हें गर्म खोलता पानी पिलाया जाएगा जिससे उनकी आँतें टुकड़े टुकड़े हो जाएँगी।" (15)

जन्नत की नहरें और अस्मार (फल) व फ़वाकेह (मावे) (आ. 14, 15) : अल्लाह तआ़ला फ़र्माता

है जो शख़्स दीने इलाही में यक़ीन के दर्जे तक पहुँच चुका हो, जिसे बसीरत हासिल हो चुकी हो, फ़ित्रते सहीहा के साथ ही हिदायत व इल्म भी हो, वह और वह शख़्स जो बद आमालियों को नेककारियाँ समझ रहा हो, जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के पीछे पड़ा हुआ हो, यह दोनों बराबर नहीं हो सकते, जैसे फ़र्मान है (أَفَمَن يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ) (13/रअद : 19) यानी यह नहीं हो सकता कि अल्लाह तआला की वही को हक़ मानने वाला और एक अँधा बराबर हो जाए। और इर्शाद है (لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ) (59/हश्र : 20) यानी जहन्नमी और जन्नती बराबर नहीं हो सकते जन्नती कामयाब और मुराद को पहुँचे हुए हैं। फिर जन्नत के औसाफ़ बयान फ़र्माता है कि उसमें पानी के चश्मे हैं जो कभी बिगड़ता नहीं मुतग़य्यर नहीं होता सड़ता नहीं न बदबू पैदा होती है, बहुत साफ़ मोती जैसा है। कोई गदलापन नहीं कूड़ा करकट नहीं। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) फ़र्माते हैं जन्नती नहरें मुश्क के पहाड़ों से निकलती हैं। उसमें पानी के अलावा दूध की नहरें भी हैं जिसका मज़ा कभी नहीं बदलता, बहुत सफ़ेद बहुत मीठा और निहायत साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और बामज़ा पुर ज़ायक़ा, एक मरफ़ूअ हदीस में है कि यह दूध जानवरों के थन से निकला हुआ नहीं। (ला अस़ल लहू मरफ़ूअन) बल्कि कुदरती है, और नहरें होंगी शराब साफ़ की जो पीने वाले का दिल ख़ुश कर दें दिमाग़ कुशादा करें। जो शराब न तो बदबूदार है न तल्ख़ी वाली न बद मंज़र है, बल्कि देखने में बहुत अच्छी पीने में बहुत लज़ीज़ निहायत ख़ुश्बूदार, जिससे न अक़्ल में फ़ितूर आए, न दिमाग़ में चक्कर आएँ, न बहकें, न भटकें, न नशा चढ़े, न अक़्ल जाए। हदीस में है कि ''यह शराब भी किसी के हाथों से कशीद की हुई नहीं। (ला अस़ल लहू मरफ़ूअन) बल्कि क़ादिरे मुत्लक़ के हुक्म से तैयार हुई है। ख़ुश ज़ायक़ा और ख़ुश रंग है।'' जन्नत में शहद की नहरें भी हैं जो बहुत साफ़ हैं और ख़ुश्बूदार और ज़ायक़ा का तो कहना ही क्या है। हदीस में है कि यह शहद भी मक्खियों के पेट से नहीं। (ला अस़ल लहू मरफ़ूअन) मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ हदीस में है कि जन्नत में दूध, पानी शहद और शराब के समुन्द्र हैं जिनमें से उनकी नहरें और चश्मे जारी होते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति अन्हारिल जन्ना : 2571; वहुव हसन; अहमद : 5/5) यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह फ़र्माते हैं। इब्ने मर्दवे की हदीस में है यह नहरे जन्नते अदन से निकलती हैं फिर एक हौज़ में आती हैं वहाँ से बज़रिये और नहरों के तमाम जन्नतों में जाती हैं। एक और हदीस में है जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो जन्नतुल फ़िरदौस तलब करो वह सबसे बेहतर और सबसे आला जन्नत है उसी से जन्नत की नहरें जारी होती हैं और उसके ऊपर रहमान का अर्श है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब दरजातुल मुजाहिदीन फ़ी सबीलिल्लाहि : 2790) तबरानी में है ''हज़रत लुक़ीत बिन आमिर (रज़ि.) जब वफ़्द में आए थे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि जन्नत में क्या कुछ है? आपने फ़र्माया, साफ़ शहद की नहरें और बग़ैर नशे के सिर दर्द न करने वाली शराब की नहरें और न बिगड़ने वाली दूध की नहरें और ख़राब न होने वाले शफ़्फ़ाफ़ पानी की नहरें और तरह तरह के मेवे जात अजीबो ग़रीब बेमिस्ल व बिलकुल ताज़ा और पाक साफ़ बीवियाँ जो सालेहीन को मिलेंगी और ख़ुद भी सालिहात होंगी, दुनिया की लज़्ज़तों की तरह उनसे लज़्ज़तें उठाएँगे, हाँ

वहाँ बाल बच्चे न होंगे।'' (अहमद : 4/13, 14; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल, मुतव्वलन जिद्दन व सनदुहू हसन; अल्मुअजमुल कबीर : 19/477; हाकिम : 4/560) हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह ख़्याल करना कि जन्नत की नहरें भी दुनिया की नहरों की तरह खुदी हुई ज़मीन में और गढ़ों में बहती हैं नहीं नहीं! क़सम अल्लाह तआला की! वह साफ़ ज़मीन पर यक्साँ जारी हैं उनके किनारे किनारे लूअ लूअ और मोतियों के ख़ेमे हैं उनकी मिट्टी मुश्के ख़ालिस है फिर फ़र्माता है वहाँ उनके लिए हर तरह के मेवे और फूल फल हैं। जैसे और जगह फ़र्माता है (يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ) (44/दुख़ान : 55) यानी वहाँ निहायत अम्नो अमान के साथ हर क़िस्म के मेवे वह मँगवाएँगे और खाएँगे। और आयत में है (فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ) (55/रहमान : 52) दोनों जन्नतों में हर हर क़िस्म के मेवों के जोड़ हैं। उन तमाम नेअमतों के साथ यह कितनी बड़ी नेअमत है कि रब ख़ुश है वह अपनी मग़्फ़िरत उनके लिए हलाल कर चुका है, उन्हें नवाज़ चुका है और उनसे राज़ी हो चुका है अब कोई खटका ही नहीं जन्नतों की यह धूमधाम और नेअमतों के बयान के बाद फ़र्माता है कि दूसरी जानिब जहन्नमियों की यह हालत है कि वह जहन्नम में जल झुलस रहे होंगे और वहाँ से छुटकारे की कोई राह नहीं और सख़्त प्यास के मौक़े पर वह खोलता हुआ गर्म पानी जो दरअसल आग ही है लेकिन बशक्ल पानी उन्हें पीने के लिए मिलता है कि एक घूँट अंदर जाते ही आँतें कट जाती हैं, अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे। फिर भला उसका और इसका क्या मैल? कहाँ जन्नती कहाँ जहन्नमी, कहाँ नेअमत कहाँ ज़हमत यह दोनों कैसे बराबर हो सकते हैं।

***

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۟ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا
اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ تَقْوٰىهُمْ ﴿۱۷﴾ فَهَلْ
يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا
جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿۱۸﴾ فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ
وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿۱۹﴾

तर्जुमा : ''उनमें कुछ ऐसे भी हैं कि तेरी तरफ़ कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो अहले इल्म से (बवजह ढिटाई के) पूछते हैं कि उसने अभी क्या कहा था? यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह तआ़ला ने मुहर कर दी है और वह अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करते हैं। (16) और जो लोग हिदायत याफ़्ता हैं अल्लाह तआ़ला ने उन्हें हिदायत में और बढ़ा दिया है और उन्हें उनकी परहेज़गारी अ़ता की। (17) पस यह तो सिर्फ़ क़ियामत का इंतिज़ार कर रहे हैं कि वह उनके पास अचानक आ जाए, पस यक़ीनन उसकी भी अ़लामतें तो आ चुकी हैं, फिर जबकि उनके पास क़ियामत आ जाए उन्हें नसीहत करना कहाँ होगा (18) तो (ऐ नबी स.)! तू यक़ीन कर ले कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई मअ़बूद नहीं और अपने गुनाहों की बख़्शिश माँगा कर और मोमिन मर्दों और औरतों के हक़ में भी, अल्लाह तुम्हारी आमद व रफ़्त की और रहने सहने की जगह को ख़ूब जानता है।'' (19)

अल्लाह से माफ़ी और चंद मस्नून दुआएँ (आ. 16 से 19) : मुनाफ़िक़ों की कुंद ज़हनी और बेइल्मी, नासमझी और बेवक़ूफ़ी का बयान हो रहा है कि बावजूद मज्लिस में शरीक होने के कलामे रसूल सुन लेने के पास बैठे हुए होने के उनकी समझ में कुछ नहीं आता। मज्लिस के ख़ात्मे के बाद अहले इल्म सहाबा (रज़ि.) से पूछते हैं कि उस वक़्त क्या क्या कहा? यह हैं जिनके दिलों पर मुहरे इलाही लग चुकी है और अपने नफ़्स की ख़्वाहिश के पीछे पड़ गए हैं। फ़हम सरीह और क़सद सही है ही नहीं। फिर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है जो लोग हिदायत का क़स्द करते हैं उन्हें ख़ुद अल्लाह तआ़ला भी तौफ़ीक़ देता है और हिदायत नसीब फ़र्मात है फिर उस पर जम जाने की हिम्मत भी अ़ता करता है और उनकी हिदायत बढ़ाता रहता है और उन्हें रुश्दो हिदायत इल्हाम फ़र्माता रहता है। फिर फ़र्माता है कि यह तो उसी इंतिज़ार में हैं कि अचानक क़ियामत क़ायम हो जाए तो यह मालूम कर लें कि उसके क़रीब होने के निशानात तो ज़ाहिर हो चुके हैं, जैसे और मौक़े पर इर्शाद हुआ है (هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى) (53/नज्म : 56) यह डराने वाला है अगले डराने वालों से क़रीब आने वाली क़रीब आ चुकी है, और भी इर्शाद होता है (اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ) (54/क़मर : 1) क़ियामत क़रीब हो गई और चाँद फट गया। और फ़र्माया (اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ) (21/अम्बिया : 1) लोगों का हिसाब क़रीब आ गया फिर भी वह ग़फ़लत में मुँह मोड़े हुए ही हैं। पस हुज़ूर (ﷺ) का नबी होकर दुनिया में आना क़ियामत की निशानियों में से एक निशानी है इसलिए कि आप रसूलों के सिलसिले को ख़त्म करने वाले हैं आपके साथ अल्लाह तआ़ला ने अपने दीन को कामिल किया और अपनी हुज्जत अपनी मख़्लूक़ पर पूरी की और हुज़ूर (ﷺ) ने क़ियामत की शर्तें और उसकी अ़लामतें इस तरह बयान कर दीं कि आपसे पहले के किसी नबी ने इस क़द्र वज़ाहत नहीं की थी। जैसे कि अपनी जगह वह सब बयान हुई हैं। हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं, हुज़ूर (ﷺ) का आना क़ियामत की शर्तों में से है, चुनाँचे ख़ुद आपके नाम हदीस में यह आए हैं नबी अत्तौबा, नबी अल्मलहमह, हाशिर जिसके क़दमों पर लोग जमा किये जाएँ, आक़िब जिसके बाद कोई नबी न हो। बुख़ारी की हदीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी बीच की उँगली और उसके पास वाली उँगली को उठाकर

फ़र्माया, मैं और क़ियामत मिस्ल इन दोनों के भेजे गए हैं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नाज़िआत : 4936; सहीह मुस्लिम : 2950) अल्लाह तआला फ़र्माता है कि काफ़िरों को क़ियामत क़ायम हो जाने के बाद नसीहत व इब्रत क्या सूदमंद होगी? जैसे इर्शाद होता है (يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنسَانُ وَأَنَّىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ) (89/फ़ज्र : 23) उस दिन इंसान नसीहत हासिल कर लेगा लेकिन उसके लिए नसीहत है कहाँ? यानी आज के दिन की इब्रत बेकार है। और आयत में है (وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ) (34/सबा : 52) यानी उस वक़्त कहेंगे कि हम कुरआन पर ईमान लाए हालाँकि अब उन्हें ऐसे दूर मकान पर दस्तरस कहाँ हो सकती है? यानी उनका ईमान उस वक़्त बेकार है। फिर फ़र्माता है ऐ नबी जान लो कि अल्लाह ही मअबूदे बरहक़ है कोई और नहीं यह दरअसल ख़बर देना है अपनी वह्दानियत की, यह तो हो नहीं सकता कि अल्लाह तआला उसके इल्म का हुक्म देता हो इसीलिए उस पर अत्फ़ डालकर फ़र्माया अपने गुनाहों का और मोमिन मर्द व औरत के गुनाहों का इस्तिग़्फ़ार करो। सहीह हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ خَطِيْئَتِيْ وَجَهْلِيْ وَإِسْرَافِيْ فِيْ أَمْرِيْ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّيْ، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ هَزْلِيْ وَجِدِّيْ وَخَطَئِيْ وَعَمْدِيْ وَكُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِيْ۔

यानी ऐ अल्लाह! मेरी ख़ताओं को और मेरी जिहालत को और मेरे कामों में मुझसे जो ज़्यादती हो गई हो उसको और हर उस चीज़ को जिसे तू मुझसे बहुत ज़्यादा जानने वाला है, बख़्श ऐ अल्लाह! मेरे बेक़स्द गुनाहों को और मेरे अज़्म से किये हुए गुनाहों को और मेरी ख़ताओं को और मेरे क़स्द को बख़्श और यह तमाम मेरे पास है। (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (अल्लाहुम्मग़्फ़िर ली मा क़द्दम्त...) : 6399; सहीह मुस्लिम : 2719; इब्ने हिब्बान : 957) और सही हदीस में है कि आप अपनी नमाज़ के आख़िर में कहते

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَسْرَفْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّيْ، أَنْتَ إِلٰهِيْ، لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ۔

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! मैंने जो कुछ गुनाह पहले किये हैं और जो कुछ पीछे किये हैं और जो छुपाकर किये हैं और जो ज़ाहिर किये हैं और जो ज़्यादती की है और जिन्हें तू मुझसे ज़्यादा जानता है बख़्श दे तू ही मेरा अल्लाह है तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं। (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल मुसाफ़िरीन, बाब अद्दुआउ फ़ी सलातिल्लैलि व क़ियामा : 771; अबूदाऊद : 509; तिर्मिज़ी : 3422 ; अहमद : 1/102) और सही हदीस में है कि आपने फ़र्माया ''ऐ लोगों! अपने रब की तरफ़ तौबा करो पस तहक़ीक़ कि मैं अपने रब की तरफ़ तौबा करता हूँ हर दिन सत्तर (70) बार से भी ज़्यादा।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुद्दअवात, बाब इस्तिग़्फ़ारुन्नबी (ﷺ) फ़िल्यौमि वल्लैला : 6307; सहीह मुस्लिम : 2702; इसमें (सौ मर्तबा) के अल्फ़ाज़ हैं।) मुस्नद अहमद में है ''हज़रत अब्दुल्लाह बिन सुर्ख़ुस (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और मैंने

आपके साथ आपके खाने में से खाना खाया फिर मैंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह आपको बख़्शे। आपने फ़र्माया और तुझे भी तो। मैंने कहा, क्या मैं आपके लिए इस्तिग़फ़ार करूँ? आपने फ़र्माया, हाँ और अपने लिए भी। फिर आपने यह आयत पढ़ी अपने गुनाहों और मोमिन मर्दों मोमिना औरतों के गुनाहों की बख़्शिश माँग। फिर मैंने आपके दाहिने खवे या बाएँ हथेली को देखा वहाँ कुछ जगह उभरी हुइ थी जिस पर गोया तिल थे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब इस्बातु ख़ातिमुन्नबुव्वा : 2346; तिर्मिज़ी : 23; अहमद : 5/82) अबू यअला में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया ''तुम (ला इलाहा इल्लल्लाहु) का और (अस्तग़्फ़िरुल्लाह) का कहना लाज़िम पकड़ो और उन्हें बकसरत कहा करो इसलिए कि इब्लीस कहता है मैंने लोगों को गुनाहों से हलाक किया और उन्होंने मुझे इन दोनों कलिमों से हलाक किया मैंने जब यह देखा तो उन्हें ख़्वाहिशों के पीछे लगा दिया पस वह समझते हैं कि हम हिदायत पर हैं।'' (मुस्नदे अबी यअला : 136; अस्सुन्नतु लि इब्ने अबी आसिम : 7; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा; मज्मउज़्ज़वाइद, इसकी सनद में उस्मान बिन मतर मुंकरुल हदीस (अल्मीज़ान : 3/53; रक़म : 5563) और अब्दुल ग़फ़ूर बिन अब्दुल अज़ीज़ मुत्तहम बिल वज़अ रावी है (अल्मीज़ान : 2/641; रक़म : 5150) एक और असर मे है कि इब्लीस ने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे तेरी इज़्ज़त और तेरे जलाल की क़सम! जब तक किसी शख़्स की रूह उसके जिस्म में है मैं उसे बहकाता रहूँगा। पस अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया, मुझे भी क़सम है अपनी बुज़ुर्गी और बड़ाई की कि मैं भी उन्हें बख़्शता रहूँगा जब तक वह मुझसे इस्तिग़फ़ार करते रहें। (अहमद : 3/76; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सिलसिलतु दराज अन अबी हैसम ज़ईफ़ व इब्ने लहीआ अन्अन, हाकिम : 4/261) इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत में और भी बहुत सी हदीसें हैं। फिर अल्लाह तबारक व तआला फ़र्माता है कि तुम्हारा दिन में हेर फेर और तसर्रुफ़ करना और तुम्हारा रात को जगह पकड़ना अल्लाह तआला जानता है। जैसे फ़र्मान है (وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ) (6/अन्आम : 60) यानी अल्लाह वह है जो तुम्हें रात को फ़ौत कर देता है और दिन में जो कुछ करते हो वह जानता है। और आयत में अल्लाह सुब्हानहू व तआला का फ़र्मान है (وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ) (11/हूद : 6) यानी ज़मीन पर जितने भी चलने वाले हैं उन सबकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे है और वह उनके रहने की जगह और दफ़न होने की जगह जानता है। यह सब बातें वाज़ेह किताब में लिखी हुई हैं। इब्ने जुरैज (रह.) का यही क़ौल है और इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) का क़ौल है कि मुराद आख़िरत का ठिकाना है। सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं तुम्हारा चलना फिरना दुनिया में और तुम्हारी क़ब्रों की जगह उसे मालूम है। लेकिन पहला क़ौल ही ज़्यादा औला और ज़्यादा ज़ाहिर है, वल्लाहु आलम!

***

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ
فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ
عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿۲۰﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۣ
فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿۲۱﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي
الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿۲۲﴾ اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى
اَبْصَارَهُمْ ﴿۲۳﴾

तर्जुमा : "और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कोई सूरत क्यूँ नाज़िल नहीं की गई, फिर जब कोई साफ़ मतलब वाली सूरत नाज़िल की जाती है और उसमें जिहाद का ज़िक्र किया जाता है तो तू देखता है कि जिन लोगों के दिलों में बीमारी है वह तेरी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे उस शख़्स की नज़र होती है जिस पर मौत की बेहोशी तारी हो, पस बहुत बेहतर था। (20) उनके लिए फ़र्मान का बजा लाना और अच्छी बात का कहना, फिर जब काम मुक़र्रर हो जाए तो अगर अल्लाह से सच्चे रहें तो उनके लिए बेहतरी है (21) और तुमसे यह भी दूर नहीं कि अगर तुमको हुकूमत मिल जाए तो तुम ज़मीन में फ़साद बरपा कर दो और रिश्ते नाते तोड़ डालो। (22) यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला की फिटकार है और जिनकी समाअत और आँखों की रोशनी छीन ली गई।" (23)

जिहाद से जी चुराने वाले मुनाफ़िक़ (आ. 20 से 23) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि मोमिन तो जिहाद के हुक्म की तमन्ना करते हैं फिर जब अल्लाह तआला जिहाद फ़र्ज़ कर देता है और उसका हुक्म नाज़िल कर देता है तो उससे अक्सर लोग हट जाते हैं जैसे और आयत में है (اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا اَيْدِيَكُمْ) (4/निसाअ : 77) यानी क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिनसे कहा गया कि तुम अपने हाथों को रोक लो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करते रहो फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ किया गया तो उनमें से एक फ़रीक़ लोगों से इस तरह डरने लगा जैसे अल्लाह का डर हो बल्कि उससे भी ज़्यादा, और कहने लगे, ऐ हमारे रब! हम पर तूने जिहाद क्यूँ फ़र्ज़ कर दिया। तूने हमको क़रीब की मुद्दत तक ढील क्यूँ न दी? तू कह दे कि

दुनिया की मताअ़ बहुत ही कम है और परहेज़गारों के लिए आख़िरत बहुत ही बेहतर है और तुम पर बिलकुल ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जाएगा पस यहाँ भी फ़र्माता है कि ईमान वाले तो जिहाद के हुक्मों की आयतों के नाज़िल होने की तमन्ना करते हैं लेकिन मुनाफ़िक़ लोग जब इन आयतों को सुनते हैं तो बवजह अपनी घबराहट बोखलाहट और नामर्दी के आँखें फाड़ फाड़ के इस तरह तुझे देखने लगते हैं जैसे मौत की गशी वाला फिर उन्हें मर्दे मैदान बनने की रग़बत दिलाते हुए फ़र्माता है उनके हक़ में बेहतर तो यह होता कि यह सुनते मानते और जब मौक़ा आ जाता जंग करने का बाज़ार गर्म होता तो नेक निय्यती के साथ जिहाद करके अपने ख़ुलूस का सबूत देते। फिर फ़र्माया क़रीब है कि तुम जिहाद से रुक रहो और उससे बचने लगो तो ज़मीन में फ़साद करने लगो और सिलारहमी तोड़ने लगो यानी ज़माना जाहिलियत में जो हालत तुम्हारी थी वही तुम में लौट आए। पस फ़र्माया ऐसों पर अल्लाह तआ़ला की फिटकार है और यह रब की तरफ़ से बहरे अँधे हैं। इसमें ज़मीन पर फ़साद करने की उ़मूमन और क़तअ़ रहमी की ख़ुसूसन मुमानिअ़त है। बल्कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन में इस्लाह और सिलारहमी करने की हिदायत की है और उनका हुक्म फ़र्माया है। सिलारहमी के मअ़नी हैं क़राबतदारों के साथ बातचीत में काम काज में सुलूक व एहसान करना और उनकी माली मुश्किलात में उनके काम आना। इस बारे में बहुत सी सहीह और हसन हदीसें मरवी हैं। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि "जब अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो रहम खड़ा हुआ और रहमान से चिमट गया उससे पूछा गया क्या बात है? उसने कहा यह मक़ाम है टूटने से तेरी पनाह में आने का, इसमें अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया, क्या तू इससे राज़ी नहीं? कि तेरे मिलाने वाले को मैं मिलाऊँ और तेरे काटने वाले को मैं काट दूँ? उसने कहा, हाँ! इस पर मैं बहुत ख़ुश हूँ।" इस हदीस को बयान करके फिर रावी हदीस हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया, "अगर तुम चाहो तो यह आयत पढ़ लो (फ़हल अ़सयतुम)" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मुहम्मद : 4830; सहीह मुस्लिम : 2554; अहमद : 2/330; इब्ने हिब्बान : 441) और सनद से है कि ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह मुहम्मद : 4831, 4832) अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा वग़ैरह में है कि कोई गुनाह इतना बड़ा और इतना बुरा नहीं जिसकी बहुत जल्दी सज़ा दुनिया में और फिर उसकी बुराई आख़िरत में बहुत बड़ी पहुँचती हो बनिस्बत सरकशी बग़ावत और क़तअ़ रहमी के। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िन्नही अ़निल बग़्य : 4902; व सनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2511; इब्ने माजा : 4211; अहमद : 5/36) मुस्नद अहमद में है जो शख़्स चाहे कि उसकी उम्र बड़ी हो और रोज़ी कुशादा हो वह सिलारहमी करे। (अह मद : 5/279; वसनदुहू हसन) और हदीस में है कि "एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा मेरी नज़दीकी क़राबतदार मुझसे तोड़ते रहते हैं और मैं उन्हें माफ़ करता रहता हूँ वह मुझ पर ज़ुल्म करते हैं और मैं उनके साथ एहसान करता हूँ और वह मेरे साथ बुराइयाँ करते रहते हैं तो क्या मैं उनसे बदला न लूँ? आपने फ़र्माया, नहीं! अगर ऐसा करोगे तो तुम सबके सब छोड़ दिये जाओगे तू सिलारहमी पर ही रह और याद रख कि जब तक तू उस पर बाक़ी रहेगा अल्लाह की तरफ़ से तेरे साथ हर वक़्त मुआविनत करने वाला रहेगा।" (अहमद : 2/181 व सनदुहू ज़ईफ़ुन इसकी सनद में हज्जाज बिन इरतात मुदल्लस रावी है (अल्मीज़ान :

1/458; रक़म : 1726) जबकि इसका शाहिद सहीह मुस्लिम 2558 में मौजूद है।) बुख़ारी वग़ैरह में है "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया सिलारहमी अर्श के साथ लटकी हुई है। हक़ीक़तन सिलारहमी करने वाला वह नहीं जो किसी एहसान के बदले एहसान करे बल्कि सही मअनी में रिश्ते नाते मिलाने वाला तो वह है कि गो तू उसे काटता जाए वह तुझसे मिलाता जाए।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब लैसल वासिल बिल मकाफ़ी : 5991; अहमद : 2/163) मुस्नद अहमद में है सिलारहमी क़ियामत के दिन रखी जाएगी, उसकी रानें होंगी मिस्ल हिरण की रानों के वह बहुत साफ़ और तेज़ ज़ुबान से बोलेगी पस वह काट दिया जाएगा जो उसे काटता था और वह मिलाया जाएगा जो उसे मिलाता था। (अहमद : 2/189; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लिस हैं और रिवायत मुअन्अन है। इब्ने अबी शैबा : 8/538; हाकिम : 4/162) मुस्नद की एक और हदीस में है "रहम करने वालों पर अल्लाह तआला भी रहम करता है तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमानों वाला तुम पर रहम करेगा रहम रहमान की तरफ़ से है। उसके मिलाने वालों को अल्लाह तआला मिलाता है और उसके तोड़ने वाले को ख़ुद अल्लाह तआला तोड़ देता है।" यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह कहते हैं। (अहमद : 2/160; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िर्रहमति : 4941; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1924) हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि.) की बीमारपुर्सी के लिए लोग गए तो आप फ़र्माने लगे तुमने सिलारहमी की है। "हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया है मैं रहमान हूँ और रहम का नाम मैंने अपने नाम पर रखा है। इसे जोड़ने वाले को मैं जोड़ूँगा और इसके तोड़ने वाले को मैं तोड़ दूँगा।" (अहमद : 1/194; अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब फ़ी सिलतिर्रहम : 1694; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1907) और हदीस में है आप फ़र्माते हैं रूहें मिली जुली हैं जो रोज़े अज़ल में मेल कर चुकी हैं वह यगानिगत बरतती हैं और जिनमें वहाँ नफ़रत रही है यहाँ भी दूरी रहती है। (सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब अल्अरवाहु जुनूदुम्मुजन्नदह : 3336; सहीह मुस्लिम : 2638; तबरानी : 6172) "हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं जब ज़ुबानी दावे बढ़ जाएँ अमल घट जाएँ ज़ुबानी मेल जोल हो दिली बुग़्ज़ और अदावत हो रिश्तेदार से बदसुलूकी करे और उस वक़्त ऐसे लोगों पर लअनते अल्लाह तआला नाज़िल होती है और उनके कान बहरे और आँखें अँधी कर दी जाती हैं।" (तबरानी : 6170; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/287) इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं, वल्लाहु आलम!

***

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْاٰنَ أَمْ عَلٰى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلٰى
أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ۗ وَأَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ۝٢٦ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ
وَاَدْبَارَهُمْ ۝٢٧ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ
اَعْمَالَهُمْ ۝٢٨

तर्जुमा : "क्या यह क़ुरआन में ग़ौरो ताम्मुल नहीं करते? बल्कि उनके दिलों पर उनके ताले लग गए हैं। (24) जो लोग अपनी पीठ पर उल्टे फिर गए इसके बाद कि उनके लिए हिदायत वाज़ेह हो चुकी यक़ीनन शैतान ने उनके लिए मुज़य्यन कर दिया है और उन्हें ढील दे रखी है (25) यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की नाज़िलकर्दा वही को बुरा समझा है यह कहा कि हम भी अन्क़रीब कुछ कामों में तुम्हारा कहा मानेंगे, अल्लाह उनकी पोशीदा बातें ख़ूब जानता है। (26) पस उनकी कैसी दुर्गत होगी जबकि फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी कमरों पर मारेंगे (27) यह इस बिना पर कि यह वह राह चले जिससे उन्होंने अल्लाह तआला को बेज़ार कर दिया और इन्होंने उसकी रज़ामंदी को बुरा जाना अल्लाह ने उनके आमाल एकारत कर दिये।" (28)

क़ुरआन में ग़ौरो फ़िक्र क्यूँ नहीं करते? (आ. 24 से 28) : अल्लाह तआला अपने कलाम पाक में ग़ौरो फ़िक्र करने सोचने समझने की हिदायत फ़र्माता है और इससे बेपरवाही करने और मुँह फेर लेने से रोकता है। पस फ़र्माता है कि ग़ौरो ताम्मुल तो दूर? इनके तो दिलों पर क़ुफ़्ल (ताले) लगे हुए हैं, कोई कलाम इसमें असर ही नहीं करता, जाए तो असर करे और जाए कहाँ से जबकि जाने की राह न पाये। इब्ने जरीर में है कि एक बार हुज़ूर (ﷺ) इस आयत की तिलावत कर रहे थे कि एक नौजवाने यमनी ने कहा बल्कि उन पर उनके क़ुफ़्ल हैं, जब तक अल्लाह तआला न खोले और अलग न करे, पस हज़रत उमर (रज़ि.) के दिल में यह बात रही यहाँ तक कि अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में इससे मदद लेते रहे। (तब्री : 22/108) फिर फ़र्माता है जो लोग हिदायत ज़ाहिर कर चुकने के बाद ईमान से अलग हो गए और कुफ़्र की तरफ़ लौट गए, दरअसल शैतान ने उस बुरे काम को उनकी निगाहों में अच्छा कर दिखाया है और उन्हें धोखे में डाल रखा है। दरअसल उनका यह कुफ़्र सज़ा है उनके उस निफ़ाक़ की जो उनके दिल में था जिसकी वजह से वह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ अपना बातिन रखते थे। काफ़िरों से मिल जुलकर उन्हें अपना करने के लिए उनसे बातिन में बातिल पर मुवाफ़िक़त करके कहते थे घबराओ नहीं! अभी अभी हम भी कुछ उमूर में तुम्हारा साथ देंगे। लेकिन यह बातें उस अल्लाह तआला से तो छुप नहीं सकतीं जो अंदरूनी और बैरूनी हालात से यक्सर और यक्साँ वाक़िफ़ हो, जो रातों के

वक़्त की पोशीदा और राज़ की बातें भी सुनता हो। जिसके इल्म की इंतिहा न हो। फिर फ़र्माता है उनका क्या हाल होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहें क़ब्ज़ करने को आएँगे और इनकी रूहें जिस्मों में छुपती फिरेंगी और मलाइका जबरन क़हरन डाँट झिड़क और मारपीट से उन्हें बाहर निकालेंगे जैसे इर्शादे बारी तआला है (وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ) (8/अन्फ़ाल : 50) काश तू देखता जबकि इन काफ़िरों की रूहें फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हुए इनके चेहरों पर थप्पड़ और इनकी पीठ पर मुक्के मारते हैं ... और आयत में है (وَلَوْ تَرَىٰٓ إِذِ الظّٰلِمُوْنَ) (6/अन्आम : 93) यानी काश कि तू देखता जबकि यह ज़ालिम सकराते मौत में होते हैं और फ़रिश्ते अपने हाथ उनकी तरफ़ मारने के लिए फैलाए हुए होते हैं और कहते हैं अपनी जानें निकालो आज तुम्हें ज़िल्लत के अ़ज़ाब किये जाएँगे इसलिए कि तुम अल्लाह तआला के ज़िम्मे नाहक़ कहा करते थे और उसकी आयतों के पीछे लगे हुए थे जिनसे अल्लाह तआला नाख़ुश हो और रब्बे रहीम की रज़ा से कराहियत करते थे। पस इनके आमाल एकारत हो गए।

***

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾ وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾

तर्जुमा : "क्या इन लोगों ने जिनके दिलों में बीमारी है यह समझ रखा है कि अल्लाह तआला इनके कीनों को ज़ाहिर ही न करेगा। (29) और अगर हम चाहते तो इन सबको तुझे दिखा देते, पस तू उन्हें उनके चेहरों से ही पहचान लेता, और यक़ीनन तू उन्हें उनकी बात के ढब से ही पहचान लेगा, तुम्हारे सब काम अल्लाह को मालूम हैं। (30) यक़ीनन हम तुम्हारा इम्तिहान करके तुममें से जिहाद करने वालों और सब्र करने वालों को साफ़ मालूम कर लेंगे और हम तुम्हारी हालतों की भी जाँच कर लेंगे।" (31)

इंसान का ज़ाहिर बातिन का ग़म्माज़ होता है (आ. 29 से 31) : यानी क्या मुनाफ़िक़ों का ख़्याल है कि उनकी मक्कारी और अय्यारी का इज़्हार अल्लाह तआला मुसलमानों पर करेगा ही नहीं? यह बिलकुल ग़लत ख़्याल है, अल्लाह तआला उनका मकर (धोखा) इस तरह खोल देगा कि हर अक़्लमंद उन्हें पहचान ले

और उनकी बदबातिनी से बच सके। उनके बहुत कुछ अह्वाल सूरह बरा'त में बयान किये गए और उनके निफ़ाक़ की बहुत सी ख़स्लतों का ज़िक्र वहाँ किया गया। यहाँ तक कि उस सूरत का दूसरा नाम ही फ़ाज़िहा रख दिया गया यानी मुनाफ़िक़ों को फ़ज़ीहत करने वाली (अज़्ग़ान) जमा है ज़ग़न की ज़ग़न कहते हैं दिली हसद व बुग़्ज़ को। उसके बाद अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! अगर हम चाहें तो इनके वुजूद तुम्हें दिखा दें पस तुम इन्हें खुल्लम खुल्ल जान जाओ, लेकिन अल्लाह तआला ने ऐसा नहीं किया इन तमाम मुनाफ़िक़ों को बतला नहीं दिया। ताकि इसकी मख़्लूक़ पर पर्दा पड़ा रहे। इनके उयूब पोशीदा रहें हर एक की निगाह में इनकी ज़िल्लत न हो। उमूरे इस्लामी ज़ाहिर दारी पर रहें और बातिनी हिसाब उसी ज़ाहिर व बातिन जानने वाले के हाथ रहे। लेकिन हाँ तुम तो इनकी बातचीत के तर्ज़ और कलाम के ढंग से ही साफ़ पहचान लोगे। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) फ़र्माते हैं जो शख़्स किसी पोशीदगी को छुपाता है, अल्लाह तआला उसे उसके चेहरे पर और उसकी ज़ुबान पर ज़ाहिर कर देता है।

हदीस में है जो शख़्स किसी राज़ को पर्दा में रखता है, अल्लाह तआला उसे उस पर अयाँ (ज़ाहिर) कर देता है वह बेहतर है तो और बदतर है तो। (तब्रानी : 1702 वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन, हामिद बिन आदम वल उर्ज़मी मज्रूहान, मज्मउज़्ज़वाइद : 10/225) हमने शरह सहीह बुख़ारी में अमली और ऐतिक़ादी निफ़ाक़ का बयान पूरी तरह कर दिया है जिसके दोहराने की यहाँ ज़रूरत नहीं। हदीस में मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत की तअयीन आ चुकी है। मुस्नद अहमद में है रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने एक ख़ुत्बे में अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया, तुममें कुछ लोग मुनाफ़िक़ हैं पस जिसका नाम लूँ वह खड़ा हो जाए। फिर फ़र्माया ऐ फ़लाँ खड़ा हो जा, ऐ फ़लाँ खड़ा हो जा, यहाँ तक कि छत्तीस अश्ख़ास के नाम लिये फिर फ़र्माया तुममें या तुममें से मुनाफ़िक़ हैं पस अल्लाह से डरो। उसके बाद उन लोगों में से एक के सामने से हज़रत उमर (रज़ि.) गुज़रे वह उस वक़्त कपड़े से अपना चेहरा लपेटे हुआ था। आप उसे ख़ूब जानते थे पूछा कि क्या है? उसने हुज़ूर (ﷺ) की ऊपर वाली हदीस बयान की तो आपने फ़र्माया, तुझे अल्लाह ग़ारत करे। (अहमद : 5/273; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/112; इसकी सनद में अयाज़ बिन अयाज़ मज्हूल रावी है। फिर फ़र्माता है हम अहकाम देकर रोक टोक करके तुम्हें ख़ूब आज़माकर मालूम कर लेंगे कि तुममें से मुजाहिद कौन हैं और सब्र करने वाले कौन हैं? और हम तुम्हारे अह्वाल आज़माएँगे। यह तो हर मुसलमान जानता है कि ज़ाहिर होने से पहले ही उस अल्लामुल ग़ुयूब को हर चीज़ और हर शख़्स और उसके आमाल मालूम हैं। तो यहाँ मतलब यह है कि दुनिया के सामने खोल दे और इस हाल को देख ले और दिखा दे, इसीलिए हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस जैसे मवाक़ेअ पर (लि नअलम) के मअनी करते थे लि नरा यानी ताकि हम देख लें।

***

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ لَنْ يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ إِنَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾
فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلْمِ وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتِرَكُمْ
أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

तर्जुमा : ''जिन लोगों ने कुफ़्र किया और राहे इलाही से लोगों को रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की इसके बाद कि उनके लिए हिदायत ज़ाहिर हो चुकी यह यक़ीनन हर्गिज़ हर्गिज़ अल्लह तआला का कुछ नुक़्सान न करेंगे। अन्क़रीब उनके आमाल वह ग़ारत कर देगा। (32) ऐ ईमान वालों ! अल्लाह की इताअत और रसूल का कहा मानो और अपने आमाल को ग़ारत न करो। (33) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह की राह से औरों को रोका फिर कुफ़्र की हालत में ही मर गए यक़ीन कर लो अल्लाह उन्हें हर्गिज़ न बख़्शेगा। (34) पस तुम बूदे बनकर सुलह की दरख़्वास्त पर इस हाल में न उतर आओ कि तुम ही बुलंद व ग़ालिब हो और अल्लाह तुम्हारे साथ है नामुम्किन है कि वह तुम्हारे आमाल ज़ाया कर दे।'' (35)

गुमराह होने वाला अपना ही नुक़्सान करता है (आ. 32 से 35) : अल्लाह सुब्हानहू व तआला ख़बर देता है कि कुफ़्र करने वाले राहे इलाही की बंदिश करने वाले रसूल की मुख़ालिफ़त करने वाले हिदायत के होते हुए गुमराह होने वाले अल्लाह तआला का तो कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते बल्कि अपना ही कुछ खोते हैं, कल क़ियामत के दिन यह ख़ाली हाथ होंगे, एक नेकी भी इनके पास न होगी। जिस तरह नेकियाँ गुनाहों को हटा देती हैं उसी तरह इनके बदतरीन जुर्म व गुनाह ने नेकियाँ बर्बाद कर दीं। इमाम मुहम्मद बिन नस्र मर्वज़ी (रह.) अपनी किताबुस्सलात में हदीस लाये हैं कि ''सहाबा (रज़ि.) का ख़्याल था कि ला इलाहा इल्लल्लाह के साथ कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देता जैसे शिर्क के साथ कोई नेकी नफ़ा नहीं देती इस पर यह आयत (अतीउल्लाह...) उतरी अब अस्हाबे रसूल इससे डरने लगे कि गुनाह नेकियों को बातिल न कर दें।'' दूसरी

सनद से मरवी है कि सहाबा किराम का ख़्याल था कि हर नेकी बिल्यक़ीन मक़्बूल है यहाँ तक कि यह आयत उतरी तो कहने लगे कि हमारे आमाल बर्बाद करने वाली चीज़ गुनाहे कबीरा और बुराइयाँ हैं, यहाँ तक कि आयत (إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ) (4/निसाअ : 48) नाज़िल हुई, अब इस बारे में कोई बात कहने से रुक गए और कबीरा गुनाह और बदकारियाँ करने वाले पर उन्हें डर रहता था और उनसे बचने वाले के लिए उम्मीद रहती थी। इसके बाद अल्लाह तआला अपने बाईमान बन्दों को अपनी और अपने नबी की इताअत का हुक्म देता है जो उनके लिए दुनिया और आख़िरत की सआदत की चीज़ है और मुर्तद होने से रोक रहा है जो आमाल को ग़ारत करने वाली चीज़ है। फिर फ़र्माता है अल्लाह से कुफ़्र करने वाले राहे रब से रोकने वाले और कुफ़्र ही में मरने वाले अल्लाह तआला की बख़्शिश से महरूम हैं। जैसे फ़र्मान है कि अल्लाह तआला शिर्क को नहीं बख़्शता। उसके बाद जनाबे बारी अज़्ज़ इस्मुहू फ़र्माता है कि ऐ मेरे मोमिन बन्दो! तुम दुश्मनों के मुक़ाबले में आजिज़ी का इज़्हार न करो और उनसे दबकर सुलह की दावत न दो हालाँकि क़ुव्वत व ताक़त में ज़ोर व ग़ल्बे में तादाद व अस्बाब में तुम क़वी हो। हाँ! जबकि काफ़िर क़ुव्वत में तादाद में अस्बाब में तुम सबसे ज़्यादा हों और मुसलमानों का इमाम मस्लिहत सुलह में ही देखे तो ऐसे वक़्त बेशक सुलह की तरफ़ झुकना जाइज़ है, जैसे कि ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुदेबिया के मौक़े पर किया जबकि मुश्रिकीने मक्का ने आपको मक्का जाने से रोका तो आपने दस साल तक लड़ाई बंद रखने और सुलह क़ायम रखने पर मुसालिहत कर ली। फिर ईमान वालों को बहुत बड़ी बशारत व ख़ुशख़बरी सुनाता है कि अल्लाह तआला तुम्हारे साथ है इस वजह से मदद व फ़तह तुम्हारी ही है तुम यक़ीन मानो कि तुम्हारी छोटी से छोटी नेकी भी वह ज़ाया नहीं करेगा बल्कि उसका पूरा पूरा अज्रो सवाब तुम्हें इनायत करेगा, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ أُجُوْرَكُمْ وَلَا
يَسْـَٔلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ إِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾
هَآأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ
فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۗ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ
قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا أَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

तर्जुमा : "दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ खेलकूद है। अगर तुम यक़ीन करोगे और बचकर चलोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे सवाब देगा और वह तुमसे तुम्हारे माल नहीं माँगता। (36) अगर वह तुमसे तुम्हारे माल माँगे और ज़ोर देकर माँगे तो तुम उस वक़्त कंजूसी करने लगोगे और वह कंजूसी तुम्हारे कीने ज़ाहिर कर देगी। (37) ख़बरदार! तुम हो वह लोग कि बुलाए जाते हो कि तुम राहे इलाही में ख़र्च करो। फिर तुममें से कुछ बख़ीली करने लगते हैं। जो बुख़्ल करता है वह तो दरअसल अपनी जान से बख़ीली करता है, अल्लाह तआला ग़नी और बेनियाज़ है और तुम फ़क़ीर और मोहताज हो, और अगर तुम रूगर्दां हो जाओगे तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे सिवा और लोगों को लाएगा जो फिर तुम जैसे न होंगे।" (38)

दुनिया की बे सबाती और नापायदारी (आ. 36 से 38) : दुनिया की हक़ारत और इसकी क़िल्लत व ज़िल्लत बयान हो रही है कि इससे सिवा तमाशे के और कुछ हासिले हुसूल नहीं, हाँ! जो काम अल्लाह तआला के लिए किये जाएँ वह बाक़ी रह जाते हैं। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला की ज़ात बेपरवाह है, तुम्हारे भले काम तुम्हारे ही नफ़ा के लिए हैं, वह तुम्हारे मालों का भूखा नहीं, उसने तुम्हें जो ख़ैर ख़ैरात का हुक्म दिया है वह सिर्फ़ इसलिए कि तुम्हारे ही गुरबा फ़ुक़रा की परवरिश हो और फिर तुम दारे आख़िरत में मुस्तहिक़े सवाब बनो। फिर इंसान के बख़ीली और बख़ीली के बाद दिली कीने के ज़ाहिर होने का हाल बयान किया। माल के निकालने में यह तो होता ही है कि माल इंसान को महबूब होता है और उसका निकालना उस पर गिराँ गुज़रता है। फिर बख़ीलों की बख़ीली के वबाल का ज़िक्र हो रहा है कि फ़ी सबीलिल्लाह ख़र्च करने से माल को रोकना दरअसल अपना ही नुक़सान करना है क्योंकि बख़ीली का वबाल उसी पर पड़ेगा, सदक़े की फ़ज़ीलत और उसके अज्र से महरूम भी रहेगा। अल्लाह सबसे ग़नी है और सब उसके दर के भिखारी हैं। ग़िना ख़ालिक़े कायनात का वस्फ़े लाज़िम है और मोहताज़गी मख़्लूक़ का वस्फ़े लाज़िम है। न यह कि उससे कभी अलग हों न वह उससे फिर फ़र्माता है अगर तुम उसकी इताअत से रूगर्दां हो गए उसकी शरीअत की ताबेदारी छोड़ दी तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे सिवा और क़ौम लाएगा जो तुम जैसी न होगी बल्कि वह सुनने और मानने वाले हुक्मबरदार नाफ़र्मानियों से बेज़ार होंगे। इब्ने अबी हातिम और इब्ने जरीर में है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जब यह आयत तिलावत की तो सहाबा (रज़ि.) ने पूछा कि हुज़ूर (ﷺ)! यह कौन लोग हैं, जो हमारे बदले लाये जाते और हम जैसे न होते, तो आपने अपना हाथ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि.) के शाने पर रखकर फ़र्माया यह और इनकी क़ौम, अगर दीन सुरय्या के पास भी होता तो उसे फ़ारस के लोग ले आते।" (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 19923; इब्ने हिब्बान : 7123; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ईफ़ मशहूर वफ़िल बाबि अहादीसे उख़रा सहीहतुन वल्हम्दु लिल्लाह। तारीख़े अस्बहान : 1/3; दलाइलुन्नबुव्वा : 6/334; इस मअनी की हदीस सहीह बुख़ारी : 4897; सहीह मुस्लिम : 2546 में भी मौजूद है।) इसके एक रावी मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ुंजी के बारे में कुछ अइम्मा जरह व ता'दील ने कुछ कलाम किया है, वल्लाहु आलम!

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह मुहम्मद की तफ़सीर मुकम्मल हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह अलफ़तह - 48

आयात : 29 मदनी पैराग्राफ : 5

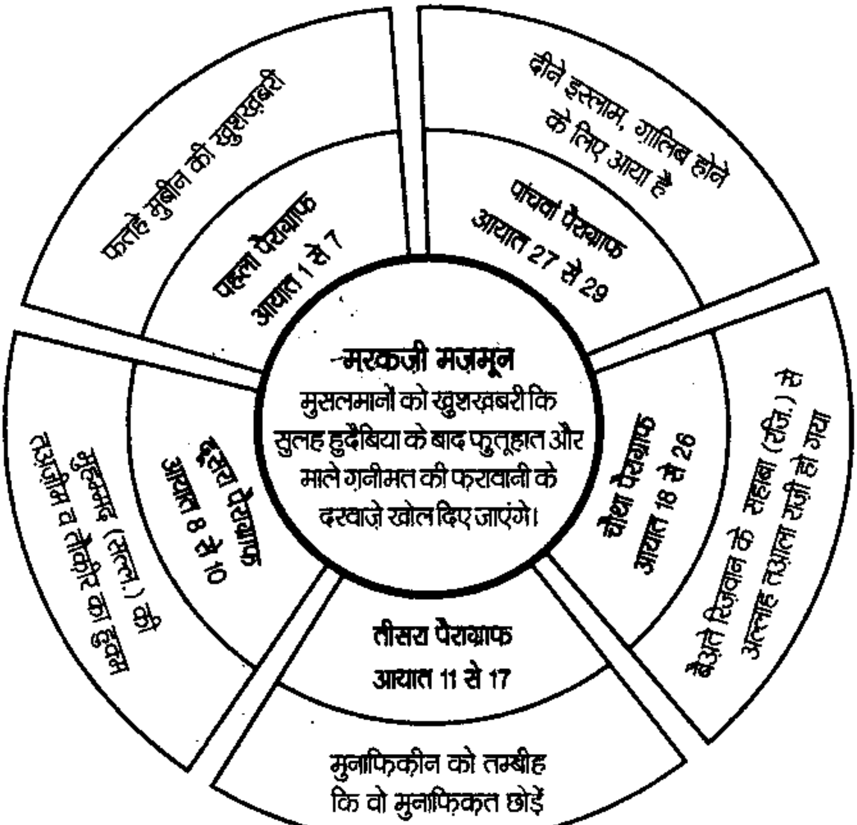

तफ़्सीर सूरह फ़तह

बुख़ारी व मुस्लिम और मुस्नद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल (रज़ि.) से रिवायत है कि फ़तहे मक्का वाले साल दौराने सफ़र में राह चलते रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी ऊँटनी पर ही सूरह फ़तह की तिलावत की और तर्जीअ से पढ़ रहे थे। अगर मुझे लोगों के जमा हो जाने का डर न होता तो मैं आपकी तिलावत की तरह ही तिलावत करके तुम्हें सुना देता। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ऐना रकज़न्नबी (ﷺ) अर्रायता यौमल फ़तह : 4281; सहीह मुस्लिम : 794; अहमद : 1/54; अबूदाऊद : 1467; इब्ने हिब्बान : 748)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ① لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ

وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ② وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيزًا ③

तर्जुमा : "बेशक (ऐ नबी स.!) हमने तुझे एक ज़ाहिर फ़तह दी है, (1) ताकि जो कुछ तेरे गुनाह किये हुए और जो पीछे रहे सबको अल्लाह तआला माफ़ कर दे और तुझ पर अपना एहसान पूरा पूरा करे और तुझे सीधी राह चलाए। (2) और तुझे एक ज़बरदस्त मदद दे।" (3)

सूरह फ़तह का शाने नुज़ूल नीज़ नबी (ﷺ) की इबादत का हाल (आ. 1 से 3) : ज़ी क़अदा 6 हिज्री में रसूलुल्लाह (ﷺ) उमरह अदा करने के इरादे से मदीना से मक्का को चले लेकिन राह में मुश्रिकीने मक्का ने रोक दिया और मस्जिदे हराम की ज़ियारत से मानेअ हुए फिर वह लोग सुलह की तरफ़ झुके और हुज़ूर (ﷺ) ने भी इस बात पर कि आप अगले साल उमरह अदा करेंगे उनसे सुलह कर ली जिसे सहाबा (रज़ि.) की एक बड़ी जमाअत ने नापसंद किया था जिसमें ख़ास क़ाबिले ज़िक्र हस्ती हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की है। आपने वहीं अपनी कुर्बानियाँ कीं और लौट गए जिसका पूरा वाक़िया अभी इसी सूरत की तफ़्सीर में आ रहा है, इंशाअल्लाह! पस लौटते हुए राह में यह मुबारक सूरत आप पर नाज़िल हुई जिसमें इस वाक़िया का ज़िक्र है और उस सुलह को बएतिबार नतीजा फ़तह कहा गया। इब्ने मसऊद (रज़ि.) वग़ैरह से मरवी है कि तुम तो फ़तह, फ़तहे मक्का को कहते हो लेकिन हम सुलह हुदैबिया को फ़तह जानते थे। हज़रत जाबिर (रज़ि.) से भी यही मरवी है। (तबरी : 22/201) सहीह बुख़ारी में है कि "हज़रत बराअ (रज़ि.)

फ़र्माते हैं तुम फ़तहे मक्का को फ़तह जानते हो और हम बेअते रिज़्वान के वाक़िये हुदेबिया को फ़तह गिनते हैं। हम चौदह सौ (1400) आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ उस मौक़े पर थे, हुदेबिया नामी एक कुआँ था। हमने उसमें से पानी अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ लेना शुरू किया। थोड़ी देर में पानी बिलकुल ख़त्म हो गया, एक क़तरा भी न बचा। आख़िर पानी के न होने की शिकायत हुज़ूर (ﷺ) के कानों तक पहुँची आप उस कुएँ के पास आए उसके किनारे बैठ गए और पानी का बरतन मँगवाकर वुज़ू किया जिसमें कुल्ली भी की फिर दुआ की और वह पानी उस कूएँ में डलवा दिया थोड़ी देर बाद जो हमने देखा तो वह पानी से लबालब भरा हुआ था हमने भी पिया जानवरों ने भी पिया अपनी हाजतें पूरी कीं और सारे बरतन भर लिए।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब गज़्वा हुदेबिया : 4150) मुस्नद अहमद में हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से मरवी है कि ''एक सफ़र में मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ था तीन बार मैंने आपसे कुछ पूछा। आपने कोई जवाब न दिया। अब तो मुझे सख़्त नदामत हुई उस अम्र पर कि अफ़सोस! मैंने हुज़ूर (ﷺ) को तक्लीफ़ दी आप (ﷺ) जवाब देना नहीं चाहते और मैं ख़्वाह मख़्वाह सिर होता रहा। फिर मुझे डर लगने लगा कि मेरी इस बेअदबी पर मेरे बारे में कोई वह्यी आसमानी न उतर जाए, चुनाँचे मैंने अपनी सवारी को तेज़ किया और आगे निकल गया। थोड़ी देर गुज़री थी कि मैंने सुना कोई आवाज़ देने वाला मेरे नाम की आवाज़ कर रहा है। मैंने जवाब दिया तो उसने कहा चलो! तुम्हें हुज़ूर (ﷺ) याद कर रहे हैं। अब तो मेरा सन्नाटा निकल गया कि ज़रूर कोई वह्यी नाज़िल हुई और मैं हलाक हुआ। जल्दी जल्दी हाज़िरे हुज़ूर हुआ तो आपने फ़र्माया, गुज़िश्ता रात मुझ पर एक सूरत उतरी है जो मुझे दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब है। फिर आपने (इन्ना फ़तहना) की तिलावत की।'' (अहमद : 1/31; सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4177; तिर्मिज़ी : 3262) हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुदेबिया से लौटते हुए (लि यग़्फ़िरा लकल्लाहु) नाज़िल हुई तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझ पर एक आयत उतारी गयी है जो मुझे रूए ज़मीन से ज़्यादा महबूब है फिर आपने यह आयत पढ़कर सुनाई सहाबा (रज़ि.) आप (ﷺ) को मुबारकबाद देने लगे, और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! यह तो हुई आपके लिए हमारे लिए क्या है? इस पर यह आयत (लि युदख़िलल मुअमिनीना) से (अज़ीमन) तक नाज़िल हुई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4172; सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब सुलह हुदेबिया : 1786; तिर्मिज़ी : 3263; अहमद : 3/122) हज़रत मज्मअ बिन हारिसा अंसारी (रज़ि.) जो क़ारी कुरआन थे फ़र्माते हैं , हुदेबिया से हम वापिस आ रहे थे जो मैंने देखा कि लोग ऊँटों को भगाये लिए जा रहे हैं पूछा, क्या बात है? मालूम हुआ कि हुज़ूर (ﷺ) पर कोई वह्यी नाज़िल हुई है तो हम लोग भी अपने ऊँटों को दौड़ाते हुए सबके साथ पहुँचे। आप उस वक़्त किराअल ग़मीम में थे जब सब जमा हो गए तो आपने यह सूरत तिलावत करके सुनाई तो एक सहाबी ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या यह फ़तह है? आपने फ़र्माया, हाँ! क़सम उसकी जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है यह फ़तह है। ख़ैबर की तक़्सीम सिर्फ़ उन्हीं पर की गई जो हुदेबिया में मौजूद थे। अठारह (18) हिस्से बनाए गए कुल लश्कर पन्द्रह सौ (1500) का था जिसमें तीन सौ घुड़सवार थे पस सवार को दोहरा

हिस्सा मिला और पैदल को इकहरा।'' (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद, बाब फ़ीमन उस्हिमा लहू सहीमा : 2736; वसनदुहू हसन; अहमद : 3/420; हाकिम : 2/131) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हुदेबिया से आते हुए एक जगह रात गुज़ारने के लिए हम उतरे सो गए तो ऐसे सोये कि सूरज निकलने के बाद जागे देखा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) भी सोये हुए हैं। हमने कहा आपको जगाना चाहिए जो आप ख़ुद जाग गए और फ़र्माने लगे जो कुछ किया करते थे करो और उसी तरह करे जो सो जाए या भूल जाए उसी सफ़र में हुज़ूर (ﷺ) की ऊँटनी कहीं गुम हो गई हम ढूँढ़ने को निकले तो देखा कि एक दरख़्त में नकेल अटक गई है और वह रुकी खड़ी है। उसे पकड़कर हुज़ूर (ﷺ) के पास लाए आप सवार हुए और हमने कूच किया। नागहाँ रास्ते में ही आप पर वह्यी आने लगी। वह्यी के वक़्त आप पर बहुत दुश्वारी होती थी, जब वह्यी हट गई तो आपने हमें बतलाया कि आप पर सूरह (इन्ना फ़तहना) उतरी है।'' (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब फ़ी नाम अन सलातिन औ नसियहा : 447; मुख़्तसरन; अहमद : 1/464; इसकी सनद हसन है।)

''हुज़ूर (ﷺ) नवाफ़िल तहज्जुद वग़ैरह में इस क़द्र वक़्त लगाते कि पैरों पर वरम चढ़ जाता तो आपसे कहा गया कि क्या अल्लाह ने आपके अगले पिछले गुनाह माफ़ नहीं कर दिये? आपने जवाब दिया क्या फिर मैं अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ?'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़तह बाब (लि यग़्फ़िर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़ंबिक...) : 4836; सहीह मुस्लिम : 2819) और रिवायत में है कि यह पूछने वाली आइशा (रज़ि.) थीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़तह बाब (लि यग़्फ़िर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन ज़ंबिक...) : 4837; सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब अक्सरुल आमाल वल इज्तिहाद फ़िल इबादत :2820; अहमद : 6/115) पस मुबीन से मुराद खुली सरीह साफ़ ज़ाहिर है और फ़तह से मुराद सुलह हुदेबिया है जिसकी वजह से बड़ी ख़ैरो बरकत हासिल हुई, लोगों में अम्नो अमान हुआ, मोमिन काफ़िर में बोलचाल शुरू हो गयी। इल्म और ईमान के फैलाने का मौक़ा मिला। आपके अगले पिछले गुनाहों की माफ़ी यह आपका ख़ास्सा है जिसमें कोई और आपका शरीक नहीं। हाँ! कुछ आमाल के सवाब में यह अल्फ़ाज़ औरों के लिए भी आए हैं। इसमें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) की बहुत बड़ी शराफ़त व अज़्मत है, आप अपने तमाम कामों में भलाई, इस्तिक़ामत और अल्लाह की फ़र्मांबरदारी पर मुस्तक़ीम थे ऐसे कि अव्वलीन व आख़िरीन में से कोई भी ऐसा न था। आप तमाम इंसानों में सबसे ज़्यादा अकमल इंसान और दुनिया व आख़िरत में कुल औलादे आदम के सरदार और रहबर थे, और चूँकि हुज़ूर (ﷺ) सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के फ़र्मांबरदार और सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला के अहकाम का लिहाज़ करने वाले थे इसीलिए जब आपकी ऊँटनी आपको लेकर बैठ गई तो आपने फ़र्माया, इसे हाथियों के रोकने वाले ने रोक लिया है उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है आज यह कुफ़्फ़ार मुझसे जो माँगेंगे दूँगा बशर्तेकि अल्लाह तआला की हुर्मत की हतक न हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल जिहादि वल मुसालिहति मअ अहलिल हर्ब : 2731, 2732) पस जब आपने अल्लाह तआला की मान ली सुलह को क़बूल कर लिया तो अल्लाह अज़्ज़ु व जल्ल ने फ़तह की सूरत उतारी और दुनिया और आख़िरत में अपनी नेअमतें आप

पर पूरी कीं और शरऐ अज़ीम और एक मजबूत दीन की तरफ़ आपकी रहबरी की और आपके ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ की वजह से अल्लाह ने आपको बुलंद व बाला किया, आपकी तवाज़ोअ, फ़िरोतनी, आजिज़ी और इंकिसारी के बदले आपको इज़्ज़त व जाह मर्तबा व मंसब अता किया, आपके दुश्मनों पर आपको ग़ल्बा दिया, चुनाँचे ख़ुद आपका फ़र्मान है बन्दा दरगुज़र करने से इज़्ज़त में बढ़ जाता है और आजिज़ी और इंकिसारी करने से बुलंदी और आली रुत्बा हासिल कर लेता है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब इस्तिहबाबुल अफ़्व वत्तवाज़ोअ : 2588; तिर्मिज़ी : 2029; अहमद : 2/235; इब्ने हिब्बान : 3248) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का क़ौल है कि "तूने किसी को जिसने तेरे बारे में अल्लाह की नाफ़र्मानी की हो ऐसी सज़ा नहीं दी कि तू उसके बारे में अल्लाह तआला की इताअत करे।"

***

هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٥﴾ وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ
وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۗنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ
السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿٧﴾

तर्जुमा : "वही है जिसने मुसलमानों के दिलों में सुकून और इत्मिनान डाल दिया ताकि अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जाएँ। आसमानों और ज़मीन के कुल लश्कर अल्लाह ही के हैं और अल्लाह तआला दाना बाहिक्मत है। (4) अंजामकार यह है कि मुसलमान मर्दों औरतों को उन जन्नतों में ले जाए जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जहाँ वह हमेशा

रहेंगे और उनसे उनके गुनाह दूर कर दे, अल्लाह तआला के नज़दीक यह बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर लेना है। (5) ताकि मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिका औरतों को अज़ाब कर ले जो अल्लाह तआला के साथ बदगुमानियाँ रखने वाले हैं, दरअसल उन्हीं पर बुराई का फेरा है, अल्लाह उन पर नाराज़ हुआ और उन्हें लअनत की और उनके लिए दोज़ख़ तैयार की और बहुत बुरी लौटने की जगह है। (6) और अल्लाह ही के लिए हैं लश्कर आसमानों और ज़मीन के, और अल्लाह ग़ालिब और हिक्मत वाला है।" (7)

ईमान बढ़ता और घटता है (आ. 4 से 7) : सकीना के मअनी हैं इत्मिनान रहमत और वक़ार के। फ़र्मान है कि हुदेबिया वाले दिन जिन ईमान वाले सहाबा (रज़ि.) ने अल्लाह और उसके रसूल की बात मान ली अल्लाह ने उनके दिलों को मुत्मइन कर दिया और उनके ईमान और बढ़ गए। उससे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) वग़ैरह अइम्मा किराम ने इस्तिदलाल किया है कि दिलों में ईमान बढ़ता है और इसी तरह घटता भी है। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला के लश्करों की कमी नहीं वह अगर चाहता तो ख़ुद ही कुफ़्फ़ार को हलाक कर देता एक फ़रिश्ते को भेज देता तो वह उन सबको बेनिशान और बर्बाद कर देने के लिए बस था, लेकिन उसने अपनी हिक्मते बालिग़ा से ईमान वालों को जिहाद का हुक्म दिया जिसमें उसकी हुज्जत भी पूरी हो जाए और दलील भी सामने आ जाए, उसका कोई काम इल्मो हिक्मत से ख़ाली नहीं होता। उसमें एक मस्लिहत यह भी है कि ईमान वालों को अपनी बेहतरीन नेअमतें इस बहाने अता फ़र्माये। पहले यह रिवायत गुज़र चुकी है कि सहाबा (रज़ि.) ने जब हुज़ूर (ﷺ) को मुबारकबाद दी और पूछा कि हुज़ूर (ﷺ) हमारे लिए क्या है? तो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने यह आयत उतारी कि मोमिन मर्द व औरतें जन्नतों में जाएँगे जहाँ चप्पे चप्पे पर नहरें जारी हैं और जहाँ वह हमेशा हमेशा तक रहेंगे। (इसकी तख़रीज सूरह फ़तह आयत नम्बर 2 के तहत गुज़र चुकी है।) और इसलिए भी कि अल्लाह तआला उनके गुनाह और उनकी बुराइयाँ दूर और दफ़ा कर दे उन्हें उनकी बुराइयों की सज़ा न दे बल्कि माफ़ करदे दरगुज़र करे, बख़्श दे पर्दा डाल दे रहम करे और उनकी क़द्रदानी करे, दरअसल यही असल कामयाबी है, जैसे कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने फ़र्माया (فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ) (3/आले इमरान : 185) यानी जो जहन्नम से दूर कर दिया गया और जन्नत में पहुँचा दिया गया वह मुराद को पहुँच गया। फिर एक और वजह और ग़ायत बयान की जाती है कि इसलिए भी कि निफ़ाक़ और शिर्क करने वाले मर्द व औरत जो अल्लाह के अहकाम में बदगुमानी करते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) और अस्हाबे रसूल के साथ बुरे ख़्याल रखते हैं कि यह हैं ही कितने? आज नहीं तो कल इनका नामोनिशान मिटा दिया जाएगा, इस जंग में बच गए तो और किसी लड़ाई में तबाह हो जाएँगे। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि दरअसल इस बुराई का दायरा इन्हीं पर है इन पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब है, यह रहमते अल्लाह तआला से दूर हैं इनकी जगह जहन्नम है और वह बदतरीन ठिकाना है। दोबारा अपनी कुव्वत क़ुदरत और अपने बन्दों पर दुश्मनों से इंतिक़ाम लेने की ताक़त को ज़ाहिर फ़र्माता है कि आसमानों और ज़मीनों के लश्कर सब अल्लाह तआला ही के हैं और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अज़ीज़ो करीम है।

إِنَّآ أَرْسَلْنَٰكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوا۟ بِٱللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُعَزِّرُوهُ
وَتُوَقِّرُوهُ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ
ٱللَّهَ يَدُ ٱللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَن نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنكُثُ عَلَىٰ نَفْسِهِۦ ۖ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا
عَٰهَدَ عَلَيْهُ ٱللَّهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन हमने तुझे इज़्हारे हक़ करने वाला और ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (8) ताकि ऐ मसुलमानों! तुम अल्लाह तआला और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका अदब करो, और अल्लाह की पाकी बयान करो सुबह और शाम। (9) जो लोग कि तुझसे बेअ़त करते हैं वह यक़ीनन अल्लाह ही से बेअ़त करते हैं, उनके हाथों पर अल्लाह तआला का हाथ है। फिर जो शख़्स वादाख़िलाफ़ी करे वह अपने नफ़्स पर ही अहदशिकनी करता है और जो शख़्स इस इक़रार को पूरा करे जो उसने अल्लाह तआला के साथ किया है तो उसे अन्क़रीब अल्लाह तआला बहुत बड़ा अज्र देगा।'' (10)

सुलह हुदेबिया का वाक़िया अहादीस की रोशनी में (आ. 8 से 10) : अल्लाह तआला अपने नबी को फ़र्माता है हमने तुम्हें अपनी मख़्लूक़ पर गवाह बनाकर, मोमिनों को ख़ुशख़बरियाँ सुनाने वाला बनाकर, काफ़िरों को डराने वाला बनाकर भेजा है। इस आयत की पूरी तफ़्सीर सूरह अहज़ाब में गुज़र चुकी है ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके नबी पर ईमान लाओ उसकी अ़ज़्मत व एहतिराम करो, बुजुर्गी और पाकीज़गी को तस्लीम करो, और उसके लिए कि तुम अल्लाह तआला की सुबह व शाम तस्बीह करो। फिर अल्लाह अपने नबी की ता'ज़ीम व तक्रीम बयान करता है कि जो लोग तुझसे बेअ़त करते हैं वह दरअसल ख़ुद अल्लाह तआला से ही बेअ़त करते हैं। इर्शाद है (مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ) (4/निसाअ : 80) यानी जिसने रसूल (ﷺ) की इताअ़त की उसने अल्लाह तआला का कहा माना। अल्लाह का हाथ उनके हाथों पर है, यानी वह उनके साथ है उनकी बातें सुनता है उनका मकान देखता है उनके ज़ाहिर व बातिन को जानता है पस दरअसल रसूलुल्लाह (ﷺ) के वास्ते से उनसे बेअ़त लेने वाला अल्लाह तआला ही है, जैसे फ़र्माया (اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى) (مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ) (9/तौबा : 111) यानी अल्लाह तआला ने ईमान वालों से उनकी जानें और उन के माल ख़रीद लिये हैं और उनके बदले में जन्नत उन्हें दे दी है। और राहे इलाही में जिहाद करते हैं, मरते हैं और मारते हैं। अल्लाह तआला का यह सच्चा वादा तौरात व इंजील में भी मौजूद है और इस क़ुरआन में भी, समझ लो कि अल्लाह से ज़्यादा सच्चे वादे वाला कौन होगा पस तुम्हें इस ख़रीदो फ़रोख़्त पर ख़ुश होना चाहिए दरअसल

सच्ची कामयाबी यही है। इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जिसने राहे इलाही में तलवार तोल ली उसने अल्लाह से बेअ़त कर ली।" (वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में फ़ज़्ल बिन यह्‌या अंबारी मज्हूल रावी है।) और हदीस में है हज्रे अस्वद के बारे में हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, "उसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन खड़ा करेगा उसकी दो आँखें होंगी जिनसे देखेगा और ज़ुबान होगी जिससे बोलेगा और जिसने उसे हक़ के साथ बोसा दिया है उसकी गवाही देगा उसे बोसा देने वाला दरअस़ल अल्लाह तआ़ला से बेअ़त करने वाला है। फिर आपने इसी आयत की तिलावत की।" (वसनदुहू हसन) फिर फ़र्माता है जो बेअ़त के बाद अहद शिकनी करे उसका वबाल ख़ुद उसी पर होगा अल्लाह का वह कुछ न बिगाड़ेगा और जो अपनी बेअ़त को निभा जाये वह बड़ा सवाब पाएगा। यहाँ जिस बेअ़त का ज़िक्र है वह बेअ़ते रिज़्वान है जो एक बबूल के दरख़्त तले हुदेबिया के मैदान में हुई थी, उस दिन बेअ़त करने वाले सहाबा (रज़ि.) की तादाद तेरह सौ चौदह सौ या पन्द्रह सौ थीं, ठीक यह है कि चौदह सौ थी। इस वाक़िया की हदीसें मुलाहिज़ा हों। बुख़ारी शरीफ़ में है "हम उस दिन चौदह सौ थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़तह बाब (इज़ युबायिऊनका तहतश्शजरा) : 4840; सहीह मुस्लिम : 1856; अहमद : 3/396) बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि "आपने उस पानी में हाथ रखा पस आपकी उँगलियों के बीच से पानी की सोतें (धारें) उबलने लगीं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अश्रिबा, बाब शुर्बुल बरकति वल माइल मुबारक : 5639; सहीह मुस्लिम : 1856) यह हदीस मुख़्तसर है इस हदीस से जिसमें है कि "सहाबा सख़्त प्यासे हुए पानी था नहीं, हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें अपने तरकश में से एक तीर निकालकर दिया उन्होंने जाकर हुदेबिया के कूएँ में उसे गाड़ दिया। अब तो पानी जोश के साथ उबलने लगा यहाँ तक कि सबको काफ़ी हो गया। हज़रत जाबिर (रज़ि.) से पूछा गया कि उस दिन तुम कितने थे? फ़र्माया चौदह सौ लेकिन अगर एक लाख भी होते तो पानी इस क़द्र था कि सबको काफ़ी हो जाता।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4152) बुख़ारी की और रिवायत में है कि पन्द्रह सौ थे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4153; सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब इस्तिह्‌बाबु मुबायअ़ तिल इमामिल जैश इन्दि इरादतिल क़िताल : 1856) हज़रत जाबिर (रज़ि.) से एक रिवायत में पन्द्रह सौ भी मरवी है, इमाम बैहक़ी (रह.) फ़र्माते हैं फ़िल्वाक़ेअ़ थे तो पन्द्रह सौ और यही हज़रत जाबिर (रज़ि.) का पहला क़ौल था फिर आपको कुछ वहम सा हो गया और चौदह सौ कहने लगे, इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि सवा पन्द्रह सौ थे लेकिन आपसे मशहूर रिवायत चौदह सौ की है अक्सर रावियों और अक्सर सीरत नवेस बुज़ुर्गों का यही क़ौल है कि चौदह सौ थे। एक रिवायत में है अस्हाबे शजर चौदह सौ थे और उस दिन आठवाँ हिस्सा मुहाजिरीन का मुसलमान हुआ। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4155; सहीह मुस्लिम : 1857; दलाइलुन्नबुव्वा : 4/98) सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि हुदेबिया वाले साल रसूल (ﷺ) अपने सात सौ सहाबा को लेकर ज़ियारते बैतुल्लाह के इरादे से मदीना मुनव्वरा से चले। क़ुर्बानी के सत्तर (70) ऊँट भी आपके साथ थे हर दस अश्ख़ास की तरफ़ से एक ऊँट। हाँ! हज़रत जाबिर (रज़ि.) से रिवायत है कि आपके साथ उस दिन चौदह सौ थे। इब्ने इस्हाक़ इसी तरह कहते हैं और यह उनके वहम में शुमार है। बुख़ारी व मुस्लिम में जो महफ़ूज़ है वह यह है कि एक हज़ार कई सौ थे, जैसे अभी आ रहा है, इंशाअल्लाह तआ़ला।

उस बेअ़त का सबब सीरते मुहम्मद बिन इस्हाक़ में है कि ''फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बुलवाया कि आपको मक्का भेजकर क़ुरैश के सरदारों से कहलवाएँ कि हुज़ूर लड़ाई भिड़ाई के इरादे से नहीं आए बल्कि आप बैतुलाह के उ़मरे के लिए आये हैं, लेकिन ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे ख़्याल से तो इस काम के लिए आप (ह़ज़रत) उ़स्मान को भेजें क्योंकि मक्का में मेरे ख़ानदान में से कोई नहीं यानी बनू अ़दी बिन कअ़ब का क़बीला नहीं जो मेरी ह़िमायत करे आप जानते हैं कि क़ुरैश से मैंने कितनी कुछ और क्या कुछ दुश्मनी की है और मुझसे वह किस क़द्र ख़ार खाये हुए हैं तो मुझे तो वह ज़िन्दा भी नहीं छोड़ेंगे, चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने इस राय को पसंद करके जनाब उ़स्मान ज़ुन्नूरैन (रज़ि.) को अबू सुफ़्यान और सरदाराने क़ुरैश के पास भेजा। आप जा ही रहे थे कि रास्ते में या मक्का में दाख़िल होते ही अबान बिन सईद बिन आ़स मिल गए और उसने आपको अपने आगे अपनी सवारी पर बिठा लिया और अपनी अमान में उन्हें अपने साथ ले गए। आप क़ुरैश के बड़ों के पास गए और हुज़ूर (ﷺ) का पैग़ाम पहुँचा दिया। उन्होंने कहा कि आप अगर बैतुल्लाह का त़वाफ़ करना चाहें तो कर लीजिए। आपने जवाब दिया कि यह नामुम्किन है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से पहले मैं त़वाफ़ कर लूँ। अब उन लोगों ने जनाब ज़ुन्नूरैन को रोक लिया। इधर लश्करे इस्लाम में यह ख़बर मशहूर हो गई कि ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) को शहीद कर डाला गया। उस वह़शतनाक ख़बर ने मुसलमानों को और ख़ुद अल्लाह के रसूल (ﷺ) को बड़ा स़दमा पहुँचाया और आपने फ़र्माया कि अब तो हम बग़ैर फ़ैसला किये यहाँ से नहीं हटेंगे। (सीरते इब्ने हिशाम : 3/241; यह रिवायत सनदन मुत्तस़िल न होने की वजह से ज़ईफ़ है।) चुनाँचे आपने स़ह़ाबा (रज़ि.) को बुलवाया और उनसे बेअ़त ली, एक दरख़्त तले यह बेअ़ते रिज़्वान हुई। लोग कहते हैं यह बेअ़त मौत पर ली थी यानी लड़ते लड़ते मर जाएँगे, लेकिन ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) का बयान है कि मौत पर बेअ़त नहीं ली थी बल्कि इस इक़रार पर कि हम लड़ाई से भागेंगे नहीं। जितने मुसलमान स़ह़ाबा उस मैदान में थे सबने आपसे बरज़ामंदी बेअ़त की सिवा जद बिन क़ैस के जो क़बीला बनू सलमा का एक शख़्स़ था, यह अपनी ऊँटनी की आड़ में छुप गया। फिर हुज़ूर (ﷺ) को और स़ह़ाबा को मालूम हो गया कि ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की शहादत की अफ़वाह ग़लत़ थी। (सीरते इब्ने हिशाम : 3/241; यह रिवायत सनदन मुत्तस़िल न होने की वजह से ज़ईफ़ है।) उसके बाद क़ुरैश ने सुहैल बिन अ़म्र हुवैत़िब इब्ने अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा और मुकरिज़ बिन ह़फ़्स़ को आपके पास भेजा यह लोग अभी यहीं थे जो कुछ मुसलमानों और कुछ मुश्रिकों में कुछ तेज़ कलामी हो गई, नौबत यहाँ तक पहुँची कि संगबारी और तीरबारी भी हुई और दोनों त़रफ़ के लोग खींच गए इधर उन लोगों ने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) वग़ैरह को रोक लिया इधर यह लोग रुक गए और रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुनादी ने निदा कर दी कि रूहुल क़ुदुस अल्लाह के रसूल के पास आए और बेअ़त का हुक्म दे गए आओ! अल्लाह का नाम लेकर बेअ़त कर जाओ। अब क्या था मुसलमान बेताबाना दौड़े हुए ह़ाज़िरे हुज़ूर हुए आप उस वक़्त दरख़्त तले थे सबने बेअ़त की इस बात पर कि वह हर्गिज़ हर्गिज़ किसी सूरत में मैदान से मुँह मोड़ने का नाम न लेंगे। इससे मुश्रिकीन काँप उठे और जितने मुसलमान उनके पास थे सबको छोड़ दिया और सुलह़ की दरख़्वास्त करने लगे।

बैहक़ी में है कि ''बेअ़त के वक़्त अल्लाह के रसूल ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! उ़स्मान तेरे रसूल के काम

को गए हुए हैं। पस आपने ख़ुद अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर रख गोया हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) की तरफ़ से बेअ़त की। पस हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) का हाथ उनके अपने हाथ से बहुत अफ़ज़ल था। उस बेअ़त में सबसे पहल करने वाले हज़रत अबू सिनान असदी (रज़ि.) थे, उन्होंने सबसे आगे बढ़कर फ़र्माया, हुज़ूर (ﷺ)! हाथ फैलाइए ताकि मैं बेअ़त कर लूँ। आपने फ़र्माया किस बात पर बेअ़त करते हो? जवाब दिया जो आपके दिल में हो उस पर। (दलाइलुन्नबुव्वता लिल्बैहक़ी : 4/137; वसनदुहू मुर्सल अय ज़ईफ़ुन) आपके वालिद का नाम वहब था।' सह़ीह़ बुख़ारी में हज़रत नाफ़ेअ़ से मरवी है कि ''लोग कहते हैं हज़रत उ़मर (रज़ि.) के लड़के अ़ब्दुल्लाह ने अपने वालिद से पहले इस्लाम क़बूल किया। दरअसल वाक़िया यूँ नहीं बात यह है कि हुदेबिया वाले साल हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने साह़बज़ादे हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को एक अंसारी के पास भेजा कि जाकर अपना घोड़ा ले आओ। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों से बेअ़त ले रहे थे। हज़रत उ़मर (रज़ि.) को इसका इल्म न था यह अपने तौर पर पोशीदगी से लड़ाई की तैयारियाँ कर रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने देखा कि हुज़ूर (ﷺ) के हाथ पर बेअ़त हो रही है तो यह तो बेअ़त से मुशर्रफ़ हुए, फिर घोड़ा लेने गए और घोड़ा लाकर हज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास आये और कहा कि हुज़ूर (ﷺ) बेअ़त ले रहे हैं, अब जनाब फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) आए और हुज़ूर (ﷺ) के हाथ पर बेअ़त की। इस बिना पर लोग कहते हैं कि बेटे का इस्लाम बाप से पहले का है।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4186) बुख़ारी की दूसरी रिवायत में है कि लोग अलग अलग दरख़्तों तले आराम कर रहे थे, ''जो हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने देखा कि हर एक की नज़रें हुज़ूर (ﷺ) पर हैं और लोग आपको घेरे हुए हैं, हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को फ़र्माया जाओ देखो तो क्या हो रहा है? यह आये देखा कि बेअ़त हो रही है तो बेअ़त कर ली फिर जाकर उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) को ख़बर दी। चुनाँचे आप भी फ़ौरन आये और बेअ़त से मुशर्रफ़ हुए। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4187) हज़रत जाबिर (रज़ि.) का बयान है कि जब हमने बेअ़त की उस वक़्त हज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) आपका हाथ थामे हुए थे और आप एक बबूल के दरख़्त तले थे...।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब इस्तिह़बाबु मुबायिअ़तुल इमामुल जैश ... : 1856) हज़रत मअ़क़िल बिन यसार (रज़ि.) का बयान है कि ''उस मौक़ेपर दरख़्त की एक झुकी हुई शाख़ को आपके सिर से ऊपर को उठाकर मैं थामे हुए था, हमने आपसे मौत पर बेअ़त नहीं की बल्कि न भागने पर।'' (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब इस्तिह़बाबु मुबायिअ़तिल इमामिल जैश ... : 1858) हज़रत सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''हमने मरने पर बेअ़त की थी।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल्बेअ़तु फ़िल्ह़र्बि अ़ला अन ला युफ़रउ : 2960; सह़ीह़ मुस्लिम : 1860) आप फ़र्माते हैं एक बार बेअ़त करके मैं हटकर एक तरफ़ को खड़ा हो गया तो आपने मुझसे फ़र्माया सलमा! तुम बेअ़त नहीं करते? मैंने कहा, हुज़ूर (ﷺ)! मैंने तो बेअ़त कर ली। आपने फ़र्माया, ख़ैर आओ बेअ़त करो। चुनाँचे मैंने क़रीब जाकर बेअ़त की।'' (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अह़काम, बाब मन बायअ़ा मर्रतैन : 7208) हुदेबिया का वह कुआँ जिसका ज़िक्र ऊपर गुज़रा सिर्फ़ इतने पानी का था कि पचास बकरियाँ भी आसूदा न हो सकीं। आप फ़र्माते हैं कि ''दोबारा बेअ़त कर लेने के बाद आपने जो देखा तो मालूम हुआ कि मैं बे सरो सामान हूँ तो

आपने मुझे एक ढाल इनायत की फिर लोगों से बेअ़त लेनी शुरू कर दी, फिर आख़िरी बार मेरी तरफ़ देखकर फ़र्माया सलमा! तुम बेअ़त नहीं करते? मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! पहली बार जिन लोगों ने बेअ़त की मैंने उनके साथ ही बेअ़त की थी फिर बीच में दोबारा बेअ़त कर चुका हूँ। आपने फ़र्माया अच्छा फिर सही। चुनाँचे उस आख़िरी जमाअ़त के साथ भी मैंने बेअ़त की। आपने फिर मेरी तरफ़ देखकर फ़र्माया सलमा तुम्हें हमने जो ढाल दी थी वह कहाँ हैं? मैंने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हज़रत आ़मिर से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैंने देखा कि उसके पास दुश्मन का वार रोकने को कोई चीज़ नहीं मैंने वह ढाल उसे दे दी, तो आप हँसे और फ़र्माया तुम भी उस शख़्स की तरह हो जिसने अल्लाह से दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे पास किसी ऐसे को भेज दे जो मुझे मेरी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो। फिर अहले मक्का ने सुलह की तहरीक की आमद व रफ़्त हुई और सुलह हो गई। मैं हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) का ख़ादिम था उनके घोड़े की और उनकी ख़िदमत किया करता था। वह मुझे खाने को दे देते थे मैं तो अपना घर बार बाल बच्चे मालो दौलत सब राहे इलाही में छोड़कर हिज्रत करके चला आया था।

जब सुलह हो चुकी इधर के लोग उधर उधर के इधर आने लगे तो मैं एक दरख़्त तले जाकर काँटे वग़ैरह हटाकर उसकी जड़ से लगकर सो गया, अचानक मुश्रिकीने मक्का में से चार शख़्स वहीं आये और हुज़ूर (ﷺ) की शान में कुछ गुस्ताख़ाना कलिमात से आपस में बातें करने लगे मुझे बुरा मालूम हुआ मैं वहाँ से उठकर दूसरे दरख़्त तले चला गया, उन लोगों ने अपने हथियार उतारे दरख़्त पर लटकाकर वहीं लेट गए, थोड़ी देर गुज़री होगी जो मैंने सुना कि वादी के नीचे के हिस्से से कोई मुनादी कर रहा है कि ऐ मुहाजिर भाईयों! (हज़रत) जुहैम क़त्ल कर दिये गए, मैंने झट से तलवार तानी और उसी दरख़्त तले गया जहाँ वह चारों सोये हुए थे, जाते ही पहले तो उनके हथियार क़ब्ज़े में किये और अपने एक हाथ में उन्हें दबाकर दूसरे हाथ से तलवार तोलकर उनसे कहा, सुनो उस रब की क़सम! जिसने हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को इज़्ज़त दी है तुममें से जिसने भी सिर उठाया मैं उसका सर क़लम कर दूँगा। जब वह उसे मान चुके मैंने कहा उठो और मेरे आगे आगे चलो चुनाँचे उन चारों को लेकर मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, इधर मेरे चचा (हज़रत) आ़मिर (रज़ि.) भी मुक्रिज़ नामी इब्लात के एक मुश्रिक को गिरफ़्तार करके लाए और भी इसी तरह के सत्तर मुश्रिकीन हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर किये गए थे। आपने उनकी तरफ़ देखा और फ़र्माया, इन्हें छोड़ दो, बुराई की इब्तिदा अभी इन्हीं के सिर है और फिर उसकी तकरार के ज़िम्मेदार भी यही रहें चुनाँचे सबको रिहा कर दिया गया। इसी का बयान आयत (وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ) (48/फ़तह : 24) में है।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब ग़ज़्वा ज़ी क़र्द वग़ैरुहा : 1807)

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) के वालिद भी उस मौक़े पर हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे। आपका बयान है कि ''अगले साल जब हम हज्ज को गए तो उस दरख़्त की जगह हम पर पोशीदा रही हम न मालूम कर सके कि जिस जगह हुज़ूर (ﷺ) के हाथ पर हमने बेअ़त की थी, अब अगर तुम पर यह पोशीदीदगी खुल गई हो तो तुम जानो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदैबिया : 4164; सहीह मुस्लिम :

1859) एक रिवायत में हज़रत जाबिर (रज़ि.) से मरवी है कि "उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया आज ज़मीन पर जितने हैं उन सबमें अफ़ज़ल तुम लोग हो। आप फ़र्माते हैं अगर मेरी आँखें होतीं तो मैं तुम्हें उस दरख़्त की जगह दिखा देता।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4154; सहीह मुस्लिम : 1856; दलाइलुन् नबुव्वा : 4/197) हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं उस जगह की तअयीन में बड़ा इख़्तिलाफ़ है। "हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि जिन लोगों ने उस बेअ़त में शिर्कत की है उनमें से कोई भी जहन्नम में नहीं जाएगा।" (अहमद : 3/350; अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना बाब फ़िल्ख़ुलफ़ा : 4653; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3860) और रिवायत में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया जिन लोगों ने उस दरख़्त तले मेरे हाथ पर बेअ़त की है सब जन्नत में रह जाएँगे, मगर लाल ऊँट वाला हम जल्दी से दौड़े देखा तो एक शख़्स अपने खोये हुए ऊँट की तलाश में था हमने कहा चल बेअ़त कर। उसने जवाब दिया कि बेअ़त से ज़्यादा नफ़ा तो उसमें है कि मैं अपना गुमशुदा ऊँट पा लूँ।" (इब्ने अबी हातिम, वसनदुहू ज़ईफ़ुन; व फ़ीहि एलल मिन्हा जुअफ़ि ख़द्दाश) मुस्नद अहमद में है "आपने फ़र्माया कौन है जो सनीयतुल मरार पर चढ़ जाए उससे वह दूर हो जाएगा जो बनी इस्राईल से दूर हुआ। पस सबसे पहले क़बीला बनी ख़ज़रज के एक सहाबी उस पर चढ़ गए। फिर तो और लोग भी पहुँच गए, फिर आपने फ़र्माया तुम सब बख़्शे जाओगे मगर लाल ऊँट वाला। हम उसके पास आए और उससे कहा तेरे लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस्तिग़फ़ार तलब करें तो उसने जवाब दिया कि अल्लाह की क़सम! मुझे मेरा ऊँट मिल जाए तो मैं ज़्यादा ख़ुश होऊँगा। बनिस्बत इसके कि तुम्हारे साहब मेरे लिए इस्तिग़फ़ार करें, यह शख़्स गुमशुदा ऊँट ढूँढ रहा था। (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन व अहकामुहुम : 2780) हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने जब हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबानी यह सुना कि उस बेअ़त वाले दोज़ख़ में दाख़िल नहीं होंगे तो कहाँ होंगे। आपने उन्हें रोक दिया तो माई साहिबा ने आयत (وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا) (19/मरयम : 71) पढ़ी यानी तुममें से हर शख़्स को उस पर वारिद होना है हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया उसके बाद ही फ़र्माने बारी तआला है (ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ) (19/मरयम : 72) यानी फिर हम तक़्वा वालों को नजात देंगे और ज़ालिमों को घुटनों के बल उसमें गिरा देंगे।" (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब मिन फ़ज़ाइले अस्हाबिश्शजरा : 2496) हज़रत हातिब बिन अबू बल्तआ (रज़ि.) के ग़ुलाम हज़रत हातिब की शिकायत लेकर हुज़ूर (ﷺ) के पास आए और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हातिब ज़रूर जहन्नम में जाएँगे। आपने फ़र्माया, "तू झूठा है वह जहन्नमी नहीं वह बद्र में और हुदेबिया में मौजूद रहे हैं।" (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब फ़ज़ाइले हातिब बिन अबी बल्तआ व अहले बद्र रज़ि. : 2495) उन बुज़ुर्गों की सना बयान हो रही है कि यह अल्लाह से बेअ़त कर रहे हैं उनके हाथों पर अल्लाह का हाथ है, उस बेअ़त को तोड़ने वाला अपना ही नुक़्सान करने वाला है और इसे पूरा करने वाला बड़े अज्र का मुस्तहिक़ है जैसे फ़र्माया (لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ) (48/फ़तह : 18) यानी अल्लाह तआला ईमान वालों से राज़ी हो गया जबकि उन्होंने दरख़्त तले तुझसे बेअ़त की उनके दिली इरादों को उसने जान लिया फिर उन पर दिल जमई नाज़िल की और क़रीब की फ़तह से उन्हें सरफ़राज़ किया।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ
لَنَا يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللَّهِ
شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا
﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنتُمْ أَن لَّن يَنقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزُيِّنَ
ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ وَكُنتُمْ قَوْمًا بُورًا ﴿١٢﴾ وَمَن لَّمْ يُؤْمِن
بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ﴿١٣﴾ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٤﴾

तर्जुमा : ''जो बदवी लोग पीछे छोड़ दिये गए थे वह अब तुझसे कहेंगे कि हम अपने मालों और बाल बच्चों में लगे रह गए पस आप हमारे लिए मग़्फ़िरत तलब कीजिए। यह लोग अपनी ज़ुबानों से वह कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं है। तू जवाब दे कि तुम्हारे लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी चीज़ का इख़्तियार कौन रखता है? अगर वह तुम्हें नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो या तुम्हें कोई नफ़ा देना चाहे तो, बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो उससे अल्लाह तआला ख़ूब बाख़बर है। (11) नहीं! बल्कि तुमने तो यह गुमान कर रखा था कि पैग़म्बर और मुसलमानों का अपने घरों की तरफ़ लौट आना क़त्अन नामुम्किन है और यही ख़याल तुम्हारे दिलों में रच गया था और तुमने बुरा गुमान कर रखा था। दरअस़ल तुम लोग हो भी हलाकत वाले। (12) जो शख़्स अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान न लाए तो हमने भी ऐसे काफ़िरों के लिए दहकती हुई आग तैयार कर रखी है। (13) ज़मीन व आसमान की बादशाहत अल्लाह ही के लिए है। जिसे वह चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अ़ज़ाब करे। अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है।'' (14)

मुनाफ़िक़ों के हीले बहाने (आ. 11 से 14) : जो आराब लोग जिहाद से जी चुराकर रसूलुल्लाह (ﷺ) का साथ छोड़कर मौत के डर के मारे घर से न निकले थे और जानते थे कि कुफ़्र की ज़बरदस्त ताक़त हमें चकना चूर कर देगी और जो इतनी बड़ी जमाअ़त से टक्कर लेने गए हैं यह तबाह हो जाएँगे, बाल बच्चों से तरस

जाएँगे, वहीं काट डाले जाएँगे, जब उन्होंने देखा कि अल्लाह के रसूल अपनी पाकबाज़ मुजाहिदीन की जमाअत के साथ हँसी ख़ुशी वापिस आ रहे हैं तो अपने दिल में मसोदे गाँठने लगे कि अपनी मशीख़त बनी रहे। यहाँ अल्लाह तआला ने अपने नबी को पहले ही से ख़बरदार कर दिया कि यह बदबातिन लोग आकर अपने ज़मीर के ख़िलाफ़ अपनी ज़ुबान को हरकत देंगे और उ़ज़्र पेश करेंगे कि हुज़ूर (ﷺ)! बाल बच्चों और काम काज से फ़ुर्सत न मिली। वरना हम तो हर तरह ताबेअ फ़र्मान हैं, हमारी जान तक हाज़िर है। अपनी मज़ीद ईमानदारी के इज़्हार के लिए यह भी कह देंगे कि हज़रत! आप हमारे लिए इस्तिग़्फ़ार कर दीजिए। तो आप इन्हें जवाब दे देना कि तुम्हारा मामला अल्लाह तआला के सुपुर्द है वह दिलों के भेद से वाक़िफ़ है अगर वह तुम्हें नुक़्सान पहुँचाए तो कौन है जो उसे दूर कर सके? और अगर वह तुम्हें नफ़ा देना चाहे तो कौन है जो उसे रोक सके? तसन्नोअ़ और बनावट से तुम्हारी ईमानदारी और निफ़ाक़ से वह बख़ूबी आगाह है एक एक अ़मल से बाख़बर है उस पर कोई चीज़ छुपी हुई नहीं दरअसल तुम्हारा पीछे रह जाना किसी उ़ज़्र के बाइस न था बल्कि बतौरे नाफ़र्मानी के ही था। साफ़ तौर पर तुम्हारा निफ़ाक़ उसका बाइस था तुम्हारे दिल ईमान से ख़ाली हैं अल्लाह तआला पर भरोसा नहीं, रसूल की इताअत में भलाई का यक़ीन नहीं इस वजह से तुम्हारी जानें तुम पर गिराँ हैं, तुम अपनी निस्बत तो क्या बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और सहाबा की निस्बत भी यही ख़्याल करते थे कि यह क़त्ल कर दिये जाएँगे उनकी भूसी उड़ जाएगी उनमें से एक भी न बच सकेगा जो इनकी ख़बर तो लाकर दे, उन बदख़्यालियों ने तुम्हें नामर्द बना रखा था, तुम दरअसल बर्बाद शुदनी लोग हो। कहा गया है कि बूरन लुग़ते ओमान है। जो शख़्स अपना अ़मल ख़ालिस न करे अपना अक़ीदा मज़बूत न बना ले उसे अल्लाह तआला दोज़ख़ की आग में अ़ज़ाब करेगा, गो दुनिया में वह बख़िलाफ़े अपने बातिन के ज़ाहिर करते रहे।

फिर अल्लाह तबारक व तआला अपने मुल्क, अपनी शहनशाही और अपने इख़्तियारात का बयान फ़र्माता है कि मालिक व मुतसर्रिफ़ वही है बख़्शिश और अ़ज़ाब पर क़ादिर वह है, लेकिन है ग़फ़ूरुर रहीम जो भी उसकी तरफ़ झुके वह उसकी तरफ़ माइल हो जाता है और जो उसका दरवाज़ा खटखटाए वह उसके लिए अपना दरवाज़ा खोल देता है ख़्वाह कितने ही गुनाह किये हों, जब तौबा करे अल्लाह क़बूल कर लेता है और गुनाह बख़्श देता है बल्कि रहम और मेहरबानी से पेश आता है।

***

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ۗ قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ۗ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٥

तर्जुमा : ''जब तुम ग़नीमतें लेने जाने लगोगे तो झट से यह पीछे छोड़े हुए लोग कहने लगेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की इजाज़त दीजिए, चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम को बदल दें, तू कह दे कि अल्लाह तआला पहले ही फ़र्मा चुका है कि तुम हर्गिज़ हमारी पैरवी न करोगे, वह उसका जवाब देंगे नहीं! नहीं! बल्कि तुम हमसे हसद करते हो, असल बात यह है कि उनमें समझ बहुत ही कम है।'' (15)

ख़ैबर की ग़नीमत अहले हुदेबिया के लिए (आ. 15) : इर्शादे इलाही है कि जिन बदवी लोगों ने हुदेबिया में अल्लाह के रसूल का और सहाबा का साथ न दिया वह जब हुज़ूर को और उन सहाबा को ख़ैबर की फ़तह के मौक़े पर माले ग़नीमत समेटने के लिए जाते हुए देखेंगे तो आरज़ू करेंगे कि हमें भी अपने साथ ले लो। मुसीबत को देखकर तो पीछे हट गए राहत को देखकर शामिल होना चाहते हैं इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि इन्हें हर्गिज़ साथ न लेना, जब यह जंग से जी चुराएँ तो फिर ग़नीमत में हिस्सा क्यूँ लें? अल्लाह तआला ने ख़ैबर की ग़नीमतों का वादा हुदेबिया वालों से किया है न कि इनसे जो कठिन वक़्त खिंच जाएँ और आराम के वक़्त मिल जाएँ। इनकी चाहत है कि कलामे इलाही को बदल दें यानी अल्लाह तआला ने तो सिर्फ़ हुदेबिया की हाज़िरी वालों से वादा किया तो यह चाहते हैं कि बावजूद अपनी ग़ैर हाज़िरी के अल्लाह तआला के उस वादे में मिल जाएँ ताकि वह भी बदला हुआ साबित हो जाए। इब्ने ज़ेद कहते हैं मुराद इससे यह हुक्मे इलाही है (فَإِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ إِلَىٰ) (9/तौबा : 83) यानी ऐ नबी (ﷺ)! अगर तुम्हें अल्लाह तआला उनमें से किसी गिरोह की तरफ़ वापिस ले जाए और वह तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाज़त माँगें तो तुम उनसे कह देना कि तुम मेरे साथ हर्गिज़ न निकलो और मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से न लड़ो तुम वही हो कि पहली बार हमसे पीछे रह जाने में ही ख़ुश रहे पस अब हमेशा बैठे रहने वालों के साथ ही बैठे रहो। लेकिन इस क़ौल में नज़र है इसलिए कि यह आयत सूरह तौबा की है जो ग़ज़्वए तबूक के बारे में नाज़िल हुई है और ग़ज़्व-ए-तबूक हुदेबिया के बहुत बाद का है। इब्ने जुरैज (रह.) का क़ौल है कि मुराद इससे उन मुनाफ़िक़ों का मुसलमानों को भी अपने साथ मिलाकर जिहाद से बाज़ रखना है। फ़र्माता है इन्हें इनकी इस आरज़ू का जवाब दे कि तुम हमारे साथ चलना चाहो उससे पहले अल्लाह तआला यह वादा अहले हुदेबिया से कर चुका है इसलिए तुम हमारे साथ नहीं चल सकते। अब वह तअना देंगे कि अच्छा हमें मालूम हो गया कि तुम हमसे जलते हो नहीं चाहते कि ग़नीमत का हिस्सा तुम्हारे सिवा किसी और को मिले। अल्लाह तआला फ़र्माता है दरअसल यह इनकी नासमझी है और इसी एक पर क्या मौक़ूफ़ है यह लोग सरासर बेसमझ हैं।

***

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِيْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ
تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا
كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾ لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى
الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾

तर्जुमा : ''अगर तुम पीछे रहे हुए बदवियों (देहातियों) से कह दो कि बहुत जल्द तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ़ बुलाये जाओगे कि तुम उनसे लड़ो या वह मुसलमान हो जाएँ, पस अगर तुम इताअत करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें बहुत बेहतर बदला देगा। और अगर तुमने मुँह फेर लिया जैसाकि इससे पहले तुम मुँह फेर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा। (16) अँधे पर कोई हर्ज और न लंगड़े पर कोई हर्ज है और न बीमार पर कोई हर्ज है। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की फ़र्मांबरदारी करे उसे अल्लाह ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिसके दरख़्तों तले चश्मे जारी हैं और जो मुँह फेर ले उसे दर्दनाक सज़ा करेगा।'' (17)

सख़्त जंगजू क़ौम कौनसी है? (आ. 16, 17) : वह सख़्त लड़ाकू क़ौम जिनसे लड़ने की तरफ़ यह बुलाये जाएँगे कौनसी क़ौम है? इसमें कई क़ौल हैं एक तो यह कि उससे मुराद क़बीला हवाज़िन हैं। (तब्री : 22/220) दूसरे यह कि इससे मुराद क़बीला सक़ीफ़ है तीसरे यह कि इससे मुराद क़बीला बनू हनीफ़ है।(तब्री : 22/220) चौथे यह कि इससे मुराद अहले फ़ारस हैं। (तब्री : 22/220) पाँचवें यह कि इससे मुराद रूमी हैं, छटे यह कि इससे मुराद बुतपरस्त हैं। कुछ कहते हैं इससे मुराद कोई ख़ास क़बीला या गिरोह नहीं बल्कि मुत्लक़ जंगजू क़ौम मुराद है जो अभी तक मुक़ाबले में नहीं आई। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''इससे मुराद कुर्द लोग हैं।'' एक मरफ़ूअ हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''क़ियामत क़ायम न होगी जब तक कि तुम एक ऐसी क़ौम से न लड़ो जिनकी आँखें छोटी छोटी होंगी और नाक बैठी हुई होगी, उनके मुँह तह ब तह ढालों के होंगे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब क़ितालुल्लज़ीना यन्तइलून्नशशअर : 2929; सहीह मुस्लिम : 2912; अबूदाऊद : 4304; तिर्मिज़ी : 2215; इब्ने माजा : 4096; अहमद : 2/239; इब्ने हिब्बान : 6744) हज़रत सुफ़्यान (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद तुर्क हैं। एक हदीस में है कि ''तुम्हें एक क़ौम

से जिहाद करना पड़ेगा जिनकी जूतियाँ बालों दार होंगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ितन, बाब ला तक़ूमुस्साअतु हत्ता युमिर्र...) : 2912; इब्ने माजा : 4097) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं इससे मुराद कुर्द लोग हैं। फिर फ़र्माता है कि उनसे जिहाद क़िताल तुम पर मशरूअ कर दिया गया है और यह हुक्म बाक़ी रहेगा। रब्बे तआला उन पर तुम्हारी मदद करेगा या यह कि वह ख़ुब ब ख़ुद बग़ैर लड़े भिड़े दीने इस्लाम क़बूल कर लेंगे। फिर इर्शाद है अगर तुम मान लोगे और जिहाद के लिए उठ खड़े होओगे और हुक्म की बजाआवरी करोगे तो तुम्हें बहुत सारी नेकियाँ मिलेंगी और अगर तुमने वही किया जो हुदेबिया के मौक़े पर किया था यानी बुज़दिली से बैठे रहे जिहाद में शिर्कत न की अहकाम की ता'मील से जी चुराया तो तुम्हें अलमनाक अ़ज़ाब होगा। फिर जिहाद के छोड़ने के जो सही उ़ज़्र हैं उनका बयान हो रहा है पस दो उ़ज़्र तो वह बयान करे जो लाज़मी हैं, यानी अँधापन और लंगड़ापन और एक उ़ज़्र वह बयान किया जो आ़रज़ी है जैसे बीमारी कि चंद दिन रही फिर चली गई। पस यह भी अपनी बीमारी के ज़माने में मअ़ज़ूर हैं हाँ! तंदुरुस्त होने के बाद यह मअ़ज़ूर नहीं। फिर जिहाद की तर्ग़ीब देते हुए फ़र्माता है कि अल्लाह रसूल का फ़र्मांबरदार जन्नती है और जो जिहाद से बेरग़बती करे और दुनिया की त़रफ़ सरासर मुतवज्जह हो जाए मआश के पीछे मआद को भूल जाए उसकी सज़ा दुनिया मे ज़िल्लत और आख़िरत में दुख की मार है।

***

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿۱۸﴾ وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿۱۹﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन अल्लाह तआला मोमिनों से ख़ुश हो गया जबकि वह दरख़्त तले तुझसे बेअ़त कर रहे थे। उनके दिलों में जो था उसे उसने मालूम कर लिया और उन पर इत्मिनान नाज़िल किया और उन्हें क़रीब की फ़तह इनायत की। (18) और बहुत सी ग़नीमतें जिन्हें वह हासिल करेंगे, अल्लाह ग़ालिब है हिक्मत वाला।'' (19)

हुदेबिया में बबूल का मुबारक दरख़्त (आ. 18, 19) : पहले बयान हो चुका है कि यह बेअ़त करने वाले चौदह सौ की ता'दाद में थे और यह दरख़्त बबूल का था जो हुदेबिया के मैदान में था। सहीह बुख़ारी में है कि ''हज़रत अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) जब हज्ज को गए तो देखा कि कुछ लोग एक जगह नमाज़ अदा कर रहे हैं, पूछा कि क्या बात है? तो जवाब मिला कि यह वही दरख़्त है जहाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़ते रिज़्वान हुई

थी। हज़रत अब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने वापिस आकर यह क़िस्सा हज़रत सईद बिन मुसय्यिब (रह.) से बयान किया तो आपने फ़र्माया मेरे वालिद साहब भी उन बेअत करने वालों में थे उनका बयान है कि बेअत के दूसरे साल हम वहाँ गए लेकिन हम सबको भुला दिया गया वह दरख़्त हमें न मिला, फिर हज़रत सईद फ़र्माने लगे ताज्जुब है कि अस्हाबे रसूल ख़ुद बेअत करने वाले तो उस जगह को न पा सकें उन्हें मालूम न हो लेकिन तुम लोग जान लो! यानी तुम अस्हाबे रसूल से भी ज़्यादा जानने वाले हो।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा हुदेबिया : 4163) फिर फ़र्माता है उनकी दिली सदाक़त नियत वफ़ादारी और मानने की आदत को अल्लाह तआला ने मालूम कर लिया पस इनके दिलों में इत्मिनान डाल दिया और क़रीब की फ़तह इन्आम की। यह फ़तह वह सुलह है जो हुदेबिया के मैदान में हुई जिससे आम भलाई हासिल हुई और जिसके क़रीब ही ख़ैबर फ़तह हुआ फिर थोड़े ज़माने के बाद मक्का भी फ़तह हो गया। फिर और क़िले और इलाक़े भी फ़तह होते चले गए और वह इज़्ज़त व नुसरत फ़तह व ज़फ़र इक़बाल और रिफ़्अत हासिल हुई कि दुनिया दाँतों तले उँगलियाँ दबाकर हैरान व परेशान रह गई। इसीलिए फ़र्माया कि बहुत सी ग़नीमतें अता करेगा। सच्चे ग़ल्बे वाला और कामिल हिक्मत वाला अल्लाह तआला ही है। इब्ने अबी हातिम में है ''हम हुदेबिया के मैदान में दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के मुनादी ने निदा की कि लोगों! बेअत के लिए आगे बढ़ो, रूहुल क़ुदुस आ चुके हैं। हम भागे दौड़े हाज़िरे हुज़ूर हुए, आप उस वक़्त बबूल के दरख़्त तले थे, हमने आपके हाथ पर बेअत की, जिसका ज़िक्र आयत (लक़द रज़ियल्लाहु अन्ह...) में है। हज़रत उस्मान (रज़ि.) की तरफ़ से आपने अपना एक हाथ दूसरे पर रखकर ख़ुद ही बेअत कर ली, तो हमने कहा, उस्मान बड़े ख़ुशनसीब हैं कि हम तो यहाँ पड़े हुए हैं और वह बैतुल्लाह का तवाफ़ कर रहे होंगे। यह सुनकर जनाब रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलकुल नामुम्किन है कि उस्मान मुझसे पहले तवाफ़ कर ले गो कई साल तक वहाँ रहें।'' (इसकी सनद में मूसा बिन उबेदह रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/256; रक़म : 3636) लिहाज़ा यह रिवायत ज़ईफ़ है।)

***

وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِيَ النَّاسِ

عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ وَّاُخْرٰى لَمْ

تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ

قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ

اللّٰهِ الَّتِیْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِیْلًا ﴿۲۳﴾ وَهُوَ الَّذِیْ كَفَّ
اَیْدِیَهُمْ عَنْكُمْ وَاَیْدِیَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَیْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرًا ﴿۲۴﴾

तर्जुमा :"अल्लाह तआला ने तुमसे बहुत सारी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम हासिल करोगे पस यह तो तुम्हें जल्दी ही अता कर दी और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये ताकि मोमिनों के लिए यह एक नमूना हो जाए, और ताकि वह तुम्हें सीधी राह चलाए। (20) और तुम्हें और ग़नीमतें भी दे जिन पर अब तक तुमने क़ाबू नहीं पाया अल्लाह तआला ने उन्हें अपने क़ाबू में रखा है। और अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है। (21) और अगर तुमसे काफ़िर जंग करते तो अल्बत्ता पीठ दिखाकर भागते फिर न तो कोई कारसाज़ पाते न मददगार। (22) अल्लाह तआला के इस क़ायदे के मुताबिक़ जो पहले से चला आया है, तू कभी भी अल्लाह तआला के क़ायदे को बदलता हुआ न पाएगा। (23) वही है जिसने ख़ास मक्का में काफ़िरों के हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक लिया उसके बाद कि उसने तुम्हें उन पर फ़तहयाब कर दिया था, तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह तआला उसे देख रहा है।"(24)

मुआहिदा हुदेबिया की दफ़आत और काफ़िरों का इश्तिआल (आ. 20 से 24) : इन बहुत सी ग़नीमतों से मुराद आपके ज़माने और बाद की सब ग़नीमतें हैं जल्दी की ग़नीमत से मुराद ख़ैबर की ग़नीमत है और हुदेबिया की सुलह है। (तब्री : 22/230) उस अल्लाह तआला का एक एहसान यह भी है कि कुफ़्फ़ार के बुरे इरादों को उसने पूरा न होने दिया, न मक्के के काफ़िरों के, न उन मुनाफ़िक़ों के जो तुम्हारे पीछे मदीने में रहे थे, न यह तुम पर हमलावर हो सके न वह तुम्हारे बाल बच्चों को कुछ सता सके, यह इसलिए कि मुसलमान इससे इब्रत हासिल करें और जान लें कि असल हाफ़िज़ व नासिर अल्लाह ही है, पस दुश्मनों की कसरत अपनी क़िल्लत से हिम्मत न हार दें और यह भी यक़ीन कर लें कि हर काम के अंजाम का इल्म अल्लाह ही को है बन्दों के हक़ में बेहतरी यही है कि वह उसके फ़र्मान पर आमिल रहें और उसी में अपनी ख़ैरियत समझें गो वह फ़र्मान बज़ाहिर ख़िलाफ़े तबीयत हो, बहुत मुम्किन है कि तुम जिसे नापसंद रखते हो वही तुम्हारे हक़ में बेहतर हो, वह तुम्हें तुम्हारी हुक्म बजाआवरी और इत्तिबाअे रसूल और सच्ची जाँनिसारी के बदले राहे मुस्तक़ीम दिखायेगा और दीगर ग़नीमतें और फ़तह मंदियाँ भी अता करेगा जो तुम्हारे बस की नहीं, लेकिन अल्लाह तआला ख़ुद तुम्हारी मदद करेगा और उन मुश्किलात को तुम पर आसान कर देगा सब चीज़ें अल्लाह के बस में हैं वह अपना डर रखने वाले बन्दों को ऐसी जगह से रोज़िया पहुँचाता है जो किसी के ख़याल में तो

क्या? ख़ुद उनके अपने ख़्याल में भी न हों। उस ग़नीमत से मुराद ख़ैबर की ग़नीमत है जिसका वादा सुलह़ हुदेबिया में पोशीदा था या मक्का की फ़तह़ है, या फ़ारस व रूम के माल हैं या वह तमाम फ़ुतूह़ात हैं जो क़ियामत तक मुसलमानों को ह़ासिल होंगी। (त़ब्री : 22/233, 234) फिर अल्लाह तआला मुसलमानों को ख़ुशख़बरी सुनाता है कि वह कुफ़्फ़ार से न डरे और ख़ाइफ़ न हों, अगर काफ़िर मुक़ाबले पर आए तो अल्लाह अपने रसूल और मुसलमानों की मदद करेगा और बेईमानों को शिकस्ते फ़ाश देगा यह पीठ दिखाएँगे और मुँह फेर लेंगे और कोई वाली और मददगार भी उन्हें न मिलेगा इसलिए कि वह अल्लाह तआला और उसके रसूल से लड़ने के लिए आये हैं और उसके ईमान वाले बन्दों के पीछे पड़े हुए हैं।

फिर फ़र्माता है यही अल्लाह की आदत है कि जब कुफ़्र व ईमान का मुक़ाबला हो ईमान को कुफ़्र पर ग़ालिब करता है और ह़क़ को ज़ाहिर करके बात़िल को दबा देता है जैसे कि बद्र वाले दिन बहुत से काफ़िरों को जो बासामान थे चंद मुसलमानों के मुक़ाबले में जो बेसरोसामान थे शिकस्ते फ़ाश दी। फिर अल्लाह सुब्ह़ानहू व तआला फ़र्माता है मेरे इस एह़सान को भी न भूलो कि मैंने मुश्रिकों के हाथ तुम तक न पहुँचने दिये और तुम्हें भी मस्जिदे ह़राम के पास लड़ने से रोक दिया और तुममें उनमें सुलह़ करा दी, जो दरअस़ल तुम्हारे ह़क़ में सरासर बेहतरी है, क्या दुनिया के एतिबार से क्या आख़िरत के एतिबार से। वह ह़दीस याद होगी जो इसी सूरत की तफ़्सीर में बरिवायत ह़ज़रत सलमा बिन अक्वा गुज़र चुकी है कि "जब सत्तर काफ़िरों को बाँधकर स़ह़ाबा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में पेश किया तो आपने फ़र्माया, इन्हें जाने दो इनकी त़रफ़ से ही इब्तिदा हो और इन ही की त़रफ़ से दोबारा शुरू हो।" (इसी बाबत यह आयत उतरी। मुस्नद अह़मद में है कि "अस्सी काफ़िर हथियारों से आरास्ता जब जब्ले तन्ईम की त़रफ़ छिपछिपाते मौक़ा पाकर उतर आये लेकिन हुज़ूर (ﷺ) ग़ाफ़िल न थे आपने फ़ौरन लोगों को आगाह कर दिया सब गिरफ़्तार कर लिये गए और हुज़ूर (ﷺ) के सामने पेश किये गए आपने अज़्राहे मेहरबानी उनकी ख़त़ा माफ़ फ़र्मा दी और सबको छोड़ दिया।" (अह़मद : 3/122; स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वहुवल्लज़ी कफ़्फ़ा अयदियहुम अ़न्कुम) : 1808; अबूदाऊद : 2688; तिर्मिज़ी : 3264; सुननुल कुब्रा : 8667) उसी का बयान इस आयत में है। यह ह़दीस मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) फ़र्माते हैं "जिस दरख़्त का ज़िक्र कुरआन में है उसके नीचे नबी (ﷺ) थे हम लोग भी आपके इर्दगिर्द थे, उस दरख़्त की शाखें हुज़ूर (ﷺ) की कमर से लग रही थीं (ह़ज़रत) अ़ली (रज़ि.) और सुहैल बिन अ़म्र आपके सामने थे हुज़ूर (ﷺ) ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया, बिस्मिल्लाहिर रह़मानिर रह़ीम लिखो इस पर सुहैल ने हुज़ूर (ﷺ) का हाथ थाम लिया और कहा हम रह़मान और रह़ीम को नहीं जानते, हमारे इस सुलह़नामे में हमारे दस्तूर के मुताबिक़ लिखवाइए। पस आपने फ़र्माया (बिस्मिकल्लाहुम्म) लिख लो, फिर लिखा यह वह है जिस पर अल्लाह के रसूल मुह़म्मद (ﷺ) ने अहले मक्का से सुलह़ की। इस पर फिर सुहैल ने आपका हाथ थामकर कहा अगर आप रसूलुल्लाह ही हैं तो फिर हमने बड़ा ज़ुल्म किया, इस सुलह़नामा में वही लिखवाइए जो हममें मशहूर है। तो आपने फ़र्माया, लिखो यह वह है जिस पर मुह़म्मद बिन

अब्दुल्लाह ने अहले मक्का से सुलह की। इतने में (30) तीस नौजवान कुफ़्फ़ार हथियारबंद आन पड़े आपने उनके हक़ में बद्दुआ की अल्लाह तआला ने उन्हें बहरा कर दिया, हम उठे और उनको सामने पेश कर दिया। आपने उनसे पूछा कि क्या किसी ने तुम्हें अमान दी है? या तुम किसी की ज़िम्मेदारी पर आये हो? उन्होंने इंकार किया। लेकिन बावजूद उसके आपने उनसे दरगुज़र कर दिया और उन्हें छोड़ दिया, इस पर यह आयत (वहुवल्लज़ी) नाज़िल हुई।'' (सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11511; अहमद : 4/86, 87; वसनदुहू हसन; हाकिम : 2/460; बैहक़ी : 6/319)

इब्ने जरीर में है ''जब हुज़ूर (ﷺ) कुर्बानी के जानवर लेकर चले और जुल्हुलैफ़ा तक पहुँच गए तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह के नबी(ﷺ)! आप एक ऐसी क़ौम की बस्ती में जा रहे हैं जो बरसरे पैकार हैं और आपके पास न तो हथियार हैं न सामान। हुज़ूर (ﷺ) ने यह सुनकर आदमी भेजकर मदीना से हथियार और कुल सामान मंगवा लिया जब आप मक्का के क़रीब पहुँच गए तो मुश्रिकीन ने आपको रोका कि आप मक्का में न आएँ आपने सफ़र जारी रखा और मिना में जाकर क़याम किया। आपके जासूस ने आकर आपको ख़बर दी कि इक्रिमा बिन अबू जहल पाँच सौ का लश्कर लेकर आप पर चढ़ाई करने आ रहा है। आपने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) से फ़र्माया, ऐ ख़ालिद! तेरा चचाज़ाद भाई लश्कर लेकर आ रहा है। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने फ़र्माया, फिर क्या हुआ? मैं अल्लाह तआला की तलवार हूँ और उसके रसूल की (इसी दिन से आपका लक़ब सैफ़ुल्लाह हुआ) मुझे आप जहाँ चाहें और जिसके मुक़ाबले में चाहें भेजें। चुनाँचे इक्रिमा (रह.) के मुक़ाबले के लिए आप रवाना हुए घाटी में दोनों की मुठभेड़ हुई। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने ऐसा सख़्त हमला किया कि इक्रिमा के पैर न जमे उसे मक्का की गलियों तक पहुँचाकर हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) वापिस आ गए लेकिन फिर दोबारा ताज़ा दम होकर मुक़ाबले पर आया अब की बार भी शिकस्त खाकर मक्का की गलियों तक पहुँच गया। वह फिर तीसरी बार निकला इस बार भी यही हश्र हुआ। उसी का बयान आयत (वहुवल्लज़ी कफ़्फ़) में है।'' पस अल्लाह तआला ने बावजूद हुज़ूर (ﷺ) के ज़फ़रमंदी के कुफ़्फ़ार को भी बचा लिया ताकि जो मुसलमान कमज़ोर मक्का में थे उन्हें इस्लामी लश्कर के हाथों कोई नुक़्सान न पहुँचे। (तब्री : 22/239) लेकिन इस रिवायत में बहुत कुछ नज़र है नामुम्किन है कि यह हुदेबिया वाले वाक़िया का ज़िक्र हो इसलिए कि उस वक़्त तक तो हज़रत ख़ालिद मुसलमान ही न हुए थे बल्कि मुश्रिकीन के लश्कर के उस दिन सरदार थे, जैसे कि सहीह हदीस मे मौजूद है और यह भी नहीं हो सकता कि यह वाक़िया उम्रतुल क़ज़ा का हो इसलिए कि हुदेबिया के सुलहनामा की शराइत के मुताबिक़ यह तैशुदा अम्र था कि अगले साल हुज़ूर (ﷺ) आएँ उमरह अदा करें और तीन दिन तक मक्का में ठहरें, चुनाँचे इसी क़रारदाद के मुताबिक़ जब हुज़ूर (ﷺ) तशरीफ़ फ़र्मा हुए तो काफ़िरों ने आपको रोका नहीं न आपसे जंगो जिदाल किया। इसी तरह यह भी नहीं हो सकता कि यह वाक़िया फ़तह मक्का का हो इसलिए कि फ़तहे मक्का वाले साल आप अपने साथ कुर्बानियाँ लेकर नहीं गए थे उस वक़्त तो जंगी हैसियत से आप गए थे लड़ने और जिहाद करने की निय्यत से तशरीफ़ ले गए थे, पस इस रिवायत में बहुत कुछ ख़लल है और इसमें ज़रूर

क़बाहत हुई है, ख़ूब सोच समझ लेना चाहिए, वल्लाहु आलम! हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के मौला हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं कि "क़ुरैश ने अपने चालीस या पचास आदमी भेजे कि वह हुज़ूर (ﷺ) के लश्कर के आसपास घूमते रहें और मौक़ा पाकर कुछ नुक़्सान पहुँचाएँ या किसी को गिरफ़्तार करके ले आएँ, यहाँ यह सारे के सारे पकड़ लिये गए लेकिन फिर हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें माफ़ कर दिया और सबको छोड़ दिया, उन्होंने आपके लश्कर पर कुछ पत्थर भी फेंके थे और कुछ तीर भी चलाये थे।" (तब्री : 22/237) यह भी मरवी है कि "एक सहाबी जिन्हें इब्ने ज़ेनम कहा जाता था हुदेबिया के एक टीले पर चढ़े थे मुश्रिकीन ने तीरबाज़ी करके आपको शहीद कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) ने कुछ सवार उनके पीछे रवाना किये वह उन सबको जो ता'दाद में बारह सवार थे गिरफ़्तार करके ले आए। आपने उनसे पूछा कि तुम्हारे पास मेरी जानिब से कोई अमान है? उन्होंने कहा, नहीं! पूछा कोई अहदो पैमान है? कहा नहीं। लेकिन फिर भी हुज़ूर (ﷺ) ने उन्हें छोड़ दिया और इसी बारे में आयत (वहुवल्लज़ी कफ़्फ़ अयदियहुम अन्कुम....) नाज़िल हुई।"

***

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌ ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۲۵﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۲۶﴾

तर्जुमा : "यह वह लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुमको मस्जिदे हराम से रोका और क़ुर्बानी के जानवर को जो रुका हुआ रह गया उसके मौक़े में पहुँचने से रोका। और अगर बहुत से मुसलमान

मर्द और बहुत सी मुसलमान औरतें न होतीं जिनकी तुमको ख़बर न थी यानी उनके पिस जाने का एहतिमाल न होता जिस पर उनकी वजह से तुमको भी बेख़बरी में ज़रर पहुँचता तो सब क़िस्सा तै कर दिया जाता लेकिन ऐसा नहीं किया गया ताकि अल्लाह तआला अपनी रहमत में जिसको चाहे दाख़िल करे। और अगर यह टल गए होते तो उनमें जो काफ़िर थे हम उनको दर्दनाक सज़ा देते। (25) जबकि उन काफ़िरों ने अपने दिलों में आर को जगह दी और आर भी जाहिलियत की, सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल को और मोमिनीन को अपनी तरफ़ से तहम्मुल अता फ़र्माया और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वा की बात पर जमाये रखा और वह उसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं, और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है।" (26)

शहादते उस्मान (रज़ि.) की अफ़वाह पर अस्हाबे रसूल से बेअते रिज़्वान (आ. 25, 26) : मुश्रिकीने अरब जो कुरैश थे और जो उनके साथ उस अहद पर थे कि वह रसूलुल्लाह (ﷺ) से जंग करेंगे उनकी निस्बत कुरआन ख़बर देता है कि दरअसल कुफ़्र पर यह लोग हैं, इन्होंने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका है, हालाँकि असली हक़दार और ज़्यादा लायक़े ख़ाना इलाही के तुम ही लोग थे फिर इनकी सरकशी और मुख़ालिफ़त ने इन्हें यहाँ तक अँधा कर दिया कि अल्लाह तआला की राह की कुर्बानियों को भी कुर्बानगाह तक न जाने दिया। यह कुर्बानियाँ ता'दाद में (70) सत्तर थीं जैसे कि बहुत जल्द इसका बयान आ रहा है, इंशाअल्लाह तआला! फिर फ़र्माता है कि सरदस्त तुम्हें लड़ाई की इजाज़त न देने में पोशीदा राज़ यह था कि अभी चंद कमज़ोर मुसलमान मक्के में ऐसे हैं जो इन ज़ालिमों की वजह से न अपने ईमान को ज़ाहिर कर सके हैं, न हिज्रत करके तुममें मिल सके हैं और न तुम उन्हें जानते हो, तो यूँ दफ़अतन (अचानक) अगर तुम्हें इजाज़त दे दी जाती और तुम अहले मक्का पर छापा मारते तो वह सच्चे पक्के मुसलमान भी तुम्हारे हाथों शहीद हो जाते और बेइल्मी में ही तुम मुस्तहिक़े गुनाह और दियत बन जाते, पस इन कुफ़्फ़ार की सज़ा को अल्लाह तआला ने कुछ और पीछे हटा दिया ताकि उन कमज़ोर मुसलमानों को छुटकारा मिल जाए और भी जिनकी क़िस्मत में ईमान है वह ईमान ला चुकें अगर यह मोमिन उनमें न होते अगर यह अलग अलग होते तो यक़ीनन हम तुम्हें उन कुफ़्फ़ार पर अभी इसी वक़्त ग़ल्बा दे देते और उनकी भूसी उड़ा देते। "हज़रत जुनैद बिन सबीअ (रज़ि.) फ़र्माते हैं सुबह को मैं काफ़िरों के साथ मिलकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से लड़ रहा था, हमारे ही बारे में यह आयत (लौ ला रिजालुन...) नाज़िल हुई है, हम कुल नौ शख़्स थे सात मर्द दो औरतें।" (तब्रानी : 2204; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू ख़ल्फ़ हजर बिन-हारिस लम यूसिक़हू मिनल मुतक़द्दिमीन ग़ैर इब्ने हिब्बान, मुस्नदे अबू यअला : 1560; अद्दुर्रुल मंसूर : 6/76) और रिवायत में है कि "हम तीन मर्द थे और नौ औरतें थीं।" हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "अगर यह मोमिन उन काफ़िरों में मिले जुले न होते तो अल्लाह तआला उसी वक़्त मुसलमानों के हाथों उन काफ़िरों को सख़्त सज़ा देता यह क़त्ल कर दिये जाते।"

फिर फ़र्माता है जबकि यह काफ़िर अपने दिलों में ग़ैरत व हमिय्यते जाहिलियत को जमा चुके थे,

सुलहनामा में (बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम) लिखने से इंकार कर दिया। हुज़ूर (ﷺ) के नाम के साथ लफ़्ज़े रसूलुल्लाह लिखवाने पर इंकार किया, पस अल्लाह तआला ने उस वक़्त अपने नबी और मोमिनों के दिल खोल दिये उन पर अपनी सकीनत नाज़िल करके उन्हें मज़बूत कर दिया और तक़्वे के कलिमे पर उन्हें जमा दिया, यानी ला इलाहा इल्लल्लाह पर। (अहमद : 5/138; ज़वाइद अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल, तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिल फ़तह : 3265; वहुव हसन) जैसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) का फ़र्मान है और जैसे कि मुस्नद अहमद की मरफ़ूअ हदीस में मौजूद है। इब्ने अबी हातिम में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''मुझे हुक्म किया गया है कि मैं लोगों से जिहाद करता रहूँ जब तक वह ला इलाहा इल्लल्लाह न कह लें जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कह लिया उसने मुझसे अपने माल को और अपनी जान को बचा लिया मगर बवजह हक़्क़े इस्लाम के और उसका हिसाब अल्लाह तआला के ज़िम्मे है'' अल्लाह तआला ने उसे अपनी किताब में नाज़िल किया है। एक क़ौम की मज़म्मत बयान करते हुए फ़र्माया (إِنَّهُمْ كَانُوٓا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٥﴾) (37/साफ़्फ़ात : 35) यानी उनसे कहा जाता था कि सिवा अल्लाह के कोई इबादत के लायक़ नहीं तो यह तकब्बुर करते थे। और अल्लाह तआला जल्ला शानुहू ने यहाँ उनकी ता'रीफ़ बयान करते हुए यह भी फ़र्माया कि यही उसके ज़्यादा हक़दार और यही उसके क़ाबिल भी थे। यह कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह है उन्होंने इससे तकब्बुर किया और मुश्रिकीने क़ुरैश ने उसी से हुदेबिया वाले दिन तकब्बुर किया फिर भी रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनसे एक मुद्दते मुअय्यन तक के लिए सुलहनामा मुकम्मल कर लिया। इब्ने जरीर में भी यह हदीस इन ही ज़्यादतियों के साथ मरवी है, लेकिन बज़ाहिर यह मालूम होता है कि यह पिछले जुम्ले रावी के अपने हैं यानी हज़रत ज़ोहरी (रह.) का अपना क़ौल है जो इस तरह बयान किया गया है कि गोया हदीस में ही है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद इख़्लास है। (तब्री : 22/255) अता (रह.) फ़र्माते हैं वह कलिमा यह है (ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर) (तब्री : 22/256) हज़रत मिस्वर (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद (ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू) है। हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं इससे (ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर) मुराद है। (हाकिम : 2/461; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबाया बिन रबई ज़ईफ़ शिया व अख़्तअल हाकिम वज़्ज़हबी फ़सह्हहा अला शर्तिश् शैख़ैन) यही क़ौल हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) का है। हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) फ़र्माते हैं इससे मुराद अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त की वहदानियत की शहादत है जो तमाम तक़्वे की जड़ है। हज़रत सईद बिन जुबेर (रह.) फ़र्माते हैं इससे मुराद ला इलाहा इल्लल्लाह भी है और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह भी है। हज़रत अता (रह.) फ़र्माते हैं कलिमा तक़्वा (ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह) है। हज़रत ज़ोहरी (रह.) फ़र्माते हैं (बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम) मुराद है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं मुराद ला इलाहा इल्लल्लाह है।

फिर फ़र्माता है अल्लाह तआला हर चीज़ को बख़ूबी जानने वाला है उसे मालूम है कि मुस्तहिक़्क़े ख़ैर कौन है? और मुस्तहिक़्क़े शर्र कौन है? हज़रत उबय बिन कअब (रज़ि.) की क़िरअत इस तरह है (إِذْ جَعَلَ

(الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ وَلَوْ حَمِيتُمْ كَمَا حَمُوا الْفَسَدَ الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ) यानी काफ़िरों ने जिस वक़्त अपने दिल में जाहिलाना ज़िद्द पैदा कर ली अगर उस वक़्त तुम भी उनकी तरह ज़िद्द पर आ जाते तो नतीजा यह होता कि मस्जिदे हराम में फ़साद बरपा हो जाता। जब हज़रत उमर (रज़ि.) को आपकी इस क़िरअत की ख़बर पहुँची तो बहुत तेज़ हुए लेकिन हज़रत उबय (रज़ि.) ने फ़र्माया यह तो आपको भी मालूम होगा कि मैं हुज़ूर (ﷺ) के पास आता जाता रहता था और जो कुछ अल्लाह तआला आपको सिखाता था आप उसमें से मुझे भी सिखाते थे, इस पर जनाब उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया, आप ज़ी इल्म और क़ुरआन दाँ हैं आपको जो कुछ अल्लाह तआला ने और उसके रसूल ने सिखाया वह पढ़िये और सिखाइये। (नसाई) इन हदीसों का बयान जिनमें हुदेबिया का क़िस्सा और सुलह का वाक़िया है। मुस्नद अहमद में है ''हज़रत मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) और हज़रत मरवान बिन हकम फ़र्माते हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़ियारते बैतुल्लाह के इरादे से चले आपका इरादा जंग का न था सत्तर (70) ऊँट क़ुर्बानी के आपके साथ थे कुल साथी आपके सात सौ (700) थे एक ऊँट दस दस आदमियों की तरफ़ से था, आप जब अस्फ़ान पहुँचे तो बिश्र बिन सुफ़्यान कअबी ने आपको ख़बर दी कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़ुरैशियों ने आपके आने की ख़बर पाकर मुक़ाबला की तैयारियाँ कर ली हैं उन्होंने ऊँटों के छोटे छोटे बच्चे भी अपने साथ ले लिए हैं और चीते की खालें पहन ली हैं और अहदो पैमान कर लिये हैं कि वह आपको इस तरह जबरन मक्का में नहीं आने देंगे, ख़ालिद बिन वलीद को उन्होंने छोटा सा लश्कर देकर कराअे ग़मीम तक पहुँचा दिया है। यह सुनकर अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! क़ुरैशियों को लड़ाई ने खा लिया कितनी अच्छी बात थी कि वह मुझे और लोगों को छोड़ देते अगर वह मुझ पर ग़ालिब आ जाते तो इनका मक़्सद पूरा हो जाता और अगर अल्लाह तआला मुझे और लोगों पर ग़ालिब कर देता तो फिर यह लोग भी दीने इस्लाम क़बूल कर लेते और अगर उस वक़्त भी इस दीन में आना चाहते तो मुझसे लड़ते और उस वक़्त उनकी ताक़त भी पूरी होती, क़ुरैशियों ने क्या समझ रखा है? अल्लाह तआला की क़सम! इस दीन पर मैं इनसे जिहाद करता रहूँगा यहाँ तक कि या तो अल्लाह तआला मुझे इन पर खुल्लम खुल्ला ग़ल्बा अता फ़र्मा दे या मेरी गर्दन कट जाए, फिर आपने अपने लश्कर को हुक्म दिया कि दाएँ तरफ़ हम्ज़ के पीछे से उस रास्ते पर चलें जो सनिय्यतुल मरार को जाता है ओर हुदेबिया मक्का के नीचे के हिस्से में है। ख़ालिद वाले लश्कर ने जब देखा कि हुज़ूर (ﷺ) ने रास्ता बदल दिया तो यह दौड़ते हुए क़ुरैशियों के पास गए और उन्हें उसकी ख़बर दी। इधर हुज़ूर (ﷺ) जब सनियतुल मरार में पहुँचे तो आपकी ऊँटनी बैठ गई तो लोग कहने लगे ऊँटनी थक गई। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, न यह थकी है न इसको बैठ जाने की आदत है, इसे उस अल्लाह तआला ने रोक लिया है जिसने मक्का से हाथियों को रोक दिया था। सुनो! क़ुरैश आज मुझसे जो चीज़ माँगेंगे जिसमें सिलारहमी हो मैं उन्हें दूँगा। फिर आपने लश्करियों को हुक्म दिया कि वह पड़ाव करें, उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस पूरी वादी में पानी नहीं आपने तरकश में से एक तीर निकालकर एक सहाबी को दिया और फ़र्माया इसे यहाँ किसी कूएँ में गाड़ दो। उसके गाड़ते ही पानी जोश मारता हुआ उबल पड़ा तमाम लश्कर ने पानी ले लिया और वह बराबर बढ़ता ही चला जा रहा था। जब पड़ाव

हो गया और इत्मिनान से बैठ गए इतने में बुदैल बिन वरक़ा अपने साथ क़बीला ख़ुज़ाआ के चंद लोगों को लेकर आया। आपने उससे भी वही फ़र्माया, जो बिश्र बिन सुफ़्यान से फ़र्माया था। चुनाँचे यह लोग गए और जाकर क़ुरैश से कहा कि तुम लोगों ने हुज़ूर (ﷺ) के बारे में बड़ी जल्दी की। हुज़ूर (ﷺ) तुमसे लड़ने को नहीं आये आप तो सिर्फ़ बैतुल्लाह की ज़ियारत करने को आये हैं तुम अपने फ़ैसले पर दोबारा नज़र डालो। दरअसल क़बीला ख़ुज़ाआ के मुस्लिम व काफ़िर रसूलुल्लाह (ﷺ) के तरफ़दार थे मक्का की ख़बर उन्हीं लोगों से आपको पहुँचा करती थी। क़ुरेशियों ने उन्हें जवाब दिया कि गो आप इसी इरादे से आये हों लेकिन यूँ अचानक तो हम उन्हें यहाँ आने नहीं देंगे वरना लोगों में तो यही बातें होंगी कि आप मक्का में गए और कोई आपको रोक न सका। उन्होंने फिर मुक्रिज़ बिन हफ़्स को भेजा, यह बनू आमिर बिन लूई के क़बीले में से था, उसे देखकर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, यह वादाख़िलाफ़ी करने वाला शख़्स है और उससे भी आपने वही फ़र्माया जो इससे पहले आने वाले दोनों शख़्सों से फ़र्माया था। यह भी लौट गया और जाकर क़ुरेशियों से सारा वाक़िया बयान किया। क़ुरेशियों ने फिर हलीस बिन अल्क़मा किनानी को भेजा यह मुख़्तलिफ़ इधर उधर के लोगों का सरदार था। उसे देखकर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यह उस क़ौम से है जो रहमानी कामों की अज़्मत करती है अपनी क़ुर्बानी के जानवरों को खड़ा कर दो। उसने जो देखा कि हर तरफ़ से क़ुर्बानी के निशानदार जानवर आ जा रहे हैं और बवजह रुक जाने के उनके बाल उड़े हुए हैं तो यह वहीं से बग़ैर हुज़ूर (ﷺ) के पास आये लौट गया और जाकर क़ुरैश से कहा कि अल्लाह तआला जानता है तुम्हें हलाल नहीं कि तुम उन्हें बैतुल्लाह से रोको अल्लाह तआला के नाम के जानवर क़ुर्बानगाह से रुके खड़े हैं। यह सख़्त ज़ुल्म है इतने दिन रुके रहने की वजह से उनके बाल तक उड़ गए हैं मैं अपनी आँखों देखकर आ रहा हूँ। क़ुरैश ने कहा तो तू निरा आराबी है ख़ामोश होकर बैठ जा।

अब उन्होंने मश्वरा करके उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी को भेजा उर्वा ने अपने जाने से पहले कहा कि ऐ क़ुरेशियों! जिन जिनको तुमने वहाँ भेजा वह जब वापिस आये तो उनसे तुमने क्या सुलूक किया यह मैं देख रहा हूँ तुमने उन्हें बुरा कहा उनकी बेइज़्ज़ती की उन पर तोहमत रखी, उनसे बदगुमानी की, मेरी हालत तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हें मिस्ल बाप के समझता हूँ। तुम ख़ूब जानते हो कि जब तुमने हाय वाय की मैंने अपनी तमाम क़ौम को इकट्ठा किया और जिसने मेरी बात मानी मैंने उसे अपने साथ लिया और तुम्हारी मदद के लिए अपनी जान माल और अपनी क़ौम को लेकर आ पहुँचा। सबने कहा, बेशक आप सच्चे हैं हमें आपसे किसी क़िस्म की बदगुमानी नहीं, आप जाइए। अब यह चला और हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचकर आपके सामने बैठकर कहने लगा, आपने इधर उधर के कुछ लोगों को जमा कर लिया है और आये हैं अपनी क़ौम की शानो शौकत को आप ही तोड़ने के लिए सुनिए यह क़ुरैशी आज यह मुसम्मम इरादा कर चुके हैं और छोटे छोटे बच्चे भी इनके साथ हैं जो चीतों की खालें पहने हुए हैं वह अल्लाह तआला को बीच में रखकर अहदो पैमान कर चुके हैं कि हर्गिज़ हर्गिज़ आपको इस तरह अचानक ज़बरदस्ती मक्का में नहीं आने देंगे, अल्लाह तआला की क़सम! मुझे तो ऐसा नज़र आता है कि यह लोग जो इस वक़्त भीड़ लगाये आपके आसपास खड़े हुए हैं, यह

लड़ाई के वक़्त ढूँढ़े भी नहीं मिलेंगे। यह सुनकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) से न रहा गया, आप उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) के पीछे बैठे हुए थे आपने कहा, जा लात की वह चूसता रह, हम और रसूलुल्लाह (ﷺ) को छोड़कर भाग खड़े हों! उर्वा ने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा, यह कौन है? आपने फ़र्माया, अबू क़हाफ़ा के बेटे! तो कहने लगा अगर मुझ पर तेरा एहसान पहले का न होता तो मैं ज़रूर तुझे इसका मज़ा चखाता। उसके बाद उर्वा ने फिर कुछ कहने के लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) की दाढ़ी में हाथ डाला। उसकी बेअदबी को हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) न सिहार सके यह हुज़ूर (ﷺ) के पास ही खड़े हुए थे, लोहा उनके हाथ में था वही उसके हाथ पर मारकर फ़र्माया अपना हाथ दूर रख, तू हुज़ूर (ﷺ) के जिस्म को छू नहीं सकता। यह कहने लगा तू बड़ा ही बदज़ुबान और टेढ़ा आदमी है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस पर तबस्सुम फ़र्माया। उसने पूछा, यह कौन है? आपने फ़र्माया, यह तेरा भतीजा मुग़ीरा बिन शुअबा है। तो कहने लगा, ग़द्दार तू तो कल तक तहारत भी न जानता था। अल्ग़र्ज़ उसे भी हुज़ूर (ﷺ) ने वही जवाब दिया जो इससे पहले वालों को दिया था और यक़ीन दिला दिया कि हम लड़ने के लिए नहीं आए। यह वापिस चला और उसने यहाँ का नक़्शा देखा था कि अस्हाबे रसूल किस तरह हुज़ूर (ﷺ) के परवाने बने हुए हैं, आपके वुज़ू का पानी वह हाथों हाथ लेते हैं आपके थूक को अपने हाथों में लेने के लिए वह एक दूसरे से सब्क़त करते हैं, आपका कोई बाल गिर पड़े तो हर शख़्स लपकता है कि वह उसे ले ले। जब यह कुरेशियों के पास पहुँचा तो कहने लगा, ऐ कुरेशियों की जमाअत के लोगों! मैं किसरा के यहाँ उसके दरबार में और नज्जाशी के यहाँ उसके दरबार में हो आया हूँ अल्लाह की क़सम! मैंने उन बादशाहों की भी वह अज़्मत और वह एहतिराम नहीं देखा जो मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.) का देखा है आपके अस्हाब तो आपकी वह इज़्ज़त करते हैं कि उससे ज़्यादा नामुम्किन है, अब तुम सोच लो और इस बात को याद करो कि अस्हाबे रसूल ऐसे नहीं कि अपने नबी को तुम्हारे हाथों में दे दें, अब आपने हज़रत उमर (रज़ि.) को बुलाया और उन्हें मक्का वालों के पास भेजना चाहा, लेकिन इससे पहले यह वाक़िया हो चुका था कि आपने एक बार हज़रत ख़राश बिन उमय्या ख़ुज़ाई (रज़ि.) को अपने ऊँट पर जिसका नाम सअलब था सवार कराकर मक्के भेजा था कुरैश ने उस ऊँट की कूचें काट दी थीं और ख़ुद क़ासिद को भी क़त्ल कर डालते लेकिन अहाबीश क़ौम ने उन्हें बचा लिया, (शायद इस बिना पर) हज़रत उमर (रज़ि.) ने जवाब में कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे तो डर है कि यह लोग मुझे क़त्ल न कर दें क्योंकि वहाँ मेरे क़बीला बनू अदी का कोई शख़्स नहीं जो मुझे उन कुरेशियों से बचाने की कोशिश करे इसलिए क्या यह अच्छा न होगा कि आप (हज़रत) उस्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) को भेजें? जो उनकी निगाहों में मुझसे बहुत ज़्यादा ज़ी इज़्ज़त हैं। चुनाँचे आपने हज़रत उस्मान (रज़ि.) को बुलाकर उन्हें मक्का में भेजा कि जाकर कुरैश से कह दें कि हम लड़ने के लिए नहीं आए बल्कि सिर्फ़ बैतुल्लाह की ज़ियारत और उसकी अज़्मत बढ़ाने को आये हैं। हज़रत उस्मान (रज़ि.) ने शहर में क़दम रखा ही था जो अबान बिन सईद बिन आस़ आपको मिल गए और अपनी सवारी से उतरकर हज़रत उस्मान (रज़ि.) को आगे बिठाया और ख़ुद पीछे बैठा और अपनी ज़िम्मेदारी पर आपको ले चला कि आप पैग़ामे रसूलुल्लाह (ﷺ) अहले मक्का को पहुँचा दें। चुनाँचे आप वहाँ गए और कुरैश को यह

पैग़ाम पहुँचा दिया। उन्होंने कहा कि आप तो आ ही गए हैं आप अगर चाहें तो बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लें, लेकिन ज़ुन्नूरैन ने जवाब दिया कि जब तक हुज़ूर (ﷺ) तवाफ़ न कर लें नामुम्किन है कि मैं तवाफ़ करूँ। क़ुरेशियों ने जनाब उस्मान (रज़ि.) को रोक लिया और उन्हें वापिस न जाने दिया इधर लश्करे इस्लाम में यह ख़बर पहुँची कि हज़रत उस्मान (रज़ि.) को शहीद कर दिया गया है।''

ज़ोहरी की रिवायत में है कि ''फिर क़ुरेशियों ने सुहैल बिन अम्र को आपके पास भेजा कि जाकर सुलह कर लो लेकिन यह ज़रूरी है कि इस साल आप मक्का में नहीं आ सकते ताकि अरब हमें तअ़ना न दे सकें कि वह आये और तुम रोक न सके। चुनाँचे सुहैल यह सिफ़ारत लेकर चला, जब हुज़ूर (ﷺ) ने उसे देखा तो फ़र्माया मालूम होता है कि क़ुरेशियों का इरादा अब सुलह का हो गया जो इसे भेजा है। उसने हुज़ूर (ﷺ) बातें शुरू कीं, और देर तक सवाल जवाब और बातचीत होती रही। शराइते सुलह तै हो गए सिर्फ़ लिखना बाक़ी रहा। हज़रत उमर (रज़ि.) दौड़े हुए हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास गए और फ़र्माने लगे क्या हम मुसलमान नहीं हैं? क्या यह लोग मुश्रिकीन नहीं हैं? आपने जवाब दिया कि हाँ! तो कहा फिर क्या वजह है कि हम दीनी मामलात में इतनी कमज़ोरी दिखाएँ। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया, उमर! अल्लाह के रसूल की रकाब थामे रहो, आप (ﷺ) अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, हज़रत उमर (रज़ि.) से फिर भी सब्र न हो सका, ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर इसी तरह कहा। आपने जवाब में फ़र्माया, सुनो! मैं अल्लाह तआ़ला का रसूल हूँ और उसका गुलाम हूँ मैं उसके फ़र्मान के ख़िलाफ़ नहीं कर सकता और मुझे यक़ीन है कि वह मुझे ज़ाया न करेगा। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कहने को तो उस वक़्त जोश में मैं हुज़ूर (ﷺ) से यह सब कुछ कह गया लेकिन फिर मुझे बड़ी नदामत हुई मैंने उसके बदले बहुत से रोज़े रखे बहुत सी नमाज़ें पढ़ीं और बहुत से गुलाम आज़ाद किये उससे डरकर कि मुझे उस गुस्ताख़ी की कोई सज़ा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से न हो। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज़रत अली (रज़ि.) को सुलहनामा लिखने के लिए बुलवाया और फ़र्माया, लिखो बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम इस पर सुहैल ने कहा मैं उसे नहीं जानता यूँ लिखिए बिइस्मिकल्लाहुम्म आपने फ़र्माया अच्छा यूँ ही लिखो फिर फ़र्माया लिखो यह वह सुलहनामा है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया इस पर सुहैल ने कहा अगर मैं आपको रसूल मानता तो आपसे लड़ता ही क्यूँ? यूँ लिखिए कि यह वह सुलह नामा है जो मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह और सुहैल बिन अम्र ने किया इस बात पर कि दस साल तक हममें कोई लड़ाई न होगी लोग अम्नो अमान से रहेंगे एक दूसरे से बचा हुआ रहेगा और यह कि जो शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास अपने वली की इजाज़त के बग़ैर चला जाएगा आप उसे वापिस लौटा देंगे और जो सहाबिये रसूलुल्लाह (ﷺ) क़ुरेशियों के पास चला जाएगा वह उसे नहीं लौटाएँगे, हममें आपमें लड़ाईयाँ बंद रहेंगी सुलह क़ायम रहेगी कोई तौक़ व ज़ंजीर क़ैदो बंद भी न होगी उसी में एक शर्त यह भी थी कि जो शख़्स मुहम्मद (ﷺ) की जमाअ़त और आपके अ़हदो पैमान में आना चाहे वह भी आ सकता है। उस पर बनू ख़ुज़ाआ़ जल्दी से बोल उठे कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के अ़हदो पैमान में आए हैं और बनूबक्र ने कहा कि हम क़ुरेशियों के साथ उनके ज़िम्मे में हैं। सुलहनामा में यह भी था कि इस साल आप वापिस लौट जाएँ

मक्का में न आएँ अगले साल आएँ। उस वक़्त हम बाहर निकल जाएँगे और आप अपने अस्हाब समेत आएँ तीन दिन मक्का में ठहरें हथियार इतने ही हों जितने एक सवार के पास होते हैं, तलवार म्यान में हों। अभी सुलहनामा लिखा जा रहा था जो सुहैल के लड़के हज़रत अबू जंदल (रज़ि.) लोहे की भारी ज़ंजीरों में जकड़े हुए गिरते पड़ते मक्का से छुपते छुपाते भागकर रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो गए।

सहाबा किराम (रज़ि.) मदीना से निकलते हुए ही फ़तह का यक़ीन किये हुए थे क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़्वाब में देख चुके थे इसलिए उन्हें फ़तह होने में ज़रा सा भी शक न था। यहाँ आकर उन्होंने जो यह रंग देखा कि सुलह हो रही है और बग़ैर तवाफ़ के बग़ैर ज़ियारते बैतुल्लाह के यहीं से वापिस होना पड़ेगा बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने नफ़्स पर मुशक़्क़त उठाकर सुलह कर रहे हैं तो उससे वह बहुत ही परेशान ख़ातिर थे बल्कि क़रीब था कि हलाक हो जाएँ। यह सब कुछ तो था ही मज़ीद बराँ जब हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) जो मुसलमान थे और जिन्हें मुश्रिकीन ने क़ैद कर रखा था और जिन पर तरह तरह के मज़ालिम तोड़ रहे थे यह सुनकर कि हुज़ूर (ﷺ) आये हुए हैं किसी न किसी तरह मौक़ा पाकर भाग आते हैं और तौक़ व ज़ंजीर में जकड़े हुए हाज़िर होते हैं तो सुहैल उठकर उन्हें तमाँचे मारने शुरू कर देता है और कहता है ऐ मुहम्मद (ﷺ)! मेरे आपके बीच तस्फ़िया हो चुका है यह उसके बाद आया है लिहाज़ा इस शर्त के मुताबिक़ इसे वापिस ले जाऊँगा। तो आप जवाब देते हैं कि हाँ! ठीक है। सुहैल खड़ा होता है और हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) के गिरेबान में हाथ डालकर घसीटता हुआ उन्हें लेकर चलता है। हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) बुलंद आवाज़ से कहते हैं ऐ मुसलमानों! मुझे मुश्रिकों की तरफ़ लौटा रहे हो? हाय यह मुझसे मेरा दीन छीनना चाहते हैं। उस वाक़िया ने सहाबा को और रंजीदा कर दिया। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अबू जन्दल (रज़ि.) से फ़र्माया, अबू जन्दल! सब्र कर और नेक निय्यत रह और तलबे सवाब में रह न सिर्फ़ तेरे लिए ही बल्कि तुझ जैसे जितने कमज़ोर मुसलमान हैं उन सबके लिए अल्लाह तआला रास्ता निकालने वाला है और तुम सबको उस दर्द व ग़म, रंज व अलम और ज़ुल्मो सितम से छुड़ाने वाला है। हम चूँकि सुलह कर चुके हैं शराइत तै हो चुके हैं इस बिना पर हमने तुम्हें सरेदस्त वापिस कर दिया है हम ग़दर करना शराइत के ख़िलाफ़ करना अहद शिकनी करना नहीं चाहते। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) अबू जन्दल के साथ उनके पहलू बा पहलू जाने लगे और कहते जाते थे कि अबू जन्दल! सब्र करो उनमें रखा ही क्या है? यह मुश्रिक लोग हैं इनका ख़ून मिस्ल कुत्ते के ख़ून के है। हज़रत उमर (रज़ि.) साथ ही साथ अपनी तलवार की मोठ का हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) की तरफ़ करते जा रहे थे कि वह तलवार खींच लें और एक ही वार में बाप को परे पार करें लेकिन हज़रत अबू जुन्दल (रज़ि.)का हाथ बाप पर न उठा, सुलहनामा मुकम्मल हो गया। फ़ैसला पूरा हो गया। रसूलुल्लाह (ﷺ) हरम में नमाज़ पढ़ते थे और हलाल होने के लिए मुज़्तरिब थे। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने लोगों से फ़र्माया कि उठो! अपनी अपनी क़ुर्बानियाँ कर लो और सर मुँडवा लो लेकिन एक भी खड़ा न हुआ। तीन बार ऐसा ही हुआ। आप लौटकर उम्मे सलमा (रज़ि.) के पास गये और फ़र्माने लगे, लोगों को यह क्या हो गया है? माई साहिबा ने जवाब दिया या रसूलल्लाह (ﷺ)! इस वक़्त जिस क़द्र सदमे में यह हैं आपको बख़ूबी मालूम है आप इनसे

कुछ न कहिए सीधे अपनी क़ुर्बानी के जानवर के पास जाइए और उसे जहाँ वह हो वहीं क़ुर्बान कर दीजिए और ख़ुद सिर मुँडवा लीजिए फिर तो मुम्किन है कि और लोग भी करें। आपने यही किया अब क्या था हर हर शख़्स उठ खड़ा हुआ क़ुर्बानी को क़ुर्बान किया और सिर मुँडवा लिये। अब आप यहाँ से वापिस चले आधा रास्ता तै किया होगा जो सूरह फ़तह नाज़िल हुई।" (अहमद : 4/323, 324; वसनदुहू हसन; इब्ने इस्हाक़ सरह बिस्सिमाइ इन्दल बैहक़ी फ़िद्दलाइल (4/145) व रवाहू मुख़्तसरन; वत्तिर्मिज़ी सरह बिस्सिमाइ इन्दल बुख़ारी (2731, 2732) व उंज़ुरुल अक्दत्तमाम फ़ी तख़रीजि सीरते इब्ने हिशाम लि राक़िमिल हुरूफ़ (ह : 165) यह रिवायत सहीह बुख़ारी में भी है उसमें है कि "आपके सामने एक हज़ार कई सौ सहाबा थे, ज़ुल्हुलैफ़ा पहुँचकर आपने क़ुर्बानी के ऊँटों को निशानदार किया और उमरे का एहराम बाँधा और अपने एक जासूस को जो क़बीला ख़ुज़ाआ में से था जासूसी के लिए रवाना किया, ग़दीरे इश्तात में आकर उसने ख़बर दी कि क़ुरैश ने पूरा मज्मआ तैयार कर लिया है इधर उधर के मुख़्तलिफ़ लोगों को भी उन्होंने जमा कर लिया है और उनका इरादा लड़ाई का और आपको बैतुल्लाह से रोकने का है। आपने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया, अब बतलाओ क्या हम इनके अहलो अयाल पर हमला कर दें? अगर वह हमारे पास आएँगे तो अल्लाह तआला ने उनकी गर्दन काट दी होगी। वरना हम उन्हें ग़मगीन छोड़कर जाएँगे अगर वह बैठ रहेंगे तो उस ग़म व रंज में रहेंगे और अगर उन्होंने नजात पा ली तो यह गर्दनें होंगी जो अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने काट दी होंगी, देखो तो भला कितना ज़ुल्म है कि हम न किसी से लड़ने को आये न किसी और इरादे से आये सिर्फ़ अल्लाह तआला के घर की ज़ियारत के लिए जा रहे हैं और वह हमें रोक रहे हैं बतलाओ इनसे हम क्यूँ न लड़ें? इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप बैतुल्लाह की ज़ियारत को निकले हैं आप चले चलिए हमारा इरादा जिदाल व क़िताल का नहीं लेकिन जो हमें अल्लाह तआला के घर से रोकेगा हम उससे ज़रूर लड़ेंगे ख़्वाह वह कोई भी हो। आपने फ़र्माया बस अल्लाह का नाम लो और चल खड़े होओ। कुछ और आगे चलकर हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़ालिद बिन वलीद तलाया का लश्कर लेकर आ रहा है पस तुम दाएँ तरफ़ को हो लो। ख़ालिद को इसकी खबर भी न हुई और हुज़ूर (ﷺ) सहाबा के साथ उनके कल्ले पर पहुँच गए अब ख़ालिद दौड़ता हुआ क़ुरैशियों में पहुँचा और उन्हें उससे ख़बरदार किया। ऊँटनी का नाम इस रिवायत में क़स्वा बयान हुआ है, उसमें यह भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने जब यह फ़र्माया कि जो कुछ वह मुझसे तलब करेंगे मैं दूँगा बशर्तेकि हुर्मते अल्लाह तआला की एहानत न हो। फिर जो आपने ऊँटनी को ललकारा तो फ़ौरन खड़ी हो गई। बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाई रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास से जाकर क़ुरैशियों को जब जवाब पहुँचाता है तो उर्वा बिन मसऊद सक़फ़ी खड़े होकर अपना तआरुफ़ कराकर जो पहले बयान हो चुका है यह भी कहता है कि देखो! इस शख़्स ने निहायत मअक़ूल और वाजबी बात कही है इसे क़बूल कर लो। और जब यह ख़ुद हाज़िरे हुज़ूर होकर आपका यही जवाब आपके मुँह से सुनता है तो आपसे कहता है कि सुनिए जनाब! दो ही बातें हैं या आप ग़ालिब वह मग़लूब या वह ग़ालिब आप मग़लूब। अगर पहली बात ही हुई तो भी क्या हुआ आप ही की क़ौम है आपने किसी को ऐसा सुना भी है कि जिसने अपनी क़ौम का सतियानाश किया हो? और अगर दूसरी बात हो

गई तो यह जितने आपके पास हैं मैं तो देखता हूँ कि सारे ही आपको छोड़कर भाग जाएँगे। इस पर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने वह जवाब दिया जो पहले गुज़र चुका है। हज़रत मुग़ीरा (रज़ि.) वाले बयान में यह भी है कि उनके हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ूद (लोहे का टोप) था। उनके मारने पर उ़र्वा ने कहा, ग़द्दार! मैंने तो तेरी ग़द्दारी में तेरा साथ दिया था। बात यह है कि पहले यह जाहिलियत के ज़माने में काफ़िरों के एक गिरोह के साथ थे मौक़ा पाकर उन्हें क़त्ल कर डाला और उनका माल लेकर हाज़िरे हुज़ूर (ﷺ) हुए। आपने फ़र्माया, तुम्हारा इस्लाम तो मैं मंज़ूर करता हूँ लेकिन इस माल से मेरा कोई रिश्ता नहीं। उ़र्वा ने यहाँ यह मंज़र भी बचश्मे ख़ुद देखा कि आप थूकते हैं तो कोई न कोई सहाबी लपककर उसे अपने हाथों में ले लेता है और अपने चेहरे और अपने जिस्म पर मल लेता है आपके होंठों को जुंबिश होते ही फ़र्मांबरदारी के लिए एक से एक आगे बढ़ता है, जब आप वुज़ू करते हैं तो आपके अअ़ज़ा-ए-बदन से गिरे हुए पानी पर क़रीब होता है कि सहाबा लड़ पड़ें जब आप बात करते हैं तो बिलकुल सन्नाटा छा जाता है जो कहीं से चूँ की आवाज़ भी सुनाई दे, हद्दे एहतिराम यह है कि सहाबा आँख भरकर आपके चेहरे मुनव्वर की तरफ़ तकते ही नहीं बल्कि नीची निगाहों से हर वक़्त बाअदब रहते हैं। उसने फिर वापिस आकर यही हाल कुरेशियों को सुनाया और कहा कि हुज़ूर (ﷺ) जो इंसाफ़ व अ़दल की बात पेश कर रहे हैं, उसे मान लो।''

बनू किनाना के जिस शख़्स को उसके बाद कुरैश ने भेजा उसे देखकर हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, यह लोग कुर्बानी के जानवरों की बड़ी ता'ज़ीम करते हैं इसलिए कुर्बानी के जानवरों को खड़ा कर दो और उसकी तरफ़ हाँक दो उसने जो यह मंज़र देखा इधर सहाबा की ज़ुबानी लब्बैक की सदाएँ सुनीं तो कह उठा कि इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना निहायत बुरी हरकत है। इसमें यह भी है कि मुक्रिज़ को देखकर आपने फ़र्माया, यह एक ताजिर शख़्स है। अभी यह बैठा बातें कर ही रहा था जो सुहैल आ गया उसे देखकर हुज़ूर (ﷺ) ने अपने सहाबा (रज़ि.) से फ़र्माया, लो! अब काम आसान हो गया। उसने जब बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम और आपके नाम के साथ रसूलुल्लाह लिखने पर एतिराज़ किया तो आपने फ़र्माया, अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह ही हूँ गो तुम न मानो, यह इस बिना पर कि जब आपकी ऊँटनी बैठ गई तो आपने कह दिया था कि यह मुहर्रमाते इलाही की इज़्ज़त रखते हुए मुझसे जो कहेंगे मैं मंज़ूर कर लूँगा। आपने सुलहनामा लिखवाते हुए फ़र्माया कि इम्साल हमें यह बैतुल्लाह की ज़ियारत कर लेने देंगे, लेकिन सुहैल ने कहा, यह हमें मंज़ूर नहीं वरना लोग कहेंगे कि हम दब गए और कुछ न कर सके। जब यह शर्त हो रही थी कि जो काफ़िर उनमें से मुसलमान होकर हुज़ूर (ﷺ) के पास चला जाए आप उसे वापिस दे देंगे, उस पर मुसलमानों ने कहा, सुब्हानल्लाह! यह कैसे हो सकता है कि वह मुसलमान होकर आए और हम उसे काफ़िरों को सौंप दें, यह बातें हो ही रही थीं जो हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) अपनी बेड़ियों में जकड़े हुए आ गये। सुहैल ने कहा इसे वापिस कीजिए। आपने फ़र्माया, अभी तक सुलहनामा मुकम्मल नहीं हुआ, मैं इसे कैसे वापिस कर दूँ। उसने कहा फिर तो अल्लाह की क़सम! मैं किसी तरह और किसी शर्त पर सुलह करने में रज़ामंद नहीं हूँ। आपने फ़र्माया तुम ख़ुद मुझे ख़ास इसकी बाबत इजाज़त दे दो। उसने कहा मैं इसकी इजाज़त भी आपको नहीं

दूँगा। आपने दोबारा फ़र्माया लेकिन उसने फिर भी इंकार कर दिया, गो मुक्रिज़ ने कहा, हाँ! हम आपको इसकी इजाज़त देते हैं। उस वक़्त हज़रत अबू जन्दल (रज़ि.) ने मुसलमानों से फ़रियाद की, उन बेचारों को मुश्रिकीन बड़ी सख़्त संगीन सज़ाएँ दिया करते थे। उस पर हज़रत उ़मर (रज़ि.) हाज़िर हुए और वह कहा जो पहले गुज़र चुका है, फिर पूछा क्या आपने हमसे यह नहीं फ़र्माया कि हम बैतुल्लाह में जाएँगे और उसका तवाफ़ भी करेंगे। आपने फ़र्माया, हाँ! यह तो मैंने कहा है लेकिन यह तो नहीं कि यह इसी साल होगा। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि हाँ! यह तो आपने नहीं कहा था। आपने फ़र्माया बस तो तुम वहाँ जाओगे और बैतुल्लाह का तवाफ़ ज़रूर करोगे। हज़रत उ़मर (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आया और वही कहा जिसका बयान ऊपर गुज़रा। उसमें इतना और है कि क्या हुज़ूर (ﷺ) अल्लाह तआ़ला के रसूल नहीं? उसके जवाब में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, हाँ! हैं। फिर मैंने हुज़ूर (ﷺ) की पेशगोई का इसी तरह ज़िक्र किया और वही जवाब मिला जो ज़िक्र हुआ जो जवाब ख़ुद रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दिया था। उस रिवायत में यह भी है कि जब हुज़ूर (ﷺ) ने अपने हाथ से अपने ऊँट को नहर किया और नाई को बुलवाकर सिर मुँडवा लिया फिर तो सहाबा (रज़ि.) एक साथ खड़े हो गए और क़ुर्बानियों से फ़ारिग़ होकर एक दूसरे का सिर ख़ुद मुँडने लगे और मारे ग़म के और इज़्दहाम के क़रीब था कि आपस में लड़ पड़ें। उसके बाद ईमान वाली औरतें हुज़ूर (ﷺ) के पास आईं जिनके बारे में आयत (يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ) (60/मुम्तहिना : 10) नाज़िल हुई और हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस हुक्म के मातहत अपनी दो मुश्रिका बीवियों को उसी दिन तलाक़ दे दी जिनमें से एक ने मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान (रज़ि.) से निकाह कर लिया और दूसरी ने सफ़्वान बिन उमय्या (रज़ि.) से निकाह कर लिया। हुज़ूर (ﷺ) यहीं से वापिस लौटकर मदीना मुनव्वरा आ गए।

''अबू बसीर (रज़ि.) नामी एक क़ुरैशी जो मुसलमान थे मौक़ा पाकर मक्का से निकलकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मदीना पहुँचे उनके पीछे ही दो काफ़िर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि अ़हदनामा की बिना पर उस शख़्स को वापिस कीजिए हम क़ुरेशियों के भेजे हुए क़ासिद हैं और अबू बसीर (रज़ि.) को वापिस लेने आये हैं। आपने फ़र्माया, अच्छी बात है मैं उसे वापिस कर देता हूँ। चुनाँचे आपने हज़रत अबू बसीर (रज़ि.) को उन्हें सौंप दिया। यह उन्हें लेकर चले जब ज़ुल्हुलैफ़ा पहुँचे और बेफ़िक्री से वहाँ खजूरें खाने लगे तो हज़रत अबू बसीर (रज़ि.) ने उनमें से एक शख़्स से कहा, अल्लाह की क़सम! मैं देख रहा हूँ कि आपकी तलवार निहायत ही उ़म्दा है। उसने कहा, हाँ! बेशक बहुत ही अच्छे लोहे की है मैंने बारहा उसका तजुर्बा किया है उसकी काट का क्या पूछना है? यूँ कहते हुए उसने तलवार म्यान से निकाल ली। अबू बसीर (रज़ि.) ने हाथ बढ़ाकर कहा ज़रा मुझे दिखाना उसने दे दी आपने हाथ में लेते ही तोलकर एक ही हाथ में उस काफ़िर का काम तमाम कर दिया, दूसरा उस रंग को देखते ही मुट्ठियाँ बंद करके ऐसा सरपट भागा कि सीधा मदीना पहुँचकर दम लिया उसे देखते ही हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, यह बड़ी घबराहट में है कोई ख़ोफ़नाक मंज़र देख चुका है। इतने में यह क़रीब पहुँच गया और दुहाइयाँ देने लगा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा साथी तो मार डाला गया और मैं भी अब थोड़े पल का ही मेहमान हूँ देखिए वह आया। इतने में हज़रत अबू बसीर

(रज़ि.) पहुँच गए और अर्ज़ करने लगे या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला ने आपके ज़िम्मे को पूरा कर दिया है, आपने अपने वादे के मुताबिक़ मुझे इनके हवाले कर दिया, अब यह अल्लाह का करम है कि उसने मुझे इनसे रिहाई दिलवाई। आपने फ़र्माया, अफ़सोस! यह कैसा शख़्स है? यह तो लड़ाई की आग को भड़काने वाला है काश कि कोई इसे समझाये देता। यह सुनते ही हज़रत अबू बसीर (रज़ि.) चौंक गए कि मालूम होता है आप शायद मुझे दोबारा मुश्रिकीन के हवाले कर देंगे, यह सोचते ही हुज़ूर (ﷺ) के पास से चले गए मदीना को अलविदा कहा और लम्बे क़दमों समुन्द्र के किनारे की तरफ़ चल दिये और वहीं बूदो बाश इख़्तियार कर ली, यह वाक़िया मशहूर हो गया। इधर से अबू जन्दल बिन सुहैल (रज़ि.) जिन्हें हुदेबिया में इसी तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने वापिस किया था वह भी मौक़ा पाकर फिर मक्का से भाग खड़े हुए और बराहे रास्त हज़रत अबू बसीर (रज़ि.) के पास चले आए, अब यह हुआ कि मुश्रिकीने क़ुरैश में से जो भी ईमान क़बूल करता सीधा अबू बसीर (रज़ि.) के पास आ जाता और यहीं रहता सहता यहाँ तक कि एक ख़ासी मअक़ूल जमाअत ऐसे ही लोगों की जमा हो गई, और उन्होंने यह करना शुरू किया कि क़ुरैशियों का जो क़ाफ़िला शाम की तरफ़ जाने के लिए निकलता, यह उससे जंग करते जिसमें क़ुरैशी कुफ़्फ़ार क़त्ल भी हुए और उनके माल भी उन मुहाजिर मुसलमानों के हाथ लगे यहाँ तक कि क़ुरैशी तंग आ गये आख़िरकार उन्होंने पैग़म्बरे इलाही (ﷺ) की ख़िदमत में आदमी भेजा कि हज़रत! अल्लाह के वास्ते हम पर रहम करके उन लोगों को वहाँ से अपने पास बुलवा लीजिए, हम उन सबसे दस्तबरदार होते हैं उनमें से जो भी आपके पास आ जाए वह अमन में है हम आपको अपनी रिश्तेदारियाँ याद दिलाते हैं और अल्लाह तआला का वास्ता देते हैं कि उन्हें अपने पास बुलवा लो। चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने उस दरख़्वास्त को मंज़ूर कर लिया और उन हज़रात के पास आदमी भेजकर सबको बुलवा लिया और अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने आयत (वहुवल्लज़ी कफ़्फ़ा अयदियहुम) नाज़िल की।'' उन कुफ़्फ़ार की हमिय्यते जाहिलियत यह थी कि उन्होंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम न लिखने दी, आपके नाम के साथ रसूलुल्लाह न लिखने दिया। आपको बैतुल्लाह की ज़ियारत न करने दी। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल जिहादि वल मुसालिहति मअ अहलिल हर्ब : 2731, 2732; अबूदाऊद : 2765; अहमद : 4/323; इब्ने हिब्बान : 4872)

सहीह बुख़ारी की किताबुत्तफ़्सीर में है हबीब बिन अबू साबित (रह.) कहते हैं ''मैं अबू वाइल के पास गया ताकि उनसे पूछूँ उन्होंने कहा हम सिफ़्फ़ीन में थे एक शख़्स ने कहा, क्या तूने उन्हें नहीं देखा कि वह किताबुल्लाह की तरफ़ बुलाये जाते हैं। पस हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, हाँ! पस सुहैल बिन हनीफ़ (रज़ि.) ने कहा अपनी जानों पर तोहमत रखो हमने अपने आपको हुदेबिया वाले दिन देखा यानी उस सुलह के मौक़े पर जो नबी (ﷺ) और मुश्रिकीन के बीच हुई थी अगर हमारी राय लड़ने की होती तो हम यक़ीनन लड़ते। हज़रत उमर (रज़ि.) ने आकर कहा कि क्या हम हक़ पर और वह बातिल पर नहीं? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! कहा फिर हम क्यूँ अपने दीन में झुक जाएँ और लौट जाएँ हालाँकि अब तक रब्बे तआला ने हममें उनमें कोई फ़ैसलाकुन कार्रवाई नहीं की। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ इब्ने ख़त्ताब! मैं अल्लाह का रसूल हूँ वह

मुझे कभी भी ज़ाया न करेगा। यह जवाब सुनकर हज़रत उमर (रज़ि.) लौट आए लेकिन बहुत गुस्से में थे, वहाँ से हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास आए और यही सवाल व जवाब यहाँ भी हुए और सूरह फ़तह नाज़िल हुई।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह फ़तह बाब (इज़ युबायिऊनका तहतश्शजरा) : 4844; सहीह मुस्लिम : 1785) कुछ रिवायात में हज़रत सुहैल बिन हनीफ़ (रज़ि.) के यह अल्फ़ाज भी हैं कि मैंने अपने आपको अबू जन्दल वाले दिन देखा कि अगर मुझमें रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म को लौटाने की क़ुदरत होती तो मैं यक़ीनन लौटा देता। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या, बाब : 18; हदीस : 3181) उसमें यह भी है कि जब सूरह फ़तह उतरी तो हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उमर (रज़ि.) को बुलाकर यह सूरत उन्हें सुनाई। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जिज़्या : 3182; सहीह मुस्लिम : 1785; सुननुल कुब्रा : 11504) मुस्नद अहमद की रिवायत में है कि ''जिस वक़्त यह शर्त तै हुई कि उनका आदमी उन्हें वापिस किया जाए और हमारा आदमी वापिस न करें तो हुज़ूर (ﷺ) से कहा गया क्या हम यह भी मान लें और लिख दें? आपने फ़र्माया, हाँ! इसलिए कि हममें से जो उनमें जाए अल्लाह तआला उसे हममें से दूर ही रखे।'' (अहमद : 3/268; सहीह मुस्लिम, किताबुल जिहाद, बाब सुलह हुदेबिया : 1784) मुस्नद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि ''जब ख़ारजी निकल खड़े हुए और उन्होंने अलैहिदगी इख़्तियार की तो मैंने उनसे कहा, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुदेबिया वाले दिन जब मुश्रिकीन से सुलह की तो हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया, ऐ अली! लिख यह वह शराइत हैं जिन पर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (ﷺ) ने सुलह की तो मुश्रिकीन ने कहा अगर हम आपको रसूलुल्लाह मानते तो आपसे हर्गिज़ न लड़ते। तो आपने फ़र्माया, ऐ अली! उसे मिटा दो ऐ अल्लाह! तू ख़ूब जानता है कि मैं तेरा रसूल हूँ अली इसे काट दो और लिखो यह है जिस पर सुलह की मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने। अल्लाह तआला की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत अली (रज़ि.) से बहुत बेहतर थे, फिर भी आपने उस लिखे हुए को कटवा दिया, उससे कुछ आप नबुव्वत से नहीं निकल गए।'' (अबूदाऊद, किताबुल लिबास, बाब लिबासुल ग़लीज़ : 4037; मुख़्तसरन; वहुव सहीहुन; अहमद : 5/343) मुस्नद अहमद में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुदेबिया वाले दिन सत्तर ऊँट क़ुर्बान किये जिनमें एक ऊँट अबू जहल का भी था जब यह ऊँट बैतुल्लाह से रोक दिये गए तो उस तरह नाला व बोका करते थे जैसे उसका दूध पीता हुआ बच्चा खो गया हो।'' (अहमद : 1/314, 315; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ज़ईफ़ रावी है। तब्रानी : 12071; बैहक़ी : 5/230)

***

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ

اٰمِنِيْنَ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لَا تَخَافُوْنَ ۗ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ

مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''यक़ीनन अल्लाह तआला ने अपने रसूल के मुताबिक़ वाक़िया ख़्वाब सच्चा कर दिखाया कि इंशाअल्लाह! तुम यक़ीनन पूरे अम्नो अमान के साथ मस्जिदे हराम में जाओगे, सिर मुँडवाते हुए और सिर के बाल कतरवाते हुए चैन के साथ निडर होकर, वह उन उमूर को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते पस इसलिए इससे पहले एक नज़दीक की फ़तह तुम्हें मयस्सर की। (27) वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने बरहक़ के साथ भेजा ताकि उसे हर दीन से ऊपर रखे। और अल्लाह तआला काफ़ी है इज़्हारे हक़ करने वाला।'' (28)

नबी (ﷺ) का ख़्वाब बमंज़िलाह वही के होता है (आ. 27, 28) : रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़्वाब देखा था कि आप मक्का में गए और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। आपने इसका ज़िक्र अपने अस्हाब से मदीना में ही कर दिया था। हुदैबिया वाले साल जब आप उमरे के इरादे से चले तो उस ख़्वाब की बिना पर सहाबा (रज़ि.) को यक़ीने कामिल था कि इस सफ़र में ही हम कामयाबी के साथ इस ख़्वाब का ज़ुहूर देख लेंगे वहाँ जाकर जो रंगत बदली हुई देखी यहाँ तक कि सुलहनामा लिखकर बग़ैर ज़ियारते बैतुल्लाह वापिस होना पड़ा तो उन सहाबा (रज़ि.) पर निहायत शाक़ गुज़रा। चुनाँचे हज़रत उमर (रज़ि.) ने तो ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) से यह कहा भी कि आपने तो हमसे फ़र्माया था कि हम बैतुल्लाह जाएँगे और तवाफ़ से मुशर्रफ़ होंगे। आपने फ़र्माया, यह सहीह है लेकिन यह तो मैंने नहीं कहा था कि इसी साल ऐसा होगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने फ़र्माया, हाँ! यह तो नहीं फ़र्माया था। आपने फ़र्माया, फिर जल्दी क्या है? तुम बैतुल्लाह जाओगे ज़रूर और तवाफ़ भी यक़ीनन करोगे। फिर हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से यही कहा और ठीक यही जवाब पाया। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शुरूत, बाब अश्शुरूतु फ़िल जिहाद वल मुसालिहति मअ अहलिल हर्ब : 2731, 2732) इस आयत में (इंशाअल्लाह) है यह इस्तिस्ना के लिए नहीं बल्कि तहक़ीक़ और ताकीद के लिए है। इस मुबारक ख़्वाब की तावील को सहाबा (रज़ि.) ने देख लिया और पूरे अम्नो इत्मिनान के साथ मक्का में गए और वहाँ जाकर एहराम खोलते हुए कुछ ने अपना सिर मुँडवाया और कुछ ने बाल कतरवाए। सहीह हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''अल्लाह तआला सिर मुँडवाने वालों पर रहम करे। लोगों ने कहा, हज़रत और कतरवाने वालों पर भी। आपने दोबारा यही फ़र्माया। फिर लोगों ने वही कहा आख़िर तीसरी या चौथी बार में आपने कतरवाने वालों के लिए भी रहम की दुआ की।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब अल्हलक़ वत्तक़्सीरु इन्दल एहलाल : 1727; सहीह मुस्लिम : 1301)

फिर फ़र्माया बेख़ौफ़ होकर यानी मक्का में जाते वक़्त भी अम्नो अमान से होंगे, और मक्का का

क़ियाम भी बेख़ौफ़ी का होगा। चुनाँचे उमरा क़ज़ा में यही हुआ, यह उमरा ज़ी क़अ़द सन 7 हिज्री में हुआ था। हुदेबिया से आप ज़ी क़अ़दा के महीने में लोटे ज़िल्हिज्ज और मुहर्रम तो मदीना में क़ियाम रहा, सफ़र में ख़ैबर की तरफ़ गए उसका कुछ हिस्सा तो अज़्रूए जंग फ़तह हुआ और कुछ हिस्सा अज़्रूए सुलह मुसख़्ख़र हुआ, यह बहुत बड़ा इलाक़ा था उसमें खजूरों के बाग़ात और खेतियाँ बकसरत थीं, यहीं के यहूदियों को आपने बतौरे ख़ादिम यहाँ रखकर उनसे यह मामला तै किया कि वह बाग़ात और खेतियों की हिफ़ाज़त और ख़िदमत करें और पैदावार का आधा हिस्सा दे दिया करें। ख़ैबर की तक़्सीम रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिर्फ़ उन ही सहाबा में की जो हुदेबिया में मौजूद थे उनके सिवा किसी और को उस जंग में आपने हिस्सेदार नहीं बनाया, सिवा उन लोगों के जो हब्शा की हिज्रत से वापिस आए थे, हज़रत जअ़फ़र बिन अबू तालिब (रज़ि.) और उनके साथी हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़ि.) और उनके साथी और जंगे हुदेबिया में जो हज़रात हुज़ूर (ﷺ) के साथ थे वह सब उस फ़तहे ख़ैबर में भी साथ थे सिवा हज़रत अबू दुजाना सिमाक बिन ख़रशा (रज़ि.) के। (तब्री : 22/259) जैसे कि इसका पूरा बयान अपनी जगह है। यहाँ से आप सालिम व ग़ानिम वापिस तशरीफ़ लाये और माहे ज़ी क़अ़द सन 7 हिज्री में मक्का की तरफ़ उमरा के इरादे के साथ अहले हुदेबिया को साथ लेकर आप रवाना हुए, ज़ुल्हुलैफ़ा से एहराम बाँधा क़ुर्बानी के लिए साठ ऊँट लिए और लब्बैक पुकारते हुए जहरान के क़रीब पहुँचकर हज़रत मुहम्मद बिन सलमा (रज़ि.) को कुछ घुड़सवारोंके साथ हथियार बंद आगे आगे रवाना किया, उससे मुश्रिकीन के औसान ख़ता हो गए और मारे डर के उनके कलेजे उछलने लगे, उन्हें ख़याल गुज़रा कि यह तो पूरी तैयारी और कामिल साज़ो-सामान के साथ आए हैं तो ज़रूर लड़ाई के इरादे से ही आए हैं उन्होंने शर्त तोड़ दी कि दस साल तक कोई लड़ाई न होगी। चुनाँचे यह लोग दौड़े हुए मक्का गए और अहले मक्का को उसकी ख़बर दी। हुज़ूर (ﷺ) जब मर्रुज़्ज़हरान में पहुँचे जहाँ से कअ़बा के बुत दिखाई देते थे तो आपने तमाम नेज़े भाले तीर कमान बत्ने याजिज में भेज दिये मुताबिक़े शर्त सिर्फ़ तलवारें पास रख लीं और वह भी म्यान में थीं। अभी आप रास्ते में ही थे जो क़ुरैश का भेजा हुआ आदमी मुक्रिज़ बिन हफ़्स आया और कहने लगा, हुज़ूर (ﷺ)! आपकी आदत तो अहद तोड़ने की नहीं। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, क्या बात है? वह कहने लगा कि आप तीर और नेज़े लेकर आ रहे हैं। आपने फ़र्माया, नहीं! हमने तो वह सब याजिज भेज दिये। उसने कहा, यही हमें आपकी ज़ात से उम्मीद थी आप हमेशा से भलाई नेकी और वफ़ादारी करने वाले हैं। सरदाराने कुफ़्फ़ार तो बवजह ग़ेज़ो ग़ज़ब और रंजो ग़म के शहर से बाहर चले गए क्योंकि वह तो आपको और आपके अस्हाब को देखना भी नहीं चाहते थे और जो लोग मक्का में रह गए थे वह सब मर्द औरत बच्चे तमाम रास्तों पर और कोठों पर और छतों पर खड़े हो गए और एक इस्तिअ़जाब की नज़र से उस मुख़्लिस गिरोह को उस पाक लश्कर को उस ख़ुदाई फ़ौज (अल्लाह के लश्कर) को देख रहे थे। आपने क़ुर्बानी के जानवर ज़ी तुवा में भेज दिये थे, ख़ुद आप अपनी मशहूर ऊँटनी क़सवा पर सवार थे आगे आगे आपके अस्हाब (रज़ि.) थे जो बराबर लब्बैक पुकार रहे थे। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा अंसारी (रज़ि.) आपकी ऊँटनी की नकेल थामे हुए थे और यह अश्आर पढ़ रहे थे,

باسم الذی لا دین الا دینه بسم الذی محمد رسوله

خلوا بنی الکفار عن سبیله الیوم نضربکم علی تاویله

کما ضربنا کم علی تنزیله ضربا یزیل الهام عن مقیله

و یذهل الخلیل عن خلیله قد انزل الرحمن فی تنزیله

فی صحف تتلی علی رسوله بان خیر القتل فی سبیله

یارب انی مومن بقیله

यानी उस अल्लाह तआला के नाम से जिसके दीन के सिवा और कोई दीन क़ाबिले क़बूल नहीं, उस अल्लाह के नाम से जिसके रसूल हज़रत मुहम्मद (ﷺ) हैं। ऐ काफ़िरों के बच्चो! हुज़ूर (ﷺ) के रास्ते से हट जाओ आज हम तुम्हें आपके लौटने पर भी वैसा ही मारेंगे जैसाकि आपके आने पर मारा था, वह मार जो दिमाग़ को उसके ठिकाने से हटा दे और दोस्त को दोस्त से भुला दे। अल्लाह तआला रहम वाले ने अपनी वही में नाज़िल किया है जो इन सहीफ़ों में महफ़ूज़ है जो उसके रसूल के सामने तिलावत किये जाते हैं कि सबसे बेहतर मौत शहादत की मौत है जो उसकी राह में हो। ऐ मेरे परवरदिगार! मैं इस बात पर ईमान ला चुका हूँ। कुछ रिवायतों में अल्फ़ाज़ में कुछ हेर फेर भी है।

मुस्नदे अहमद में है कि ''उस उमरे के सफ़र में जब हुज़ूर (ﷺ) मर्रुज़्ज़हरान में पहुँचे तो सहाबा (रज़ि.) ने सुना कि अहले मक्का कहते हैं यह लोग बवजह लाग़री और कमज़ोरी के उठ बैठ नहीं सकते, यह सुनकर सहाबा हुज़ूर (ﷺ) के पास आये और कहा अगर आप इजाज़त दें तो हम अपनी सवारियों के चंद जानवर ज़िब्ह कर लें उनका गोश्त खायें और शोरबा पियें और ताज़ा दम होकर मक्का में जाएँ। आपने फ़र्माया, नहीं! ऐसा न करो तुम्हारे पास जो खाना हो उसे जमा करो। चुनाँचे जमा किया दस्तरख़्वान बिछाया और खाने बैठे तो हुज़ूर (ﷺ) की दुआ की वजह से खाने में इतनी बरकत हुई कि सबने खा पी लिया और तोशेदान भर लिये। आप मक्का मुकर्रमा में आये सीधे बैतुल्लाह गए क़ुरैशी हतीम की तरफ़ बैठे हुए थे आपने चादर के पल्ले दायें बग़ल के नीचे से निकालकर बाएँ कँधे पर डाल लिये और अस्हाब (रज़ि.) से फ़र्माया, यह लोग तुममें सुस्ती और लाग़री महसूस न करें। अब आपने रुक्न को बोसा देकर दौड़ने की सी चाल से तवाफ़ शुरू किया जब रुक्ने यमानी के पास पहुँचे जहाँ क़ुरैश की नज़रें नहीं पड़ती थीं तो वहाँ से आहिस्ता आहिस्ता चलकर हज्रे अस्वद तक पहुँचे। क़ुरैश कहने लगे तुम लोग तो हिरनों की तरह चौकड़ियाँ भर रहे हो गोया चलना तुम्हें पसंद ही नहीं। तीन बार तो आप इसी तरह हल्की दौड़ की सी चाल हज्रे अस्वद से रुक्ने यमानी तक चलते रहे तीन फेरे इसी तरह किये, चुनाँचे यही मस्नून तरीक़ा है।'' एक रिवायत में है कि ''आपने

हज्जतुल वदाअ में भी इसी तरह तवाफ़ के तीन फेरों में रमल किया यानी दुलकी चाल चले।'' (अहमद : 1/305; वसनदुहू हसन; व सहीहुन इब्ने हिब्बान : 3801; दूसरा नुस्ख़ा : 3812) बुख़ारी व मुस्लिम में है कि अस्हाबे रसूल के लिए मदीना की आबो हवा शुरू में कुछ नामुवाफ़िक़ पड़ी थी और बुख़ार की वजह से यह कुछ कमज़ोर हो गए थे, जब आप मक्का में पहुँचे तो मुश्रिकीने मक्का ने कहा यह लोग जो आ रहे हैं इन्हें मदीने के बुख़ार ने कमज़ोर और सुस्त कर दिया है। अल्लाह तआला ने मुश्रिकीन के उस कलाम की ख़बर अपने रसूल (ﷺ) को कर दी। मुश्रिकीन हतीम के पास बैठे हुए थे आपने अपने अस्हाब को हुक्म दिया कि वह हज्रे अस्वद से लेकर रूक्ने यमानी तक तवाफ़ के तीन पहले फेरों में दुलकी चाल चलें और रुक्ने यमानी से हज्रे अस्वद तक जहाँ जाने के बाद मुश्रिकीन की निगाहें नहीं पड़ती थीं वहाँ अपनी चाल चलें पूरे सातों फेरों में रमल करने को न कहना यह सिर्फ़ बतौरे रहम के था। मुश्रिकों ने जब देखा कि यह तो सबके सब कूदकर फूर्ती और चुस्ती से तवाफ़ कर रहे हैं तो आपस में कहने लगे, क्यूँ जी! इन्हीं की निस्बत उड़ा रखा था कि मदीने के बुख़ार ने इन्हें सुस्त व लाग़र कर दिया है? यह लोग तो फ़लाँ और फ़लाँ से भी ज़्यादा चुस्त व चालाक हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब कैफ़ काना बदअर्रमल : 1602; मुख़्तसरन सहीह मुस्लिम : 1266; अबूदाऊद : 1886; अहमद : 1/294) एक रिवायत में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ज़ुल्क़अदा की चौथी तारीख़ को मक्का मुकर्रमा पहुँच गए थे।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा : 4256) और रिवायत में है कि मुश्रिकीन उस वक़्त क़ुईक़ान की तरफ़ थे। हुज़ूर (ﷺ) का सफ़ा मरवा की तरफ़ सई करना भी मुश्रिकों को अपनी कुव्वत दिखाने के लिए था। हज़रत इब्ने अबी औफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं उस दिन हम आप पर छाये हुए थे इसलिए कि कोई मुश्रिक या कोई नासमझ आपको कोई नुक़्सान न पहुँचा सके। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा : 4255) बुख़ारी में है ''हुज़ूर (ﷺ) उमरे के लिए निकले लेकिन कुफ़्फ़ारे क़ुरैश ने रास्ता रोक लिया और आपको बैतुल्लाह तक न जाने दिया आपने वहीं क़ुर्बानियाँ की और वहीं यानी हुदेबिया में सिर मुँडवा लिया और उनसे सुलह कर ली जिसमें यह तै हुआ कि आप अगले साल उमरा करेंगे सिवा तलवारों के और कोई हथियार अपने साथ लेकर मक्का मुकर्रमा में नहीं आएँगे और वहाँ इतनी ही मुद्दत ठहरेंगे जितने अहले मक्का चाहें। पस अगले साल यह सब इसी तरह आए तीन दिन तक ठहरे फिर मुश्रिकीन ने कहा अब आप चले जाएँ चुनाँचे आप वहाँ से वापिस चले आए।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा : 4252) सहीह बुख़ारी में है कि ''रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ज़ी क़अदा में उमरा करने का इरादा किया लेकिन अहले मक्का हाइल हुए तो आपने उनसे यह फ़ैसला किया कि आप सिर्फ़ तीन दिन ही मक्का में ठहरेंगे जब सुलहनामा लिखने लगे तो लिखा यह वह है जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लह (ﷺ) ने सुलह की तो अहले मक्का ने कहा कि अगर आपको हम रसूलुल्लाह जानते तो हर्गिज़ न रोकते बल्कि आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखिए आपने फ़र्माया मैं रसूलुल्लाह हूँ मैं मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हूँ, फिर आपने हज़रत अली बिन अबू तालिब (रज़ि.) से फ़र्माया लफ़्ज़े रसूलुल्लाह को मिटा दो हज़रत अली (रज़ि.) ने फ़र्माया, नहीं! नहीं! अल्लाह की क़सम! मैं इसे हर्गिज़ न मिटाऊँगा चुनाँचे आपने सुलहनामा को

अपने हाथ में लेकर बावजूद अच्छी तरह लिखना न जानने के लिखा कि यह वह है जिस पर मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने सुलह की यह कि मक्का में हथियार लेकर दाख़िल न होंगे सिर्फ़ तलवार होगी और वह भी म्यान में और यह कि अहले मक्का में से जो आपके साथ जाना चाहेगा उसे आप अपने साथ नहीं ले जाएँगे और यह कि आपके साथियों में से जो मक्के में रहने के इरादे से ठहरना चाहेगा आप रोकेंगे नहीं, पस जब आप आये और वक़्ते मुक़र्ररा गुज़र चुका तो मुश्रिकीन हज़रत अली (रज़ि.) के पास आये और कहा आप हुज़ूर (ﷺ) से कहिए कि अब वक़्त गुज़र चुका तशरीफ़ ले जाएँ, चुनाँचे आपने कूच कर दिया। हज़रत हमज़ा (रज़ि.) की साहबज़ादी चचा चचा कहकर आपके पीछे हो लीं हज़रत अली (रज़ि.) ने उन्हें ले लिया और उँगली थामकर हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) के पास ले गए और कहा अपने चचा की लड़की को अच्छी तरह रखो हज़रत फ़ातिमा (रज़ि.) ने बड़ी ख़ुशी से बच्ची को अपने पास बिठा लिया। अब हज़रत अली और हज़रत ज़ेद और हज़रत जअफ़र (रज़ि.) में झगड़ा होने लगा, हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते थे उन्हें मैं ले आया हूँ और यह मेरे चचा की साहबज़ादी हैं। जअफ़र (रज़ि.) फ़र्माते थे, मेरी चचाज़ाद बहन है और इनकी ख़ाला मेरे घर में हैं। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) फ़र्माते थे मेरे भाई की लड़की है। हुज़ूर (ﷺ) ने उस झगड़े का फ़ैसला यूँ किया कि लड़की को तो उनकी ख़ाला को सौंपा और फ़र्माया ख़ाला माँ की जगह है। हज़रत अली (रज़ि.) से फ़र्माया तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ। हज़रत जअफ़र (रज़ि.) से फ़र्माया तू ख़ुल्क़ और ख़ल्क़ में मुझसे पूरी मुशाबिहत रखता है। हज़रत ज़ेद (रज़ि.) से फ़र्माया तू हमारा भाई और हमारा मौला है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब उम्रतुल क़ज़ा : 4251) हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! आप (हज़रत) हमज़ा की लड़की से निकाह क्यूँ न कर लें? आपने फ़र्माया, वह मेरी रज़ाई भाई की लड़की है।'' फिर फ़र्माता है अल्लाह तआला जिस ख़ैरो मस्लिहत को जानता था और जिसे तुम नहीं जानते थे उसकी बिना पर तुम्हें इस साल मक्का से रोक दिया और अगले साल जाने दिया और उस जाने से पहले ही जिसका वादा ख़्वाब की शक्ल में रसूलुल्लाह (ﷺ) से हुआ था तुम्हें फ़तह क़रीब इनायत की यह फ़तह वह सुलह है जो तुम्हारे और तुम्हारे दुश्मनों के बीच हुई। उसके बाद अल्लाह तआला मोमिनों को ख़ुशख़बरी सुनाता है कि वह अपने रसूल को उन दुश्मनों और तमाम दुश्मनों पर फ़तह देगा। उसने आपको इल्मे नाफ़ेअ और अमले सालेह के साथ भेजा है। शरीअत में दो ही चीज़ें होती हैं इल्म और अमल पस इल्मे शरई सहीह इल्म है और अमले शरई मक़्बूलियत वाला अमल है उसके अख़बार सच्चे, उसके अहकाम सरासर अदल व हक़ वाले। चाहत यह है कि रूए ज़मीन पर जितने दीन हैं अरबों में अज्मियों में मुस्लिमीन में, मुश्रिकीन में उन सब पर इस अपने दीन को ग़ालिब और ज़ाहिर बाहिर करे। अल्लाह काफ़ी गवाह है इस बात पर कि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह ही आपका मददगार है, वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम!

***

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ
رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ؗ سِيْمَاهُمْ فِىْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ
السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِى التَّوْرٰىةِ ۛۖ وَمَثَلُهُمْ فِى الْاِنْجِيْلِ ۛ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْئَهٗ
فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : "मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं काफ़िरों पर सख़्त हैं आपस में रहम दिल हैं तू उन्हें देखेगा कि रुकूअ और सज्दे कर रहे हैं अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और रज़ामंदी की जुस्तजू में हैं, उनका निशान उनके चेहरों पर सज्दों के असर से है, उनकी यही सिफ़त तौरात में है और इनकी सिफ़त इंजील में है। मिस्ल उस खेती के जिसने अपना पुट्ठा निकाला फिर उसे मज़बूत किया और वह मोटा हो गया फिर अपनी जड़ पर सीधा खड़ा हो गया और किसानों को ख़ुश करने लगा ताकि उनकी वजह से काफ़िरों को चिढ़ाए, उन ईमान वालों और शाइस्ता आमाल वालों से अल्लाह ने बख़्शिश का और बहुत बड़े सवाब का वादा किया है।" (29)

अस्हाबे रसूल (ﷺ) से बुग़्ज़ व इनाद कुफ़्र है (आ. 29) इन आयतों में पहले नबी (ﷺ) की सिफ़त व सना बयान हुई कि आप अल्लाह के बरहक़ रसूल हैं, फिर आपके सहाबा की सिफ़त व सना बयान हो रही है कि वह मुख़ालिफ़ीन पर सख़्ती करने वाले और मुसलमानों पर नर्मी करने वाले हैं जैसे और आयत में है (اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ) (5/माइदा : 54) मोमिनों के सामने नर्म कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में गर्म। हर मोमिन की यही शान होनी चाहिए कि वह मोमिनों से ख़ुशख़ल्क़ और मुतवाज़ेअ रहे और कुफ़्फ़ार पर सख़्ती करने वाला और कुफ़्र से नाख़ुश रहे। क़ुरआने हकीम फ़र्माता है (يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً) (9/तौबा : 123) ईमान वालों अपने पास के काफ़िरों से जिहाद करो वह तुममें सख़्ती महसूस करें। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "आपस में मुहब्बत और नर्म दिली में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म की तरह है कि अगर किसी एक हिस्से में दर्द हो तो सारा जिस्म बेक़रार हो जाता है कभी बुख़ार चढ़ आता है कभी नींद उचाट हो जाती है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रहमतुन्नास वल्बहाइम : 6011; सहीह मुस्लिम : 2586; अहमद : 4/270; इब्ने हिब्बान : 233) आप

फ़र्माते हैं मोमिन मोमिन के लिए मिस्ल दीवार के है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब तआवनुल मोमिनीन बअ़ज़ुहुम बअ़ज़न : 6026; सहीह मुस्लिम : 2585; तिर्मिज़ी : 1928; अहमद : 4/405; इब्ने हिब्बान : 231) जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को तक़्वियत पहुँचाता और मज़बूत करता है फिर आपने अपने दोनों हाथों की उँगलियाँ एक दूसरी में मिलाकर बताईं। फिर उनका और वस्फ़ बयान फ़र्माया कि नेकियाँ बकसरत करते हैं ख़ुसूसन नमाज़ जो तमाम नेकियों से अफ़ज़ल व आला है। फिर उनकी नेकियों में चार चाँद लगाने वाली चीज़ का बयान किया यानी उनके ख़ुलूस और रज़ाए रब तल्बी का, कि यह अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और उसकी रज़ा के मुतलाशी हैं। यह अपने आमाल का बदला अल्लाह तआला से चाहते हैं जो जन्नत है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इन्हें मिलेंगी और अल्लाह तआला अपनी रज़ामंदी भी उन्हें अता करेगा जो बहुत बड़ी चीज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि "चेहरों पर सज्दों के असर से अलामत होने से मुराद अच्छे अख़्लाक़ हैं।" (तब्री : 22/263) मुजाहिद (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ है। (तब्री : 22/263) हज़रत मुजाहिद (रह.) कहते हैं "मेरा तो यह ख़्याल था कि इससे मुराद नमाज़ का निशान है जो माथे पर पड़ जाता है।" आपने फ़र्माया यह तो उनकी पेशानियों पर भी होता है जिनके दिल फ़िरऔन से भी ज़्यादा सख़्त होते हैं। हज़रत सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं "नमाज़ उनके चेहरे अच्छे कर देती है।" कुछ सलफ़ से मंक़ूल है जो रात को बकसरत नमाज़ पढ़ेगा उसका चेहरा ख़ूबसूरत होगा। हज़रत जाबिर (रज़ि.) की रिवायत से इब्ने माजा की एक मरफ़ूअ हदीस में भी यही मफ़्हूम है। (इब्ने माजा, किताब इक़ामतिस्सलात, बाब मा जाअ फ़ी क़ियामिल्लैल 1333 वहुव हदीसुन मौज़ूअ) लेकिन सहीह यह है कि यह मौक़ूफ़ है। कुछ बुज़ुर्गों का क़ौल है कि नेकी की वजह से दिल में नूर होता है चेहरे पर रोशनी आती है, रोज़ी में कुशादगी होती है, लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा होती है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान (रज़ि.) का फ़र्मान है कि "जो शख़्स अपने अंदरूनी पोशीदा हालात की इस्लाह करे और भलाइयाँ पोशीदगी से करे अल्लाह तआला उसके चेहरे की सल्वटों पर और उसके ज़ुबान के किनारों पर उन नेकियों को ज़ाहिर कर देता है।" अल्ग़र्ज़ दिल का आईना चेहरा है जो उसमें होता है उसका असर चेहरे पर होता है पस मोमिन जब अपने दिल को दुरुस्त कर लेता है, अपना बातिन सँवार लेता है तो अल्लाह तआला उसके ज़ाहिर को भी लोगों की निगाहों में सँवार देता है।" अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) फ़र्माते हैं जो शख़्स अपने बातिन की इस्लाह कर लेता है अल्लाह तआला उसके ज़ाहिर को भी आरास्ता व पैरास्ता कर देता है।" तब्रानी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "जो शख़्स जैसी बात पोशीदा रखता है अल्लाह तआला उसे उसी की चादर ओढ़ा देता है अगर वह पोशीदगी भली है तो भलाई की और अगर बुरी है तो बुराई की।" (तब्रानी वसनदुहू मौज़ूउन हामिद बिन आदम मर्वज़ी कज़्ज़ाब व मुहम्मद बिन उबेदुल्लाह अर्ज़मी मतरूक) लेकिन इसका एक रावी अर्ज़मी मतरूक है। मुस्नद अहमद में आपका फ़र्मान है कि "अगर तुममें से कोई शख़्स किसी ठोस चट्टान में घुसकर जिसका न कोई दरवाज़ा हो न उसमें कोई सूराख़ हो कोई अमल करेगा अल्लाह उसे भी लोगों के सामने रख देगा, बुराई हो तो और भलाई हो तो।" (अहमद : 3/28; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) मुस्नद की और हदीस में है "नेक तरीक़ा,

अच्छा ख़ुल्क़ और म्यानारवी नबुव्वत के पच्चीस्वें हिस्से में से एक हिस्सा है।" (अहमद : 1/296; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्वक़ार : 4776; वहुव हसन; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; वलिल्हदीसि शाहिद हसन इन्दत्तिर्मिज़ी (2010) अल्ग़र्ज़ सहाबा किराम (रज़ि.) की मिन्नतें ख़ालिस थीं आमाल अच्छे थे पस जिसकी निगाह उनके चेहरों पर पड़ती थी उसे उनकी पाक बाज़ी जच जाती थी और वह उनके चाल चलन और उनके अख़लाक़ और उनके तरीक़ेकार पर ख़ुश होता था। हज़रत इमाम मालिक (रह.) का फ़र्मान है कि जिन सहाबा (रज़ि.) ने शाम का मुल्क फ़तह किया जब वहाँ के नसरानी उनके चेहरे देखते तो बेसाख़्ता पुकार उठते अल्लाह तआला की क़सम! यह हज़रत ईसा (عليه السلام) के हवारियों से बहुत ही बेहतर व अफ़ज़ल हैं। फ़िल्वाक़ेअ (वास्तव) इनका यह क़ौल सच्चा है अगली किताबों में इस उम्मत की फ़ज़ीलत व अज़्मत मौजूद है और इस उम्मत की सफ़े अव्वल इनके बेहतर व बुज़ुर्ग अस्हाबे रसूल हैं और ख़ुद इनका ज़िक्र भी अगली आसमानी किताबों में और पहले के वाक़ियात में मौजूद हैं। पस फ़र्माया यही मिसाल इनकी तौरात में है। फिर फ़र्माता है और इनकी मिसाल इंजील में मानिन्द खेती के बयान की गई है जो अपना सब्ज़ा निकालती है फिर उसे मज़बूत और क़वी करती है फिर वह ताक़तवर और मोटा हो जाता है और अपनी बाल पर सीधा खड़ा हो जाता है, अब खेती वाले की ख़ुशी का क्या पूछना है? इसी तरह अस्हाबे रसूल हैं कि उन्होंने आपकी ताईद व नुसरत की पस वह आपके साथ वही रिश्ता रखते हैं जो पुट्ठे और सब्ज़े को खेती से था। यह इसलिए कि कुफ़्फ़ार झेंपे। हज़रत इमाम मालिक (रह.) ने इस आयत से राफ़्ज़ियों के कुफ़्र पर इस्तिदलाल किया है क्योंकि वह सहाबा से चिढ़ते हैं और उनसे बुग़्ज़ रखने वाला काफ़िर है। उलमा की एक जमाअत भी इस मसले में इमाम साहब के साथ है। सहाबा किराम के फ़ज़ाइल में और उनकी लग़्ज़िशों से चश्मपोशी करने में बहुत सी अहादीस आई हैं। ख़ुद रब्बे तआला ने उनकी ता'रीफ़ें बयान कीं और उनसे अपनी रज़ामंदी का इज़्हार किया है। क्या इनकी बुज़ुर्गी में यह काफ़ी नहीं? फिर फ़र्माता है कि इन ईमान वालों और नेक आमाल वालों से अल्लाह तआला का वादा है कि उनके गुनाह माफ़ और उनका अज्रे अज़ीम और रिज़्क़े करीम सवाबे जज़ील और बदला कबीर साबित। याद रहे कि (मिन्हुम) में जो मिन है वह यहाँ बयाने जिंस के लिए है। अल्लाह तआला का यह सच्चा और अटल वादा है जो न बदले न ख़िलाफ़ हो, उनके क़दम ब क़दम चलने वाले उनकी रविश पर कारबंद होने वालों से भी अल्लाह तआला का यह वादा साबित है लेकिन फ़ज़ीलत और सब्क़त और कमाल और बुज़ुर्गी जो उन्हें है उम्मत में से किसी को नहीं, अल्लाह उनसे ख़ुश यह अल्लाह से ख़ुश यह जन्नती हो चुके और बदले पा लिये। सहीह मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मेरे सहाबा को बुरा न कहो उनकी बेदअबी और गुस्ताख़ी न करो। उसकी क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अगर तुममें से कोई उहुद पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करे तो उनके तीन पाव अनाज बल्कि डेढ़ पाव अनाज के अज्र को भी नहीं पा सकता।" (सहीह मुस्लिम, किताब फ़ज़ाइले सहाबा, बाब तहरीमु सब्बिस्सहाबा (रज़ि.) 2540)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह फ़तह की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह हुजुरात - 49

आयात : 18 मदनी पैराग्राफ : 5

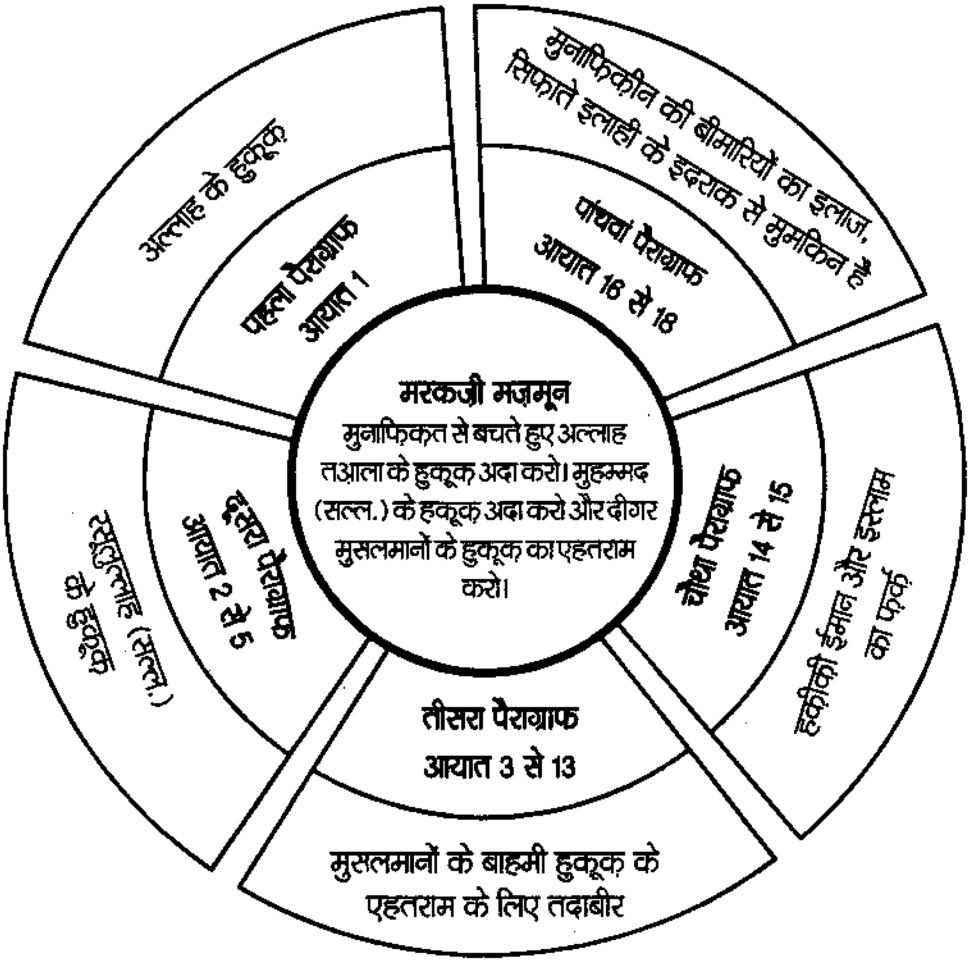

तफ़्सीर सूरह हुजुरात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ① يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْۤا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا
تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا
تَشْعُرُوْنَ ② اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ③

तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालों! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहा करो। यक़ीनन अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है। (1) ऐ ईमान वालों! अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से ऊपर न करो और न उससे ऊँची आवाज़ से बात करो जैसे आपस में एक दूसरे से करते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएँ और तुम्हें ख़बर भी न हो। (2) बेशक जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुज़ूर में अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं यही वह लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने परहेज़गारी के लिए जाँच लिया है। इनके लिए मग़्फ़िरत है और बड़ा सवाब है।'' (3)

आदाबे रिसालत का बयान (आ. 1 से 3) : इन आयतों में अल्लाह तआला उम्मतियों को अपने नबी के आदाब सिखाता है कि तुम्हें अपने नबी की तौक़ीर व एहतिराम इज़्ज़त व एअज़ाम करना चाहिए तमाम कामों में अल्लाह तआला और रसूल के पीछे रहना चाहिए। इत्तिबाअ और ताबेदारी की ख़ू (आदत) डालनी चाहिए। हज़रत मआज़ (रज़ि.) को जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यमन की तरफ़ भेजा तो फ़र्माया कि ''किस चीज़ के साथ हुक्म करोगे? जवाब दिया किताबुल्लाह के साथ। फ़र्माया अगर न पाओ? जवाब दिया सुन्नते

रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ फ़र्माया, अगर न पाओ। जवाब दिया इज्तिहाद करूँगा। तो आपने उसके सीने पर हाथ रखकर फ़र्माया अल्लाह तआला का शुक्र है जिसने रसूलुल्लाह (ﷺ) के क़ासिद को ऐसी तौफ़ीक़ दी जिससे अल्लाह तआला का रसूल ख़ुश हो।'' (अबूदाऊद, किताबुल क़ज़ा, बाब इज्तिहादुर्राय फ़िल्क़ज़ाइ : 3592; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हारिस बिन अम्र रावी मज्हूल है और सय्यदना मआज़ (रज़ि.) के शागिर्द भी नामालूम हैं। तिर्मिज़ी : 1327; अहमद : 5/230; मुस्नदे तयालिसी : 1/286; बैहक़ी : 10/114; तब्क़ात : 2/347; जामेअ बयानुल इल्म : 2/55) यहाँ इस हदीस के वारिद करने से हमारा मक़सद यह है कि हज़रत मआज़ (रज़ि.) ने अपनी राय नज़र और इज्तिहाद को किताबो सुन्नत से मुअख़्ख़र रखा। पस किताबो सुन्नत पर राय को मुक़द्दम करना यह है अल्लाह तआला और उसके रसूल से आगे बढ़ना। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मतलब यह है कि किताबो सुन्नत के ख़िलाफ़ न कहो। (तब्री : 22/275) हज़रत औफ़ी (रह.) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) के कलाम के सामने बोलने से मना कर दिये गए। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं कि जब तक किसी अम्र की बाबत अल्लाह के रसूल (ﷺ) कुछ न फ़र्माएँ तुम ख़ामोश रहो। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हुजुरात क़ब्ल हदीस : 4845) हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं ''अम्रे दीन अहकामे शरई हैं सिवा अल्लाह तआला के कलाम के और उसके रसूल (ﷺ) की हदीस के तुम किसी और चीज़ से फ़ैसला न करो।''

हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.) का इर्शाद है ''किसी क़ौल व फ़ेअल में अल्लाह और उसके रसूल की हदीस के सिवा तुम किसी और चीज़ से फ़ैसला न करो हज़रत सुफ़्यान सौरी का इर्शाद है किसी क़ौल व फ़ेअल में अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर सब्क़त न करो।'' इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं मुराद यह है कि ''इमाम से पहले दुआ न करो।'' हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि लोग कहते थे अगर फ़लाँ फ़लाँ में हुक्म उतरे तो उस तरह रखना चाहिए इसे अल्लाह ने नापसंद किया। (तब्री : 22/276) फिर इर्शाद होता है कि हुक्मे इलाही की बजाआवरी में अल्लाह का लिहाज़ रखो। अल्लाह तुम्हारी बातें सुन रहा है और तुम्हारे इरादे जान रहा है। फिर दूसरा अदब सिखाता है कि वह नबी की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलंद न करें, यह आयत हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई। सहीह बुख़ारी में हज़रत इब्ने अबी मुलैका (रह.) से मरवी है कि ''क़रीब था कि दो बेहतरीन हस्तियाँ हलाक हो जाएँ यानी हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) उन दोनों की आवाज़ें हुज़ूर (ﷺ) के सामने बुलंद हो गईं जबकि जो तमीम का वफ़्द हाज़िर हुआ था, एक तो अक़रअ बिन हाबिस (रज़ि.) को कहते थे जो बनी मजाशेअ में थे और दूसरे शख़्स की बाबत कहते थे। उस पर हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने फ़र्माया कि तुम तो मेरे ख़िलाफ़ ही किया करते हो। फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि. ने जवाब दिया नहीं नहीं आप यह ख़्याल भी न कीजिए।'' इस पर यह आयत नाज़िल हुई। हज़रत इब्ने ज़ुबेर (रज़ि.) फ़र्माते हैं उसके बाद तो हज़रत उमर (रज़ि.) इस तरह हुज़ूर (ﷺ) से नर्म कलामी करते थे कि आपको दोबारा पूछना पड़ता था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हुजुरात बाब (ला तर्फ़उ अस्वातकुम फ़ौक़ सौतिन्नबी) : 4845) और रिवायत में है कि ''हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) फ़र्माते थे

क़ेअक़ाअ बिन मअबद (रज़ि.) को उस वफ़्द का अमीर बनाइए और हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते थे नहीं बल्कि हज़रत अक़रअ बिन हाबिस (रज़ि.) को, उसमे आवाज़ें कुछ बुलंद हो गईं जिस पर यह आयत (या अय्युहल्लज़ीना आमनू ला तुक़द्दिमू) नाज़िल हुई और (वलौ अन्नहुम सबरू...)" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हुजुरात बाब (ला तर्फ़ऊ अस्वातकुम फ़ौक़ सौतिन्नबी) : 4847; तिर्मिज़ी : 3266) मुस्नदे बज़्ज़ार में है आयत (ला तर्फ़ऊ) के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह की क़सम! अब तो मैं आपसे इस तरह बातें करूँगा जिस तरह कोई सरगोशी करता है। (बज़्ज़ार : 2257; हाकिम : 2/462; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/111; हाकिम और ज़हबी ने इस रिवायत को सही कहा है।) सहीह बुख़ारी में है कि "हज़रत साबित बिन क़ैस (रज़ि.) कई दिन तक हुज़ूर (ﷺ) की मज्लिस में नज़र न आए, इस पर एक शख़्स ने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं उसकी बाबत आपको बतलाऊँगा , चुनाँचे वह हज़रत साबित (रज़ि.) के मकान पर आये देखा कि वह सिर झुकाये बैठे हुए हैं , पूछा क्या हाल है जवाब मिला कि बुरा हाल है। मैं तो हुज़ूर (ﷺ) की आवाज़ पर अपनी आवाज़ बुलंद करता था। मेरे आमाल बर्बाद हो गए और मैं जहन्नमी हो गया। यह शख़्स रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और सारा वाक़िया आपसे कह सुनाया। फिर तो हुज़ूर (ﷺ) के फ़र्मान से एक ज़बरदस्त बशारत लेकर दोबारा हज़रत साबित (रज़ि.) के यहाँ गए। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम जाओ और उनसे कहो तू जहन्नमी नहीं बल्कि जन्नती है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हुजुरात बाब (ला तर्फ़ऊ अस्वातकुम फ़ौक़ सौतिन्नबी) : 4846) मुस्नद अहमद में भी यह वाक़िया है। उसमें यह भी है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा था कि साबित कहाँ हैं नज़र नहीं आते। उसके आख़िर में है हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं हम उन्हें ज़िन्दा चलता फिरता देखते थे और जानते थे कि वह अहले जन्नत में से हैं। यमामा की जंग में जबकि मुसलमान क़द्रे बद दिल हो गए तो हमने देखा कि हज़रत साबित (रज़ि.) ख़ुश्बू मले कफ़न पहने हुए दुश्मन की तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं और फ़र्मा रहे हैं मुसलमानों! तुम लोग अपने बाद वालों के लिए बुरा नमूना न छोड़ जाओ। यह कहकर दुश्मनों में घुस गए और बहादुराना लड़ते रहे यहाँ तक कि शहीद हो गए।" (अहमद : 3/137; ह : 12399; वसनदुहू सहीहुन) सहीह मुस्लिम में है आपने जब उन्हें न देखा तो हज़रत सअद (रज़ि.) से जो उनके पड़ौसी थे पूछा कि क्या साबित बीमार हैं? (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब मख़ाफ़तुल मोमिन अय्यंहबत़ अमलुहू : 119) लेकिन इस हदीस की और सनदों में हज़रत सअद (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं, इससे साबित होता है कि यह रिवायत मुअल्लल है और यही बात सही भी है इसलिए कि हज़रत सअद बिन मआज़ (रज़ि.) उस वक़्त ज़िन्दा ही न थे बल्कि आपका इंतिक़ाल बनू क़ुरैज़ा की जंग के बाद थोड़े ही दिनों में हो गया था और बनू क़ुरैज़ा की जंग सन 5 हिज्री में हुई थी और यह आयत वफ़्दे बनी तमीम की आमद के वक़्त उतरी है और वफ़ूद का पे दर पे आने का वाक़िया 9 हिज्री का है, वल्लाहु आलम!

इब्ने जरीर में है जब यह आयत उतरी तो "हज़रत साबित बिन क़ैस (रज़ि.) रास्ते में बैठ गए और रोने लगे, हज़रत आसिम बिन अदी (रज़ि.) जब वहाँ से गुज़रे और उन्हें रोते देखा तो सबब दरयाफ़्त किया। जवाब

मिला कि मुझे ख़ौफ़ है कि कहीं यह आयत मेरे ही बारे में नाज़िल न हुई हो मेरी आवाज़ बुलंद है। हज़रत आसिम (रज़ि.) यह सुनकर चले गए इधर हज़रत साबित (रज़ि.) की हिचकी बंध गई दहाड़े मार मारकर रोने लगे घर गए और अपनी बीवी साहिबा हज़रत जमीला (रज़ि.) बिन्ते अब्दुल्लाह बिन उबय बिन सलूल से कहा मैं अपने घोड़े के तबेले में जा रहा हूँ तुम उसका दरवाज़ा बाहर से बंद करके लोहे की कील उसे जड़ दो अल्लाह की क़सम! मैं उसमें से न निकलूँगा यहाँ तक कि या तो मर जाऊँ या अल्लाह अपने रसूल (ﷺ) को मुझसे रज़ामंद कर दे। यहाँ तो यह हुआ वहाँ जब हज़रत आसिम (रज़ि.) ने दरबारे रिसालत में हज़रत साबित (रज़ि.) की हालत बयान की तो रिसालत मआब (ﷺ) ने हुक्म दिया कि तुम जाओ और साबित को मेरे पास बुला लाओ। लेकिन जब आसिम (रज़ि.) उस जगह आए तो देखा कि हज़रत साबित (रज़ि.) वहाँ नहीं, मकान पर गए तो मालूम हुआ कि वह तो घोड़े के तबेले में हैं। यहाँ आकर कहा कि साबित चलो तुमको रसूलुल्लाह (ﷺ) याद फ़र्मा रहे हैं। हज़रत साबित ने कहा बहुत ख़ूब कील निकाल डालो और दरवाज़ा खोल दो, फिर बाहर निकलकर हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने रोने की वजह पूछी जिसका सच्चा जवाब हज़रत साबित (रज़ि.) से सुनकर आपने फ़र्माया क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं हो कि तुम क़ाबिले ता'रीफ़ ज़िन्दगी जियो और शहीद होकर मरो और जन्नत में जाओ। इस पर हज़रत साबित (रज़ि.) का सारा रंज काफ़ूर हो गया बाछें खिल गईं और फ़र्माने लगे या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैं अल्लाह तआला की और आपकी इस बशारत पर बहुत ख़ुश हूँ और अब आइन्दा कभी भी अपनी आवाज़ को आपकी आवाज़ से ऊँची न करूँगा।'' इस पर उसके बाद की आयत (इन्नल्लज़ीना यग़ुज़्ज़ूना...) नाज़िल हुई। (तब्री : 22/279) यह क़िस्सा इसी तरह कई एक ताबेईन से भी मरवी है। अल्ग़र्ज़ अल्लाह तआला ने अपने रसूल (ﷺ) के सामने आवाज़ें बुलंद करने से मना कर दिया। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने दो शख़्सों की कुछ बुलंद आवाज़ें मस्जिदे नबवी में सुनकर वहाँ आकर उनसे फ़र्माया, ''तुम्हें मालूम भी है कि तुम कहाँ हो? फिर उनसे पूछा कि तुम कहाँ के रहने वाले हो? उन्होंने कहा ताइफ़ के। आपने फ़र्माया अगर तुम मदीने के होते तो मैं तुम्हें पूरी सज़ा देता।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सलात, बाब रफ़उस्सौति फ़िल्मस्जिद : 470)

उलमा किराम का फ़र्मान है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) की क़ब्रे मुबारक के पास भी बुलंद आवाज़ से बोलना मकरूह है। जैसे कि आपकी हयात में आपके सामने मकरूह था इसलिए कि हुज़ूर (ﷺ) जिस तरह अपनी ज़िन्दगी में क़ाबिले एहतिराम व इज़्ज़त थे अब और हमेशा तक आप अपनी क़ब्र में भी बाइज़्ज़त और क़ाबिले एहतिराम ही हैं। फिर आपके सामने आपसे बातें करते हुए जिस तरह आम लोगों से बातें करते हैं, बातें करनी मना फ़र्माई बल्कि आपसे तस्कीन व वक़ार इज़्ज़त व अदब हुर्मत व अज़्मत से बातें करनी चाहिए जैसे और जगह है (لَا تَجْعَلُوا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا) (24/नूर : 63) ऐ मुसलमानों! रसूल को इस तरह न पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो, फिर फ़र्माता है कि हमने तुम्हें उस बुलंद आवाज़ी से इसलिए रोका है कि ऐसा न हो किसी वक़्त हुज़ूर (ﷺ) नाराज़ हो जाएँ और आपकी नाराज़ी की वजह से अल्लाह तआला नाराज़ हो जाए और तुम्हारे सारे आमाल ज़ब्त कर ले और तुम्हें उसका

पता भी न चले। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि एक शख़्स अल्लाह की रज़ामंदी का कोई कलिमा ऐसा कह जाता है कि उसके कलिमे की कोई अहमियत नहीं होती लेकिन अल्लाह तआला को वह इतना पसंद आता है कि उसकी वजह से वह जन्नती हो जाता है, इसी तरह इंसान अल्लाह तआला की नाराज़ी का कोई ऐसा कलिमा कह जाता है कि उसके नज़दीक तो उसकी कोई वक़अत नहीं होती लेकिन रब्बे तआला उस कलिमा की वजह से जहन्नम के इस क़द्र नीचे के तब्क़े में पहुँचा देता है जो गढ़ा ज़मीन आसमान से ज़्यादा गहरा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब हिफ़्ज़ुल्लिसान : 6478; सहीह मुस्लिम : 2988; बि तसर्रुफ़िन यसीर) फिर अल्लाह तबारक व तआला आप (ﷺ) के सामने आवाज़ पस्त करने की रग़बत देता है और फ़र्माता है कि जो लोग अल्लाह के नबी के सामने अपनी आवाज़ें पस्त करते हैं उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तक़्वे के लिए ख़ालिस कर लिया है। अहले तक़्वा और महल्ले तक़्वा यही लोग हैं। यह मग़्फ़िरते इलाही के मुस्तहिक़ और अज्रे अज़ीम के लायक़ हैं। इमाम अहमद (रह.) ने किताबुज़्ज़ोहद में एक रिवायत नक़्ल की है कि हज़रत उमर (रज़ि.) से एक तहरीरी इस्तिफ़्ता लिया गया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! एक वह शख़्स जिसे नाफ़र्मानी की ख़्वाहिश ही न हो और न कोई नाफ़र्मानी उसने की हो और वह शख़्स जिसे ख़्वाहिशे मअसियत है लेकिन वह बुरा काम नहीं करता तो उनमें अफ़ज़ल कौन है आपने जवाब में लिखा कि जिन्हें मअसियत की ख़्वाहिश होती है फिर नाफ़र्मानियों से बचते हैं यही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने परहेज़गारी के लिए आज़मा लिया है उनके लिए मग़्फ़िरत है और बहुत बड़ा अज्रो सवाब है।

***

إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِن وَرَآءِ الْحُجُرَٰتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ④ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑤

तर्जुमा :"जो लोग तुझे हुजरों के पीछे से पुकारते हैं उनमें से अक्सर बिलकुल बेअक़्ल हैं। (4) अगर यह लोग यहाँ तक सब्र करते कि तू ख़ुद उनके पास आ जाता तो यही उनके लिए बेहतर होता, अल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम है।" (5)

आप (ﷺ) के एहतिराम को मल्हूज़ न रखना बेअक़्ली है (आ. 4, 5) : इन आयतों में अल्लाह तआला उन लोगों की मज़म्मत करता है जो आपके मकानों के पीछे से आपको आवाज़ें देते और पुकारते हैं जिस तरह आराबियों में दस्तूर था तो फ़र्माया कि इनमें से अक्सर कमअक़्ल हैं। फिर उसकी बाबत अदब सिखाते हुए फ़र्माता है कि उन्हें चाहिए था आपके इंतिज़ार में ठहर जाते और जब आप मकान से बाहर निकलते तो आपसे जो कहना होता कहते न कि आवाज़ें देकर बाहर से पुकारते। दुनिया और दीन की मस्लिहत और

बेहतरी इसी में थी। फिर गोया हुक्म देता है कि ऐसे लोगों को तौबा इस्तिग़फ़ार करना चाहिए क्योंकि अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है। यह आयत हज़रत अक़रअ बिन हाबिस (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई। मुस्नद अहमद में है एक शख़्स ने हुज़ूर (ﷺ) को आपका नाम लेकर पुकारा, या मुहम्मद (ﷺ)! या मुहम्मद (ﷺ)! आपने उसे कोई जवाब न दिया। तो उसने कहा, सुनो या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरा ता'रीफ़ करना सबब है बड़ाई का और मेरा मज़म्मत करना सबब है ज़िल्लत का। आप (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसी ज़ात महज़ अल्लाह तआला की ही है। (अहमद : 3/488; ह : 15991; वसनदुहू सहीहुन; मुत्तसिल वल हम्दु लिल्लाह, अद्दुर्रुल मंसूर : 9/88; तबरानी : 787) बिश्र बिन ग़ालिब ने हज्जाज के सामने बिश्र बिन अतारिद वग़ैरह से कहा कि तेरी क़ौम बनू तमीम के बारे में आयत उतरी है। जब हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) से इसका ज़िक्र हुआ तो आपने फ़र्माया अगर वह आलिम होते तो उसके बाद की आयत (يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا) (49/हुजुरात : 17) पढ़ लेते वह कहते थे कि हम इस्लाम लाए और बनू असद ने आपसे कुछ देर नहीं की। हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि कुछ अरब जमा हुए और कहने लगे, हमें उस शख़्स के पास ले चलो अगर वह सच्चा नबी है तो सबसे ज़्यादा उससे सआदत हासिल करने के मुस्तहिक़ हम हैं और अगर वह बादशाह है तो हम उसके पैरों तले पल जाएँगे। मैंने आकर हुज़ूर (ﷺ) से यह वाक़िया बयान किया फिर वह लोग आए और हुज्रे के पीछे से आपका नाम लेकर आपको पुकारने लगे। इस पर यह आयत उतरी। हुज़ूर (ﷺ) ने मेरा कान पकड़कर फ़र्माया, ''अल्लाह तआला ने तेरी बात सच्ची कर दी, अल्लाह तआला ने तेरी बात सच्ची कर दी।'' (तबरी : 22/284; तबरानी : 5123; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू मुस्लिम बजली मज्हूलुल हाल वस्सक़हू इब्ने हिब्बान वहदहू व दाऊद बिन राशिद तफ़ावी ज़ईफ़, अद्दुर्रुल मंसूर : 6/88)

***

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ
بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ⑥ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ
لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ
وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الرّٰشِدُوْنَ ۙ ⑦ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑧

तर्जुमा : "ऐ मुसलमानों ! अगर तुम्हें कोई फ़ासिक़ ख़बर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह तहक़ीक़ कर लिया करो ऐसा न हो कि नादानी में किसी क़ौम को ईज़ा पहुँचा दो फिर अपने किये पर पशेमानी उठाओ। (6) और जान रखो कि तुममें अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर वह इमूमन तुम्हारा कहा करते रहे तो तुम मुश्किल में पड़ जाओगे लेकिन अल्लाह तआला ने ईमान को तुम्हारा महबूब बना दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में ज़ीनत दे रखी है और कुफ्र को और बदकारियों को और नाफ़र्मानी को तुम्हारी निगाहों में नापसंदीदा बना दिया है, यही लोग राह पाये हुए हैं। (7) अल्लाह तआला के एहसान व इन्आम से, और अल्लाह दाना और बाहिक्मत है।" (8)

ख़बर व इत्तिलाअ की तहक़ीक़ ज़रूरी है (आ. 6 से 8) : अल्लाह तआला हुक्म देता है कि फ़ासिक़ की ख़बर का एतिमाद न करो। जब तक पूरी तहक़ीक़ व तफ़्तीश से असल वाक़िया साफ़ तौर पर मालूम न हो जाए, कोई हरकत न करो, मुम्किन है किसी फ़ासिक़ शख़्स ने कोई झूठ बात कह दी हो या ख़ुद उससे ग़लती हुई हो और तुम उसकी ख़बर के मुताबिक़ कोई काम कर गुज़रो तो दरअसल उसकी पैरवी होगी और मुफ़्सिद लोगों की पैरवी हराम है। इसी आयत को दलील बनाकर कुछ मुहद्दिसीने किराम ने उस शख़्स की रिवायत को भी ग़ैर मुअतबर बताया है जिसका हाल मालूम न हो, इसलिए कि बहुत मुम्किन है यह शख़्स फ़िल्वाक़ेअ फ़ासिक़ हो। गो कुछ लोगों ने ऐसे मज्हूलुल हाल रावियों की रिवायत ली भी है और उन्होंने कहा है हमें फ़ासिक़ की ख़बर क़बूल करने से मना किया गया और जिसका हाल मालूम नहीं उसका फ़ासिक़ होना हम पर ज़ाहिर नहीं। हमने इस मसले को पूरी वज़ाहत से सहीह बुख़ारी की शरह किताबुल इल्म में बयान कर दिया है, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! अक्सर मुफ़स्सिरीने किराम (रह.) ने फ़र्माया है कि यह आयत वलीद बिन उक़्बा बिन अबी मुईत के बारे में नाज़िल हुई है जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उन्हें क़बीला बनू मुस्तलिक़ से ज़कात लेने के लिए भेजा था। चुनाँचे मुस्नद अहमद में है "हज़रत हारिस बिन ज़र्रार ख़ुज़ाई (रज़ि.) जो उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवेरिया (रज़ि.) के वालिद हैं फ़र्माते हैं मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आपने मुझे इस्लाम की दावत दी जो मैंने मंज़ूर कर ली और मुसलमान हो गया। फिर आपने ज़कात की फ़र्ज़ियत सुनाई मैंने उसका भी इक़रार किया और कहा कि मैं वापिस अपनी क़ौम के पास जाता हूँ और उनमें से जो ईमान लाएँ और ज़कात अदा करें मैं उनकी ज़कात जमा करता हूँ इतने इतने दिनों के बाद आप मेरी तरफ़ किसी आदमी को भेज दें मैं उसके हाथ जमा की हुई ज़कात आपकी ख़िदमत में भेज दूँगा। हज़रत हारिस (रज़ि.) ने वापिस आकर यही किया माले ज़कात जमा किया जब वक़्ते मुक़र्ररा गुज़र चुका और हुज़ूर (ﷺ) की तरफ़ से कोई क़ासिद न आया तो आपने अपनी क़ौम के सरदारों को जमा किया और उनसे कहा यह तो नामुम्किन है कि अल्लाह के रसूल अपने वादे के मुताबिक़ अपना कोई क़ासिद माले ज़कात लेने के लिए न भेजा हो तो अगर आप लोग मुत्तफ़िक़ हों तो हम इस माल को लेकर ख़ुद ही मदीना मुनव्वरा चलें और हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में पेश कर दें। यह तज्वीज़ तै हो गई और यह हज़रात अपना माले ज़कात लेकर चल खड़े हुए इधर से रसूलुल्लाह (ﷺ) वलीद बिन उक़्बा को अपना क़ासिद बनाकर भेज चुके थे लेकिन यह हज़रत रास्ते ही में से डर के मारे लौट

आए और यहाँ आकर कह दिया कि हारिस ने ज़कात भी रोक ली और मेरे क़त्ल के दर पे हो गया। इस पर हुज़ूर (ﷺ) नाराज़ हुए और कुछ आदमी हारिस की तंबीह के लिए रवाना कर दिये। मदीने के क़रीब रास्ते ही में उस मुख़्तसर से लश्कर ने हज़रत हारिस को पा लिया। हज़रत हारिस (रज़ि.) ने पूछा आख़िर क्या बात है? तुम कहाँ और किसके पास जा रहे हो? उन्होंने कहा, हम आपकी तरफ़ भेजे गए हैं। पूछा क्यूँ? कहा इसलिए कि आपने हुज़ूर (ﷺ) के क़ासिद वलीद को ज़कात न दी बल्कि उन्हें क़त्ल करना चाहा। हज़रत हारिस (रज़ि.) ने कहा, क़सम है उस रब की जिसने मुहम्मद (ﷺ) को सच्चा रसूल बनाकर भेजा है न मैंने उसे देखा न वह मेरे पास आया, चलो मैं तो ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हो रहा हूँ। यहाँ जो आए तो हुज़ूर (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तूने ज़कात भी रोक ली और मेरे आदमी को क़त्ल करना चाहा। आपने जवाब दिया हर्गिज़ नहीं या रसूलल्लाह (ﷺ)! क़सम अल्लाह की! जिसने आपको सच्चा रसूल बनाकर भेजा है न मैंने उन्हें देखा न वह मेरे पास आए बल्कि क़ासिद को न देखकर इस डर के मारे कि कहीं अल्लाह तआला और उसके रसूल (ﷺ) मुझसे नाराज़ न हो गए हों और इसी वजह से क़ासिद न भेजा हो मैं ख़ुद हाज़िरे ख़िदमत हुआ। इस पर यह आयत (हकीमुन) तक नाज़िल हुई।'' (अहमद : 4/279; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अत्तारीख़ुल औसत : 1/91; तब्रानी : 3395; मुअजमे सहाबा : 1/177) तब्रानी में यह भी है कि ''जब हुज़ूर (ﷺ) का क़ासिद हज़रत हारिस (रज़ि.) की बस्ती के पास पहुँचा तो यह लोग ख़ुश होकर उसके इस्तिक़्बाल के लिए ख़ास तैयारी करके निकले इधर उनके दिल में यह शैतानी ख़्याल पैदा हो गया कि यह लोग मुझसे लड़ने के लिए आ रहे हैं तो यह लौटकर वापिस चले आए। उन्होंने जब यह देखा कि आपके क़ासिद वापिस चले गए तो ख़ुद ही हाज़िर हुए और ज़ुहर की नमाज़ के बाद सफ़बस्ता खड़े होकर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने ज़कात वसूल करने के लिए अपने आदमी को भेजा हमारी आँखें ठण्डी हुईं हम बेहद ख़ुश हुए लेकिन अल्लाह जाने क्या हुआ कि वह रास्ते में से ही लौट गए तो इस डर से कि कहीं अल्लाह तआला हमसे नाराज़ न हो गया हो हम हाज़िर हुए हैं। इसी तरह वह उज़्र मअज़िरत करते रहे। असर की अज़ान जब हज़रत बिलाल (रज़ि.) ने दी, उस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई।'' (तब्री : 22/287; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मूसा बिन उबेदह ज़ईफ़ुन मशहूर।) और रिवायत में है कि ''हज़रत वलीद (रज़ि.) की उस ख़बर पर अभी हुज़ूर (ﷺ) सोच रहे थे कि कुछ आदमी उनकी तरफ़ भेजें जो उनका वफ़्द आ गया और उन्होंने कहा कि आपका क़ासिद आधे रास्ते से ही लौट गया तो हमने ख़्याल किया कि आपने किसी नाराज़गी की बिना पर उन्हें वापिस आने का हुक्म दे दिया होगा इसलिए हाज़िर हुए हैं हम अल्लाह के ग़ुस्से से और आपकी नाराज़ी से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। (तब्री, वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अतिया औफ़ी ज़ईफ़ मशहूर वस्सनदु इलैहि ज़ईफ़ुन) पस अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी और उनका उज़्र सच्चा बताया।'' और रिवायत में है कि ''क़ासिद ने यह भी कहा था कि उन लोगों ने तो आपसे लड़ने के लिए लश्कर जमा कर लिया है और इस्लाम से मुर्तद हो गए हैं, चुनाँचे हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) की ज़ेरे इमारत एक फ़ौजी दस्ते को भेज दिया लेकिन उन्हें फ़र्मा दिया था कि पहले तहक़ीक़ व तफ़्तीश अच्छी तरह कर लेना जल्दी से हमला न कर देना। उसी के मुताबिक़

हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने वहाँ पहुँचकर अपने जासूस शहर में भेज दिये। वह ख़बर लाये कि वह लोग दीने इस्लाम पर क़ायम हैं मस्जिद में अज़ानें हुईं जिन्हें हमने ख़ुद सुना और लोगों को नमाज़ पढ़ते हुए ख़ुद देखा। सुबह होते ही हज़रत ख़ालिद ख़ुद गए और वहाँ के इस्लामी मंज़र से ख़ुश हुए। वापिस आकर हुज़ूर (ﷺ) को सारी ख़बर दी। इस पर यह आयत उतरी।''

हज़रत क़तादा (रह.) जो इस वाक़िया को बयान करते हैं कहते हैं कि ''हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि तहक़ीक़ व तलाश, बुर्दबारी और दूरबीनी अल्लाह तआला की तरफ़ से है और उज्लत और जल्दबाज़ी शैतान की तरफ़ से है।'' (तब्री : 31687, 31688; वस्सनदान ज़ईफ़ान) सलफ़ में से हज़रत क़तादा (रह.) के अलावा और भी बहुत से हज़रात ने यही ज़िक्र किया है जैसे इब्ने अबी लैला, यज़ीद बिन रूमान, ज़हहाक, मुक़ातिल इब्ने हय्यान वग़ैरह। इन सबका बयान है कि यह आयत वलीद बिन उक़बा के बारे में नाज़िल हुई है, वल्लाहु आलम! फिर फ़र्माता है कि जान लो कि तुममें अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, उनकी ता'ज़ीम व तौक़ीर करना इज़्ज़त व अदब करना उनके अहकाम को सर आँखों से बजा लाना तुम्हारा फ़र्ज़ है। वह तुम्हारी मस्लिहतों से बहुत आगाह हैं, उन्हें तुमसे बहुत मुहब्बत है वह तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहते, तुम अपनी भलाई के इतने ख़्वाहाँ और इतने वाक़िफ़ नहीं हो जितने हुज़ूर (ﷺ) हैं। चुनाँचे और जगह इर्शाद है (اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ) (33/अहज़ाब : 6) यानी नबी सज़ावारतर हैं मुसलमानों के कामों में बनिस्बत उनकी अपनी जानों के फिर बयान किया कि लोगों! तुम्हारी अक़्लें जिन मस्लिहतों और भलाइयों को नहीं पा सकतीं उन्हें नबी पा रहा है। पस अगर वह तुम्हारी हर पसंदीदगी की राय पर आमिल बनता रहे तो उसमें तुम्हारा ही हर्ज वाक़ेअ होगा। जैसे और आयत में है (وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ) (23/मोमिनून : 71) यानी अगर सच्चा रब उनकी ख़ुशी पर चले तो आसमान व ज़मीन और उनके बीच की हर चीज़ ख़राब हो जाए, यह नहीं बल्कि हमने उन्हें उनकी नसीहत पहुँचा दी है लेकिन यह अपनी नसीहत पर ध्यान ही नहीं धरते। फिर फ़र्माता है कि अल्लाह तआला ने ईमान को तुम्हारे नफ़्सों में महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसकी उम्दगी बिठा दी है। मुस्नद अहमद में है रसूले मक़्बूल (ﷺ) फ़र्माते हैं इस्लाम ज़ाहिर है और ईमान दिल में है फिर आप अपने सीने की तरफ़ तीन बार इशारा करते और फ़र्माते तक़्वा यहाँ है, परहेज़गारी की जगह यह है।'' (अहमद : 3/134, 135; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन; अन सहहस्सनदु इलैहि व अली बिन मअदा ज़ईफ़ जअफ़हुल जुम्हूर, मुस्नदे अबी यअला : 2923) उसने तुम्हारे दिलों में कुफ़्र की और कबीरा गुनाहों की और तमाम नाफ़र्मानियों की अदावत डाल दी है और इस तरह बतदरीज तुम पर अपनी नेअमतें भरपूर कर दी हैं। फिर इर्शाद होता है जिनमें यह पाक औसाफ़ हैं उन्हें अल्लाह तआला ने रुश्द और नेकी, हिदायत और भलाई दे रखी है। मुस्नद अहमद में है ''उहुद के दिन जब मुश्रिकीन टूट पड़े तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, दुरुस्ती के साथ ठीक ठाक हो जाओ तो मैं अपने रब अज़्ज़ व जल्ल की सना बयान करूँ। पस लोग आपके पीछे सफ़ें बाँधकर खड़े हो गए और आप (ﷺ) ने दुआ पढ़ी

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ كُلُّهُ. اللَّهُمَّ لاَ قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ، وَلاَ بَاسِطَ لِمَا قَبَضْتَ، وَلاَ هَادِيَ لِمَنْ أَضْلَلْتَ، وَلاَ مُضِلَّ لِمَنْ هَدَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ، وَلاَ مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ. اللَّهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ، وَرَحْمَتِكَ، وَفَضْلِكَ، وَرِزْقِكَ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ النَّعِيمَ الْمُقِيمَ الَّذِي لاَ يَحُولُ وَلاَ يَزُولُ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ النَّعِيمَ يَوْمَ الْعَيْلَةِ، وَالأَمْنَ يَوْمَ الْخَوْفِ. اللَّهُمَّ إِنِّي عَائِذٌ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا أَعْطَيْتَنَا وَشَرِّ مَا مَنَعْتَنَا. اللَّهُمَّ حَبِّبْ إِلَيْنَا الإِيمَانَ وَزَيِّنْهُ فِي قُلُوبِنَا، وَكَرِّهْ إِلَيْنَا الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ، وَاجْعَلْنَا مِنَ الرَّاشِدِينَ. اللَّهُمَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ، وَأَحْيِنَا مُسْلِمِينَ، وَأَلْحِقْنَا بِالصَّالِحِينَ غَيْرَ خَزَايَا وَلاَ مَفْتُونِينَ. اللَّهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِينَ يُكَذِّبُونَ رُسُلَكَ، وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِكَ، وَاجْعَلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ وَعَذَابَكَ. اللَّهُمَّ قَاتِلِ الْكَفَرَةَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ، إِلَهَ الْحَقِّ (नसाई)

तर्जुमा : यानी तमाम ता'रीफ़ें तेरे ही लिए हैं तू जिसे कुशादगी दे उसे कोई तंग नहीं कर सकता, तू जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता और जिसे तू हिदायत दे उसे कोई गुमराह नहीं कर सकता जिससे तू रोक ले उसे कोई दे नहीं सकता और जिसे तू दे उससे कोई बाज़ रख नहीं सकता जिसे तू दूर कर दे उसे क़रीब करने वाला कोई नहीं और जिसे तू क़रीब कर ले उसे दूर करने वाला कोई नहीं, ऐ अल्लाह! हम पर अपनी बरकतें रहमतें, फ़ज़्ल और रिज़्क़ कुशादा कर दे, ऐ अल्लाह! मैं तुझसे वह हमेशगी की नेअमतें चाहता हूँ जो न इधर उधर हों न ज़ाइल हों, या अल्लाह! फ़क़ीरी और एहतियाज वाले दिन मुझे अपनी नेअमतें अ़ता फ़र्मा और ख़ौफ़ वाले दिन मुझे अम्न अ़ता फ़र्मा। परवरदिगार! जो तूने मुझे दे रखा है और जो नहीं दिया उन सबकी बुराई से मैं तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ मेरे मअ़बूद! हमारे दिलों में ईमान की मुहब्बत डाल दे और उसे हमारी नज़रों में ज़ीनतदार बना दे और कुफ़्र, बदकारी और नाफ़र्मानी से हमारे दिलों में दूरी और अ़दावत पैदा कर दे और हमें राह याफ़्ता लोगों में कर दे। ऐ हमारे रब! हमारे हमें इस्लाम की हालत में फ़ौत कर और इस्लाम पर ही ज़िन्दा रख और नेककार लोगों से मिला दे, हम रुस्वा न हों, हम फ़ित्ने में न डाले जाएँ। ऐ अल्लाह! इन काफ़िरों का सतियानाश कर जो तेरे रसूलों को झुठलायें और तेरी राह से रोकें, तू इन पर अपनी सज़ा और अपना अ़ज़ाब नाज़िल फ़र्मा। इलाही! अहले किताब के काफ़िरों को भी तबाह कर, ऐ सच्चे मअ़बूद। (अहमद : 3/424; वसनदुहू सहीहुन; सुननुल कुब्रा : 10445 व अ़मलल यौम वल्लैलत : 609) यह हदीस इमाम नसाई भी अपनी किताब अ़मलुल यौम वल्लैला में लाये हैं।

मरफ़ूअ़ हदीस में है ''जिस शख़्स को अपनी नेकी अच्छी लगे और बुराई उसे नाराज़ करे वह मोमिन है।'' (तिर्मिज़ी, किताबुल फ़ितन, बाब मा जाअ फ़ी लुज़ूमिल जमाअ़त : 2165; वहुव सहीहुन) फिर फ़र्माता है यह बख़्शिश जो तुम्हें अ़ता हुई है यह तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल है और उसकी नेअ़मत है अल्लाह मुस्तहिक़्क़ीने हिदायत को और मुस्तहिक़्क़ीने ज़लालत को बख़ूबी जानता है वह अपने क़ौल व फ़ेअ़ल में हकीम है।

وَإِنْ طَآئِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْ بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا
عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى أَمْرِ اللهِ ۚ فَإِنْ فَآءَتْ فَأَصْلِحُوْا
بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوْا ۖ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ⑨ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ إِخْوَةٌ
فَأَصْلِحُوْا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ⑩

तर्जुमा : "अगर मुसलमानों की दो जमाअतें आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मेल मिलाप करा दिया करो। फिर अगर उन दोनों में से एक दूसरी जमाअत पर ज़्यादती करे तो तुम सब उस गिरोह से जो ज़्यादती करता है लड़ो। यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ लौट आए अगर लौट आए तो फिर इंसाफ़ के साथ सुलह करा दो और अदल करते रहा करो। अल्लाह तआला इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (9) याद रखो सारे मुसलमान भाई भाई हैं पस अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।" (10)

बग़ावत कुफ़्र नहीं बाग़ी गिरोह भी मोमिन है (आ. 9, 10) : यहाँ हुक्म हो रहा है कि अगर मुसलमानों की कोई दो जमाअतें लड़ने लग जाएँ तो दूसरे मुसलमानों को चाहिए कि उनमें सुलह करा दें। आपस में दो लड़ने वाली जमाअतों को मोमिन कहना, उससे हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस्तिदलाल किया है कि नाफ़र्मानी भले कितनी ही बड़ी हो इंसान को ईमान से अलग नहीं करती। ख़ारजियों का और उनके मुवाफ़िक़ मुअतज़िला का मज़हब इस बारे में ख़िलाफ़े हक़ है। इसी आयत की ताईद इस हदीस से भी होती है जो सहीह बुख़ारी वग़ैरह में मरवी है कि "एक मर्तबा रसूलुल्लाह (ﷺ) मिम्बर पर ख़ुत्बा दे रहे थे आपके साथ मिम्बर पर हज़रत हसन बिन अली (रज़ि.) भी थे आप कभी उनकी तरफ़ देखते और कभी लोगों की तरफ़ और फ़र्माते कि मेरा यह बच्चा सय्यद है और इसकी वजह से अल्लाह तआला दो बड़ी बड़ी जमाअतों में सुलह करा देगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुस्सुलह बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) लिल हसन बिन अली (रज़ि.) .... 2704; अबूदाऊद : 4662; अहमद : 5/44; इब्ने हिब्बान : 6964) आपकी यह पेशगोई सच्ची निकली और अहले शाम और अहले इराक़ में बड़ी लम्बी लड़ाइयों और बड़े नापसंदीदा वाक़ियात के बाद आपकी वजह से सुलह हो गई। फिर इर्शाद होता है अगर एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज़्यादती करे तो ज़्यादती करने वाले से लड़ाई की जाये ताकि वह फिर ठिकाने आ जाए हक़ को सुने और मान ले। सहीह हदीस में है "अपने भाई की मदद कर ज़ालिम हो तो और मज़्लूम हो तो। हज़रत अनस (रज़ि.) ने पूछा कि मज़्लूम होने की हालत में तो ज़ाहिर है

लेकिन ज़ालिम होने की हालत में कैसे मदद करूँ? हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, उसे ज़ुल्म से बाज़ रखो यही उसकी उस वक़्त की मदद है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल इकराह, बाब यमीनुर्रजुल लि साहिबिही अन्नहू इख़्वा : 6952; अहमद : 3/99) मुस्नद अहमद में है "हुज़ूर (ﷺ) से एक बार कहा गया कि अच्छा हो अगर आप अब्दुल्लाह बिन उबय के यहाँ चले चलते, चुनाँचे आप गधे पर सवार हुए और सहाबा आपकी हमरकाबी में साथ हो लिये। ज़मीन शोर थी। जब हुज़ूर (ﷺ) वहाँ पहुँचे तो यह कहने लगा मुझसे अलग रहिये अल्लाह की क़सम! आपके गधे की बदबू ने मेरा दिमाग़ परेशान कर दिया है उस पर एक अंसारी (रज़ि.) ने कहा, अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (ﷺ) के गधे की ख़ुश्बू तेरी बू से बहुत अच्छी है। इस पर इधर से उधर से कुछ लोग बोल पड़े और मामला बढ़ने लगा बल्कि कुछ हाथा पायी जूती छड़ी भी हो गई। उनके बारे में यह आयत उतरी है। (अहमद : 3/157; सहीह बुख़ारी, किताबुस्सुलह, बाब मा जाअ फ़िल्इस्लाह बैनन्नास : 2691; सहीह मुस्लिम : 1799; मुस्नदे अबी यअ़ला : 4083) "हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़र्माते हैं औस और ख़ज़रज क़बीलों में कुछ चश्मक हो गई थी उनमें सुलह करा देने का इस आयत में हुक्म हो रहा है। (अद्दुर्रुल मंसूर : 7/560) हज़रत सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कि "इमरान नामी एक अंसारी थे उनकी बीवी साहिबा का नाम उम्मे ज़ेद था। उसने अपने मायके जाना चाहा शौहर ने रोका और मना कर दिया कि मायके का कोई शख़्स भी यहाँ न आए। औरत ने यह ख़बर अपने मायके में कहलवा दी वह लोग आए और उसे बालाख़ाने से उतार लाये और ले जाना चाहा, उनके शौहर घर पर थे नहीं, शौहर वालों ने उसके चचाज़ाद भाईयों को ख़बर देकर उन्हें बुला लिया, अब खींचतान जूती पेज़ार होने लगी और उनके बारे में यह आयत उतरी, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दोनों तरफ़ के लोगों को बुलाकर बीच में बैठकर सुलह करा दी और सब लोग मिल गए।" (तब्री : 22/294) फिर हुक्म होता है दोनों पार्टियों में अदल करो, अल्लाह आदिलों को पसंद फ़र्माता है। "हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं दुनिया में जो अदल करते रहे वह मोतियों के मिम्बरों पर रहमान अ़ज़्ज़ व जल्ल के सामने होंगे और यह बदला होगा उनके अदलो इंसाफ़ का।" (अहमद : 2/159; ह : 6485; वहुव सहीहुन बिश्शाहिद इन्द मुस्लिम : 1827; इब्ने अबी शैबा : 13/127; हाकिम : 4/88) मुस्लिम की हदीस में है कि "यह लोग उन मिम्बरों पर अल्लाह तआला के दाएँ जानिब होंगे यह अपने हुक्म में और अपने अहलो अयाल में और जो कुछ उनके क़ब्ज़े में है उसमें अदल से काम लिया करते थे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारत, बाब फ़ज़ीलतुल अमीरिल आदिल : 1827; मुस्नदे हुमैदी : 588; इब्ने हिब्बान : 4484; बैहक़ी : 10/87; शरीअते लिल आजुरी, पेज : 322) फिर फ़र्माया कुल मोमिन दीनी भाई हैं रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं मुसलमान मुसलमान का भाई है, उसे उस पर ज़ुल्मो सितम न करना चाहिए। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मज़ालिम, बाब ला यज़्लिमुल मुस्लिम अल्मुस्लिमु वला यस्लमहू : 2442; सहीह मुस्लिम : 2580) सहीह हदीस में है "अल्लाह तआला बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहे।" (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब फ़ज़्लुल इज्तिमाअ़ अला तिलावतिल क़ुरआन : 2699) और सहीह हदीस में है कि "जब कोई मुसलमान अपने ग़ैर हाज़िर मुसलमान भाई के लिए उसकी पसे

पुश्त दुआ करता है तो फ़रिश्ता कहता है आमीन, और तुझे भी अल्लाह तआला ऐसा ही दे।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़िक्र वद्दुआ, बाब फ़ज़्लद्दुआइ लिल मुस्लिमीन बि ज़हरिल ग़ैबि : 2732; अबूदाऊद : 1534) इस बारे में और भी बहुत सी हदीसें हैं सही हदीस में है मुसलमान सारे के सारे अपनी मुहब्बत रहम दिली और मेल जोल में एक जिस्म की तरह है जब जिस्म के किसी हिस्से को तक्लीफ़ हो तो सारा जिस्म तड़प उठता है। कभी बुख़ार चढ़ आता है कभी शब बेदारी की तक्लीफ़ होती है।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब रहमतुन्नास वल बहाइम : 6011; सहीह मुस्लिम : 2586) एक और सहीह हदीस में है ''मोमिन मोमिन के लिए मिस्ल दीवार के है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्से को तक़्वियत देता है और मज़बूत करता है। फिर आपने अपनी एक हाथ की उँगलियाँ दूसरे हाथकीउँगलियों में डालकर बताया।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब तआवनुल मोमिनीन बअज़ुहुम बअज़न : 6026; सहीह मुस्लिम : 2585; तिर्मिज़ी : 1928; अहमद : 4/405) मुस्नद अहमद में है मोमिन का तअल्लुक़ अहले ईमान से ऐसा है जैसे सिर का ताल्लुक़ जिस्म से है, मोमिन अहले ईमान के लिए वही दर्दमंदी करता है जो दर्दमंदी जिस्म को सिर के साथ है। (अहमद : 5/340; वसनदुहू ज़ईफ़ुन मुस्अब बिन साबित ज़ईफ़ वलिल हदीसि शाहिद ज़ईफ़ुन इन्दत्तब्रानी फ़िल्औसत : 4693) फिर फ़र्माता है दोनों लड़ने वाली जमाअतों और दोनों तरफ़ के इस्लामी भाईयों में सुलह करा दो, अपने तमाम कामों में अल्लाह तआला का डर रखो। यही वह औसाफ़ हैं जिनकी वजह से अल्लाह की रहमत तुम पर नाज़िल होगी, परहेज़गारों के साथ ही रब का रहम रहता है।

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا
نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا
بِالْاَلْقَابِ ۭ بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الظّٰلِمُوْنَ ⑪

तर्जुमा : ''ऐ ईमान वालों! कोई जमाअत दूसरी जमाअत से मस्ख़रापन न करे मुम्किन है कि यह उससे बेहतर हो और न औरतें औरतों से मुम्किन है कि यह उनसे बेहतर हों और आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओ और न किसी को बुरे लक़ब दो। ईमान के बाद गुनहगारी बुरा नाम है। और जो तौबा न करें वही ज़ालिम लोग हैं।'' (11)

मज़ाक़ और ऐबजोई की मुमानिअत (आ. 11) : अल्लाह तबारक व तआला लोगों को हक़ीर व ज़लील करने और उनका मज़ाक़ उड़ाने से रोक रहा है। हदीस में है कि तकब्बुर नाम है हक़ से मुँह मोड़ लेने का और लोगों को ज़लीलो ख़्वार समझने का। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब तहरीमुल किब्र व बयानिही : 91) इसकी वजह कुरआने करीम ने यह बयान की कि जिसे तुम ज़लील कर रहे हो जिसका तुम मज़ाक़ उड़ा रहे हो मुम्किन है कि अल्लाह तआला के नज़दीक वह तुमसे ज़्यादा बावक़्अत हो। मर्दों को मना करके फिर ख़ास तौर से औरतों को भी उससे रोका फिर ऐबगीरी और नुक्ताचीनी करने से रोका और उस मल्ऊन ख़स्लत को हराम क़रार दिया। चुनाँचे कुरआन करीम का इर्शाद है (وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ.) (104/हुमज़ा : 1) यानी हर तअनाबाज़ ऐब जू के लिए ख़राबी है। हुमज़ फ़ेअल से होता है और लुमज़ क़ौल से। और आयत में है (هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيمٍ) (68/क़लम : 11) यानी वह जो लोगों को हक़ीर गिनता हो उन पर चढ़ा चला जा रहा हो और लगाने बुझाने वाला हो। ग़र्ज़ इन तमाम कामों को हमारी शरीअत ने हराम क़रार दिया। यहाँ लफ़्ज़ तो यह हैं कि अपने आपको ऐब न लगाओ मतलब यह है कि आपस में एक दूसरे को ऐब न लगाओ जैसे फ़र्माया (وَلَا تَقْتُلُوٓا اَنْفُسَكُمْ) (4/निसाअ : 29) यानी एक दूसरे को क़त्ल न करो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) मुजाहिद, सईद बिन जुबेर, क़तादा, मुक़ातिल बिन हय्यान (रहि.) फ़र्माते हैं इसका मतलब यह है कि एक दूसरे को तअने न दे। (हाकिम : 2/463; अन इब्ने अब्बास (रज़ि.) व सनदुहू हसन) फिर फ़र्माया किसी की कोई चिढ़ न निकालो जिस लक़ब से वह नाराज़ होता हो उस लक़ब से उसे न पुकारो न नामज़द करो। मुस्नद अहमद में है कि "यह हुक्म बनू सलमा के बारे में नाज़िल हुआ है। जब हुज़ूर (ﷺ) मदीने में आए तो यहाँ हर शख़्स के दो दो तीन तीन नाम थे हुज़ूर (ﷺ) उनमें से किसी को किसी नाम से पुकारते तो लोग कहते, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह उससे चिड़ता है, इस पर यह आयत उतरी।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्अल्क़ाब : 4962; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 3268; अहमद : 4/260; अल्अदबुल मुफ़्रद : 330) फिर फ़र्मान है कि ईमान की हालत में फ़ासिक़ाना अल्क़ाब से आपस में एक दूसरे को नामज़द करना निहायत बुरी बात है। अब तुम्हें इससे तौबा करनी चाहिए वरना ज़ालिम गिने जाओगे।

***

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا
تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ۭ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا
فَكَرِهْتُمُوْهُ ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ⑫

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालों! बहुत बदगुमानियों से बचो यक़ीन मानो कि कुछ बदगुमानियाँ गुनाह हैं और भेद न टटोला करो और न तुममें से कोई किसी की ग़ीबत करे, क्या तुममें से कोई भी अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाना पसंद करता है तुमको उससे घिन आएगी और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।" (12)

बदगुमानी और उ़यूब तलाश करना नीज़ ग़ीबत का मफ़्हूम (आ. 12) : अल्लाह तआ़ला मोमिनों को बदगुमानियों से और तोहमत धरने से और अपनों और ग़ैरों को ख़ोफ़ज़दा करने से और ख़्वाह मख़्वाह की दहशत दिल में रख लेने से रोकता है और फ़र्माता है कि बसा औक़ात अक्सर इस क़िस्म के गुमान बिलकुल गुनाह होते हैं पस तुम्हें इसमें पूरी एह़तियात़ चाहिए। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से मरवी है कि "आप (ﷺ) ने फ़र्माया, तेरे मुसलमान भाई की ज़ुबान से जो कलिमा निकला हो जहाँ तक तुझसे हो सके उसे भलाई और अच्छाई पर मह़मूल कर।" (अद्दुर्रुल मंसूर : 6/99) इब्ने माजा में है कि "नबी (ﷺ) ने त़वाफ़े कअ़बा करते हुए फ़र्माया तू कितना पाक घर है। तू कैसी अच्छी ख़ुश्बू वाला है तू किस क़द्र अ़ज़्मत वाला है। तू कैसी बड़ी ह़ुर्मत वाला है, उसकी क़सम जिसके हाथ में मुह़म्मद (ﷺ) की जान है कि मोमिन की ह़ुर्मत उसके माल और उसकी जान की ह़ुर्मत और उसके साथ नेक गुमान करने की अल्लाह तआ़ला के नज़दीक तेरी ह़ुर्मत से बहुत बड़ी है।" (इब्ने माजा, किताबुल फ़ितन, बाब ह़ुर्मतु दमिल मोमिन व मालिही : 3932; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; नस़र बिन मुह़म्मद रावी ज़ईफ़ है।) यह ह़दीस सिर्फ़ इब्ने माजा में ही है। स़ह़ीह़ बुख़ारी में है कि ह़ुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "बदगुमानी से बचो गुमान सबसे बड़ी झूठी बात है, भेद न टटोलो एक दूसरे की बुज़ुर्गी हासिल करने की कोशिश में न लग जाया करो। ह़सद बुग़्ज़ और एक दूसरे से मुँह फुलाने से बचो, सब मिलकर रब रह़ीम के बन्दे और आपस में भाई भाई बनकर रहो सहो।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब (या अय्युहल्लज़ीना आमनू इज्तनिबू कसीरम मिनज़्ज़न्न...) : 6066; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2563) मुस्लिम वग़ैरह में है "एक दूसरे से रूठ कर न बैठ जाया करो एक दूसरे से मेल जोल तर्क न कर लिया करो, एक दूसरे से ह़सद बुग़्ज़ न किया करो बल्कि सब मिलकर अल्लाह के बन्दे आपस में एक दूसरे के भाईबंद होकर ज़िन्दगी गुज़ारो। किसी मुसलमान को ह़लाल नहीं कि अपने दूसरे मुसलमान भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोल चाल और मेल जोल छोड़े।" (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यन्हा अ़नित्तह़ासुद वत्तदाबुर : 6065; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2559; तिर्मिज़ी : 1935; मुस्नदे त़यालिसी : 2092; मुसन्नफ़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 20222; अह़मद : 3/110; इब्ने ह़िब्बान : 5660) त़ब्रानी में है कि "तीन ख़स़्लतें मेरी उम्मत में रह जाएँगी फ़ाल लेना, ह़सद करना और बदगुमानी करना। एक शख़्स़ ने पूछा ह़ुज़ूर (ﷺ)! फिर इनका तदारुक क्या है? फ़र्माया जब ह़सद कर तो इस्तिग़फ़ार कर ले। जब गुमान पैदा हो तो उसे छोड़ दे और यक़ीन न कर। और जब शगून ले ख़्वाह नेक निकले ख़्वाह बद अपने काम से न रुक, उसे पूरा कर।" (त़ब्रानी : 3227; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन फ़ीहि इ़लल मिन्हा ज़ुअ़फ़ इस्माईल बिन क़ैस अंस़ारी, मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 8/78) अबूदाऊद में है कि एक शख़्स़ को ह़ज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) के पास लाया गया और कहा गया कि इसकी

दाढ़ी से शराब के क़तरे गिर रहे हैं। आपने फ़र्माया हमें भेद टटोलने से मना किया गया है अगर हमारे सामने कोई चीज़ ज़ाहिर हो गई तो हम उस पर पकड़ कर सकते हैं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ित्तजस्सुस : 4890; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अअमश मुदल्लस रावी है और तसरीह बिस्सिमाअ साबित नहीं।) मुस्नद अहमद में है कि "उक़्बा के कातिब दख़ीन के पास हज़रत अबुल हैसम गए और उनसे कहा कि मेरे पड़ौस में कुछ लोग शराबी हैं, मेरा इरादा है कि मैं दारोग़ा को बुलाकर उन्हें गिरफ़्तार करा दूँ। आपने फ़र्माया ऐसा न करना बल्कि उन्हें समझाओ बुझाओ डाँट डपट करो। फिर कुछ दिनों के बाद आए और कहा वह बाज़ नहीं रहते अब तो मैं ज़रूर दारोग़ा को बुलाऊँगा। आपने फ़र्माया, अफ़सोस अफ़सोस! तुम हर्गिज़ हर्गिज़ ऐसा न करो। सुनो! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आपने फ़र्माया जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करे उसे इतना सवाब मिलेगा जैसे किसी ने ज़िन्दा दरगोर की हुई लड़की को ज़िन्दा कर दिया।" (अहमद : 4/153; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िस्सतर अलल मुस्लिम : 4891, 4892; वहुव हसन अल्अदबुल मुफ़्रद : 758; इब्ने हिब्बान : 517; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7283; बैहक़ी : 8/331; तबरानी : 17/883) अबूदाऊद में है हज़रत मुआविया (रज़ि.) फ़र्माते हैं "रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है अगर तू लोगों की पोशीदगियाँ और उनके राज़ टटोलने के दर पे होगा तो तू उन्हें बिगाड़ देगा या फ़र्माया मुम्किन है तू उन्हें ख़राब कर दे।" हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस हदीस से अल्लाह तआला ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) को बहुत फ़ायदा पहुँचाया। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ित्तजस्सुस : 4888; वहुव सहीहुन) अबूदाऊद की एक और हदीस में है कि अमीर और बादशाह जब अपने मातहतों और रिआया की बुराइयाँ टटोलने लग जाता है और गहरा उतरना शुरू कर देता है तो उन्हें बिगाड़ देता है।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ित्तजस्सुस : 4889; वसनदुहू हसन) फिर फ़र्माया कि तजस्सुस न करो यानी बुराइयाँ मालूम करने की कोशिश न करो, ताक झाँक न किया करो। इसी से जासूस माख़ूज़ है, तजस्सुस का इत्लाक़ उमूमन बुराई पर होता है और तहस्सुस का इत्लाक़ भलाई के ढूँढने पर। जैसे हज़रत यअक़ूब (عليه السلام) अपने बेटों से फ़र्माते हैं (فَتَحَسَّسُوْا) (12/यूसुफ़ : 87) बच्चो! तुम जाओ और यूसुफ़ और बिरादरे यूसुफ़ को ढूँढो और अल्लाह रहमान की रहमत से नाउम्मीद न हो, और कभी कभी उन दोनों का इस्तेमाल शर्र और बुराई में होता है चुनाँचे हदीस शरीफ़ में है "न तजस्सुस करो न तहस्सुस करो, न हसद व बुग़्ज़ करो, न मुँह मोड़ो बल्कि सब मिलकर अल्लाह के बन्दे भाई भाई बन जाओ।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यन्हा अनित्तहासुद वत्तदाबुर : 6064; सहीह मुस्लिम : 2563) इमाम औज़ाई (रह.) फ़र्माते हैं तजस्सुस कहते हैं किसी चीज़ में कुरेद करने को और तहस्सुस कहते हैं उन लोगों की सरगोशी पर कान लगाने को जो किसी को अपनी बातें सुनाना न चाहते हों और तदाबुर कहते हैं एक दूसरे से रुक कर, आज़ुर्दा होकर क़तअ ताल्लुक़ात करने को।

फिर ग़ीबत से मना फ़र्माता है। अबूदाऊद में है "लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! ग़ीबत क्या है? फ़र्माया यह कि तू अपने मुसलमान भाई की किसी ऐसी बात का ज़िक्र करे जो उसे बुरी मालूम हो, तो कहा गया कि अगर वह बात उसमें हो जब भी? फ़र्माया, हाँ! ग़ीबत तो यही है वरना बोहतान और तोहमत है।"

(अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबति : 4874; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1934; अहमद : 2/384) अबूदाऊद में है कि "एक बार हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया कि सफ़िया तो ऐसी ऐसी हैं। मुसद्दद रावी कहते हैं यानी कम क़ामत, तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया तूने ऐसी बात कही है कि समुन्द्र के पानी में अगर मिला दी जाए तो उसे भी बिगाड़ दे" और एक बार आपके सामने किसी शख़्स की कुछ ऐसी ही बातें बयान की गईं तो आपने फ़र्माया, मैं इसे पसंद नहीं करता गो मुझे कोई बहुत बड़ा नफ़ा भी मिल जाए। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबति : 4875; वसनदुहू सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2502) इब्ने जरीर में है कि "एक बीवी साहिबा हज़रत आइशा (रज़ि.) के यहाँ आईं जब वह जाने लगीं तो सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने हुज़ूर (ﷺ) को इशारे से कहा कि यह बहुत पस्त क़ामत की हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने इनकी ग़ीबत की।" (तब्री : 22/307) अल्ग़र्ज़ ग़ीबत हराम है और इसकी हुर्मत पर मुसलमानों का इज्माअ है लेकिन हाँ! शरई मस्लिहत की बिना पर किसी की ऐसी बात का ज़िक्र करना ग़ीबत में दाख़िल नहीं जैसे जरह व ता'दील नसीहत व ख़ैरख़्वाही। जैसे कि नबी (ﷺ) ने एक फ़ाजिर शख़्स की निस्बत फ़र्माया था, यह बहुत बुरा आदमी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब मा यजूज़ु मिन इग़्तियाबि अहलिल फ़साद वर्रयबि : 6054; सहीह मुस्लिम : 2591; अबूदाऊद : 4791; तिर्मिज़ी : 1996; अहमद : 6/38; इब्ने हिब्बान : 4538) और जैसे कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया था "मुआविया मुफ़्लिस शख़्स है और अबुल जह्म बड़ा मारने पीटने वाला शख़्स है।" यह आपने उस वक़्त फ़र्माया था जबकि उन दोनों बुज़ुर्गों ने हज़रत फ़ातिमा बिन्ते क़ैस (रज़ि.) से निकाह का माँगा डाला था। (सहीह मुस्लिम, किताबुत्तलाक़, बाब अल्मुतल्लक़तुल बाइन ला नफ़्क़ता लहा : 1480) और भी जो बातें इस तरह की हों उनकी तो इजाज़त है बाक़ी और ग़ीबत हराम है और कबीरा गुनाह है। इसीलिए यहाँ फ़र्माया कि जिस तरह तुम अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाने से घिन करते हो उससे बहुत ज़्यादा नफ़रत तुम्हें ग़ीबत से करनी चाहिए। जैसे हदीस में है "अपने दिये हुए हिबा को वापिस लेने वाला ऐसा है जैसे कुत्ता क़ै करके चाट जाए।" और फ़र्माया बुरी मिसाल हमारे लिए लायक़ नहीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हिबा, बाब ला यहिल्लु लि इहदानि यरजिउ फ़ी हिबति व सदक़ति : 2622; सहीह मुस्लिम : 1622; मुख़्तसरन) हज्जतुल वदाअ के ख़ुत्बे में है "तुम्हारे ख़ून माल आबरू तुम पर ऐसे ही हराम हैं जैसी हुर्मत तुम्हारे इस दिन की तुमहारे इस महीने में और तुम्हारे इस शहर में है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल इल्म, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) रूब्बा मुबल्लिग़िन औआ मिन सामिअ : 67; सहीह मुस्लिम : 1679) अबूदाऊद में हुज़ूर (ﷺ) का फ़र्मान है कि "मुसलमान का माल, उसकी इज़्ज़त और उसका ख़ून मुसलमान पर हराम है। इंसान को इतनी ही बुराई काफ़ी है कि वह अपने दूसरे मुसलमान भाई को हक़ारत करे।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबत : 4882; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 1927) और हदीस में है "ऐ वह लोगों! जिनकी ज़ुबानें तो ईमान ला चुकी हैं लेकिन दिल ईमानदार नहीं हुए तुम मुसलमानों की ग़ीबतें करनी छोड़ दो और उनके ऐबों की कुरैद न किया करो याद रखो अगर तुमने उनके ऐब टटोले तो अल्लाह तआला तुम्हारी पोशीदगियों को ज़ाहिर कर देगा, यहाँ तक कि तुम अपने घराने वालों में भी बदनाम और रुस्वा हो जाओगे।" (अबूदाऊद,

किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबत : 4880; वहुव हसन) मुस्नदे अबी यअ़ला में है कि "अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने हमें एक ख़ुत्बा सुनाया जिसमें आपने पर्दानशीन औरतों के कानों में भी अपनी आवाज़ पहुँचाई, और उस ख़ुत्बे में ऊपर वाली हदीस बयान की। (मुस्नदे अबी यअ़ला : 1675; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ अन्अन) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक बार कअ़बा की तरफ़ देखा और फ़र्माया "तेरी हुर्मत व अ़ज़्मत का क्या ही कहना है लेकिन तुझसे भी बहुत ज़्यादा हुर्मत एक ईमानदार शख़्स की अल्लाह तआ़ला के नज़दीक है।" (तिर्मिज़ी, अब्वाबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़ी ता'ज़ीमुल मोमिन : 2032; वसनदुहू हसन; इब्ने हिब्बान : 5763) अबूदाऊद में है जिसने किसी मुसलमान की बुराई करके एक निवाला हासिल किया उसे जहन्नम की इतनी ही ग़िज़ा खिलाई जाएगी, इसी तरह जिसने मुसलमान की बुराई करने पर पोशाक हासिल की उसे उसी जैसी पोशाक जहन्नम की पहनाई जाएगी और जो शख़्स किसी दूसरे की बुराई दिखाने सुनाने को खड़ा हुआ उसे अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन दिखावे सुनावे के मक़ाम पर खड़ा कर देगा। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबत : 4881; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; बक़ीह बिन वलीद के सिमाअ़े मुसलसल की सराहत नहीं है। अल्अदबुल मुफ़रद : 240; किताबुज़्ज़ुहद : 707) हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मेअ़राज वाली रात मैंने देखा कि कुछ लोगों के नाख़ुन तांबे के हैं जिनसे वह अपने चेहरे और सीने नोच रहे हैं। मैंने पूछा कि जिब्रील (عليه السلام)! यह कौन लोग हैं? अ़र्ज़ किया यह वह हैं जो लोगों के गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़तें लूटते थे।" (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़िल्ग़ीबत : 4878; वसनदुहू सहीहुन; अहमद : 3/224) और रिवायत में है कि लोगो के सवाल के जवाब में आपने फ़र्माया "मेअ़राज वाली रात मैंने बहुत से लोगों को देखा जिनमें मर्द औरत दोनों थे कि फ़रिश्ते उनकी करवटों से गोश्त काटते हैं और फिर उन्हें उसके खाने पर मजबूर कर रहे हैं और वह उसे चबा रहे हैं मेरे सवाल करने पर कहा गया कि यह वह लोग हैं जो तअ़नाज़न, ग़ीबत गो, चुग़लख़ोर थे इन्हें जबरन आज ख़ुद इनका गोश्त खिलाया जा रहा है।" (तब्री : 22/308; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन) (इब्ने अबी हातिम) यह हदीस बहुत ही लम्बी है और हमने पूरी हदीस सूरह सुब्हान की तफ़्सीर में बयान भी कर दी है, फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

मुस्नदे अबूदाऊद तयालिसी में है कि "हुज़ूर (ﷺ) ने लोगों को रोज़े का हुक्म दिया और फ़र्माया जब तक मैं न कहूँ कोई इफ़्तार न करे। शाम को लोग आने लगे और आपसे पूछने लगे आप उन्हें इजाज़त देते और वह इफ़्तार करते इतने में एक साहब आये और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! औरतों ने रोज़ा रखा था जो आप ही के मुतअ़ल्लिक़ीन में से हैं उन्हे भी आप इजाज़त दीजिए कि रोज़ा खोल लें। आपने उससे मुँह फेर लिया। उसने दोबारा अ़र्ज़ किया तो आपने फ़र्माया, वह रोज़े से नहीं हैं, क्या वह भी रोज़ेदार हो सकता है जो इंसानी गोश्त खाता रहे? जाओ उन्हें कहो कि अगर वह रोज़े से हैं तो क़ै (उल्टी) करें चुनाँचे उन्होंने क़ै की जिसमें ख़ून बस्ता के लोथड़े निकले। उसने आकर हुज़ूर (ﷺ) को ख़बर दी। आपने फ़र्माया अगर यह इसी हालत में मर जातीं तो आग का लुक़्मा बनतीं।" (मुस्नदे तयालिसी : 2107; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; यज़ीद बिन अबान रक़्क़ाशी ज़ईफ़ है।) दूसरी रिवायत में है कि "उस शख़्स ने कहा था हुज़ूर (ﷺ)! उन दोनों औरतों की रोज़े में

बुरी हालत है, मारे प्यास के मर रही हैं और यह दोपहर का वक़्त था, हुज़ूर (ﷺ) की ख़ामोशी पर उसने दोबारा कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! वह तो मर गई होंगी या थोड़ी देर में मर जाएँगी। आपने फ़र्माया, जाओ उन्हें बुला लाओ। जब वह आईं तो आपने दूध का बर्तन एक के सामने रखकर फ़र्माया, इसमें उल्टी कर। उसने उल्टी की तो उसमें पीप ख़ून जामिद वग़ैरह निकला जिससे आधा बर्तन भर गया फिर दूसरी से उल्टी कराई उसमे भी यही चीज़ें और गोश्त के लोथड़े वग़ैरह निकले और बर्तन भर गया। उस वक़्त आपने फ़र्माया, इन्हें देखो ह़लाल से तो रोज़ा रखे हुए थीं और ह़राम खा रही थीं। दोनों बैठकर लोगों के गोश्त खाने लगी थीं'' (यानी ग़ीबत कर रही थीं) (अह़मद : 5/431; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुलेमान तैमी अ़न्अ़न व शैख़ मज्हूल मुस्नदे अबी यअ़ला : 1576; दलाइलुन्नबुव्वता लिल्बैहक़ी : 6/186) मुस्नदे ह़ाफ़िज़ अबू यअ़ला में है कि ''ह़ज़रत माइज़ (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने ज़िना किया है आपने मुँह फेर लिया यहाँ तक कि वह चार बार कह चुके फिर आपने पाँचवीं बार कहा तूने ज़िना किया है? जवाब दिया, हाँ। फ़र्माया जानता है ज़िना किसे कहते हैं? जवाब दिया हाँ! जिस त़रह़ इंसान अपनी ह़लाल औ़रत के पास जाता है उसी त़रह़ ह़राम औ़रत से किया। आपने फ़र्माया, अब तेरा मक़्सद क्या है? कहा यह कि आप मुझे इस गुनाह से पाक करें। आपने फ़र्माया क्या तूने इसी त़रह़ दुख़ूल किया था जिस त़रह़ सिलाई सुरमादानी में और लकड़ी कूएँ में? कहा, हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! अब आपने उन्हें रजम करने का यानी पत्थर से मारने का हुक्म दिया, चुनाँचे यह रजम कर दिये गए। उसके बाद हुज़ूर (ﷺ) ने दो शख़्सों को यह कहते हुए सुना कि इसे देखो! अल्लाह ने इसकी पर्दापोशी की थी लेकिन इसने अपने आपको न छोड़ा यहाँ तक कि कुत्ते की त़रह़ पथराव किया गया। आप यह सुनते हुए चलते रहे। थोड़ी देर बाद आपने देखा कि रास्ते में एक मुर्दा गधा पड़ा है, फ़र्माया फ़लाँ फ़लाँ शख़्स कहाँ हैं? वह सवारी से उतरें और इस गधे का गोश्त खाएँ। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह आपको बख़्शे क्या यह खाने के क़ाबिल है? आपने फ़र्माया अभी जो तुमने अपनेभाई की बुराई बयान की थी वह इससे भी ज़्यादा बुरी चीज़ थी। उस अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है वह शख़्स जिसे तुमने बुरा कहा था वह तो अब इस वक़्त जन्नत की नहरों में ग़ोते लगा रहा है।'' (अबूदाऊद, किताबुल हुदूद, बाब रजम माइज़ बिन मालिक : 4428; वसनदुहू ह़सन; बैहक़ी : 8/227; इब्ने ह़िब्बान : 4399) मुस्नद अह़मद में है ''हम नबी (ﷺ) के साथ थे जो निहायत सड़ी हुई मुरदार बू वाली हवा चली। आपने फ़र्माया जानते हो यह बू किस चीज़ की है? यह बदबू उनकी है जो लोगों की ग़ीबत करते हैं।'' (अह़मद : 3/351; वसनदुहू ह़सन; शुअबुल ईमान : 6732; अल्अदबुल मुफ़्रद : 732; अस्सुम्तु लि इब्ने अबिद्दुनिया : 216; मसावा अल्अख़्लाक़ु लिल ख़राइत़ी : 189; अल्इत्तिह़ाफ़ : 3/179) और रिवायत में है कि मुनाफ़िक़ों के एक गिरोह ने मुसलमानों की ग़ीबत की है। यह बदबूदार हवा वह है। ह़ज़रत सुद्दी (रह़.) फ़र्माते हैं कि ''ह़ज़रत सलमान (रज़ि.) एक सफ़र में दो शख़्सों के साथ थे जिनकी ख़िदमत यह करते थे और वह उन्हें खाना खिलाते थे। एक बार ह़ज़रत सलमान (रज़ि.) सो गए थे और क़ाफ़िला आगे चल पड़ा, पड़ाव पर पहुँचकर उन दोनों ने देखा कि ह़ज़रत सलमान नहीं आए तो अपने हाथों से उन्हें ख़ेमा खड़ा

करना पड़ा और गुस्से से कहा, सलमान तो बस इतने ही काम का है कि पकी पकाई खा ले और तैयार ख़ेमे में आराम कर ले। थोड़ी देर में हज़रत सलमान (रज़ि.) पहुँचे उन दोनों के पास सालन न था तो कहा तुम जाओ और रसूलुल्लाह (ﷺ) से हमारे लिए सालन ले आओ, यह गए और हुज़ूर (ﷺ) से कहा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे मेरे दोनों साथियों ने भेजा है कि अगर आपके पास सालन हो तो दे दीजिए। आपने फ़र्माया, वह सालन का क्या करेंगे? उन्होंने तो सालन पा लिया। हज़रत सलमान (रज़ि.) वापिस गए और जाकर उनसे यह बात कही। वह उठे और ख़ुद हाज़िरे हुज़ूर हुए और कहा, हुज़ूर (ﷺ)! हमारे पास तो सालन नहीं न आपने भेजा। आपने फ़र्माया तुमने सलमान के गोश्त का सालन खा लिया जबकि तुमने उन्हे यूँ यूँ कहा इस पर यह आयत नाज़िल हुई।'' (इब्ने अबी हातिम, वसनदुहू ज़ईफ़ुन; ला इर्सालिही अद्दुर्रुल मंसूर : 6/102) (मैतन) इसलिए कि वह सोये हुए थे और यह उनकी ग़ीबत कर रहे थे। अज़ियाउल मक़्दिसी की किताबुल मुख़्तार में तक़रीबन ऐसा ही एक वाक़िया हज़रत अबूबक्र और हज़रत उमर (रज़ि.) का है उसमें यह भी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, ''मैं तुम्हारे इस ख़ादिम का गोश्त तुम्हारे दाँतों में अटका हुआ देख रहा हूँ। और उनका अपने गुलाम से जबकि वह सोया हुआ था और उनका खाना तैयार नहीं किया था सिर्फ़ इतना कहना मरवी है कि यह तो बड़ा ही सोने वाला है। इन दोनों बुज़ुर्गों ने हुज़ूर (ﷺ) से कहा आप हमारे लिए इस्तिग़फ़ार कीजिए। आपने फ़र्माया जाओ उसी से कहो वह तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार करे।'' (अल्मुख़्तारु लिल मक़्दिसी (5/71; ह : 1697) वसनदुहू हसन; व अख़्ताअ मिन जुअफ़िही) अबू यअ़ला में है जिसने दुनिया में अपने भाई का गोश्त खाया (यानी उसकी ग़ीबत की) क़ियामत के दिन उसके सामने वह गोश्त लाया जाएगा कि जैसे उसकी ज़िन्दगी में तूने उसका गोश्त खाया था अब मुर्दे का गोश्त भी खा। अब यह चीख़ेगा चिल्लाएगा हाय वाय करेगा और इसे जबरन वह मुर्दा गोश्त खाना पड़ेगा। (अबू यअ़ला वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने इस्हाक़ अन्अन)

फिर फ़र्माता है अल्लाह का लिहाज़ करो उसके अह्काम बजा लाओ उसकी मनाकर्दा चीज़ों से रुक जाओ और उससे डरते रहा करो। जो उसकी तरफ़ झुके वह उसकी तरफ़ माइल हो जाता है। तौबा करने वाले की तौबा क़बूल करता है और जो उस पर भरोसा करे उसकी तरफ़ रुजूअ करे वह उस पर रहम और मेहरबानी करता है। जुम्हूर उलमा-ए-किराम फ़र्माते हैं ग़ीबत करने वालों के तौबा का तरीक़ा यह है कि वह उस ख़स्लत को छोड़ दे और फिर से उस गुनाह को न करे। पहले जो कर चुका है उस पर नादिम होना भी शर्त है या नहीं? इसमें इख़्तिलाफ़ है और जिसकी ग़ीबत की है उससे माफ़ी हासिल कर ले। कुछ कहते हैं यह भी शर्त नहीं इसलिए कि मुम्किन है उसे ख़बर ही न हो और वह माफ़ी माँगने को जब जाएगा तो उसे और रंज होगा। पस उसका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि जिन मज्लिसों में उसकी बुराई बयान की थी उनमें अब उसकी सच्ची भलाई बयान करे और उस बुराई को अपनी ताक़त के मुताबिक़ दूर कर दे तो अदला बदला हो जाएगा। मुस्नद अहमद में है ''जो शख़्स उस वक़्त किसी मोमिन की हिमायत करे जबकि कोई मुनाफ़िक़ उसकी मज़म्मत बयान कर रहा हो, अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को मुक़र्रर कर देता है जो क़ियामत वाले दिन उसके गोश्त को नारे जहन्नम से बचाएगा। और जो शख़्स किसी मोमिन पर कोई ऐसी बात कहेगा जिससे उसका इरादा उसे मतऊन

करने का हो उसे अल्लाह तआला पुल सिरात पर रोक लेगा यहाँ तक कि बदला हो जाएगा?'' (अहमद : 3/441; अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब अर्रजुल यज़िबु अन अर्ज़ि अख़ीहि : 4883; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इस्माईल बिन यह्या रावी मज्हूल है।) अबूदाऊद की एक और हदीस में है कि ''जो शख़्स किसी मुसलमान की बेइज़्ज़ती ऐसी जगह करे जहाँ उसकी आबरूरेज़ी और तौहीन होती हो तो उसे भी अल्लाह तआला ऐसी जगह रुस्वा करेगा जहाँ वह अपनी मदद का तालिब हो और जो मुसलमान ऐसी जगह अपने भाई की हिमायत करे अल्लाह तआला भी ऐसी जगह उसकी मदद करेगा।'' (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब अर्रजुल यज़िबु अन अर्ज़ि अख़ीहि : 4884; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अहमद : 4/30; अस्सुम्तु लि इब्ने अबिद्दुनिया : 1/240)

***

يَاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآىِٕلَ
لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿۱۳﴾

तर्जुमा : ''ऐ लोगों हमने तुम सबको एक ही मर्द औरत से पैदा किया है और इसलिए कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो और तुम्हारी जमाअतें और क़बीले बना दिये हैं। अल्लाह के नज़दीक तुम सबमें से बड़ा वह है जो सबसे ज़्यादा डरने वाला है यक़ीन मानो कि अल्लाह तआला दाना और बाख़बर है।'' (13)

फ़ज़ीलत और वक़ार का मेअयार तक़्वा पर है (आ. 13) : अल्लाह तआला बयान करता है कि उसने तमाम इंसानों को एक ही नफ़्स से पैदा किया है यानी हज़रत आदम (عليه السلام) से, उन ही से उनकी बीवी साहिबा हज़रत हव्वा (عليها السلام) को पैदा किया था और फिर उन दोनों मिसालों से नस्ले इंसानी फैली, शुऊब क़बाइल से आम है। मिसाल के तौर पर अरब तो शुऊब में दाख़िल है फिर कुरैश ग़ैर कुरैश फिर उनकी तक़्सीम यह सब क़बाइल में दाख़िल है, कुछ कहते हैं शुऊब से मुराद अज्मी लोग और क़बाइल से मुराद अरब जमाअतें जैसे कि बनी इस्राईल को अस्बात कहा गया है। मैंने इन तमाम बातों को एक अलग मुक़द्दमा में लिख दिया है जिसे मैंने अबू अम्र बिन अब्दुल्लाह की किताबुल अंबाह और किताबुल क़सद वल उमम फ़ी मुअतरिफ़ा अंसाबुल अरब वल अजम से जमा किया है। मक़्सद इस आयते मुबारका का यह है कि हज़रत आदम (عليه السلام) जो मिट्टी से पैदा हुए थे उनकी तरफ़ की निस्बत में तो कुल जहान के आदमी हम मर्तबा हैं। अब जो कुछ फ़ज़ीलत जिस किसी को हासिल होगी वह अम्रे दीनी इताअते इलाही और इत्तिबाअे नबी की वजह से होगी। यही राज़ है जो इस आयत को ग़ीबत की मुमानिअत और एक दूसरे की तौहीन व तज़्लील से रोकने के बाद वारिद की कि सब लोग अपनी पैदाइशी निस्बत के लिहाज़ से बिलकुल यक्साँ हैं। कुंबे क़बीले बिरादरियाँ और जमाअतें सिर्फ़

पहचान के लिए हैं ताकि जत्थाबन्दी और हमदर्दी क़ायम रहे, फ़लाँ बिन फ़लाँ क़बीले वाला कहा जा सके और इस तरह एक दूसरे की पहचान आसान हो जाए वरना बशरियत के एतिबार से सब क़ौमें यक्साँ हैं। हज़रत सुफ़्यान सौरी (रह.) फ़र्माते हैं क़बीला हिम्यर अपने हलीफ़ों की तरफ़ मंसूब होता था और हिजाज़ी (मक्का, ताइफ़, यस्रिब (मदीना) इन तीनों शहरों को मिल कर हिजाज़ कहा जाता था) अरब अपने क़बीलों की तरफ़ अपनी निस्बत करते थे। तिर्मिज़ी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "नसब का इल्म हासिल करो ताकि सिलारहमी कर सको, सिलारहमी से लोग तुमसे मुहब्बत करने लगेंगे, तुम्हारे माल और तुम्हारी ज़िन्दगी में अल्लाह तआला बरकत देगा।" (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़ी ता'लीमिन्नसब : 1979; वसनदुहू हसन) यह हदीस इस सनद से ग़रीब है। फिर फ़र्माया हसब नसब अल्लाह तआला के यहाँ नहीं चलता वहाँ तो फ़ज़ीलत तक़्वा और परहेज़गारी से मिलती है। सहीह बुख़ारी में है "रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा गया कि सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग कौन है? आपने फ़र्माया जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार हो। लोगों ने कहा हम यह आम बात नहीं पूछते। फ़र्माया फिर सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग हज़रत यूसुफ़ (عليه السلام) हैं जो ख़ुद नबी थे, नबीज़ादे थे, दादा भी नबी थे, परदादा तो ख़लीलुल्लाह थे। उन्होंने कहा, हम यह भी नहीं पूछते। फिर फ़र्माया फिर अरब के बारे में पूछते हो? सुनो इनके जो लोग जाहिलियत के ज़माने में मुमताज़ थे वही अब इस्लाम में भी पसंदीदा हैं जबकि वह इल्मे दीन की समझ हासिल कर लें।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह यूसुफ़ बाब क़ौलुहू (लक़द काना फ़ी यूसुफ़ व इख़्वतिही..) : 4689; सहीह मुस्लिम : 2378) सहीह मुस्लिम में है "अल्लाह तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बल्कि तुम्हारे दिलों और अमलों को देखता है।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब तहरीमुज़्ज़ुल्मुल मुस्लिम : 2564; अहमद : 2/439; इब्ने हिब्बान : 394) मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से फ़र्माया "ख़्याल रख कि तू किसी लाल व काले पर कोई फ़ज़ीलत नहीं रखता, हाँ तक़्वे में बढ़ जाए तो फ़ज़ीलत वाला है।" (अहमद : 5/158; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी यस्मउ मिन अबी ज़र (रज़ि.) व हदीसि अहमद : 5/411; युग़्नी अन्ह; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/84) तब्रानी में है सब मुसलमान आपस में भाई भाई हैं किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत नहीं मगर तक़्वे के साथ। (तब्रानी : 3547; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/84; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा, मौज़ूअ अब्दुर्रहमान बिन अम्र बिन जबलह् मतरूक कज़्ज़बहू ग़ैरा वाहिद) मुस्नदे बज़्ज़ार में है "तुम सब औलादे आदम हो और ख़ुद हज़रत आदम (عليه السلام) मिट्टी से पैदा किये गए हैं। लोगों! अपने बाप दादों के नाम पर फ़ख़्र करने से बाज़ आओ वरना अल्लाह तआला के नज़दीक रेत के तोदों और आबी परिन्दो से भी ज़्यादा हल्के हो जाओगे।" (मुस्नदे बज़्ज़ार : 2043; वसनदुहू ज़ईफ़ुन क़ैस बिन रबीअ ज़ईफ़ मशहूर; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/86) इब्ने अबी हातिम में है "हुज़ूर (ﷺ) ने फ़तहे मक्का वाले दिन अपनी ऊँटनी क़स्वा पर सवार होकर तवाफ़ किया और अरकान को आप अपनी छड़ी से छू लेते थे। फिर चूँकि मस्जिद में उसके बिठाने की जगह न मिली तो लोगों ने आपको हाथों हाथ उतारा और ऊँटनी को बत्ने मसील में ले जाकर बिठाया। उसके बाद आपने अपनी ऊँटनी पर सवार होकर लोगों को ख़ुत्बा दिया जिसमें अल्लाह तआला की पूरी हम्दो सना

बयान करके फ़र्माया लोगों! अल्लाह तआला ने तुमसे जाहिलियत के अस्बाब और जाहिलियत के बाप दादों पर फ़ख़्र करने की रस्म अब दूर कर दी है, पस इंसान दो ही क़िस्म के हैं या तो नेकोकार परहेज़ गार जो अल्लाह तआला के नज़दीक बुलंद मर्तबा हैं या बदकार ग़ैर मुत्तक़ी जो अल्लाह तआला की नज़रों में ज़लीलो ख़्वार हैं। फिर आपने यह आयत तिलावत की।

फिर फ़र्माया मैं अपनी यह बात कहता हूँ और अल्लाह तआला से अपने लिए और तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार करता हूँ।'' (अब्द बिन हुमैद : 793 वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में मूसा बिन उबेदह रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/256; रक़म : 3636) मुस्नदे अहमद में है कि ''तुम्हारे यह नसबनामे कोई काम देने वाले नहीं तुम सब बराबर के हज़रत आदम (ﷺ) के लड़के हो किसी को किसी पर फ़ज़ीलत नहीं, हाँ! फ़ज़ीलत दीन व तक़्वा से है इंसान को यही बुराई काफ़ी है कि वह बदगो बख़ील औ फ़ोहश कलाम हो।'' (अहमद : 4/158; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ अन्अन, शुअबुल ईमान : 6677; शरह मुश्किलुल आसार : 3459) इब्ने जरर की इस रिवायत में है कि ''अल्लाह तआला तुम्हारे हसब व नसब को क़ियामत के दिन न पूछेगा तुममें सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग अल्लाह तआला के नज़दीक वह है जो तुम सबसे ज़्यादा परहेज़गार हों।'' (तबरी : 22/313) मुस्नदे अहमद में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) मिम्बर पर थे जो एक शख़्स ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! सबसे बेहतर कौन है? आपने फ़र्माया जो सबसे ज़्यादा मेहमान नवाज़ सबसे ज़्यादा परहेज़गार सबसे ज़्यादा अच्छी बात का हुक्म देने वाला सबसे ज़्यादा बुरी बात से रोकने वाला सबसे ज़्यादा सिलारहमी करने वाला हो।'' (अहमद : 6/432; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; शुरैक क़ाज़ी मुदल्लस अन्अन) मुस्नद अहमद में है ''हुज़ूर (ﷺ) को दुनिया की कोई चीज़ या कोई शख़्स कभी भला नहीं लगता था सिवा तक़्वा वाले के।'' (अहमद : 6/69; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ हद्दस बिही क़ब्ल इख़्तिलातिही वमा जाअ तस्रीहु सिमाइही इल्ला फ़िरिंवायतल्लती बअद इख़्तिलातिही; मुस्नदे अबी यअला : 4552; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/84) अल्लाह तआला तुम्हें जानता है और तुम्हारे कामों से ख़बरदार है, हिदायत के लायक़ जो हैं उनहें राहे रास्त दिखाता है और जो इस लायक़ नहीं वह बेराह हो रहे हैं, रहम और अज़ाब उसकी मशिय्यत पर मौक़ूफ़ हैं। फ़ज़ीलत उसके हाथ है जिसे चाहे जिस पर चाहे बुज़ुर्गी अता करे यह तमाम उमूर उसके इल्म और उसकी खबरगीरी पर मब्नी है। इस आयते करीमा और इन अहादीसे मुबारका से इस्तिदलाल करके उलमा ने फ़र्माया है कि निकाह में क़ौमियत और हसब नसब की शर्त नहीं, सिवाए दीन के और कोई शर्त मुअतबर नहीं। दूसरों ने कहा है कि हम नसबी और क़ौमियत भी शर्त है और इनके दलाइल इनके सिवा और हैं जो कुतुबे फ़िक़ा में मज़्कूर हैं और हम भी इन्हें किताबुल अहकाम में ज़िक्र कर चुके हैं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! तबरानी में हज़रत अब्दुर्रहमान से मरवी है कि उन्होंने बनू हाशिम में से एक शख़्स को यह कहते हुए सुना कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से बनिस्बत और तमाम लोगों के बहुत ज़्यादा क़रीब हूँ। दूसरे ने कहा तेरी बनिस्बत मैं आप (ﷺ) से बहुत ज़्यादा क़रीब हूँ और मुझे आप (ﷺ) से निस्बत भी है।

***

قَالَتِ الْأَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْۤا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْاِيْمَانُ فِىْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ اَعْمَالِكُمْ
شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ
لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ
الصّٰدِقُوْنَ ﴿۱۵﴾ قُلْ اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۶﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَىَّ
اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۷﴾
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸﴾

तर्जुमा : ''देहाती लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये तू कह कि दरहक़ीक़त तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम यूँ कहो कि हम (मुख़ालिफ़त छोड़कर) मुतीअ़ हो गए क्योंकि अभी तक तुम्हारे दिलों में ईमान दाख़िल ही नहीं हुआ। तुम अगर अल्लाह की और उसके रसूल की फ़र्मांबरदारी करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल में से कुछ भी कम न करेगा। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (14) मोमिन तो वह हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर पक्का ईमान लाएँ फिर शक व शुब्हा न करें और अपने मालों से और अपनी जानों से राहे इलाही में जिहाद करते रहें (अपने दावा ईमान में) यही सच्चे और रास्तबाज़ हैं। (15) कह दे कि क्या तुम अल्लाह तआला को अपनी दीनदारी से आगाह कर रहे हो? अल्लाह हर उस चीज़ से जो आसमानों में और ज़मीन में है बख़ूबी आगाह है। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16) अपने मुसलमान होने का तुझ पर एहसान रखते हैं तू कह दे कि अपने मुसलमान होने का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि दरअसल अल्लाह तआला का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत की अगर तुम रास्त गो हो। (17) यक़ीन मानो कि आसमानों की और ज़मीन की पोशीदा बातें अल्लाह ख़ूब जानता है। और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।'' (18)

ईमान और इस्लाम में फ़र्क़ (आ. 14 से 18) : जो आराबी लोग इस्लाम में दाख़िल होते ही अपने ईमान का बढ़ा चढ़ाकर दावा करने लगते थे, हालाँकि दरअसल उनके दिल में अब तक ईमान की जड़ें मज़बूत नहीं हुई थी, अल्लाह तआला उनको यह दावा करने से रोकता है, यह कहते थे हम ईमान लाए, अल्लाह तआला अपने नबी को हुक्म देता है कि चूँकि अब तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाख़िल नहीं हुआ तुम यूँ न कहो कि हम ईमान लाए बल्कि यूँ कहो कि हम मुसलमान हुए यानी इस्लाम के हल्क़ा बगोश हुए नबी की इताअत में आए। इस आयत ने यह फ़ायदा दिया कि ईमान इस्लाम से मख़्सूस चीज़ है जैसे कि अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब है। कुछ लोग कहते हैं कि यहाँ इस आयत में इस्लाम से मुराद इस्लाम लग़वी है शरई नहीं (यानी मातहत रिआया बनने के हैं मुसलमान बनने के नहीं मुतर्जिम) जिब्रईल (عليه السلام) वाली हदीस भी इसी पर दलालत करती है जबकि उन्होंने इस्लाम के बारे में सवाल किया फिर ईमान के बारे में फिर एहसान के बारे में पस वह ज़ीना ब ज़ीना चढ़ने लगे। आम से ख़ास की तरफ़ आये और फिर ख़ास से अख़स्स की तरफ़ आये। मुस्नद अहमद में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) ने चंद लोगों को अतिया और इन्आम दिया और एक शख़्स को कुछ भी न दिया। इस पर हज़रत सअद (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपने फ़लाँ फ़लाँ को दिया और फ़लाँ को बिलकुल छोड़ दिया हालाँकि वह मोमिन है। हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान? तीन बार यके बाद दीगरे हज़रत सअद (रज़ि.) ने यही कहा और हुज़ूर (ﷺ) ने भी यही जवाब दिया। फिर फ़र्माया, ऐ सअद! मैं लोगों को देता हूँ और जो उनसे बहुत ज़्यादा महबूब होता है उसे नहीं देता हूँ, देता हूँ इस डर से कि कहीं वह औंधे मुँह आग में न गिर पड़ें।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुल ईमान, बाब इज़ा लम यकुनिल इस्लामु अलल हक़ीक़ति : 27; सहीह मुस्लिम : 150; अबूदाऊद : 4683; अहमद : 1/167) पस इस हदीस में भी हुज़ूर (ﷺ) ने मोमिन व मुस्लिम में फ़र्क़ किया और मालूम हो गया कि ईमान ज़्यादा ख़ास है बनिस्बत इस्लाम के। हमने इसे दलाइल के साथ सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान की शरह में ज़िक्र कर दिया है, फ़ल्हम्दु लिल्लाह!

और इस हदीस में इस बात पर भी दलालत है कि यह शख़्स मुसलमान थे मुनाफ़िक़ न थे इसलिए कि आपने उन्हें कोई अतिया अता नहीं फ़र्माया और उसे उसके इस्लाम के सुपुर्द कर दिया। पस मालूम हुआ कि यह आराब जिनका ज़िक्र इस आयत में है मुनाफ़िक़ न थे, थे तो मुसलमान लेकिन अब तक उनके दिलों में ईमान सही तौर पर मुस्तहकम न हुआ था और उन्होंने उस बुलंद मक़ाम तक अपनी रसाई हो जाने का अभी से दावा कर दिया था इसलिए उन्हें अदब सिखाया गया। यही मतलब है हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और इब्राहीम नख़ई (रह.) और क़तादा (रह.) के क़ौल का और इसी को इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इख़्तियार किया है। हमें यह सब यूँ कहना पड़ा कि हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) फ़र्माते हैं कि यह लोग मुनाफ़िक़ थे जो ईमान ज़ाहिर करते थे लेकिन असल मोमिन न थे (याद रहे ईमान व इस्लाम में फ़र्क़ उस वक़्त है जबकि इस्लाम अपनी हक़ीक़त पर न हो, जब इस्लाम हक़ीक़ी हो तो वही इस्लाम ईमान है और उस वक़्त ईमान इस्लाम में कोई फ़र्क़ नहीं, उसके बहुत से क़वी दलाइल इमामुल अइम्मा हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी किताब सहीह बुख़ारी में किताबुल ईमान में बयान किये हैं और उन लोगों का मुनाफ़िक़ होना, इसका सबूत भी आ रहा

है, वल्लाहु आलम! मुतर्जिम) हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत मुजाहिद, हज़रत ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं यह जो अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि बल्कि तुम (अस्लम्ना) कहो इससे मुराद यह है कि हम क़त्ल से क़ैदो बंद से बचने के लिए ताबेअ फ़र्मान हो गए हैं। हज़रत मुजाहिद(रह.) फ़र्माते हैं कि यह आयत बनू असद बिन ख़ुज़ैमा के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि यह उन लोगों के बारे में उतरी है जो अपने ईमान लाने का हुज़ूर (ﷺ) पर बारे एहसान रखते थे लेकिन सही बात पहली ही है कि यह आयत उन लोगों के बारे में उतरी है जो अपने ईमान का दावा करते थे। हालाँकि अब तक वहाँ पहुँचे न थे पस उन्हें अदब सिखाया गया है और बतलाया गया कि यह अब तक ईमान तक नहीं पहुँचे, अगर यह मुनाफ़िक़ होते तो उन्हें डाँट डपट की जाती और उनकी रुस्वाई की जाती जैसे कि सूरह बरा'त में मुनाफ़िक़ों का ज़िक्र किया गया, लेकिन यहाँ तो इन्हें सिर्फ़ अदब सिखाया गया है। फिर फ़र्माता है अगर तुम अल्लाह की और उसके रसूल की मानते रहोगे तो तुम्हारे किसी अमल का अज्र मारा न जाएगा जैसे फ़र्माया (وَمَا أَلَتْنٰهُم مِّنْ عَمَلِهِم مِّن شَيْءٍ) (52/तूर : 61) हमने इनके आमाल में से कुछ भी नहीं घटाया।

फिर फ़र्माया जो अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ करे बुराई से लौट आये, अल्लाह उसके गुनाह माफ़ करने वाला और उसकी तरफ़ रहम की निगाहों से देखने वाला है। फिर फ़र्माता है कि कामिल ईमान वाले सिर्फ़ वह लोग हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल (ﷺ) पर दिल से यक़ीन रखते हैं फिर न शक करते हैं न कभी उनके दिल में कोई निकम्मा ख़्याल पैदा होता है बल्कि इसी ख़ालिस तस्दीक़ पर और कामिल यक़ीन पर जम जाते हैं और जमे ही रहते हैं और अपने नफ़्स और दिल की चाहत के मालों को बल्कि अपनी जानों को भी राहे इलाही के जिहाद में ख़र्च करते हैं। यह सच्चे लोग हैं यानी यह हैं जो कह सकते हैं कि हम ईमान लाये यह उन लोगों की तरह नहीं जो सिर्फ़ जुबान से ही ईमान का दावा करके रह जाते हैं। मुस्नद अहमद में है नबी (ﷺ) फ़र्माते हैं "दुनिया में मोमिन की तीन क़िस्में हैं वह जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाया शक व शुब्हा न किया और अपनी जान और माल से राहे इलाही में जिहाद किया वह जिनसे लोगों ने अम्न पा लिया न यह किसी का माल मारें न किसी की जान लें वह जो तमअ की तरफ़ जब झाँकते हैं अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की ख़ातिर तर्क कर देते हैं।" (अहमद : 3/8; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउ़ ज़वाइद : 1/52) फिर फ़र्माता है क्या तुम अपने दिल का यक़ीन व दीने इलाही को दिखाते हो वह तो ऐसा है कि ज़मीन व आसमान का कोई ज़र्रा उससे छुपा नहीं वह हर चीज़ का जानने वाला है। फिर फ़र्माया जो आराब अपने इस्लाम लाने के बारे एहसान तुझ पर रखते हैं उनसे कह दो कि मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न जताओ तुम जो इस्लाम क़बूल करोगे तुम जो मेरी मातहती करोगे मेरी मदद करोगे उसका नफ़ा तुम्हीं को मिलेगा बल्कि दरअसल ईमान की हिदायत तुम्हें देना यह अल्लाह तआला का तुम पर एहसान है अगर तुम अपने इस दावे में सच्चे हो। (अब ग़ौर कीजिए कि क्या इस्लाम लाने का एहसान पैग़म्बरे इलाही पर जताने वाले सच्चे मुसलमान थे पस आयात की तर्तीब से ज़ाहिर है कि उनका इस्लाम हक़ीक़त पर मब्नी न था और यही अल्फ़ाज़ भी हैं कि ईमान अब तक उनके दिल नशीन नहीं हुआ और जब तक इस्लाम हक़ीक़त पर मब्नी न हो तब तक बेशक वह

ईमान नहीं लेकिन जब वह अपनी हक़ीक़त पर सरीह शरई मअ़नी में हो तो फिर ईमान इस्लाम एक ही चीज़ है, ख़ुद इस आयत के अल्फ़ाज़ से ग़ौर कीजिए इर्शाद है अपने इस्लाम का तुझ पर एहसान रखते हैं हालाँकि दरअसल ईमान की हिदायत अल्लाह तआला का ख़ुद इन पर एहसान है। पस वहाँ एहसाने इस्लाम रखने को बयान करके अपना एहसान हिदायते ईमान जताना भी ईमान व इस्लाम के एक होने पर बारीक इशारा है। मज़ीद दलाइल सहीह बुख़ारी वग़ैरह में मुलाहिज़ा हों। मुतर्जिम) पस अल्लाह तआला का किसी को ईमान की राह दिखाना उस पर एहसान करना है जैसे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुनैन वाले दिन अंसार से फ़र्माया था कि "क्या मैंने तुम्हें गुमराही की हालत में नहीं पाया था? फिर अल्लाह तआला ने मेरी वजह से तुम्हें हिदायत दी। तुममें तफ़रीक़ थी मेरी वजह से अल्लाह तआला ने तुम्हें एक कर दिया। जब कभी हुज़ूर (ﷺ) कुछ फ़र्माते वह कहते बेशक अल्लाह और उसका रसूल इससे भी ज़्यादा एहसानों वाले हैं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़्वा ताइफ़ : 4330; सहीह मुस्लिम : 1061) बज़्ज़ार में है कि बनू असद रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आये और कहने लगे, या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम मुसलमान हुए अरब आपसे लड़ते रहे लेकिन हम आपसे नहीं लड़े, हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया इनमें समझ बहुत कम है शैतान उनकी ज़ुबानों पर बोल रहा है? और यह आयत (यमुन्नून...) नाज़िल हुई। फिर दोबारा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने अपने वसीअ इल्म और अपनी सच्ची बाख़बरी और मख़्लूक़ के आमाल से आगाही को बयान किया कि आसमान व ज़मीन की ग़ैब उस पर ज़ाहिर हैं और वह तुम्हारे आमाल से आगाह है।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह हुजुरात की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक़्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह क़ाफ़ - 50

आयात : 45 मक्की पैराग्राफ : 8

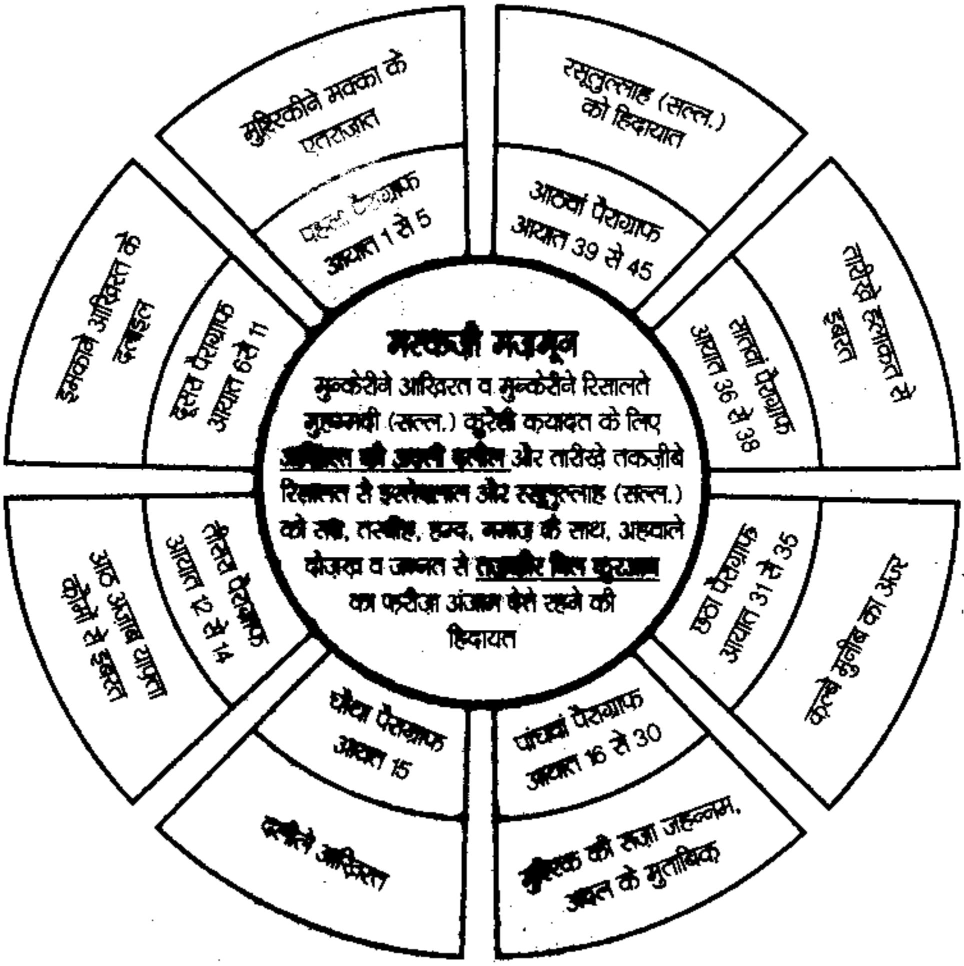

ज़मानए नुज़ूलः

सूरह "क़ाफ़" एक मक्की सूरह है। ग़ालिबन ऐलाने आम के बाद 5 नबवी के आख़िर में, हिजरते हब्शा के बाद, नाज़िल हुई। ये दौरे तज़कीर में नाज़िल हुई, जब ज़ुल्म व सितम का आग़ाज़ नहीं हुआ था, लेकिन "तकज़ीब" का गलगला था। ये सूरह, अपने तर्ज़े बयान और मज़ामीन के लिहाज़ से सूरह "[illegible]" से मिलती जुलती है।

तफ़्सीर सूरह क़ाफ़

क़ुरआन पाक की सात मंज़िलों की तफ़्सील : जिन सूरतों को मुफ़स्सल की सूरतें कहा जाता है उनमें सबसे पहली सूरत यही है। एक क़ौल यह भी है कि मुफ़स्सल की सूरतें सूरह हुजुरात से शुरू हो जाती हैं। अवाम में जो मशहूर है कि मुफ़स्सल की सूरतें (अम्म) से शुरू होती हैं यह बिलकुल ग़लत बात है उलमा में से कोई भी इसका क़ाइल नहीं। मुफ़स्सल की सूरतों की पहली सूरत यही है। इस पर दलील अबूदाऊद की यह ह़दीस है जो बाब तह़ज़ीबुल क़ुरआन में है। ह़ज़रत औस बिन हुज़ैफ़ा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "वफ़्दे सक़ीफ़ में हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए, अह़लाफ़ तो ह़ज़रत मुग़ीरह बिन शेअ़बा (रज़ि.) के यहाँ ठहरे और बनू मालिक को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने क़ुब्बे में ठहराया। फ़र्माते हैं हर रात इशा के बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास आते और खड़े खड़े हमें अपनी बातें सुनाते यहाँ तक कि आपको देर लग जाने की वजह से क़दमों को बदलने की ज़रूरत पड़ती कभी इस क़दम खड़े होते कभी उस क़दम पर उमूमन आप हमसे वह वाक़ियात बयान करते जो आपको अपनी क़ौम क़ुरैश से सहने पड़े थे फिर फ़र्माते कोई ह़र्ज नहीं हम मक्का में कमज़ोर थे, बेवक़्अ़त थे, फिर हम मदीना में आ गए अब हममें उनमें लड़ाई मिस्ल डोलों के है। कभी हम उन पर ग़ालिब कभी वह। ग़र्ज़ हर रात यह लुत्फ़े सोह़बत रहा करता था। एक रात को वक़्त हो चुका और आप न आये। बहुत देर के बाद तशरीफ़ लाए। हमने कहा हुज़ूर (ﷺ)! आज तो आपको बहुत देर लग गई। आपने फ़र्माया, हाँ! क़ुरआन शरीफ़ का जो ह़िस्सा मैं रोज़ाना पढ़ा करता था आज इस वक़्त उसे पढ़ा और अधूरा छोड़कर आने को जी न चाहा। ह़ज़रत औस (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने सह़ाबा (रज़ि.) से पूछा कि तुम क़ुरआन के ह़िस्से किस त़रह़ करते थे? तो उन्होंने कहा पहली तीन सूरतों की एक मंज़िल, फिर पाँच सूरतों की एक मंज़िल, फिर सात सूरतों की एक मंज़िल, फिर नौ सूरतों की एक मंज़िल, फिर ग्यारह सूरतों की एक मंज़िल, फिर तेरह सूरतों की एक मंज़िल, फिर उनके बाद मुफ़स्सल की तमाम सूरतों की एक मंज़िल।" (अबूदाऊद, किताब शहरु रमज़ान, बाब तह़ज़ीबुल क़ुरआन : 1393; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सनद मुन्क़त़अ़ है। उ़स्मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन औस के अपने दादा से सुनने में नज़र है। इब्ने माजा : 1345; अह़मद : 4/343) पस पहली छः मंज़िलों की कुल अड़तालीस (48) सूरतें हुईं। फिर उनके बाद मुफ़स्सल की तमाम सूरतों की एक मंज़िल तो उन्चासवीं सूरत यही सूरह क़ाफ़ पड़ती है। बाक़ायदा गिनती सुनिए। पहली मंज़िल की तीन सूरतें सूरह बक़रह, सूरह आले इमरान, सूरह निसाअ हुईं। दूसरी मंज़िल की पाँच सूरतें माइदा, अन्आम, आराफ़, अन्फ़ाल और तौबा हुईं। तीसरी मंज़िल की सात सूरतें यूनुस, हूद, यूसुफ़, रअ़द, इब्राहीम, ह़िज्र और नह़ल हुईं। चौथी मंज़िल की नौ सूरतें बनी इस्राईल, कहफ़, मरयम, त़ाहा, अम्बिया, ह़ज्ज, मोमिनून, नूर और फ़ुरक़ान हुईं। पाँचवीं मंज़िल की 11 सूरतें शुअ़राअ, नमल, क़सस, अ़न्कबूत, रूम, लुक़्मान, अलिफ़ लाम मीम सज्दा,

अहज़ाब, सबा, फ़ातिर और यासीन हुईं। छठी मंज़िल की 13 सूरतें बाक़ी रहीं जो साफ़्फ़ात से सूरह हुजुरात तक मुकम्मल होगी, सातवीं मंज़िल सूरह क़ाफ़ से शुरू हुई जो मुफ़स्सल सूरतों की इब्तिदाई सूरह है और यही हमने कहा था, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! मुस्लिम में है कि "हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने हज़रत अबू वाक़िद लैसी (रज़ि.) से पूछा कि ईद की नमाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) क्या पढ़ते थे? आपने फ़र्माया, सूरह क़ाफ़ और सूरह (इक़्तरबतिस्साअतु)" (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल ईदैन, बाब फ़ी सलातिल ईदैन : 891; अबूदाऊद : 1154; तिर्मिज़ी : 534; इब्ने माजा : 1282; अहमद : 5/217; इब्ने हिब्बान : 2820) मुस्लिम में है हज़रत उम्मे हिशाम बिन्ते हारिसा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि "हमारा और रसूलुल्लाह (ﷺ) का दो साल तक या एक साल कुछ माह तक एक ही तन्नूर रहा मैंने सूरह (क़ाफ़ वल क़ुरआनिल मजीद) रसूलुल्लाह (ﷺ) की जुबानी सुन सुनकर याद कर ली इसलिए कि हर जुम्आ के दिन जब आप लोगों को ख़ुत्बा सुनाने के लिए मिम्बर पर आते तो इस सूरत की तिलावत करते।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुम्आ, बाब तख़्फ़ीफ़ुस्सलात वल ख़ुत्बा : 873; अहमद : 6/436) अल्ग़र्ज़ बड़े बड़े मज्मओ के मौक़े पर जैसे ईद है, जुम्आ है, अल्लाह के रसूल (ﷺ) इस सूरत की तिलावत करते क्यों कि इसमें इब्तिदाए ख़ल्क़ का, मरने के बाद जीने का, अल्लाह तआला के सामने खड़े होने का, हिसाबो किताब का, जन्नत जहन्नम का, सवाब व अज़ाब का और रग़बत व डरावे का ज़िक्र है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : "शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।"

***

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ① بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ
هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ② ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ③ قَدْ عَلِمْنَا مَا
تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ④ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ
فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ⑤

तर्जुमा : "क़ाफ़, बहुत बड़ी शान वाले इस क़ुरआन की क़सम है। (1) बल्कि इन्हें ताज्जुब मालुम हुआ कि इनके पास इन ही में से एक आगाह करने वाला आया तो काफ़िरों ने कहा, यह एक अजीब चीज़ है। (2) क्या जब हम मरकर मिट्टी हो जाएँगे। यह फिर ज़िन्दा किया जाना अक़्ल से बाहर है। (3) ज़मीन जो कुछ उनमें से घटाती है वह हमें मालूम है, और हमारे पास किताब है सब याद रखने वाली (4) बल्कि इन्होंने सच्ची बात को झूठ कहा है जबकि वह इनके पास पहुँच चुकी बस वह एक उलझाव में पड़ गए।" (5)

हर्फ़े क़ाफ़ के बारे में ख़िलाफ़े अक़्ल व नक़्ल रिवायात (आ. 1 से 5) : क़ाफ़ हुरूफ़े हिजा से है जो सूरतों के पहले आते हैं, जैसे (स़ाद, नून, अलिफ़ लाम मीम, त़ासीन, ह़ामीम) वग़ैरह हमने इनकी पूरी तशरीह़ सूरह बक़रह की तफ़्सीर के शुरू में कर दी है। कुछ सलफ़ का क़ौल है कि क़ाफ़ एक पहाड़ है जो तमाम ज़मीन को घेरे हुए है। मैं तो जानता हूँ कि दरअस़ल यह बनी इस्राईल के ख़ुराफ़ात में से है, जिन्हें कुछ लोगों ने ले लिया। यह समझकर कि इनसे रिवायत लेनी मुबाह़ है गो तस्दीक़ तक्ज़ीब नहीं कर सकते। लेकिन मेरा ख़्याल है कि यह और इस जैसी और रिवायतें तो बनी इस्राईल के बद दीनों ने गढ़ ली होंगी ताकि लोगों पर दीन को ख़लत़ मलत़ कर दें। आप ख़्याल कीजिए कि इस उम्मत में बावजूद यह कि उ़लमा किराम और हुफ़्फ़ाज़ाने इ़ज़ाम की बहुत बड़ी दीनदार मुख़्लिस़ जमाअ़त हर ज़माने में मौजूद रही ताहम बद दीनों ने बहुत थोड़ी मुद्दत में मौज़ूअ़ अह़ादीस तक गढ़ लीं पस बनी इस्राईल जिन पर मुद्दतें गुज़र चुकीं, जो ह़िफ़्ज़ से आ़री थे, जिनमें नुक़्क़ादाने फ़न मौजूद न थे, जो कलामे इलाही को अस़लियत से हटा दिया करते थे, जो शराबों में मख़्मूर रहा करते थे जो आयाते इलाही को बदल डाला करते थे, उनका क्या ठीक है? पस मुह़द्दिसीन ने जो रिवायात इनसे लेनी मुबाह़ रखी हैं यह वह हैं जो कम अज़्कम अ़क़्लो फ़हम में तो आ सकें न वह जो स़रीह़ ख़िलाफ़े अ़क़्ल हों कि सुनते ही उनके बात़िल और ग़लत़ होने का फ़ैस़ला अ़क़्ल कर देती हो और उसका झूठ होना इतना वाज़ेह़ हो कि उस पर दलील लाने की ज़रूरत न पड़े। पस मुंदर्जा बाला रिवायत भी ऐसी ही है, वल्लाहु आ़लम! अफ़सोस! कि बहुत से सलफ़ व ख़लफ़ ने अहले किताब से इस क़िस्म की ह़िकायतें क़ुरआन मजीद की तफ़्सीर में वारिद कर दी हैं। दरअस़ल क़ुरआने करीम ऐसी जटल्लियात का कुछ मोह़ताज नहीं, फ़ल्ह़म्दु लिल्लाह! यहाँ तक कि इमाम अबू मुह़म्मद अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू ह़ातिम राज़ी (रह़.) ने भी यहाँ एक अजीबो ग़रीब असर बरिवायत ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वारिद कर दिया है जो अज़्रूए सनद के साबित नहीं, इसमें है कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने एक समुन्द्र पैदा किया है जो इस सारी ज़मीन को घेरे हुए है और उस समुन्द्र के पीछे एक पहाड़ है जो उसे घेरे हुए है उसका नाम क़ाफ़ है, आसमाने दुनिया उसी पर उठा हुआ है, फिर अल्लाह तआ़ला ने उस पहाड़ के पीछे एक ज़मीन बनाई है जो इस ज़मीन से सात गुना बड़ी है, फिर उसके पीछे एक समुन्द्र है जो उसे घेरे हुए है फिर उसके पीछे पहाड़ है जो उसे घेरे हुए है उसे भी क़ाफ़ कहते हैं, दूसरा आसमान उसी पर बुलंद किया हुआ है। इसी त़रह़ सात ज़मीनें, सात समुन्द्र और सात पहाड़ और सात आसमान गिनवाए फिर यह आयत पढ़ी (وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ) (31/लुक़्मान : 27) इस असर की इस्नाद इंक़िता़अ़ है। अ़ली

बिन अबू तलहा जो रिवायत हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से करते हैं उसमें है कि क़ाफ़ अल्लाह के नामों में से एक नाम है। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं क़ाफ़ भी मिस्ल (साद, नून, हामीम, ता सीन, अलिफ़ लाम मीम) वग़ैरह के हुरूफ़ हिजा में से है। पस इन रिवायात से भी हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) का वह फ़र्मान होना और दूर हो जाता है। यह भी कहा गया है कि मुराद इससे यह है कि काम का फ़ैसला कर दिया गया क़सम है अल्लाह की। और क़ाफ़ कहकर बाक़ी जुम्ला छोड़ दिया गया कि यह दलील है कि महज़ूफ़ पर जैसे शायर कहता है

कुन्तु लहा क़िफ़ी फ़क़ालत क़ाफ़

लेकिन यह कहना भी ठीक नहीं। इसलिए कि महज़ूफ़ पर दलालत करने वाला कलाम साफ़ होना चाहिए और यहाँ कौनसा कलाम है? जिससे इतने बड़े जुम्ले के महज़ूफ़ होने का पता चले। फिर उस करम और अज़्मत वाले क़ुरआन की क़सम खाई जिसके आगे से या पीछे से बातिल आ नहीं सकता, जो हिक्मतों और ता'रीफ़ों वाले रब तआला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है। इस क़सम का जवाब क्या है? इसमें भी कई क़ौल है। इमाम इब्ने जरीर ने तो कुछ नहवियों से नक़्ल किया है कि इसका जवाब (क़द अलिम्ना) पूरी आयत तक है लेकिन यह भी ग़ौरतलब है बल्कि जो अब क़सम के बाद का मज़्मूने कलाम है यानी नबुव्वत और दोबारा जी उठने का सबूत और तहक़ीक़ गो क़सम लफ़्ज़ों से उसको जवाब न बतलाती हो, ऐसा क़ुरआन की क़समों के जवाब में अक्सर है जैसे कि सूरह साद की तफ़्सीर के शुरू में गुज़र चुका है इसी तरह यहाँ भी है। फिर फ़र्माता है कि इन्होंने इस बात पर ताज्जुब ज़ाहिर किया कि इन्हीं में से एक इंसान कैसे रसूल बन गया? जैसे और आयत में है (اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَا اِلٰى رَجُلٍ مِّنْهُمْ) (10/यूनुस : 2) यानी क्या लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हमने इन्हीं में से एक शख़्स की तरफ़ अपनी वही भेजी कि तू लोगों को होशियार कर दे, यानी दरअसल यह कोई ताज्जुब की चीज़ न थी अल्लाह जिसे चाहे फ़रिश्तों में से अपनी रिसालत के लिए चुन लेता है और जिसे चाहे इंसानों में से चुन लेता है इसी के साथ यह भी बयान हो रहा है कि उन्होंने मरने के बाद के जीने को भी ताज्जुब की नज़रों से देखा और कहा कि जब हम मर जाएँगे और हमारे जिस्म के हिस्से जुदा जुदा होकर रेज़ा रेज़ा होकर मिट्टी हो जाएँगे, उसके बाद उसी हेयत व तर्तीब में हमारा दोबारा जीना मुश्किल है। इनके जवाब में फ़र्मान सादिर हुआ कि ज़मीन इनके जिस्मों को जो खाती है उससे भी हम ग़ाफ़िल नहीं, हमें मालूम है कि इनके ज़र्रे कहाँ गए और किस हालत में कहाँ हैं? हमारे पास किताब है जो इसकी मुहाफ़िज़ है हमारा इल्म है जो इसको शामिल है और साथ ही किताब में महफ़ूज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "यानी इनके गोश्त चमड़े हड्डियाँ और बाल जो कुछ ज़मीन खा जाती है हमारे इल्म में है।" (तबरी : 22/328) फिर परवरदिगारे आलम इनके इस महाल समझने की असल वजह बयान कर रहा है कि दरअसल यह हक़ को झुठलाने वाले लोग हैं और जो लोग अपने पास हक़ के आ जाने के बाद उसका इंकार कर दें उनसे भली समझ छिन जाती है। मरीजिन के मअनी हैं मुख़्तलिफ़ मुज़्तरिब, मुंकिर और ख़लत मलत के, जैसे फ़र्मान है (اِنَّكُمْ لَفِىْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﴿٨﴾ يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ﴿٩﴾) (51/ज़ारियात : 8, 9) यानी यक़ीनन तुम एक झगड़े की बात में पड़े हुए हो। क़ुरआन की पैरवी से वही रुकता है जो भलाई से फेर दिया गया है।

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ
⑥ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ
⑦ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ⑧ وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا
فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ⑨ وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ⑩ رِّزْقًا
لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۭ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ⑪

तर्जुमा : "क्या इन्होंने आसमान को अपने ऊपर नहीं देखा? कि हमने उसे किस तरह बनाया है और ज़ीनत दी है? इसमें कोई शिगाफ़ नहीं। (6) और ज़मीन को हमने बिछा दिया है और इसमें हमने पहाड़ डाल दिये हैं और इसमें हमने क़िस्म क़िस्म की ख़ुशनुमा चीज़ें उगा दी हैं। (7) ताकि हर रुजूअ करने वाले बन्दे के लिए बीनाई और दानाई का ज़रिया हो। (8) और हमने आसमान से बाबरकत पानी बरसाया और उससे बाग़ात और कटने वाले ग़ल्ले पैदा किये। (9) और खजूरों के बुलंदो बाला दरख़्त जिनके ख़ोशे तह ब तह हैं। (10) बन्दों की रोज़ी के लिए और हमने पानी से मुर्दा शहर को ज़िन्दा कर दिया। इसी तरह क़ब्रों से निकलना है।" (11)

एक से बढ़कर एक क़ुदरत के नमूने (आ. 6 से 11) : यह लोग जिस चीज़ को नामुम्किन ख़्याल करते थे परवरदिगारे आलम उससे बहुत ज़्यादा बढ़े चढ़े हुए अपनी क़ुदरत के नमूने सामने रख रहा है, फ़र्मा रहा है कि आसमान को देखो उसकी बनावट पर ग़ौर करो उसके रोशन सितारों को देखो और देखो कि इतने बड़े आसमान में एक सूराख़ एक छेद, एक शिगाफ़ एक दरार नहीं, चुनाँचे सूरह तबारक में फ़र्माया (الَّذِیْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا) (67/मुल्क : 3) अल्लाह वह है जिसने सात आसमान ऊपर तले पैदा किये, तू अल्लाह तआला की सन्अत में कोई ख़लल न देखेगा, तू फिर निगाह डालकर देख ले कहीं तुझ को कोई ख़लल नज़र आता है? फिर बार बार ग़ौर करके देख तेरी निगाह नामुराद और आजिज़ होकर तेरी तरफ़ लौट आएगी, फिर फ़र्माया ज़मीन को हमने फैला दिया और बिछा दिया और उसमें पहाड़ जमा दिये ताकि हिल न सके क्योंकि वह हर तरफ़ से पानी से घिरी हुई है और इसमें हर क़िस्म की खेतियाँ फल सब्ज़े और क़िस्म क़िस्म की चीज़ें उगा दीं, जैसे और जगह है हर चीज़ को हमने जोड़ जोड़ पैदा किया ताकि तुम नसीहत और इब्रत हासिल करो। (बहीजिन) के मअनी खुश मंज़र ख़ुशनुमा बारौनक़। फिर फ़र्माया आसमान व ज़मीन और इनके

अलावा कुदरत के और निशानात दानाई और बीनाई का ज़रिया हैं हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह से डरने वाला अल्लाह तआला की तरफ़ रग़्बत करने वाला हो। फिर फ़र्माता है हमने नफ़ा देने वाला पानी आसमान से बरसाकर उससे बाग़ात बनाए और वह खेतियाँ बनाईं जो काटी जाती हैं और जिनके अनाज खलिहान में डाले जाते हैं और ऊँचे ऊँचे खजूर के दरख़्त उगा दिये जो भरपूर मेवे लाते हैं और लदे रहते हैं। यह मख़्लूक़ की रोज़ियाँ हैं और इसी पानी से हमने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा कर दिया वह लहलहाने लगी और ख़ुश्की के बाद तरोताज़ा हो गई और चटयल सूखे मैदान सरसब्ज़ हो गए यह मिसाल है मौत के बाद दोबारा ज़िन्दा होने की और हलाकत के बाद आबाद होने की यह निशानियाँ जिन्हें तुम रोज़मर्रा (आए दिन) देख रहे हो क्या तुम्हारी रहबरी इस अम्र की तरफ़ नहीं करतीं? कि अल्लाह तआला मुर्दों को जिन्दा करने पर क़ादिर है। चुनाँचे और आयत में है (لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ) (40/मोमिन : 57) यानी आसमान व ज़मीन की पैदाइश इंसानी पैदाइश से बहुत बड़ी है और आयत में है (اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْىَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِىَ الْمَوْتٰى ۚ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ) (46/अहक़ाफ़ : 33) यानी क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीनों को पैदा किया और उनकी पैदाइश से न थका क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह सुब्हानहू व तआला फ़र्माता है (वमिन आयातिही इन्नका तरल अर्ज़ा ख़ाशिया...) यानी तू देखता है कि ज़मीन बिलकुल ख़ुश्क और बंजर होती है हम आसमान से बरसात बरसाते हैं जिससे वह लहलहाने और पैदावार उगाने लगती है, क्या मेरी क़ुदरत की यह निशानी यह नहीं बतलाती कि जिस ज़ात ने इसे ज़िन्दा कर दिया वह मुर्दों के ज़िन्दा करने पर बिला शक व शुब्हा क़ादिर है यक़ीनन वह तमामतर चीज़ों पर क़ुदरत रखता है।

***

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ

لُوْطٍ ﴿١٣﴾ وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾ اَفَعَيِيْنَا

بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ۚ بَلْ هُمْ فِىْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾

तर्जुमा : ''इनसे पहले नूह (ﷺ) की क़ौम ने और रस्स वालों ने और समूदियों ने (12) और आदियों ने और फ़िरऔन ने और बिरादराने लूत ने। (13) और ऐका वालों और तुब्बअ की क़ौम ने भी तक्ज़ीब की थी। सबने पैग़म्बरों को झुठलाया पस मेरा वादा अज़ाब उन पर स़ादिक़ आ गया। (14) क्या पस हम पहली बार के पैदा करने से थक गए? बल्कि यह लोग नई पैदाइश की तरफ़ से शक में हैं।''(15)

नबियों को झुठलाने वाली क़ौमें तबाह हुईं (आ. 12 से 15) : अल्लाह तआला अहले मक्का को उन अज़ाबों से डरा रहा है जो इन जैसे झुठलाने वालों पर इनसे पहले आ चुके हैं जैसे नूह (عليه السلام) की क़ौम जिन्हें अल्लाह तआला ने पानी में डुबो दिया और अस्हाबे रस्स जिनका पूरा वाक़िया सूरह फ़ुरक़ान की तफ़्सीर में गुज़र चुका है और समूद और आद और क़ौमे लूत जिसे ज़मीन में धंसा दिया और उस ज़मीन को सड़ा हुआ दलदल बना दिया, यह सब क्या था? उनके कुफ़्र उनकी सरकशी और मुख़ालिफ़ते हक़ का नतीजा। अस्हाबे ऐका से मुराद क़ौमे शुऐब है और क़ौमे तुब्बअ से मुराद यमानी हैं, सूरह दुख़ान में इनका वाक़िया गुज़र चुका है और वहीं इसकी पूरी तफ़्सीर है यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं, फ़ल्हम्दु लिल्लाह! इन तमाम क़ौमों ने अपने रसूलों को झुठलाया था और अज़ाबे इलाही से हलाक कर दिये गए। यही आदते अल्लाह जारी है। यह याद रहे कि एक रसूल को झुठलाने वाला तमाम रसूलों का मुंकिर है। जैसे अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल का फ़र्मान है (كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ) (26/शोअ़रा : 105) क़ौमे नूह ने रसूलों का इंकार किया हालाँकि इनके पास सिर्फ़ हज़रत नूह (عليه السلام) ही आये थे। पस दरअसल यह थे ऐसे कि अगर उनके पास तमाम रसूल आ जाते तो यह सबको झुठलाते एक को भी न मानते सबकी तक्ज़ीब करते एक की भी तस्दीक़ न करते। उन सब पर अल्लाह तआला के अज़ाब का वादा उनके करतूतों की वजह से साबित हो गया और सादिक़ आ गया। पस अहले मक्का और दीगर मुख़ातब लोगों को भी इस बदख़स्लत से परहेज़ करना चाहिए कहीं ऐसा न हो कि अज़ाब का कोड़ा उन पर भी बरस पड़े। क्या जब यह कुछ न थे इनका रचा देना हम पर भारी पड़ा? जो यह अब दोबारा पैदा करने के मुंकिर हो रहे हैं, इब्तिदा से तो एआदा बहुत ही आसान हुआ करता है, जैसे फ़र्मान है (وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ) (30/रूम : 27) यानी इब्तिदाअन उसी ने पैदा किया है और दोबारा भी वही एआदा करेगा और यह उस पर बहुत आसान है। सूरह यासीन में फ़र्माने इलाही जल्ल जलालुहू, गुज़र चुका कि (وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا) (36/यासीन : 78) यानी अपनी पैदाइश को भूलकर हमारे सामने मिसालें बयान करने लगा और कहने लगा कि इन बोसीदा सड़ी गली हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा? तू जवाब दे कि वह जिसने इन्हें पहली बार पैदा किया और जो तमाम ख़ल्क़ को जानता है। सहीह हदीस में है, ''अल्लाह तआला फ़र्माता है मुझे बनी आदम ईज़ा देता है कहता है अल्लाह तआला मुझे दोबारा पैदा नहीं कर सकता हालाँकि पहली बार पैदा करना दोबारा पैदा करने से कुछ आसान नहीं।'' (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह (कुल हुवल्लाहु अहद) : 4974)

***

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ
حَبْلِ الْوَرِيدِ ⑯ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيَانِ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ⑰ مَا

يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ﴿١٨﴾ وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ
ذَٰلِكَ مَا كُنتَ مِنْهُ تَحِيدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ﴿٢٠﴾ وَجَاءَتْ
كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ﴿٢١﴾ لَّقَدْ كُنتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَٰذَا فَكَشَفْنَا
عَنكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ﴿٢٢﴾

तर्जुमा : "हमने इंसान को पैदा किया है और उसके दिल में जो ख़्यालात उठते हैं उनसे हम वाक़िफ़ हैं। और हम उसकी रगे जान से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं।(16) जिस वक़्त कि वह लेने वाले लेते जाते हैं एक दायें जानिब और एक बायें जानिब बैठा हुआ है। (17) इंसान कोई लफ़्ज़ मुँह से निकालने नहीं पाता मगर कि उसके पास निगहबान तैयार है। (18) मौत की सख़्ती यक़ीनन पेश आएगी। यही है जिससे तू बिदकता फिरता था। (19) और सूर फूँक दिया जाएगा। वादाए अ़ज़ाब का दिन यही है। (20) और हर शख़्स इस तरह आएगा कि उसके साथ एक हमराह लाने वाला होगा और एक गवाही देने वाला। (21) यक़ीनन तू उससे ग़फ़्लत में था लेकिन हमने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया पस आज तेरी निगाह बहुत तेज़ है।" (22)

अल्लाह का इल्म व क़ुदरत इंसान की शहे रग से ज़्यादा क़रीब है (आ. 16 से 22) : अल्लाह तआ़ला बयान फ़र्मा रहा है कि वही इंसान का ख़ालिक़ है और उसका इल्म तमाम चीज़ों का एहाता किये हुए है यहाँ तक कि इंसान के दिल में जो बुरे भले ख़्यालात पैदा होते हैं उन्हें भी वह जानता है। सहीह हदीस में है कि "अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत के दिल में जो ख़्यालात आएँ उनसे दरगुज़र फ़र्मा लिया है जब तक कि वह ज़ुबान से न निकालें या अ़मल न करें।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल इत्क़, बाब अल्ख़ताउ वन्निस्यान फ़िल अ़ताक़ति वत्तलाक़ : 2528; सहीह मुस्लिम : 127) और हम उसकी रगे जान से ज़्यादा उसके नज़दीक हैं यानी हमारे फ़रिश्ते और कुछ ने कहा है हमारा इल्म है। इनकी ग़र्ज़ यह है कि कहीं हुलूल और इत्तिहाद न लाज़िम आ जाए जो बिल्इज्माअ़ उस रब की मुक़द्दस ज़ात से दूर है और वह उससे बिलकुल पाक है। लेकिन लफ़्ज़ का इक़्तिज़ा यह नहीं है इसलिए कि व अना नहीं कहा बल्कि (व नह्नु) कहा यानी मैं नहीं कहा बल्कि हम कहा है। यही लफ़्ज़ उस शख़्स के बारे में कहे गए हैं जिसकी मौत क़रीब आ गई हो और वह नज़अ़ के आलम में हो, फ़र्मान है (وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ) (56/वाक़िया : 85) यानी हम तुम सबसे ज़्यादा उससे क़रीब हैं लेकिन तुम नहीं देखते। यहाँ भी मुराद फ़रिश्तों का इस क़द्र क़रीब होना है जैसे फ़र्माया है (إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ) (15/हिज्र : 9) यानी हमने ज़िक्र को नाज़िल किया और हम ही इसके

मुहाफ़िज़ हैं। फ़रिश्ते ही ज़िक्र कुरआने करीम को लेकर नाज़िल हुए हैं और यहाँ भी मुराद फ़रिश्तों की इतनी नज़दीकी है जिस पर अल्लाह ने उन्हें कुदरत बख़्श रखी है पस इंसान पर एक चूका फ़रिश्ते का होता है और एक शैतान का। इसी तरह शैतान भी जिस्मे इंसान में इसी तरह फिरता है जिस तरह ख़ून, जैसे सच्चों के सच्चे अल्लाह के नबी (ﷺ) ने फ़र्माया है। इसलिए उसके बाद ही फ़र्माया कि दो फ़रिश्ते जो दाएँ बाएँ बैठे हैं वह तुम्हारे आमाल लिख रहे हैं। इब्ने आदम के मुँह से जो कलिमा निकलता है उसे महफ़ूज़ रखने वाले और उसे न छोड़ने वाले और फ़ौरन लिख लेने वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। जैसे फ़र्मान है (وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ) (82/इंफ़ितार : 10) तुम पर मुहाफ़िज़ हैं बुज़ुर्ग फ़रिश्ते जो तुम्हारे फ़ेअल से बाख़बर हैं और लिखने वाले हैं। हज़रत हसन और हज़रत क़तादा (रह़ि.) तो फ़र्माते हैं यह फ़रिश्ते हर नेक व बुरे अमल लिख लिया करते हैं। (तब्री : 22/345) इब्ने अब्बास (रज़ि.) के दो क़ौल हैं एक तो यही है दूसरा क़ौल आपका यह है कि सवाब व अज़ाब आपका लिख लिया करते हैं, लेकिन आयत के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ पहले क़ौल की ही ताईद करते हैं क्योंकि फ़र्मान है जो लफ़्ज़ निकलता है उसके पास मुहाफ़िज़ तैयार हैं। मुस्नद अहमद में है "इंसान एक कलिमा अल्लाह की रज़ामंदी का कह गुज़रता है जिसे वह कोई बहुत बड़ा अज्र का कलिमा नहीं जानता लेकिन अल्लाह तआला उसकी वजह से अपनी रज़ामंदी उसके लिए क़ियामत तक लिख देता है और कोई कलिमा बुराई का नाराज़ी इलाही का इसी तरह बेपरवाही से कह गुज़रता है जिसकी वजह से अल्लाह तआला अपनी नाराज़ी उस पर अपनी मुलाक़ात के दिन तक लिख देता है।" हज़रत अल्क़मा (रह़.) फ़र्माते हैं "इस हदीस ने मुझे बहुत सी बातों से बचा लिया। तिर्मिज़ी वग़ैरह में भी यह हदीस है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन बतलाते हैं। (तिर्मिज़ी, किताबुज़्ज़ुहद, बाब मा जाअ फ़ी क़िल्लतिल कलाम : 2319; वसनदुहू हसन; इब्ने माजा : 3969; अहमद : 3/469) अहनफ़ बिन क़ैस (रह़.) फ़र्माते हैं दाएँ तरफ़ वाला नेकियाँ लिखता है और यह बाएँ तरफ़ वाले पर अमीन है। जब बन्दे से कोई ख़ता हो जाती है तो यह कहता है ठहर जा अगर उसने उसी वक़्त तौबा कर ली तो उसे लिखने नहीं देता और अगर उसने तौबा न की तो वह लिख लेता है।" (इब्ने अबी हातिम) इमाम हसन बसरी (रह़.) इस आयत की तिलावत करके फ़र्माते थे "ऐ इब्ने आदम तेरे लिए सहीफ़ा खोल दिया गया है और दो बुज़ुर्ग फ़रिश्ते तुझ पर मुक़र्रर कर दिये गए हैं एक तेरे दाहिने दूसरा बाएँ। दाएँ तरफ़ वाला तो तेरी नेकियों की हिफ़ाज़त करता है और बाएँ तरफ़ वाला बुराइयों को देखता रहता है अब तू जो चाहे अमल कर कमी कर या ज़्यादती कर जब तू मरेगा तो यह दफ़्तर लपेट दिया जाएगा और तेरे साथ तेरी क़ब्र में रख दियया जाएगा और क़ियामत के दिन जब तू अपनी क़ब्र से उठेगा तो यह तेरे सामने पेश कर दिया जाएगा।" इसी को अल्लाह तआला फ़र्माता है (وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۗ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا) (17/बनी इस्राईल : 13) हर इंसान की शामते आमाल हमने उसके गले लगा दी है और हम क़ियामत के दिन उसके सामने नामा-ए-आमाल की एक किताब डाल देंगे जिसे वह खुली हुई पाएगा। फिर उससे कहेंगे कि अपनी किताब पढ़ ले, आज तू ख़ुद ही अपना हिसाब लेने को काफ़ी है। फिर हज़रत हसन (रह़.) ने फ़र्माया, "अल्लाह तआला की क़सम! उसने बड़ा ही अदल किया जिसने ख़ुद तुझे ही तेरा मुहासिब

बना दिया।'' हज़रत इब्ने अब्बास(रज़ि.) फ़र्माते हैं, ''जो कुछ तू बुरा भला कलिमा ज़ुबान से निकालता है वह सब लिखा जाता है यहाँ तक कि तेरा यह कहना भी कि मैं ने खाया मैंने पिया मैं गया मैं आया मैंने देखा। फिर जुम्अेरात वाले दिन उसके अक़्वाल व अफ़्आल पेश किये जाते हैं। ख़ैरो शर्र बाक़ी रख ली जाती है और सब कुछ हटा दिया जाता है।'' यही मअ़नी हैं फ़र्माने बारी तआ़ला शानुहू के (يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيُثْبِتُ وَعِنْدَهٗ أُمُّ الْكِتَابِ) (13/रअ़द : 39) हज़रत इमाम अह़मद (रह़.) की बाबत मरवी है कि ''आप अपने मर्ज़ुल मौत में कराह रहे थे तो आपको मालूम हुआ कि ह़ज़रत ताऊस (रह़.) फ़र्माते हैं कि फ़रिश्ते उसे भी लिखते हैं चुनाँचे आपने कराहना भी छोड़ दिया'' अल्लाह आप पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़र्माए अपनी मौत के वक़्त उफ़ भी न की। फिर फ़र्माता है ऐ इंसान मौत की बेहोशी यक़ीनन आएगी उस वक़्त वह शक दूर हो जाएगा जिसमें आज कल तू मुब्तला है। उस वक़्त तुझसे कहा जाएगा कि यही है जिससे तू भागता फिरता था अब वह आ गई तू किसी त़रह़ उससे नजात नहीं पा सकता न बच सकता है न उसे रोक सकता है न उसे दूर कर सकता है न टाल सकता है न मुक़ाबला कर सकता है न किसी की मदद व सिफ़ारिश कुछ काम आ सकती है। सही यही है कि यहाँ ख़ित़ाब मुत़्लक़ इंसान से है गो कुछ ने कहा है काफ़िर से है और कुछ ने कुछ और भी कहा है। ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं ''मैं अपने वालिद (रज़ि.) के आख़िरी वक़्त में आपके सिरहाने बैठी थी। आप पर ग़शी त़ारी हुई तो मैंने यह बैत पढ़ा,

मल ला यज़ालु दम्उहू मुक़्निअन फ़इन्नहू ला बुद्द मर्रतन मदफ़ूक़ु

मत़लब यह है कि जिसके आँसू ठहरे हुए हैं वह भी एक बार टपक पड़ेंगे तो आपने अपना सर उठाकर कहा प्यारी बच्ची यूँ नहीं बल्कि जिस त़रह़ अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है (वजाअ़त सक्रतुल मौति बिल्ह़क़्क़)और रिवायत में बैत का पढ़ना और सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) का यह फ़र्माना मरवी है कि यूँ नहीं बल्कि यह आयत पढ़ो। इस असर के और भी बहुत से त़रीक़ हैं जिन्हें मैंने सीरते सिद्दीक़ में आपकी वफ़ात के बयान में जमा कर दयिा है। स़ह़ीह़ ह़दीस में है कि ''हुज़ूर (ﷺ) पर जब मौत की ग़शी त़ारी हुई तो आप अपने चेहरे मुबारक से पसीना पोंछते जाते और फ़र्माते जाते सुब्ह़ानल्लाह! मौत की बड़ी सख़्तियाँ हैं।'' (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब मर्ज़ुन्नबी (ﷺ) व वफ़ातहू : 4449) इस आयत के पिछले जुम्ले की तफ़्सीर दो त़ रह़ की गई है एक तो यह कि मा मौसूलह् है यानी यह वही है जिसे तू बईद जानता था। दूसरा क़ौल यह है कि यहाँ मा नाफ़िया है तो मअ़नी यह होंगे कि यह वह चीज़ है जिसके जुदा करने की जिससे बचने की तुझे क़ुदरत नहीं तू इससे हट नहीं सकता। मुअजम कबीर त़ब्रानी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं ''उस शख़्स की मिसाल जो मौत से भागता है उस लोमड़ी जैसी है जिससे ज़मीन अपना क़र्ज़ा त़लब करने लगी और यह उससे भागने लगी। भागते भागते जब थक गई और बिलकुल चकनाचूर हो गई तो अपने भुट में जा घुसी, ज़मीन चूँकि वहाँ भी थी उसने लोमड़ी से कहा ला मेरा क़र्ज़ तो चुका तो यह वहाँ से भागी साँस फूला हुआ था ह़ाल बुरा हो रहा था आख़िर यूँ ही भागते भागते बेदम होकर मर गई।'' (त़ब्रानी : 6922; व सनदुहू ज़ईफ़ुन; यूनुस बिन उ़बेद मुदल्लस है व अन्अ़न अन स़ह़्ह़स्सनदु इलैहि व मुआज़ बिन मुह़म्मद हुज़्ली ज़अ़अफ़हू राजेह़; मज्मउ़ज़्ज़वाइद

: 2/323) अलग़र्ज़ जिस तरह उस लोमड़ी को ज़मीन से भागने की राहें बंद थीं इसी तरह इंसान को मौत से बचने के रास्ते बंद हैं। उसके बाद सूर फूँके जाने का ज़िक्र है जिसकी पूरी तफ़सीर वाली ह़दीस गुज़र चुकी है। और ह़दीस में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "मैं किस तरह राहत व आराम ह़ासिल कर सकता हूँ ह़ालाँकि सूर फूँकने वाले फ़रिश्ते ने सूर मुँह में ले लिया है और गर्दन झुकाये हुक्मे इलाही का इंतिज़ार कर रहा है कि कब हुक्म मिले और कब वह फूँक मारे। सह़ाबा (रज़ि.) ने कहा फिर या रसूलल्लाह (ﷺ)! हम क्या कहें। आपने फ़र्माया कहो (ह़स्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील) (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिज़् ज़ुमर : 3243; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अ़तिया औफ़ी रावी ज़ईफ़ व मुदल्लस है। अह़मद : 3/7; ह़ाकिम : 4/559; इब्ने ह़िब्बान : 823) फिर फ़र्माता है हर शख़्स के साथ एक फ़रिश्ता तो मैदाने मह़शर की तरफ़ लाने वाला होगा और एक फ़रिश्ता उसके आमाल की गवाही देने वाला होगा। ज़ाहिर आयत में यही है और इमाम इब्ने जरीर (रह़.) भी इसी को पसंद करते हैं। (तब्री : 22/347) ह़ज़रत उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान (रज़ि.) ने इस आयत की तिलावत मिम्बर पर की और फ़र्माया "एक चलाने वाला जिसके साथ यह मैदाने मह़शर में आएगा और एक गवाह होगा जो उसके आमाल की गवाही देगा।" (तब्री : 22/347) ह़ज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं "साइक़ से मुराद फ़रिश्ता है और शहीद से मुराद अमल है।" इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल है "साइक़ फ़रिश्तों में से होंगे और शहीद से मुराद ख़ुद इंसान हैं जो अपने ऊपर आप गवाही देगा।" फिर उसके बाद की आयत में जो ख़िताब है उसकी निस्बत तीन क़ौल हैं, एक तो यह कि यह ख़िताब काफ़िर से होगा, दूसरा यह कि इससे मुराद आम इंसान हैं नेक बुरे सब, तीसरा यह कि इससे मुराद रसूलुल्लाह (ﷺ) हैं। दूसरे क़ौल की तौजीह यह है कि आख़िरत और दुनिया में वही निस्बत है जो बेदारी और ख़्वाब में है और तीसरे क़ौल का मतलब यह है कि तू इस क़ुरआन की वह़ी से पहले ग़फ़्लत में था हमने यह क़ुरआन नाज़िल करके तेरी आँखों पर से पर्दा हटा दिया और तेरी नज़र क़वी हो गई। लेकिन अल्फ़ाज़े क़ुरआनी से तो ज़ाहिर यही है कि इससे मुराद आम है यानी हर शख़्स से कहा जाएगा कि तू इस दिन से ग़ाफ़िल था इसलिए कि क़ियामत के दिन हर शख़्स की आँखें ख़ूब खुल जाएँगी यहाँ तक कि काफ़िर भी इस्तिक़ामत पर हो जाएगा लेकिन यह इस्तिक़ामत उसे नफ़ा न देगी जैसे फ़र्मान है (أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا) (19/मरयम : 38) यानी जिस रोज़ यह हमारे पास आएँगे ख़ूब देखते सुनते होंगे। और आयत में है (وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ) (32/सज्दा : 12) यानी काश! कि तू देखता जब गुनहगार लोग अपने रब के सामने सरनगूँ पड़े होंगे और कह रहे होंगे या अल्लाह! हमने देख लिया और सुन लिया अब हमें लौटा दे तो हम नेक आमाल करेंगे और कामिल यक़ीन रखेंगे।

***

وَقَالَ قَرِينُهُ هَٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ﴿٢٣﴾ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ﴿٢٥﴾ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ

الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾ قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ لَا
تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ
اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾

तर्जुमा : ''उसका हमनशीन फ़रिश्ता कहेगा यह हाज़िर है जो कि मेरे पास था। (23) डाल दो जहन्नम में हर काफ़िर सरकश को। (24) जो नेक काम से रोकने वाला हद से गुज़र जाने वाला और शक करने वाला था। (25) जिसने अल्लाह के साथ दूसरा मअ़बूद बना लिया था पस उसे सख़्त अ़ज़ाब में डाल दो। (26) उसका हमनशीन शैतान कहेगा ऐ हमारे रब! मैंने गुमराह नहीं किया था बल्कि यह ख़ुद ही दूरदराज़ की गुमराही में था।(27) हक़ तआ़ला कहेगा बस मेरे सामने झगड़े की बात मत करो मैं तो पहले ही तुम्हारी तरफ़ वादा अ़ज़ाब भेज चुका था। (28) मेरे यहाँ बात बदलती नहीं और न मैं अपने बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला हूँ।'' (29)

इंसान का निगरान और गवाह फ़रिश्ता (आ. 23 से 29) : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद हो रहा है कि जो फ़रिश्ता इब्ने आदम के आमाल पर मुक़र्रर है वह उसके आमाल की गवाही देगा और कहेगा कि यह है मेरे पास तैयार हाज़िर। बग़ैर कमी बेशी के। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं ''यह उस फ़रिश्ते का कलाम होगा जिसे साइक़ कहा गया है जो उसे महशर में ले आया था।'' इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं मेरे नज़दीक मुख़्तार क़ौल यह है कि यह शामिल है उस फ़रिश्ते को भी और गवाही देने वाले फ़रिश्ते को भी। अब अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ के फ़ैसले अदलो इंसाफ़ के साथ करेगा (अल्क़िया) तस्निया का सेग़ा है कुछ नहवी कहते हैं कि कुछ अरब वाहिद को तस्निया कर दिया करते हैं जैसे कि हज्जाज का मक़ूला मशहूर है कि वह अपने जल्लाद से कहता था इज़्रिबा उनुक़हू तुम दोनों इसकी गर्दन मार दो हालाँकि जल्लाद एक ही होता था। इब्ने जरीर (रह.) ने इसकी शहादत में अरबी का एक शेअ़र भी पेश किया है। कुछ कहते हैं कि दरअस़ल यह नून ताकीद है जिसकी तस्हील अलिफ़ की तरफ़ कर ली है लेकिन यह बईद है इसलिए कि ऐसा तो वक़्फ़ की हालत में होता है। बज़ाहिर यह भी मालूम होता है कि यह ख़िताब ऊपर वाले दोनों फ़रिश्तों से होगा। लाने वाले फ़रिश्ते ने उसे हिसाब के लिए पेश किया और गवाही देने वाले ने गवाही दे दी तो अल्लह तआ़ला उन दोनों को हुक्म देगा कि उसे जहन्नम की आग में डाल दो जो बदतरीन जगह है, अल्लाह हमें महफ़ूज़ रखे। फिर फ़र्माता है कि हर काफ़िर और हर हक़ के मुख़ालिफ़ और हर हक़ के न अदा करने वाले और हर नेकी, सिलारहमी और भलाई से खाली रहने वाले और हर हद से गुज़र जाने वाले ख़्वाह वह माल के ख़र्च में इसराफ़ करता हो ख़्वाह बोलने और चलने फिरने में अल्लाह तआ़ला के अहकाम की परवाह न करता हो और हर शक करने वाले और हर अल्लाह के साथ शरीक करने वाले के लिए यही हुक्म है कि उसे पकड़कर सख़्त अ़ज़ाबों में डाल दो। पहले

हदीस गुज़र चुकी है कि जहन्नम क़ियामत के दिन लोगों के सामने अपनी गर्दन निकालेगी और बाआवाज़े बुलंद पुकार कर कहेगी जिसे तमाम महशर का मज्मअ सुनेगा कि मैं तीन क़िस्म के लोगों पर मुक़र्रर की गयी हूँ। हर सरकश हक़ के मुख़ालिफ़ के लिए और हर मुश्रिक के लिए और हर तस्वीर बनाने वाले के लिए फिर वह उन सबसे लिपट जाएगी। मुस्नद की हदीस में तीसरी क़िस्म के लोग वह हैं जो ज़ालिमाना क़त्ल करने वाले हों। (अहमद : 3/40; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने अबी शैबा : 13/160; मुस्नदे अबी यअ़ला : 1146; अल्बअ़स वन्नुशूर लिल बैहक़ी : 577; मुअजमुल औसत : 3993 इसकी सनद में अतिया औफ़ी ज़ईफ़ मुदल्लस है।) फिर फ़र्माया उसका साथी कहेगा इससे मुराद शैतान है जो उसके साथ मुवक्किल था यह उस काफ़िर को देखकर अपनी बरा'त करेगा और कहेगा कि मैंने इसे नहीं बहकाया बल्कि यह तो ख़ुद गुमराह था बातिल का अज़्ख़ुद क़ुबूल कर लेता था हक़ का अपने आप इंकारी था। जैसे दूसरी आयत में है कि शैतान जब देखेगा कि काम ख़त्म हुआ तो कहेगा अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैं तो वादा ख़िलाफ़ हूँ ही मेरा कोई ज़ोर तुम पर नहीं था मैंने तुमसे कहा तुमने फ़ौरन मान लिया अब मुझे मलामत न करो, बल्कि अपनी जानों को मलामत करो। न मैं तुम्हें काम दे सकूँ न तुम मेरे काम आ सको जो मुझे शरीक बना रहे थे मैं तो पहले से ही इसका इंकारी था ज़ालिमों के लिए अलमनाक अ़ज़ाब है फिर फ़र्माता है अल्लाह तआला इंसान से और उसके साथी शैतान से कहेगा कि मेरे सामने न झगड़ो, क्योंकि इंसान कह रहा होगा कि या अल्लाह! इसने मुझे जबकि मेरे पास नसीहत आ चुकी गुमराह कर दिया और शैतान कहेगा या अल्लाह! मैंने इसे गुमराह न किया। तो अल्लाह उन्हें इस तू तू मैं मैं से रोक देगा और कहेगा मैं तो अपनी हुज्जत ख़त्म कर चुका रसूलों की ज़ुबानी यह सब बातें तुम्हें सुना चुका था किताबें भेज दी थीं और हर हर तरीक़ा से और हर हर तरह से तुम्हें समझा बुझा दिया था। सुनो! जो फ़ैसला करना है वह मैं कर चुका मेरी बातें बदलती नहीं मैं ज़ालिम नहीं जो दूसरे के गुनाह पर किसी को पकड़ूँ। हर शख़्स पर इत्मामे हुज्जत हो चुकी और हर शख़्स अपने गुनाहों का आप ज़िम्मेदार है।

***

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُولُ هَلْ مِن مَّزِيدٍ ۝٣٠ وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝٣١ هَٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝٣٢ مَّنْ خَشِيَ
الرَّحْمَٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝٣٣ ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۖ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝٣٤
لَهُم مَّا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝٣٥

तर्जुमा : "जिस दिन हम दोज़ख़ से पूछेंगे क्या तू भर चुकी? वह जवाब देगी क्या कुछ और ज़्यादा भी है? (30) और जन्नत परहेज़गारों के लिए बिलकुल क़रीब कर दी जाएगी ज़रा भी दूर न होगी। (31) यह है जिसका तुमसे वादा किया जाता था हर उस शख़्स के लिए जो रुजूअ करने वाला और पाबन्दी करने वाला हो।(32) जो रहमान का ग़ायबाना ख़ौफ़ रखता हो और तवज्जह वाला दिल लाया हो। (33) तुम इस जन्नत में सलामती के साथ जाओ यह हमेशा रहने का दिन है (34) यह वहाँ जो चाहें उन्हीं का है बल्कि हमारे पास और भी ज़्यादा है।" (35)

जहन्नम का अल्लाह से हमकलाम होना (आ. 30 से 35) : चूँकि अल्लाह तबारक व तआला का जहन्नम से वादा है कि वह उसे पुर कर देगा इसलिए क़ियामत के दिन जो जिन्नात और इंसान उसके क़ाबिल होंगे उन्हें उसमें डाला जाएगा और अल्लाह तबारक व तआला पूछेगा कि अब तू तो भर गई? और यह कहेगी कि अगर कुछ और गुनहगार बाक़ी हों तो उन्हें भी मुझ में डाल दो। सहीह बुख़ारी में इस आयत की तफ़्सीर में यह हदीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया "जहन्नम में गुनहगार डाले जाएँगे और वह ज़्यादती तलब करती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना क़दम उसमें रखेगा पस वह कहेगी बस बस।" मुस्नद अहमद की हदीस में यह भी है कि उस वक़्त यह सिमट जाएगी और कहेगी तेरी इज़्ज़त व करम की क़सम! बस बस। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह क़ाफ़ बाब क़ौलुहू (व तक़ूलु हल मिम मज़ीद) : 4848) और जन्नत में जगह बच जाएगी यहाँ तक कि एक नई मख़्लूक़ को पैदा करके अल्लाह तआला उस जगह को आबाद करेगा। (अहमद : 3/334; सहीह बुख़ारी, किताबुत्तौहीद, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (वहुवल अज़ीज़ुल हकीम) : 7384; सहीह मुस्लिम : 2848; तिर्मिज़ी : 3272; अहमद : 3/134) सहीह बुख़ारी में है "जन्नत और दोज़ख़ में एक बार बातचीत हुई जहन्नम ने कहा कि मैं हर मुतकब्बिर और हर जब्बार के लिए मुक़र्रर की गई हूँ और जन्नत ने कहा मेरा यह हाल है कि मुझमें कमज़ोर लोग और वह लोग जो दुनिया में ज़ी इज़्ज़त न समझे जाते थे वह दाख़िल होंगे। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ने जन्नत से फ़र्माया तू मेरी रहमत है अपने बन्दों में से जिसे चाहूँगा उस रहमत के साथ नवाज़ूँगा और जहन्नम से फ़र्माया तू मेरा अज़ाब है तेरे साथ मैं जिसे चाहूँगा अज़ाब करूँगा। हाँ! तुम दोनों बिलकुल भर जाओगी तो जहन्नम तो न भरेगी यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना क़दम उसमें रखेगा अब वह कहेगी बस बस बस! उस वक़्त वह भर जाएगी और उसके सब जोड़ आपस में सिमट जाएँगे और अल्लाह तआला अपनी मख़्लूक़ में से किसी पर ज़ुल्म न करेगा। हाँ! जन्नत में जो जगह बच रहेगी उसके भरने के लिए अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और मख़्लूक़ पैदा करेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह क़ाफ़ बाब क़ौलुहू (व तक़ूलु हल मिम्मज़ीद) : 4850; सहीह मुस्लिम : 2846) मुस्नद अहमद की हदीस में जहन्नम का क़ौल यह है कि "मुझमें जबर करने वाले तकब्बुर करने वाले बादशाह और बड़े सरदार दाख़िल होंगे....।" (अहमद : 3/13; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 7/112; अल्मुंतख़ब लि अब्द बिन हुमैद : 908; अस्सुन्ना लि इब्ने अबी आसिम : 528; इब्ने हिब्बान : 7454) मुस्नदे अबू यअ़ला में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं "अल्लाह तआला मुझे अपनी ज़ात को क़ियामत के

दिन पहुँचवाएगा मैं सज्दे में गिर पड़ूँगा अल्लाह तआला उससे ख़ुश होगा फिर मैं अल्लाह तआला की ऐसी ता'रीफ़ें करूँगा कि उससे वह ख़ुश हो जाएगा। फिर मुझे सिफ़ारिश की इजाज़त दी जाएगी। फिर मेरी उम्मत जहन्नम के ऊपर के पुल से गुज़रने लगेगी कुछ तो निगाह की सी तेज़ी के साथ गुज़र जाएँगे कुछ तीर की तरह पार हो जाएँगे कुछ तेज़ घोड़ों से ज़्यादा तेज़ी से पार हो जाएँगे यहाँ तक कि एक शख़्स घुटनों चलता हुआ निकल जाएगा और यह मुताबिक़े आमाल के होगा और जहन्नम ज़्यादती तलब कर रही होगी यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना क़दम उसमें रखेगा पस यह सिमट जाएगी और कहेगी बस बस और मैं हौज़ पर होऊँगा। लोगों ने कहा हौज़ क्या है? फ़र्माया अल्लाह तआला की क़सम उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद है और शहद से ज़्यादा मीठा है और बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डा है और मुश्क से ज़्यादा ख़ुश्बूदार है। इस पर बरतन आसमान के सितारों से ज़्यादा हैं जिसे उसका पानी मिल गया वह कभी प्यासा न होगा और जो उससे महरूम रह गया उसे कहीं पानी नहीं मिलेगा जो सैराब हो सके।" (तब्री) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं "वह कहेगी क्या मुझमें कोई मकान है कि मुझमें ज़्यादती की जाए?" हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं "वह कहेगी क्या मुझमें एक के भी आने की जगह है? मैं भर गई।" हज़रत मुजाहिद (रह.) फर्माते हैं "उसमें जहन्नमी डाले जाएँगे यहाँ तक कि वह कहेगी मैं भर गई और कहेगी कि क्या मुझमें ज़्यादती की गुंजाइश है? "इमाम इब्ने जरीर (रह.) पहले क़ौल को ही इख़्तियार करते हैं। इस दूसरे क़ौल का मतलब यह है कि गोया इन बुज़ुर्गों के नज़दीक यह सवाल उसके बाद होगा कि अल्लाह तआला अपना क़दम उसमें रख दे, अब जो उससे पूछेगा कि क्या तू भर गई तो वह जवाब देगी कि क्या मुझमें कहीं भी कोई जगह बाक़ी रही है जिसमें कोई आ सके? यानी बाक़ी नहीं रही पुर हो गई। हज़रत औफ़ी (रह.) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से रिवायत करते हैं कि "आपने फ़र्माया यह उस वक़्त होगा जबकि उसमें सूई के नाके के बराबर भी जगह बाक़ी न रहेगी, वल्लाहु आलम!

फिर फ़र्माता है जन्नत क़रीब की जाएगी यानी क़ियामत के दिन जो दूर नहीं है इसलिए कि जिसका आना यक़ीनी हो वह दूर नहीं समझा जाता अव्वाबुन के मअनी रुजूअ करने वाला तौबा करने वाला, गुनाहों से अटक जाने वाला हफ़ीज़ुन के मअनी वादों का पाबंद। हज़रत उबेद बिन उमेर (रह.) फ़र्माते हैं अव्वाबुंव्वहफ़ीज़ वह है जो किसी मज्लिस में बैठकर न उठे जब तक कि इस्तिग़फ़ार न कर ले, जो रहमान से बिन देखे डरता है यानी तंहाई में भी अल्लाह का डर रखे। हदीस में है वह भी क़ियामत के दिन अर्शे इलाही का साया पाएगा जो तंहाई में अल्लाह को याद करे और उसकी आँखें बह निकलें। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब मन जलस फ़िल मस्जिदि यंतज़िरुस्सलात : 660; सहीह मुस्लिम : 1031; इब्ने हिब्बान : 4486; अहमद : 2/439) और क़ियामत के दिन अल्लाह के पास दिल सलामत लेकर जाए जो उसकी जानिब झुकने वाला हो। इसमें यानी जन्नत में चले जाओ अल्लाह तआला के तमाम अज़ाबों से तुम्हें सलामती मिल गई है। और यह भी मतलब है कि फ़रिश्ते उन पर सलाम करेंगे। यह ख़ुलूद का दिन है यानी जन्नत में हमेशा के लिए जा रहे हो जहाँ कभी मौत नहीं, जहाँ से कभी निकाल दिये जाने का ख़तरा नहीं, जहाँ से तब्दीली और हेर फेर नहीं। फिर फ़र्माया यह वहाँ जो चाहेंगे पाएँगे, बल्कि और ज़्यादा भी। कसीर इब्ने मुर्रा (रह.)

फ़र्माते हैं मज़ीद में यह भी है कि अहले जन्नत के पास से एक बादल गुज़रेगा जिसमें निदा आएगी कि तुम क्या चाहते हो? जो तुम चाहो मैं बरसाऊँ, पस यह जिस चीज़ की ख़्वाहिश करेंगे उससे बरसेगी। हज़रत कसीर (रह.) फ़र्माते हैं "अगर मैं इस मर्तबे में पहुँचा और मुझसे सवाल हुआ तो मैं कहूँगा कि ख़ूबसूरत ख़ुश लिबास नौजवान कुँवारियाँ बरसाई जाएँ।" रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "तुम्हारा जी जिस परिन्द के खाने को चाहेगा वह उसी वक़्त भुना भुनाया मौजूद हो जाएगा।" (वसनदुहू मौज़ूअ अब्दुल ग़फ़्फ़ार बिन क़ासिम क़ाल अबूदाऊद तयालिसी, व अना अश्हदु अन्न अबा मरयम कज़्ज़ाब लिअन्नी क़द लक़ीतुहू व समिअतु मिन्हू व इस्मुहू अब्दुल ग़फ़्फ़ार बिन क़ासिम (अज़्ज़ुअफ़ाउ लिल अक़ीली) : 3/101 वसनदुहू हसन) मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ हदीस में है कि "अगर जन्नती औलाद चाहेगा तो एक ही साअत में हमल और बच्चा और बच्चे की जवानी हो जाएगी।" इमाम तिर्मिज़ी इसे ग़रीब हसन बतलाते हैं और तिर्मिज़ी में यह भी है कि जिस तरह यह चाहेगा हो जाएगा। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी अदना अहलिल जन्नति मिनल करामत : 2563; वसनदुहू हसन; अहमद : 3/9; दारमी : 2/337; मुस्नदे अबी यअला : 1051; इब्ने हिब्बान : 7404) और आयत में है (لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ) (10/यूनुस : 26) सुहैब बिन सिनान (रह.) फ़र्माते हैं "इस ज़्यादती से मुराद अल्लाह करीम के चेहरे की ज़ियारत है।" हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) फ़र्माते हैं "हर जुम्अे के दिन उन्हें दीदारे बारी तआला होगा यही मतलब मज़ीद का है।" मुस्नद शाफ़ेई में है "हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) एक सफ़ेद आइना लेकर रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए जिसके बीचों बीच एक नुक़्ता था। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा यह क्या है? फ़र्माया, यह जुम्अे का दिन है जो ख़ास आपको और आपकी उम्मत को बतौरे फ़ज़ीलत के अता किया गया है। सब लोग इसमें तुम्हारे पीछे हैं यहूद भी और नसारा भी। तुम्हारे यहाँ इसका नाम यौमुल मज़ीद है। हुज़ूर (ﷺ) ने पूछा, यह क्या है? फ़र्माया तेरे रब ने जन्नतुल फ़िरदौस में एक कुशादा मकान बनाया है जिसमें मुश्की टीले हैं, जुम्अे के दिन अल्लाह तआला जिन जिन फ़रिश्तों को चाहे उतारता है। उसके आसपास नूरी मिम्बर होते हैं जिन पर अम्बिया (عليهم السلام) रौनक़ अफ़रोज़ होते हैं शुहदा और सिद्दीक़ लोग उनके पीछे उन मुश्की टीलों पर होंगे। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल फ़र्माएगा मैंने अपना वादा तुमसे सच्चा किया अब मुझसे जो चाहो माँगो पाओगे। यह सब कहेंगे हमें तेरी ख़ुशी और रज़ामंदी चाहते हैं, अल्लाह कहेगा यह तो मैं तुम्हें दे चुका। मैं तुमसे राज़ी हो गया इसके सिवा भी तुम जो चाहोगे पाओगे और मेरे पास और ज़्यादा है। पस यह लोग जुम्आ के ख़्वाहिशमंद रहेंगे क्योंकि इन्हें बहुत सी नेअमतें इसी दिन मिलती हैं, यही दिन है जिस दिन तुम्हारा रब अर्श पर मुस्तवी हुआ, इसी दिन हज़रत आदम (عليه السلام) पैदा किये गए और इसी दिन क़ियामत आएगी।"

इसी तरह इसे हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) ने किताबुल उम्म की किताबुल जुम्आ में भी वारिद किया है। इमाम इब्ने जरीर(रह.) ने इस आयत की तफ़्सीर के मौक़े पर एक बहुत बड़ा असर वारिद किया है जिसमें बहुत सी बातें ग़रीब हैं। मुस्नद अहमद में है "हुज़ूरे अकरम (ﷺ) फ़र्माते हैं जन्नती (70) सत्तर साल तक एक ही तरफ़ मुतवज्जह बैठा रहेगा फिर एक हूर आएगी जो उसके कँधे पर हाथ रखकर उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जह

करेगी वह इतनी ख़ूबसूरत होगी कि उसके रुख़्सार में उसे अपनी शक्ल इस तरह नज़र आएगी जैसे आबदार आइने में, वह जो ज़ेवरात पहने हुए होगी उनमें का एक एक अदना मोती ऐसा होगा कि उसकी जोत से सारी दुनिया मुनव्वर हो जाए। वह सलाम करेगी यह जवाब देकर पूछेगा तुम कौन हो? वह कहेगी मैं हूँ जिसे क़ुरआन में मज़ीद कहा गया था, इस पर सत्तर हुल्ले होंगे, लेकिन ताहम उसकी ख़ूबसूरती और चमक दमक और सफ़ाई की वजह से बाहर ही से उसकी पिण्डली का गूदा नज़र आएगा। उसके सिर पर जड़ाव ताज होगा जिसका अदना मोती मश्रिक़ व मग़्रिब को रोशन कर देने के लिए काफ़ी है।'' (अहमद : 3/75; वसनदुहू ज़ईफ़ुन)

***

وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ۭ هَلْ
مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٣٦ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيْدٌ ۝٣٧ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ڰ وَّمَا
مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ۝٣٨ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ
الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ۝٣٩ وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ۝٤٠

तर्जुमा : ''इनसे पहले भी हम बहुत सी उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जो इनसे ताक़त में बहुत ज़्यादा थीं वह शहरों में ढूँढते ही रह गए कि कोई भागने का ठिकाना है? (36) इसमें हर साहिबे दिल के लिए इब्रत है और उसके लिए जो दिल से मुतवज्जह होकर कान लगाए। (37) यक़ीनन हमने आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उसके बीच है सबको सिर्फ़ छः दिन में पैदा कर दिया और हमें थकान ने छुआ तक नहीं। (38) यह जो कुछ कहते हैं तू उस पर सब्र करता रह और अपने रब की तस्बीह बयान करता रह सूरज निकलने से पहले भी और सूरज ग़ुरूब होने से पहले भी। (39) और रात के किसी वक़्त भी और नमाज़ के बाद भी।'' (40)

छः दिन में आसमान व ज़मीन बनाये गए (आ. 36 से 40) : इर्शाद होता है कि यह कुफ़्फ़ार तो हैं क्या चीज़? इनसे बहुत ज़्यादा क़ुव्वत व ताक़त और अस्बाब व ता'दाद वाले लोगों को इसी जुर्म पर हम तह व बाला कर चुके हैं जिन्होंने शहरों में अपनी यादगारें छोड़ी हैं, ज़मीन में ख़ूब फ़साद किया था लम्बे लम्बे सफ़र करते थे हमारे अज़ाब देखकर बचने की जगह तलाश करने लगे मगर यह कोशिश बिलकुल बेसूद थी अल्लाह

की क़ज़ा व क़द्र और उसकी पकड़ धकड़ से कौन बच सकता था? पस तुम भी याद रखो कि जिस वक़्त मेरा अज़ाब आ गया बग़लें झाँकते रह जाओगे और भूसी की तरह उड़ा दिये जाओगे। हर अक़्लमंद के लिए इसमें काफ़ी इब्रत है अगर कोई ऐसा भी हो जो समझदारी के साथ कान लगाये वह भी उसमें बहुत कुछ पा सकता है, यानी दिल को हाज़िर करके कानों से सुने। फिर अल्लाह सुब्हानहू व तआला फ़र्माता है कि उसने आसमानों को ज़मीनों को और उनके बीच की चीज़ों को छः दिन में पैदा कर दिया और वह थका नहीं। उसमें भी मौत के बाद की ज़िन्दगी पर अल्लाह तआला के क़ादिर होने का सबूत है कि जो ऐसी बड़ी मख़्लूक़ को औलाद पैदा कर चुका है उस पर मुर्दों को ज़िन्दा करना क्या भारी है? हज़रत क़तादा (रह.) का फ़र्मान है कि मल्ऊन यहूद कहते थे कि छः दिन में मख़्लूक़ को रचाकर ख़ालिक़ ने सातवें दिन आराम किया और यह दिन हफ़्ते का दिन था। उसका नाम ही उन्होंने यौमुर्राहत रख छोड़ा था। पस अल्लाह तआला ने उनके उस वाही ख़्याल की तर्दीद की कि हमें थकन ही न थी आराम कैसा? (तबरी : 22/376) जैसे और आयत में है (وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ) (46/अह्क़ाफ़ : 33) यानी क्या इन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह वह है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उनकी पैदाइश से न थका, क्या वह मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर नहीं? हाँ! क्यूँ नहीं वह तो हर चीज़ पर क़ादिर है। और आयत में है (لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ) (40/मोमिन : 57) अल्बत्ता आसमान व ज़मीन की पैदाइश लोगों की पैदाइश से बहुत बड़ी है और आयत में है (ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا) (79/नाज़िआत : 27) क्या तुम्हारी पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या आसमान की, उसे अल्लाह तआला ने बनाया है।

फिर फ़र्मान होता है कि यह झुठलाने वाले और इंकार करने वाले जो सुनाते हैं उसे सब्र से सुनते रहो और उन्हें मोहलत दो उनको छोड़ दो और सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले और रात को पाकी और ता'रीफ़ किया करो। मेअराज से पहले सुबह की और अस्र की नमाज़ फ़र्ज़ थी। और रात की तहज्जुद, आप पर और आपकी उम्मत पर एक साल तक वाजिब रही उसके बाद आपकी उम्मत से उसका वजूब मंसूख़ (खत्म) हो गया। इसके बाद मेअराज वाली रात पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ हुईं जिनमें फ़ज्र और अस्र की नमाज़ें ज्यों की त्यों रहीं। पस सूरज निकलने से पहले और डूबने से पहले से मुराद फ़ज्र की और अस्र की नमाज़ है। मुस्नद अह्मद में है "हम हुज़ूर (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे हुए थे आपने चौदहवीं रात के चाँद को देखा और फ़र्माया तुम अपने रब के सामने पेश किये जाओगे और उसे इस तरह देखोगे जैसे उस चाँद को देख रहे हो। जिसके देखने में कोई धक्का पीली नहीं पस अगर तुमसे हो सके तो ख़बरदार! सूरज निकलने से पहले की और सूरज डूबने से पहले की नमाज़ में मग़्लूब न हो जाया करो फिर आयत (व सब्बिह बिहम्दि रब्बिका क़ब्ल तुलूइश्शम्सि व क़ब्लल मग़्रिब) पढ़ी।" (अह्मद : 4/365; सहीह बुख़ारी, किताब मवाक़ीतुस्सलात, बाब फ़ज़्ल सलातुल अस्र : 554; सहीह मुस्लिम : 633) रात को भी उसकी तस्बीह बयान कर यानी नमाज़ पढ़, जैसे फ़र्माया (وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ) (17/बनी इस्राईल : 79) यानी रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ा कर यह ज़्यादती ख़ास तेरे लिए ही है। तुझे तेरा रब मक़ामे महमूद में खड़ा करने वाला है। सज्दों के पीछे से मुराद बक़ौल हज़रत

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) नमाज़ के बाद अल्लाह तआ़ला की पाकी बयान करना है। (तब्री : 22/381) बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि "रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मुफ़्लिस मुहाजिर आए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! मालदार लोग बुलंद दर्जे और हमेशगी वाली नेअ़मतें हासिल कर चुके। आपने फ़र्माया, वोह कैसे? जवाब दिया कि हमारी तरह नमाज़ रोज़ा तो वह भी करते हैं लेकिन वह सदक़ा देते हैं जो हम नहीं दे सकते, वह गुलाम आज़ाद करते हैं जो हम नहीं कर सकते। आपने फ़र्माया, आओ मैं तुम्हें एक ऐसा अ़मल बताऊँ कि जब तुम उसे करो तो सबसे आगे निकल जाओ और तुमसे अफ़ज़ल कोई न निकले, लेकिन जो उस अ़मल को करे। तुम हर नमाज़ के बाद 33, 33 बार सुब्हानल्लाह, अल्हम्दु लिल्लाह, अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो। वह फिर आये और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! हमारे मालदार भाईयों ने भी आपकी इस हदीस को सुना और वह भी इस अ़मल को करने लगे। आपने फ़र्माया, फिर यह तो अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अज़्ज़िक्रु बअ़दस्सलात : 843; सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिहबाबुज़्ज़िक्र बअ़दस्सलात : 595) दूसरा क़ौल यह है कि इससे मुराद मग़रिब के बाद की दो रकअ़तें हैं। हज़रत उमर, हज़रत अ़ली, हसन इब्ने अ़ली, इब्ने अ़ब्बास, अबू हुरैरा, अबू उमामा (रज़ि.) का यही फ़र्मान है और यही क़ौल है हज़रत मुजाहिद, इक्रिमा, शअ़बी, नख़ई, क़तादा (रहि.) वग़ैरह का। मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद दो रकअ़तें पढ़ा करते थे। सिवा फ़ज्र और अ़स्र की नमाज़ के। अ़ब्दुर्रहमान फ़र्माते हैं हर नमाज़ के पीछे। (अबूदाऊद, किताबुत्तत्व्वअ़, बाब मन रख़स फ़ीहिमा इज़ा कानतिश्शम्सु मुर्तफ़आ : 1275; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू इस्हाक़ मुदल्लस है और तस़रीह बिस्सिमाअ़ साबित नहीं। अहमद : 1/124) इब्ने अबी हातिम में हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि "मैंने एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ गुज़ारी आपने फ़ज्र के फ़र्ज़ों से पहले दो हल्की रकअ़तें अदा कीं, फिर घर से नमाज़ के लिए निकले और फ़र्माया, ऐ इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.)! फ़ज्र के पहले की दो रकअ़तें (अदबारन्नुजूम) हैं और मग़रिब के बाद की दो रकअ़तें (अदबारस्सुजूद) हैं।" (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतित् तूर : 3275; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में रुश्दैन बिन कुरैब ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/51; रक़म : 2781) यह इसी रात का ज़िक्र है जिस रात हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने तहज्जुद की नमाज़ की तेरह रकअ़तें आपकी इक़्तिदा में अदा की थीं और यह रात आपकी ख़ाला हज़रत मैमूना (रज़ि.) की बारी थी। लेकिन ऊपर जो बयान हुआ यह हदीस तिर्मिज़ी में भी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह.) ने इसे ग़रीब बतलाया है। हाँ! असल हदीस तहज्जुद की तो बुख़ारी व मुस्लिम में है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अ़मल फ़िस्सलाति, बाब इस्तिआ़नतिल यद फ़िस्सलाति...: 1198; सहीह मुस्लिम : 763) मुम्किन है कि पिछला कलाम हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का अपना हो, वल्लाहु आलम!

***

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۝٤١ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ
ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ۝٤٢ اِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ۝٤٣ يَوْمَ تَشَقَّقُ
الْاَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۚ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ۝٤٤ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ
اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۚ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ۝٤٥

तर्जुमा : "और ध्यान से सुन रख कि जिस दिन एक पुकारने वाला क़रीब ही की जगह से पुकारेगा। (41) जिस दिन उस तुंदो तेज़ चीख़ को यक़ीन के साथ सुन लेंगे, यह दिन होगा निकलने का। (42) हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ़ लौटकर आना है। (43) जिस दिन ज़मीन फट जाएगी और यह दौड़ते हुए निकल पड़ेंगे। यह जमा कर लेना हम पर बहुत ही आसान है। (44) यह जो कुछ कह रहे हैं हम बख़ूबी जानते हैं तू इन पर जबर करने वाला नहीं, तू तो क़ुरआन के साथ उन्हें समझाता रह जो मेरे डरावे के वादों से डरते हैं।" (45)

अल्लाह के एक हुक्म से क़ियामत आ जाएगी (आ. 41 से 45) : हज़रत कअ़ब अहबार (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को हुक्म देगा कि बैतुल मक़्दिस के पत्थर पर खड़े होकर आवाज़ लगाए कि ऐ सड़ी गली हड्डियों! और ऐ जिस्म के मुतफ़र्रिक़ हिस्सों! अल्लाह तुम्हें जमा होने का हुक्म देता है ताकि तुम्हारे बीच फ़ैसला कर दे। पस मुराद इससे सूर है, यह हक़ उस शक शुब्हा और इख़्तिलाफ़ को मिटा देगा जो इससे पहले था, यह क़ब्रों से निकल खड़े होने का दिन होगा। इब्तिदाअन पैदा करना फिर लौटाना और तमाम ख़लाइक़ को एक जगह लौटा लाना यह हमारी ही बस की बात है। उस वक़्त हर एक को उसके अ़मल का बदला हम देंगे। तमाम भलाई बुराई का बदला हर हर शख़्स पा लेगा, ज़मीन फट जाएगी और सब जल्दी जल्दी उठ खड़े होंगे। अल्लाह तआला आसमान से बारिश बरसाएगा जिससे मख़्लूक़ात के बदन उगने लगेंगे जिस तरह कीचड़ में पड़ा हुआ दाना बारिश से उग जाता है जब जिस्म की पूरी नशोनुमा हो जाएगी तो अल्लाह हज़रत इस्राफ़ील (عليه السلام) को सूर फूँकने का हुक्म देगा। तमाम रूहें सूर के सूराख़ में होंगी उनके सूर फूँकते ही रूहें आसमान व ज़मीन के बीच फिरने लग जाएँगी उस वक़्त अल्लाह तआला फ़र्माएगा, मेरे इज़्ज़त व जलाल की क़सम! हर रूह अपने अपने जिस्म में चली जाए जिसे उसने दुनिया में आबाद कर रखा था पस हर रूह अपने अपने असली जिस्म में जा मिलेगी और जिस तरह ज़हरीले जानवर का असर चौपायों के रग व रेशा में बहुत जल्द पहुँच जाता है उसी तरह उस जिस्म के रग व रेशे में फ़ौरन रूह दौड़ जाएगी और सारी मख़्लूक़ अल्लाह के फ़र्मान के मातहत दौड़ती हुई जल्दी जल्दी मैदाने मेहशर में हाज़िर हो जाएगी, यह वक़्त होगा जो

काफ़िरों पर बहुत ही सख़्त होगा। फ़र्माने बारी है (يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ) (17/बनी इस्राईल : 52) यानी जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा तुम उसकी ता'रीफ़ें करते जवाब दोगे और समझते होगे कि तुम बहुत ही कम ठहरे। सहीह मुस्लिम में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं ''सबसे पहले मेरी क़ब्र की ज़मीन शक़्क़ होगी।'' (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ज़ाइल, बाब तफ़्ज़ीलु नबिय्यिना (ﷺ) अला जमीइल ख़लाइक़ : 2278) फ़र्माता है कि यह दोबारा खड़ा करना हम पर बहुत ही आसान और बिलकुल सहल है। जैसे अल्लाह तआला ने फ़र्माया(وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ)(54/सूरह क़मर : 5) यानी हमारा हुक्म इस तरह यकबारगी हो जाएगा जैसे आँख का झपकना और आयत में है (مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ) (31/लुक़्मान : 28) यानी तुम सबका पैदा करना और फिर मारने के बाद दोबारा ज़िन्दा करना ऐसा ही है जैसे एक शख़्स का, बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और देखने वाला है। फिर जनाब बारी का इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! यह जो कुछ कह रहे हैं हमारे इल्म से बाहर नहीं, तू इसे अहमियत न दे हम ख़ुद निमट लेंगे जैसे और जगह है (وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ) (15/हिज्र : 97) वाक़ेई हमें मालूम है कि यह लोग जो बातें बनाते हैं उससे आप तंगदिल होते हैं सो इसका इलाज यह है कि आप अपने परवरदिगार की पाकी और ता'रीफ़ बयान करते रहिए और नमाज़ियों में रहिए और मौत आ जाने तक अपने रब की इबादत में लगे रहिए। फिर फ़र्माता है तू इन्हें हिदायत पर जबरन नहीं ला सकता, न हमने तुझे इसकी तक्लीफ़ दी है। यह भी मअनी हैं कि इन पर जबर न करो, बल्कि पहला क़ौल औला है क्योंकि अल्फ़ाज़ में यह नहीं कि तुम इनपर जबर न करो बल्कि यह है कि तुम इन पर जब्बार नहीं हो यानी आप मुबल्लिग़ हैं तब्लीग़ करके अपने फ़रीज़े से सुबुकदोश (अलग) हो जाइए, जबर मअनी में अज्बर के भी आता है। आप नसीहत करते रहिए जिसके दिल में अल्लाह का डर होगा जो उसके अज़ाबों से डरता है और उसकी रहमतों का उम्मीदवार है वह ज़रूर इस तब्लीग़ से नफ़ा उठाएगा और राहे रास्त पर आ जाएगा। जैसे फ़र्माया (فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ) (13/रअद : 40) यानी तुझ पर सिर्फ़ पहुँचा देना है और हिसाब तो हमारे ज़िम्मे है। और आयत में है (فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾) (88/ग़ासिया : 21, 22) तू सिर्फ़ नसीहत करने वाला है कुछ इन पर दारोग़ा नहीं। और जगह है तुझ पर इनकी हिदायत नहीं बल्कि अल्लाह तआला जिसे चाहे हिदायत करता है। और जगह है (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ) (28/क़सस : 56) तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह तआला जिसे चाहे राहे रास्त पर ला खड़ा करता है। इसी मज़्मून को यहाँ भी बयान फ़र्माया है। हज़रत क़तादा (रह.) इस आयत को सुनकर यह दुआ करते हैं (अल्लाहुम्मज्अल्ना मिम्मंय् यख़ाफ़ु वईदका व यरजू मौइदका या बार्रु या रहीमु) यानी ऐ अल्लाह! तू हमें उनमें से कर जो तेरी सज़ाओं के डरावे से डरते हैं और तेरी नेअमतों की उम्मीद लगाये हुए हैं, ऐ बहुत ज़्यादा एहसान करने वाले और ऐ बहुत ज़्यादा रहम करने वाले।

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह क़ाफ़ की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह ज़ारियात - 51

आयात : 60 मक्की पैराग्राफ : 8

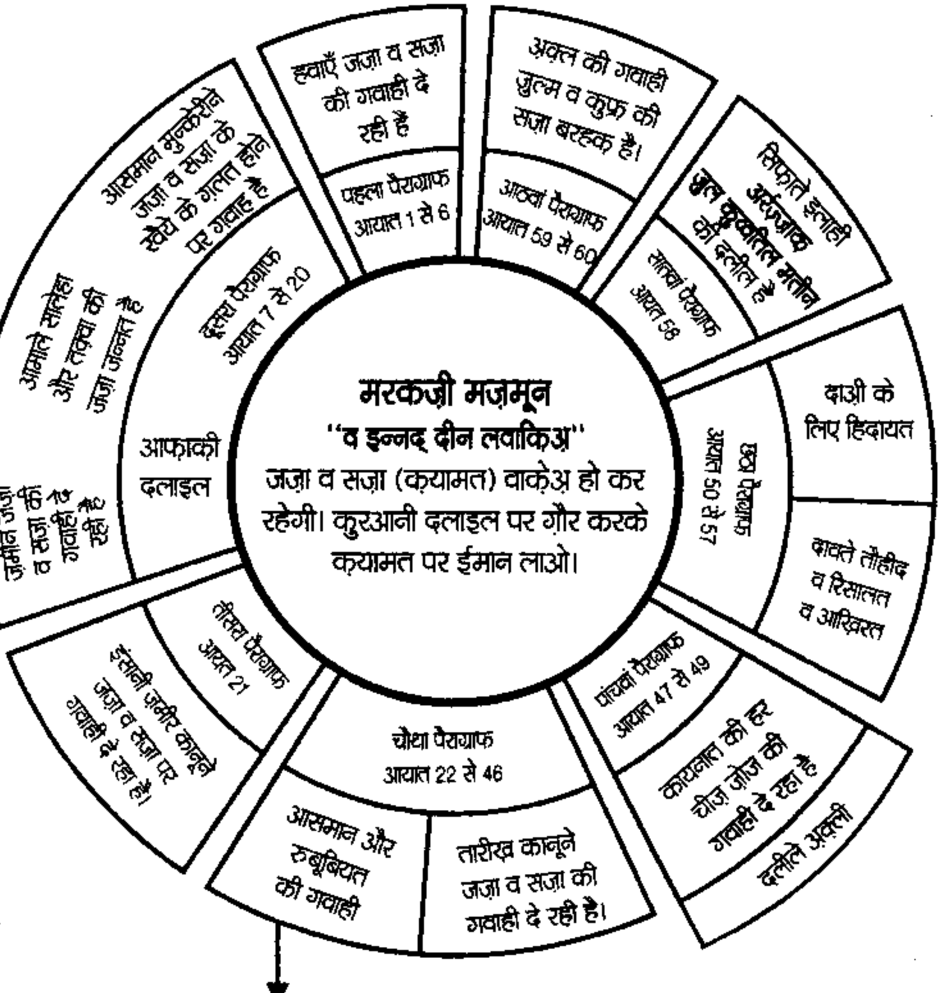

क़िस्स-ए-नूह (अ.) (46)	क़िस्स-ए-समूद (43 से 45)	क़िस्स-ए-आद (41 से 42)	क़िस्स-ए-मूसा (अ.) व फ़िरऔन (38 से 40)	फ़रिश्तों की गवाही क़िस्स-ए-इब्राहीम (अ.) व लूत (अ.) (24 से 37)
तारीख़ से दलाइल				

तफ़्सीर सूरह ज़ारियात

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرۡوًا ① فَالۡحٰمِلٰتِ وِقۡرًا ② فَالۡجٰرِيٰتِ يُسۡرًا ③ فَالۡمُقَسِّمٰتِ اَمۡرًا ④
اِنَّمَا تُوۡعَدُوۡنَ لَصَادِقٌ ⑤ وَّاِنَّ الدِّيۡنَ لَوَاقِعٌ ⑥ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الۡحُبُكِ ⑦ اِنَّكُمۡ
لَفِىۡ قَوۡلٍ مُّخۡتَلِفٍ ⑧ يُّؤۡفَكُ عَنۡهُ مَنۡ اُفِكَ ⑨ قُتِلَ الۡخَرّٰصُوۡنَ ⑩ الَّذِيۡنَ هُمۡ فِىۡ
غَمۡرَةٍ سَاهُوۡنَ ⑪ يَسۡـَٔلُوۡنَ اَيَّانَ يَوۡمُ الدِّيۡنِ ⑫ يَوۡمَ هُمۡ عَلَى النَّارِ يُفۡتَنُوۡنَ ⑬
ذُوۡقُوۡا فِتۡنَتَكُمۡ ؕ هٰذَا الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ⑭

तर्जुमा : ''क़सम है बिखेरने वालियों की उड़ाकर (1) फिर उठाने वालियाँ बोझ को (2) फिर चलने वालियाँ नर्मी से (3) फिर काम को तक़्सीम करने वालियाँ (4) यक़ीन मानो कि तुमसे जो वादे किये जाते हैं सब सच्चे हैं। (5) और बेशक इंसाफ़ होने वाला ही है (6) क़सम है राहों वाले आसमान की। (7) यक़ीनन तुम मुख़्तलिफ़ बात में पड़े हुए हो। (8) इससे वही बाज़ रखा जाता है जो फेर दिया गया हो। (9) बेसनद बातें बनाने वाले ग़ारत कर दिये गए। (10) जो ग़फ़्लत में हैं और भूले हुए हैं। (11) पूछते हैं कि यौमे जज़ा कब होगा? (12) हाँ! यह वह दिन है कि यह आग पर उल्टे सीधे पड़े होंगे। (13) अपनी सज़ा का मज़ा चखो यही है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे।'' (14)

सूरह ज़ारियात की शुरु की आयात की ख़ूबसूरत तशरीह (आ. 1 से 14) : ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हज़रत अली (रज़ि.) कूफ़ा के मिम्बर पर चढ़कर एक बार फ़र्माने लगे कि कुरआने करीम की जिस आयत की

बाबत और जिस सुन्नते रसूल (ﷺ) की बाबत तुम सवाल करना चाहते हो, कर लो। इस पर इब्नुल कवाअ ने खड़े होकर पूछा कि ज़ारियात से क्या मुराद है? फ़र्माया हवा। पूछा हामिलात से? फ़र्माया, बादल। कहा जारियात से? फ़र्माया कश्तियाँ। कहा मुक़स्सिमात से? फ़र्माया फ़रिश्ते। (तब्री : 22/389) इस बारे में एक मरफ़ूअ हदीस भी आई है। बज़्ज़ार में है सुबैग़ तमीमी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ि.) के पास आया और कहा बतलाओ ज़ारियात से क्या मुराद है? फ़र्माया, हवा। और इसे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना हुआ न होता तो मैं कभी न कहता। पूछा मुक़स्सिमात? फ़र्माया फ़रिश्ते और इसे भी मैंने हुज़ूर (ﷺ) से सुन रखा है। पूछा जारियात से क्या मतलब है? फ़र्माया, कश्तियाँ। यह भी अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से न सुना होता तो तुझसे न कहता। फिर हुक्म दिया कि इसे सौ कोड़े लगाए जाएँ। चुनाँचे उसे कोड़े मारे गए और एक मकान में रखा गया जब ज़ख़्म अच्छे हो गए तो बुलवाकर फिर सौ कोड़े लगवाए, और सवार कराकर हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) को लिख भेजा कि यह किसी मज्लिस में न बैठने पाए। कुछ दिनों बाद यह हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) के पास आये और बड़ी सख़्त ताकीदी क़समें खाकर उन्हें यक़ीन दिलाया कि अब मेरे ख़यालात की पूरी इस्लाह हो चुकी है अब मेरे दिल में वह बुरा अक़ीदा नहीं रहा जो पहले था। चुनाँचे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने जनाब अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में उसकी ख़बर दी और साथ ही यह भी लिखा कि मेरा ख़्याल है कि अब वह वाक़ेई ठीक हो गया है। उसके जवाब में दरबारे ख़िलाफ़त से फ़र्मान पहुँचा कि फिर उन्हें मज्लिस में बैठने की इजाज़त दे दी जाए। इमाम अबूबक्र बज़्ज़ार (रह.) फ़र्माते हैं उसके दो रावियों में कलाम है पस यह हदीस ज़ईफ़ है। ठीक बात यह मालूम होती है कि यह हदीस भी मौक़ूफ़ है यानी हज़रत उमर (रज़ि.) का अपना फ़र्मान है मरफ़ूअ हदीस नहीं। अमीरुल मोमिनीन (रज़ि.) ने जो उसे पिटवाया था उसकी वजह यह थी कि उसकी बद अक़ीदगी आप पर ज़ाहिर हो चुकी थी और उसके यह सवालात अज़्रूए इंकार और मुख़ालिफ़त के थे, वल्लाहु आलम! सुबैग़ के बाप का नाम असल था और इसका यह क़िस्सा मशहूर है जिसे पूरा पूरा हाफ़िज़ इब्ने असाकिर (रह.) लाये हैं। यही तफ़्सीर हज़रत इब्ने अब्बास, इब्ने उमर (रज़ि.), हज़रत मुजाहिद, सईद बिन जुबैर, क़तादा, सुद्दी (रहि.) वग़ैरह से मरवी है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) और इमाम इब्ने हातिम ने तो इन आयतों की तफ़्सीर में कोई क़ौल वारिद नहीं किया। हामिलात से मुराद अब्र होने का मुहावरा इस शेअर से भी पाया जाता है (व अस्लम्तु नफ़्सी लिमन अस्लम्तु लहुल मुज़्नु तहमिलु अज़्बन ज़ुलालन) यानी मैं अपने आपको उस रब्बे तआला का ताबेअ फ़र्मान करता हूँ जिसके ताबेअ फ़र्मान वह बादल हैं जो साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मीठे और हल्के पानी को उठाकर ले जाते हैं (जारियात) से मुराद कुछ ने सितारे फिर फ़रिश्ते, जो कभी अल्लाह का हुक्म लेकर उतरते हैं, कभी कोई सुपुर्दकर्दा काम बजा लाने के लिए तशरीफ़ लाते हैं चूँकि यह सब क़समें इस बात पर हैं कि क़ियामत ज़रूर आनी है और लोग दोबारा ज़िन्दा किये जाएँगे इसलिए उनके बाद ही फ़र्माया कि तुम्हें जो वादा दिया जाता है वह सच्चा है और हिसाबो किताब जज़ा सज़ा ज़रूर वाक़ेअ होने वाली है। फिर आसमान की क़सम खाई जो ख़ूबसूरती रौनक़, हुस्न और बराबरी वाला है। बहुत से सलफ़ ने यही मअनी (हुबुक) के बयान किये हैं। (तब्री : 22/395)

हज़रत ज़ह्हाक (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं कि पानी की लहरें और रेत के ज़र्रे और खेतों के पत्ते हवा के ज़ोर से जब लहराते हैं और पुरशिकन लहरियेदार हो जाते हैं और गोया उनमें रास्ते पड़ जाते हैं उसी को हुबुक कहते हैं। इब्ने जरीर (रह.) की एक हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "तुम्हारे पीछे कज़्ज़ाब बहकाने वाला है उसके सिर के बाल पीछे की तरफ़ से हुबुक हुबुक हैं यानी घुँघराले वाले हैं।" अबू सालेह (रह.) फ़र्माते हैं हुबुक से मुराद शिद्दत वाला। ख़ुसैफ़ कहते हैं मुराद ख़ुशमंज़र है। हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं उसकी ख़ूबसूरती उसके सितारे हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं "इससे मुराद सातवाँ आसमान है।" मुम्किन है कि आपका मतलब यह हो कि क़ायम रहने वाले सितारे उस आसमान में हैं। अक्सर उलमा-ए-हैयत का बयान है कि यह आठवें आसमान में हैं जो सातवें के ऊपर है, वल्लाहु आलम! इन तमाम क़ौल का माहसल एक ही है यानी हुस्न व रौनक़ वाला आसमान उसकी बुलंदी, उसकी सफ़ाई, उसकी पाकीज़गी उसकी बनावट की उम्दगी, उसकी मज़बूती, उसकी चौड़ाई और कुशादगी उसका सितारों से जगमगाना जिनमें से कुछ चलते फिरते रहते हैं और कुछ ठहरे रहते हैं उनका सूरज और चाँद जैसे सितारों से मुज़य्यन होना यह सब उसकी ख़ूबसूरती और उम्दगी की चीज़ें हैं। फिर फ़र्माता है ऐ मुश्रिकों! तुम अपने क़ौल में मुख़्तलिफ़ और मुज़्तरिब हो तुम किसी सही नतीजे पर अब तक ख़ुद अपने तौर पर कभी नहीं पहुँचे, किसी राय पर तुम्हारा इज्तिमाअ नहीं। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं कि इनमें से कुछ तो क़ुरआन को सच्चा जानते थे कुछ इसकी तक्ज़ीब करते थे। फिर फ़र्माता है यह हालत उसी की होती है जो ख़ुद गुमराह हो, वह अपने ऐसे बातिल क़ौल की वजह से बहक और भटक जाता है। सही समझ और सच्चा इल्म उससे फ़ौत हो जाता है। जैसे और आयत में है

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۝١٦١ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝١٦٢ اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝١٦٣ (37/साफ़्फ़ात : 161 से 163)

यानी तुम लोग अपने झूठे मअबूदों के साथ सिवा जहन्नमी लोगों के और को बहका नहीं सकते। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं इससे गुमराह वही होता है जो ख़ुद बहका हुआ हो।

हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं इससे दूर वही होता है जो भलाइयों से दूर डाल दिया गया है। हज़रत इमाम हसन बसरी (रह.) फ़र्माते हैं क़ुरआन से वही हटता है जो उसे पहले ही झुठलाने पर कमर कस ले। फिर फ़र्माता है कि बेसनद बातें कहने वाले हलाक हों यानी झूठी बातें बनाने वाले जिन्हें यक़ीन न था जो कहते थे कि हम उठाये नहीं जाएँगे। (तबरी : 22/399) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं यानी शक करने वाले मल्ऊन हैं। हज़रत मआज़ (रज़ि.) भी अपने ख़ुत्बे में यही फ़र्माते थे, यह धोखे वाले और बदगुमान लोग हैं। फिर फ़र्माया कि लोग अपने कुफ़्रो शिर्क में ग़ाफ़िल और बेपरवाह हैं। यह लोग अज़रूए इंकार पूछते हैं कि जज़ा का दिन कब आएगा? अल्लाह फ़र्माता है उस दिन तो यह आग मे तपाये जाएँगे जिस तरह सोना तपाया जाता है। यह उसमें जलेंगे और उनसे कहा जाएगा कि जलने का मज़ा चखो अपने करतूत के बदले बर्दाश्त करो। फिर उनकी और ज़्यादा हक़ारत के लिए उनसे बतौरे डाँट डपट के कहा जाएगा यही है वो दिन जिसकी जल्दी तुम मचा रहे थे कि कब आएगा, वल्लाहु आलम!

***

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَعُيُونٍ ﴿١٥﴾ ءَاخِذِينَ مَآ ءَاتَىٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَبْلَ
ذَٰلِكَ مُحْسِنِينَ ﴿١٦﴾ كَانُوا۟ قَلِيلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿١٧﴾ وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ
يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾ وَفِىٓ أَمْوَٰلِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿١٩﴾ وَفِى الْأَرْضِ ءَايَٰتٌ
لِّلْمُوقِنِينَ ﴿٢٠﴾ وَفِىٓ أَنفُسِكُمْ ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٢١﴾ وَفِى السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا
تُوعَدُونَ ﴿٢٢﴾ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُۥ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ ﴿٢٣﴾

तर्जुमा : "बेशक तक़्वा वाले लोग बहिश्तों में और चश्मों में होंगे। (15) उनके रब ने जो कुछ उन्हें अता किया है उसे ले रहे होंगे वह तो उससे पहले ही नेकोकार थे (16) वह रात को बहुत कम सोया करते थे। (17) और आख़िरी रात में इस्तिग़फ़ार किया करते थे। (18) और उनके माल में माँगने वालों का और सवाल से बचने वालों का हक़ था (19) यक़ीन वालों के लिए तो ज़मीन में बहुत सी निशानियाँ हैं। (20) और ख़ुद तुम्हारी ज़ात में भी तो क्या तुम देखते नहीं हो (21) और तुम्हारी रोज़ी और जो तुमसे वादा किया जाता है (22) सब आसमान में है आसमान व ज़मीन के परवरदिगार की क़सम! कि यह बिलकुल बरहक़ है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।" (23)

क़यामुल्लैल और सेहरी की फ़ज़ीलत (आ. 15 से 23) : परहेज़गार अल्लाह वाले लोगों का अंजाम बयान हो रहा है कि यह क़ियामत के दिन जन्नतों में और नहरों में होंगे बख़िलाफ़ उन बदकिरदारों के जो अज़ाब व सज़ा में तौक़ व ज़ंजीर में सख़्ती और मारपीट में होंगे जो फ़राइज़ अल्लाह तआला के उनके (मोमिन के) पास आये थे यह उनके आमिल थे और उनसे पहले भी वह इख़्लास के काम करने वाले थे लेकिन इस तफ़्सीर में ज़रा ताम्मुल है, दो वजह से पहले तो यह कि यह तफ़्सीर हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) की कही जाती है लेकिन सनदे सहीह से उन तक नहीं पहुँचती बल्कि उसकी यह सनद बिलकुल ज़ईफ़ है, दूसरे यह कि (आख़िज़ीना) का लफ़्ज़ हाल है अगले जुम्ले से, तो यह मतलब हुआ कि मुत्तक़ी लोग जन्नत में अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतें हासिल कर रहे होंगे। इससे पहले वह भलाई के काम करने वाले थे यानी दुनिया में जैसे अल्लाह तआला जल्ल जलालुहू ने इन आयतों में फ़र्माया (كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيٓـًٔا بِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِى الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ) (69/हाक़्क़ा : 24) यानी दारे दुनिया में तुमने जो नेकियाँ की थीं उनके बदले अब तुम यहाँ शौक़ से सहता पचता खाते पीते रहो। फिर अल्लह तआला उनके अमल के इख़्लास यानी उनके एहसान की तफ़्सील बयान कर रहा है कि यह रात को बहुत कम सोया करते थे। कुछ मुफ़स्सिरीन कहते हैं यहाँ मा नाफ़िया है तो बक़ौले हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) वग़ैरह यह मतलब होगा कि "उन पर कोई ऐसी रात न गुज़रती थी

जिसका कुछ हिस्सा यादे इलाही में न गुज़ारते हों। (तब्री : 22/407) ख़्वाह पहले में कुछ नवाफ़िल पढ़ लें ख़्वाह बीच हिस्से में यानी कुछ न कुछ किसी न किसी वक़्त नमाज़ उमूमन हर रात पढ़ ही लिया करते थे, सारी रात सोते सोते नहीं गुज़ारते थे।'' हज़रत अबुल आलिया (रह.) वग़ैरह फ़र्माते हैं ''यह लोग मग़रिब इशा के बीच कुछ नवाफ़िल पढ़ लिया करते थे।'' (तब्री : 22/408) इमाम अबू जअफ़र बाक़िर (रह.) फ़र्माते हैं मुराद यह है कि इशा की नमाज़ पढने से पहले नहीं सोते थे।'' कुछ मुफ़स्सिरीन का क़ौल है कि (मा) यहाँ पर मौसूला है। यानी इनकी नींद रात की कम थी कुछ सोते थे कुछ जागते थे और अगर दिल लग गया तो सुबह हो जाती थी और फिर पिछली रात को जनाब बारी में गिड़गिड़ाकर तौबा इस्तिग़फ़ार करते थे। (तब्री : 22/309) हज़रत अहनफ़ बिन क़ैस (रह.) इस आयत का यह मतलब बयान करके फिर फ़र्माते हैं ''अफ़सोस! मुझमें यह बात नहीं। आपके शागिर्द ख़्वाजा हसन बसरी (रह.) का क़ौल है कि आप अक्सर फ़र्माया करते थे जन्नतियों के जो आमाल और जो सिफ़ात बयान हुए हैं, जब कभी अपने आमाल व सिफ़ात को उनके मुक़ाबले में रखता हूँ तो बहुत कुछ फ़ासला पाता हूँ लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! दोज़ख़ियों के अमल के बिल्मुक़ाबिल जब मैं अपने अमल को लाता हूँ तो मैं देखता हूँ कि वह लोग तो बिलकुल ही ख़ैर से ख़ाली थे, वह किताबुल्लाह के मुंकिर, वह रसूलुल्लाह के मुंकिर, वह मौत के बाद ज़िन्दगी के मुंकिर, पस हमारी हालत वही है जो रब्बे तआला ने इस क़िस्म के लोगों की जतलाई है (خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا) (9/तौबा : 102) यानी नेकियाँ बुराइयाँ मिली जुली।'' हज़रत ज़ेद बिन असलम (रह.) से क़बीला बनू तमीम के एक शख़्स ने कहा ऐ अबू सलमा! यह सिफ़त तो हममें नहीं पाई जाती कि हम रात को बहुत कम सोते हों हम तो बहुत कम वक़्त इबादते इलाही में गुज़ारते हैं तो आपने फ़र्माया वह शख़्स भी बहुत ख़ुश नसीब है जो नींद आए तो सो जाये और जागे तो अल्लाह तआला से डरता रहे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) फ़र्माते हैं ''जब शुरू शुरू रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो लोग आपकी ज़ियारत के लिए टूट पड़े मैं उस मज्मए में था अल्लाह की क़सम! आपके मुबारक चेहरे पर निगाह पड़ते ही इतना तो मैंने यक़ीन कर लिया कि यह नूरानी चेहरा किसी झूठे इंसान का नहीं हो सकता। सबसे पहली बात जो रसूले करीम (ﷺ) की मेरे कान में पड़ी यह थी कि आपने फ़र्माया ऐ लोगों! खाना खिलाते रहो और सिलारहमी करते रहो और सलाम किया करो और रातों को जब लोग सो जाएँ तो तुम नमाज़ अदा करो, तो तुम सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।'' (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब हदीस.... अफ़्शुस्सलाम : 2485; वसनदुहू सहीहुन; इब्ने माजा : 3251; हाकिम : 3/13) मुस्नद अहमद में रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं कि ''जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिनके अंदर का हिस्सा बाहर से और बाहर का हिस्सा अंदर से नज़र आता है। यह सुनकर हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) ने फ़र्माया, या रसूलल्लाह (ﷺ)! यह किनके लिए हैं? फ़र्माया उनके लिए जो नर्म कलाम करें और दूसरों को खिलाते पिलाते रहें और जब लोग सो जाएँ तो यह नमाज़ें पढ़ते रहें।'' (अहमद : 2/173; वहुव हदीसुन हसन; हाकिम : 1/321; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 2/254) हज़रत ज़ोहरी (रह.) और हज़रत हसन (रह.) फ़र्माते हैं इस आयत का मतलब यह है कि ''वह रात का अक्सर हिस्सा तहज्जुद गुज़ारी में निकालते हैं।'' हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) और हज़रत इब्राहीम नख़ई (रह.) फ़र्माते हैं मतलब यह

है कि रात का बहुत कम हिस्सा वह सोते हैं। हज़रत ज़ह्हाक (कानू क़लीलन) को इससे पहले के जुम्ले के साथ मिलाते हैं और (मिनल्लैलि) से इब्तिदा बतलाते हैं लेकिन इस क़ौल में बहुत दूरी और तकल्लुफ़ है।

फ़िर अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल इर्शाद फ़र्माता है सेह्र के वक़्त वह इस्तिग़्फ़ार करते हैं। मुजाहिद वग़ैरह फ़र्माते हैं यानी नमाज़ पढ़ते हैं और मुफ़स्सिरीन फ़र्माते हैं रातों को क़याम करते हैं और सुबह होने के वक़्त अपने गुनाहों की माफ़ी तलब करते हैं जैसे और जगह फ़र्माने बारी है (وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ) (3/आले इमरानः 17) यानी सेह्र के वक़्त यह लोग इस्तिग़्फ़ार करने लग जाते हैं। अगर यह इस्तिग़्फ़ार नमाज़ ही में हो तो भी बहुत अच्छा है। सिहाह सित्ता वग़ैरह में सहाबा (रज़ि.) की एक जमाअत की कई रिवायतों से साबित है कि रसूले मक़्बूल (ﷺ) ने फ़र्माया "जब आख़िरी तिहाई रात बाक़ी रह जाती है उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआला हर रात को आसमाने दुनिया की तरफ़ उतरता है और फ़र्माता है कोई गुनहगार है जो तौबा करे और मैं उसकी तौबा क़बूल करूँ कोई इस्तिग़्फ़ार करने वाला है? जो इस्तिग़्फ़ार करे और मैं उसे बख़्श दूँ, कोई माँगने वाला है? जो माँगे और मैं उसे दूँ। फ़ज्र के तुलूअ होने तक यही फ़र्माता है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब अद्दुआउ वस्सलातु मिन आख़िरिल्लैल : 1145; सहीह मुस्लिम : 758; अबूदाऊद : 1315; इब्ने माजा : 1366; अहमद : 2/267; इब्ने हिब्बान : 920) अक्सर मुफ़स्सिरीन ने फ़र्माया है कि अल्लाह के नबी हज़रत याक़ूब (عليه السلام) ने अपने लड़कों से जो फ़र्माया था (سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ) (12/यूसुफ़ : 98) मैं अब अन्क़रीब तुम्हारे लिए इस्तिग़्फ़ार करूँगा तो उन्होंने इस्तिग़्फ़ार को वक़्ते सेह्र तक के लिए मुल्तवी किया था।

फिर उनका यह वस्फ़ बयान किया जाता है कि जहाँ यह नमाज़ी हैं और अल्लाह का हक़ अदा करते हैं वहाँ लोगों के हक़ भी नहीं भूलते ज़कातें देते हैं, सुलूक, एहसान और सिलारहमी करते हैं। इनके माल में एक मुक़र्ररा हिस्सा माँगने वालों और उन हक़दारों का है जो सवाल से बचते हैं। अबूदाऊद वग़ैरह में है रसूले करीम (ﷺ) फ़र्माते हैं "साइल का हक़ है गो वह घुड़सवार हो।" (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब हक़्क़ुस्साइल : 1665; वसनदुहू हसन; अहमद : 1/201; इब्ने अबी शैबा : 2/186; मुस्नदे अबी यअला : 2/317; तब्रानी : 2893) महरूम वह है जिसका कोई हिस्सा बैतुल माल में न हो ख़ुद उसके पास कोई काम काज न हो सन्अत व हिरफ़त याद न हो। जिसे रोज़ी कमा सके। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) फ़र्माती हैं "इससे मुराद वह लोग हैं कि कुछ सिलसिला कमाने का कर रखा है लेकिन इतना नहीं पाते कि उन्हें काफ़ी हो जाए।" हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं वह शख़्स जो मालदार था लेकिन माल उसका तबाह हो गया। चुनाँचे यमामा में जब पानी की तुग़ियानी आई और एक शख़्स का तमाम माल अस्बाब बहा ले गई तो एक सहाबी ने फ़र्माया, यह महरूम है। और बुज़ुर्ग मुफ़स्सिरीन फ़र्माते हैं महरूम से मुराद वह शख़्स है जो बावजूद हाजत के किसी से सवाल नहीं करता। (तब्री : 22/416) एक हदीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं "मिस्कीन वह नहीं जो चक्कर लगाते रहते हैं और जिन्हें एक दो लुक़्मे या एक दो खजूरें तुम दे दिया करते हो बल्कि हक़ीक़तन वह लोग मिस्कीन हैं जो इतना नहीं पाते कि उन्हें हाजत न रहे न अपना हाल व क़ाल ऐसा रखते हैं कि किसी पर उनकी हाजत व इफ़्लास ज़ाहिर हो और कोई उन्हें सदक़ा दे।" (सहीह बुख़ारी, किताबुज़्ज़कात, बाब क़ौलुल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल (ला यस्अलूनन्नासा इल्हाफ़ा) :

1479; सहीह मुस्लिम : 1039) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) मक्का मुकर्रमा जा रहे थे कि रास्ते में एक कुत्ता पास आकर खड़ा हो गया आपने ज़िब्ह की हुई बकरी का शाना काटकर उसकी तरफ़ डाल दिया और फ़र्माया, लोग कहते हैं यह भी महरूम में से है। हज़रत शअबी (रह.) फ़र्माते हैं "मैं तो आजिज़ आ गया लेकिन महरूम के मअनी मालूम न कर सका।" इमाम इब्ने जरीर (रह.) फ़र्माते हैं "महरूम वह है जिसके पास माल न रहा हो ख़्वाह वजह कुछ भी हो।" यानी हासिल ही न कर सका हो, कमाने कजाने का सलीक़ा ही न हो या काम ही न चलता हो या किसी आफ़त के बाइस जमाशुदा माल ज़ाया हो गया हो।" एक बार रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक छोटा सा लश्कर काफ़िरों की सरकूबी के लिए रवाना किया अल्लाह तआला ने उन्हें ग़ल्बा दिया और माले ग़नीमत भी मिला फिर कुछ लोग आपके पास वह भी आ गए जो माले ग़नीमत हासिल होने के वक़्त मौजूद न थे।" पस यह आयत उतरी। इसका इक़्तिज़ा तो यह है कि आयत मदनी हो लेकिन दरअसल ऐसा नहीं बल्कि यह आयत मक्की है। फिर फ़र्माते हैं यक़ीन रखने वालों के लिए ज़मीन में भी बहुत से निशानाते क़ुदरत मौजूद हैं जो ख़ालिक़ की अज़्मत व इज़्ज़त, हैबत व जलालत पर दलालत करते हैं, देखो कि किस तरह इसमें हैवानात और नबातात को फैला दिया है और किस तरह पहाड़ों और मैदानों समुन्द्रों और दरियाओं को रवाँ किया है। फिर इंसान पर नज़र डालो उनकी ज़ुबानों के इख़्तिलाफ़ को, उनके रंग रूप के इख़्तिलाफ़ को, उनके इरादों और कुव्वतों के इख़्तिलाफ़ को उनकी अक़्लो फ़हम के इख़्तिलाफ़ को, उनकी हरकात व सक्नात को, उनकी नेकी बदी को देखो, उनकी बनावट पर ग़ौर करो कि हर हिस्से कैसी मुनासिब जगह है, इसीलिए उसके बाद ही फ़र्माया ख़ुद तुम्हारे वजूद में ही उसकी बहुत सी निशानियाँ हैं क्या तुम देखते नहीं हो? हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं "जो शख़्स अपनी पैदाइश में ग़ौर कर लेगा अपने जोड़ों की तर्कीब पर नज़र डालेगा यक़ीन करेगा कि बेशक उसे अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है और अपनी इबादत के लिए ही बनाया है।" (क़ुर्तुबी : 17/40) फिर फ़र्माता है आसमान में तुम्हारी रोज़ी है यानी बारिश और वह भी जिसका तुमसे वादा किया जाता है यानी जन्नत। (तब्री : 22/420)

हज़रत वासिल अहदब (रह.) ने इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया, "मेरा रिज़्क़ तो आसमानों में है और मैं उसे ज़मीन में तलाश कर रहा हूँ? यह कहकर बस्ती छोड़ उजाड़ जंगल में चले गए। तीन दिन तक तो उन्हें कुछ भी न मिला लेकिन तीसरे दिन देखते हैं कि तर खजूरों का एक ख़ोशा उनके पास रखा हुआ है। उनके भाई जो उनसे भी ज़्यादा मुख़्लिस और नेक निय्यत थे यह भी उनके साथ ही थे दोनों भाई आख़िरी दम तक इसी तरह जंगलों में ही रहे।" फिर अल्लाह करीम ख़ुद अपनी क़सम खाकर फ़र्माता है कि मेरे जो वादे हैं मस्लन क़ियामत का, दोबारा ज़िन्दा करने का, जज़ा सज़ा का, यह यक़ीनन सरासर सच्चे और क़तअन बेशुब्हा होकर रहने वाले हैं जैसे तुम्हें तुम्हारी ज़ुबान से निकले हुए अल्फ़ाज़ में शक नहीं होता इसी तरह तुम्हें उनमें भी कोई शक हर्गिज़ हर्गिज़ न होना चाहिए। हज़रत मुआज़ (रज़ि.) जब कोई बात कहते तो फ़र्माते, अल्लाह तआला उन्हें बर्बाद करे जो अल्लाह तआला की क़सम को भी न मानें। यह हदीस मुर्सल है यानी ताबेई हुज़ूर (ﷺ) से रिवायत करते हैं सहाबी का नाम नहीं लेते।

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿۲۴﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ
قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۲۵﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ﴿۲۶﴾ فَقَرَّبَهٗٓ
اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿۲۷﴾ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ
بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿۲۸﴾ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ﴿۲۹﴾
قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۳۰﴾

तर्जुमा : ''क्या तुझे इब्राहीम (अ.) के मुअ़ज़्ज़ मेहमानों की ख़बर भी पहुँची है? (24) वह जब उनके यहाँ आए और सलाम किया और इब्राहीम (عليه السلام) ने जवाबे सलाम दिया और कहा यह तो अजनबी लोग हैं। (25) फिर चुपचाप जल्दी जल्दी अपने घर वालों की तरफ़ गए और एक फ़र्बे बछड़े का गोश्त लाए (26) और उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यूँ नहीं ? (27) फिर तो दिल ही दिल में उनसे ख़ौफ़ज़दा हो गए। उन्होंने कहा आप ख़ौफ़ न कीजिए। और उन्होंने (हज़रत) इब्राहीम (عليه السلام) को एक दाना आलिम लड़के के होने की बशारत दी। (28) पस उनकी बीवी ने हैरत में आकर अपने मुँह पर हाथ मारकर कहा कि मैं तो बुढ़िया हूँ और साथ ही बाँझ (29) उन्होंने कहा, हाँ! तेरे परवरदिगार ने इसी तरह फ़र्मा दिया है। कुछ शक नहीं कि वह बहुत बड़ी हिक्मत वाला और कामिल इल्म वाला है।'' (30)

इब्राहीम (عليه السلام) के मुअ़ज़्ज़ मेहमानों का वाक़िया (आ. 24 से 30) : यह वाक़िया सूरह हूद और सूरह हिज्र में भी गुज़र चुका है। यह मेहमान फ़रिश्ते थे जो बशक्ले इंसान आये थे। जिन्हें अल्लाह तआला ने इ़ज़्ज़त व शराफ़त दे रखी है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) और दीगर उलमा-ए-किराम की एक जमाअ़त कहती है कि मेहमान की ज़ियाफ़त करना वाजिब है। हदीस में भी यह आया है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब इकरामुज़्ज़ैफ़ि व ख़िदमतहू इय्याहू बि नफ़्सिही : 6135; सहीह मुस्लिम : 48) और क़ुरआन के ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ भी यही हैं। उन्होंने सलाम किया जिसका जवाब ख़लीलुल्लाह ने बढ़ाकर दिया। उसका सबूत दूसरे सलाम पर दो पेश का होना है और यही फ़र्मान बारी तआला है फ़र्माता है (وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا) (4/निसाअ : 86) यानी जब कोई तुम्हें सलाम करे तो तुम उससे बेहतर जवाब दो या कम अज़्कम उतना ही। पस ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने अफ़ज़ल सूरत को इख़्तियार किया।

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) चूँकि उससे नावाक़िफ़ थे कि दरअसल फ़रिश्ते हैं इसलिए कहा कि यह लोग तो अंजान हैं। यह फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल, हज़रत मीकाईल और हज़रत इस्राफ़ील (عليهم السلام) थे, जो ख़ूबसूरत नौजवान इंसानों की शक्ल में आए थे, उनके चेहरों पर हैबत और जलाल था, हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) अब उनके लिए खाने की तैयारी में मसरूफ़ हो गए और चुपचाप बहुत जल्द अपने घरवालों की तरफ़ गए और ज़रा सी देर में तैयार बछड़े का गोश्त भुना भनाया हुआ ले आए और उनके सामने उनके क़रीब रख दिया और फ़र्माया आप खाते क्यूँ नहीं? इससे ज़ियाफ़त के आदाब मालूम हुए मेहमान से पूछे बग़ैर ही उन पर शुरू से एहसान रखने के, पहले ही आप चुपचाप उन्हें ख़बर किये बग़ैर ही चले गए और बउज्लत बेहतर से बेहतर जो चीज़ पाई उसे तैयार करके ले आए। तैयार फ़रबा कम उम्र बछड़े का भुना हुआ गोश्त ले आए और कहीं और रखकर मेहमानों की खींचतान न की बल्कि उनके सामने उनके पास ला रखा। फिर उन्हें यूँ नहीं कहते कि खाओ क्योंकि उसमें भी एक हुक्म पाया जाता ह बल्कि निहायत तवाज़ोअ और प्यार से फ़र्माते हैं आप तनावुल फ़र्माना क्यूँ शुरू नहीं करते? जैसे कोई शख़्स किसी से कहे कि अगर आप फ़ज़्लो करम एहसान व सुलूक करना चाहें तो कीजिए। फिर इर्शाद होता है कि ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) अपने दिल में उनसे ख़ौफ़ज़दा हो गए जैसे कि और आयत में है (فَلَمَّا رَاٰۤ اَيۡدِيَهُمۡ لَا تَصِلُ اِلَيۡهِ نَكِرَهُمۡ وَاَوۡجَسَ مِنۡهُمۡ خِيۡفَةً) (11/हूद : 70) यानी आपने जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ़ बढ़ते नहीं तो दहशतज़दा हो गए और दिल में ख़ौफ़ खाने लगे उस पर मेहमानों ने कहा डरो मत हम अल्लाह तआला के भेजे हुए फ़रिश्ते हैं जो क़ौमे लूत की हलाकत के लिए आये हैं। आपकी बीवी साहिबा जो खड़ी हुई सुन रही थीं वह यह सुनकर हँस दीं तो फ़रिश्तों ने उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाई कि तुम्हारे यहाँ हज़रत इस्हाक़ (عليه السلام) पैदा हागे और उनके यहाँ हज़रत याक़ूब (عليه السلाम)। उस पर बीवी साहिबा को ताज्जुब हुआ और कहा, हाय अफ़सोस! अब मेरे यहाँ बच्चा कैसे होगा? मैं तो बुढ़िया फूस हो गई हूँ और मेरे यह शोहर भी बिलकुल बूढ़े हो गए हैं, यह सख़्ततर ताज्जुब की चीज़ है। फ़रिश्तों ने कहा क्या तुम अल्लाह के कामों से ताज्जुब करती हो? ख़ुसूसन तुम जैसी ऐसे पाक घराने की औरत! तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें नाज़िल हों, जान रखो कि अल्लाह तआला ता'रीफ़ों के लायक़ और बड़ी बुज़ुर्गी और आला शान वाला है। यहाँ यह फ़र्माया गया है कि बशारत हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को दी और उससे पहले की आयत में है कि बशारत आपकी बीवी साहिबा को दी। तो मतलब यह है कि दोनों को बशारत दी गई क्योंकि बच्चा का होना दोनों की ख़ुशी का मौजिब है। फिर फ़र्माता है यह बशारत सुनकर आपकी बीवी साहिबा के मुँह से ज़ोर की आवाज़ निकल गई और अपने आपको दोहतड़ मारकर ऐसी अजीबो ग़रीब ख़बर को सुनकर हैरत के साथ कहने लगीं कि जवानी में तो मैं बाँझ रही अब मियाँ बीवी दोनों पूरे बूढ़ हो गए तो मुझे हमल ठहरेगा? उसके जवाब में फ़रिश्तों ने कहा कि यह ख़ुशख़बरी कुछ हम अपनी तरफ़ से नहीं दे रहे बल्कि अल्लाह तआला ने हमें फ़र्माया है कि हम तुम्हें यह ख़बर सुना दें, वह हिक्मत वाला और इल्म वाला है। तुम जिस इज़्ज़त व करामत के मुस्तहिक़ हो वह ख़ूब जानता है और उसका कोई काम हिक्मत से ख़ाली नहीं, न उसका कोई फ़र्मान हिक्मत से ख़ाली है।

अल्हम्दु लिल्लाह! 26वें पारे की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾
لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾
فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾ فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ
الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾

तर्जुमा : ''इस हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा ऐ अल्लाह के भेजे हुए फ़रिश्तों ! तुम्हारा क्या मक्सद है? (31) उन्होंने जवाब दिया कि हम गुनहगार लोगों की तरफ़ भेजे गए हैं। (32) ताकि हम उन पर कँकरियाँ बरसाएँ (33) जो तेरे रब की तरफ़ से उन हद से गुज़र जाने वालों के लिए नामज़द हो चुके हैं। (34) पस जितने ईमान वाले वहाँ थे हमने उन्हें निकाल दिया। (35) और हमने वहाँ मुसलमानों का सिर्फ़ एक ही घर पाया। (36) और वहाँ हमने उनके लिए जो दर्दनाक अज़ाब का डर रखते हैं एक कामिल अलामत छोड़ी।'' (37)

हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का फ़रिश्तों से सवाल (आ. 31 से 37) : पहले बयान हो चुका है कि जब उन नो वारिद मेहमानों से हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) का तआरुफ़ हुआ और दहशत जाती रही, बल्कि उनकी ज़ुबानी एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी भी सुन चुके और अपनी बुर्दबारी रब तर्सी और दर्दमंदी की वजह से अल्लाह तआला की जनाब में क़ौमे लूत की सिफ़ारिश भी कर चुके और अल्लाह तआला के यहाँ के हत्मी वादे का ऐलान भी सुन चुके, उनके बाद जो हुआ, उसका बयान यहाँ हो रहा है कि हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने उन फ़रिश्तों से पूछा कि आप लोग किस मक़्सद से आये हैं? उन्होंने जवाब दिया कि क़ौमे लूत के गुनहगारों को ताख़्तो ताराज करने के लिए हमें भेजा गया है हम उन पर संगबारी और पथराव करेंगे। उन पत्थरों को उन पर बरसाएँगे जिन पर अल्लाह तआला के हुक्म से पहले ही उनके नाम लिखे जा चुके हैं, और हर हर गुनहगार के लिए अलग अलग पत्थर मुक़र्रर कर दिये गए हैं। सूरह अन्कबूत में गुज़र चुका है कि यह सुनकर हज़रत ख़लीलुल्लाह (عليه السلام) ने फ़र्माया कि वहाँ तो हज़रत लूत (عليه السلام) है फिर वह बस्ती की बस्ती कैसे ग़ारत कर दी जाएगी? फ़रिश्तों ने कहा इसका इल्म हमें भी है, हमें हुक्म मिल चुका है कि हम उन्हें और उनके साथ के और उनके घराने के तमाम ईमान वालों को बचा लें, हाँ! उनकी बीवी नहीं बच सकती वह भी मुज्रिमों के साथ अपने जुर्म के बदले हलाक कर दी जाएगी।

इसी तरह यहाँ भी इर्शाद है कि उस बस्ती में जितने भी मोमिन थे सबको बचा लिया गया, इससे भी

मुराद हज़रत लूत (अ.) और उनके घराने के लोग हैं सिवा उनकी बीवी के जो ईमान नहीं लाई थी। चुनाँचे फ़र्मा दिया गया कि वहाँ सिवा एक घर के और घर मुसलमान था ही नहीं। यह दोनों आयतें दलील हैं उन लोगों की जो कहते हैं कि ईमान व इस्लाम का मुसम्मा एक ही है। इसलिए कि यहाँ उन ही लोगों को मोमिन कहा गया है और फिर उन ही को मुसलमान भी कहा गया है। मुअ़तज़िला का मज़हब भी यही है कि एक ही चीज़ है जिसे ईमान भी कहा जाता है और इस्लाम भी। लेकिन यह इस्तिदलाल ज़ईफ़ है, इसलिए कि यह लोग मोमिन थे और यह तो हम भी मानते हैं कि हर मोमिन मुसलमान होता है लेकिन हर मुसलमान मोमिन नहीं होता। पस हाल की ख़ुसुसियत की वजह से उन्हें मोमिन मुस्लिम कहा गया है इससे आ़म तौर पर यह साबित नहीं होता कि हर मुस्लिम मोमिन है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) और दीगर मुहद्दिसीन का मज़हब है कि जब इस्लामे हक़ीक़ी और सच्चा इस्लाम हो तो वही इस्लाम ईमान है और उस सूरत में ईमान इस्लाम एक ही चीज़ है हाँ! जब इस्लाम हक़ीक़ी तौर पर न हो तो बेशक इस्लाम ईमान में फ़र्क़ है। सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान मुलाहिज़ा हो। मुतर्जिम फिर फ़र्माता है कि उनकी शादो आबाद बस्तियों को अ़ज़ाब से बर्बाद करके उन्हें सड़े हुए बदबूदार खण्डरात बना देने में मोमिनों के लिए इब्रत के पूरे सामान हैं, जो अ़ज़ाबे इलाही का डर रखते हैं वह इस नमूने को देखकर और इस ज़बरदस्त निशान को मुलाहिज़ा करके पूरी इब्रत हासिल कर सकते हैं।

***

وَفِيْ مُوْسٰى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ
اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾ فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ اِذْ
اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ
كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ
فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا
مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "मूसा (अ.) के क़िस्से में भी हमारी तरफ़ से तंबीह है जबकि हमने उसे फ़िरऔन की तरफ़ खुली सनद देकर भेजा। (38) पस उसने अपने बलबूते पर मुँह मोड़ा और कहने लगा यह

जादूगर है या दीवाना है। (39) बिल आख़िर हमने उसे और उसके लश्करों को अपने अ़ज़ाब में पकड़कर दरिया में डाल दिया वह था ही मलामत के क़ाबिल। (40) इसी त़रह़ आदियों में भी जबकि हमने उन पर ख़ैरो बरकत से ख़ाली आँधी भेजी। (41) वह जिस जिस चीज़ पर गुज़रती थी उसे बोसीदा हड्डी की त़रह़ चूरा चूरा कर देती थी। (42) और समूद के क़िस्से में भी इब्रत है जब उनसे कहा गया कि तुम कुछ दिनों फ़ायदा उठा लो। (43) लेकिन उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरताबी की जिस पर उन्हें उनके देखते तेज़ तुन्द कड़ाके ने हलाक कर दिया। (44) पस न तो वह खड़े हो सके और न बदला ले सके। (45) और नूह़ (ﷺ) की क़ौम का भी इससे पहले यही ह़ाल हो चुका था वह भी बड़े नाफ़र्मान लोग थे।" (46)

क़ौमे फ़िरऔन का अंजाम (आ. 38 से 46) : इर्शाद होता है कि जिस त़रह़ क़ौमे लूत़ के अंजाम को देखकर लोग इब्रत ह़ासिल कर सकते हैं, उसी क़िस्म का फ़िरऔनियों का वाक़िया है। हमने उनकी त़रफ़ अपने कलीम पैग़म्बर ह़ज़रत मूसा (ﷺ) को रोशन दलीलें और वाज़ेह़ बुरहान देकर भेजा, लेकिन उनके सरदार फ़िरऔन ने जो तकब्बुर का मुजस्समा था ह़क़ के मानने से इनाद किया और हमारे फ़र्मान को बेपरवाही से टाल दिया, उस अल्लाह तआ़ला के दुश्मन ने अपनी त़ाक़त व कुव्वत के घमण्ड पर अपने राज लश्करों के बल बूते पर रब के फ़र्मान की इ़ज़्ज़त न की, और अपने वालों को अपने साथ मिलाकर ह़ज़रत मूसा (ﷺ) की ईज़ा रसानी पर उतर आया और कहने लगा कि मूसा (ﷺ) या तो जादूगर है या दीवाना है। पस उस मलामती काफ़िर फ़ाजिर मुआ़निद मुतकब्बिर शख़्स को हमने उसके लाव लश्कर समेत दरिया में डुबो दिया।

क़ौमे आ़द का अंजाम : इसी त़रह़ आ़दियों के सरासर इब्रतनाक वाक़ियात भी तुम्हारे गोशे गुज़ार हो चुके हैं जिनकी सियाकारियों के वबाल में उन पर बेबरकत हवाएँ भेजी गईं जिन हवाओं ने सबके ह़ुलिये बिगाड़ दिये। एक लपट जिस चीज़ को लग गई वह गली सड़ी हड्डी की त़रह़ हो गयी। इब्ने अबी ह़ातिम की ह़दीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं हवा दूसरी ज़मीन में मुसख़्ख़र है जब अल्लाह तआ़ला ने आ़दियों को हलाक करना चाहा तो हवा के दारोग़ा को हुक्म दिया कि इनकी तबाही के लिए हवाएँ चला दो। फ़रिश्ते ने कहा क्या हवाओं के ख़ज़ाने में इतना रोज़न कर दूँ जितना बैल का नथुना होता है? अल्लाह तबारक व तआ़ला ने फ़र्माया, नहीं! अगर इतना रोज़न (सूराख़) कर दिया तो ज़मीन को और उसकी कुल कायनात को उलट देगी, बल्कि इतना रोज़न करो जितना अंगूठी का ह़ल्क़ा होता है। यह थीं वह हवाएँ कि जहाँ जहाँ से गुज़र गईं तमाम चीज़ों को तहो बाला करती गईं। (इब्ने अबी ह़ातिम वसनदुहू ह़सन; देखिए तफ़्सीर सूरह रूम : 48; त़ब्री : 22/433) इस ह़दीस का फ़र्माने रसूल होना तो मुंकर है। समझ से ज़्यादा क़रीब बात यही है कि यह ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) का क़ौल है। यरमूक की लड़ाई में उन्हें दो बोरे अहले किताब की किताबों के मिले थे, मुम्किन है उन ही में से यह बात आपने बयान की हो, वल्लाहु आ़लम! यह हवाएँ जुनूबी थीं। ह़ुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं मेरी मदद पुरवा हवाओं से की गई है और आ़दी पछवा हवाओं से हलाक हुए हैं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल इस्तिस्क़ाअ, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) नुसिरतु बिस्सबा : 1035; सह़ीह़ मुस्लिम : 900)

क़ौमे समूद का अंजाम : ठीक इसी तरह समूदियों के हालात पर और उनके अंजाम पर ग़ौर करो कि उनसे कह दिया गया कि एक वक़्ते मुक़र्ररा तक तो तुम फ़ायदा उठाओ जैसे और जगह फ़र्माया है समूदियों को हमने हिदायत दी लेकिन उन्होंने हिदायत पर अँधापे को पसंद किया, जिसके बाइस ज़िल्लत के अज़ाब की होलनाक चीख़ ने उनके पत्ते पानी कर दिये और कलेजे फाड़ दिये, यह सिर्फ़ उनकी सरकशी सरताबी नाफ़र्मानी और स्याहकारी का बदला था, उन पर उनके देखते हुए अज़ाबे इलाही आ गया। तीन दिन तक तो यह इंतिज़ार में रहे अज़ाबों के आसार देखते रहे आख़िर चौथे दिन सुबह ही सुबह रब का अज़ाब दफ़अतन (अचानक) आ पड़ा हवास बाख़्ता हो गये। कोई तदबीर न बन पड़ी, इतनी भी मोहलत न मिली कि खड़े होकर भागने की कोशिश तो करते या किसी और तरह अपने बचाव की कुछ तो फ़िक्र कर सकते। इसी तरह उनसे पहले क़ौमे नूह भी हमारे अज़ाब का मज़ा चख चुकी है। अपनी बदकारी और खुली नाफ़र्मानी का ख़मियाज़ा वह भी भुगत चुकी है। यह तमाम मुफ़स्सल वाक़ियात फ़िरऔनियों के आदियों के समूदियों के और क़ौमे नूह के इससे पहले कई कई सूरतों की तफ़्सीर में कई बार बयान हो चुके हैं, वल्लाहु आलम!

***

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰـهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥١﴾

तर्जुमा : "आसमान को हमने अपनी क़ुदरत व क़ुव्वत से बनाया है और यक़ीनन हम कुशादगी करने वाले हैं। (47) और ज़मीन को हमने फ़र्श बना दिया है। पस हम बहुत ही अच्छे बिछाने वाले हैं। (48) और हर चीज़ को हमने जोड़ा जोड़ा पैदा किया है ताकि तुम नसीहत हासिल करो। (49) पस तुम अल्लाह की तरफ़ भाग दौड़ (यानी रुजूअ) करो यक़ीनन मैं तुम्हें उसकी तरफ़ से साफ़ साफ़ तंबीह करने वाला हूँ। (50) और अल्लाह के साथ किसी और को माअबूद न ठहराओ बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ़ खुला डराने वाला हूँ।" (51)

अल्लाह की क़ुदरतें (आ. 47 से 51) : ज़मीनो आसमान की पैदाइश का ज़िक्र फ़र्मा रहा है कि हमने आसमान को अपनी क़ुव्वत से पैदा किया है, उसे महफ़ूज़ और बुलंद छत बना दिया है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.), मुजाहिद, क़तादा, सौरी (रहि.) और भी बहुत से मुफ़स्सिरीन ने यही कहा है कि हमने आसमानों को अपनी क़ुव्वत से बनाया है। (तबरी : 22/438) और हम कुशादगी वाले हैं, इसके किनारे हमने कुशादा किये

हैं और बेसतून इसे खड़ा किया है और क़ायम रखा है। ज़मीन को हमने अपनी मख़्लूक़ात के लिए बिछौना बना दिया है और बहुत ही अच्छा बिछौना है, तमाम मख़्लूक़ को हमने जोड़ जोड़ पैदा किया है जैसे आसमान ज़मीन, दिन रात, सूरज चाँद, ख़ुश्की तरी, उजाला अंधेरा, ईमान कुफ़्र, मौत ज़िन्दगी, बदी नेकी, जन्नत दोज़ख़, यहाँ तक कि हैवानात और नबातात के भी जोड़े हैं। यह इसलिए कि तुम्हें नसीहत हासिल हो। तुम जान लो कि इन सबका ख़ालिक़ अल्लाह ही है और वह बेशरीक और यक्ता है। पस तुम उसकी तरफ़ दौड़ो, अपनी तवज्जह का मर्कज़ सिर्फ़ उसी को बनाओ, अपने तमाम कामों में उसी की ज़ात पर ऐतिमाद करो, मैं तो तुम सबको साफ़ साफ़ आगाह कर देने वाला हूँ। ख़बरदार! अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराना, मेरे खुल्लम खुल्ला ख़ौफ़ दिलाने का लिहाज़ रखना।

***

كَذٰلِكَ مَآ اَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿۵۲﴾
اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿۵۳﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ﴿۵۴﴾ وَّذَكِّرْ
فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۵﴾ وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾
مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو
الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿۵۸﴾ فَاِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ اَصْحٰبِهِمْ فَلَا
يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿۵۹﴾ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۶۰﴾

तर्जुमा : ''इसी तरह जो लोग इनसे पहले गुज़रे हैं उनके पास भी जो रसूल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है या दीवाना है। (52) क्या यह इस बात की एक दूसरे को वसिय्यत करते गए हैं। नहीं! बल्कि यह सबके सब सरकश हैं। (53) तू इनसे चेहरा फेर ले तुझ पर कुछ इल्ज़ाम नहीं। (54) हाँ! तू नसीहत करता रह यक़ीनन यह नसीहत ईमान वालों को नफ़ा देगी। (55) मैंने जिन्नात और इंसानों को सिर्फ़ इसीलिए पैदा किया है कि वह मेरी इबादत करते रहें। (56) न मैं उनसे रोज़ी चाहता हूँ न मेरी यह चाहत है कि यह मुझे खिलाएँ। (57) अल्लाह तआला तो ख़ुद ही सबका रोज़ी रसाँ तवानाई वाला और ज़ोरावर है। (58) पस जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें भी

उनके साथियों के हिस्से की मिस्ल हिस्सा मिलेगा लिहाज़ा वह मुझसे जल्दी तलब न करें। (59) पस ख़राबी है मुंकिरों को उनके उस दिन जिसका वादा दिये जाते हैं।" (60)

रसूलों को झुठलाया गया (आ. 52 से 60) : अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) को तसल्ली देते हुए फ़र्माता है कि यह कुफ़्फ़ार जो आपको कहते हैं वह कोई नई बात नहीं, इनसे पहले के काफ़िरों ने भी अपने अपने ज़माने के रसूलों से यही कहा है। काफ़िरों का यह क़ौल सिलसिला ब सिलसिला यूँ ही चला आया है जैसे आपस में एक दूसरे को वसिय्यत करके जाते हों। सच तो यह है कि सरकशी और सरताबी में यह सब एक जैसे हैं इसलिए जो बात पहले वालों के मुँह से निकली वही इनकी ज़ुबान से निकलती है क्योंकि सख़्त दिली में सब एक से हैं। पस आप चश्मपोशी कीजिए यह मज्नून कहें, जादूगर कहें, आप सब्रो सिहार से सुन लें, हाँ! नसीहत की तब्लीग़ न छोड़िए। अल्लाह तआला की बातें पहुँचाते चले जाइए जिन दिलों में ईमान की क़बूलियत का माद्दा है वह एक न एक दिन राह पर लग जाएँगे।

इंसानों और जिन्नों को इबादत के लिए पैदा किया गया : फिर अल्लाह तआला जल्ल जलालुहू का फ़र्मान है कि मैंने इंसानों और जिन्नों को किसी अपनी ज़रूरत के लिए नहीं पैदा किया, बल्कि सिर्फ़ इसलिए कि मैं उन्हें उनके नफ़े के लिए अपनी इबादत का हुक्म दूँ वह ख़ुशी नाख़ुशी मेरे मअबूदे बरहक़ होने का इक़रार करें मुझे पहचानें। हज़रत सुद्दी (रह.) फ़र्माते हैं कुछ इबादतें नफ़ा देती हैं और कुछ इबादतें बिलकुल नफ़ा नहीं देतीं जैसे कुरआन में एक जगह है कि अगर तुम इन काफ़िरों से पूछो कि आसमान व ज़मीन को किसने पैदा किया है? तो यह जवाब देंगे कि अल्लाह तआला ने। गो यह भी इबादत है मगर मुश्रिकों को काम न आएगी। ग़र्ज़ आबिद सब हैं ख़्वाह इबादत उनके लिए नाफ़ेअ हो या न हो। और हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं कि इससे मुराद मुसलमान इंसान और ईमान वाले जिन्नात हैं। मुस्नद अहमद में हदीस है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने यूँ पढ़ाया है (इन्नी अनर्रज़्ज़ाकु ज़ुल्कुव्वतिल मतीन) (अहमद : 1/418; अबूदाऊद, किताबुल हुरूफ़ : 3993; वहुव हदीसुन सहीहुन; तिर्मिज़ी : 2940; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 7707; इब्ने हिब्बान : 6329; मुस्नदे अबी यअला : 5323; हाकिम : 2/234) यह हदीस अबूदाऊद, तिर्मिज़ी और नसाई में भी है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सही बतलाते हैं। ग़र्ज़ अल्लाह तआला ने अपने बन्दों को बंदगी के लिए पैदा किया है। अब उसकी इबादत यक्सूई के साथ जो बजा लाएगा, किसी को उसका शरीक न करेगा उसे पूरी पूरी जज़ा मिलेगी और जो उसकी नाफ़र्मानी करेगा और उसके साथ किसी और को शरीक करेगा वह बदतरीन सजाएँ भुगतेगा। अल्लाह किसी का मोहताज नहीं बल्कि कुल मख़्लूक़ हर हाल और हर वक़्त में उसकी पूरी मोहताज है, बल्कि महज़ बेदस्त व पा और सरासर फ़क़ीर है। ख़ालिक़ राज़िक़ अकेला अल्लाह तआला ही है। मुस्नद अहमद में हदीसे कुदसी है कि ऐ इब्ने आदम! मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरा सीना तवंगरी (मालदारी)और बेनियाज़ी से पुर कर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी रोक दूँगा और अगर तूने ऐसा न किया तो मैं तेरे सीने को अश्ग़ाल से भर दूँगा और तेरी फ़क़ीरी को हर्गिज़ बंद न

करूँगा। (अहमद : 2/358; तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब अहादीसु इब्तलैना बिज़्ज़र्राइ वमन कानतिल आख़िरतु हम्मा, व इब्ने आदम तफ़र्रग़ लि इबादती : 2466; इब्ने माजा : 1407; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; उस्मान बिन अबी सरह लम यसरहू बिस्सिमाअ मिम मैमूना (रज़ि.) वस्सनदु यख़्शा इंक़िताउहू) तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में भी यह हदीस है। इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन ग़रीब कहते हैं।

ख़ालिद के दोनों लड़के हज़रत हुब्बा और हज़रत सुवाअ (रज़ि.) फ़र्माते हैं हम रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उस वक़्त आप (ﷺ) किसी काम में मसरूफ़ थे या कोई दीवार बना रहे थे या किसी चीज़ को दुरुस्त कर रहे थे हम भी उसी काम में लग गए। जब काम ख़त्म हुआ तो आप (ﷺ) ने हमें दुआ दी और फ़र्माया सिर हिल जाने तक रोज़ी से मायूस न होना देखो! इंसान जब पैदा होता है एक लाल बोटी होता है बदन पर एक छिल्का भी नहीं होता फिर अल्लाह तआला उसे सब कुछ देता है। (अहमद : 3/469; इब्ने माजा, किताबुज़्ज़ुहद, बाब तवक्कल वल यक़ीन : 4165; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अअमश अन्अन)

कुछ आसमानी किताबों में है, ऐ इब्ने आदम! मैंने तुझे अपनी इबादत के लिए पैदा किया है पस तू उससे ग़फ़्लत न कर, तेरी रिज़्क़ का मैं ज़ामिन हूँ तू उसमें बेजा तकल्लुफ़ न कर, मुझे ढूँढ ताकि मुझे पा ले। जब तूने मुझे पा लिया तो यक़ीन मान कि तूने सब कुछ पा लिया। और अगर मैं तुझे न मिला तो समझ ले कि तमाम भलाइयाँ तू खो चुका। सुन तमाम चीज़ों से ज़्यादा मुहब्बत तेरे दिल में मेरी होनी चाहिए। फिर फ़र्माता है यह काफ़िर मेरे अज़ाबों को जल्दी क्यूँ माँग रहे हैं? वह अज़ाब तो इन्हें अपने वक़्त पर पहुँचकर ही रहेंगे जैसे इनसे पहले के काफ़िरों को पहुँचे। क़ियामत के दिन जिस दिन का इनसे वादा है इन्हें बड़ी ख़राबी होगी।
अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह ज़ारियात की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़मे जली

सूरह तूर - 52

आयात : 49 मक्की पैराग्राफ : 23

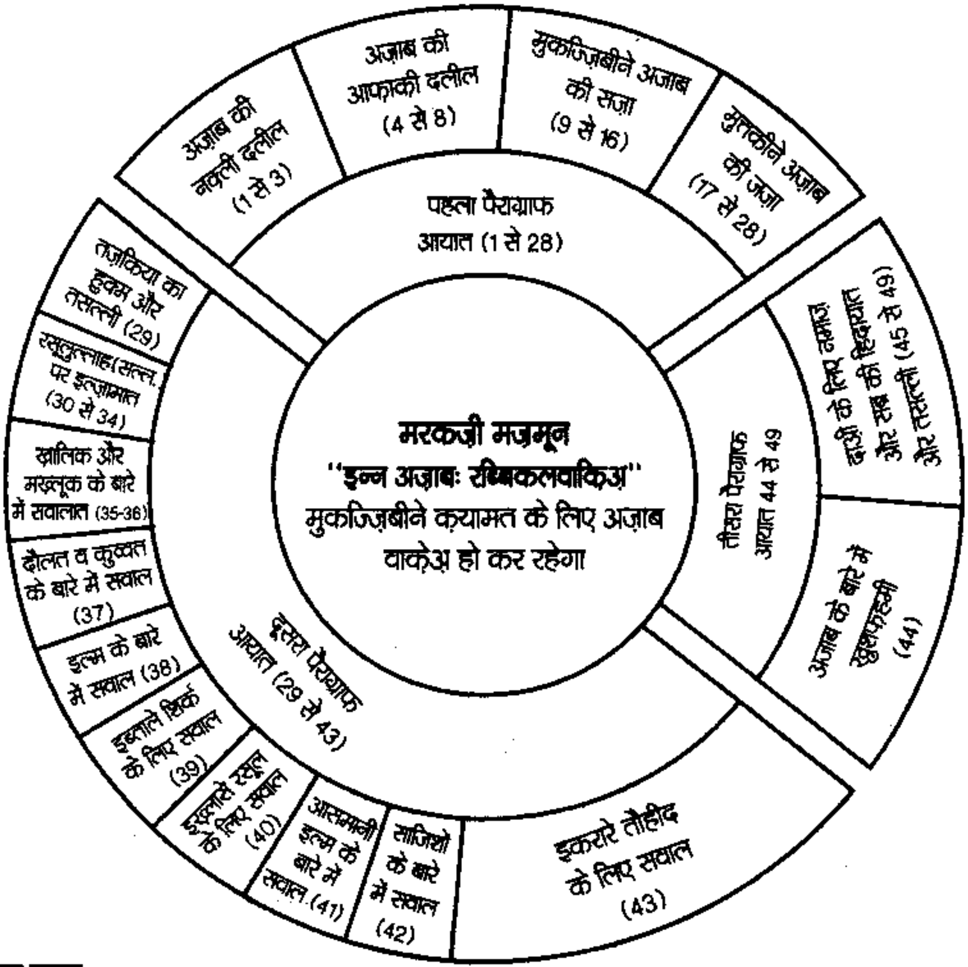

ज़मानए नुज़ूल:

सूरह तूर, सूरह हाक्का की तरह एलाने आम के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल.) के क़यामे मक्का के दूसरे दौर (4 से 5 नबवी), दौरे तज़कीर और दौरे इल्ज़ामात में नाज़िल हुई। जब आप (सल्ल.) पर शको-रेब के साथ इल्ज़ामात की बौछार हुई थी। जैसे (मजनू, शाइर, काहिन, मुतक़व्विल) वग़ैरह

فَذَكِّرْ فَمَا أَنتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا مَجْنُونٍ (29) أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ الْمَنُونِ* (30) أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ (33)

सूरह अल हाक्का में भी रसूलुल्लाह (सल्ल.) पर (तक़व्वुल) के इल्ज़ाम का ज़िक्र आया है।

तफ़्सीर सूरह तूर

सूरह का तआरुफ़ : हज़रत जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैंने नबी (ﷺ)को मग़रिब की नमाज़ में सूरह (वत्तूर) पढ़ते हुए सुना है आप (ﷺ) से ज़्यादा ख़ुश आवाज़ और आप (ﷺ) से ज़्यादा अच्छी क़िरअत वाला मैंने तो किसी को नहीं सुना (मौता इमाम मालिक : 1/78; सहीह बुख़ारी, किताबुल अज़ान, बाब अल्जहरु फ़िल्मग़रिब : 765; सहीह मुस्लिम : 463; अबूदाऊद : 811; इब्ने माजा : 832) हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) फ़र्माती हैं ज़माना हज्ज में मैं बीमार थी हुज़ूर (ﷺ) से मैंने अपना हाल कहा तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम सवारी पर सवार होकर लोगों के पीछे पीछे तवाफ़ कर लो। चुनाँचे मैंने सवारी पर बैठकर तवाफ़ किया उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) बैतुल्लाह के एक कोने में नमाज़ पढ़ रहे थे और (वत्तूर व किताबिम्मस्तूर) की तिलावत कर रहे थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुल हज्ज, बाब तवाफुन्निसाइ मअर्रिजाल : 1619; सहीह मुस्लिम : 1276; अबूदाऊद : 1882)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

وَالطُّوْرِ ① وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ② فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ③ وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ④ وَالسَّقْفِ
الْمَرْفُوْعِ ⑤ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ⑥ اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ⑦ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ⑧
يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ⑨ وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ⑩ فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑪
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ⑫ يَوْمَ يُدَعُّوْنَ اِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ⑬ هٰذِهِ النَّارُ
الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ⑭ اَفَسِحْرٌ هٰذَآ اَمْ اَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ⑮ اِصْلَوْهَا
فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا ۚ سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ⑯

तर्जुमा : ''क़सम है तूर की। (1) और लिखी हुई किताब की। (2) जो खुले हुए वरक़ में है (3) और आबाद घर की। (4) और ऊँची छत की (5) और सुलगते दरिया की (6) कि बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब होकर रहने वाला है। (7) उसे कोई रोक सकने वाला नहीं (8) जिस दिन आसमान थरथराने लगेगा (9) और पहाड़ चलने फिरने लगेंगे (10) आज झुठलाने वालों की पूरी ख़राबी है (11) जो अपनी बेहूदगियों में उछल कूद रहे हैं। (12) जिस दिन वह धक्के दे देकर आतिशे जहन्नम की तरफ़ लाये जाएँगे। (13) यही आतिशे जहन्नम है जिसे तुम झूठ बतलाते थे। (14) अब बताओ क्या यह जादू है? या तुम देखते ही नहीं हो? (15) जाओ दोज़ख़ में अब तुम्हारा स़ब्र करना और न करना तुम्हारे लिए बराबर है तुम्हें फ़क़त तुम्हारे किये आमाल का बदला दिया जाएगा।'' (16)

अल्लाह का अ़ज़ाब बरहक़ है (आ. 1 से 16) : अल्लाह तआ़ला अपनी मख़्लूक़ में से उन चीज़ों की क़सम खाकर जो उसकी अ़ज़ीमुश्शान क़ुदरत की निशानियाँ हैं फ़र्माता है कि उसका अ़ज़ाब होकर रहेगा जब वह आएगा किसी की मजाल न होगी कि उसे हटा सके। तूर उस पहाड़ को कहते हैं जिस पर दरख़्त हों जैसे वह पहाड़ जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत मूसा (عليه السلام) से कलाम किया था। और जहाँ से ह़ज़रत ईसा (عليه السلام) को भेजा था। और जो ख़ुश्क पहाड़ हो उसे जबल कहा जाता है तूर नहीं कहा जाता (किताबिम्मस्तूर) से मुराद या तो लोहे मह़फ़ूज़ है या अल्लाह की उतारी हुई लिखी हुई किताबें हैं जो इंसानों पर पढ़ी जाती हैं, इसलिए साथ ही फ़र्मा दिया कि खुले हुए औराक़ (पन्ने) में (बैतिल मअ़मूर) की बाबत मेअ़राज वाली ह़दीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं सातवें आसमान से आगे बढ़ने के बाद मुझे बैतुल मअ़मूर दिखलाया गया जिसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की इबादत के लिए जाते हैं, दूसरे दिन उतने ही और लेकिन जो आज गए उनकी बारी फिर क़ियामत तक नहीं आती। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब ज़िक्रुल मलाइकति स़लवातुल्लाहि अ़लैहिम : 3207; स़ह़ीह़ मुस्लिम : 164) जिस त़रह़ ज़मीन पर कअ़बतुल्लाह का त़वाफ़ होता है उसी त़रह़ आसमानियों के त़वाफ़ की और इबादत की जगह बैतुल मअ़मूर है इसी ह़दीस में है कि आप (ﷺ) ने उस वक़्त ह़ज़रत इब्राहीम (عليه السلام) को देखा कि बैतुल मअ़मूर से कमर लगाये बैठे हैं। इसमें एक बारीक नुक्ता यह है कि चूँकि ख़लीलुल्लाह बानी बैतुल्लाह थे जिनके हाथों ज़मीन में कअ़बतुल्लाह बना था तो उन्हें वहाँ भी उस कअ़बे से लगे हुए आप (ﷺ) ने देखा, तो गोया उस अ़मल की जज़ा उसी जैसी परवरदिगार ने अपने ख़लील को दी। यह बैतुल मअ़मूर ठीक ख़ाना-ए-कअ़बा के ऊपर है और है सातवें आसमान पर, यूँ तो हर आसमान में एक ऐसा घर है जहाँ उस आसमान के फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला की इबादत करते हैं। पहले आसमान पर जो ऐसी जगह है उसका नाम बैतुल इ़ज़्ज़त है, वल्लाहु आलम!

बैतुल मअ़मूर का ज़िक्र : इब्ने अबी ह़ातिम में एक ह़दीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, आसमान में एक घर है जिसे मअ़मूर कहते हैं जो कअ़बा की सिम्त में है। चौथे आसमान में एक नहर है जिसका नाम नहरे

हैवान है हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) हर रोज़ उसमें ग़ोता लगाते हैं और निकलकर बदन झाड़ते हैं जिससे सत्तर हज़ार क़तरे झड़ते हैं एक एक क़तरे से अल्लाह तआला एक एक फ़रिश्ता पैदा करता है जिन्हें हुक्म होता है कि वह बैतुल मअमूर में नमाज़ अदा करें फिर वह वहाँ से निकल आते हैं। अब उन्हें दोबारा जाने की नौबत ही नहीं आती। एक उनका सरदार होता है जिसे हुक्म दिया जाता है कि उन्हें लेकर किसी जगह खड़ा हो जाए फिर वह अल्लाह की तस्बीह़ के बयान में लग जाते हैं। क़ियामत तक उनका यही काम रहता है। (मौज़ूआत : 1/147; वसनदुहू मौज़ूउन; रौह़ा बिन जिनाह़ मज्रूह़; फ़ैज़ुल क़दीर : 2/596; ज़ुअफ़ाउ लिल अक़ीली : 2/60) यह ह़दीस बहुत ही ग़रीब है। इसके रावी रौह़ बिन जिनाह़ इसमें मुंफ़रिद हैं, ह़ाफ़िज़ों की एक जमाअत ने इन पर इस ह़दीस का इंकार किया है। जैसे जुज़्जानी, अक़ीली, ह़ाकिम वग़ैरह। इमाम ह़ाकिम अबू अ़ब्दुल्लाह नीशापूरी इसे बिलकुल बेअसल बतलाते हैं। हज़रत अ़ली (रज़ि.) से एक शख़्स ने पूछा कि बैतुल मअमूर क्या है? आपने फ़र्माया वह आसमान में है उसे सिराह़ कहा जाता है। कअबा के ठीक ऊपर है। जिस तरह़ ज़मीन का कअबा हुर्मत की जगह है उसी त़रह़ वह आसमानों में हुर्मत की जगह है हर रोज़ उसमें सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ अदा करते हैं लेकिन जो आज गए थे उनकी बारी क़ियामत तक दोबारा नहीं आती क्योंकि फ़रिश्तों की ता'दाद ही इस क़द्र है। एक रिवायत में है कि यह पूछने वाला इब्ने कवाअ था। इब्ने अ़ब्बास(रज़ि.) से मंक़ूल है कि यह अ़र्श के मह़ाज़ में है....। एक मरफ़ूअ रिवायत में है कि सह़ाबा (रज़ि.) को उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल जानते हैं, फ़र्माया वह आसमानी कअबा है और ज़मीनी कअबे के बिलकुल ऊपर है ऐसा कि अगर वह गिरे तो उसी पर गिरे। उसमें हर रोज़ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते नमाज़ अदा करते हैं जिनकी बारी क़ियामत तक फिर नहीं आती। (त़ब्री : 22/456) हज़रत ज़ह़्ह़ाक (रह़.) फ़र्माते हैं यह फ़रिश्ते इब्लीस के क़बीले के जिन्नात में से हैं, वल्लाहु आलम!

ऊँची छत से मुराद आसमान है (ह़ाकिम : 2/468; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी अ़न्अ़न) जैसे और जगह है (जअ़ल्नस्समाअ सक़्फ़म्मह़फ़ूज़न) रबीअ़ बिन अनस (रह़.) फ़र्माते हैं इससे मुराद अ़र्श है इसलिए कि वह तमाम मख़्लूक़ की छत है इस क़ौल की तौजीह इस त़रह़ हो सकती है कि मुराद आ़म हो बह़रिम् मस्जूर से मुराद वह पानी है जो अ़र्श तले है जो बारिश की त़रह़ बरसेगा जिससे क़ियामत के दिन मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों से जी उठेंगे। जुम्हूर कहते हैं कि यही आ़म दरिया मुराद हैं। उन्हें जो मस्जूर कहा गया है यह इसलिए कि क़ियामत के दिन उनमे आग लगा दी जाएगी जैसे और जगह है (वइज़ल बिह़ारु सुज्जिरत) जबकि दरिया भड़का दिये जाएँ और उनमें आग लग जाए जो फैलकर तमाम अहले मह़शर को घेर ले। हज़रत अ़ला बिन बद्र कहते हैं कि भड़कते हुए दरिया इसलिए कहा गया है कि न उसका पानी पीने के काम आए और न खेती को दिया जाए। यही ह़ाल क़ियामत के दिन दरियाओं का होगा। यह मअ़नी भी किये गए हैं कि दरिया बहता हुआ।

और यह भी कहा गया है कि दरिया पुरशुदा, इधर उधर जारी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं मस्जूर से मुराद फ़ारिग़ यानी ख़ाली है। कोई लौण्डी पानी लेने को जाये फिर लौटकर कहे कि ह़ौज़ मस्जूर है इससे मुराद यही

है कि ख़ाली है। यह भी कहा गया है कि मअ़नी यह हैं कि इसे ज़मीन से रोक दिया गया है इसलिए कि डूबो न दे।

मुस्नद अहमद की एक मरफ़ूअ़ हदीस में है कि हर रात तीन बार दरिया अल्लाह तआ़ला से इजाज़त माँगता है कि अगर हुक्म हो तो तमाम लोगों को डुबो दूँ लेकिन अल्लाह तआ़ला इसे रोक देता है। (अह़मद : 1/43; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसमें शैख़ और अबू स़ालेह़ मौला उ़मर दोनों मज्हूल रावी हैं।)

दूसरी रिवायत में है कि एक बुज़ुर्ग मुजाहिद जो समुन्द्र की सरह़द के लश्करों में थे वह जिहाद की तैयारी में वहीं रहते थे फ़र्माते हैं कि एक रात मैं चौकीदारी के लिए निकला, उस रात कोई और पहरे पर न था। मैं गश्त करता हुआ मैदान में पहुँचा और वहाँ से समुन्द्र पर नज़रें डालीं तो ऐसा मालूम हुआ कि गोया समुन्द्र पहाड़ की चोटियों से टकरा रहा है बार बार ही नज़ारा मैंने (अबूबक्र अल्इस्माईली वसनदुहू ज़ईफ़ुन; देखिए ह़ाशिया साबिक़ा : 1) देखा मैं ने हज़रत अबू स़ालेह़ से यह वाक़िया बयान किया उन्होंने बरिवायत हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ऊपर वाली ह़दीस मुझे सुनाई लेकिन इसकी सनद में एक रावी मुब्हम है जिसका नाम नहीं लिया गया। उन क़समों के बाद अब जिस चीज़ पर यह क़समें खाई गई थीं उनका बयान हो रहा है कि काफ़िरों को जो अ़ज़ाबे इलाही होने वाला है वह यक़ीनी तौर पर आने वाला ही है जब वह आएगा किसी के बस में उसका रोकना न होगा।

इब्ने अबिद्दुनिया में है कि एक रात ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) शहर की देखभाल के लिए निकले तो एक मकान से किसी मुसलमान के क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ कान में पड़ी वह सूरह वत्तूर पढ़ रहे थे। आपने सवारी रोक ली और खड़े होकर क़ुरआन सुनने लगे। जब वह इस आयत पर पहुँचे तो ज़ुबान से निकल गया कि रब्बे कअ़बा की क़सम! सच्ची है फिर अपने गधे पर से उतर पड़े, और दीवार से तकिया लगाकर बैठ गए चलने फिरने की त़ाक़त न रही देर तक बैठे रहने के बाद जब होशो ह़वास ठिकाने आए तो अपने घर पहुँचे लेकिन अल्लाह तआ़ला के कलाम की उस डरावनी आयत के असर से दिल की कमज़ोरी की यह ह़ालत थी कि महीने भर तक बीमार पड़े रहे और ऐसे कि लोग बीमारपुर्सी को आते थे अल्बत्ता किसी को मालूम न था कि बीमारी क्या है?

एक रिवायत में है आपकी तिलावत में एक बार यह आयत आई उसी वक़्त हिचकी बँध गई और इस क़द्र क़ल्ब पर असर पड़ा कि बीमार हो गए चुनाँचे बीस दिन तक एयादत की जाती रही। उस दिन आसमान थरथराएगा, फट जाएगा, चक्कर खाने लगेगा, पहाड़ अपनी जगह से हिल जाएँगे हट जाएँगे इधर उधर हो जाएँगे, काँप काँपकर टुकड़े टुकड़े होकर फिर रेज़ा रेज़ा हो जाएँगे आख़िर रूई के गालों की त़रह़ इधर उधर उड़ जाएँगे और बेनामोनिशान हो जाएँगे। उस दिन उन लोगों पर जो उस दिन को न मानते थे, वैल व ह़सरत ख़राबी व हलाकत होगी। अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब फ़रिश्तों की मार, जहन्नम की आग उनके लिए होगी जो दुनिया में मशग़ूल थे, और दीन को एक खेल तमाशा मुक़र्रर कर रखा था, उस दिन उन्हें धक्के मार मारकर जहन्नम की आग में धकेला जाएगा और दारोग़ा जहन्नम उनसे कहेंगे कि यह वह जहन्नम है जिसे तुम नहीं मानते थे। फिर

मज़ीद डाँट डपट के तौर पर कहेंगे अब बोलो क्या यह जादू है या तुम अँधे हो? जाओ इसमें डूब जाओ यह तुम्हें चारों तरफ़ से घेर लेगी अब इसके अ़ज़ाब की तुम्हें सिहार हो या न हो, हाय वाय करो ख़्वाह ख़ामोश रहो इसी में पड़े झुलसते रहोगे कोई तर्कीब फ़ायदा न देगी। किसी तरह छूट न सकोगे। यह अल्लाह तआ़ला का ज़ुल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे बुरे आ़माल का बदला है।

***

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ﴿١٧﴾ فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ
عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿١٨﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ
مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾

तर्जुमा : ''परहेज़गार लोग जन्नतों में और नेअ़मतों में हैं (17) जो उन्हें उनके रब ने दे रखी हैं उस पर ख़ुश ख़ुश हैं और उनके परवरदिगार ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से भी बचा लिया है।(18) तुम सहता पचता खाते पीते रहा करो उन आ़माल के बदले जो तुम करते थे। (19) बराबर बिछे हुए शानदार तख़्त पर तकिये लगाए हुए और हमने उनके निकाह गोरी गोरी बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरों से कर दिये हैं।'' (20)

अहले जन्नत पर इन्आमात (आ. 17 से 20) : अल्लाह तआ़ला नेक बख़्तों का अंजाम बयान कर रहा है कि अ़ज़ाब व सज़ा से जो बदबख़्तों को हो रहा है यह महफ़ूज़ करके जन्नतों में पहुँचा दिये गए जहाँ की बेहतरीन नेअ़मतों से फ़ायदा उठा रहे हैं और हर तरह ख़ुशहाल ख़ुश दिल हैं। क़िस्म क़िस्म के खाने तरह तरह के पीने बेहतरीन लिबास उ़म्दा उ़म्दा सवारियाँ, बुलंद व बाला मकानात और हर तरह की नेअ़मतें उन्हें मुहैया हैं। किसी क़िस्म का डर ख़ौफ़ नहीं। अल्लाह तआ़ला फ़र्मा चुका है कि तुम्हें मेरे अ़ज़ाबों से नजात मिल गई। ग़र्ज़ दुख से दूर सुख से मसरूर, राहत व लज़्ज़त में मख़्मूर हैं। जो चीज़ सामने आती है वह ऐसी है जिसे न किसी आँख ने देखा हो न किसी कान ने सुना हो न किसी दिल पर ख़्याल तक गुज़रा हो फिर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बार बार मेहमान नवाज़ी के तौर पर उनसे कहा जाता है कि खाते पीते रहो ख़ुशगवार ख़ुश ज़ायक़ा बेतकल्लुफ़, मज़ेदार मरग़ूब चीज़ें तुम्हारे लिए मुहैया हैं। फिर उनका दिल ख़ुश करने, हौसला बढ़ाने और तबीयत में उमंग पैदा करने के लिए साथ ही ऐलान होता है। कि यह तो तुम्हारे आ़माल का बदला है जो तुम उस जहान में कर आये हो। मुरस्सअ़ और जड़ाव शाहाना तख़्त पर बड़े बेफ़िक्री और फ़ारिग़ुल्बाली से तकिये लगाये बैठे होंगे। सत्तर सत्तर साल गुज़र जाएँगे उन्हें ज़रूरत न होगी कि उठें या हिलें जुलें। बेशुमार सलीक़ा

शआर अदब दाँ ख़ुद्दाम हर तरह की ख़िदमत के लिए कमर बस्ता जिस चीज़ को जी चाहे आन की आन में मौजूद आँखों का नूर दिल का सुरूर वाफ़िर व मौफ़ूर सामने बेइंतिहा ख़ूबसूरत ख़ूब सीरत गोरे गोरे पिण्डे वाली बड़ी बड़ी रसीली आँखों वाली बहुत सी हूरें पाक दिल इफ़्फ़त मआब अस्मत कोश दिल बहलाने वाली और ख़्वाहिश पूरी करने के लिए सामने खड़ी हर हर नेअमत व रहमत चारों तरफ़ बिखरी हुई फिर भला उन्हें किस चीज़ की कमी? सत्तर साल के बाद जब दूसरी जानिब माइल होते हैं तो देखते हैं कि वहाँ और ही मंज़र है, हर चीज़ नई है हर नेअमत पुरजुबन है। उस तरफ़ की हूरों पर नज़रें डालते हैं तो उनके नूर की चकाचौंध हैरत में डाल देती है। उनकी प्यारी प्यारी भोली भाली शक्लें अछूते पिण्डे और कुँवारेपने की शर्मीली नज़रें और जवानी का बाँगपन दिल पर मुक़नातीसी असर डालता है।

जन्नती कुछ कहे उससे पहले ही वह अपनी शीरीं कलामी से अजीब अंदाज़ से कहती है शुक्र है कि आपका इल्तिफ़ात हमारी तरफ़ भी हुआ। ग़र्ज़ इसी तरह मन माँगी नेअमतों में मस्त हो रहे हैं। फिर उन जन्नतियों के तख़्त बावजूद क़तारवार होने के इस तरह न होंगे कि किसी को किसी की पीठ हो बल्कि आमने सामने होंगे।

जैसे और जगह है (अला सुरुरिम् मुतक़ाबिलीन) तख़्तों पर होंगे और एक दूसरे के आमने सामने होंगे। फिर फ़र्माता है हमने उनके निकाह में हूरें दे रखी हैं जो कभी दिल मेला न करें। जब नज़र पड़े जी ख़ुश हो जाए और ज़ाहिरी ख़ूबसूरती की तो किसी से ता'रीफ़ ही क्या हो सकती है उनके औसाफ़ के बयान की हदीसें वग़ैरह कई मक़ामात पर गुज़र भी चुकी हैं। इसलिए उन्हें यहाँ वारिद करना कुछ भी ज़रूरत नहीं।

***

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ اَلَتْنٰهُمْ
مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ كُلُّ امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾ وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ
وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾ يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾ وَيَطُوْفُ
عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا
وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾

तर्जुमा : ''जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ने भी ईमान में उनका साथ दिया हम उनकी औलाद को उन तक पहुँचा देंगे और उनके अमल से हम कुछ कम न करेंगे हर शख़्स अपने अपने आमाल में गिरफ़्तार है। (21) हम उनके लिए मेवे और मरग़ूब गोश्त की रेल पेल कर देंगे। (22) ख़ुश ज़ायक़ा के साथ) एक दूसरे से जामे शराब की छीना झपटी करेंगे जिस शराब के सुरूर में न तो बेहूदगोई होगी न गुनाह। (23) और उनके आसपास उनके नौ उम्र ग़ुलाम चल फिर रहे होंगे गोया कि वह मरवारिद थे जो ढके रखे थे। (24) आपस में एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बातचीत करेंगे (25) कहेंगे कि इससे पहले हम अपने घरवालों में बहुत डरा करते थे। (26) अल्लाह तआला ने हम पर बड़ा एहसान किया और हमें तेज़ो तुंद गर्म हवाओं के अज़ाब से बचा लिया (27) हम इससे पहले ही उसकी इबादत किया करते थे बेशक वह मुहसिन और मेहरबान है।'' (28)

अहले ईमान की औलादें (आ. 21 से 28) : अल्लाह तआला जल्ला शानुहू अपने फ़ज़्लो करम और लुत्फ़ो रहम अपने एहसान और इन्आम का बयान फ़र्माता है कि जिन मोमिनों की औलादें भी ईमान में अपने बाप दादाओं की राह लग जाएँ लेकिन आमाले सालेहा में अपने बड़ों से कम हों परवरदिगार उनके नेक आमाल का बदला बढ़ा चढ़ाकर उन्हें उनके बड़ों के दर्जे में पहुँचा देगा ताकि बड़ों की आँखे छोटों को अपने पास देखकर ठण्डी रहें और छोटे भी अपने बड़ों के पास हश्शाश बश्शाश रहें। उनके अमलों की बढ़ोतरी उनके बुज़ुर्गों के आमाल की कमी से न की जाएगी बल्कि मुहसिन व मेहरबान रब उन्हें अपने मअमूर ख़ज़ानों में से अता फ़र्माएगा। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) इस आयत की तफ़्सीर में यही फ़र्माते हैं। एक मरफ़ूअ हदीस भी इस मज़्मून की मरवी है। एक और रिवायत में है कि जब जन्नती शख़्स जन्नत में जाएगा और अपने माँ बाप और बीवी बच्चों को न पाएगा तो पूछेगा कि वह कहाँ हैं? जवाब मिलेगा कि वह तुम्हारे मर्तबे तक नहीं पहुँचे। यह कहेगा बारी तआला मैंने तो अपने लिए और उनके लिए नेक आमाल किये थे। चुनाँचे हुक्म दिया जाएगा और उन्हें भी उसके दर्जे में पहुँचा दिया जाएगा। (तब्रानी : 12248; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन ग़ज़्वान कज़्ज़ाब रावी है। मज्मउज़्ज़वाइद : 7/14; हैसमी कहते हैं इसकी सनद में मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन ग़ज़्वान ज़ईफ़ रावी है।) यह भी मरवी है कि जन्नतियों की जिन औलादों ने ईमान क़बूल किया और नेक काम किये वह उनके साथ मिला दी जाएगी और उनके जो छोटे बच्चे बचपन में ही इंतिक़ाल कर गए थे वह भी उनके पास पहुँचा दिये जाएँगे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) शअबी, सईद बिन जुबेर, इब्राहीम, क़तादा अबू सालेह, रबीअ बिन अनस, ज़हहाक बिन ज़ेद भी यही कहते हैं। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी इसी को पसंद करते हैं। मुस्नद अहमद में है कि हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से अपने दो बच्चों की निस्बत पूछा जो ज़माना जाहिलियत में मरे थे तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया वह दोनों जहन्नम में हैं। फिर जब माई साहिबा को ग़मगीन देखा तो फ़र्माया अगर तुम उनकी जगह देख लेतीं तो तुम्हारे दिल में उनका बुग़्ज़ पैदा हो जाता। माई साहिबा (रज़ि.) ने पूछा, या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर मेरा बच्चा जो आपसे हुआ वह कहाँ है?

आपने फ़र्माया, वह जन्नत में है। मोमिन मअ़ अपनी औलादों के जन्नत में हैं और काफ़िर अपनी औलादों समेत जहन्नम में हैं। फिर हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की। (अह़मद : 1/134; ज़वाइद अ़ब्दुल्लाह बिन अह़मद बिन ह़ंबल व सनदुहू ज़ईफ़ुन; अस्सुन्ना लि इब्ने अबी आ़सिम : 213; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 7/217; इसकी सनद में मुह़म्मद बिन उ़स्मान है इमाम ज़हबी कहते हैं यह मज्हूल रावी है और इसकी ख़बर मुंकर होती है। देखिए (अल्मीज़ान : 3/642; रक़्म : 7933) यह तो हुई माँ बाप के आ़माले स़ालेह़ा की वजह से औलाद की बुज़ुर्गी। अब औलाद की दुआ़-ए-ख़ैर की वजह से माँ बाप की बुज़ुर्गी का मुलाह़िज़ा हो।

मुस्नद अह़मद में ह़दीस है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में दफ़अ़तन बढ़ाता है वह पूछा करता है कि ऐ अल्लाह! मेरा यह दर्जा कैसे बढ़ गया? अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़र्माता है कि तेरी औलाद ने तेरे लिए इस्तिग़्फ़ार किया इस बिना पर मैंने तेरा दर्जा बढ़ा दिया। (अह़मद : 2/509; इब्ने माजा, किताबुल अदब, बाब वबिल वालिदैनि : 3660; वसनदुहू ह़सन) इस ह़दीस की इस्नाद बिलकुल सही हैं। गो बुख़ारी व मुस्लिम में इन लफ़्ज़ों से नहीं आई लेकिन इस जैसी एक रिवायत स़ह़ीह़ मुस्लिम में इस त़रह मरवी है कि इब्ने आदम के मरते ही उसके आ़माल मौक़ूफ़ हो जाते हैं लेकिन तीन अ़मल कि वह मरने के बाद भी सवाब पहुँचाते रहते हैं स़दक़ा जारिया, इल्मे दीन, जिससे नफ़ा पहुँचता रहे, नेक औलाद, जो मरने वाले के लिए ख़ैर की दुआएँ करती रहे। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल वस़िय्यत, बाब मा यल्ह़क़ुल इंसानु मिनस्सवाबि बअ़द वफ़ातिही : 1631)

जन्नत की नेअ़मतें : चूँकि यहाँ बयान हुआ था कि मोमिनों की औलाद के दर्जे बेअ़मल बढ़ा दिये गए तो साथ ही साथ अपने उस फ़ज़्ल के बाद अपने अ़दल का बयान फ़र्माता है कि किसी को किसी के आ़माल में पकड़ा न जाएगा बल्कि हर शख़्स़ अपने अपने अ़मल में रहन (गिरवी) होगा बाप का बोझ बेटे पर और बेटे का बाप पर न होगा। जैसे और जगह है (कुल्लु नफ़्सिम् बिमा कसबत रहीनतुन...) हर शख़्स़ अपने किये हुए कामों में गिरफ़्तार है मगर वह जिनके दाएँ हाथ में नामा-ए-आ़माल पहुँचे हैं वह जन्नतों में बैठे हुए गुनहगारों से पूछा करते हैं...। फिर इर्शाद होता है कि इन जन्नतियों को क़िस्म क़िस्म के मेवे और त़रह़ त़रह़ के गोश्त दिये जाते हैं जिस चीज़ को जी चाहे जिस पर दिल आये वह यक्लख़्त मौजूद हो जाती है। शराबे त़हूर के छलकते हुए जाम एक दूसरे को पिला रहे हैं जिसके पीने से सुरूर और कैफ़ लुत्फ़ और बहार ह़ास़िल होता है। लेकिन बदज़ुबानी बेहूदागोई नहीं होती। हिज़्यान नहीं बकते बेहोश नहीं होते, सच्चा सुरूर और पूरी ख़ुशी ह़ास़िल, बक झक से दूर, गुनाह से ग़ाफ़िल, बात़िल व कज़्ज़ाब से दूर, ग़ीबत व गुनाह से नफ़ूर। दुनिया में शराबियों की ह़ालत देखी होगी कि उनके सर में चक्कर, पेट में दर्द, अ़क़्ल ज़ाइल, बकवास बहुत, बोबरी, चेहरे बेरौनक़। इसी त़रह़ शराब कि बुरे ज़ायक़े और बदबूदार। यहाँ जन्नत की शराब उन तमाम गंदगियों से कोसों दूर है। यह रंग में सफ़ेद पीने में ख़ुश ज़ायक़ा। न उसके पीने से ह़वास मुअ़त्तल हों न बक झक हो न बहकें न भटकें, न सुरूर हो न किसी त़रह़ ज़रर पहुँचाए। हँसी ख़ुशी इस पाक शराब के जाम पी पिला रहे होंगे। उनके गुलाम कमसिन नौ उ़म्र बच्चे जो ह़ुस्नो जमाल में ऐसे हैं जैसे मरवारीद हों और वह भी डब्बे में बंद रखे गए हैं किसी का

हाथ भी न लगा हो और अभी अभी ताज़े ताज़े निकाले हों। उनकी आबदारी सफ़ाई और चमक दमक रूप रंग का क्या पूछना? लेकिन उन ग़िल्मान के हसीन चेहरे उन्हें भी माँद कर देते हैं। और जगह यह मज़्मून इन अल्फ़ाज़ में अदा किया गया है (यतूफ़ु अलैहिम विल्दानुम् मुख़ल्लदून) यानी हमेशा नौ उम्र और कमसिन रहने वाले छोटे बच्चे आबख़ोरे आफ़ताब और ऐसी शराबे साफ़ के जाम कि जिनके पीने से न दर्दे सिर हो और न बहकें और जिस क़िस्म का मेवा यह पसंद करें और जिस परिन्द का गोश्त यह चाहें उनके पास बार बार लाने के लिए चारों तरफ़ कमर बस्ता चल फिर रहे हैं। इस दौरे शराब के वक़्त आपस में घुल मिलकर हर तरह की बातें करेंगे। दुनिया के अहवाल याद आएँगे कहेंगे कि हम दुनिया में जब अपने वालों में थे अपने रब के आज के दिन के अज़ाबों से सख़्त लरज़ा थे। अल्हम्दु लिल्लाह! रब ने हम पर ख़ास एहसान किया और हमारे ख़ौफ़ की चीज़ से हमें अम्न दिया हम उसी से दुआएँ और इल्तिजाएँ करते रहे उसने हमारी दुआएँ क़बूल कीं और हमारा सवाल पूरा कर दिया यक़ीनन वह बहुत ही नेक सुलूक और रहम वाला है।

मुस्नदे बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नती अपने दोस्तों से मिलना चाहेगा तो इधर उस दोस्त के दिल में भी यही ख़्वाहिश पैदा होगी उसका तख़्त उड़ेगा और रास्ते में दोनों मिल जाएँगे अपने अपने तख़्तों पर आराम से बैठे हुए बातें करने लगेंगे दुनिया के ज़िक्र छेड़ेंगे और कहेंगे कि फ़लाँ दिन फ़लाँ जगह हमने अपनी बख़्शिश की दुआ माँगी थी अल्लाह ने उसे क़बूल किया। (मुस्नदे बज़्ज़ार : 3553; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/421; इसकी सनद में सईद बिन दीनार मज्हूल और रबीअ बिन सुबैह ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 2/41; रक़म : 2741; 2/134; रक़म : 3164) जबकि हसन बसरी के अन्अन की सराहत मौजूद नहीं।) इस हदीस की सनद कमज़ोर है।

फ़ायदा : माई आइशा (रज़ि.) ने जब इस आयत की तिलावत की तो यह दुआ पढ़ी (अल्लाहुम्म मुन्न अलयना वक़िना अज़ाबस्समूमि इन्नका अन्तल बर्रुर रहीम) हज़रत अअमश रावी हदीस से पूछा गया कि इस आयत को पढ़कर यह दुआ माई साहिबा (रज़ि.) ने नमाज़ के अंदर माँगी थी? जवाब दिया कि हाँ।

***

فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ
نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾ قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾ اَمْ
تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا

يُؤْمِنُوْنَ ۝ فَلْيَاْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ۝ اَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ
شَيْءٍ اَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ اَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ۝ اَمْ
عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ اَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ۚ
فَلْيَاْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝ اَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ۝ اَمْ
تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۝ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۝
اَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ۝ اَمْ لَهُمْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

तर्जुमा : "तू समझाता रह क्योंकि तू अपने रब के फ़ज़्ल से न तो काहिन है न दीवाना। (29) क्या काफ़िर यूँ कहते हैं कि यह शायर है हम इस पर ज़माने के हवादिस यानी मौत का इंतिज़ार कर रहे हैं। (30) तू कह दे तुम मुंतज़िर रहो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वालों में हूँ। (31) क्या इनकी अक़्लें इन्हें यही सिखाती हैं? या यह लोग शरारत पर ही हैं। (32) क्या यह कहते हैं कि इस नबी ने क़ुरआन ख़ुद गढ़ लिया है वाक़िया यह है कि उनमें ईमान ही नहीं। (33) अच्छा अगर यह सच्चे हैं तो भला इस जैसी एक ही बात यह भी तो ले आएँ। (34) क्या यह बग़ैर किसी पैदा करने वाले के ख़ुद बख़ुद पैदा हो गये हैं? या यह ख़ुद पैदा करने वाले हैं? (35) क्या उन्होंने ही आसमान व ज़मीन को पैदा किया है? बल्कि यह यक़ीन न करने वाले लोग हैं। (36) या क्या इनके पास तेरे रब के ख़ज़ाने हैं? या (इन ख़ज़ानों के) यह दारोग़ा हैं? (37) या क्या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर चढ़कर सुन आये हैं? अगर ऐसा है तो इनका सुनने वाला कोई रोशन दलील पेश करे। (38) क्या अल्लाह की तो सब लड़कियाँ हैं और तुम्हारे यहाँ लड़के हैं? (39) क्या तू इनसे कोई उजरत माँगता है कि यह उसके बोझ से बोझल हो रहे हैं? (4) क्या इनके पास इल्मे ग़ैब है जिसे यह लिख लेते हैं? (41) क्या यह लोग कोई फ़रेब करना चाहते हैं? तो यक़ीन कर ले कि फ़रेबख़ोरों की जमाअत काफ़िरों की है (42) क्या अल्लाह के सिवा इनका कोई और मअबूद है? (हर्गिज़ नहीं!) अल्लाह तआला इनके शिर्क से पाक है।" (43)

कुफ़्फ़ार पैग़म्बर (ﷺ) को शायर कहते थे (आ. 29 से 43) : अल्लाह तआला अपने नबी को हुक्म देता है कि अल्लाह की रिसालत अल्लाह के बन्दों तक पहुँचाते रहें साथ ही बदकारों ने जो बोहतान आप (ﷺ) पर बाँध रखे थे उनसे आप (ﷺ) की सफ़ाई करता है। काहिन उसे कहते हैं जिसके पास कभी कभी कोई ख़बर जिन्न पहुँचा देता है। फ़ायदा : तो इर्शाद हुआ कि अल्लाह के दीन की तब्लीग़ कीजिए। अल्हम्दु लिल्लाह! आप (ﷺ) न तो जिन्नात वाले हैं न जुनून वाले। फिर काफ़िरों का क़ौल नक़्ल करता है कि यह कहते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) एक शायर हैं इन्हें कहने दो जो कह रहे हैं इनके इंतिक़ाल के बाद इनकी सी कौन कहेगा? इनका यह दीन इनके साथ ही फ़ना हो जाएगा। फिर अपने नबी (ﷺ) को इसका जवाब देने को फ़र्माता है कि अच्छा इधर तुम इंतिज़ार करते हो इधर मैं भी इंतिज़ार में हूँ, दुनिया देख लेगी कि अंजामकार ग़ल्बा और ग़ैर फ़ानी कामयाबी किसे हासिल होती है? दारुन्नदवा में क़ुरैश का मश्वरा हुआ कि मुहम्मद (ﷺ) भी मिस्ल और शायरों के एक शायर हैं उन्हें क़ैद कर लो यह वहीं हलाक हो जाएँगे जिस तरह ज़ुहैर और नाबिग़ा का हश्र हुआ। इस पर यह आयतें उतरीं। (तब्री : 22/279)

फिर फ़र्माता है क्या इनकी दानाई उन्हें यही समझाती है कि बावजूद जानने के फिर भी तेरी निस्बत ग़लत अफ़वाहें उड़ाएँ और बोहतान बाज़ी करें। हक़ीक़त यह है कि यह बड़े सरकश गुमराह और इनाद रखने वाले हैं दुश्मनी में आकर वाक़ियात से चश्मपोशी करके आपको मुफ़्त में बुरा भला कहते हैं। क्या यह कहते हैं कि इस क़ुरआन को मुहम्मद (ﷺ) ने ख़ुद अपने आप बना लिया है? फ़िल्वाक़ेअ ऐसा तो नहीं लेकिन इनका कुफ़्र इनके मुँह से यह ग़लत और झूठ बात निकलवा रहा है। अगर यह सच्चे हैं तो फिर यह ख़ुद भी मिल जुलकर एक ही ऐसी बात बनाकर दिखा तो दें यह कुफ़्फ़ारे क़ुरैश तो क्या? अगर इनके साथ रूए ज़मीन के जिन्नात व इंसान मिल जाएँ जब भी इस क़ुरआन की नज़ीर से सब आजिज़ रहेंगे और पूरा क़ुरआन तो बड़ी चीज़ है इस जैसी दस सूरतें बल्कि एक सूरत भी क़ियामत तक नहीं बना सकते।

तौहीदे उलूहियत और रुबूबियत के दलाइल : तौहीदे रुबूबियत और तौहीदे उलूहियत का सबूत दिया जा रहा है। फ़र्माता है क्या यह बग़ैर मूजिद के मौजूद हो गए? या यह ख़ुद अपने मूजिद आप ही हैं ? दरअसल दोनों बातें नहीं बल्कि इनका ख़ालिक़ अल्लाह तआला है। यह कुछ न थे अल्लाह तआला ने इन्हें पैदा कर दिया। हज़रत जुबैर बिन मुत्इम (रज़ि.) फ़र्माते हैं नबी (ﷺ) मग़रिब की नमाज़ में सूरह तूर की तिलावत कर रहे थे। मैं कान लगाये सुन रहा था, जब आप (ﷺ) (मुसैतिरून) तक पहुँचे तो मेरी यह हालत हो गई कि गोया मेरा दिल उड़ा जा रहा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरत तूर : 4854, 765; सहीह मुस्लिम : 463) बद्री क़ैदियों में यह जुबैर (रज़ि .) भी आये थे। यह उस वक़्त का वाक़िया है जब यह काफ़िर थे। क़ुरआन की इन आयतों को सुनना उनके इस्लाम का ज़रिया बन गया। फिर फ़र्माता है क्या आसमान व ज़मीन के पैदा करने वाले यह हैं यह भी नहीं बल्कि यह जानते हुए कि ख़ुद इनका और कुल मख़्लूक़ात का रचाने वाला अल्लाह तआला ही है फिर भी यह अपनी बेयक़ीनी से बाज़ नहीं आते। फिर फ़र्माता है कि क्या दुनिया में तसर्रुफ़ इनका

है हर चीज़ के ख़ज़ानों के मालिक क्या यह हैं? या मख़्लूक़ के मुहासिब यह हैं? हक़ीक़त में ऐसा नहीं बल्कि मालिक व मुतसर्रिफ़ सिर्फ़ अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल ही है। वह क़ादिर है जो चाहे कर गुज़रे। फिर फ़र्माता है क्या ऊँचे आसमानों तक चढ़ जाने का कोई ज़ीना इनके पास है? अगर यूँ है तो इनमें से जो वहाँ पहुँचकर कलाम सुन आता है वह अपने क़ौल व फ़ेअ़ल की कोई आसमानी दलील पेश करे। लेकिन न वह पेश कर सकता है न वह किसी हक़्क़ानियत के पाबंद हैं। यह भी इनकी बड़ी भारी ग़लती है कि कहते हैं फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ हैं क्या मज़े की बात है कि अपने लिए तो लड़कियाँ पसंद न करें और अल्लाह तआला के मुक़र्रब फ़रिश्तों को उसकी बेटियाँ बतलाएँ। इतना ही नहीं बल्कि फिर उनकी पूजा करें। पस निहायत डाँट डपट के साथ फ़र्माता है क्या अल्लाह की बेटियाँ हैं और तुम्हारे बेटे हैं? फिर फ़र्माया क्या तू अपनी तब्लीग़ पर उनसे कुछ मुआवज़ा तलब करता है जो उन पर भारी पड़े? यानी अल्लाह के नबी दीने इलाही के पहुँचाने पर किसी से कोई उज्रत नहीं माँगते फिर उन्हें यह पहुँचाना क्यूँ भारी पड़ता है? क्या यह लोग ग़ैब दाँ हैं? नहीं! बल्कि ज़मीन व आसमान के तमाम मख़्लूक़ में से कोई भी ग़ैब की बातें नहीं जानता। क्या यह लोग अल्लाह के दीन और रसूलुल्लाह की निस्बत बकवास करके ख़ुद रसूल को, मोमिनों को और आम लोगों को धोखा देना चाहते हैं? याद रखो यही धोखेबाज़ धोखे में रह जाएँगे और वबाले आख़िरत समेटेंगे। फिर फ़र्माया, क्या अल्लाह के सिवा उनके और मअ़बूद हैं? अल्लाह की इबादत में बुतों को और दूसरी चीज़ों को यह क्यूँ शरीक करते हैं? अल्लाह तो शिर्कत से मुबर्रा और शरीक से पाक और मुश्रिकों के इस काम से सख़्त बेज़ार है।

***

وَإِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ ﴿٤٤﴾ فَذَرْهُمْ حَتّٰى
يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ ﴿٤٥﴾ يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَّلَا
هُمْ يُنْصَرُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٤٨﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ ﴿٤٩﴾

तर्जुमा : "अगर यह लोग आसमान के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें तब भी कह दें कि यह तो तह ब तह बादल है। (44) तू इन्हें छोड़ दे यहाँ तक कि इन्हें उस दिन से सामना हो जाए जिसमें यह बेहोश कर दिये जाएँगे। (45) जिस दिन इन्हें इनका मकर कुछ काम न आएगा और न वह

मदद किये जाएँगे। (46) बेशक ज़ालिमों के लिए उसके अलावा और अज़ाब भी होंगे लेकिन इन लोगों में से अक्सर बेइल्म हैं। (47) तू अपने रब के हुक्म के इंतिज़ार में सब्र से काम ले बेशक तुझ पर हमारी आँखें लगी हुई हैं। सुबह को जब तू उठे अपने रब की पाकी और हम्द बयान किया कर। (48) और रात को भी उसकी तस्बीह पढ़ और सितारों के डूबते वक़्त भी।" (49)

क़ियामत का ज़िक्र (आ. 44 से 49) : मुश्रिकों और काफ़िरों के इनाद का बयान हो रहा है कि यह अपनी सरकशी ज़िद और हठधर्मी में इस क़द्र बढ़ गए हैं कि अल्लाह तआला के अज़ाब को महसूस कर लेने के बाद भी इन्हें ईमान की तौफ़ीक़ न होगी। यह अगर देख लेंगे कि आसमान का कोई टुकड़ा अल्लाह तआला का अज़ाब बनकर इनके सरों पर गिर रहा है तो भी इन्हें तस्दीक़ व यक़ीन न होगा बल्कि साफ़ कह देंगे कि ग़लीज़ बादल है, जो पानी बरसाने को आ रहा है। जैसे और जगह फ़र्माया (वलौ फ़तहना अलैहिम बाबम् मिनस्समाइ...) अगर हम इनके लिए आसमान का कोई दरवाज़ा भी खोल दें और यह वहाँ चढ़ जाएँ तब भी यह तो यही कहेंगे कि हमारी आँखें बाँध दी गई हैं बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है यानी मोजिज़ात जो यह तलब कर रहे हैं अगर इनकी चाहत के मुताबिक़ ही दिखा दिये जाएँ बल्कि ख़ुद इन्हें आसमानों पर चढ़ा दिया जाए जब भी यह कोई बात बनाकर टाल देंगे और ईमान न लाएँगे। ऐ नबी (ﷺ)! आप इन्हें छोड़ दीजिए क़ियामत वाले दिन ख़ुद इन्हें मालूम हो जाएगा उस दिन इनकी सारी फ़रेबकारियाँ धरी की धरी रह जाएँगी कोई मक्कारी वहाँ काम न देगी, चौकड़ी चूक जाएँगे और चालाकी भूल जाएँगे। आज जिन जिनको यह पुकारते हैं और अपना मददगार जानते हैं उस दिन सबके मुँह तकेंगे और कोई न होगा जो इनकी ज़रा सी भी मदद कर सके बल्कि इनकी तरफ़ से कुछ उज़्र भी पेश कर सके। यही नहीं कि इन्हें सिर्फ़ क़ियामत के दिन ही अज़ाब होगा और यहाँ इत्मिनान से व आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ार लें बल्कि इन नाइंसाफ़ों के लिए इससे पहले दुनिया में भी अज़ाब तैयार हैं। जैसे और जगह फ़र्मान है (वल नुज़िक़न्नहुम मिनल अज़ाबिल अदना दूनल अज़ाबिल अकबरि लअल्लहुम यर्जिऊन) यानी हम इन्हें आख़िरत के बड़े अज़ाबों के अलावा दुनिया में भी अज़ाब का मज़ा चखाएँगे ताकि यह रुजूअ करें। लेकिन इनमें के अक्सर बेइल्म हैं, नहीं जानते कि यह दुनियावी मुसीबतों में भी मुब्तला होंगे और अल्लाह की नाफ़र्मानियाँ रंग लाएँगी यही बेइल्मी है जो इन्हें इस बात पर आमादा करती है कि गुनाह पर गुनाह, ज़ुल्म पर ज़ुल्म करते जाएँ, पकड़े जाते हैं, इब्रत हासिल होती है लेकिन जहाँ पकड़ हटी यह फिर वैसे के वैसे सख़्त दिल और बदकार बन गए। कुछ अहादीस में है कि मुनाफ़िक़ की मिसाल ऊँट की सी है जिस तरह ऊँट नहीं जानता कि उसे क्यूँ बाँधा और क्यूँ खोला? (अबूदाऊद, किताबुल जनाइज़, बाब अल्अम्राज़ुल मुकफ़्फ़िर लिज़्ज़ुनूब : 3089; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अबू मंज़ूर मज्हूल व अम्मह लम अअरिफ़हू) इसी तरह मुनाफ़िक़ भी नहीं जानता कि क्यूँ बीमार डाला गया? और क्यूँ तंदुरुस्त कर दिया गया? असरे इलाही में है कि मैं कितनी एक तेरी नाफ़र्मानियाँ करूँगा और तू मुझे सज़ा न देगा? अल्लाह तआला ने फ़र्माया ऐ मेरे बन्दे! कितनी बार मैंने तुझे आफ़ियत दी और तुझे इल्म भी न हुआ। फिर फ़र्माता है कि ऐ नबी (ﷺ)! आप सब्र कीजिए, इनकी ईज़ादेही से तंग दिल न हो जाइए इनकी तरफ़ से कोई ख़तरा भी दिल में न लाइए। सुनिए। आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं। आप हमारी आँखों के सामने हैं, आपकी निगहबानी के ज़िम्मेदार हम हैं। तमाम दुश्मनों से आपको बचाना हमारे सुपुर्द है।

अल्लाह की तस्बीह : फिर हुक्म देता है कि जब आप खड़े हों तो अल्लाह तआला की पाकी और ता'रीफ़ बयान कीजिए। इसका एक मतलब यह बयान किया गया है कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों। दूसरा मतलब यह बयान किया गया है कि जब रात को जागें। दोनों मतलब सही हैं। चुनाँचे एक हदीस में है कि नमाज़ के शुरू करते ही हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते (सुब्हानकल्लाहुम्मा वबि हम्दिका व तबारकस्मुका व तआला जद्दुका वला इलाहा ग़ैरुका) (सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलात, बाब हुज्जतु मन क़ाल ला यज्हरु बि... : 399; मौक़ूफ़न) यानी ऐ अल्लाह! तू पाक है तमाम ता'रीफ़ों का मुस्तहिक़ है। तेरा नाम बरकतों वाला है तेरी बुज़ुर्गी बहुत बुलंद व बाला है तेरे सिवा मअबूदे बरहक़ कोई और नहीं। मुस्नद अहमद और सुनन में भी हुज़ूर (ﷺ) का यह कहना मरवी है। (अबूदाऊद, किताबुस्सलात, बाब मन रअयल इस्तिफ़्ताह बि सुब्हानकल्लाहुम्मा वबि हम्दिका : 775; वहुव हदीसुन हसन; तिर्मिज़ी : 243; नसाई : 900; इब्ने माजा : 806; अहमद : 3/50; मुस्नदे अबी यअला : 3735) मुस्नद अहमद में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स रात को जागे और कहे (ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर. सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह) फिर ख़्वाह अपने लिए बख़्शिश की दुआ माँगे ख़्वाह जो चाहे माँगे अल्लाह तआला उसकी दुआ क़बूल करता है फिर अगर उसने पुख़्ता इरादा किया और वुज़ू करके नमाज़ भी अदा की तो वह नमाज़ क़बूल की जाती है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब फ़ज़्लु मन तआरा मिनल्लैलि फ़सल्ला : 1154; अबूदाऊद : 5060; तिर्मिज़ी : 3414; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 10697; इब्ने माजा : 3878; अहमद : 5/313) हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला की तस्बीह और हम्द के बयान करने का हुक्म हर मज्लिस से खड़े होने के वक़्त है। हज़रत अबुल आस (रह.) का क़ौल भी यही है कि जब किसी मज्लिस से उठना चाहे यह पढ़े (सुब्हानकल्लाहुम्म वबि हम्दिका) हज़रत अता बिन अबी रिबाह (रह.) भी यही फ़र्माते हैं और फ़र्माते हैं कि अगर उस मज्लिस में नेकी हुई है तो वह और बढ़ जाती है और अगर कुछ और हुआ है तो यह कलिमा उसका कफ़्फ़ारा हो जाता है। जामेअ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ में है कि हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने हुज़ूर (ﷺ) को ता'लीम दी कि जब किसी मज्लिस से उठो तो यह पढ़ो (सुब्हानकल्लाहुम्म वबि हम्दिका अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता अस्तग़्फ़िरुका व अतूबु इलैक) इसके रावी हज़रम मअमर (रह.) फ़र्माते हैं मैंने यह भी सुना है कि यह क़ौल उस मज्लिस का कफ़्फ़ारा हो जाता है। (मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 19796; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) यह हदीस तो मुर्सल है लेकिन मुस्नद हदीसें भी इस बारे में बहुत सी मरवी हैं जिनकी सनदें एक दूसरे को तक़्वियत पहुँचाती हैं। एक में है जो शख़्स किसी मज्लिस में बैठे वहाँ कुछ बक झक हो और खड़े होने से पहले इन कलिमात को कह ले तो उस मज्लिस में जो कुछ हुआ है उसका कफ़्फ़ारा बन जाता है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब मा यक़ूलु इज़ा क़ामा मिम् मज्लिसिही : 3433; वहुव सहीहुन; इब्ने हिब्बान : 1594; हाकिम : 1/720) इस हदीस को इमाम तिर्मिज़ी (रह.) हसन सहीह कहते हैं।

इमाम हाकिम (रह.) इसे मुस्तदरक में रिवायत करके फ़र्माते हैं इसकी सनद शर्ते मुस्लिम पर है। हाँ! इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसमें इल्लत निकाली है। मैं कहता हूँ इमाम अहमद, इमाम मुस्लिम, इमाम अबू हातिम, इमाम अबू ज़रआ, इमाम दारे क़ुत्नी (रहि.) वग़ैरह ने भी इसे मअलूल कहा है और वहम की निस्बत इब्ने जुरैज (रह.)

की तरफ़ की है। मगर यह रिवायत अबूदाऊद में जिस सनद से मरवी है उसमें इब्ने जुरैज (रह.) है ही नहीं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी कफ़्फ़ारतिल मज्लिस : 4858; वहुव सहीहुन) और हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) अपनी आख़िरी उम्र में जिस मज्लिस से खड़े होते इन कलिमात को कहते। बल्कि एक शख़्स ने पूछा भी कि हुज़ूर (ﷺ)! आप इससे पहले तो इसे नहीं कहते थे आप (ﷺ) ने फ़र्माया मज्लिस में जो कुछ हुआ हो यह कलिमात उसका कफ़्फ़ारा हो जाते हैं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी कफ़्फ़ारतिल मज्लिस : 4859; वसनदुहू हसन) यह रिवायत मुर्सल सनद से भी हज़रत अबुल आलिया (रह.) से मरवी है। वल्लाहु आलम नसाई वग़ैरह।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं यह कलिमात ऐसे हैं कि जो इन्हें किसी मज्लिस से उठते वक़्त तीन बार कह ले उसके लिए यह कफ़्फ़ारा बन जाते हैं। मज्लिसे ख़ैर और मज्लिसे ज़िक्र में इन्हें कहने से यह मिस्ल मुहर के हो जाते हैं। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी कफ़्फ़ारतिल मज्लिस : 4857; वसनदुहू सहीहुन)

फ़ायदा : अल्हम्दु लिल्लाह! मैंने एक अलग हिस्से में इन तमाम हदीसों को उनके अल्फ़ाज़ को और उनकी सनदों को जमा कर दिया है। और उनकी इल्लतें भी बयान कर दी हैं और उसके बारे में जो कुछ लिखना था लिख दिया है। फिर इर्शाद होता है कि रात के वक़्त उसकी याद और उसकी इबादत तिलावत और नमाज़ के साथ करते रहो, जैसे फ़र्मान है (वमिनल्लैलि व तहज्जद...)

रात के वक़्त तहज्जुद पढ़ा करो यह तेरे लिए नफ़्ल है, मुम्किन है तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद पर उठाए। सितारों के डूबते वक़्त से मुराद सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ से पहले की दो रकअतें हैं कि वह दोनों सितारों के ग़ुरूब होने के लिए झुक जाने के वक़्त पढ़ी जाती हैं। चुनाँचे एक मरफ़ूअ हदीस में है इन सुन्नतों को न छोड़ो भले घोड़े तुम्हें कुचल डालें। (अबूदाऊद, किताबुत्ततव्वअ बाब फ़ी तख़्फ़ीफ़िहिमा : 1258; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन; अहमद : 2/405; शरह मआनियुल आसार : 1/299; इसकी सनद में इब्ने सीलान मज्हूल रावी है। इसी हदीस पर नज़रें रखकर इमाम अहमद (रह.) के कुछ अस्हाब ने तो इन्हें वाजिब कहा है लेकिन यह ठीक नहीं, इसलिए कि हदीस में है दिन रात में पाँच नमाज़ें हैं। सुनने वाले ने कहा, क्या मुझ पर उसके सिवा और कुछ भी है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! मगर यह कि तू नफ़्ल अदा करे। (सहीह बुख़ारी, किताबुश्शहादत, बाब कैफ़ यस्तख़्लिफ़? : 2678; सहीह मुस्लिम : 11; अबूदाऊद : 391; सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 1759; इब्ने हिब्बान : 1724) बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नवाफ़िल में से किसी नफ़्ल की बनिस्बत सुबह की दो सुन्नतों के ज़्यादा पाबंदी और निगरानी न करते थे। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तहज्जुद, बाब तआहदा रकअतिल फ़ज्रि व मन सम्माहा ततव्वुअन : 1159; सहीह मुस्लिम : 724) सहीह मुस्लिम में है रसूले मक़्बूल (ﷺ) फ़र्माते हैं सुबह के फ़र्ज़ों से पहले की यह दो सुन्नतें सारी दुनिया से और जो कुछ उसमें है उससे बेहतर हैं। (सहीह मुस्लिम : 725)

अल्हम्दु लिल्लाह! सूरह तूर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।)

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह नज्म - 53

आयात : 62 मक्की पैराग्राफ : 5

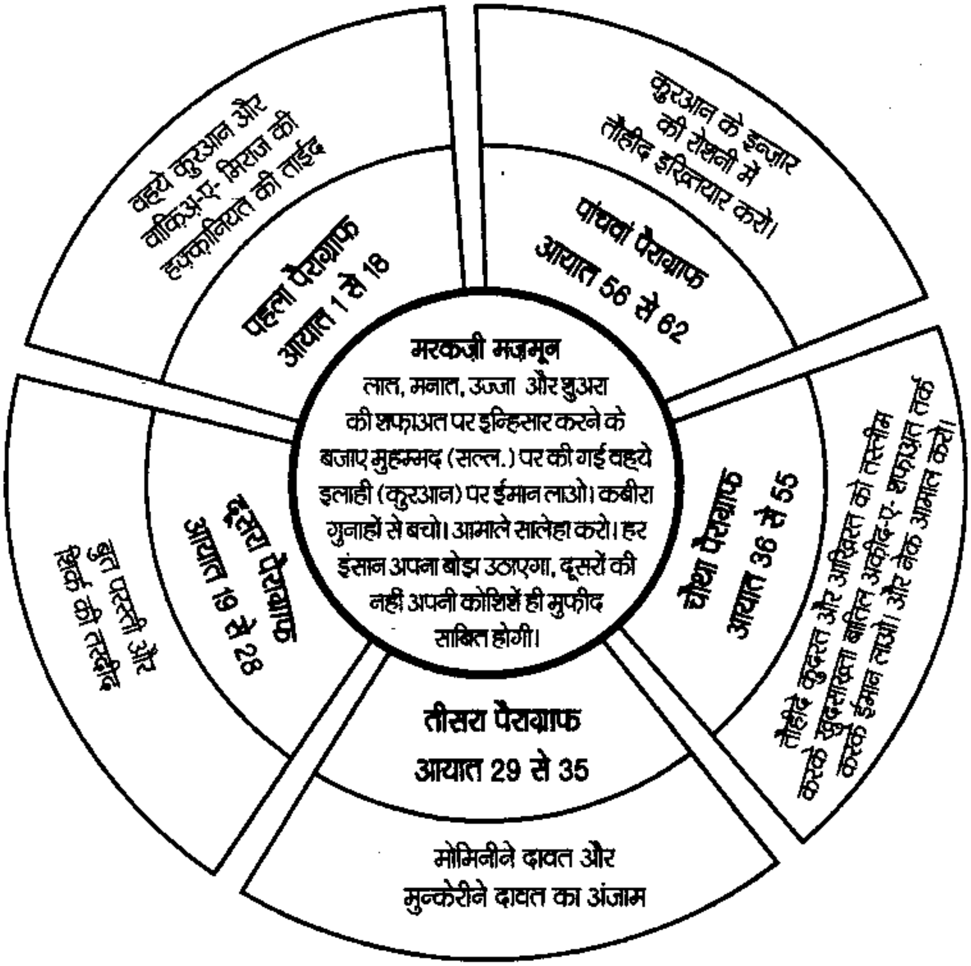

ज़मानए नुज़ूल

1. पहला हिस्सा (इब्तिदाई 18 आयात) ग़ालिबन मेअराज़ के मौके पर (रजब 12 नबवी में) नाज़िल हुवा।
2. दूसरा हिस्सा (आयात 19 से 62) हिजरते हब्शा के बाद, ग़ालिबन 5 नबवी में नाज़िल हो चुका था, जब उमय्या बिन ख़ल्फ़ ने आख़िरी आयते सज्दा सुन कर सज्दा करने के बजाए, कुछ मिट्टी ले कर अपनी पेशानी पर मल ली थी।

तफ़्सीर सूरह नज्म

सूरह का तआरुफ़ : सहीह बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) से मरवी है कि सबसे पहली सूरत जिसमें सज्दा था, सूरह वन्नज्म उतरी है। नबी (ﷺ) ने और आप (ﷺ) के पीछे जितने थे सबने सज्दा किया। लेकिन एक शख़्स को मैंने देखा कि उसने अपनी मुट्ठी में मिट्टी लेकर उस पर सज्दा कर लिया। फिर मैंने देखा कि वह उसके बाद कुफ़्र की हालत में ही मारा गया। यह उमय्या बिन ख़ल्फ़ था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरतुन्नज्म बाब (फ़स्जुदू लिल्लाहि वअबुदू) : 4863; सहीह मुस्लिम : 576; अबूदाऊद : 1406; अहमद : 1/388) लेकिन इसमें एक इश्काल है वह यह कि दूसरी रिवायत में है कि यह उत्बा बिन रबीआ था।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ① مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ② وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ③

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ④

तर्जुमा : ''क़सम है सितारे की जब वह झुके (1) कि तुम्हारे साथी ने न राह गुम की है न वह टेढ़ी राह पर है (2) और न अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश से कोई बात कहते हैं। (3) वह तो सिर्फ़ वही (अल्लाह का मैसेज) है जो उतारी जाती है।'' (4)

सितारे की क़सम (आ. 1 से 4) : हज़रत शअबी (रह.) फ़र्माते हैं ख़ालिक़ तो अपनी मख़्लूक़ में से जिसकी चाहे क़सम खाये लेकिन मख़्लूक़ सिवा अपने ख़ालिक़ के किसी और की क़सम नहीं खा सकती (इब्ने अबी हातिम)। सितारे के झुकने से मुराद फ़ज्र के वक़्त सुरय्या सितारे का ग़ायब होना है। कुछ कहते हैं मुराद ज़ोहरा नामी सितारा है। हज़रत ज़ह्हाक (रह.) फ़र्माते हैं मुराद इसका झड़कर शैतान की तरफ़ लपकना है। इस क़ौल की अच्छी तौजीह हो सकती है। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं इस जुम्ले की तफ़्सीर यह है कि क़सम है क़ुरआन की, जब वह उतरे। इस आयत जैसी ही आयत (फ़ला उक़्सिमु बि मवाक़िइन्नुजूम...) है। फिर जिस बात पर क़सम खाई है उसका बयान है कि हुज़ूर (ﷺ) नेकी और रुश्दो हिदायत वाले और ताबेअ हक़ हैं। वह बेइल्मी के साथ किसी ग़लत राह लगे हुए या बावजूद इल्म के टेढ़ा रास्ता इख़्तियार किये हुए नहीं हैं। गुमराही वाले नस़रानियों और जान

बूझकर ख़िलाफ़े हक़ करने वाले यहूदियों की तरह आप नहीं। आप (ﷺ) का इल्म कामिल, आपका अमल मुताबिक़े इल्म, आपका रास्ता सीधा आप अज़ीमुश्शान शरीअत के शारेअ, आप ऐतिदाल वाली राह हक़ पर क़ायम, आपका कोई क़ौल, कोई फ़र्मान अपने नफ़्स की ख़्वाहिश और ज़ाती ग़र्ज़ से नहीं होता बल्कि जिस चीज़ की तब्लीग़ का आपको हुक्मे इलाही होता है आप उसे ही ज़ुबान से निकालते हैं। जो वहाँ से कहा जाए वह आपकी ज़ुबान से अदा होता है कमी बेशी ज़्यादती नुक़्सान से आपका कलाम पाक होता है।

हदीसे पैग़म्बर वही है : मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक शख़्स की शफ़ाअत से जो नबी नहीं हैं मिस्ल दो क़बीलों के या दो में से एक क़बीले की गिनती के बराबर लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, क़बीला रबीआ और क़बीला मुज़र। इस पर एक शख़्स ने कहा, क्या रबीआ मुज़र में से नहीं हैं? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तो वही कहता हूँ जो कहता हूँ। (अहमद : 5/257; वसनदुहू हसन; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/381) मुस्नद की और हदीस में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं मैं हुज़ूर (ﷺ) से जो कुछ सुनता था उसे हिफ़्ज़ करने के लिए लिख लिया करता था पस कुछ कुरेशियों ने मुझे इससे रोका और कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक इंसान हैं कभी कभी गुस्से और ग़ज़ब में भी कुछ फ़र्मा दिया करते हैं। चुनाँचे मैं लिखने से रुक गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया लिख लिया करो। अल्लाह तआला की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मेरी ज़ुबान से सिवा हक़ बात के और कोई कलिमा नहीं निकलता। यह हदीस अबूदाऊद और इब्ने अबी शैबा में भी है। (अबूदाऊद, किताबुल इल्म, बाब किताबतुल इल्म : 3646; वसनदुहू सहीहुन; अहमद : 2/162) बज़्ज़ार में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं तुम्हें जिस अम्र की ख़बर अल्लाह तआला की तरफ़ से दूँ उमसें कोई शक व शुब्हा नहीं होता। मुस्नद अहमद में है कि आप (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सिवा हक़ के और कुछ नहीं कहता। इस पर कुछ सहाबा (रज़ि.) ने कहा कि हुज़ूर (ﷺ)! कभी कभी हमसे ख़ुश तबई भी करते हैं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उस वक़्त भी मेरी ज़ुबान से नाहक़ नहीं निकलता। (तिर्मिज़ी, किताबुल बिर्र वस्सिला, बाब मा जाअ फ़िल मिज़ाह : 1990; वसनदुहू हसन; अहमद : 2 /360; अन अबी हुरैरत (रज़ि.))

***

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۵ ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ۶ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۷ ثُمَّ دَنَا
فَتَدَلّٰى ۸ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۹ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ۱۰ مَا
كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۱۱ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۱۲ وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۱۳
عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۱۴ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۱۵ اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۱۶

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ﴿١٧﴾ لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ﴿١٨﴾

तर्जुमा : "इसे पूरी ताक़त वाले फ़रिश्ते ने सिखाया है (5) जो ज़ोरावर है वह सीधा खड़ा हो गया (6) और वह बुलंद आसमान के किनारों पर था। (7) फिर नज़दीक हुआ और उतर आया। (8) पस दो कमानों का फ़ासला रह गया बल्कि उससे भी कम (9) पस उसने अल्लाह के बन्दे को पैग़ाम पहुँचाया जो भी पहुँचाया। (10) जो देखा उसमें पैग़म्बर के दिल ने झूठ नहीं कहा। (11) क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो पैग़म्बर देखते हैं? (12) उसे तो एक मर्तबा और भी देखा था। (13) सिदरतुल मुंतहा के पास (14) उसी के पास जन्नतुल मावा है (15) जबकि सिदरह को छुपाये लेती थी वह चीज़ जो छा रही थी। (16) न तो निगाह बहकी न हद से बढ़ी (17) यक़ीनन उसने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियाँ देख लीं।" (18)

हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) की शान (आ. 5 से 18) : अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के मुअल्लिम हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) हैं। जैसे और जगह है (इन्नहू लक़ौलु रसूलिन करीम...) यह कुरआन एक बुज़ुर्ग ज़ोरावर फ़रिश्ते का क़ौल है जो मालिके अर्श के यहाँ बाइज़्ज़त सबका माना हुआ वहाँ मुअतबर है। यहाँ भी फ़र्माया वह कुव्वत वाला है। (ज़ुमिर्रतिन) की एक तफ़्सीर तो यही है। दूसरी यह है कि वह ख़ुश शक्ल है। हदीस में भी (मिर्रतिन) का लफ़्ज़ आया है। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं सदक़ा मालदार पर और कुव्वत वाले तंदुरुस्त पर हराम है। (अबूदाऊद, किताबुज़्ज़कात, बाब मंय्युअता मिनस्सदक़ति वहदल ग़नी : 1634; वसनदुहू हसन; तिर्मिज़ी : 652; दारमी : 1/472; अहमद : 2/164; हाकिम : 4/565; अन अबी हुरैरा (रज़ि.)) फिर वह सीधे खड़े हो गए, यानी हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) । और वह बुलंद आसमानों के किनारों पर थे जहाँ से सुबह चढ़ती है, जो सूरज के तुलूअ होने की जगह है। इब्ने अबी हातिम में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत जिब्राईल (अ.) को उनकी असल सूरत में सिर्फ़ दो बार देखा है। एक बार आप (ﷺ) की ख़्वाहिश पर अल्लाह तआला के अमीन अपनी सूरत में आप (ﷺ) को दिखाई दिये। आसमानों के तमाम किनारे उनके जिस्म से ढक गए थे। दोबारा उस वक़्त जबकि आप (ﷺ) को लेकर हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) ऊपर चढ़े थे। यह मतलब है (वहुव बिल उफ़ुक़िल आ'ला) का। इमाम इब्ने जरीर (रह.) ने इस तफ़्सीर में एक ऐसा क़ौल कहा है जो किसी ने नहीं कहा और ख़ुद उन्होंने भी इस क़ौल की इज़ाफ़त दूसरे की तरफ़ नहीं की। उनके फ़र्मान का माहसल यह है कि जिब्राईल (عليه السلام) और हुज़ूर (ﷺ) दोनों बुलंद आसमानों के किनारों पर सीधे खड़े हुए थे और यह वाक़िया मेअराज वाली रात का है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) की इस तफ़्सीर की ताईद किसी ने नहीं की। गो इमाम साहब (रह.) ने अर्बियत की हैसियत से इसे साबित किया है और अरबी क़वाइद से यह भी हो सकता है लेकिन है यह वाक़िया के ख़िलाफ़। इसलिए कि यह देखना मेअराज से पहले का है। उस वक़्त रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़मीन पर थे।

आपकी तरफ़ जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) उतरे थे। और क़रीब हो गए थे और अपनी असल सूरत पर थे। छः सौ पर थे, फिर उसके बाद दोबारा सिदरतुल मुंतहा के पास मेअराज वाली रात में देखा था। यह तो दोबारा का देखना था लेकिन पहली बार का देखना तो शुरू रिसालत के ज़माने का ज़िक्र है। पहली वह़ी (इक़रा बिस्मि...) की चंद आयतें आप (सल्ल०) पर नाज़िल हो चुकी थीं फिर वह़ी बंद हो गई थी जिसका हुज़ूर (सल्ल०) को बड़ा दुख हुआ था, यहाँ तक कि कई बार आप (सल्ल०) का इरादा हुआ कि पहाड़ पर से गिर पड़ूँ। लेकिन हर वक़्त आसमान की तरफ़ से ह़ज़रत जिब्राईल की यह निदा सुनाई दी कि ऐ मुह़म्मद (सल्ल०)! आप अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और मैं जिब्राईल हूँ। आप (सल्ल०) का ग़म लज़्ज़त याद आती तो निकल खड़े होते और पहाड़ पर से अपने आपको गिरा देना चाहते और इसी तरह ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) तस्कीन व तसल्ली कर दिया करते यहाँ तक कि एक बार अब्तह़ में ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) अपनी असल सूरत में ज़ाहिर हो गए। छः सौ पर थे जसामत ने आसमान के तमाम किनारों को ढक लिया था। अब आपसे क़रीब आ गए और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल की वह़ी आपको पहुँचाई। उस वक़्त हुज़ूर (सल्ल०) को उस फ़रिश्ते की अ़ज़्मत व जलालत मालूम हुई और जान गए कि अल्लाह के नज़दीक यह किस क़द्र बुलंद मर्तबा है।

मेअराज का ज़िक्र : मुस्नदे बज़्ज़ार की एक रिवायत इमाम इब्ने जरीर (रह़.) के क़ौल की ताईद में पेश हो सकती है मगर उसके रावी सिर्फ़ ह़ारिस बिन उ़बेद हैं जो बसरा के रहने वाले मशहूर शख़्स हैं। अबू क़ुदामा अयादी उनकी कुन्नियत है मुस्लिम में इनसे रिवायतें आई हैं लेकिन इमाम इब्ने मुईन (रह़.) इन्हें ज़ईफ़ कहते हैं और फ़र्माते हैं यह कोई चीज़ नहीं। इमाम अह़मद (रह़.) फ़र्माते हैं यह मुज़्तरिबुल ह़दीस हैं। इमाम अबू ह़ातिम (रह़.) का क़ौल है कि इनकी ह़दीसें लिख ली जाती हैं, लेकिन इनसे दलील नहीं ली जा सकती। इब्ने ह़िब्बान (रह़.) फ़र्माते हैं यह बड़े वहमी थे, इनसे एह़तिजाज दुरुस्त नहीं। पस यह ह़दीस सिर्फ़ उन ही की रिवायत से है। तो अलावा ग़रीब होने के मुंकर है और अगर साबित हो भी जाए तो मुम्किन है यह वाक़िया किसी ख़्वाब का हो। इसमें है हुज़ूर (सल्ल०) फ़र्माते हैं मैं बैठा हुआ था जो ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) आए, मेरे दोनों काँधों के बीच ज़ोर से हाथ रखा और मुझे खड़ा किया। मैंने देखा कि एक दरख़्त है जिसमें परिन्दों के आशियानों की तरह़ बैठने की जगहें बनी हुई हैं एक में तो ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) बैठ गए और दूसरे में मैं बैठ गया फिर वह दरख़्त बुलंद होने लगा, यहाँ तक कि मैं आसमान से बिलकुल क़रीब हो गया। मैं दाएँ बाएँ करवटें बदलता था और अगर मैं चाहता तो हाथ बढ़ाकर आसमान को छू लेता। मैंने देखा कि ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) उस वक़्त हैबते इलाही से मिस्ल बोरिये के बिछे जा रहे थे उस वक़्त मैं समझ गया कि अल्लाह की जलालत व क़द्र के इल्म में उन्हें मुझ पर फ़ज़ीलत है। आसमान के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा मुझ पर खुल गया, मैंने बहुत बड़ा अ़ज़ीमुश्शान नूर देखा, और पर्दे के पास दुर व याक़ूत को हिलते और ह़रकत करते हुए देखा। फिर अल्लाह तआ़ला ने जो वह़ी फ़र्मानी चाही वह फ़र्माई। मुस्नद में है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने ह़ज़रत जिब्राईल (अ़लैहिस्सलाम) को अपनी असल सूरत में देखा है उनके छः सौ पर थे हर एक ऐसा जिसने आसमान के किनारे पर कर दिये थे उनसे ज़मर्रुद और मोती और मरवारीद झड़ रहे थे। (अह़मद : 3/395; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; शरीक अल्क़ाज़ी

अन्अन) और रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने जिब्रईल (अ.) से ख़्वाहिश की कि मैं आपको आपकी असली सूरत में देखना चाहता हूँ। हज़रत जिब्रईल (अ.) ने फ़र्माया अल्लाह तआला से दुआ कीजिए। आप (ﷺ) ने दुआ की तो मश्रिक़ की तरफ़ से आप (ﷺ) को कोई चीज़ ऊँची उठती हुई और फैली हुई नज़र आई जिसे देखकर आप (ﷺ) बेहोश हो गए। जिब्रईल (अ.) फौरन आए और आपको होश में लाये और आप (ﷺ) की बाछों से थूक दूर किया। (अहमद : 1/322; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; तब्रानी : 10870; मज्मउज़्ज़वाइद : 8/257; इसकी सनद में और लैस बिन मुनब्बा ज़ईफ़ रावी है। (अल्मीज़ान : 1/169; रक़म : 681) इब्ने असाकिर में है कि अबू लहब और उसका बेटा उत्बा शाम के सफ़र की तैयारियाँ करने लगे, उसके बेटे ने कहा सफ़र में जाने से पहले एक बार ज़रा मुहम्मद (ﷺ) के अल्लाह को उनके सामने गालियाँ तो दे आऊँ। चुनाँचे यह आया और कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! जो क़रीब हुआ और उतरा और दो कमानों के बराबर बल्कि उससे भी ज़्यादा नज़दीक आ गया मैं तो उसका मुंकिर हूँ। चूँकि यह नाहंजार सख़्त बेअदब था और बार बार गुस्ताख़ी से पेश आता था। हुज़ूर (ﷺ) की ज़ुबान से उसके लिए बद्दुआ निकल गई कि बारी तआला अपने कुत्तों में से एक कुत्ता इस पर मुक़र्रर कर दे। यह जब लौटकर अपने बाप के पास आया और सारी बातें कह सुनाईं तो उसने कहा बेटा! अब मुझे तो तेरी जान का अंदेशा हो गया, उसकी दुआ रद्द न जाएगी। उसके बाद यह क़ाफ़िला यहाँ से रवाना हुआ। शाम की सरज़मीन में एक राहिब इबादतख़ाना के पास पड़ाव किया। राहिब ने उनसे कहा यहाँ तो भेड़िए इस तरह फिरते हैं जैसे बकरियों का रेवड़, तुम यहाँ क्यूँ आ गए? अबू लहब यह सुनकर खटक गया और तमाम क़ाफ़िले वालों को जमा करके कहा देखो मेरे बुढ़ापे का हाल तुम्हें मालूम है और तुम जानते हो कि मेरे कैसे कुछ हुक़ूक़ तुम पर हैं अब आज मैं तुमसे एक अर्ज़ करता हूँ उम्मीद है कि तुम सब उसे क़बूल करोगे। बात यह है कि मुद्दई नबुव्वत ने मेरे जिगर गोशे के लिए बद्दुआ की है और मुझे उसकी जान का ख़तरा है। तुम अपना सब अस्बाब इस इबादतख़ाने के पास जमा करो और इस पर मेरे प्यारे बच्चे को सुलाओ और तुम सब उसके आसपास पहरा दो। लोगों ने उसे मंज़ूर कर लिया। यह सब अपने जतन करके होशियार रहे कि अचानक शेर आया और सबके मुँह सूँघने लगा। जब सबके मुँह सूँघ चुका और गोया जिसे तलाश कर रहा था उसे न पाया तो पिछले पैरों हटकर बहुत ज़ोर की जस्त की और एक छलाँग में उस मचान पर पहुँच गया वहाँ जाकर उसका मुँह भी सूँघा और गोया कि वही उसका मतलूब था। फिर तो उसने उसके परख़च्चे उड़ा दिये, चीर फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। उस वक़्त अबू लहब कहने लगा इसका तो मुझे पहले से ही यक़ीन था कि मुहम्मद (ﷺ) की बद्दुआ से यह बच नहीं सकता। फिर फ़र्माता है कि हज़रत जिब्रईल (अ.) हुज़ूर (ﷺ) से क़रीब हुए और ज़मीन की तरफ़ उतरे यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) के और हज़रत जिब्रईल (अ.) के बीच सिर्फ़ दो कमानों के बराबर फ़ासला रह गया बल्कि उससे भी और नज़दीकी हो गई। यहाँ लफ़्ज़ अव जिसकी ख़बर दी जाती है उसके साबित करने के लिए आया है उस पर जो ज़्यादती हो उसकी नफ़ी के लिए। जैसे और जगह है फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए पस वह मिस्ल पत्थरों के हैं (अव अशद्दु क़स्वा) बल्कि इससे भी ज़्यादा सख़्त यानी पत्थर से कम किसी सूरत में नहीं बल्कि

इससे भी सख़्ती में बढ़े हुए हैं। और फ़र्मान है कि वह लोगों से ऐसा डरते हैं जैसा कि अल्लाह से (अव अशद्दु ख़श्या) बल्कि इससे भी ज़्यादा। और जगह है हमने उन्हें एक लाख की तरफ़ भेजा बल्कि ज़्यादा की तरफ़ यानी वह एक लाख से कम तो थे ही नहीं बल्कि हक़ीक़तन वह एक लाख थे या उससे ज़्यादा ही ज़्यादा। पस अपनी ख़बर की तहक़ीक़ है शक व तरद्दुद के लिए नहीं ख़बर में अल्लाह की तरफ़ से शक के साथ बयान नहीं हो सकता। यह क़रीब आने वाले हज़रत जिब्राईल (ﷺ) उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) अबू ज़र, इब्ने मसऊद, अबू हुरैरा (रज़ि.) का फ़र्मान है। (तब्री : 22/504) और इसकी बाबत हदीसें भी अन्क़रीब हम वारिद करेंगे, इंशाअल्लाह तआला। सहीह मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने दिल से अपने रब को दो बार देखा जिनमें से एक का बयान उस आयत सुम्म दना में है (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल (व लक़द रआहू नज़्लतन उख़रा) : 176)

हज़रत अनस (रज़ि.) वाली मेअराज की हदीस में है फिर अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त क़रीब हुआ और नीचे आया। और इसीलिए मुहद्दिसीन ने इसमें कलाम किया है, और कई एक ग़राबतें साबित की हैं और अगर साबित हो जाए कि यह सही है तो भी दूसरे वक़्त और दूसरे वाक़िये पर महमूल होगी। इस आयत की तफ़्सीर नहीं कही जा सकती। यह वाक़िया तो उस वक़्त का है जबकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ज़मीन पर थे न कि मेअराज वाली रात का। क्योंकि इसके बयान के बाद ही फ़र्माया है हमारे नबी ने इसे एक बार और भी सिदरतुल मुंतहा के पास देखा है। पस यह सिदरतुल मुंतहा के पास का देखना तो वाक़िया मेअराज का ज़िक्र है। और पहली बार का देखना यह ज़मीन पर था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने जिब्राईल (ﷺ) को देखा उनके छः सौ पर थे। (तब्री : 22/503) हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं नबी (ﷺ) की इब्तिदा-ए-नबुव्वत के वक़्त आपने ख़्वाब में हज़रत जिब्राईल (ﷺ) को देखा, फिर आप (ﷺ) अपनी ज़रूरी हाजत से फ़ारिग़ होने के लिए निकले तो सुना कि कोई आप (ﷺ) का नाम लेकर पुकार रहा है। हर चंद दाएँ बाएँ देखा लेकिन कोई नज़र न आया। तीन बार ऐसा ही हुआ। तीसरी बार आप (ﷺ) ने ऊपर की तरफ़ देखा तो देखा कि हज़रत जिब्राईल (ﷺ) अपने दोनों पैर में से एक को दूसरे समेत मोड़े हुए आसमान के किनारों को रोके हुए हैं। क़रीब था कि हुज़ूर (ﷺ) दहशतज़दा हो जाएँ कि फ़रिश्ते ने कहा मैं जिब्राईल हूँ, मैं जिब्राईल हूँ डरो नहीं लेकिन हुज़ूर (ﷺ) से ज़ब्त न हो सका, भागकर लोगों में चले आए, अब जो नज़रें डालीं तो कुछ दिखाई न दिया। फिर यहाँ से निकलकर बाहर गए और आसमान की तरफ़ नज़र डाली तो फिर हज़रत जिब्राईल (ﷺ) उसी तरह नज़र आए आप (ﷺ) फिर डरकर लोगों के मज्मअ़े में आ गए तो यहाँ कुछ भी नहीं। बाहर निकलकर फिर जो देखा तो वही समाँ नज़र आया पस इसी का ज़िक्र इन आयतों में है। क़ाब आधी उँगली को भी कहते हैं और कुछ कहते हैं सिर्फ़ दो हाथ का फ़ासला रह गया था। और रिवायत में है कि उस वक़्त जिब्राईल (ﷺ) पर दो रेशमी कपड़े थे।

हुज़ूर (ﷺ) ने अल्लाह को नहीं देखा : फिर फ़र्माया उसने वही की....। इससे मुराद या तो यह है कि

हज़रत जिब्राईल (ﷺ) ने अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल की तरफ़ वह्यी की। या यह कि अल्लाह तआला ने अपने बन्दे की तरफ़ जिब्रील (ﷺ) की मअरिफ़त अपनी वह्यी नाज़िल की, दोनों मअनी हासिल हैं। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) फ़र्माते हैं उस वक़्त की वह्यी (अलम यजिदका यतीमन) और व रफ़अना लका ज़िक्रक) थी। और हज़रात से मरवी है कि उस वक़्त यह वह्यी नाज़िल हुई थी कि नबियों पर जन्नत हराम है जब तक कि आप (ﷺ) उसमें न जाएँ और उम्मतों पर जन्नत हराम है जब तक कि पहले आप (ﷺ) की उम्मत दाख़िल न हो जाए। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं आप (ﷺ) ने अपने दिल से दो बार देखा है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने देखने को मुत्लक़ रखा है। यानी ख़्वाह दिल का देखना हो ख़्वाह ज़ाहिरी आँखों का। यह मुम्किन है कि उस मुत्लक़ को भी मुक़य्यद पर महमूल करें यानी आप (ﷺ) ने अपने दिल से देखा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब मअनी क़ौलुल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल (व लक़द रआहू नज़्लतन उख़रा) : 176) जिन कुछ हज़रात ने कहा है कि अपनी उन आँखों से देखा उन्होंने एक ग़रीब क़ौल कहा है। इसलिए कि सहाबा (रज़ि.) से इस बारे में कोई चीज़ सेहत के साथ मरवी नहीं। इमाम बग़वी (रह.) फ़र्माते हैं एक जमाअत उस तरफ़ गई है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी आँखों से देखा जैसे हज़रत अनस (रज़ि.) और हज़रत हसन और हज़रत इक्रिमा (रह.) उनके इस क़ौल में नज़र है, वल्लाहु आलम!

तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने रब को देखा। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं मैंने यह सुनकर कहा फिर यह आयत कहाँ जाएगी जिसमें फ़र्मान है (ला तुदरिक्हुल अब्सारु वहुव युदरिकुल अब्सार) इसे कोई निगाह नहीं पा सकती और वह सब निगाहों को पा लेता है। आपने जवाब दिया कि यह उस वक़्त है जबकि वह अपने नूर की पूरी तजल्ली करे, वरना आप (ﷺ) ने दो बार अपने रब को देखा है। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नज्म : 3279; वहुव हसन) यह हदीस हसन ग़रीब है। तिर्मिज़ी की और रिवायत में है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) की मुलाक़ात हज़रत कअब (रह.) से हुई और उन्हें पहचानकर उनसे एक सवाल किया जो उन पर बहुत गिराँ गुज़रा। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया हमें बनू हाशिम ने यह ख़बर दी है तो हज़रत कअब ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने अपना दीदार और अपना कलाम मुहम्मद (ﷺ) और हज़रत मूसा (ﷺ) के बीच तक़्सीम कर दिया। हज़रत मूसा (ﷺ) से दो बार बातें कीं और हुज़ूर (ﷺ) को दो बार अपना दीदार कराया। एक बार हज़रत मसरूक़ (रह.) हज़रत आइशा (रज़ि.) के पास गए और पूछा कि क्या रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने रब को देखा है? आपने फ़र्माया तूने तो ऐसी बात कह दी कि जिससे मेरे रोंगटे खड़े हो गए मैंने कहा, माई साहिबा! क़ुरआने करीम फ़र्माता है आप (स.) ने अपने रब की बड़ी निशानियाँ देखीं। आपने फ़र्माया, कहाँ जा रहे हो? सुनो! इससे मुराद हज़रत जिब्राईल (ﷺ) का देखना है। जो तुमसे कहे कि मुहम्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा या हुज़ूर (ﷺ) ने अल्लाह तआला के किसी फ़र्मान को छुपा लिया या आप (ﷺ) उन पाँच बातोंमें से कोई बात जानते थे। 1. यानी क़ियामत कब क़ायम होगी, 2. बारिश कब और कितनी बरसेगी? 3. मादा के पेट में नर है या मादा, 4. कौन कल क्या करेगा, 5. कौन कहाँ मरेगा? उसने बड़ी झूठ बात कही और अल्लाह

तआला पर बोहतान बाँधा। बात यह है कि आप (ﷺ) ने जिब्राईल (عليه السلام) को देखा था। दो बार अल्लाह के उस अमीन को आप (ﷺ) ने उनकी असल सूरत में देखा है एक तो सिदरतुल मुंतहा के पास और एक मर्तबा जय्याद में। उनके छः सौ पर थे और आसमान के कुल किनारे उन्हों ने भर रखे थे। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नज्म : 3278; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में मुजालिद बिन सईद ज़ईफ़ रावी है। लेकिन यह रिवायत जय्याद के लफ़्ज़ के बग़ैर सहीह बुख़ारी : 4612; सहीह मुस्लिम : 177 में भी मौजूद है।) नसाई में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) से रिवायत है कि क्या तुम्हें ताज्जुब मालूम होता है कि ख़ुल्लत हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के लिए थी और कलाम हज़रत मूसा (عليه السلام) के लिए और दीदार हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के लिए। (हाकिम : 2/469; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा अन्अन) सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू ज़र (रज़ि.) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा क्या आपने अपने रब को देखा है? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया वह सरासर नूर है मैं उसे कैसे देख सकता हूँ? एक रिवायत में है मैंने नूर देखा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही (ﷺ) (नूरानी अराहू) : 178) इब्ने अबी हातिम में है कि सहाबा (रज़ि.) के इस सवाल के जवाब में आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मैंने अपने दिल से अपने रब को दो बार देखा है फिर आप (ﷺ) ने आयत (मा कज़बल फ़ुआद) पढ़ी। (इसकी सनद मे मूसा बिन उबेद रब्ज़ी ज़ईफ़ रावी है लिहाज़ा यह सनद ज़ईफ़ है।) और रिवायत में है मैंने अपनी इन आँखों से नहीं देखा हाँ! दिल से दो बार देखा है फिर आप (ﷺ) ने आयत (सुम्म दना फ़तदल्ला) (तब्री : 22/505; इसकी सनद में भी मूसा बिन उबेदा है) पढ़ी।

हज़रत इक्रिमा (रह.) से (मा कज़बल फ़ुआद) की बाबत सवाल हुआ। तो आपने फ़र्माया, हाँ! आप (ﷺ) ने देखा और फिर देखा। साइल ने फिर हज़रत हसन (रह.) से भी सवाल किया तो आपने फ़र्माया, उसके जलाल व अज़्मत और चादर किब्रियाई को देखा। हुज़ूर (ﷺ) से एक बार यह जवाब देना भी मरवी है कि मैंने नहर देखी और नहर के पीछे पर्दा देखा और पर्दे के पीछे नूर देखा उसके सिवा मैंने कुछ नहीं देखा। (इब्ने अबी हातिम : 12/258; यह रिवायत मुर्सल यानी ज़ईफ़ है।) यह हदीस भी ग़रीब है। एक हदीस मुस्नद अहमद में है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को देखा है। (अहमद : 1/285; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; व हदीस तिर्मिज़ी : 3279 वहुव हसन) युग़नी अन्ह; मज्मउज़्ज़वाइद : 1/78) इसकी इस्नाद शर्ते सहीह पर है लेकिन यह हदीस, हदीसे ख़्वाब का मुख़्तसर टुकड़ा है। चुनाँचे मुतव्वल हदीस में है कि मेरे पास मेरा रब बहुत अच्छी सूरत में आज की रात (रावी कहता है मेरे ख़्याल में) ख़्वाब में आया और फ़र्माया ऐ मुहम्मद (ﷺ)! जानते हो बुलंद मक़ाम वाले फ़रिश्ते किस मसले पर बातचीत कर रहे हैं? मैंने कहा, नहीं! पस अल्लाह तआला ने अपना हाथ मेरे दो बाज़ुओं के बीच रखा जिसकी ठण्डक मुझे मेरे सीने में महसूस हुई, पस ज़मीन व आसमान की हर चीज़ मुझे मालूम हो गई। फिर मुझसे वही सवाल किया। मैंने कहा, अब मुझे मालूम हो गया वह उन नेकियों के बारे में जो गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और जो दर्जे बढ़ाती हैं आपस में पूछ गछ कर रहे हैं। मुझसे हक़ जल्ला शानुहू ने पूछा अच्छा! फिर तुम बतलाओ कफ़्फ़ारे की नेकियाँ क्या क्या हैं?

मैंने कहा नमाज़ों के बाद मस्जिदों में रुके रहना, जमाअत के लिए चलकर आना, जब वुज़ू नागवार गुज़रता हो अच्छी तरह मल मलकर वुज़ू करना। जो ऐसा करेगा वह भलाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा और ख़ैर के साथ इंतिक़ाल होगा और गुनाहों से इस तरह अलग हो जाएगा जैसे आज दुनिया में आया। उस वक़्त अल्लाह तआला ने मुझसे फ़र्माया, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! जब नमाज़ पढ़ो यह कहो (अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुका फ़िअलल ख़ैराति व तर्कल मुंकराति व हुब्बल मसाकीना व इज़ा अरत्तु बि इबादिका फ़ित्नतन अन तक़्बिज़नी इलैका ग़ैर मफ़्तून) यानी या अल्लाह! मैं तुझसे नेकियों के करने बुराइयों के छोड़ने मिस्कीनों से मुहब्बत रखने की तौफ़ीक़ तलब करता हूँ तू जब अपने बन्दों को फ़ित्ने में डालना चाहे तो मुझे फ़ित्ने में पड़ने से पहले ही अपनी तरफ़ उठा लेना। फ़र्माया और दर्जे बढ़ाने वाले आमाल यह हैं खाना खिलाना, सलाम फेरना, लोगों की नींद के वक़्त रात को तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना। (अहमद : 1/368; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरति साद : 3233; वहुव हसन) इसी की मिस्ल रिवायत सूरह साद की तफ़्सीर के ख़ात्मे पर गुज़र चुकी है। इब्ने जरीर में यह रिवायत दूसरी सनद से मरवी है जिसमें गुर्बत वाली ज़्यादती और भी बहुत सी है उसमें कफ़्फ़ारे के बयान में है कि जुम्आ की नमाज़ के लिए पैदल चलने के क़दम, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतिज़ार। मैंने कहा, या अल्लाह! तूने हज़रत इब्राहीम (ﷺ) को अपना ख़लील बनाया और हज़रत मूसा (ﷺ) को अपना कलीम बनाया और यह यह क्या पस अल्लाह तआला ने फ़र्माया मैंने तेरा सीना खोल नहीं दिया और तेरा बोझ हटा नहीं दिया? और फ़लाँ और फ़लाँ एहसान तेरे ऊपर नहीं किये और भी ऐसे एहसान बतलाए कि तुम्हारे सामने उनके बयान की मुझे इजाज़त नहीं। इसी का बयान इन आयतों (सुम्म दना फ़तदल्ला...) में है। पस अल्लाह तआला ने मेरी आँखों का नूर मेरे दिल में पैदा कर दिया और मैंने अल्लाह तआला को अपने दिल से देखा। (तब्री : 22/507; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में सईद बिन ज़ुरबी ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 2/136; रक़्म : 3177) इसकी इस्नाद ज़ईफ़ है। ऊपर उत्बा बिन अबू लहब का यह कहना कि मैं इस क़रीब आने और नज़दीक होने वाले को नहीं मानता और फिर हुज़ूर (ﷺ) का इसके लिए बद्दुआ करना और शेर का उसे फाड़ खाना बयान हो चुका है। यह वाक़िया ज़रक़ा में या सिरात में हुआ था और हुज़ूर (ﷺ) ने पेशगोई कर दी थी कि यह इस तरह हलाक होगा। फिर हुज़ूर (ﷺ) का हज़रत जिब्रील (ﷺ) को दोबारा देखना बयान हो रहा है, जो मेअराज वाली रात का वाक़िया है। मेअराज की हदीसें निहायत तफ़्सील के साथ सूरह सुब्हान की शुरू आयत की तफ़्सीर में गुज़र चुकी हैं जिनके दोबारा यहाँ वारिद करने की ज़रूरत नहीं।

यह भी बयान गुज़र चुका है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) मेअराज वाली रात दीदारे बारी तआला के होने के क़ाइल हैं। एक जमाअत सलफ़ व ख़ल्फ़ का क़ौल भी यही है। और सहाबा (रज़ि.) की बहुत सी जमाअतें इसके ख़िलाफ़ हैं। इसी तरह ताबेईन और दूसरे भी इसके ख़िलाफ़ हैं। हुज़ूर (ﷺ) का जिब्रील (ﷺ) को उनके परों समेत देखना वग़ैरह इस क़िस्म की रिवायतें ऊपर गुज़र चुकी हैं। हज़रत आइशा (रज़ि.) से हज़रत मसरूक़ (रह.) का पूछना और आपका जवाब भी अभी बयान हुआ है। एक रिवायत में है कि हज़रत

सिद्दीक़ा (रज़ि.) ने अपने इस जवाब के बाद आयत (ला तुदरिक्हुल अब्सार...) की तिलावत की और (मा काना लि बशरिन...) की भी तिलावत की यानी कोई आँख उसे नहीं देख सकती और वह सब निगाहों को पा लेता है। किसी इंसान से अल्लाह का कलाम करना मुम्किन नहीं हाँ! वह्य से या पर्दे के पीछे से हो तो और बात है। फिर फ़र्माया जो तुमसे कहे कि हुज़ूर (ﷺ) को कल की बातों का इल्म था उसने ग़लत और झूठ कहा। फिर आयत (इन्नल्लाह इन्दहू इल्मुस्साअति) आख़िर तक पढ़ी। और फ़र्माया जो कहे कि हुज़ूर (स.) ने अल्लाह की किसी बात को छुपा लिया उसने भी झूठ कहा और तोहमत बाँधी फिर आयत (या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़ मा उंज़िला इलैका मिर्रब्बिक) पढ़ी। यानी ऐ रसूल! जो तुम्हारी जानिब तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल किया गया है उसे पहुँचा दो। हाँ! आप (ﷺ) ने हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) को उनकी अस़ल सूरत पर दो बार देखा है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वन्नज्म : 4855; सहीह मुस्लिम : 177; अहमद : 6/49) मुस्नद अहमद में है कि हज़रत मसरूक़ (रह.) ने हज़रत आइशा (रज़ि.) के सामने सूरह नज्म की आयत (बिल उफ़ुक़िल मुबीन) और (नज़्लतन उख़रा) वाली आयत पढ़ीं, इसके जवाब में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने फ़र्माया इस उम्मत में से सबसे पहले इन आयतों के बारे में ख़ुद नबी (ﷺ) से मैंने सवाल किया था आप (ﷺ) ने फ़र्माया इससे मुराद मेरा हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) को देखना है। आप (ﷺ) ने सिर्फ़ दो बार उस अमीनुल्लाह को उनकी अस़ल सूरत में देखा। एक बार आसमान से ज़मीन पर आते हुए, उस वक़्त तमाम ख़ला उनके जिस्म से पुर था। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह वन्नज्म : 4855; सहीह मुस्लिम : 177; तिर्मिज़ी : 3068; अहमद : 6/241) मुस्नद अहमद में है कि हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने कहा, क्या पूछते? कहा यह कि क्या आपने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को देखा है? हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) ने फ़र्माया, यह सवाल तो ख़ुद मैंने जनाबे रिसालत मआब (ﷺ) से किया था। आप (ﷺ) ने मुझे जवाब दिया कि मैंने उसे नूर देखा वह तो नूर है मैं उसे कैसे देख सकता हूँ। (अहमद : 5/147; मुस्लिम : 178/292; वहुव हदीसुन सहीहुन)

सहीह मुस्लिम में भी यह हदीस दो सनदों से है दोनों के अल्फ़ाज़ में हेर फेर है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब फ़ी क़ौलिही (ﷺ) (नूरुन अना अराहू) हज़रत इमाम अहमद (रह.) फ़र्माते हैं मैं नहीं समझ सकता कि इस हदीस की क्या तौजीह करूँ, दिल इस पर मुत्मइन नहीं। इब्ने अबी हातिम में हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से मंक़ूल है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अपने दिल से दीदार किया है आँखों से नहीं। इमाम इब्ने ख़ुज़ैमा (रह.) फ़र्माते हैं अब्दुल्लाह बिन शक़ीक़ (रह.) और हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) के दरम्यान इंक़िताअ है। और इमाम इब्ने जौज़ी (रह.) फ़र्माते हैं मुम्किन है हज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) का यह सवाल मेअराज के वाक़िये से पहले का हो और हुज़ूर (ﷺ) ने उस वक़्त जवाब दिया हो। अगर यह सवाल मेअराज के बाद आप (ﷺ) से किया जाता तो ज़रूर आप (ﷺ) इसके जवाब में हाँ फ़र्माते इंकार न करते। लेकिन यह क़ौल सरतापा ग़रीब है इसलिए कि हज़रत आइशा (रज़ि.) का सवाल तो क़तअन मेअराज के बाद का था, लेकिन आप (ﷺ) का जवाब उस वक़्त भी इंकार में ही रहा। कुछ हज़रात ने फ़र्माया कि इनसे ख़िताब इनकी अक़्ल के मुताबिक़ किया गया, या यह कि इनका यह ख़याल ग़लत है, चुनाँचे इब्ने ख़ुज़ैमा (रह.) ने किताबुत्तौहीद में यही लिखा है तो

दरअसल यह सिर्फ़ ख़ता है और बिलकुल ग़लत है, वल्लाहु आलम!

सिदरतुल मुंतहा का ज़िक्र : हज़रत अनस और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) ने अल्लाह तआला को दिल से तो देखा है लेकिन अपनी आँखों से नहीं देखा, हाँ! हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) को अपनी आँखों से उनकी असल सूरत में दो बार देखा है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब मअना क़ौलिल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल (व लक़द रआहू नज़्लतन उख़रा) : 175) सिदरतुल मुंतहा पर उस वक़्त फ़रिश्ते बकसरत थे और नुरुल्लाह उस पर जगमगा रहा था और क़िस्म क़िस्म के रंग जिन्हें सिवा अल्लाह तआला के और कोई नहीं जान सकता। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं मेअराज वाली रात हुज़ूर (ﷺ) सिदरतुल मुंतहा तक पहुँचे जो सातवें आसमान पर है। ज़मीन से जो चीज़ें चढ़ती हैं वह यहीं तक चढ़ती हैं फिर यहाँ से उठाई जाती हैं। इसी तरह जो चीज़ें अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल होती हैं यहीं तक पहुँचती हैं फिर यहाँ से पहुँचाई जाती हैं। उस वक़्त उस दरख़्त पर सोने की टिड्डियाँ लदी हुई थीं। हुज़ूर (ﷺ) को वहाँ तीन चीज़ें अता की गईं पाँचों वक़्त की नमाजें, सूरह बक़रह के ख़ात्मा की आयतें, और आप (ﷺ) की उम्मत में से जो मुश्रिक न हो उसके गुनाहों की बख़्शिश। (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब ज़िक्रु सिदरतिल मुंतहा : 173)

अबू हुरैरा (रज़ि .) से या किसी और सहाबी से रिवायत है कि जिस तरह कोओे किसी दरख़्त को घेर लेते हैं उसी तरह उस वक़्त सिदरतुल मुंतहा पर फ़रिश्ते छा रहे थे। वहाँ जब हुज़ूर (ﷺ) पहुँचे तो आपसे कहा गया कि जो माँगना हो माँगो। (तब्री : 22/520) हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं उस दरख़्त की शाखें मरवारीद याक़ूत और ज़बरजुद की थीं। हुज़ूर (ﷺ) ने इसे देखा और अपने दिल की आँखों से अल्लाह की भी ज़ियारत की। इब्ने ज़ेद (रह.) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) से सवाल हुआ कि आपने सिदरा पर क्या देखा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, उसे सोने की टिड्डियाँ ढाँके हुए थीं और हर हर पत्ते पर एक एक फ़रिश्ता खड़ा हुआ अल्लाह की तस्बीह कर रहा था। (तब्री : 22/519) आप (ﷺ) की निगाहें दाएँ बाएँ नहीं हुईं जिस चीज़ के देखने का हुक्म था वहीं लगी रहीं। साबित क़दमी और कामिल इताअत की यह पूरी दलील है कि जो हुक्म था वही बजा लाए, जो दिये गए वही लेकर ख़ुश हुए। इसी को एक नाज़िम ने ता'रीफ़न कहा है आप (ﷺ) ने अल्लाह तआला की बड़ी बड़ी निशानियाँ मुलाहिज़ा कीं जैसे और जगह है (लि नुरियका मिन आयातिकल कुब्रा) इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियाँ दिखाईं जो हमारी कामिले क़ुदरत और ज़बरदस्त अज़्मत पर दलील बन जाएँ। इन दोनों आयतों को दलील बनाकर अहले सुन्नत का मज़हब है कि हुज़ूर (ﷺ) ने उस रात अल्लाह का दीदार अपनी आँखों से नहीं किया क्योंकि इर्शादे बारी तआला है कि आप (ﷺ) ने अपने रब की बड़ी बड़ी निशानियाँ देखीं, अगर ख़ुद अल्लाह का दीदार होता तो उसी दीदार का ज़िक्र होता और लोगों पर उसे ज़ाहिर किया जाता। इब्ने मसऊद (रज़ि.) का क़ौल गुज़र चुका है कि एक बार आप (ﷺ) की ख़्वाहिश पर दूसरी दफ़ा आसमान पर चढ़ते वक़्त जिब्राईल (عليه السلام) को आप (ﷺ) ने उनकी असल सूरत में देखा। पस जबकि जिब्राईल (عليه السلام) ने अपने रब अज़्ज़ व जल्ल को ख़बर दी अपनी असल सूरत में ऊद कर गए और

सज्दा अदा किया। पस सिदरतुल मुंतहा के पास दोबारा देखने से इन ही का देखना मुराद है। (अह़मद : 1/407; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में इस्हाक़ बिन अबी कहतला मज्हूल रावी है।) यह रिवायत मुस्नद अह़मद में है और ग़रीब है।

***

أَفَرَءَيْتُمُ اللَّتَ وَالْعُزَّى ﴿١٩﴾ وَمَنَوٰةَ الثَّالِثَةَ الْأُخْرَى ﴿٢٠﴾ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَى
﴿٢١﴾ تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيزَى ﴿٢٢﴾ إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَءَابَاؤُكُم مَّا
أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَنٍ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنفُسُ وَلَقَدْ
جَاءَهُم مِّن رَّبِّهِمُ الْهُدَى ﴿٢٣﴾ أَمْ لِلْإِنسَانِ مَا تَمَنَّى ﴿٢٤﴾ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى ﴿٢٥﴾
وَكَم مِّن مَّلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِن بَعْدِ أَن يَأْذَنَ
اللَّهُ لِمَن يَشَاءُ وَيَرْضَى ﴿٢٦﴾

तर्जुमा : "क्या तुमने लात और उ़ज़्ज़ा को देखा? (19) और मनात तीसरे पिछले को (20) क्या तुम्हारे लिए लड़के और अल्लाह के लिए लड़कियाँ? (21) यह तो अब बड़ी बेइंसाफ़ी की तक़्सीम है (22) दरअस़ल यह स़िर्फ़ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादों ने उनके रख लिये हैं अल्लाह ने उनकी कोई सनद नहीं उतारी यह लोग तो स़िर्फ़ अटकल के और अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश के पीछे पड़े हुए हैं यक़ीनन इनके रब की त़रफ़ से इनके पास हिदायत आ चुकी है (23) क्या हर शख़्स जो आरज़ू करे उसे मयस्सर है? (24) अल्लाह ही के हाथ है यह जहान, और वह जहान (25) बहुत से फ़रिश्ते आसमानों में हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा न दे सकती मगर यह और बात है कि अल्लाह तआ़ला अपनी ख़ुशी और अपनी चाहत से जिसके लिए चाहे इजाज़त दे दे।" (26)

लात, उ़ज़्ज़ा और मनात (बुतों) का ज़िक्र (आ. 19 से 26) : इन आयतों में अल्लाह तआ़ला मुश्रिकीन को डाँट रहा है कि वह बुतों की और अल्लाह तआ़ला के सिवा दूसरों की पूजा करते हैं और जिस त़रह

ख़लीलुल्लाह ने बहुक्मे इलाही, अल्लाह तआला का घर बनाया। यह लोग अपने अपने मअबूदाने बातिल के बुतकुदे (इबादत खाने) बना रहे हैं। लात एक सफ़ेद पत्थर मुनक़्क़श था जिस पर कुब्बा बना रखा था, ग़िलाफ़ चढ़ाए जाते थे, मुजावर और मुहाफ़िज़ और जारूबकश मुक़र्रर थे, उसके आसपास की जगह को मिस्ल हरम के हुर्मत व बुज़ुर्गी वाली जानते थे। अहले ताइफ़ का यह बुतकदा था। क़बीला सक़ीफ़ उसका पुजारी और उसका मुतवल्ली था। कुरैश के सिवा बाक़ी और सब पर यह लोग अपना फ़ख़्र जताया करते थे। इब्ने जरीर (रह़.) फ़र्माते हैं इन लोगों ने लफ़्ज़े अल्लाह से लफ़्ज़े लात बनाया था गोया इसका मुअन्नस बनाया था। अल्लाह की ज़ात तमाम शरीकों से पाक है। एक क़िरअत में लफ़्ज़े लात ता की तशदीद के साथ है यानी घोलने वाला। उसे लात इस मअनी में इसलिए कहते थे कि यह एक नेक शख़्स था मौसमे हज्ज में हाजियों को सत्तू घोल घोलकर पिलाता था। उसके इंतिक़ाल के बाद लोगों ने उसकी क़ब्र पर मुजाविरत शुरू कर दी धीरे धीरे उसी की इबादत करने लगे। (तब्री : 22/523) इसी तरह लफ़्ज़े उ़ज़्ज़ा लफ़्ज़े अज़ीज़ से लिया गया है। मक्के और ताइफ़ के बीच नख़्ला में यह एक दरख़्त था। इस पर भी कुब्बा बना हुआ था चादरें चढ़ी हुई थीं कुरैश उसकी अ़ज़्मत करते थे। (तब्री : 22/523) अबू सुफ़्यान ने उहुद वाले दिन भी कहा था हमारा उ़ज़्ज़ा है और तुम्हारा नहीं। इसके जवाब में हुज़ूर (ﷺ) ने कहलवाया था अल्लाह हमारा वाली और तुम्हारा वाली कोई नहीं। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब मा यकरहू मिनत्तनाज़िउ वल इख़्तिलाफ़ फ़िल्हर्बि व उक़ूबत मन अ़सा इमामहू : 3039)

सह़ीह़ बुख़ारी में है जो शख़्स लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम खा बैठे उसे चाहिए फ़ौरन (ला इलाहा इल्लल्लाह) कह ले और जो अपने साथी से कह दे कि आ! जूआ खेले उसे सदक़ा करना चाहिए। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब (अफ़रअयतुमुल्लात वल उ़ज़्ज़ा) : 4860; सह़ीह़ मुस्लिम : 1647; अबूदाऊद : 3247; तिर्मिज़ी : 1545; इब्ने माजा : 2096) मतलब यह है कि जाहिलियत के ज़माने में चूँकि उसी की क़सम खाई जाती थी तो अब इस्लाम के बाद भी अगर किसी की ज़ुबान से अगली आ़दत के मुवाफ़िक़ यह अल्फ़ाज़ निकल जाएँ तो इसे कलिमा पढ़ लेना चाहिए। ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) एक बार इसी तरह लात उ़ज़्ज़ा की क़सम खा बैठे जिस पर लोगों ने उन्हें मुतनब्बा किया, यह हुज़ूर (ﷺ) के पास गये। आप (ﷺ) ने फ़र्माया (ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहू ला शरीका लहू लहुल मुल्कु वलहुल ह़म्दु वहुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर) पढ़ लो और तीन बार (अऊ़ज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम) पढ़कर अपनी बाएँ जानिब थूक दो और आइन्दा से ऐसा न करना। (नसाई, किताबुल ईमान वन्नुज़ूर, बाब अल्ह़लफ़ बिल्लाति वल उ़ज़्ज़ा : 3808; इब्ने माजा : 2097; वहुव सह़ीहुन; अह़मद : 1/183; इब्ने ह़िब्बान : 4365) मक्के और मदीने के बीच क़दीद के पास मुशल्लल में मनात था। क़बीला ख़ुज़ाआ और औस और ख़ज़रज जाहिलियत में उसकी बहुत अ़ज़्मत किया करते थे यहीं से एहराम बाँधकर वह ह़ज्जे कअ़बा के लिए जाते थे।(सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब सूरह वन्नज्म बाब (व मनातुस्सालिसतुल उख़रा) : 4861) इसी तरह अ़लावा इन तीन के और भी बहुत से बुत और थान थे जिनकी अ़रब लोग पूजा करते थे और बेह़द ता'ज़ीम करते थे। लेकिन चूँकि इन तीन की शोहरत बहुत ज़्यादा थी इसलिए यहाँ सिर्फ़ इन तीन का ही बयान किया। इन मक़ामात के यह लोग तवाफ़ भी

करते थे, कुर्बानियों के जानवर वहाँ ले जाते थे उनके नाम पर जानवर चढ़ाते थे। बावजूद इसके यह सब लोग कअ़बा की हुर्मत व अ़ज़्मत के क़ाइल थे उसे मस्जिदे इब्राहीम मानते थे और उसकी ख़ातिर ख़ुद तौक़ीर करते थे। सीरते इब्ने इस्हाक़ में है कि कुरैश और बनू किनाना उ़ज़्ज़ा के पुजारी थे जो नख़्ला में था उसका निगहबान और मुतवल्ली क़बीला बनू शैबान था जो क़बीला सुलैम की शाख़ था और बनू हाशिम के साथ उनका भाईचारा था। उस बुत के तोड़ने के लिए रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़तहे मक्का के बाद हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को भेजा था जिन्होंने उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया और कहते जाते थे या उ़ज़्ज़ा कुफ़्रानकि ला सुब्हान कि इन्नी रअयतुल्लाह क़द अहानकि'' ऐ उ़ज़्ज़ा! मैं तेरा मुंकिर हूँ तेरी पाकी बयान करने वाला नहीं हूँ, मेरा ईमान है कि तेरी इ़ज़्ज़त को अल्लाह ने ख़ाक में मिला दिया। यह बबूल के तीन दरख़्तों पर था जो दरख़्त काट डाले और कुब्बा ढा दिया गया और वापिस आकर हुज़ूर (ﷺ) को ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फर्माया, तुमने कुछ नहीं किया लौटकर फिर दोबारा जाओ। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) के दोबारा तशरीफ़ ले जाने पर वहाँ के मुहाफ़िज़ और ख़ुद्दाम ने बड़े बड़े मकर व फ़रेब किये और ख़ूब गुल मचा मचाकर (या उ़ज़्ज़ा या उ़ज़्ज़ा) के नारे लगाये। हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) ने जो देखा तो मालूम हुआ कि एक नंगी औरत है जिसके बाल बिखरे हुए हैं और अपने सर पर मिट्टी डाल रही है। आपने तलवार के एक ही वार में उसका काम तमाम किया और वापिस आकर हुज़ूर (ﷺ) को ख़बर दी। आप (ﷺ) ने फ़र्माया उ़ज़्ज़ा यही था। (सुननुल कुब्रा लिन्नसाई : 11547; मुस्नदे अबी यअ़ला : 902; वसनदुहू हसन; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 6/176; दलाइलुन्नबुव्वा : 463) लात क़बीला सक़ीफ़ का बुत था जो ताइफ़ में था। उसकी तौलियत और मुजाविरत बनू मअ़तब में थी। यहाँ उसके ढाने के लिए नबी (ﷺ) ने हज़रत मुग़ीरह बिन शुअ़बा और हज़रत अबू सुफ़्यान सख़र बिन हर्ब (रज़ि.) को भेजा था। जिन्होंने उसे मअ़दूम करके उसकी जगह मस्जिद बना दी। मनात औस ख़ज़रज और उनके हम ख़्याल लोगों का बुत था। यह मुशल्लल की तरफ़ समुन्द्र के किनारे क़दीद में था। यहाँ भी हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत अबू सुफ़्यान (रज़ि.) को भेजा और आप उसके रेज़े रेज़े कर आये। कुछ का क़ौल है कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) के हाथ यह कुफ़्रिस्तान फ़ना हुआ।

ज़ुल्ख़ल्सा बुत का ज़िक्र : ज़ुल्ख़ल्सा नामी बुतख़ाना दौस और ख़सम बजीला का था और जो लोग उनके हम वतन थे। यह तबाला में था और इसे यह लोग कअ़बा यमानिया कहते थे और मक्का के कअ़बे को कअ़बा शामिया कहते थे। यह हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) के हाथों रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से फ़ना हुआ। फ़ल्स नामी बुतख़ाना क़बीला तै और उनके आसपास के अ़रबों का था यह जबले तै में सलमा और अजा के बीच था। उसके तोड़ने पर हज़रत अ़ली (रज़ि.) मामूर हुए थे, आपने उसे तोड़ दिया और यहाँ से दो तलवारें ले गए थे, एक रसूब दूसरी मख़्ज़म। हुज़ूर (ﷺ) ने यह दोनों तलवारें उन ही को दे दीं। क़बीला हिम्यर और अहले यमन ने अपना बुतख़ाना सन्आ में रय्याम नामी बना रखा था। मज़्कूर है कि उसमें एक स्याह कुत्ता था और वह दो हिम्यरी जो तुब्बअ़ के साथ निकले थे उन्होंने उसे निकालकर क़त्ल कर दिया और उस बुतख़ाना की ईंट से ईंट बजा दी। और रज़ा नामी बुतकदा बनू रबीआ़ इब्ने सअ़द का था उसको मस्तूग़िर इब्ने रबीआ़ बिन कअ़ब बिन सअ़द ने इस्लाम में गिराया।

इब्ने हिशाम फ़र्माते हैं कि इनकी उम्र तीन सौ तीस 330 साल थी जिसका बयान ख़ुद उन्होंने अपने अश्आर में किया है। जुल्कअबात नामी सनम ख़ाना बक्र और तग़लब और अयाद क़बीले का सिन्दाद में था। फिर फ़र्माता है क्या तुम्हारे लिए तो लड़के हों और अल्लाह की लड़कियाँ हों? क्योंकि यह मुश्रिकीन अपने ज़अमे बातिल में फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियाँ समझते थे तो अल्लाह तआला फ़र्माता है अगर तुम आपस में तक़्सीम करो और किसी को सिर्फ़ लड़कियाँ और किसी को सिर्फ़ लड़के दो तो वह भी राज़ी न होगा और यह तक़्सीम नामुंसिफ़ी की समझी जाएगी, चे जाये कि तुम अल्लाह के लिए लड़कियाँ साबित करो और ख़ुद तुम अपने लिए लड़के पसंद करो। फिर फ़र्माता है उनको तुमने अपनी तरफ़ से बग़ैर किसी दलील के मअबूद ठहराकर जो चाहा नाम गढ़ लिया है वरना दरअसल न वह मअबूद हैं न किसी ऐसे पाक नाम के मुस्तहिक़ हैं ख़ुद यह लोग भी उनकी पूजा पाठ पर कोई दलील पेश नहीं कर सकते सिर्फ़ अपने बड़ों पर हुस्ने ज़न रखकर जो उन्होंने किया था यह भी कर रहे हैं। मक्खी पर मक्खी मारते जाते हैं, मुसीबत तो यह है कि बावजूद दलील आ जाने के अल्लाह की बातें वाज़ेह हो जाने के फिर भी बाप दादा की ग़लत राह को नहीं छोड़ते। फिर फ़र्माता है क्या हर इंसान की हर तमन्न ख़्वाह मख़्वाह पूरी ही होती है? जो कहे मैं हक़ पर हूँ तो क्या वह हक़ पर ही हो गया? तुम गो दावे लम्बे चौड़े करो लेकिन दावों से मुराद और मक़्सद हासिल नहीं होता। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं तमन्ना करते वक़्त सोच लिया करो क्या तमन्ना करते हो? तुम्हें नहीं मालूम कि उस तमन्ना पर तुम्हारे लिए क्या लिखा जाएगा? (अहमद : 2/357; वसनदुहू हसन; अल्अदबुल मुफ़रद : 784) तमाम उमूर का मालिक अल्लाह तआला है दुनिया और आख़िरत में तसर्रुफ़ उसी का है जो उसने चाहा हो रहा है और जो चाहेगा होगा। फिर फ़र्माता है कि बग़ैर इजाज़ते इलाही कोई बड़े से बड़ा फ़रिश्ता भी किसी के लिए सिफ़ारिश का लफ़्ज़ भी नहीं निकाल सकता। जैसे फ़र्माया (मन ज़ल्लज़ी...) कौन है जो उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश पेश कर सके, उसके फ़र्मान बग़ैर किसी को किसी की सिफ़ारिश नफ़ा नहीं दे सकती। पस जबकि बड़े बड़े क़रीबी फ़रिश्तों का यह हाल है तो फिर ऐ नावाक़िफ़ों! तुम्हारे यह बुत और थान क्या नफ़ा पहुँचाएँगे? उनकी पूजा से अल्लाह रोक रहा है। तमाम रसूल और कुल आसमानी किताबें अल्लाह के सिवा औरों की इबादत से रोकना अपना अज़ीमुश्शान मक़्सद बताती हैं, फिर तुम उनको अपना सिफ़ारिशी समझ रहे हो। किस क़द्र ग़लत राह है।

***

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنثَىٰ ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُم بِهِ

مِنْ عِلْمٍ ۖ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾ فَأَعْرِضْ

عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ
الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ
اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ
فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह फ़रिश्तों का ज़नाना (औरतों वाला) नाम मुक़र्रर करते हैं। 927) हालाँकि उन्हें इसका कोई इल्म नहीं वह सिर्फ़ अपने गुमान के पीछे पड़े हुए हैं और बेशक वहम व गुमान हक़ के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं देता। (28) तू उससे मुँह फेर ले जो हमारी याद से मुँह मोड़े और जिनका इरादा सिवा ज़िन्दगानी दुनिया के और कुछ न हो। (29) यही उनके इल्म की इंतिहा है तेरा रब उससे ख़ूब वाक़िफ़ है जो उसकी राह से भटक गया है और वही ख़ूब वाक़िफ़ है उससे भी जो राह याफ़्ता हो गया। 930) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीनों में है अल्लह तआला बदकारों को उनके आमाल का बदला देगा और नेककारों को अच्छा बदला इनायत करेगा। (31) उन लोगों को जो बड़े गुनाहों से बचते हैं और बेहूयाई से भी सिवा किसी छोटे से गुनाह के। बेशक तेरा रब बहुत कुशादा मग़्फ़िरत वाला है वह तुम्हें बख़ूबी जानता है जबकि उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माओं के पेट में बच्चे थे पस तुम अपनी पाकीज़गी आप बयान न करो वही परहेज़गार को ख़ूब जानता है।" (32)

बेईमान लोगों की बातें (आ. 27 से 32) : अल्लाह तआला मुश्रिकीन के इस क़ौल की तर्दीद फ़र्माता है कि अल्लाह के फ़रिश्ते उसकी लड़कियाँ हैं जैसे और जगह है (व जअ़लुल मलाइकत...) यानी अल्लाह के मक़बूल बन्दों फ़रिश्तों को इन्होंने लड़कियाँ ठहरा दी हैं क्या उनकी पैदाइश के वक़्त यह मौजूद थे? इनकी शहादत लिखी जाएगी और इनसे पूछताछ की जाएगी। यहाँ भी फ़र्माया कि यह लोग फ़रिश्तों के ज़नाना नाम

रखते हैं जो इनकी बेइल्मी का नतीजा है सिर्फ़ झूठ खुला बोहतान बल्कि सरीह शिर्क है यह सिर्फ़ इनकी अटकल है और यह ज़ाहिर है कि अटकल पच्चू बातें हक़ के क़ायम मक़ाम नहीं हो सकतीं। हदीस में है गुमान से बचो गुमान बदतरीन झूठ है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब (या अय्युहल्लज़ीना आमनू इज्तनिबू कसीरम् मिनज़्ज़न्न इन्ना बअज़ज़्ज़न्न...) : 6066; सहीह मुस्लिम : 2563; तिर्मिज़ी : 1988; अबूदाऊद : 4917; बैहक़ी : 7/180; अहमद : 2/287; मुअजमुल औसत : 8461) फिर अल्लाह तआला अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माता है कि हक़ से ऐराज़ करने वालों से आप भी ऐराज़ कर लें। उनका मुंतहाए नज़र सिर्फ़ दुनिया की ज़िन्दगी है और जिसका मक़सद यह सुफ़्ली (बेकद्र) दुनिया हो उसका अंजाम कभी नेक नहीं होता। उनके इल्म की ग़ायत भी यही है कि दुनिया तलबी और कोशिशे दुनिया में हर वक़्त मुन्हमिक (बीजी) रहें।

हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं दुनिया उसका घर है जिसका आख़िरत में घर न हो और दुनिया उसका माल है जो आख़िरत में कंगाल हो उसे जमा करने की धुन में वह रहता है जो अक़्ल से ख़ाली हो। (अहमद : 6/71; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; शुअबुल ईमान : 10638; मज्मउज़्ज़वाइद : 10/288; इसकी सनद में दुवैद मज्हूल रावी है और अबू इस्हाक़ मुदल्लस हैं।) एक मंक़ूल दुआ में हुज़ूर (ﷺ) के यह अल्फ़ाज़ भी आये हैं (अल्लाहुम्म तज्अलिद्दुनिया अक्बरा हम्मिना वला मब्लग़ा इल्मिना) परवरदिगार! तू हमारी अहमतर कोशिश और मुंतहाए नज़र और मक़्सदे मालूमात सिर्फ़ दुनिया ही को न कर। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब दुआउ (अल्लाहुम्म अक़्सिम लना मिन ख़श्यतिका मा यहूल...) : 3502; वहुव सहीहुन हाकिम : 1/528) फिर फ़र्माता है कि जमीअ मख़्लूक़ात का ख़ालिक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है जिसे चाहे हिदायत दे जिसे चाहे ज़लालत दे सब कुछ उसकी क़ुदरत इल्म और हिक्मत से हो रहा है वह आदिल है अपनी शरीअत में और अंदाज़ मुक़र्रर करने में ज़ुल्म व बेइंसाफ़ी नहीं करता।

दुनिया जहान में बादशाहत अल्लाह की है : मालिके आसमान व ज़मीन बेपरवाह, मुत्लक़ शहनशाह हक़ीक़ी आदिल व ख़ालिक़ हक़ व हक़ कार अल्लाह तआला ही है। हर किसी को उसके आमाल का बदला देने वाला, नेकी पर नेक जज़ा और बदी पर बुरी सज़ा वही देगा उसके नज़दीक भले लोग वह हैं जो उसकी हरामकर्दा चीज़ों और कामों से, बड़े बड़े गुनाहों और बदकारियों व नालाइक़ियों से अलग रहें, उनसे बतक़ाज़ाए बशरियत अगर कभी कोई छोटा सा गुनाह सरज़द हो भी जाए तो परवरदिगार पर्दापोशी करता है और माफ़ कर देता है। जैसे और आयत में है (इन तज्तनिबू कसीरा मा तुन्हौना अन्हू...) अगर तुम उन कबीरा गुनाहों से पाकदामन रहे जिनसे तुम्हें रोक दिया गया है तो तुम्हारी बुराइयाँ माफ़ कर देंगे और तुम्हें इज़्ज़त वाली जगह यानी जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

छोटे गुनाह : यहाँ भी फ़र्माया मगर छोटी छोटी लग़्ज़िशें और इंसानियत की कमज़ोरियाँ माफ़ हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं लमम की तफ़्सीर मेरे ख़्याल में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की बयानकर्दा उस हदीस से ज़्यादा अच्छी कोई नहीं कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने इब्ने आदम पर उसका ज़िना का हिस्सा लिख दिया है जिसे वह यक़ीनन पाकर ही रहेगा। आँखों का ज़िना देखना है ज़ुबान

का बोलना है दिल उमंग और आरज़ू करता है। अब शर्मगाह ख़्वाह उसे सच्चा कर दिखाए या झूठा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल इस्तिअज़ान, बाब ज़िना अल्जवारेह दूनल फ़र्ज : 6243; सहीह मुस्लिम : 2657; अहमद : 2/276; इब्ने हिब्बान : 4420) हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं आँखों का ज़िना नज़र करना है और होंठों का ज़िना बोसा लेना है और हाथों का ज़िना पकड़ना और पैरों का ज़िना चलना है और शर्मगाह उसे सच्चा कर देती है या झूठा कर देती है। यानी अगर शर्मगाह को न रोक सका और बदकारी कर बैठा तो सब हिस्से का ज़िना साबित हो गया, और अगर अपने उस हिस्से को रोक लिया तो वह सब लमम में दाख़िल है। (तब्री : 22/535; हाकिम : 2/470; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अल्अअमश मुदल्लस अन्अन) हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) से मरवी है कि लमम बोसा लेना, छेड़ना देखना और मस करना है और जब शर्मगाहें मिल गईं तो गुस्ल वाजिब हो गया और ज़िनाकारी का गुनाह साबित हो गया। (तब्री : 22/537) हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से इस जुम्ला की तफ़्सीर यही मरवी है यानी जो पहले गुज़र गया। मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं गुनाह से आलूदगी हो फिर छोड़ दे तो लमम में दाख़िल है। शायर कहता है,

इन तग़्फ़िरिल्लाहुम्मा तग़्फ़िर ज़म्मा   व अय्यु अब्दिल्लका मा अलम्मा

ऐ अल्लाह! जबकि तू माफ़ फ़र्माता है तो सब ही कुछ माफ़ कर दे वरना यूँ आलूदा इस्याँ तो हर इंसान है।

मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं अहले जाहिलियत अपने तवाफ़ में उमूमन इस शेअर को पढ़ा करते थे। इब्ने जरीर में हुज़ूर (ﷺ) का इस शेअर को पढ़ना भी मरवी है। तिर्मिज़ी में भी यह मरवी है और इमाम तिर्मिज़ी इसे हसन सहीह ग़रीब कहते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिन्नज्म : 3284; वसनदुहू सहीहुन) बज़्ज़ार (रह.) फ़र्माते हैं हमें इसकी और सनद मालूम नहीं सिर्फ़ इसी सनद से मरफ़ूअन मरवी है इब्ने अबी हातिम और बग़वी ने भी इसे नक़्ल किया है। बग़वी ने इसे सूरह तंज़ील में रिवायत किया है लेकिन इस मरफ़ूअ की सेहत में नज़र है। एक रिवायत में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया मुराद यह है कि ज़िना से नज़दीकी होने के बाद तौबा करे और फिर न लौटे, चोरी के क़रीब हो जाने के बाद चोरी न की और तौबा करके लौट आया। इसी तरह शराब पीने के क़रीब होकर शराब न पी और तौबा करके लौट गया यह सब अल्माम हैं। (तब्री : 22/535; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) जो एक मोमिन को माफ़ हैं। हज़रत हसन (रह.) से भी यही मरवी होना बयान किया गया है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुराद इससे शिर्क के अलावा गुनाह हैं। इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) फ़र्माते हैं दो हदों के बीच हद ज़िना और अज़ाबे आख़िरत। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि हर वह चीज़ जो दो हदों के बीच हो हदे दुनिया और हदे आख़िरत। नमाज़ें उसका कफ़्फ़ारा बन जाती हैं और वह हर वाजिब कर देने वाली से कम है। हदे दुनिया तो वह है जो किसी गुनाह पर अल्लाह ने दुनियावी सज़ा मुक़र्रर कर दी है और हदे आख़िरत वह है कि जिस चीज़ पर अल्लाह ने जहन्नम वाजिब कर दी है और उसकी सज़ा दुनिया में मुक़र्रर नहीं की। तेरे रब की बख़्शिश बहुत वसीअ है हर चीज़ को घेर लिया है और तमाम गुनाहों पर उसका एहाता है। जैसे फ़र्मान है (या इबादियल्लज़ीना असरफ़ू...) ऐ मेरे वह बन्दो! जिन्होंने अपनी जान पर इसराफ़ किया है अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न होना अल्लाह तआला तमाम

गुनाहों को बख़्श देता है और वह बड़ी बख़्शिश वाला और बड़ा रह़म वाला है। फिर फ़र्माया वह तुम्हें देखने वाला और तुम्हारे हर ह़ाल का इल्म रखने वाला और तुम्हारे हर कलाम को सुनने वाला और तुम्हारे तमामतर आमाल से वाक़िफ़ है जबकि उसने तुम्हारे बाप आदम (عليه السلام) को ज़मीन से पैदा किया और उनकी पीठ से उनकी औलाद निकाली जो चींटियों की त़रह़ फैल गई फिर उनकी तक़्सीम करके दो गिरोह बना दिये एक जन्नत के लिए और एक जहन्नम के लिए। और जबकि तुम अपनी माँ के पेट में बच्चे थे उसके मुक़र्ररकर्दा फ़रिश्ते ने रोज़ी, उम्र, अमल, नेकी बदी लिख ली। बहुत से बच्चे पेट से ही गिर जाते हैं। बहुत से दूध पीने की ह़ालत में फ़ौत हो जाते हैं बहुत से दूध छुटने के बाद बुलूग़त से पहले ही चल बसते हैं। बहुत से ऐन जवानी में दारे दुनिया ख़ाली कर जाते हैं अब जबकि हम उन मनाज़िल को तै कर चुके और बुढ़ापे में आ गए जिसके बाद कोई मंज़िल मौत के सिवा नहीं अब भी अगर न संभलें तो हमसे बढ़कर ग़ाफ़िल कौन है? ख़बरदार! तुम अपने नफ़्स का तज़्किया न करो अपने नेक आमाल की ता'रीफ़ें करने न बैठ जाओ। अपने आपको सिहारने न लगो, जिसके दिल में रब का डर है उसे रब ही ख़ूब जानता है।

ख़ुद को नेक न कहो : और आयत में है (अलम तरा इलल्लज़ीना युज़क्कूना अंफ़ुसहुम बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशाउ वला युज़्लमूना फ़तीला) क्या तूने उन लोगों को न देखा जो अपने नफ़्स की पाकीज़गी आप बयान करते हैं वह नहीं जानते कि यह अल्लाह का हाथ है जिसे वह चाहे बरतरे आला और पाक साफ़ कर दे किसी पर कुछ ज़ुल्म न होगा। मुह़म्मद बिन अ़म्र बिन अ़त़ा (रह़.) फ़र्माते हैं मैंने अपनी लड़की का नाम बर्रा रखा तो मुझसे ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते अबू सलमा (रज़ि.) ने फ़र्माया, रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इस नाम से मना फ़र्माया है ख़ुद मेरा नाम भी बर्रा था जिस पर आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुम ख़ुद अपनी बरतरी और पाकी आप न बयान करो तुममें से नेकी वालों का इल्म पूरे त़ौर पर अल्लाह ही को है। लोगों ने कहा फिर हम उसका क्या नाम रखें? फ़र्माया ज़ेनब नाम रखो। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल अदब, बाब इस्तिह़बाबु तग़य्युरिल इस्मिल क़बीह़ इला ह़सन...: 2142) मुस्नद अह़मद में है कि हुज़ूर (ﷺ) के सामने किसी ने एक शख़्स की बहुत ता'रीफ़ें बयान कीं। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अफ़सोस! तूने इसकी गर्दन मारी। कई बार यही फ़र्माकर इर्शाद फ़र्माया कि अगर किसी की ता'रीफ़ करनी ही हो तो यूँ कहो मेरा गुमान फ़लाँ की त़रफ़ ऐसा है ह़क़ीक़ी इल्म अल्लाह ही को है फिर अपनी मालूमात बयान करो। ख़ुद किसी की पाकीज़गियाँ बयान करने न बैठ जाओ। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुश शहादात, बाब इज़ा ज़का रजुलुन रजुलन कफ़ा : 2662; सह़ीह़ मुस्लिम : 3000; अबूदाऊद : 4805; अह़मद : 5/46; इब्ने ह़िब्बान : 5766) अबूदाऊद और मुस्लिम में है कि एक शख़्स ने ह़ज़रत उ़स्मान (रज़ि.) के सामने उनकी ता'रीफ़ें बयान करना शुरू कर दीं। इस पर ह़ज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद (रज़ि.) उसके मुँह पर मिट्टी भरने लगे और फ़र्माया, हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) का हुक्म है कि हम ता'रीफ़ें करने वालों के मुँह में मिट्टी भर दें। (सह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अन्नही अ़निल मदह़ इज़ा काना फ़ीहि इफ़रात़ : 3002; अबूदाऊद : 4804; तिर्मिज़ी : 2393; इब्ने माजा : 3742; अह़मद : 5/6; अल्अदबुल मुफ़रद : 339)

اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ
يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِىْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِىْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ
وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾ وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ
يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾

तर्जुमा : "क्या तूने उसे देखा जिसने मुँह मोड़ लिया (33) और बहुत कम दिया और सख़्त दिल हो गया। (34) क्या उसे इल्मे ग़ैब है कि वह सब कुछ देख रहा है? (35) क्या उसे उस चीज़ की ख़बर नहीं दी गई जो मूसा (عليه السلام) के (36) और वफ़ादार इब्राहीम के सहीफ़ों में था (37) कि कोई शख़्स किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा (38) और यह कि हर इंसान के लिए सिर्फ़ वही है जिसकी कोशिश ख़ुद उसने की। (39) और यह कि बेशक उसकी कोशिश अन्क़रीब देखी जाएगी (40) फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।" (41)

दीन से मुँह मोड़ने वाला (आ. 33 से 41) : अल्लाह तआला उन लोगों की मज़म्मत कर रहा है जो अल्लाह तआला की फ़र्मांबरदारी से मुँह मोड़ लें सच्चाई क़बूल न करें न नमाज़ें अदा करें बल्कि झुठलाएँ ऐराज़ करें, अल्लाह की राह में बहुत ही कम दें, दिल को नसीहत क़बूल करने वाला न बनाएँ। कभी कुछ कहना मान लिया, फिर रस्सियाँ काटकर अलग हो गए। अरब अकदा उस वक़्त कहते हैं मस्लन कुछ लोग कुँआ खोद रहे हों दरम्यान में कोई सख़्त चट्टान आ जाए और वह दस्तबरदार हो जाएँ। फ़र्माता है क्या इसके पास इल्मे ग़ैब है जिससे इसने जान लिया कि अगर मैं अल्लाह की राह में अपना माल दूँगा तो ख़ाली हाथ रह जाऊँगा। यानी दरअसल यूँ नहीं बल्कि यह सदक़े से नेकी से और भलाई से अज़रूए बुख़्ल के और तमअ के और ख़ुदग़र्ज़ी के और नामर्दी व बेदिली के रुक रहा है। हदीस में है ऐ बिलाल! ख़र्च कर और अर्श वाले से फ़क़ीर बना देने का डर न रख। (तब्रानी : 1020; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; क़ैस बिन रबीअ ज़ईफ़ रावी है।) ख़ुद क़ुरआन में है (वमा अन्फ़क़्तुम मिन शैइन फ़हुवा युख़्लिफ़्हू वहुव ख़ैरुर्राज़िक़ीन) तुम जो कुछ ख़र्च करोगे अल्लाह तआला तुम्हें उसका बदला देगा और वही बेहतरीन राज़िक़ है (वफ़्फ़ा) के मअनी एक तो यह किये गए हैं कि उन्हें हुक्म किया गया था वह सब उन्होंने पहुँचा दिया। फ़ायदा : दूसरे मअनी यह बयान किये गए हैं कि जो हुक्म मिला उसे बजा लाए। ठीक यह है कि यह दोनों ही मअनी दुरुस्त हैं जैसे और आयत में है (व इज़िब्तला...) इब्राहीम (عليه السلام) को जब कभी जिस किसी आज़माइश के साथ उसके रब ने आज़माया आपने कामयाबी के साथ उसमें

नम्बर लिये। यानी हर हुक्म को बजा लाये हर मना से रुके रहे। रब की रिसालत पूरी तरह पहुँचा दी, पस अल्लाह ने उन्हें इमाम बनाकर दूसरों को उनका ताबेदार बना दिया। जैसे इर्शाद हुआ (सुम्मा अवहैना इलैका अनित्तबिअ मिल्लत इब्राहीमा हनीफ़ंव्व मा काना मिनल मुश्रिकीन) फिर हमने तेरी तरफ़ वह्य की कि मिल्लते इब्राहीम हनीफ़ की पैरवी कर जो मुश्रिक न था। इब्ने जरीर (रह.) की एक मरफ़ूअ हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माया कि हर दिन वह दिन निकलते ही चार रकअत अदा किया करते थे यही उनकी वफ़ादारी थी। (वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन इसकी सनद में जअफ़र बिन ज़ुबैर सख़्त ज़ईफ़ रावी है।) तिर्मिज़ी में एक हदीसे क़ुदसी है कि ऐ इब्ने आदम! तू अव्वल दिन में मेरे लिए चार रकअत नमाज़ अदा कर ले मैं आख़िर दिन तक तेरी किफ़ायत करूँगा। (अबूदाऊद, किताबुत्ततव्वुअ, बाब सलातुज़्ज़ुहा : 1289; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 475) इब्ने अबी हातिम की हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया हज़रत इब्राहीम (عليه السلام) के लिए लफ़्ज़ (वफ़्फ़ा) इसलिए फ़र्माया कि वह हर सुबह शाम इन कलिमात को पढ़ा करते थे (फ़सुब्हानल्लाहि हीना तुम्सूना व हीना तुस्बिहून) यहाँ तक कि हुज़ूर (ﷺ) ने आयत ख़त्म की। (अहमद : 3/439; वसनदुहू ज़ईफ़ुन फ़ीहि ज़िबान बिन फ़ाइद व रुश्दैन बिन सअद ज़ईफ़ान; तबरी : 22/545; तबरानी : 427)फिर बयान हो रहा है कि सुहुफ़े इब्राहीम व मूसा में क्या था? उनमें यह था कि जिस किसी ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया मस्लन शिर्क व कुफ़्र किया या गुनाहे सग़ीरा या कबीरा किया तो उसका वबाल ख़ुद उस पर है उसका यह बोझ कोई और न उठाएगा। जैसे क़ुरआने करीम में है (व इन तदउ मुस्क़लतुन...) अगर कोई बोझल अपने बोझ की तरफ़ किसी को बुलाएगा तो उसमें से कुछ न उठाया जाएगा अगरचे वह क़राबतदार हो। उन सहीफ़ों में यह भी था कि इंसान के लिए सिर्फ़ वही है जो उसने हासिल किया यानी जिस तरह उस पर दूसरे का बोझ नहीं लादा जाएगा दूसरों की बदआमालियों में यह भी नहीं पकड़ा जाएगा। और इसी तरह दूसरे की नेकी भी इसे कुछ फ़ायदा न देगी।

कोई किसी का बोझ न उठाएगा और मसला ईसाले सवाब : हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह.) और उनके मुत्तबेईन ने इस आयत से इस्तिदलाल किया है कि क़ुरआन ख़्वानी का सवाब मुर्दों को पहुँचाया जाए तो नहीं पहुँचता इसलिए कि न तो यह उनका अमल है न कसब। यही वजह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने न उसका जवाज़ बयान किया न अपनी उम्मत को उस पर रग़बत दिलाई, न उन्हें उस पर आमादा किया न तो किसी सरीह फ़र्मान के ज़रिये से न किसी इशारे किनाये से। ठीक इसी तरह सहाबा किराम (रज़ि.) में से भी किसी एक से यह साबित नहीं कि उन्होंने क़ुरआन पढ़कर उसके सवाब का हदिया मय्यित के लिए भेजा हो। अगर यह नेकी होती और मुताबिक़े शरअ अमल होता तो हमसे बहुत ज़्यादा सब्क़त नेकियों की तरफ़ करने वाले सहाबा किराम (रज़ि.) थे। साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिए कि नेकियों के काम क़ुरआन व हदीस के साफ़ फ़र्मान से ही साबित होते हैं किसी क़िस्म की राय क़यास का उनमें कोई दख़ल नहीं। हाँ! दुआ और सदक़े का सवाब मय्यित को पहुँचता है इस पर इज्माअ है और शारेअ (عليه السلام) के अल्फ़ाज़ से साबित है जो हदीस सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) की रिवायत से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, इंसान

के मरने पर उसके आमाल मुंक़तअ हो जाते हैं लेकिन तीन चीज़ें नेक औलाद जो उसके लिए दुआ करती रहे या वह सदक़ा जो उसके इंतिक़ाल के बाद भी जारी रहे या वह इल्म जिससे नफ़ा उठाया जाता रहे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल वसिय्यत, बाब मा यल्हक़ुल इंसानु मिनस्सवाबि बअद वफ़ातिही : 1631; अबूदाऊद : 2880; तिर्मिज़ी : 1376; अहमद : 2/372; इब्ने हिब्बान : 3016; दारमी : 1/148) इसका मतलब यह है कि दरहक़ीक़त यह तीनों चीज़ें भी ख़ुद मय्यित की सई उसकी कोशिश और उसी का अमल हैं यानी किसी और के अमल का अज्र उसे नहीं पहुँच रहा। एक हदीस में है कि सबसे बेहतर इंसान का खाना वह है जो उसने अपने हाथों हासिल किया हो उसकी अपनी कमाई हो और इंसान की औलाद भी उसकी कमाई और उसी की हासिलकर्दा चीज़ है। (अबूदाऊद, किताबुल बुयूअ, बाब अर्रजुल यअकुलु मिम मालि वलदिही : 3528; वहुव सहीहुन; तिर्मिज़ी : 1358; इब्ने माजा : 2290) पस साबित हुआ नेक औलाद जो उसके मरने के बाद उसके लिए दुआ करती है वह दरअसल उसी का अमल है। इसी तरह सदक़ा जारिया मस्लन वक़्फ़ वग़ैरह कि वह भी इसके अमल का असर है और इसी का किया हुआ वक़्फ़ है। ख़ुद क़ुरआन फ़र्माता है (इन्ना नह्नु नुह्यिल मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसारहुम...) यानी हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं और लिखते हैं जो आगे भेज चुके और जो निशान उनके पीछे रहे। इससे साबित होता है कि उनके अपने पीछे छोड़े हुए निशानाते नेक का सवाब उन्हें पहुँचता रहता है। रहा वह इल्म जिसे उसने लोगों को फैलाया और उसके इंतिक़ाल के बाद भी लोग उस पर आमिल और कारबंद रहे वह भी दरअसल उसी की सई और उसी का अमल है जो उसके बाद बाक़ी रहा और उसे सवाब पहुँचता रहा। चुनाँचे सहीह हदीस में है कि जो शख़्स हिदायत की तरफ़ बुलाए और जितने लोग उसकी ताबेदारी करें उन सबके अज्र के बराबर उसे अज्र मिलता है यहाँ तक कि उनके अज्र घटते नहीं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म, बाब मन सन्ना सुन्नतन हसनतन अव सय्यिअत...: 2674; अबूदाऊद : 4609; इब्ने माजा : 206) फिर फ़र्माता है उसकी कोशिश क़ियामत के दिन जाँची जाएगी उस दिन उसका अमल देखा जाएगा। जैसे फ़र्माया (वक़ुलिअमलू...) यानी कह दे कि तुम अमल किये जाओ अल्लाह तुम्हारे आमाल देखेगा और उसका रसूल और ईमान वाले और बहुत जल्द तुम छुपे खुले के जानने वाले अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे। फिर वह तुम्हें तुम्हारे आमाल से ख़बरदार कर देगा यानी हर नेकी की जज़ा और हर बदी की सज़ा देगा। यहाँ भी फ़र्माया फिर उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा।

***

وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾
وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ

الْاُخْرٰى ۝٤٧ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝٤٨ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۝٤٩ وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا
الْاُوْلٰى ۝٥٠ وَثَمُوْدَاۡ فَمَآ اَبْقٰى ۝٥١ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ وَاَطْغٰى
۝٥٢ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۝٥٣ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۝٥٤ فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝٥٥

तर्जुमा : ''और यह कि तेरे रब की तरफ़ पहुँचना है (42) और यह कि वही हँसाता है और वही रुलाता है (43) और यह कि वही मारता है और जिलाता है (44) और यह कि उसी ने जोड़ा यानी नर व मादा पैदा किये (45) नुत्फ़े से जबकि वह टपकाया जाता है (46) और यह कि उसी के ज़िम्मे है दोबारा पैदा करना (47) और यह कि वही तवंगर (मालदार) बनाता है और सरमाया देता है (48) और यह कि वही शिअ़रा (सितारे) का रब है (49) और यह कि उसी ने अगले आदियों को हलाक किया है (50) और समूद को भी (जिनमें से) एक को भी बाक़ी न रखा। (51) और उससे पहले क़ौमे नूह (ﷺ) को, यक़ीनन वह बड़े ज़ालिम और सरकश थे (52) और मुअतफ़िका (शहर) उसी ने उलट दिया। (53) फिर उस पर छा गया जो छाया। (54) पस ऐ इंसान! तू अपने रब की किस किस नेअ़मत में झगड़ेगा?'' (55)

आख़िरकार अल्लाह के पास ही जाना है (आ. 42 से 55) : फ़र्मान है कि बाज़गश्त आखिर अल्लाह की तरफ़ है। क़ियामत के दिन सबको लौटकर उसी के सामने पेश होना है। हज़रत मआज़ (रज़ि.) ने क़बीला बनू ऊद में ख़ुत्बा पढ़ते हुए फ़र्माया, ऐ बनी ऊद! मैं अल्लाह के पैग़म्बर का क़ासिद बनकर तुम्हारी तरफ़ आया हूँ, तुम यक़ीन करो कि तुम्हारा सबका लौटना अल्लाह की तरफ़ है फिर या तो जन्नत में पहुँचाए जाओ या जहन्नम में धकेले जाओ। (इब्ने अबी हातिम, हाकिम : 1/83; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुस्लिम बिन ख़ालिद ज़ईफ़ुन मशहूर) बग़वी में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने इस आयत की तफ़्सीर में फ़र्माया अल्लाह तआ़ला की ज़ात में फ़िक्र करना जाइज़ नहीं। जैसे और हदीस में है मख़्लूक़ पर ग़ौर भरी नज़रें डालो लेकिन ज़ाते ख़ालिक़ में गहरे न उतरो। उसे अ़क्ल और इदराक फ़िक्रो ज़हन नहीं पा सकता। (तफ़्सीर बग़वी : 7/412; वसनदुहू ज़ईफ़ुन) गो इन लफ़्ज़ों से यह हदीस महफ़ूज़ नहीं है मगर सहीह हदीस में भी यह मज़्मून मौजूद है उसमें है कि शैतान किसी के पास आता है और कहता है उसे किसने पैदा किया? और उसे किसने पैदा किया? यहाँ तक कि कहता है कि अल्लाह तआ़ला को किसने पैदा किया? और जब तुममें से किसी के दिल में यह वस्वसा पैदा हो तो (अऊ़ज़ु) पढ़ ले और इस ख़्याल को दिल से निकाल दे। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब सिफ़तु इब्लीस व जुनूदिही : 3276; सहीह मुस्लिम : 134) सुनन की एक हदीस में है अल्लाह की मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करो लेकिन ज़ाते इलाही में ग़ौरो फ़िक्र न करो।'' (लम अजिद हू फिस्सुनन, हिल्यतुल औलिया

लि अबी नुऐम : 6/66,67; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; लि इंक़िताआ; शहर बिन हुवेशिब लम युल्क़ अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.)) सुनो! अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता पैदा किया है जिसके कान की लौ से लेकर मूँढे तक तीन सौ साल का रास्ता है अव कमा क़ाल!

ज़िन्दगी और मौत का मालिक अल्लाह है : फिर फ़र्माता है कि बन्दों में हँसने रोने का माद्दा और उनके अस्बाब भी उसी ने पैदा किये हैं जो बिलकुल मुख़्तलिफ़ हैं। वही मौत व ज़िन्दगी का ख़ालिक़ है जैसे (अल्लज़ी ख़लक़ल मौता वल हयात) उसने मौत व हयात को पैदा किया, उसी ने नुत्फ़े से हर जानदार को जोड़ा जोड़ा बनाया जैसे और जगह फ़र्मान है (अयहसबल इंसानु अंय्युत्रका सूदा...) क्या इंसान समझता है कि वह बेकार छोड़ दिया जाएगा क्या वह मनी का क़तरा न था जो (रहमे मादर में) टपकाया जाता है? फिर क्या वह बस्ता ख़ून न था? फिर अल्लाह ने उसे पैदा किया और दुरुस्त किया, और उससे जोड़े या नर व मादा बनाए। क्या (ऐसी कुदरतों वाला) अल्लाह इस बात पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे? फिर फ़र्माता है उसी पर दोबारा ज़िन्दा करना है यानी जैसे उसने पहली बार पैदा किया है उसी तरह मार डालने के बाद दोबारा ज़िन्दा करने पर भी उसके ज़िम्मा है। उसी ने अपने बन्दों को ग़नी बना दिया है और माल उनके क़ब्ज़े में दे दिया है जो उनके पास ही बतौर पूँजी के रहता है। अक्सर मुफ़स्सिरीन के कलाम का ख़ुलासा इस जगह पर यही है। (तब्री : 5/548) गो कुछ से मरवी है कि उसने माल दिया और गुलाम दिये, उसने दिया और ख़ुश हुआ उसे ग़नी करके और मख़्लूक़ को उसका दस्त निगर बना दिया। जिसे चाहा ग़नी किया जिसे चाहा फ़क़ीर। लेकिन यह पिछले दोनों क़ौल लफ़्ज़ से कुछ ज़्यादा मुताबिक़त नहीं रखते।

शिअरा उस रोशन सितारे का नाम है जिसे मर्ज़मुल जौज़ाअ भी कहते हैं। कुछ अरब उसकी पूजा करते थे। (तब्री : 22/551) आदे ऊला यानी क़ौमे हूद को जिसे आद बिन इरम बिन साम बिन नूह कहा जाता है उसी ने उनके तुग़ियान की बिना पर तबाह कर दिया। जैसे फ़र्माया (अलम तरा कैफ़ा फ़अल रब्बुक बिआदिन..) यानी क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने आद के साथ क्या किया? यानी इरम के साथ जो बड़े क़द वाले थे जिनका मिस्ल शहरों में पैदा नहीं किया गया था। यह क़ौम बड़ी क़वी और बड़ी ज़ोरावर थी, साथ ही अल्लाह की बड़ी नाफ़र्मान और रसूल से बड़ी सरताब थी, उन पर हवा का अज़ाब आया, जो सात रातें और आठ दिन बराबर रहा। इसी तरह समूदियों को भी उसने हलाक किया। जिसमें से एक भी बाक़ी न बचा। और उनसे पहले क़ौमे नूह तबाह हो चुकी है जो बड़े नाइंसाफ़ और शरीर थे, और लूत की बस्तियाँ जिन्हें रब क़ह्हार ने ज़ेरो ज़बर कर दिया और आसमानी पत्थरों से सब बदकारों को हलाक कर दिया, उन्हें एक चीज़ ने ढाँप लिया यानी पत्थरों ने जिनकी बारिश उन पर बरसी और बुरे हालों तबाह हुए। उन बस्तियों में चार लाख आदमी आबाद थे आबादी की कुल ज़मीन आग और गंधक और तेल बनकर उन पर भड़क उठी। हज़रत क़तादा (रह.) का यही क़ौल है जो बहुत ही ग़रीब सनद से इब्ने अबी हातिम में मरवी है। फिर फ़र्माया फिर तू इंसान अपने रब की किस किस नेअमत में झगड़ेगा? कुछ कहते हैं ख़िताब नबी (ﷺ) से है। लेकिन ख़िताब को आम रखना बहुत औला है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) भी आम रखने को ही पसंद फ़र्माते हैं।

هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝٥٦ اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝٥٧ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
كَاشِفَةٌ ۝٥٨ اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝٥٩ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝٦٠ وَاَنْتُمْ
سٰمِدُوْنَ ۝٦١ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝٦٢ {السجدة}

तर्जुमा : ''यह नबी डराने वाले हैं पहले डराने वालों में से। (56) क़ियामत नज़दीक आ गई। (57) अल्लाह के सिवा उसका खोल दिखाने वाला और कोई नहीं (58) पस क्या तुम इस बात से ताज्जुब करते हो? (59) और हँस रहे हो? रोते नहीं? (60) बल्कि तुम खेल रहे हो। (61) अब अल्लाह के सामने सज्दे करो और उसी की इबादत करो।'' (62)

हुज़ूर (ﷺ) नज़ीर (डराने वाले) बनकर आये (आ. 56 से 62) : यह ख़ौफ़ डर से आगाह करने वाले हैं यानी हुज़ूर (ﷺ) आपकी रिसालत भी ऐसी ही है जैसे आप (ﷺ) के पहले के रसूलों की रिसालत थी। जैसे और आयत में है (कुल मा कुन्तु बिदअम् मिर्रुसुल) यानी मैं कोई नया रसूल तो हूँ नहीं, रिसालत मुझसे शुरू नहीं हुई बल्कि दुनिया में मुझसे पहले भी बहुत से रसूलुल्लाह आ चुके हैं। क़रीब आने वाले का वक़्त आ लगा यानी क़ियामत क़रीब आ गई। न तो उसे कोई दूर कर सके न उसके आने के सही वक़्ते मुअय्यन का किसी को इल्म है। नज़ीर अरबी में उसे कहते हैं मस्लन एक जमाअत है जिसमें से एक शख़्स ने कोई डरावनी चीज़ देखी और अपनी क़ौम को उससे आगाह करता है यानी डर और ख़ौफ़ की ख़बर देने वाला। जैसे और आयत में है (इन हुवा इल्ला नज़ीरुल्लकुम बैना यदय अज़ाबिन शदीद) मैं तुम्हें सख़्त अज़ाब से ख़बरदार करने वाला हूँ। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब अल्इंतिहाउ अनिल मआसी : 6482; सहीह मुस्लिम : 2283) हदीस में है तुम्हें खुल्लम खुल्ला डराने वाला हूँ। यानी जिस तरह कोई शख़्स किसी बुराई को देख ले कि वह क़ौम के क़रीब पहुँच चुकी है और फिर जिस हालत में हो उसी में दौड़ा भागा आ जाए और क़ौम को दफ़्अतन मुतनब्बा कर दे कि देखो! वह बला आ रही है फ़ौरन तदारुक कर लो, इसी तरह क़ियामत के होलनाक अज़ाब भी लोगों की ग़फ़्लत की हालत में उनसे बिलकुल क़रीब हो गए हैं और हुज़ूर (ﷺ) उन अज़ाबों से होशियार कर रहे हैं, जैसे उसके बाद की सूरत में है (इक़्तरबतिस्साअतु) क़ियामत क़रीब आ चुकी।

मुस्नद अहमद की हदीस में है लोगों! गुनाहों को छोटा और हक़ीर जानने से बचो। सुनो! छोटे छोटे गुनाहों की मिसाल ऐसी है जैसे एक क़ाफ़िला किसी जगह उतरा सब इधर उधर चले गए और लकड़ियाँ समेटकर थोड़ी थोड़ी ले आये। तो गो हर एक के पास लकड़ियाँ कम कम हैं लेकिन जब वह सब जमा कर ली जाएँ तो एक अंबार लग जाता है जिससे देगें की देगें पक जाएँ। इसी तरह छोटे छोटे गुनाह जमा होकर ढेर लग

जाता है और अचानक उस गुनहगार को पकड़ लिया जाता है और यह हलाक हो जाता है। और ह़दीस में है मेरी और क़ियामत की मिसाल ऐसी है फिर आप (ﷺ) ने अपनी शहादत की और बीच वाली उँगली उठाकर उनका फ़ासला दिखाया। मेरी और क़ियामत की मिसाल दो घोड़ों की सी है। मेरी और आख़िरत के दिन की मिसाल ठीक इस त़रह़ है जिस त़रह़ एक क़ौम ने किसी शख़्स को त़लाये पर भेजा, उसने दुश्मन के लश्कर को बिलकुल नज़दीक की कमीनगाह में छापा मारने के लिए तैयार देखा यहाँ तक कि उसे डर लगा कि मेरे पहुँचने से पहले ही कहीं यह न पहुँच जाएँ तो वह एक टीले पर चढ़ गया और वहीं कपड़ा हिला हिलाकर उन्हें इशारे से बतला दिया कि ख़बरदार हो जाओ दुश्मन सिर पर मौजूद है। पस मैं ऐसा ही डराने वाला हूँ। (अह़मद : 5/331; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; अस्सनदु मुर्सलुन व शक रावी फ़ी इत्तिसालिही) इस ह़दीस की शहादत में और भी बहुत सी ह़सन और स़ह़ीह़ ह़दीसें मौजूद हैं।

क़ुरआन से मुँह न फेरो : फिर मुश्रिकीन के उस काम पर इंकार फ़र्माया कि वह क़ुरआन सुनते हैं मगर ऐराज़ करते हैं और बेपरवाही बरतते हैं बल्कि उसकी रह़मत से ताज्जुब के साथ इंकार कर बैठते हैं और उससे मज़ाक़ व हँसी करने लगते हैं। चाहिए यह था कि मिस्ल ईमान वालों के उसे सुनकर रोते, इब्रत ह़ासिल करते, जैसे मोमिनों की ह़ालत बयान की कि वह इस कलामुल्लाह को सुनकर रोते धोते सज्दे में गिर पड़ते हैं और ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ में बढ़ जाते हैं। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं समद गाने को कहते हैं। यह यमनी लुग़त है। आपसे (सामिदून) के मअ़नी ऐराज़ करने वाले और तकब्बुर करने वाले भी मरवी हैं। (त़ब्री : 22/559) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ह़सन (रह़.) फ़र्माते हैं ग़फ़्लत करने वाले। फिर अपने बन्दों को हुक्म देता है कि तौह़ीद व इख़्लास़ के पाबन्द रहो ख़ुज़ूअ ख़ुलूस़ और तौह़ीद के मानने वाले बन जाओ। स़ह़ीह़ बुख़ारी में है हुज़ूर (ﷺ) ने और आपके साथी मुसलमानों ने और मुश्रिकों ने और जिन्न व इंस ने सूरह नज्म के सज्दे के मौक़े पर सज्दा किया। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह नज्म बाब (फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ़बुदू) : 4862) मुस्नद अह़मद में है कि मक्का में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सूरह वन्नज्म पढ़ी। पस आप (ﷺ) ने सज्दा किया और उन लोगों ने भी जो आप (ﷺ) के पास थे। रावी ह़दीस मुत्तलिब बिन अबी वदाआ (रज़ि.) कहते हैं मैंने अपना सिर उठाया और सज्दा न किया यह उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे, इस्लाम के बाद जिस किसी की ज़ुबानी इस सूरह मुबारका की तिलावत सुनते सज्दा करते। यह ह़दीस सुनन नसाई में भी है। (नसाई, किताबुल इफ़्तिताह़, बाबस्सुजूद फ़ी (वन्नज्म) : 959; वहुव ह़दीसुन ह़सन; अह़मद : 6/400)

अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम से सूरह नज्म की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह कमर - 54

आयात : 55 मक्की पैराग्राफ : 7

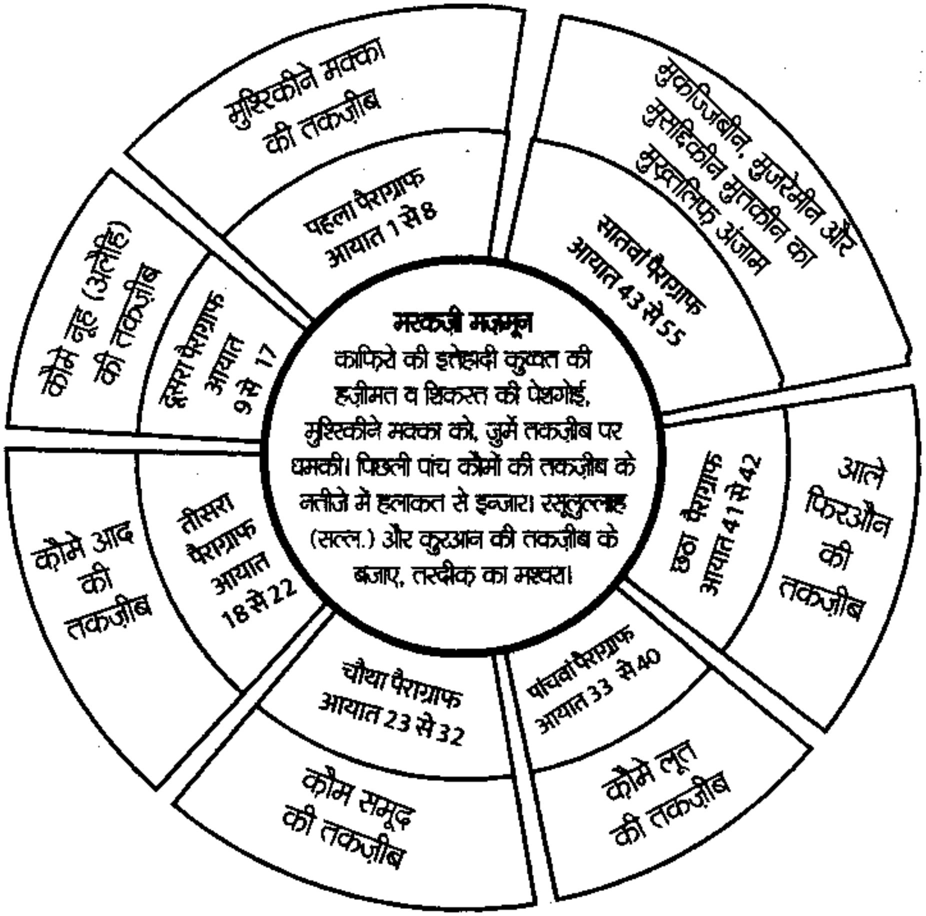

जमानए नुज़ूल

"**सूरह कमर**" हिजरते मदीना से पांच छः साल पहले, ग़ालिबन 7 हिजरी में जब हज़रते आइशा खेला करती थी, रसूलुल्लाह (सल्ल.) के कयामे मक्का के तीसरे दौर (6 से 10 नबवी) में नाज़िल हुई, जब आप (सल्ल.) पर "**साहिर**" होने का इल्ज़ाम था। "**शक्कुलकमर**" का वाकिआ जिस का ज़िक्र पहली आयत में हुवा है, हिजरत से 5 साल पहले मिना के मुकाम पर पेश आया था। ये आख़िरी रसूल (सल्ल.) और आख़िरी किताब की आमद के बाद कुर्बे कयामत की दलील है। ये सूरह "**दौरे तकज़ीब**" में नाज़िल हुई।

तफ़्सीर सूरह क़मर

सूरह का तआरुफ़ : अबू वाक़िद की रिवायत में ये बात आ चुकी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ईदुल अज़्हा और ईदुल फ़ित्र की नमाज़ में सूरह क़ाफ़ और सूरह क़मर पढ़ा करते थे (सहीह मुस्लिम, किताब सलातुल ईदैन, बाब मा युक़रउ फ़ी सलातिल ईदैन : 891) इसी तरह बड़ी बड़ी मज्लिसों में भी आप (ﷺ) इन दोनों की तिलावत फ़र्माया करते थे क्योंकि इसमें वादे वईद की इब्तिदा आफ़रीनश और दोबारा ज़िन्दगी का साथ ही तौहीद और इस्बाते रिसालत वग़ैरह अहम मक़ासिदे इस्लामिया का ज़िक्र है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।''

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ① وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ② وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ③ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ④ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ⑤

तर्जुमा : ''क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद फट गया। (1) यह अगर कोई मोजिज़ा देखते तो मुँह फेर लेते हैं और कह देते हैं कि ज़ोरावर चलता हुआ जादू है। (2) उन्होंने झुठलाया और अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की हर काम ठहरे हुए वक़्त पर मुक़र्रर है। (3) यक़ीनन उनके पास वह ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें डाँट डपट की नसीहत है (4) और कामिल अक़्ल की बात है लेकिन इन डरावनी बातों ने भी कुछ फ़ायदा न दिया।'' (5)

क़ियामत क़रीब आ गई है (आ. 1 से 5) : अल्लाह तआला क़ियामत के क़ुर्ब की और दुनिया के ख़ात्मा की ख़बर देता है जैसे और आयत में है (अता अम्रुल्लाहि फ़ला तस्तअजिलूह) अल्लाह का हुक्म आ चुका है अब तो उसकी तलब की जल्दी छोड़ दो। फ़र्माया (इक़्तरबा लिन्नासि हिसाबुहुम...) लोगों के हिसाब का वक़्त उनके सरों पर आ पहुँचा है और वह अब तक ग़फ़्लत में हैं। इस मज़्मून की हदीसें भी बहुत सी हैं। बज़्ज़ार में है हज़रत अनस (रज़ि.) फ़र्माते हैं सूरज के डूबने के वक़्त जबकि वह थोड़ा सा ही बाक़ी रह गया था

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने अस्हाब को ख़ुत्बा दिया जिसमें फ़र्माया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है दुनिया के गुज़रे हुए हिस्से में और बाक़ी माँदा हिस्से में वही निस्बत है जो इस दिन के गुज़रे हुए और बाक़ी बचे हुए हिस्से में है। (बज़्ज़ार (अल्बहरुज़्ज़ख़ार : 13/462; ह : 7242) व सनदुहू ज़ईफ़ुन; क़तादा मुदल्लस व अन्अन मज्मउज़्ज़वाइद : 10/314) इस हदीस के रावियों में हज़रत ख़ल्फ़ बिन मूसा को इमाम इब्ने हिब्बान सिक़ा रावियों में गिनते तो हैं लेकिन फ़र्माते हैं कभी कभी ख़ता भी कर जाते थे।

दूसरी रिवायत जो इसकी तक़्वियत बल्कि तफ़्सीर भी करती है वह मुस्नद अहमद में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) की रिवायत से है कि असर के बाद जबकि सूरज बिलकुल ग़ुरूब के क़रीब हो चुका था रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारी उम्रें गुज़िश्ता लोगों की उम्रों के मुक़ाबले में इतनी ही हैं जितना यह बाक़ी का दिन गुज़रे हुए दिन के मुक़ाबले में है। (अहमद : 2/116; वसनदुहू हसन लिज़ातिही शरीकल क़ाज़ी हसनुल हदीस इज़ा सरह बिस्सिमाइ व हद्दस क़ब्ल इख़्तिलातिही) मुस्नद की और हदीस में है हुज़ूर (ﷺ) ने अपनी कलिमा की और दरम्यानी उँगली से इशारा करके फ़र्माया कि मैं और क़ियामत इस तरह मब्ऊस किये गए हैं। (सहीह बुख़ारी, किताबुर्रिक़ाक़, बाब क़ौलुन्नबी (ﷺ) (बुइस्तु अना वस्साअतु कहातैन) : 6503; सहीह मुस्लिम : 2950; अहमद : 5/338; इब्ने हिब्बान : 6642) और रिवायत में इतनी ज़्यादती है कि क़रीब था वह मुझसे आगे बढ़ जाए। वलीद बिन अब्दुल मलिक के पास जब हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) पहुँचे तो उसने, क़ियामत के बारे की हदीस का सवाल किया, जिस पर आपने फ़र्माया मैं ने हुज़ूर (ﷺ) से सुना है कि तुम और क़ियामत इन दो उँगलियों की तरह हो। (अहमद : 3/223; वसनदुहू सहीहुन) इसकी शहादत इस हदीस से हो सकती है जिसमें आप (ﷺ) के मुबारक नामों में से एक नाम हाशिर आया है और हाशिर वह है जिसके क़दमों पर लोगों का हश्र होगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब मा जाअ फ़ी अस्माइ रसूलुल्लाहि (ﷺ) : 3532; सहीह मुस्लिम : 2354)

हज़रत बहज़ से मरवी है कि हज़रत उत्बा बिन ग़ज़्वान (रज़ि.) ने अपने ख़ुत्बा में फ़र्माया और कभी कहते रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें ख़ुत्बा सुनाते हुए अल्लाह तआला की हम्दो सना के बाद फ़र्माया, दुनिया के ख़ात्मे का ऐलान हो चुका यह पीठ फेरे भागी जा रही है और जिस तरह बरतन का खाना खा लिया जाए और किनारों में कुछ बाक़ी लगा लिपटा रह जाए उसी तरह दुनिया की उम्र का कुल हिस्सा निकल चुका सिर्फ़ बराये नाम बाक़ी रह गया है। तुम यहाँ से ऐसे जहान की तरफ़ जाने वाले हो जिसे फ़ना नहीं पस तुमसे जो हो सके भलाईयाँ अपने साथ लेकर जाओ। सुनो! हमसे ज़िक्र किया गया है कि जहन्नम के किनारे से एक पत्थर फेंका जाएगा जो बराबर सत्तर साल तक नीचे की तरफ़ जाता रहेगा लेकिन तले तक न पहुँचेगा, अल्लाह की क़सम! जहन्नम का यह गहरा गढ़ा इंसानों से पुर होने वाला है। तुम इस पर ताज्जुब न करो। हमने यह ज़िक्र भी सुना है कि जन्नत की चौखट की दो लकड़ियों के बीच चालीस (40) साल का रास्ता है और वह भी एक दिन इस क़द्र पुर होगी कि भीड़भाड़ नज़र आएगी। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब अद्दुनिया सिज्नुन लिल्मोमिन व जन्नतुन लिल्काफ़िर : 2967)

अलामाते क़ियामत : अबू अबदुर्रहमान सुलमी (रह.) फ़र्माते हैं कि मैं अपने वालिद के साथ मदायन गया और बस्ती से तीन मील के फ़ासले पर हम ठहरे। जुम्आ के लिए मैं भी अपने वालिद के साथ गया। हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ख़तीब थे। आपने अपने ख़ुत्बे में फ़र्माया, लोगों सुनो! अल्लाह तआला का फ़र्मान है कि क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद दो टुकड़े हो गया। बेशक क़ियामत क़रीब आ चुकी है, बेशक चाँद फट गया है। बेशक दुनिया जुदाई का अलार्म बजा चुकी है आज का दिन कोशिश और तैयारी का है कल तो दौड़ भाग करके आगे बढ़ जाने का दिन होगा। मैंने अपने वालिद से पूछा कि क्या कल दौड़ होगी? जिसमें आगे निकलना होगा? मेरे वालिद ने मुझसे फ़र्माया तुम नादान हो, यहाँ मुराद नेक आमाल में एक दूसरे पर सब्क़त ले जाना है। दूसरे जुम्अे को जब हम आये तो भी हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़ि.) को उसी के क़रीब फ़र्माते हुए सुना, उसके आख़िर में यह भी फ़र्माया कि ग़ायत आग है और साबिक़ वह है जो जन्नत में पहले पहुँच गया। चाँद का दो टुकड़े हो जाना। यह हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने का ज़िक्र है जैसे कि मुतवातिर अहादीस में सेहत के साथ मरवी है। हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि यह पाँचों चीज़ें रूम, धुआँ, लुज़ाम, बतशा और चाँद का फटना यह सब गुज़र चुका है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह हामीम दुख़ान बाब (यौम नब्तिशुल बत्शतल कुब्रा) : 4825); सहीह मुस्लिम : 2798) इस बारे की हदीसें सुनिए। मुस्नद अहमद में है कि अहले मक्का ने नबी करीम (ﷺ) से मोजिज़ा तलब किया जिस पर दो बार चाँद शक़्क़ हो गया। जिसका ज़िक्र इन दोनों आयतों में है। (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब इंशिक़ाक़ुल क़मर : 3868; सहीह मुस्लिम : 2825; अहमद : 3/165) मुस्नद में है कि एक टुकड़ा एक पहाड़ पर दूसरा दूसरे पहाड़ पर। उसे देखकर भी जिनकी क़िसमत में ईमान न था बोल पड़े कि मुहम्मद (ﷺ) ने हमारी आँखों पर जादू कर दिया है। लेकिन समझदारों ने कहा कि अगर मान लिया जाए कि हम पर जादू कर दिया है तो तमाम दुनिया के लोगों पर तो नहीं कर सकता। (अहमद : 4/81; तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल कुरआन, बाब वमिन सूरतिल क़मर : 3289; वहुव सहीहुन) और रिवायत में है कि यह वाक़िया हिज्रत से पहले का है। (तब्री : 22/569) और रिवायतें भी बहुत सी हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि हुज़ूर (ﷺ) के ज़माने में चाँद ग्रहण हुआ, काफ़िर कहने लगे चाँद जादू पर हुआ है उस पर यह आयतें (मुस्तमिर्रुन) तक उतरीं। (तब्रानी : 11642; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने जुरैज अन्अन) इब्ने उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं जब चाँद फटा उसके दो टुकड़े हुए एक पहाड़ के पीछे और एक आगे, उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तू गवाह रह। (सहीह मुस्लिम, किताब सिफ़ातुल मुनाफ़िक़ीन, बाब इंशिक़ाक़ुल क़मर : 2801; बिदूनिल मतन; तिर्मिज़ी : 3288)

इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं सब लोगों ने इसे बख़ूबी देखा और आप (ﷺ) ने फ़र्माया, देखो! याद रखना और गवाह रहना। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मनाक़िब, बाब सुआलुल मुश्रिकीन अंय्युरियहुमुन्नबी (ﷺ)...: 3636; सहीह मुस्लिम : 2800) आप फ़र्माते हैं उस वक़्त हुज़ूर (ﷺ) और हम सब मिना में थे। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब इंशिक़ाक़ुल क़मर : 3869; सहीह मुस्लिम : 2800) और रिवायत में है कि मक्का में थे। (सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब इंशिक़ाक़ुल क़मर : 3869)

अबूदाऊद तयालिसी में है कि कुफ़्फ़ार ने यह देखकर कहा कि यह इब्ने अबी कब्शा यानी रसूलुल्लाह (ﷺ) का जादू है लेकिन उनके समझदारों ने कहा मान लो हम पर जादू किया है लेकिन सारी दुनिया पर तो नहीं कर सकता। अब जो लोग सफ़र से आएँ उनसे पूछना कि क्या उन्होंने भी उस रात चाँद को दो टुकड़े देखा है। (मुस्नद तयालिसी : 295; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; मुग़ीरह बिन मिक़्सम मुदल्लस व अन्अन) कुफ़्फ़ार के मज्मओ ने यह तै किया था कि अगर बाहर के लोग आकर यही कहें तो हुज़ूर (ﷺ) की सच्चाई में कोई शक नहीं। अब जो बाहर से आया जब कभी आया जिस तरफ़ से आया हर एक ने उसकी गवाही दी कि हमने अपनी आँखो से देखा है। इसी का बयान इस आयत में है। (तब्री : 22/567) हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) (रज़ि.) फ़र्माते हैं पहाड़ चाँद के दो टुकड़ों के बीच दिखाई देता था। (अहमद : 1/413; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्राहीम नख़ई मुदल्लस व अन्अन; तब्री : 22/567) और रिवायत में है कि आप (ﷺ) ने ख़ास तौर से हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से फ़र्माया कि ऐ अबूबक्र (रज़ि.)! तुम गवाह रहना। (तब्री : 22/569) और मुश्रिकीन ने इस ज़बरदस्त मोजिज़े को भी जादू कहकर टाल दिया। इसी का ज़िक्र इस आयत में है कि यह जब दलील, हुज्जत और बुरहान देखते हैं सहल इंकारी से कह देते हैं कि यह तो चलता हुआ जादू है और मानते नहीं बल्कि हक़ को झुठलाकर अहकामे नबवी के ख़िलाफ़ अपनी ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के पीछे पड़े रहते हैं। अपनी जिहालत और कम अक़्ली से बाज़ नहीं आते। हर अम्र मुस्तक़िर है यानी ख़ैर ख़ैर वालों के साथ और शर्र शर्र वालों के साथ। और यह भी मअनी हैं कि क़ियामत के दिन हर अम्र वाक़ेअ होने वाला है। अगले लोगों के वह वाक़ियात जो दिल को हिला देने वाले और अपने अंदर कामिल इब्रत रखने वाले हैं उनके पास आ चुके हैं उनकी तक्ज़ीब के सिलसिले में उन पर जो बलाएँ उतरीं और उनके जो क़िस्से उन तक पहुँचे वह सरासर इब्रत व नसीहत के ख़ज़ाने हैं और वअज़ व हिदायत से पुर हैं अल्लाह तआला जिसे हिदायत करे और जिसे गुमराह करे उसमें भी उसकी हिक्मते बालिग़ा मौजूद है उन पर शक़ावत लिखी जा चुकी है जिनके दिलों पर मुहर लग चुकी है उन्हें कोई हिदायत पर नहीं ला सकता, जैसे फ़र्माया (कुल फ़लिल्लाहिल हुज्जतुल बालिग़ा...) अल्लाह तआला की दलीलें हर तरह कामिल हैं अगर वह चाहता तो तुम सबको हिदायत पर ला खड़ा करता। और जगह है (फ़मा तुग़्निल आयातु वन्नुज़ुरु अन क़ौमिल ला युअमिनून) बेईमानों को किसी मोजिज़े ने और किसी डरने और डर सुनाने वाले ने कोई नफ़ा न पहुँचाया।

***

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦ خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ

مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝٧ مُّهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُولُ الْكَافِرُونَ

هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑧ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ
وَّازْدُجِرَ ⑨ فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ⑩ فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ
مُّنْهَمِرٍ ⑪ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ⑫ وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى
ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ⑬ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ⑭ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً
فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑮ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ⑯ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ
فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ⑰

तर्जुमा : ''पस ऐ नबी (ﷺ)! इनसे ऐराज़ करो जिस दिन एक पुकारने वाला नागवार चीज़ की तरफ़ पुकारेगा। (6) यह झुकी आँखों क़ब्रों से इस तरह निकल खड़े होंगे कि गोया वह फैला हुआ टिड्डीदल है (7) पुकारने वाले की तरफ़ दौड़ते होंगे और काफ़िर कहेंगे यह दिन तो बहुत सख़्त है। (8) इनसे पहले क़ौमे नूह ने भी हमारे बन्दे को झुठलाया था और दीवाना बतलाकर झिड़का गया था (9) पस उसने अपने रब से दुआ की कि मैं बेबस हूँ तू मेरी मदद कर। (10) पस हमने आसमान के दरवाज़ों को ज़ोर की बारिश से खोल दिया (11) और ज़मीन के चश्मों को जारी कर दिया पस उस काम पर जो मुक़द्दर हो गया था पानी ख़ूब जमा हो गया। (12) और हमने उसे तख़्तों और कीलों वाली कश्ती पर सवार कर लिया। (13) जो हमारी आँखों के सामने चल रही थी। बदला है उसकी तरफ़ से जिसका कुफ़्र किया गया था। (14) और बेशक हमने इस वाक़िया को निशान बनाकर बाक़ी रखा पस कोई है नसीहत हासिल करने वाला (15) बताओ मेरा अज़ाब और मेरे डराने वाली बातें कैसी हैं? (16) बेशक हमने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है पस क्या कोई नसीहत मानने वाला है?'' (17)

मैदाने महशर की तरफ़ जाना (आ. 6 से 17) : इर्शाद होता है कि ऐ नबी (ﷺ)! तुम इन काफ़िरों को जिन्हें मोजिज़ा वग़ैरह भी कारआमद नहीं, छोड़ दो उनसे मुँह फेर लो और उन्हें क़ियामत के इंतिज़ार में रहने दो। उस दिन उन्हें हिसाब की जगह ठहरने के लिए एक पुकारने वाला पुकारेगा जो होलनाक जगह होगी, जहाँ बलाएँ और आफ़तें होंगी, उनके चेहरों पर ज़िल्लत और कमीनगी बरस रही होगी, मारे नदामत के आँखें नीचे को झुकी हुई होंगी, और क़ब्रों से निकलेंगे, फिर जिस तरह टिड्डीदल चलता है उसी तरह यह भी इंतिशार व तेज़ी

के साथ मैदाने हिसाब की तरफ़ भागेंगे, पुकारने वाले की पुकार पर कान होंगे और तेज़ तेज़ चल रहे होंगे, न मुख़ालिफ़त की ताब है न देर लगाने की ताक़त, उस सख़्त होलनाकी के सख़्त दिन को देखकर काफ़िर चीख़ उठेंगे कि यह तो बड़ा भारी और बेहद सख़्त दिन है।

क़ौमे नूह पर अज़ाब : यानी ऐ नबी! आपकी इस उम्मत से पहले उम्मते नूह ने अपने नबी की जो हमारे बन्दे हज़रत नूह (ﷺ) थे, तक्ज़ीब की, उसे मज्नून कहा और हर तरह डाँटा डपटा और धमकाया, साफ़ कह दिया था कि ऐ नूह (ﷺ)! अगर तुम बाज़ न रहे तो हम तुझे पत्थरों से मार डालेंगे। हमारे बन्दे और रसूल हज़रत नूह (ﷺ) ने हमें पुकारा कि परवरदिगार! मैं इनके मुक़ाबले में महज़ नातवाँ और ज़ईफ़ हूँ मैं किसी तरह न अपनी हस्ती को संभाल सकता हूँ न तेरे दीन की हिफ़ाज़त कर सकता हूँ तू ही मेरी मदद फ़र्मा और मुझे ग़ल्बा दे। उनकी यह दुआ क़बूल होती है और उनकी काफ़िर क़ौम पर मशहूर तूफ़ाने नूह भेजा जाता है। मूसलाधार बारिश के दरवाज़े आसमान से उबलते हुए पानी के चश्मे ज़मीन से खोल दिये जाते हैं। यहाँ तक कि जो पानी की जगह न थी मस्लन तन्नूर वग़ैरह वहाँ से ज़मीन पानी उगल देती है हर तरफ़ पानी भर जाता है न आसमान से बरसना मौक़ूफ़ होता है न ज़मीन से उबलना थमता है। पस अम्र मुक़द्दर तक पहुँच जाता है हमेशा पानी बादल से बरसता है लेकिन उस वक़्त आसमान से पानी के दरवाज़े खोल दिये गए थे और अज़ाबे इलाही पानी की शक्ल में बरस रहा था, न उससे पहले कभी इतना पानी बरसा न उसके बाद कभी ऐसा बरसे। इधर से आसमान की यह रंगत उधर से ज़मीन को हुक्म कि पानी उगल दे पस रेल पेल हो गई।

हज़रत अली (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि आसमान के दहाने खोल दिये गए और उनमें से बराहे रास्त पानी बरसा। इस तूफ़ान से हमने अपने बन्दे को बचा लिया उन्हें कश्ती पर सवार कर लिया जो तख़्तों में कीलें लगाकर बनाई गई थी। दुसुर के मअनी कश्ती के दाएँ बाएँ का हिस्सा और इब्तिदाई हिस्सा जिस पर मोज थपेड़े मारती है और उसके जोड़ और उसकी असल के भी किये गए हैं। वह हमारे हुक्म से हमारी आँखों के सामने हमारी हिफ़ाज़त में चल रही थी और सही व सालिम वार पार जा रही थी। हज़रत नूह (ﷺ) की मदद में कुफ़्फ़ार से यह इंतिक़ाम था। हमने उसे निशानी छोड़ी यानी उस कश्ती को बतौर इब्रत के बाक़ी रखा। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं इस उम्मत के अवाइल लोगों ने भी देखा है। लेकिन ज़ाहिर मअनी यह है कि उस कश्ती के नमूने पर और कश्तियाँ हमने बतौरे निशान के दुनिया में क़ायम रखें, जैसे और आयत में है (व आयतुल्लहुम अन्ना हमल्ना ज़ुर्रियतहुम फ़िल्फ़ुल्किल मशहूनि व ख़लक़्ना लहुम मिम मिस्लिही मा यर्कबून) यानी इनके लिए निशानी है कि हमने नस्ले आदम को भरी हुई कश्ती में सवार कराया, और कश्ती के मानिन्द और भी ऐसी सवारियाँ दीं जिन पर वह सवार हों। और जगह है (इन्ना लम्मा तग़ल माउ...) यानी जब पानी ने तुग़्यानी की हमने तुम्हें कश्ती में ले लिया ताकि तुम्हारे लिए इब्रत हो और नसीहत। और याद रखने वाले कान इसे महफ़ूज़ रख सकें। पस कोई है जो ज़िक्र व वअज़ हासिल करे? हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (मुद्दकिर) पढ़ाया है। (अहमद : 1/395; सहीह बुख़ारी, किताब अहादीसुल अम्बिया, बाब क़ौलुल्लाहि तआला (व इला आदिन अख़ाहुम हूदा) : 3345) ख़ुद हुज़ूर (ﷺ) से भी इस लफ़्ज़ को

क़िरअत इसी तरह मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, बाब इक़्तरबतिस्साअतु बाब (व लक़द अहलक्ना अश्याअकुम फ़हल मिम मुद्दकिर) : 4874) हज़रत अस्वद से सवाल होता है कि यह लफ़्ज़ दाल से है या ज़ाल से? फ़र्माया मैंने अब्दुल्लाह (रज़ि.) से दाल के साथ सुना है और फ़र्माते थे मैं ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से दाल के साथ सुना है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इक़्तरबतिस् साअत बाब (अअजाज़ु नख़्ल ....) : 4871; सहीह मुस्लिम : 823; अबूदाऊद : 3994; तिर्मिज़ी : 2937) फिर फ़र्माता है मेरा अज़ाब मेरे साथ कुफ़्र करने और मेरे रसूलों को झूठा कहने और मेरी नसीहत से इब्रत न हासिल करने वालों पर यक्साँ हुआ? मैंने किस तरह उन दुश्मनाने दीने हक़ को तहस नहस कर दिया। हमने कुरआने करीम के अल्फ़ाज़ और मआनी को हर उस शख़्स के लिए आसान कर दिया है जो इससे नसीहत हासिल करने का इरादा रखे। जैसे फ़र्माया (किताबुन अंज़ल्नाहु इलैका मुबारकुन...) हमने तेरी तरफ़ यह मुबारक किताब नाज़िल की है ताकि लोग इसकी आयतों में तदब्बुर करें और इसलिए कि अक़्लमंद लोग याद रखें। और जगह है (फ़ इन्नमा यस्सरनाहु बि लिसानिक...) यानी हमने इसे तेरी ज़ुबान पर इसलिए आसान कर दिया कि तू परहेज़गार लोगों को ख़ुशी सुना दे और झगड़ालू लोगों को डरा दे। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं, इसकी क़िरअत और तिलावत अल्लाह तआला ने आसान कर दी है। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अगर अल्लाह तआला उसमें आसानी न रख देता तो मख़्लूक़ की ताक़त न थी कि अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल के कलाम को पढ़ सके। मैं कहता हूँ इन ही आसानियों में से एक आसानी वह है जो पहले गुज़र चुकी कि यह कुरआन सात क़िरअतों पर नाज़िल किया गया है। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल कुरआन, बाब उंज़िलल कुरआनु अला सब्अति अहरुफ़ : 4992; सहीह मुस्लिम : 818) इस हदीस के तमाम तुरूक़ व अल्फ़ाज़ हमने पहले जमा कर दिये हैं। अब दोबारा यहाँ वारिद करने की ज़रूरत नहीं। पस इस कुरआन को बहुत ही आसान कर दिया है। है कोई तालिबे इल्म जो इस रब्बानी इल्म को हासिल करे जो बिलकुल आसान है।

***

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ⑱ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْ
يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ⑲ تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ⑳ فَكَيْفَ كَانَ
عَذَابِيْ وَنُذُرِ ㉑ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ㉒ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ
بِالنُّذُرِ ㉓ فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ اِنَّآ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ㉔ ءَاُلْقِيَ

الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ
الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ
الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ
الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾

तर्जुमा : "क़ौमे आद ने भी झुठलाया पस क्या हुआ मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें। (18) हमने उन पर तेज़ व तुन्द जारी हवा बेबरकते दिन में भेज दी। (19) जो लोगों को उठा उठाकर दे पटख़ती थी गोया कि वह जड़ से कटे हुए दरख़्त खजूर के तने हैं। (20) पस कैसी रही मेरी सज़ा और मेरा डराना? (21) यक़ीनन हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है। पस क्या है कोई सोचने वाला? (22) क़ौमे समूद ने डराने वालों को झूठा समझा। (23) और कहने लगे क्या हममें से एक शख़्स की हम फ़र्मांबरदारी करने लगें? तो हम यक़ीनन ग़लती और दीवानगी में पड़े हुए होंगे। (24) क्या हमारे सबके बीच सिर्फ़ इसी पर वही नाज़िल की गई? नहीं ! बल्कि वह झूठा शैख़ी ख़ोरा है। (25) अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा और ख़ुदपसंद था? (26) बेशक हम इनकी आज़माइश के लिए ऊँटनी भेजेंगे। पस ऐ सालेह! तू इनका मुंतज़िर रह और सब्र कर। (27) हाँ! इन्हें ख़बर कर दे कि पानी इनमें तक़्सीमशुदा है हर हिस्से हर एक को बराबर पहुँचाया जाएगा। (28) उन्होंने अपने रफ़ीक़ को आवाज़ दी उसने दस्तदराज़ी की और कूचें काट दीं। (29) पस क्यूँ कर हुआ अज़ाब मेरा और डराना मेरा (30) हमने इन पर एक नारा भेजा पस ऐसे हो गए जैसे काँटों की ओंधी हुई बाड़। (31) हमने नसीहत के लिए कुरआन को आसान कर दिया है पस क्या है कोई जो नसीहत पकड़े।" (32)

क़ौमे आद पर अज़ाब (आ. 18 से 32) : अल्लाह तआला ख़बर देता है कि क़ौमे हूद ने भी अल्लाह के रसूलों को झूठा कहा और बिलकुल क़ौमे नूह की तरह सरकशी पर उतर आए तो उन पर सख़्त ठण्डी मुहलिक हवा भेजी गई वह दिन उनके लिए सरासर मंहूस था। बराबर उन पर हवाएँ चलती रहीं और उन्हें तहो बाला करती रहीं। दुनियावी और आख़िरत के अज़ाब में गिरफ़्तार कर लिये गए। हवा का झोंका आता उनमें से किसी

को उठाकर ले जाता, यहाँ तक कि ज़मीन वालों की हृदे नज़र से वह बाला हो जाता फिर उसे ज़मीन पर औंधे मुँह फेंक दिया जाता, सिर कुचल जाता भेजा निकल पड़ता। सर अलग, धड़ अलग। ऐसा मालूम होता है गोया खजूर के दरख़्त के बिन सिरे ठुँठ हैं। देखो मेरा अज़ाब कैसा हुआ? मैंने तो इस क़ुरआन को आसान कर दिया है जो चाहे नसीहृत व इब्रत हासिल कर ले।

क़ौमे समूद पर अज़ाब : समूदियों ने अल्लाह के रसूल हृज़रत सालेह (عليه السلام) को झुठलाया और ताज्जुब के तौर पर महाल समझकर कहने लगे कि ऐसा भी हो सकता है कि हम हमीं में से एक शख़्स के ताबेदार बन जाएँ? आख़िर इसकी इतनी बड़ी फ़ज़ीलत की क्या वजह? फिर उससे आगे बढ़े और कहने लगे हम नहीं मान सकते कि हम सबमें सिर्फ़ उसी एक पर अल्लाह की बातें डाली जाएँ। फिर उससे भी क़दम बढ़ाया और अल्लाह के नबी को खुले लफ़्ज़ों में झूठा कहा। बतौर डाँट के अल्लाह तआला फ़र्माता है अब तो जो चाहो कह लो लेकिन कल खुल जाएगा कि दरअसल झूठा और झूठ में हृद से बढ़ जाने वाला कौन था? इनकी आज़माइश के लिए फ़ित्ना बनाकर हम एक ऊँटनी भेजने वाले हैं। चुनाँचे इन लोगों की चाहत के मुवाफ़िक़ पत्थर की एक सख़्त चट्टान में से एक चिकले चोड़े अअ़ज़ा वाली गाभिन ऊँटनी निकली। और अल्लाह तआला ने अपने नबी से फ़र्माया कि तुम अब देखते रहो कि इनका अंजाम क्या होता है? और इनकी बद तमीज़ी पर सब्र करो। दुनिया और आख़िरत में अंजामकार ग़ल्बा आप ही का रहेगा। अब इनसे कह दीजिए कि पानी पर एक दिन तो इनका है और एक दिन इसकी ऊँटनी का। जैसे और आयत में है (लहा शिरबुंव्वलकुम शिर्बु यौमिम्मालूम) हर बारी मौजूद की गई है यानी ऊँटनी न हो तो पानी मौजूद है और जब ऊँटनी हो तो उसका दूध हृाज़िर है। उन्होंने मिल जुलकर अपने रफ़ीक़ क़ेदार बिन सालिफ़ को आवाज़ दी और यह बड़ा ही बदबख़्त था। जैसे और आयत में है (इज़िम बअ़स अश्क़ाहा) इनका बदबख़्त आदमी उठा, उसने आकर उसे पकड़ा और ज़ख़्मी कर दिया, फिर तो उनके कुफ़्र और तक्ज़ीब का मैंने भी पूरा बदला लिया और जिस तृरह खेती के कटे हुए सूखे पत्ते उड़ उड़कर काफ़ूर हो जाते हैं उन्हें भी हमने बेनामो निशान कर दिया। ख़ुश्क चारा जिस तृरह जंगल में उड़ता फिरता है उसी तृरह उन्हें भी बर्बाद कर दिया। या यह मतृलब है कि अ़रब में दस्तूर था कि ऊँटों को ख़ुश्क काँटेदार बाड़े में रखा करते थे। जब उस बाड़ को रौंद दिया जाए उस वक़्त उसकी जैसी हृालत हो जाती है वही हृालत उनकी हो गई कि एक भी न बचा न बच सका। जैसे मिट्टी दीवार से झड़ जाती है उसी तृरह उनके भी पर पुर्जे उखड़ गए। यह सब क़ौल मुफ़स्सिरीन के इस जुम्ले की तफ़्सीरें हैं लेकिन अव्वल क़वी है, वल्लाहु आलम!

***

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍۭ بِالنُّذُرِ ۝٣٣ إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ ۖ نَّجَّيْنَٰهُم
بِسَحَرٍ ۝٣٤ نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى مَن شَكَرَ ۝٣٥ وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا
فَتَمَارَوْا۟ بِالنُّذُرِ ۝٣٦ وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟
عَذَابِى وَنُذُرِ ۝٣٧ وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣٨ فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ
۝٣٩ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ۝٤٠

तर्जुमा : "क़ौमे लूत ने भी डराने वालों की तक्ज़ीब की। (33) बेशक हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी सिवा लूत के घर वालों के उन्हें हमने सेहर के वक़्त अपने एहसान से नजात दे दी (34) हर शुक्रगुज़ार को हम इसी तरह नजात देते हैं (35) यक़ीनन लूत (عليه السلام) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था लेकिन उन्होंने डराने वालों में शक शुब्हा और झगड़ा किया। (36) और लूत (عليه السلام) को बहलाकर उनके मेहमानों से ग़ाफ़िल करना चाहा पस हमने उनकी आँखें अँधी कर दीं (और कह दिया) मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना चखो (37) और यक़ीनी बात है कि उन्हें सुबह सवेरे ही एक जगह पकड़ने वाले मुक़र्ररा अ़ज़ाब ने ग़ारत कर दिया। (38) मेरे अ़ज़ाब और मेरे डरावे का मज़ा चखो। (39) यक़ीनन हमने क़ुरआन को पंद व वअ़ज़ के लिए आसान कर दिया है पस क्या कोई है सोचने वाला।" (40)

क़ौमे लूत पर अ़ज़ाब (आ. 33 से 40) : लूतियों का वाक़िया बयान हो रहा है कि किस तरह उन्होंने अपने रसूलों का इंकार किया और उनकी मुख़ालिफ़त करके किस मकरूह काम को किया जिसे उनसे पहले किसी ने न किया था यानी अग़्लामबाज़ी (समलैंगिकता), इसीलिए उनकी हलाकत की सूरत भी ऐसी ही अनोखी हुई। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) ने उनकी बस्तियों को उठाकर आसमान के क़रीब पहुँचाकर औंधी मार दीं और उन पर आसमान से उनके नाम के पत्थर बरसाये। मगर लूत की मानने वालों को सेहर के वक़्त यानी रात की आख़िरी घड़ी में बचा लिया, उन्हें हुक्म दिया गया कि तुम इस बस्ती से चले जाओ। हज़रत लूत (عليه السلام) पर उनकी क़ौम में से कोई भी ईमान न लाया था यहाँ तक कि ख़ुद हज़रत लूत (عليه السلام) की बीवी काफ़िरा ही थी। क़ौम में से भी एक शख़्स को ईमान नसीब न हुआ। पस अ़ज़ाबे इलाही से भी कोई न बचा। आपकी बीवी भी क़ौम के साथ ही साथ हलाक हुई सिर्फ़ आप और आपकी लड़कियाँ उस नहूसत से बचा लिये गए। शाकिरों को अल्लाह इसी तरह बुरे और आड़े वक़्त में काम आता है और उन्हें उनकी शुक्रगुज़ारी का फल देता है।

अज़ाब के आने से पहले ही हज़रत लूत (عليه السلام) उन्हें आगाह कर चुके थे लेकिन उन्होंने तवज्जह तक न की बल्क शक शुब्हा और झगड़ा किया और उनके मेहमानों से उन्हें चकमा देना चाहा। हज़रत जिब्राईल, हज़रत मीकाईल, हज़रत इस्राफ़ील वग़ैरह फ़रिश्ते इंसानी सूरतों में हज़रत लूत (عليه السلام) के घर मेहमान बनकर आए थे। निहायत ख़ूबसूरत चेहरे, प्यारी प्यारी शक्लें और अन्फ़वान शबाब (जवानी) की उम्र। इधर यह रात के वक़्त हज़रत लूत (عليه السلام) के घर उतरे, उनकी बीवी ने जो काफ़िरा थी, क़ौम को ख़बर दी कि आज लूत (عليه السلام) के यहाँ मेहमान आए हैं। उन लोगों को अग़्लाम की बुरी आदत तो थी ही दौड़ भागकर हज़रत लूत (عليه السلام) के मकान को घेर लिया। हज़रत लूत (عليه السلام) ने दरवाज़े बंद कर लिये उन्होंने तर्कीबें शुरू कीं कि किसी तरह मेहमान हाथ लगें। जिस वक़्त यह सब कुछ हो रहा था शाम का वक़्त था, हज़रत लूत (عليه السلام) उन्हें समझा रहे थे उनसे कह रहे थे कि यह मेरी बेटियाँ यानी तुम्हारी बीवियाँ मौजूद हैं तुम इस बुरे काम को छोड़ दो और हलाल चीज़ से फ़ायदा उठाओ। लेकिन उन सरकशों का जवाब था कि आपको मालूम है कि हमें औरतों की चाहत नहीं। हमारा जो इरादा है वह आपसे छुपा नहीं, तुम हमें अपने मेहमान सौंप दो। जब इसी बहस मुबाहिसे में बहुत वक़्त गुज़र चुका और वह लोग मुक़ाबला पर तुल गए और हज़रत लूत (عليه السلام) बेहद परेशान हो गए, और बहुत ही तंग हुए, तब हज़रत जिब्राईल (عليه السلام) बाहर निकले और अपना पर उनकी आँखों पर फेरा सब अँधे हो गए आँखें बिलकुल जाती रहीं। अब तो हज़रत लूत (عليه السلام) को बुरा कहते हुए और दीवारें टटोलते हुए सुबह का वादा करके पिछले पैर वापिस हुए। लेकिन सुबह के वक़्त ही उन पर अज़ाबे इलाही आ गया जिससे न भाग सकें, न उससे पीछा छुड़ा सकें। अज़ाब के मज़े और डरावे की तरफ़ ध्यान न करने का वबाल उन्होंने चख लिया। यह क़ुरआन तो बहुत ही आसान है जो चाहे नसीहत हासिल कर सकता है। कोई है भी जो इससे पंद व वअ़ज़ हासिल कर ले?

***

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ
مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ
نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ
وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾

तर्जुमा : "यानी फ़िरऔनियों के पास भी डराने वाले आए। (41) उन्होंने हमारी तमाम निशानियाँ झुठलाईं पस हमने उन्हें बड़ी ग़ालिब क़वी पकड़ में पकड़ लिया। (42) ऐ कुरैशियों! क्या तुम्हारे काफ़िर उन काफ़िरों से कुछ बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए अगली किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है? (43) या यह कहते हैं कि हम बदला लेने वाली जमाअत हैं (44) अनक़रीब यह जमाअत शिकस्त दी जाएगी और पीठ देकर भागेगी। (45) बल्कि क़ियामत की घड़ी उनके वादे का वक़्त है और क़ियामत बड़ी आफ़त और सख़्त कड़वी चीज़ है।" (46)

क़ौमे फ़िरऔन पर अज़ाब (आ. 41 से 46) : फ़िरऔन और उसकी क़ौम का क़िस्सा बयान हो रहा है कि उनके पास अल्लाह के रसूल हज़रत मूसा और हज़रत हारून (अ.) बशारत और डरावे लेकर आते हैं बड़े बड़े मोजिज़े और ज़बरदस्त निशानियाँ अल्लाह की तरफ़ से उन्हें दी जाती हैं जो उनकी नबुव्वत की हक़्क़ानियत पर पूरी दलील होती हैं। लेकिन यह फ़िरऔनी उन सबको झुठलाते हैं जिसकी शूमी में उन पर अज़ाबे इलाही नाज़िल होते हैं और बिलकुल ही भुस उड़ा दिया जाता है। फिर फ़र्माता है ऐ मुश्रिकीने कुरैश! अब बतलाओ तुम उनसे कुछ बेहतर हो? क्या तुम यह समझते हो कि तुम्हारे लिए इल्हामी किताबों में कोई छुटकारा लिखा हुआ है? कि उनके कुफ़्र पर उन्हें तो अज़ाब किया जाए लेकिन तुम कुफ़्र किये जाओ और तुम्हें कोई सज़ा न दी जाए? फिर फ़र्माता है क्या इनका यह ख़्याल है कि हम एक जमाअत की जमाअत हैं आपस में एक दूसरे की मदद करते रहेंगे और हमें कोई बुराई हमारी कसरत और जमाअत की वजह से नहीं पहुँचेगी? अगर यह ख़्याल हो तो इन्हें यक़ीन कर लेना चाहिए कि इनकी यह यक जहती तोड़ दी जाएगी, इनकी जमाअत का चूरा कर दिया जाएगा। इन्हें हज़ीमत दी जाएगी और यह पीठ दिखाकर भागते फिरेंगे।

काफ़िर शिकस्त खाएँगे : सहीह बुख़ारी में है कि बद्र वाले दिन अपने डेरे में रसूलुल्लाह (ﷺ) अपनी दुआ में फ़र्मा रहे थे ऐ अल्लाह! मैं तुझे तेरा अहदो पैमान याद दिलाता हूँ। ऐ अल्लाह! अगर तेरी चाहत यही है कि आज के दिन के बाद से तेरी इबादत वहदानियत के साथ ज़मीन पर की ही न जाए। बस इतना ही कहा था कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने आप (ﷺ) का हाथ पकड़ लिया और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! बस कीजिए आपने बहुत इल्तिजा कर ली। अब आप (ﷺ) अपने ख़ेमे से बाहर आए और ज़ुबान पर यह दोनों आयतें (सयुहज़म...) जारी थीं। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इक़्तरबतिस्साअत बाब क़ौलुहू (बलिस्साअतु मौइदहुम वस्साअतु अदहा वअमुर) : 4877) हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं इस आयत के उतरने के वक़्त मैं सोच रहा था कि इससे मुराद कौनसी जमाअत होगी? जब बद्र वाले दिन मैंने हुज़ूर(ﷺ) को देखा कि ज़िरह पहने हुए अपने केम्प से बाहर तशरीफ़ लाए और यह आयत पढ़ रहे थे उस दिन मेरी समझ में इसकी तफ़्सीर आ गई। बुख़ारी में है हज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं मेरी छोटी सी उम्र थी अपनी हमजोलियों में खेलती फिरती थी उस वक़्त यह आयत (बलिस्साअत...) उतरी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह इक़्तरबतिस्साअत बाब (बलिस्साअतु मौइदुहुम वस्साअतु अदहा वअमुर) : 4877) यह रिवायत बुख़ारी में फ़ज़ाइलुल क़ुरआन के मौक़े पर मुतव्वल मरवी है। मुस्लिम में यह हदीस नहीं है। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइलुल क़ुरआन,: 4993)

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا
مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ
﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ أَهْلَكْنَآ أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾
وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّٰتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾ فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ
عِندَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

तर्जुमा : ''बेशक गुनहगार गुमराही में हैं और अ़ज़ाब में हैं। (47) जिस दिन वह अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे, दोज़ख़ की आग लगने के मज़े चखो। (48) बेशक हमने हर चीज़ को एक मुक़र्ररा अंदाज़े पर पैदा किया है (49) और हमारा हुक्म एक बार का एक कलिमा ही होता है जैसे आँख का झपकना। (50) हमने तुम जैसे बहुतों को हलाक कर दिया है पस कोई है नसीहत लेने वाला। (51) जो कुछ इन्होंने आ़माल किये हैं सब नामाए आ़माल में लिखे हुए हैं। (52) इसी तरह हर छोटी बड़ी बात भी लिखी हुई है। (53) यक़ीनन हमारा डर रखने वाले जन्नतों और नहरों में हैं। (54) क़ुदरत वाले बादशाह के पास रास्ती और इ़ज़्ज़त की बैठक में।'' (55)

अल्लाह ने तक़्दीर बनाई (आ. 47 से 55) : बदकार लोग गुमराह हो चुके हैं राहे ह़क़ से भटक चुके हैं और शुकूक व इज़्तिराब के ख़्यालात में हैं। यह बदकार लोग ख़्वाह कुफ़्फ़ार हों ख़्वाह और फ़िर्क़ों के गुनहगार हों , इनका यह काम इन्हें औंधे मुँह जहन्नम की तरफ़ घसीट ले जाएगा और जिस तरह यहाँ ग़ाफ़िल हैं वहाँ उस वक़्त भी बेख़बर होंगे कि न मालूम किस तरफ़ लिये जाते हैं। उस वक़्त उन्हें डाँट डपट के साथ कहा जाएगा कि अब आतिशे जहन्नम के लगने का मज़ा चखो। हमने हर चीज़ को अंदाज़ से पैदा किया है। जैसे और आयत में है हर चीज़ हमने पैदा की, फिर उसका मुक़द्दर मुक़र्रर किया। और जगह फ़र्माया अपने रब की जो बुलंद व बाला है पाकी बयान कर जिसने पैदा किया और दुरुस्त किया और अंदाज़ा किया और राह दिखाई। यानी तक़्दीर मुक़र्रर की फिर उसकी तरफ़ रहनुमाई की। अइम्मा अहले सुन्नत ने इससे इस्तिदलाल किया है कि अल्लाह तआला ने अपनी मख़्लूक़ की तक़्दीर इनकी पैदाइश से पहले ही मुक़र्रर कर दी है और हर चीज़ अपने ज़ुहूर से पहले अल्लाह के यहाँ लिखी जा चुकी है। फ़िर्क़ा क़दरिया इसका मुंकिर है। यह लोग सहाबा (रज़ि.) के आख़िर ज़माने में ही निकल चुके थे। अहले सुन्नत इनके मस्लक के ख़िलाफ़ इस क़िस्म की आयतों को

पेश करते हैं और इस मज़्मून की अहादीस को भी। इस मसले की मुफ़स्सल बहस हम सहीह बुख़ारी किताबुल ईमान की शरह में लिख चुके हैं यहाँ सिर्फ़ वह हदीसें लिखते हैं जो मज़्मूने आयत के बारे में हैं। हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) फ़र्माते हैं मुश्रिकीने कुरैश रसूलुल्लाह (ﷺ) से तक़्दीर के बारे में बहस करने लगे इस पर यह आयतें उतरीं। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब कुल्लु शैइन बि क़दरिन : 2656; तिर्मिज़ी : 2157; इब्ने माजा : 83; अहमद : 2/444) बरिवायत हज़रत अम्र बिन शुऐब अन अबीही अन जद्दिही मरवी है कि यह आयतें मुंकिरीने तक़्दीर की तर्दीद में ही उतरी हैं। (बज़्ज़ार)

इब्ने अबी हातिम में है हुज़ूर (ﷺ) ने यह आयत पढ़कर फ़र्माया यह मेरी उम्मत के उन लोगों के हक़ में उतरी है जो आख़िर ज़माने में पैदा होंगे और तक़्दीर को झुठलाएँगे। (इब्ने अबी हातिम, तब्रानी : 5316; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि मजाहीलु लम नअरिफ़्हुम) हज़रत अताअ बिन अबू रिबाह (रह.) फ़र्माते हैं मैं हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के पास आया आप उस वक़्त चाहे ज़मज़म से पानी निकाल रहे थे। आपके कपड़ों के दामन भीगे हुए थे मैंने कहा तक़्दीर के बारे में कलाम किया गया है लोग इस मसले में मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ हो रहे हैं। आपने फ़र्माया, क्या लोगों ने ऐसा किया? मैंने कहा हाँ! ऐसा हो रहा है। तो आपने फ़र्माया अल्लाह की क़सम! यह आयतें इन ही लोगों के बारे में नाज़िल हुई हैं (ज़ूक़ू मस्स सक़र इन्ना कुल्ला शैइन ख़लक़्नाहू बि क़दरिन) याद रखो यह लोग इस उम्मत के बदतरीन लोग हैं। इनके बीमारों की तीमारदारी न करो, इनके मुर्दों के जनाज़े न पढ़ो। इनमें अगर कोई मुझे मिल जाए तो मैं अपनी इन उँगलियों से उसकी आँखें निकाल दूँ। एक रिवायत में है कि हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) के सामने ज़िक्र आया कि आज एक शख़्स आया है जो मुंकिरे तक़्दीर है। फ़र्माया अच्छा मुझे उसके पास ले चलो। लोगों ने कहा आप नाबीना हैं आप उसके पास चलकर क्या करेंगे। फ़र्माया अल्लाह की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मेरा बस चला तो मैं उसकी नाक तोड़ दूँगा और अगर उसकी गर्दन मेरे हाथ में आ गई तो मैं मरोड़ दूगा। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आप (ﷺ) फ़र्माते थे गोया मैं देख रहा हूँ कि बनू फ़हर की औरतें ख़ज़रज के आसपास तवाफ़ करती फिरती हैं उनके जिस्म हरकत करते हैं वह मुश्रिका औरतें हैं। इस उम्मत का पहला शिर्क यही है। उस रब की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है उनकी बेसमझी यहाँ तक बढ़ेगी कि अल्लाह तआला को भलाई का मुक़द्दर करने वाला भी न मानेंगे जिस तरह बुराई का मुक़द्दर करने वाला न माना। (अहमद : 1/330; ह : 3054; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में मुहम्मद बिन उबेद मक्की ज़ईफ़ रावी और इसका शागिर्द मज्हूल है (अल्मीज़ान : 3/639; रक़म : 7916)

मसल-ए-तक़्दीर में बहस करना : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) का एक दोस्त शामी था, जिससे आपकी ख़त किताबत थी। हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहीं सुन पाया कि वह तक़्दीर के बारे में कुछ मूशगाफ़ियाँ करता है। आपने झट से उसे ख़त लिखा कि मैंने सुना है तू तक़्दीर के मसले में कुछ कलाम करता है अगर यह सच है तो बस मुझसे ख़त किताबत की उम्मीद न रखना, आज से बंद समझना। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि मेरी उम्मत में तक़्दीर को झुठलाने वाले लोग होंगे। (अबूदाऊद, किताबुस्सुन्ना, बाब मन

दआ इलस्सुन्नति : 4613; वसनदुहू हसन) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं हर उम्मत में मजूस होते हैं मेरी उम्मत के मजूसी वह लोग हैं जो तक़्दीर के मुंकिर हों। अगर वह बीमार पड़ें तो तुम उनकी एयादत न करो और अगर वह मर जाएँ तो तुम उनके जनाज़े न पढ़ो। (अहमद : 2/86; ह : 5584; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; उमर बिन अब्दुल्लाह मौल ग़फ़रहू ज़ईफ़ुन) इस उम्मत में मस्ख़ होगा यानी लोगों की सूरतें बदल दी जाएँगी, याद रखो यह उनमें होगा जो तक़्दीर को झुठलाएँ और ज़िन्दीक़ियत करें। (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ फ़िल मुकज़्ज़िबीन बिल्क़दरि मिनल वईद : 2153; इब्ने माजा : 4061; वसनदुहू हसन; अहमद : 2/108) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर चीज़ अल्लाह के मुक़र्ररकर्दा अंदाज़े से है। यहाँ तक कि नादानी और अक़्लमंदी भी। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब कुल्लु शैइन बि क़दरिन : 2655) सहीह हदीस में है अल्लाह से मदद तलब कर और आजिज़ और बेवक़ूफ़ न बन फिर अगर कोई नुक़्सान पहुँच जाए तो कह दे कि यह अल्लाह तआला का मुक़र्रर किया हुआ था और जो अल्लाह ने चाहा किया। फिर यूँ न कह कि अगर यूँ करता तो यूँ होता इसलिए कि इस तरह अगर कहने से शैतानी अमल का दरवाज़ा खुल जाता है। (सहीह मुस्लिम किताबुल क़द्र, बाब अल्ईमानु बिल्क़दरि वल ईज़्आनि लहू : 2664)

हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से फ़र्माया कि जान रख अगर तमाम उम्मत जमा होकर तुझे वह नफ़ा पहुँचाना चाहे जो अल्लाह ने तेरी क़िस्मत में नहीं लिखा तो नहीं पहुँच सकती। और अगर सब इत्तिफ़ाक़ करके तुझे कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहें और तेरी तक़्दीर में वह न हो तो नहीं पहुँचा सकते। क़लमें ख़ुश्क हो चुकीं और दफ़्तर लपेटकर तह कर दिये गए। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब हदीसे हंज़ला : 2516; वसनदुहू हसन) हज़रत वलीद बिन उबादा (रह.) ने अपने बाप हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.) की बीमारी में जबकि उनकी हालत बिलकुल बिगड़ी हुई थी, अर्ज़ किया कि अब्बाजान! हमें कुछ वसिय्यत कर जाइए। आपने फ़र्माया अच्छा मुझे बिठा दो, जब लोगों ने आपको बिठा दिया तो आपने फ़र्माया ऐ मेरे प्यारे बच्चे! ईमान का लुत्फ़ तुझे हासिल नहीं हो सकता और अल्लाह तआला के बारे में जो इल्म तुझे है उसकी तह तक तू नहीं पहुँच सकता जब तक तेरा ईमान तक़्दीर की भलाई बुराई पर न हो। मैंने पूछा अब्बाजान! मैं कैसे मालूम कर सकता हूँ कि मेरा ईमान तक़्दीर के ख़ैरो शर पर है? फ़र्माया इस तरह कि तुझे यक़ीन हो कि जो तुझे नहीं मिला वह मिलने वाला था ही नहीं और जो तुझे पहुँचा वह टलने वाला ही न था। मेरे बच्चे सुनो! मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है कि अल्लाह तआला ने सबसे पहले क़लम को पैदा किया और उसे फ़र्माया लिख, पस वह उसी वक़्त चल पड़ा और क़ियामत तक जो होने वाला था सब लिख डाला। ऐ बेटे! अगर तू इंतिक़ाल के वक़्त तक इस अक़ीदे पर न रहे तो तू जहन्नम में दाख़िल होगा। तिर्मिज़ी में यह हदीस है, और इमाम तिर्मिज़ी फ़र्माते हैं हसन सहीह ग़रीब है। (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब इअज़ामु अम्रुल ईमानि बिल क़दरि) : 2155; वहुव सहीहुन; अहमद : 5/317) रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं तुममें से कोई शख़्स ईमानदार नहीं हो सकता जब तक कि चार बातों पर उसका ईमान न हो, शहादत दे कि मअबूदे बरहक़ सिर्फ़ अल्लाह तआला ही है और मैं अल्लाह का रसूल हूँ जिसे उसने हक़ के साथ भेजा है, और मरने के बाद जीने

पर ईमान रखे और तक़्दीर की भलाई बुराई मिनजानिब अल्लाह होने को माने। (तिर्मिज़ी, किताबुल क़द्र, बाब मा जाअ अनिल ईमान बिल्क़दरि ख़ैरिही व शर्रिही : 2145; इब्ने माजा : 81; वहुव ज़ईफ़ुन)

सहीह मुस्लिम में है अल्लाह तआला ने ज़मीनो आसमान की पैदाइश से पचास हज़ार बरस पहले मख़्लूक़ात की तक़्दीर लिखी जबकि उसका अर्श पानी पर था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब हज्जाजु आदम व मूसा (عليهما السلام) : 2653; तिर्मिज़ी : 2156; अहमद : 2/169; इब्ने हिब्बान : 6138) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इसे हसन सहीह ग़रीब कहते हैं फिर परवरदिगारे आलम अपनी चाहत और अहकाम के बेरोक टोक जारी और पूरा होने को बयान करता है कि जिस तरह जो कुछ मैंने मुक़द्दर किया है वही होता है ठीक इसी तरह जिस काम का मैं इरादा करूँ सिर्फ़ एक दफ़ा कह देना काफ़ी होता है दोबारा ताकीदन हुक्म देने की ज़रूरत नहीं होती, एक आँख झपकने के बराबर में वह काम मेरी हस्बे चाहत होता है। अरब शायर ने क्या ही अच्छा कहा है

इज़ा मा अरादल्लाहु अम्रन फ़इन्नमा यक़ूलु लहू कुन फ़यकून

यानी अल्लाह तआला जब कभी जिस किसी काम का इरादा करता है सिर्फ़ कह देता है कि हो जा वह उसी वक़्त हो जाता है। हमने तुम जैसों को तुमसे पहले उनकी सरकशी के बाइस फ़ना के घाट उतार दिया है फिर तुम क्यूँ इब्रत हासिल नहीं करते? उनके अज़ाब और उनकी रुस्वाई के वाक़ियात में क्या तुम्हारे लिए नसीहत व तज़्कीर नहीं? जैसे और आयत में फ़र्माया (वहीला बयनहुम व बयना मा यश्तहूना कमा फ़ुइला बि अश्याइहिम् मिन क़ब्ल) यानी उनके और उनकी चाहत के बीच पर्दा डाल दिया गया जैसे कि उन जैसे उनसे अगलों के साथ किया गया था जो कुछ उन्होंने किया वह उनके नामा-ए-आमाल में मक्तूब है जो अल्लाह के अमीन फ़रिश्तों के हाथ में महफ़ूज़ है उनका हर छोटा बड़ा अमल जमा शुदा और लिखा हुआ है। एक भी तो ऐसा नहीं रहा जो लिखने से रह गया हो। हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं सग़ीरा गुनाह को भी हल्का न समझो अल्लाह की तरफ़ से उसका भी मुतालबा होने वाला है। (इब्नेमाजा, किताबुज़्ज़ुहद,: 4243; वहुव सहीहुन;अहमद:6/70)

किसी गुनाह को छोटा न समझो : हज़रत सुलेमान बिन मुग़ीरह (रह.) फ़र्माते हैं एक बार मुझसे एक गुनाह सरज़द हो गया जिसे मैंने हक़ीर समझा, रात को ख़्वाब में देखता हूँ कि एक आने वाला आया है और मुझसे कह रहा है ऐ सुलेमान!

لاتحقرن من الذنوب صغيرا — ان الصغير غدا يعود كبيرا
ان الصغير ولو تقادم عهده — عند الله مسطر تسطيرا
فازجر هواک عند البطالة لاتکن — صعب القياد وشمرن تشميرا
ان للحب اذا احب الهه — طار الفواد والهم التفكير
فاسال هدايتک الاله فتئد — فكفى بربک هاديا و نصيرا

यानी सग़ीरा गुनाहों को भी हक़ीर और नाचीज़ ना समझ। यह सग़ीरा कल कबीरा हो जाएँगे। गो गुनाह छोटे छोटे हों और उन्हें किये हुए भी अर्सा गुज़र चुका हो, अल्लाह के पास वह साफ़ साफ़ लिखे हुए मौजूद हैं। बदी से अपने नफ़्स को रोके रख और ऐसा न हो जा कि मुश्किल से नेकी की तरफ़ आए बल्कि ऊँचा दामन करके भलाई की तरफ़ लपक, जब कोई शख़्स दिल से अल्लाह से मुहब्बत करता है तो उसका दिल उड़ने लगता है और उसे अल्लाह की जानिब से ग़ौरो फ़िक्र की आदत इल्हाम की जाती है। अपने रब से हिदायत तलब कर और नर्मी और मुलाइमत कर। हिदायत और नुसरत करने वाला रब तुझे काफ़ी होगा। फिर इर्शाद होता है कि इन बदकारों के ख़िलाफ़ नेककार लोगों की हालत होगी वह तो ज़लालत व ख़ुशगवार साफ़ शफ़्फ़ाफ़ चश्मों के मालिक होंगे और इज़्ज़त व करामत, रिज़्वान व फ़ज़ीलत, जूद व एहसान, फ़ज़्ल व इम्तिनान, नेअ़मत व रहमत, आसाइश व राहत के मकान में ख़ुश ख़ुश रहेंगे बारी तआ़ला मालिक व क़ादिर का क़ुर्ब उन्हें नसीब होगा जो तमाम चीज़ों का ख़ालिक़ है सबके अंदाज़े मुक़र्रर करने वाला है हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। वह उन परहेज़गार अल्लाह वाले लोगों की एक एक ख़्वाहिश पूरी करेगा, एक एक चाहत अ़ता करेगा। मुस्नद अहमद में है रसूले मक़्बूल (ﷺ) फ़र्माते हैं अ़दलो इंसाफ़ करने वाले नेक किरदार लोग अल्लाह के पास नूर के मिम्बरों पर रहमान के दाएँ जानिब होंगे। अल्लाह के दोनों हाथ दाहिने ही हैं। यह आ़दिल लोग वह हैं जो अपने अहकाम में अपने अहलो अ़याल में और जो चीज़ उनके क़ब्ज़े में हो उसमें इल्हामी फ़र्मान का ख़िलाफ़ नहीं करते बल्कि अ़दलो इंसाफ़ से ही काम लेते हैं। यह हदीस सहीह मुस्लिम और नसाई में भी है। (इसकी तख़रीज सूरह हुजुरात की आयत 15 में गुज़र चुकी है।)

अल्हम्दुलिल्लाह! सूरह क़मर की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***

FLOW CHART
तरतीबी नक्श-ए-रब्त

MACRO-STRUCTURE
नज़्मे जली

सूरह अर्रहमान - 55

आयात : 78 मदनी (इब्तिदाई दौर) पैराग्राफ : 6

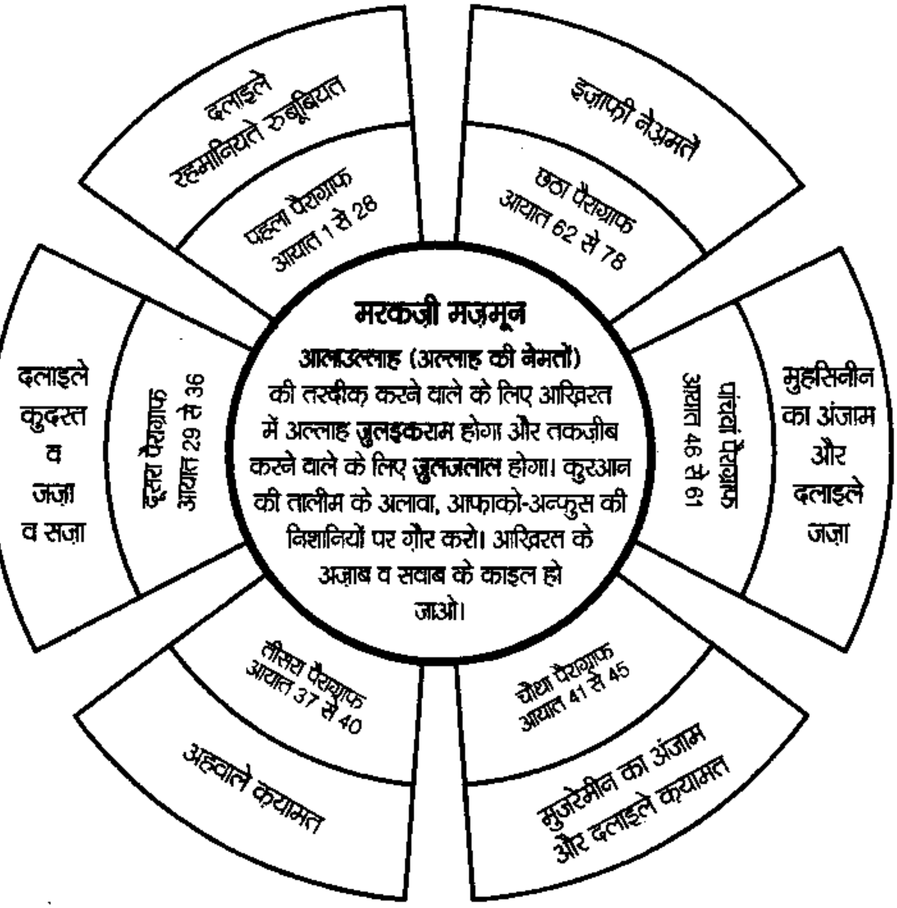

तफ़्सीर सूरह रह़मान

तआरुफ़े सूरत : ह़ज़रत ज़र्र (रह़.) से रिवायत है कि एक शख़्स़ ने कहा क़ुरआन में जो लफ़्ज़ (मिम्माइन ग़ैरि आसिनिन) है यह (आसिनिन) लफ़्ज़ है या (असिनिन)? तो आपने फ़र्माया, गोया तूने बाक़ी का सारा क़ुरआन समझ लिया है? उसने कहा मैं मुफ़स़्स़ल की तमाम सूरतों को एक रकअ़त में पढ़ लिया करता हूँ, आपने फ़र्माया फिर तो जैसे शेअ़र जल्दी जल्दी पढ़े जाते हैं उसी त़रह़ तू क़ुरआन को भी जल्दी जल्दी पढ़ता होगा, अफ़सोस! मुझे ख़ूब मह़फ़ूज़ है कि मुफ़स़्स़ल की इब्तिदाई कौन कौनसी दो दो बराबर वाली सूरतों को ह़ुज़ूर (ﷺ) मिलाया करते थे। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) की क़िरअत में मुफ़स़्स़ल की सबसे पहली सूरत यही सूरह रह़मान है। (अह़मद : 1/412; वसनदुहू ह़सन)

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि नबी (ﷺ) अपने अस़्ह़ाब के मज्मअ़े में एक रोज़ तशरीफ़ लाए और सूरह रह़मान की पहले से आख़िर तक तिलावत फ़र्माई। स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) चुपचाप सुनते रहे। आप (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे तो जिन्नात ही जवाब देने में अच्छे रहे। मैंने जब उनके सामने इस सूरत की तिलावत की तो मैं जब कभी (फ़बि अय्यि आलाइ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान) पढ़ता तो कहते (ला बिशैइम् मिन्निअ़मिका रब्बना नुकज़्ज़िबु फ़ लकल ह़म्द) यानी ऐ हमारे रब! हम तेरी नेअ़मतों में से किसी नेअ़मत को नहीं झुठलाते तेरे ही लिये तमाम ता'रीफ़ें सज़ावार हैं। (तिर्मिज़ी, किताब तफ़्सीरुल क़ुरआन, बाब वमिन सूरतिर्रह़मान : 3291; वहुव ह़दीसुन ह़सन; ह़ाकिम : 2/274) यह ह़दीस ग़रीब है और यही रिवायत इब्ने जरीर में भी मरवी है उसमें है कि या तो आप (ﷺ) ने यह सूरत पढ़ी या आप (ﷺ) के सामने इसकी तिलावत की गई उस वक़्त स़ह़ाबा (रज़ि.) की ख़ामोशी पर आप (ﷺ) ने यह फ़र्माया और जवाब के अल्फ़ाज़ यह हैं (ला बि शैइम् मिन निअ़मि रब्बना नुकज़्ज़िबु) (त़बरी : 23/3)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ○

तर्जुमा : ''शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।''

اَلرَّحۡمٰنُۙ ① عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَؕ ② خَلَقَ الۡاِنۡسَانَۙ ③ عَلَّمَهُ الۡبَيَانَ ④ اَلشَّمۡسُ وَالۡقَمَرُ

بِحُسۡبَانٍ ⑤ وَّالنَّجۡمُ وَالشَّجَرُ يَسۡجُدٰنِ ⑥ وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الۡمِيۡزَانَ ⑦

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۞ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۞

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۞ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۞ وَالْحَبُّ

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ۞ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۞

तर्जुमा : ''रहमान (1) जिसने क़ुरआन सिखाया (2) उसी ने इंसान को पैदा किया (3) और उसे बोलना सिखाया (4) आफ़ताब (सूरज) और माहताब (चाँद) मुक़र्ररा हिसाब से हैं। (5) और बे तने के दरख़्त और तनेदार दरख़्त दोनों सज्दा करते हैं। (6) उसी ने आसमान को बुलंद किया और उसी ने तराज़ू रखी। (7) ताकि तुम तोलने में कमी बेशी न करो (8) इंसाफ़ के स ाथ वज़न को ठीक रखो और तोल में कम न करो (9) उसी ने मख़्लूक़ के लिए ज़मीन बिछा दी। (10) जिसमें मेवे हैं और ख़ोशे वाली खजूर के दरख़्त हैं। (11) और अनाज है भुस वाला और फूल हैं ख़ुश्बूदार (12) पस ऐ इंसानों और जिन्नो! तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे? (13)

अल्लाह की रहमतें (आ. 1 से 13) : अल्लाह तआ़ला अपनी रहमते कामिला का बयान करता है कि उसने अपने बन्दों पर क़ुरआने करीम नाज़िल किया और अपने फ़ज़्लो करम से उसका हिफ़्ज़ करना बिलकुल आसान कर दिया। उसी ने इंसान को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया। क़तादा (रह.) वग़ैरह कहते हैं बयान से मुराद ख़ैरो शर्र है लेकिन बोलना ही मुराद लेना यहाँ बहुत अच्छा है। हज़रत हसन (रह.) का क़ौल भी यही है और साथ ही ता'लीमे क़ुरआन का ज़िक्र है जिससे मुराद तिलावते क़ुरआन है और तिलावत मौक़ूफ़ है बोलने की आसानी पर हर हर्फ़ अपने मख़रज से बेतकल्लुफ़ ज़ुबान अदा करती रहती है ख़्वाह हलक़ से निकलता हो ख़्वाह दोनों होंठों के मिलाने से, मुख़्तलिफ़ मख़रज और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के हुरूफ़ की अदायगी अल्लाह तआ़ला ने इंसान को सिखा दी। सूरज और चाँद एक दूसरे के पीछे अपने अपने मुक़र्ररा हिसाब से चल रहे हैं न उनमें इख़्तिलाफ़ हो न इज़्तिराब, न यह आगे बढ़े न वह उस पर ग़ालिब आए। हर एक अपनी अपनी जगह तैरता फिरता है। और जगह फ़र्माता है (फ़ालिक़ुल्इस्बाह...) अल्लाह सुबह का निकालने वाला है। और उसी ने रात को तुम्हारे लिए आराम का वक़्त बनाया है और सूरज चाँद को हिसाब पर रखा है यह मुक़र्ररा अंदाज़े हैं ग़ालिब व दाना अल्लाह के। हज़रत इक्रिमा (रह.) फ़र्माते हैं तमाम इंसानों की जिन्नात की चौपायों की परिन्दों की आँखों की बसारत एक ही शख़्स की आँखों में कर दी जाए फिर सूरज के सामने जो सत्तर पर्दे हैं उनमें से एक पर्दा हटा दिया जाए तो नामुम्किन है कि यह शख़्स भी उसकी तरफ़ देख सके बावजूद यह कि सूरज का नूर कुर्सी के नूर का सत्तरवाँ (70वाँ) हिस्सा है पस ख़्याल कर लो कि अल्लाह तआ़ला ने

अपने जन्नती बन्दों की आँखों में किस क़द्र नूर दे रखा होगा कि वह अपने रब तबारक व तआ़ला के चेहरे को खुल्लम खुल्ला अपनी आँखों से बेरोक देखें (इब्ने अबी ह़ातिम)

दरख़्त अल्लाह की रहमत : इस पर तो मुफ़स्सिरीन का इत्तिफ़ाक़ है कि शजर उस दरख़्त को कहते हैं जो तने वाला हो लेकिन नजम के मअ़नी कई एक हैं। कुछ तो कहते हैं नज्म से मुराद बेलें हैं जिनका तना नहीं होता और ज़मीन पर फैली होती हैं। (त़ब्री : 23/11) कुछ कहते हैं, मुराद इससे सितारे हैं जो आसमान में हैं। (त़ब्री : 23/12) यही क़ौल ज़्यादा ज़ाहिर है, गो पहला क़ौल इमाम इब्ने जरीर (रह़.) का इख़्तियार कर्दा है, वल्लाहु आलम! क़ुरआन करीम की यह आयत भी इस दूसरे क़ौल की ताईद करती है। फ़र्मान है (अलम तरा अन्नल्लाह यस्जुदु...) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह के लिए आसमान व ज़मीन की तमाम मख़्लूक़ात और सूरज, चाँद, सितारे, पहाड़, दरख़्त, चौपये जानवर और अक्सर लोग सज्दा करते हैं,...।

आसमान की पैदाइश : फिर फ़र्माता है आसमान को उसी ने बुलंद किया है और उसी ने मीज़ान रखी है यानी अ़दल, जैसे और आयत में है (लक़द अर्सल्ना रुसुलना बिल बय्यिनाति व अंज़ल्ना मअ़हुमुल किताब वल मीज़ाना लि यक़ूमन्नासु बिल्क़िस्त) यानी यक़ीनन हमने अपने रसूलों को दलीलों के साथ और तराज़ू के साथ भेजा है ताकि लोग अ़दल पर क़ायम हो जाएँ। पस फ़र्माता है जब वज़न करो तो सीधी तराज़ू से अ़दल व ह़क़ के साथ वज़न करो कमी ज़्यादती न करो कि लेते वक़्त बढ़ती तोल लिया करो और देते वक़्त कमती दे दिया। और जगह इर्शाद है (वज़िनू बिल्क़िस्तासिल मुस्तक़ीम) स़ेह़त के साथ खरेपन से तोल लिया करो। आसमान को तो उसने बुलंद व बाला किया। और ज़मीन उसने नीची और पस्त करके बिछादी और उसमें मह़फ़ूज़ पहाड़ मिस्ल मेख़ के गाड़ दिये ताकि वह हिले जुले नहीं और उस पर जो मख़्लूक़ बसती है वह बाआराम रहे।

ज़मीन और फल : फिर ज़मीन की मख़्लूक़ को देखो इनकी मुख़्तलिफ़ क़िस्मों, मुख़्तलिफ़ रंगों, मुख़्तलिफ़ शक्लों, मुख़्तलिफ़ ज़ुबानों, मुख़्तलिफ़ आ़दात और अत्वार पर नज़र डालकर अल्लाह की क़ुदरते कामिला का अंदाज़ा करो। साथ ही ज़मीन की पैदावार को देखो कि रंग बिरंग के खट्टे मीठे सलोने त़रह़ त़रह़ की ख़ुश्बुओं वाले मेवे फल फ़्रूट ख़ास्सतन खजूर के दरख़्त जो नफ़ा देने वाला और लगने के वक़्त से ख़ुश्क हो जाने तक और उसके बाद भी खाने के काम में आने वाला आ़म मेवा है। इस पर ख़ोशे होते हैं जिन्हें चीरकर यह बाहर आता है फिर गदला हो जाता है फिर तर हो जाता है फिर पककर ठीक हो जाता है। बहुत नाफ़ेअ़ है, साथ ही इसका दरख़्त बिलकुल सीधा और बेज़रर होता है। इब्ने अबी ह़ातिम में है कि क़ैसर ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को लिखा कि मेरे क़ासिद जो आपके पास से वापिस आए हैं वह कहते हैं कि आपके यहाँ एक दरख़्त होता है जिसकी सी ख़ू ख़स्लत किसी और में नहीं वह जानवर के कान की त़रह़ ज़मीन से निकलता है फिर खुलकर मोती की त़रह़ हो जाता है फिर सब्ज़ होकर ज़मर्रुद की त़रह़ हो जाता है फिर लाल होकर याक़ूत जैसा बन जाता है फिर पकता है और तैयार होकर बेहतरीन फ़ालूदे के मज़े का हो जाता है। फिर ख़ुश्क होकर मुक़ीम लोगों के बचाव की और मुसाफ़िरों के तोशे भत्ते की चीज़ बन जाता है। पस अगर मेरे क़ासिद की यह रिवायत स़ह़ीह़ है तो मेरे ख़्याल से तो यह दरख़्त जन्नती दरख़्त है।

इसके जवाब में शाहे इस्लाम हज़रत फ़ारूक़े आ'ज़म (रज़ि.) ने लिखा है कि यह ख़त है अल्लाह के गुलाम, मुसलमानों के बादशाह उ़मर की तरफ़ से शाहे रोम क़ैसर के नाम, आपके क़ासिदों ने जो खबर आपको दी है वह सच है इस क़िस्म के दरख़्त मुल्के अ़रब में बकसरत हैं। यही वह दरख़्त है जिसे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मरियम (ﷺ) के पास उगाया था जबकि उनके लड़के हज़रत ईसा (ﷺ) उनके बतन से पैदा हुए थे पस ऐ बादशाह! अल्लाह से डर और हज़रत ईसा (ﷺ) को अल्लाह न समझ, अल्लाह एक ही है। हज़रत ईसा (ﷺ) की मिसाल अल्लाह तआ़ला के नज़दीक हज़रत आदम (ﷺ) की तरह है कि उन्हें अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी से पैदा किया फिर फ़र्माया हो जा तो वह हो गए, अल्लाह की तरफ़ से सच्ची और हक़ बात यही है तुझे चाहिए कि शक व शुब्हा करने वालों में न रहे (अक्माम) के मअ़नी लीफ़ के भी किये गए हैं जो दरख़्त खजूर की गर्दन पर पोस्त की तरह होता है और उसने ज़मीन में भूसी और अनाज पैदा किया (अ़स्फ़) के मअ़नी खेती के वह सब्ज़ पत्ते जो ऊपर से काट दिये गए हों फिर सुखा लिये गए हों। (तब्री : 23/18) भी आए हैं (रैहान) से मुराद पत्ते या (तब्री : 23/19) यही रैहान जो इसी नाम से मशहूर है या खेती के सब्ज़ पत्ते। मतलब यह है कि गेहूँ, जौ वग़ैरह के वह दाने जो बाल पर भूसी समेत होते हैं और यह भी कहा गया है कि खेती के पहले ही उगे हुए पत्तों को तो (अ़स्फ़) कहते हैं और जब दाने निकल आएँ बालें पैदा हो जाएँ तो उन्हें रैहान कहते हैं जैसे कि ज़ेद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल के मशहूर क़सीदे में है।

रब की नेअ़मतों को न झुठलाना : फिर फ़र्माता है ऐ जिन्नों और इंसानों! तुम अपने रब की किस किस नेअ़मत को झुठलाओगे? यानी तुम उसकी नेअ़मतों में सर से पैर तक डूबे हुए हो और मालामाल हो रहे हो, नामुम्किन है कि हक़ीक़ी तौर पर तुम किसी नेअ़मत का इंकार कर सको और उसे झूठ बतला सको, एक दो नेअ़मतें हों तो ख़ैर, यहाँ तो सरतापा उसकी नेअ़मतों से तुम पुर हो रहे हो। इसीलिए मोमिन जिन्नों ने इसे सुनकर झट से जवाब दिया (अल्लाहुम्म वला बि शैइम् मिन आलाइका रब्बना नुकज़्ज़िबु फ़लकल हम्द) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) इसके जवाब में फ़र्माया करते थे (ला फ़ अय्यिहा या रब्बि) यानी ऐ अल्लाह! हम इनमें से किसी नेअ़मत का इंकार नहीं कर सकते। (तब्री : 23/23) हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की साहबज़ादी हज़रत अस्मा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि शुरू शुरू रिसालत के ज़माने में कि अभी अम्रे इस्लाम का पूरी तरह ऐलान न हुआ था मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को बैतुल्लाह में रुक्न की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हुए देखा आप (ﷺ) उस नमाज़ में इस सूरत की तिलावत कर रहे थे और मुश्रिकीन भी सुन रहे थे। (अहमद : 6/349; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने लहीआ मुदल्लस व अ़न्अ़न; तबरानी : 19717; मज्मउ़ज़्ज़वाइद : 2/115)

***

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ
﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾ يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾ وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٥﴾

तर्जुमा : ''उसने इंसान को ऐसी खनखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठीकरी की तरह थी। (14) और जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया। (15) पस तुम दोनों अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे? (16) वह रब है दोनों मश्रिक़ों और दोनों मग़रिबों का। (17) पस ऐ इंसानों और जिन्नो! तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे? (18) उसने दो दरिया चलाए जो एक दूसरे से मिल जाते हैं। (19) उन दोनों में एक हिजाब है कि उससे बढ़ नहीं सकते।(20) पस ऐ इंसानों और जिन्नो! तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे? (21) उन दोनों में से मोती और मूँगे बरामद होते हैं। (22) पस ऐ इंसानों और जिन्नो! तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे? (23) और अल्लाह ही की मिल्कियत में हैं वह जहाज़ जो समुन्द्रों में पहाड़ की तरह खड़े हुए चल फिर रहे हैं। (24) पस ऐ इंसानों और जिन्नो! तुम अपने परवरदिगार की किस किस नेअ़मत का इंकार करोगे?''(25)

इंसान की और जिन्न की पैदाइश (आ. 14 से 25) : यहाँ बयान हो रहा है कि इंसान की पैदाइश बजने वाली ठीकरी जैसी मिट्टी से हुई है और जिन्नात की पैदाइश आग के शोले से हुई है जो ख़ालिस़ और अह़सन था। मुस्नद की ह़दीस में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं फ़रिश्ते नूर से, जिन्नात नार से और इंसान मिट्टी से जिसका ज़िक्र तुम्हारे सामने हो चुका है पैदा किये गए हैं। (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद, बाब फ़ी अह़ादीसे मुतफ़र्रिक़ा : 2996; अह़मद : 6/168) फिर अपनी किसी नेअ़मत के न झुठलाने की हिदायत करके फ़र्माता

है जाड़े और गर्मी के दो सूरज के निकलने और डूबने के मक़ामात का रब अल्लाह ही है। दो से मुराद सूरज के निकलने और डूबने की दो मुख़्तलिफ़ जगहों से हैं कि वहाँ से सूरज चढ़ता उतरता है। और मौसम के लिहाज़ से यह बदलती रहती हैं हर दिन हेर फेर होता है जैसे दूसरी आयत में है मश्रिक़ व मग़्रिब का रब वही है तू उसी को अपना वकील समझ। तो यहाँ मुराद जिंस मश्रिक़ व मग़्रिब है और दो मश्रिक़ व मग़्रिब से मुराद तुलूअ व ग़ुरूब की दो जगह हैं और चूँकि तुलूअ व ग़ुरूब की जगह के जुदा जुदा होने में इंसानी मन्फ़अत और उसकी मस्लिहत बीनी थी इसलिए फिर फ़र्माया कि क्या अब भी तुम अपने रब की नेअ़मतों के मुंकिर ही रहोगे?

दो समुन्द्र : उसकी कुदरत का नज़ारा देखो कि दो समुन्द्र बराबर चल रहे हैं एक खारी पानी का है दूसरा मीठे पानी का लेकिन न उसका पानी इसमें मिलकर इसे खारा करता है न इसका मीठा पानी उसमें मिलकर उसे मीठा कर सकता है बल्कि दोनों अपनी रफ़्तार से चल रहे हैं, दोनों के बीच पर्दा है न वह इसमें मिल सके न यह उसमें जा सके। यह अपनी हद में है वह अपनी हद में और कुदरती फ़ासला नहीं अलग अलग किये हुए हैं हालाँकि दोनों पानी मिले हुए हैं। सूरह फ़ुरक़ान की आयत (वहुवल्लज़ी मरजल बहरैन...) की तफ़्सीर में उसकी पूरी तशरीह गुज़र चुकी है।

इमाम इब्ने जरीर (रह.) तो फ़र्माते हैं कि इससे मुराद आसमान का दरिया और ज़मीन का दरिया है। इमाम इब्ने जरीर (रह.) यह भी फ़र्माते हैं कि आसमान में जो पानी का क़तरा है और सदफ़ जो ज़मीन के दरिया में है उन दोनों से मिलकर लुअ लुअ पैदा होता है। (तब्री : 23/33) वाक़िया तो यह ठीक है लेकिन इस आयत की तफ़्सीर इस तरह करनी कुछ मुनासिब नहीं मालूम होती इसलिए कि आयत में इन दोनों के बीच बरज़ख़ यानी आड़ का होना बयान किया गया है जो उसको उससे और इसको उससे रोके हुए है इससे मालूम होता है कि यह दोनों ज़मीन में ही हैं बल्कि एक दूसरे से लगे लगे चलते हैं मगर कुदरत उन्हें जुदा रखती है आसमान व ज़मीन के बीच जो फ़ासला है वह बरज़ख़ और हजर नहीं कहा जाता इसलिए सहीह क़ौल यही है कि यह ज़मीन के दो दरियाओं का ज़िक्र है न कि आसमान और ज़मीन के दरिया का। इन दोनों में से यानी दोनों में है एक में से, जैसे और जगह जिन्न व इंस को ख़िताब करके सवाल हुआ है कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे? ज़ाहिर है कि रसूल सिर्फ़ इंसान में से ही हुए हैं जिन्नात में कोई जिन्न रसूल नहीं आया। जैसे यहाँ इत्लाक़ सही है हालाँकि वक़ूअ एक में ही है। इसी तरह इस आयत में भी इत्लाक़ दोनों दरिया पर है और वक़ूअ एक में ही है।

लुअ लुअ और मरजान : लुअ लुअ यानी मोती तो एक मशहूर मअ़रूफ़ चीज़ है। मरजान की निस्बत कहा गया है कि छोटे मोती को कहते हैं। (तब्री : 23/33) और कहा गया है कि बहुत बड़े मोती को कहते हैं। और कहा गया है कि बेहतरीन और उम्दा मोती को मरजान कहते हैं। (तब्री : 23/34) कुछ कहते हैं सुर्ख़ रंग जवाहिर को कहते हैं। कुछ कहते हैं सुर्ख़ रंग मोहरे का नाम है और आयत में है (वमिन कुल्लिन तअकुलूना लहमन तरिय्यंव्व तस्तख़्रिजूना हिल्यतन तल्बसूनहा) यानी तुम हर एक में से निकला हुआ गोश्त खाते हो जो

ताज़ा होता है और पहनने के ज़ेवर निकालते हो। तो ख़ैर मछली तो खारी और मीठे दोनों पानी से निकलती है और मोती मूँगे सिर्फ़ खारे पानी में से निकलते हैं मीठे में से नहीं निकलते। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि आसमान का जो क़तरा समुन्द्र की सीप के मुँह में सीधा जाता है वह लुअ लुअ जाता है। (तब्री : 23/35) और जब सदफ़ में नहीं जाता तो उसे अम्बर पैदा होता है। मेंह बरसने के वक़्त सीप अपना मुँह खोल देती है पस इस नेअमत को बयान करके फिर दरयाफ़्त करता है कि ऐसी ही बेशुमार नेअमतें जिस रब की हैं तुम भला किस किस नेअमत की तक्ज़ीब करोगे?

बहरी जहाज़ और कश्तियाँ : फिर इर्शाद होता है कि समुन्द्र में चलने वाले बड़े बड़े बादबानों वाले जहाज़ जो दूर से नज़र पड़ते हैं और पहाड़ों की तरह खड़े दिखाई देते हैं जो हज़ारों मन माल और सैंकड़ों इंसानों को इधर से उधर ले जाते ले आते हैं यह भी तो उस अल्लाह की मिल्कियत हैं, उस आलीशान नेअमत को याद दिलाकर फिर पूछता है कि अब बतलाओ इंकार किये कैसे बन आएगी हज़रत उमैर बिन सुवैद (रह.) फ़र्माते हैं मैं हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि.) के साथ दरिया-ए-फ़रात के किनारे पर था। एक बुलंद व बाला बड़ा जहाज़ आ रहा था उसे देखकर आपने उसकी तरफ़ अपने हाथ से इशारा करके इस आयत की तिलावत की, फिर फ़र्माया उस अल्लाह की क़सम! जिसने पहाड़ों जैसी उन कश्तियों को अम्वाजे समुन्द्र में जारी किया है, न मैंने उस्मान ग़नी (रज़ि.) को क़त्ल किया, न उनके क़त्ल का इरादा किया न क़ातिलों के साथ शरीक हुआ, न उनसे ख़ुश, न उन पर नर्म।

***

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝٢٦ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝٢٧ فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٨ يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۝٢٩
فَبِاَيِّ اٰلَاۤءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٠

तर्जुमा : "रूए ज़मीन पर जो हैं सब फ़ना होने वाले हैं। (26) सिर्फ़ तेरे रब की ज़ात जो अज़्मत और एहसान वाली है बाक़ी रह जाएगी। (27) फिर तुम अपने रब की किस किस नेअमत से मुंकिर होओगे? (28) सब आसमान व ज़मीन वाले उसी से माँगते हैं हर रोज़ वह एक शान में है। (29) पस अपने रब की कौनसी नेअमत का तुम इंकार कर रहे हो?" (30)

अल्लाह के सिवा सब कुछ फ़ना होने वाला है (आ. 26 से 30) : फ़र्माता है कि ज़मीन की कुल मख़्लूक़ फ़ना होने वाली है एक दिन आएगा कि उस पर कुछ न होगा कुल जानदार मख़्लूक़ को मौत आ

जाएगी इसी तरह कुल आसमान वाले भी मौत का मज़ा चखेंगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, सिर्फ़ ज़ाते इलाही बाक़ी रह जाएगी जो हमेशा से है और हमेशा तक रहेगी, जो मौत व फ़ौत से पाक है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं अव्वलन तो पैदाइशे आलम का ज़िक्र फ़र्माया फिर उनकी फ़ना का बयान किया। हुज़ूर (ﷺ) से एक मंक़ूल दुआ में यह भी है (या हय्यु या क़य्यूमु या बदीउस्समावाति वल अर्ज़ि या ज़ुल्जलालि वल्इकरामि ला इलाहा इल्ला अन्ता बि रह़मतिका नस्तग़ीसु अस्लिह़ लना शाअनना कुल्लहू वला तकिल्ना इला अन्फ़ुसिना त़र्फ़ता अैनिव्वला इला अह़दिम् मिन ख़ल्क़िका) यानी ऐ हमेशा जीने और अबदल आबाद तक बाक़ी और क़ायम रहने वाले अल्लाह, ऐ आसमान व ज़मीन के इब्तिदाअन पैदा करने वाले रब, ऐ जलाल व बुज़ुर्गी वाले परवरदिगार! तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं। हम तेरी रह़मत ही से इस्तिग़ासा करते हैं, हमारे तमाम काम तू बना दे और आँख झपकने के बराबर भी तू हमें हमारी त़रफ़ न सौंप और न अपनी मख़्लूक़ में से किसी की त़रफ़। (यह दुआ बि ऐनिही हमें नहीं मिली अल्बत्ता तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब क़ौलु या हय्यु या क़य्यूम : 3524; वहुव ह़सन में (या ह़य्यु या क़य्यूमु बि रह़मतिका अस्तग़ीस) के अल्फ़ाज़ जबकि अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब मा यक़ूलु इज़ा अस्बह़ : 5090; वसनदुहू ज़ईफ़ुन में (अल्लाहुम्म रह़मतिका अरजू, फ़ला तकल्नी इला नफ़्सी त़र्फ़तु अैन व अस्लिह़ ली शानी कुल्लहू वला तकिल्ना ला इलाहा इल्ला अन्त) के अल्फ़ाज़ मरक़ूम हैं।) हज़रत शअबी (रह.) फ़र्माते हैं जब तू (कुल्लु मन अलैहा फ़ान) पढ़े तो ठहर नहीं और साथ ही (व यब्क़ा वज्हु रब्बिका ज़ुल्जलालि वल्इकराम) पढ़ ले।

इस आयत का मज़्मून दूसरी आयत में इन अल्फ़ाज़ से है (कुल्लु शैइन हालिकुन इल्ला वज्हहू) सिवा ज़ाते बारी तआला के हर चीज़ नापैद होने वाली है। फिर अपने चेहरे की ता'रीफ में फ़र्माता है वह ज़ुल्जलाल है यानी इस क़ाबिल है कि उसकी इ़ज़्ज़त की जाए उसका जाहो जलाल माना जाए और उसके अह़काम की इताअ़त की जाए। और उसके फ़र्मान की ख़िलाफ़वर्ज़ी से रुका जाए। जैसे और जगह है (वस्बिर नफ़्सका मअ़ल्लज़ीना यदऊना रब्बहुम...) जो लोग सुबह़ शाम अपने परवरदिगार को पुकारते रहते हैं और उसी की ज़ात के मुरीद हैं, तू उन ही के साथ अपने नफ़्स को रोके रख। और आयत में इर्शाद होता है कि नेक लोग सदक़ा देते वक़्त समझते हैं कि हम सिर्फ़ अल्लाह के चेहरे की वजह से खिलाते पिलाते हैं वह किब्रियाई, बड़ाई अ़ज़्मत और जलाल वाला है। पस इस बात को बयान करके कि तमाम अहले ज़मीन फ़ौत होने में और फिर अल्लाह के सामने क़ियामत के दिन पेश होने में बराबर हैं और उस दिन वह बुज़ुर्गी वाला अल्लाह उनके बीच अ़दलो इंसाफ़ के साथ हुक्म फ़र्माएगा। साथ ही फ़र्माया अब तुम ऐ जिन्न व इंस! रब की कौन कौनसी नेअ़मत का इंकार करते हो?

सब अल्लाह से माँगते हैं : फिर फ़र्माता है कि वह सारी मख़्लूक़ से बेनियाज़ है और तमाम मख़्लूक़ उसकी यक्सर मोह़ताज है। सबके सब साइल हैं और वह ग़नी है। सब फ़क़ीर हैं और वह सबके सवाल पूरे करने वाला है। हर मख़्लूक़ अपने ह़ाल व क़ाल से अपनी ह़ाजतें उसकी सरकार में ले जाती है और उनके पूरा होने का सवाल करती है, वह हर दिन नई शान में है। उसकी शान है कि हर पुकारने वाले को जवाब दे, माँगने वाले को

अ़ता करे, तंग हालों को कुशादगी दे, मुसीबत व आफ़ात वालों की रिहाई बख़्शे। बीमारों को तंदुरुस्ती इनायत करे, ग़म वहम दूर करे, बेक़रार की बेक़रारी के वक़्त की दुआ को क़बूल करके उसे क़रार व आराम इनायत करे। गुनहगारों के वावेला पर मुतवज्जह होकर ख़ताओं से दरगुज़र करे, गुनाहों को बख़्शे, ज़िन्दगी वह दे, मौत वह लाए। तमाम ज़मीन वाले कुल आसमान वाले उसके आगे हाथ फैलाए हुए, दामन फैलाए हुए हैं। छोटों को बड़ा वह करता है, क़ैदियों का रिहाई वह देता है, नेक लोगों की हाजतों का मुंतहा, उनकी पुकार का मुद्दआ, उनके शिकवे शिकायत का मरजअ़ वही है। गुलामों को आज़ादी, रग़बत वालों को अ़तिया वही अ़ता फ़र्माता है। यही उसकी शान है। इब्ने जरीर में है कि रसूले अकरम (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की तो सहाबा (रज़ि.) ने सवाल किया कि हुज़ूर (ﷺ)! वह शान क्या है? फ़र्माया कि गुनाहों का बख़्शना, दुख को दूर करना, लोगों को तरक़्क़ी और तनज़्ज़ुल पर लाना। (तब्री : 23/40; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन, इस सनद में अ़म्र बिन बक्र सकसकी मतरूक है (देखिए अत्तक़रीब : 4993) इब्ने अबी हातिम में और इब्ने असाकिर में भी इसी के हम मअ़नी एक हदीस है। सहीह बुख़ारी में यह रिवायत मुअ़ल्लक़न हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) के क़ौल से मरवी है। बज़्ज़ार में भी कुछ कमी के साथ मरफ़ूअ़न मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रहमान तअ़लीक़न क़ब्लल हदीस : 4878) हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला ने लौहे महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया उसके दोनों पुट्ठे लाल याक़ूत के हैं। उसका क़लम नूरी है, उसकी चौड़ाई आसमान व ज़मीन के बराबर है। हर दिन तीन सौ साठ बार उसे देखता है हर निगाह पर जिलाता और मारता और इज़्ज़त व ज़िल्लत देता है और जो चाहे करता है। (इब्ने जरीर व हाकिम : 2/474; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबू हम्ज़ा शुमाली साबित बिन अबी सफ़िया ज़ईफ़ राफ़ज़ी हैं। (अत्तक़रीब : 818)

***

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا
لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا
شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾

तर्जुमा : "ऐ जिन्नों और इंसानों! अन्क़रीब हम सबसे फ़ारिग़ होकर तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह हो जाएँगे। (31) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (32) ऐ गिरोहे

जिन्न व इंस! अगर तुममें आसमानों और ज़मीन के किनारों से बाहर निकल जाने की ताक़त है तो निकल भागो बग़ैर ग़ल्बे और ताक़त के तुम नहीं निकल सकते। (33) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (34) तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ा जाएगा फिर तुम मुक़ाबला न कर सकोगे। (35) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे?'' (36)

जिन्नों और इंसानों को ख़िताब (आ. 31 से 36) : फ़ारिग़ होने से मुराद यह नहीं कि अभी वह किसी मशग़ूलियत में है बल्कि यह बतौरे डाँट के फ़र्माया गया है कि सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ पूरी तवज्जह करने का ज़माना क़रीब आ गया है, अब खरे खरे फ़ैसले हो जाएँगे, उसे कोई और चीज़ मशग़ूल न करेगी, बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे हिसाब ही लेगा। मुहावरा अरब के मुताबिक़ यह कलाम किया गया है। जैसे ग़ुस्से के वक़्त कोई किसी से कहता है अच्छा फ़ुर्सत में तुझसे निमट लूँगा, तो यह मअ़नी नहीं कि उस वक़्त मशग़ूल हों बल्कि यह मतलब है कि एक ख़ास वक़्त तुझसे निपटने का निकालूँगा और तेरी ग़फ़्लत में तुझे पकड़ लूँगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रहमान तअ़लीक़न क़ब्लल हदीस : 4878) (सक़लैन) से मुराद इंसान और जिन्न हैं जैसे एक हदीस में है इसे सिवा सक़लैन के हर चीज़ सुनती है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनाइज़, बाब अलमय्यितु यस्मउ ख़फ़्क़न्नआल : 1338; अबूदाऊद : 4752; मज्मउज़्ज़वाइद : 3/51; मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ : 6738) और दूसरी हदीस में है सिवा इंसानों और जिन्नों के। (अहमद : 5/453; ह : 23791; वसनदुहू सहीहुन)

और हदीसे सूर में साफ़ है कि सक़लैन यानी जिन्न व इंस। फिर तुम अपने रब की नेअ़मतों में से किस किस नेअ़मत का इंकार कर सकते हो? ऐ जिन्नों और इंसानों! तुम अल्लाह के हुक्म और उसकी मुक़र्ररकर्दा तक़्दीर से भागकर बच नहीं सकते बल्कि वह तुम सबको घेरे हुए है उसका हर हर हुक्म तुम पर बेरोक जारी है जहाँ जाओ उसकी सल्तनत है। हक़ीक़तन वाक़ेअ़ होगा मैदाने महशर में कि मख़्लूक़ात को हर तरफ़ से फ़रिश्ते एहाता किये हुए होंगे चारों जानिब उनकी सात सात सफ़ें होंगी कोई शख़्स बग़ैर दलील के इधर से उधर न हो सकेगा और दलील सिवा अम्रे इलाही हुक्मे इलाही के और कुछ नहीं। इंसान उस दिन कहेगा कि भागने की जगह किधर है? लेकिन जवाब मिलेगा कि आज तो रब के सामने ही खड़ा होने की जगह है।

और आयत में है (वल्लज़ीना कसबुस्सय्यिआति...) यानी बदियाँ करने वालों को उनकी बुराइयों के मानिन्द सज़ा मिलेगी उन पर ज़िल्लत सवार होगी और अल्लाह की पकड़ से पनाह देने वाला कोई न होगा, उनके चेहरे मिस्ल अंधेरी रात के टुकड़ों के होंगे। यह जहन्नमी गिरोह है जो हमेशा जहन्नम में ही रहेगा। (तब्री : 33/45) (शुवाज़ुन) का मतलब आग के शोले जो धुआँ मिले हुए सब्ज़ रंग के झुलसा देने वाले हों। कुछ कहते हैं बेधुएँ का आग के ऊपर का शोला जो इस तरह लपकता है कि गोया पानी की मौज है। (नुहासुन) कहते हैं धुएँ को। (तब्री : 23/47) यह लफ़्ज़ नून के ज़बर से भी आता है लेकिन यहाँ क़िरअत नून के पेश से ही है। नाबिग़ा के शेअ़र में भी लफ़्ज़ इसी मअ़नी में हैं।

हाँ! हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से मरवी है कि शुवाज़ुन से मुराद वह शोला है जिसमें धुआँ न हो और आपने इसकी सनद में उमय्या बिन अबू सुल्त का शेअर पढ़ सुनाया। और नुहास के मअनी आपने किये हैं सिर्फ़ धुआँ जिसमें शोला न हो और इसकी गवाही में भी एक शेअर नाबिग़ा का पढ़ सुनाया। हज़रत मुजाहिद (रह.) फ़र्माते हैं नुहास से मुराद पीतल है जो पिघलाया जाएगा और उनके सरों पर बहाया जाएगा। (तब्री : 23/48) बहर सूरत मतलब यह है कि अगर तुम क़ियामत के दिन मैदाने महशर से भागना चाहो तो मेरे फ़रिश्ते और जहन्नम के दारोग़े तुम पर आग बरसाकर धुआँ छोड़कर तुम्हारे सिर पर पिघला हुआ पीतल बहाकर तुम्हें वापिस लौटाएँगे। तुम न उनका मुक़ाबला कर सकते हो न उन्हें दूर कर सकते हो, न उनसे इंतिक़ाम ले सकते हो। पस तुम्हें रब की किसी भी नेअमत का इंकार नहीं होना चाहिए।

***

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾ فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾
يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ
اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾

तर्जुमा : ''पस जबकि आसमान फटकर सुर्ख़ हो जाए जैसे कि लाल नरी का चमड़ा। (37) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (38) उस दिन किसी इंसान और किसी जिन्न से उसके गुनाहों की पुर्सिश न की जाएगी। (39) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (40) गुनहगार सिर्फ़ हुलिये से ही पहचान लिये जाएँगे और उनकी पेशानियों के बाल और क़दम पकड़ लिये जाएँगे। (41) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसे मुज्रिम झूठा जानते थे। (43) उसके और खोलते हुए गर्म पानी के बीच चक्कर खाएँगे। (44) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (45)

आसमान फट जाएगा (आ. 37 से 45) : आसमान का फट जाना और आयतों में भी बयान हुआ है।

इर्शाद है (वन्शक़्क़तिस्समाउ फ़हिया यौमइज़िंव्वाहिया) और जगह है (यौमा तशक़्क़कुस्समाउ बिल ग़माम...) और फ़र्मान है (इज़स्समाउन शक़्क़त...) वग़ैरह। जिस तरह चाँदी वग़ैरह पिघलाई जाती है यही हालत आसमान की हो जाएगी रंग पर रंग बदलेगा क्योंकि क़ियामत की होलनाकी उसकी शिद्दत व दहशत है ही ऐसी। मुस्नद अहमद की हदीस में है लोग क़ियामत के दिन उठाए जाएँगे और आसमान उन पर हल्की बारिश की तरह बरसता होगा। (अहमद : 3/267; ह : 13814; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अब्दुर्रहमान बिन अबी सहबा मज्हूलुल हाल रावी है।) इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं लाल चमड़े की तरह हो जाएगा। और रिवायत में है गुलाबी रंग घोड़े के रंग जैसा आसमान का रंग हो जाएगा। अबू सालेह (रह.) फ़र्माते हैं पहले गुलाबी रंग होगा फिर लाल हो जाएगा गुलाबी रंग घोड़े का रंग मौसमे बहार में तो ज़र्दी माइल नज़र आता है और जाड़े में बदलकर लाल जचता है। ज्यों ज्यों सर्दी बढ़ती है उसका रंग मुतग़य्यर होता जाता है। इसी तरह आसमान भी रंग पर रंग बदलेगा, पिघले हुए तांबे की तरह हो जाएगा जैसे रोग़न गुलाब का रंग होता है उस रंग का आसमान हो जाएगा। आज वह सब्ज़ रंग है लेकिन उस दिन उसका रंग सुर्ख़ी लिये हुए होगा ज़ेतून के तेल की तलछट जैसा हो जाएगा। जहन्नम की आग की तपिश उसे पिघलाकर तेल जैसा कर देगी। उस दिन किसी मुज्रिम से उसका जुर्म न पूछा जाएगा। जैसे और आयत में है (हाज़ा यौमु ला यंतिक़ून...) यह वह दिन है कि बात न करेंगे। न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़्र मअज़िरत करें। हाँ और आयात में इनका बोलना उज़्र करना इनसे हिसाब लिया जाना वग़ैरह भी बयान हुआ है। फ़र्मान है (फ़व रब्बिका लनस्अलन्नहुम अज्मईन) तेरे रब की क़सम! हम सबसे सवाल करेंगे और उनके कुल कामों की पुर्सिश करेंगे, तो मतलब यह है कि एक मौक़े पर यह है दूसरे मौक़े पर यह है। पुर्सिश हुई हिसाब किताब हुआ उज़्र मअज़िरत ख़त्म कर दी गई। अब मुँह पर मुहर लग गई हाथ पैर और अअज़ाए जिस्म ने गवाही दी फिर पूछगछ की ज़रूरत न रही उज़्र मअज़िरत तोड़ दी गई। और यह तत्बीक़ भी है कि किसी से न पूछा जाएगा कि फ़लाँ अमल किया या नहीं किया? क्योंकि अल्लाह को ख़ूब मालूम है। हाँ! जो सवाल होगा वह यह कि ऐसा क्यूँ किया?

तीसरा क़ौल यह है कि फ़रिश्ते पूछेंगे नहीं, वह तो चेहरा देखते ही पहचान लेंगे और जहन्नम की ज़ंजीरों में बाँध ओंधे मुँह घसीटकर जहन्नम में डाल देंगे जैसे उसके बाद ही फ़र्माया कि यह गुनहगार अपने चेहरों और अपनी ख़ास अलामतों से ही पहचान लिये जाएँगे। चेहरे स्याह होंगे, आँखें केरी होंगी। ठीक इसी तरह मोमिनों के चेहरे भी अलग मुमताज़ होंगे। उनके अअज़ा-ए-वुज़ू चाँद की तरह चमक रहे होंगे। गुनहगारों को पेशानियों और क़दमों से पकड़ा जाएगा और जहन्नम में डाल दिया जाएगा। जिस तरह बड़ी लकड़ी को दो तरफ़ से पकड़कर तन्नूर में झोंक दिया जाता है। पीठ की तरफ़ से ज़ंजीर लाकर गर्दन और पैर एक करके बाँध दिये जाएँगे, कमर तोड़ दी जाएगी और क़दम और पेशानी मिला दी जाएगी और जकड़ दिया जाएगा।

पुल सिरात का ज़िक्र : इब्ने अबी हातिम में है कि क़बीला बनू कुंदा का एक शख़्स माई आइशा (रज़ि.) के पास गया, पर्दे के पीछे बैठा और माई साहिबा (रज़ि.) से सवाल किया कि क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से यह भी सुना है कि किसी वक़्त आपको किसी शख़्स की सिफ़ारिश का इख़्तियार न होगा? उम्मुल मोमिनीन

(रज़ि.) ने जवाब दिया कि हाँ! एक बार एक ही कपड़े में हम दोनों थे, मैंने हुज़ूर (ﷺ) से यही सवाल किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! जबकि पुलसिरात रखा जाएगा उस वक़्त मुझे किसी की सिफ़ारिश शफ़ाअत का इख़्तियार न होगा। यहाँ तक कि मैं जान लूँ कि ख़ुद मुझे कहाँ ले जाते हैं? और जिस वक़्त कि चेहरे स्याह सफ़ेद होने शुरू होंगे यहाँ तक कि मैं देख लूँ कि मेरे साथ क्या किया जाता है? या फ़र्माया यहाँ तक कि मैं देख लूँ कि मुझ पर क्या वह्यी भेजी जाती है? और जब जहन्नम पर पुल रखा जाए और उसे तेज़ और गर्म किया जाए मैंने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! उसकी तेज़ी और गर्मी की क्या हद है? फ़र्माया तलवार की धार जैसा तेज़ होगा और आग के अंगारे जैसा गर्म होगा। मोमिन तो बेज़रर गुज़र जाएगा और मुनाफ़िक़ लटक जाएगा जब बीच में पहुँचेगा उसके क़दम फिसल जाएँगे। यह अपने हाथ अपने पैरों की तरफ़ झुकायेगा जिस तरह कोई नंगे पैर चल रहा हो और उसे काँटा लग जाए और उस ज़ोर का लगे गोया कि उसने उसके पैर को छेद दिया तो किस तरह बेसब्री और जल्दी से वह सिर और हाथ झुकाकर उसकी तरफ़ झुक पड़ता है, इसी तरह यह झुकेगा। इधर यह झुका, उधर दारोग़ा जहन्नम उसकी पेशानी और क़दम जहन्नम की ज़ंजीरों से जकड़ लेंगे और जहन्नम की आग में गिरा देंगे जिसमें तक़रीबन पचास साल तक वह गहरा उतरता जाएगा। मैंने पूछा हुज़ूर (ﷺ)! यह जहन्नमी किस क़द्र बोझल होगा? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, मिस्ल दस गाभिन ऊँटनियों के, फिर आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की, यह हदीस ग़रीब है और इसके कुछ फ़िक़्रों का हुज़ूर (ﷺ) के कलाम से होना मुंकिर है और इसकी इस्नाद में एक शख़्स है जिनका नाम भी नीचे के रावी ने नहीं लिया। इस जैसी दलीलें सेहत के क़ाबिल नहीं होतीं, वल्लाहु अ़लम!

जहन्नम के मुंकिरों का अंजाम : उन गुनहगारों से कहा जाएगा कि लो जिस जहन्नम का तुम इंकार करते थे उसे अपनी आँखों से देख लो यह उन्हें बतौर रुस्वा और ज़लील करने, शर्मिन्दा और नादिम होने उनकी ख़िफ़्फ़त बढ़ाने के लिए कहा जाएगा। फिर उनकी यह हालत होगी कि कभी आग का अ़ज़ाब हो रहा है कभी पानी का कभी जहीम में जलाए जाते हैं और कभी हमीम पिलाये जाते हैं जो पिघले हुए तांबे की तरह सिर्फ़ आग है जो आँतो को काट देती है। और जगह है (इज़िल अग़्लालु फ़ी अअ़नाक़िहिम...) जबकि इनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और पैरों में बेड़ियाँ होंगी वह हमीम से जहीम में घसीटे जाएँगे और बार बार जलाए जाएँगे। यह गर्म पानी हद दर्जा गर्म होगा बस यूँ कहना ठीक है कि वह भी जहन्नम की आग ही है जो पानी की सूरत में है। हज़रत क़तादा (रह.) फ़र्माते हैं आसमान व ज़मीन की पैदाइश के वक़्त से आज तक वह गर्म किया जा रहा है। (तब्री : 23/54)

मुहम्मद बिन कअ़ब (रह.) फ़र्माते हैं बदकार शख़्स की पेशानी के बाल पकड़कर उसे उस गर्म पानी में एक ग़ौता दिया जाएगा तमाम गोश्त घुल जाएगा और हड्डियों को छोड़ देगा। बस दो आँखें और हड्डियों का ढाँचा रह जाएगा इसी को फ़र्माया (फ़िल्हमीमि सुम्मा फ़िन्नारि युस्जरून) इनके मअ़नी हाज़िर के भी किये गए हैं। और आयत में है (तुस्क़ा मिन अयनिन आनिया) सख़्त गर्म मौजूद पानी की नहर से उन्हें पानी पिलाया जाएगा जो हर्गिज़ न पी सकेंगे क्योंकि वह बेइंतिहा गर्म बल्कि मिस्ल आग के है। क़ुरआने करीम में और जगह है (ग़ैरा नाज़िरीना इनाहु) वहाँ मुराद तैयारी और पक जाना है। चूँकि बदकारों की सज़ा और नेककारों की जज़ा

भी उसका फ़ज़्ल व रहमत, अदल व लुत्फ़ है अपने उन अज़ाबों का पहले से बयान कर देना ताकि शिर्क व मआसी के करने वाले होशियार हो जाएँ, यह भी उसकी नेअमत है इसलिए फ़र्माया, फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे?

***

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾

तर्जुमा : ''उस शख़्स के लिए जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे दो दो जन्नतें हैं। (46) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (47) दोनों जन्नतें बहुत सी टहनियों और शाख़ों वाली हैं। (48) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे? (49) उन दोनों जन्नतों में दो बहते हुए चश्मे हैं। (50) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे?(51) उन दोनों जन्नतों में हर क़िस्म के मेवे भी जोड़ा जोड़ा होंगे। (52) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअमत को झुठलाओगे?'' (53)

अल्लाह का ख़ौफ़ रब का इन्आम है (आ. 46 से 53) : इब्ने शौज़िब और अ़ता ख़ुरासानी (रह.) फ़र्माते हैं आयत (वलिमन ख़ाफ़ा) हज़रत सिद्दीक़ अकबर (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई है। हज़रत अ़तिया बिन क़ैस (रह.) फ़र्माते हैं यह आयत उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई है जिसने कहा था मुझे आग में जला देना ताकि मैं अल्लाह तआ़ला को ढूँढ़ने से भी न मिलूँ। इस कलिमे के कहने के बाद एक रात एक दिन तौबा की, अल्लाह तआ़ला ने क़बूल कर ली और उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया। लेकिन सही बात यह है कि यह आयत आ़म है। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह का क़ौल भी यही है। मतलब यह है कि जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने रब के सामने खड़ा होने का डर अपने दिल में रखता है और अपने आपको नफ़्स की पैरवी से बचाता हो और सरकशी नहीं करता बल्कि आख़िरत की फ़िक्र ज़्यादा करता हो और उसे बेहतर और पायदार समझता है फ़राइज़ बजा लाता है मुहर्रमात से रुकता है क़ियामत के दिन उसे एक छोड़ दो दो जन्नतें मिलेंगी। सहीह बुख़ारी में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं कि दो जन्नतें चाँदी की होंगी और उनका कुल का कुल सामान भी चाँदी का होगा और दो जन्नतें सोने की होंगी और उनके बर्तन और जो कुछ उनमें है सब सोने का होगा उन जन्नतियों में और दीदारे बारी में कोई चीज़ हाइल न होगी सिवा उस किब्रियाई के पर्दे के जो अल्लाह

अ़ज़्ज़ व जल्ल के चेहरे पर है, यह जन्नते अ़दन में होंगे। यह ह़दीस सिह़ाह़ की और किताबों में भी है सिवा अबूदाऊद के। (सह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रह़मान बाब क़ौलुहू (वमिन दूनिहिमा जन्नतान) : 4878; सह़ीह़ मुस्लिम : 180; तिर्मिज़ी : 2528; इब्ने माजा : 186; ह़ाकिम : 1/157) रावी ह़दीस ह़ज़रत ह़म्माद (रह़.) फ़र्माते हैं मेरे ख़्याल में तो यह ह़दीस मरफ़ूअ़ है तफ़्सीर है अल्लाह तआ़ला के फ़र्मान (वलिमन ख़ाफ़) और (वमिन दूनिहिमा जन्नतान) की। सोने की दो जन्नतें मुक़र्रबीन के लिए और चाँदी की दो जन्नतें अस्ह़ाबे यमीन के लिए। (त़ब्री 23/57) ह़ज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं हुज़ूर (ﷺ) ने एक बार इस आयत की तिलावत की तो मैंने कहा अगरचे ज़िना और चोरी भी उससे हो गई हो? आप (ﷺ) ने फिर यही आयत पढ़ी। मैंने फिर यही सवाल किया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगरचे अबुद्दर्दा की नाक ख़ाक आलूद हो जाए। (इब्ने जरीर व अह़मद : 2/357; वसनदुहू सह़ीहुन; नसाई)

जन्नत की नेअ़मतें : कुछ सनद से यह रिवायत मौक़ूफ़ भी मरवी है। और ह़ज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) से यह भी मरवी है कि जिस दिल में अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होने का डर होगा नामुम्किन है कि उससे ज़िना हो या वह चोरी करे। यह आयत आ़म है इंसानों और जिन्नात दोनों को शामिल है और इस बात की बेहतरीन दलील है कि जिन्नों में से भी जो ईमान लाएँ और तक़्वा करें वह जन्नत में जाएँगे। इसीलिए जिन्न व इंसान को उसके बाद ख़ित़ाब करके फ़र्माता है कि अब तुम अपने रब की किस किस नेअ़मत की तक्ज़ीब करोगे? फिर उन दोनों जन्नतों के औस़ाफ़ बयान करता है कि यह निहायत ही सरसब्ज़ व शादाब हैं बेहतरीन आ़ला ख़ुश ज़ायक़ा उ़म्दा और तैयार फल हर क़िस्म के उनमें मौजूद हैं। तुम्हें न चाहिए कि तुम अपने परवरदिगार की किसी नेअ़मत का इंकार करो। (अफ़्नान) शाख़ों और डालियों को कहते हैं। यह अपनी कसरत से एक दूसरे से मिली जुली हुई होंगी, यह सायादार होंगी, जिनका साया दीवारों पर भी चढ़ा हुआ होगा। इक्रिमा (रह़.) यही मअ़नी बयान करते हैं और अ़रबी के शेअ़र को उस पर दलील में वारिद करते हैं। यह शाख़ें सीधी और फैली हुई होंगी। रंग बिरंग की होंगी। यह मत़लब भी बयान किया गया है कि उनमें त़रह़ त़रह़ के मेवे होंगे, कुशादा और घने साया वाली होंगी। यह तमाम क़ौल सही हैं और इनमें कोई मनाफ़ात नहीं। यह तमाम औस़ाफ़ इन शाख़ों में होंगे। ह़ज़रत अस्मा (रज़ि.) से मरवी है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सिदरतुल मुंतहा का ज़िक्र करते हुए फ़र्माया, उसकी शाख़ों का साया इस क़द्र दराज़ है कि सवार सौ साल तक उसमें चला जाए या फ़र्माया कि सौ सवार उसके तले साया ह़ासिल कर लें। सोने की टिड्डियाँ उस पर छाई हुई थीं, उसके फल बड़े बड़े मटकों और बहुत बड़े गोल जितने थे। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़ति सिमारेन अहलिल जन्ना : 2541; वसनदुहू ह़सन; मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ स़रह़ बिस्सिमाअ़ इन्द हिनाद बिन सिर्री फ़िज़्ज़ुह्द (1/98; ह़ : 115)

जन्नत का पानी : फिर उनमें नहरें बह रही हैं ताकि उन दरख़्तों और शाख़ों को सैराब करती रहें और बकसरत उम्दा फल लाएँ। अब तो तुम्हें अपने रब की नेअ़मतों की क़द्र करनी चाहिए। एक का नाम तस्नीम है दूसरी का सलसबील है। यह दोनों नहरें पूरी रवानी के साथ बह रही हैं। एक सुथरे पानी की दूसरी लज़्ज़त वाली बेनशे की शराब की। उनमें हर क़िस्म के फलों के जोड़े भी मौजूद हैं। और फल भी वह जिनसे तुम सूरत शनास तो हो

लेकिन लज़्ज़त शनास नहीं हो। क्योंकि वहाँ की नेअ़मतें न किसी आँख ने देखी हैं न किसी कान ने सुनी हैं न किसी दिमाग़ में आ सकती हैं। तुम्हें रब की नेअ़मतों की नाशुक्री से रुक जाना चाहिए। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं दुनिया में जितने भी कड़वे मीठे फल हैं वह सब जन्नत में होंगे यहाँ तक कि हंज़ल यानी उंदराइन भी। हाँ! दुनिया की उन चीज़ों और जन्नत की उन चीज़ों के नाम तो मिलते जुलते हैं हक़ीक़त और लज़्ज़त बिलकुल ही जुदागाना है यहाँ तो सिर्फ़ नाम हैं असलियत तो जन्नत में है। इस फ़ज़ीलत का फ़र्क़ वहाँ जाने के बाद ही मालूम हो सकता है।

***

مُتَّكِـِٔينَ عَلٰى فُرُشٍۭ بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾

तर्जुमा : "यह जन्नती ऐसे फ़र्शों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे और उन दोनों जन्नतों के मेवे बिलकुल क़रीब होंगे। (54) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (55) वहाँ शर्मीली नीची निगाह वाली हूरें हैं जिन्हें उनसे पहले किसी जिन्न व इंस ने हाथ नहीं लगाया। (56) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (57) वह हूरें मिस्ल याक़ूत और मूँगे के होंगी। (58) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (59) नेक कारी का बदला ही बहुत बड़ा इन्आ़म व एहसान है। (60) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे?" (61)

जन्नतियों के बिस्तर व तख़्त (आ. 54 से 61) : जन्नती लोग बेफ़िक्री से तकिया लगाए हुए होंगे, ख़्वाह लेटे हुए हों, ख़्वाह बाआराम बैठे हुए तकिया से लगे हुए हों उनके बिछाव भी इतने अच्छे होंगे कि उनके अंदर का अस्तर भी दबीज़ और ख़ालिस ज़रीन रेशम का होगा फिर ऊपर का अबरा कैसा कुछ होगा, उसे तुम आप सोच लो। मालिक बिन दीनार और सुफ़्यान सौरी (रह.) फ़र्माते हैं अस्तर का यह हाल है और अबरा तो

सिर्फ़ नूरानी होगा। जो सरासर इज़्हारे रह़मत व नूर होगा। फिर उस पर बेहतरीन गुलकारियाँ हैं जिन्हें अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता। उन जन्नतों के फल जन्नतियों से बिलकुल क़रीब हैं जब चाहें जिस ह़ाल में चाहें वहीं से ले लें, लेटे हों तो बैठा होने की और बैठे हों तो खड़े होने की ज़रूरत नहीं ख़ुद ब ख़ुद शाख़ें झूम झूमकर झुकती रहती हैं, जैसे फ़र्माया (क़ुतूफ़ुहा दानिया) और फ़र्माया (व दानियतुन अ़लैहिम ज़िलालुहा...) यानी बेह़द क़रीब मेवे हैं लेने वाले को कोई तक्लीफ़ या तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं ख़ुद शाख़ें झुक झुककर उन्हें मेवे दे रही होंगी। पस तुम अपने रब की नेअ़मतों के इंकार से बाज़ रहो।

चूँकि फ़ुरूश का बयान हुआ था तो साथ ही फ़र्माया कि उन फ़ुरूश पर उनके साथ उनकी बीवियाँ होंगी जो अ़फ़ीफ़ा पाकदामन शर्मिली नीची निगाहों वाली होंगी कि अपने शौहरों के सिवा किसी पर नज़रें न डालेंगी और उनके शौहर भी उन पर सो जान से माइल होंगे, यह भी जन्नत की किसी चीज़ को अपने उन मोमिन शौहरों से बेहतर न पाएँगी। यह भी वारिद है कि यह हूरें अपने शौहरों से कहेंगी अल्लाह तआला की क़सम! सारी जन्नत में मेरे लिए तुमसे बेहतर कोई चीज़ नहीं, अल्लाह तआला ख़ूब जानता है कि मेरे दिल में जन्नत की किसी चीज़ की ख़्वाहिश व मुह़ब्बत इतनी नहीं जितनी आपकी है। अल्लाह का शुक्र है कि उसने आपको मेरे ह़िस्से में कर दिया है और मुझे आपकी ख़िदमत का शर्फ़ बख़्शा। यह हूरें कुँवारी अछूती नौजवान होंगी। उन जन्नतियों से पहले उनके पाक पिण्डे को किसी इंस व जिन्न का हाथ नहीं लगा। यह आयत भी मोमिन जिन्नों के जन्नत में जाने की दलील है।

ह़ज़रत ज़मुरा बिन ह़बीब (रह़.) से सवाल होता है कि क्या मोमिन जिन्न भी जन्नत में जाएँगे? आपने फ़र्माया हाँ! और जिन्निया औ़रतों से उनके निकाह़ होंगे जैसे इंसानों के इंसान औ़रतों से फिर यही आयतें तिलावत कीं। (त़ब्री : 23/65)

हूरों की सिफ़त : फिर उन हूरों की ता'रीफ़ बयान हो रही है कि वह अपनी स़फ़ाई और ख़ूबी और ह़ुस्न में ऐसी हैं जैसी याक़ूत व मरजान। याक़ूत से स़फ़ाई में तश्बीह दी और मरजान से बयाज़ (सफ़ेदी) में। पस मरजान से मुराद यहाँ लुअ लुअ हैं। (त़ब्री : 23/66) नबी (ﷺ) फ़र्माते हैं अहले जन्नत की बीवियों में से हर एक ऐसी है कि उनकी पिण्डली की सफ़ेदी सत्तर सत्तर ह़ुल्लों के पहनने के बाद भी नज़र आती है यहाँ तक कि अंदर का गूदा भी। फिर आप (ﷺ) ने आयत (कअन्नहुन्नल याक़ूतु वल मरजान) पढ़ी और फ़र्माया देखो! याक़ूत एक पत्थर है लेकिन क़ुदरत ने उसकी स़फ़ाई और जूत ऐसी रखी है कि उसके बीच में धागा पिरो दो तो बाहर से नज़र आता है। (इब्ने अबी ह़ातिम) यह रिवायत तिर्मिज़ी में भी मौक़ूफ़न ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से मरवी है और इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) इसी को ज़्यादा सही बतलाते हैं। (तिर्मिज़ी, किताब स़िफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ फ़ी स़िफ़ति निसाइ अहलिल जन्ना : 2533; वसनदुहू ज़ईफ़ुन अल्अ़ज़्मतु लि अबी शैख़ : 584; अज़्ज़ुहदु लि हिनाद : 11; इसकी सनद में अ़त़ा बिन साइब मुख़्तलत़ रावी है। (अल्मीज़ान : 3/70; रक़म : 5641) मुस्नद अह़मद में है पैग़म्बरे मदनी अह़मद मुज्तबा ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (ﷺ) फ़र्माते हैं कि हर

अहले जन्नत की दो बीवियाँ होंगी कि सत्तर सत्तर हुल्ले पहन लेने के बाद भी उनकी पिण्डलियों की झलक नमूदार रहेगी। बल्कि अंदर का गूदा भी बवजह सफ़ाई के दिखाई देगा। (अहमद : 2/345; ह : 8542; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि यूनुस बिन उबेद मुदल्लस व अन्अन) सहीह मुस्लिम में है कि या तो फ़ख़्र के तौर पर या मुज़ाकिरा के तौर पर यह बहस छिड़ गई कि जन्नत में औरतें ज़्यादा होंगी या मर्द तो हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.) ने फ़र्माया क्या अबुल क़ासिम (ﷺ) ने यह नहीं फ़र्माया कि पहली जमाअत जो जन्नत में जाएगी वह चाँद जैसी सूरतों वाली होगी। उनके पीछे जो जमाअत जाएगी वह आसमान के बेहतरीन चमकीले तारों जैसे चेहरों वाली होगी। उनमें से हर शख़्स की दो बीवियाँ होंगी जिनकी पिण्डली का गूदा गोश्त के पीछे से नज़र आएगा और जन्नत में कोई बग़ैर बीवी का न होगा। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब अव्वलु ज़ुम्रतिन तदख़ुलुल जन्नत अला सूरतिल क़मर लैलतल बदर व सिफ़ातुहुम व अज़्वाजुहुम : 2834; अल्मुअजमुल औसत : 643; अहमद : 2/230) इस हदीस की असल बुख़ारी में भी है। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3245)

मुस्नद अहमद में है हुज़ूर (ﷺ) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला की राह की सुबह और उसकी राह की शाम सारी दुनिया से और जो उसमें है सबसे बेहतर है जन्नत में जो जगह तुम्हें मिलेगी उसमें से एक कमान या एक कोड़े के बराबर की जगह सारी दुनिया और उसकी सारी चीज़ों से अफ़ज़ल है। अगर जन्नत की औरतों में से एक औरत दुनिया में झाँक ले तो ज़मीनो आसमान को जगमगा दे और ख़ुश्बू से तमाम आलम महक उठे। उनकी हल्की सी छोटी सी दुपट्टियाँ भी दुनिया और दुनिया की हर चीज़ से गिराँ है। सहीह बुख़ारी में यह हदीस भी है। (अहमद : 3/141; सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद, बाब अल्हूरुल ईन व सिफ़तहुन्न : 2796) फिर इर्शाद है कि दुनिया में जिसने नेकी की उसका बदला आख़िरत में सुलूक व एहसान के सिवा और कुछ नहीं। जैसे इर्शाद है (लिल्लज़ीना अहसनुल हुस्ना व ज़ियादतुन) नेकी करने वाले के लिए नेकी है और ज़्यादती यानी जन्नत और दीदारे बारी। हुज़ूर (ﷺ) ने यह आयत तिलावत करके अपने अस्हाब (रज़ि.) से पूछा जानते हो तुम्हारे रब ने क्या कहा? उन्होंने कहा अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) को ही पूरा इल्म है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्मात है मैं जिस पर अपनी तौहीद का इन्आम दुनिया में करूँ उसका बदला आख़िरत में जन्नत है। (तफ़्सीर बग़वी : 4/251; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा इसकी सनद में बिश्र बिन हुसैन अस्बहानी मतरूक रावी है (अल्मीज़ान : 1/315; रक़म : 1192) और चूँकि यह भी एक अज़ीमुश्शान नेअमत है जो दरअसल किसी अमल के बदले नहीं बल्कि सिर्फ़ उसका एहसान और फ़ज़्लो करम है इसलिए उसके बाद ही फ़र्माया अब तुम मेरी किस किस नेअमत से लापरवाही बरतोगे? रब के मकाम से डरने वाले की बशारत के बारे में तिर्मिज़ी शरीफ़ की यह हदीस भी ख़याल में रहे कि हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया जो डरेगा वह रात के वक़्त ही कूच करेगा और जो रात के अंधेरे में चल पड़ा वह मंज़िले मक़्सूद तक पहुँच जाएगा। ख़बरदार हो जाओ अल्लाह का सौदा बहुत गिराँ है याद रखो वह सौदा जन्नत है। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल क़ियामा, बाब फ़ी सवाविल इतआम वस्सक़िय्य वल कस्व... : 2450; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; हाकिम : 4/308; इसकी सनद

में यज़ीद बिन सिनान ज़ईफ़ रावी है (अल्मीज़ान : 4/427; रक़म : 9705) इमाम तिर्मिज़ी (रह.) इस ह़दीस को ग़रीब बतलाते हैं। ह़ज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मैंने मिम्बर पर वअ़ज़ बयान करते हुए सुना कि आप (ﷺ) ने आयत (वलिमन ख़ाफ़) पढ़ी तो मैंने कहा अगरचे ज़िना किया हो, अगरचे चोरी की हो? बाक़ी ह़दीस ऊपर गुज़र चुकी है।

***

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾
فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ
حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ
اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِى الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

तर्जुमा : ''और उन दो के सिवा दो जन्नतें और हैं (62) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (63) जो दोनों गहरी सब्ज़ स्याही माइल हैं। (64) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (65) उनमें दो बह जोश उबलने वाले चश्मे हैं। (66) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (67) उन दोनों में मेवे और खजूर और अनार होंगे। (68) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (69) उनमें नेक सीरत ख़ूबसूरत औरतें हैं। (70) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (71) गोरी रंगत की हूरें जन्नती ख़ेमों में महफ़ूज़ हैं। (72) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (73) उन हूरों से कोई इंसान या

जिन्न इससे पहले नहीं मिला। (74) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (75) सब्ज मस्नदों और इ़म्दा फ़र्शों पर तकिया लगाए हुए होंगे। (76) फिर तुम अपने रब की कौन कौनसी नेअ़मत को झुठलाओगे? (77) तेरे परवरदिगार का नाम बाबरकत है जो बुज़ुर्गी और इन्आ़म वाला है।'' (78)

जन्नत सरसब्ज़ है (आ. 62 से 78) : यह दोनों जन्नतें जिनका ज़िक्र इन आयतों में है इन जन्नतों से कम मर्तबा हैं जिनका ज़िक्र पहले गुज़रा। और वह ह़दीस भी बयान हो चुकी जिसमें है दो जन्नतें सोने की और दो चाँदी की। (इसकी तख़रीज आयत नम्बर 46 के तह़त गुज़र चुकी है।) पहली दो तो मुक़र्रबीने ख़ास़ की जगह हैं और यह स़िफ़त उनसे पहले बयान हुई और यह तक़्दीमे बयान भी दलील है उनकी फ़ज़ीलत की। फिर यहाँ (वमिन दूनिहिमा) फ़र्मान स़ाफ़ ज़ाहिर करता है कि यह उनसे कम मर्तबा हैं। वहाँ (ज़वाता अफ़्नान) कहा था यानी बकसरत मुख़्तलिफ़ मज़े के मेवों वाली शाख़ों वाला। यहाँ फ़र्माया (मुदहाम्मतान) यानी पानी की पूरी तरी से स्याह। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं सब्ज। मुह़म्मद बिन कअ़ब (रह़.) फ़र्माते हैं सब्ज़ी से पुर। क़तादा (रह़.) फ़र्माते हैं इस क़द्र फल पके हुए तैयार हैं कि वह सारी जन्नत सर सब्ज़ मालूम हो रही है। अल्ग़र्ज़ वहाँ शाख़ों की फैलावट बयान हुई यहाँ दरख़्तों की कसरत बयान की गई। तो ज़ाहिर है कि उसमें और इसमें भी बहुत फ़र्क़ है। इनकी नहरों की बाबत लफ़्ज़ (तज्रियान) है और यहाँ लफ़्ज़ (नज़्ज़ाख़तान) है यानी उबलने वाली। और यह ज़ाहिर है कि नज़ह़ से जरी यानी उबलने से बहना बहुत बरतरी वाला है।

जन्नत के फल : ह़ज़रत ज़ह़्ह़ाक (रह़.) फ़र्माते हैं यानी पुर हैं पानी रुकता नहीं। (त़बरी : 23/75) और लीजिए वहाँ फ़र्माया था कि हर क़िस्म के मेवों के जोड़े हैं, और यहाँ फ़र्माया उसमें मेवे और खजूरें और अनार हैं तो ज़ाहिर है कि पहले के अल्फ़ाज़ उमूमियत लिये हुए हैं वह क़िस्म के एतिबार से और कमियत के ऐतिबार से भी उससे अफ़ज़लियत रखते हैं क्योंकि यहाँ लफ़्ज़ फ़ाकिहतुन गो नकिरा है लेकिन स्याक़ में इस्बात के है इसलिए आ़म न होगा। इसीलिए बत़ौर तफ़्सीर के बाद में नख़्ल व रुम्मान कह दिया, जैसे अ़त़्फ़े ख़ास़ आ़म पर होता है। इमाम बुख़ारी (रह़.) वग़ैरह की तह़क़ीक़ भी यही है। (स़ह़ीह़ बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रह़मान क़ब्लल ह़दीस : 4878) खजूर और अनार को ख़ास़ त़ौर से इसलिए ज़िक्र किया कि और मेवों पर इन्हें शर्फ़ है।

मुस्नदे अ़ब्द बिन हुमैद में है यहूदियों ने आकर रसूलुल्लाह (ﷺ) से पूछा कि क्या जन्नत में मेवे हैं? आप (ﷺ) ने इस आयत की तिलावत की और फ़र्माया हाँ! उन्होंने पूछा क्या जन्नती दुनिया की त़रह़ वहाँ भी खाएँगे पियेंगे? आप (ﷺ) ने फ़र्माया हाँ! बल्कि बहुत कुछ ज़्यादा और बहुत कुछ ज़्यादा। उन्होंने कहा फिर क्या वहाँ फ़ुज़्ला भी निकलेगा (वॉशरूम भी जाना पड़ेगा)? आप (ﷺ) ने फ़र्माया, नहीं! नहीं बल्कि पसीना आकर सब हज़म हो जाएगा। (मुस्नदे अ़ब्द बिन हुमैद : 35; वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दन, इसकी सनद में हुसैन बिन उ़मर मतरूक रावी है।) इब्ने अबी ह़ातिम की एक मरफ़ूअ़ ह़दीस में है जन्नती खजूर के दरख़्तों के रीश का जन्नतियों का लिबास बनेगा। यह लाल रंग सोने के होंगे। इसके तने सब्ज़ ज़मर्रुद होंगी उसके फल

शहद से ज़्यादा मीठे और मस्के से ज़्यादा नर्म होंगे। गुठली बिलकुल न होगी। (हाकिम : 2/475; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; सुफ़्यान सौरी मुदल्लस व अन्अन) एक और हदीस में है कि मैंने जन्नत के अनार देखे इतने बड़े थे जेसे ऊँट होदज के साथ हो। (वसनदुहू ज़ईफ़ुन जिद्दा इसकी सनद में अबू हारून अब्दी अम्मारा बिन जुवैन मतरूक रावी है। (अल्मीज़ान : 3/173; रक़म : 6018) ख़ैरात के मअनी बकसरत और बहुत हसीन, निहायत नेक ख़ल्क़ और बेहतर ख़ुल्क़। एक मरफ़ूअ हदीस में भी यह मअनी मरवी है। (तब्री : 23/75) एक और हदीस में है कि हूरे ईन जो गाना गाएँगी उनमें यह भी होगा हम ख़ुशख़ल्क़ ख़ूबसूरत हैं जो बुज़ुर्ग शौहरों के लिए पैदा की गई हैं। यह पूरी हदीस सूरह वाक़िया की तफ़्सीर में अभी आएगी, इंशाअल्लाह! यह लफ़्ज़ तशदीद से भी पढ़ा गया है। फिर सवाल होता है कि अब तुम अपने रब की किस किस नेअमत को झुठलाओगे हूरें हैं जो ख़ेमों में रहती सहती हैं। यहाँ भी वही फ़र्क मुलाहिज़ा हो कि वहाँ तो फ़र्माया था कि ख़ुद वह हूरें अपनी निगाह नीची रखती हैं और यहाँ फ़र्माया उनकी निगाहें नीची की गई है। पस अपने आप एक काम को करना और दूसरे से कराया जाना इन दोनों में किस क़द्र फ़र्क़ है। गो पर्दा दोनों सूरतों में हासिल है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं हर मुसलमान के लिए ख़ैरा है यानी नेक और बेहतरीन नूरानी हूर और हर ख़ैरा के लिए ख़ेमा है और हर ख़ेमे के चार दरवाज़े हैं जिनमें से हर रोज़ तोहफ़ा करामत हदिया और इन्आम आता रहता है। न वहाँ कोई फ़साद है न सख़्ती है न गंदगी है न बदबू है। हूरों की सोहबत है जो अछूते साफ़ सफ़ेद चमकीले मोतियों जैसी हैं। सहीह बुख़ारी में है रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं जन्नत में एक ख़ेमा है दुर्रे मजूफ़ का जिसका अर्ज़ साठ मील का है इसके हर हर कोने में जन्नती की बीवियाँ हैं जो दसूरे कोने वालियों को नज़र नहीं आतीं। मोमिन उन सबके पास आता जाता रहेगा। (सहीह बुख़ारी, किताबुत्तफ़्सीर, सूरह रहमान, बाब (हूरुम मक़्सूरातिन फ़िल्ख़ियाम) : 4879) दूसरी रिवायत में चौड़ाई का तीस मील होना मरवी है। (सहीह बुख़ारी, किताब बदउल ख़ल्क़, बाब मा जाअ फ़ी सिफ़तिल जन्नति व अन्नहा मख़्लूक़ा : 3243) यह हदीस सहीह मुस्लिम में भी है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्ना, बाब फ़ी ख़ियामिल जन्ना : 2838) हज़रत अबुद्दर्दा (रज़ि.) फ़र्माते हैं ख़ेमा एक ही लुअ लुअ का है जिसमें सत्तर दरवाज़े मोती के हैं। इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं जन्नत में एक ख़ेमा होगा जो एक मोती का बना हुआ होगा, चार फ़र्सख़ चौड़ा, जिसके चार हज़ार दरवाज़े होंगे और चोखटें सबकी सोने की होंगी। एक मरफ़ूअ हदीस में है अदना दर्जे के जन्नती के अस्सी हज़ार खादिम होंगे और बहत्तर बीवियाँ होंगी और लुअ लुअ ज़बरजुद का महल होगा जो जाबिया से सन्आ तक पहुँचे। (तिर्मिज़ी, किताब सिफ़तुल जन्ना, बाब मा जाअ मा लि अदना अहलिल जन्नति मिनल करामत : 2562; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इब्ने हिब्बान : 4701 इसकी सनद में दराज है जिसकी अबुल हैशम से रिवायत ज़ईफ़ होती है।) फिर फ़र्माता है इन बेमिस्ल हसीनों के पिण्डे अछूते हैं किसी जिन्न व इंस का गुज़र उनके पास से नहीं हुआ। पहले भी इस क़िस्म की आयत मअ तफ़्सीर गुज़र चुकी है हाँ! पहली जन्नतों की हूरों के औसाफ़ में इतना जुम्ला वहाँ था कि वह याक़ूत व मरजान जैसी हैं। यहाँ इनके लिए यह नहीं कहा गया। फिर सवाल हुआ कि तुम्हें रब की किस किस नेअमत का इंकार है? यानी किसी नेअमत का

इंकार न करना चाहिए। यह जन्नती सब्ज़ रंग के आला कीमती फ़र्शों गालीचों और तकियों पर टेक लगाए बैठे होंगे। तख़्त होंगे और तख़्तों पर पाकीज़ा आला फ़र्श होंगे। और बेहतरीन मुनक़्क़श तकिये लगे हुए होंगे। यह तख़्त और यह फ़र्श और यह तकिये जन्नती बाग़ियों और उनकी क्यारियों पर होंगे यह आला दर्जे के धारी दार और नक़्शीन रेशम के होंगे, और यही उनके फ़र्श होंगे। कोई लाल रंग होगा, कोई पीले रंग का होगा और कोई सब्ज़ रंग। जन्नतियों के कपड़े भी ऐसे ही आला और बाला होंगे। दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं जिससे उन्हें तशबीह दी जा सके। यह बिस्तरे मख़्मली होंगे जो बहुत नर्म और बिलकुल ख़ालिस होंगे। कई कई रंग के मिले जुले नक़्श उनमें बने हुए होंगे। अबू उबेदह (रह.) फ़र्माते हैं अब्क़र एक जगह का नाम है जहाँ मुनक़्क़श बेहतरीन कपड़े बुने जाते थे ख़लील बिन अहमद फ़र्माते हैं हर नफ़ीस और आला चीज़ को अरब अब्क़र कहते हैं। चुनाँचे एक हदीस में है कि हुज़ूर (ﷺ) ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की निस्बत फ़र्माया मैंने किसी अब्क़री को नहीं देखा जो उमर की तरह पानी के बड़े बड़े डोल खींचता हो। (सहीह बुख़ारी, किताब फ़ज़ाइले अस्हाबिन्नबी (ﷺ) बाब मनाक़िबे उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) : 3682; सहीह मुस्लिम : 2393; अहमद : 2/368; इब्ने हिब्बान : 6898) यहाँ भी ख़्याल कीजिए कि पहली दो जन्नतों के फ़र्श व फ़ुरूश और वहाँ के तकियों की जो सिफ़त बयान की गई है वह उनसे आला है। वहाँ बयान फ़र्माया गया था कि इनके अस्तर यानी अंदर का कपड़ा ख़ालिस दबीज़ उम्दा रेशम होगा फिर ऊपर के कपड़े का बयान नहीं हुआ था। इसलिए कि जिसका अस्तर इतना आला है उसके अबरे यानी ऊपर के कपड़े का तो कहना ही क्या है। फिर अगली दो जन्नतों के औसाफ़ के ख़ात्मे पर फ़र्माया था कि इताअत का सिला सिवा इनायत के और क्या हो सकता है? तो उन अहले जन्नत के औसाफ़ में एहसान को बयान किया जो आला मर्तबा और ग़ायत है जैसे हज़रत जिब्रईल (عليه السلام) वाली हदीस में है कि उन्होंने इस्लाम का सवाल किया फिर ईमान का फिर एहसान का। (सहीह बुख़ारी, किताब सुआलु जिब्रईलन्नबी (ﷺ) अनिल ईमान वल इस्लाम वल्एहसान : 50) पस यह कई कई वुजूह हैं जिनसे साफ़ साबित है कि पहले की दो जन्नतों को इन दो जन्नतों पर फ़ज़ीलत हासिल है। अल्लाह तआला करीम व वह्हाब से हमारा सवाल है कि वह हमें भी उन जन्नतियों में करे जो उन दो जन्नतों में होंगे जिनके औसाफ़ पहले बयान हुए, आमीन!

फिर फ़र्माता है तेरे रब ज़ुल्जलालि वल्इकराम का नाम बाबरकत वाला है वह जलाल वाला है यानी इस लायक़ है कि उसका जलाल माना जाए और उसकी बुज़ुर्गी का लिहाज़ करके उसकी नाफ़र्मानी न की जाए बल्कि कामिल इताअत गुज़ारी की जाए और वह इस क़ाबिल है कि उसका इकराम किया जाए यानी उसकी इबादत की जाए उसके सिवा दूसरे की इबादत न की जाए, उसका शुक्र किया जाए, नाशुक्री न की जाए। उसका ज़िक्र किया जाए और उसे भुलाया न जाए। वह अज़्मत और किब्रियाई वाला है। रसूलुल्लाह (ﷺ) फ़र्माते हैं अल्लाह तआला का इज्लाल करो, उसकी अज़्मत मानो वह तुम्हें बख़्श देगा। (अहमद : 5/199; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; इसकी सनद में अबुल इज़रा मज्हूल रावी है।) और हदीस में है अल्लाह तआला की अज़्मत मानने में यह भी दाख़िल है कि बूढ़े मुसलमान की और बादशाह की और आमिले क़ुरआन की जो क़ुरआन में कमी

ज़्यादती न करता हो यानी न उसमें गुलू करता हो, न कमी करता हो इ़ज़्ज़त की जाए। (अबूदाऊद, किताबुल अदब, बाब फ़ी तंज़ीलिन्नास मनाज़िलहुम : 4843; वसनदुहू ज़ईफ़ुन; फ़ीहि अबू कनाना वहुव मज्हूल) अबू यअ़ला में है (या ज़ल्जलालि वल्इकराम) के साथ चिमट जाओ। तिर्मिज़ी में भी यही ह़दीस है। (तिर्मिज़ी, किताबुद्दअवात, बाब क़ौलु (या ह़य्यु या क़य्यूमु.... या ज़ुल्जलालि वल इकराम) : 3525; वहुव स़ह़ीहुन; मुस्नदे अबी यअ़ला : 2733) इमाम तिर्मिज़ी (रह़.) इसकी सनद के साथ यह ह़दीस मरवी है। इसमें या का लफ़्ज़ नहीं है। (अह़मद : 4/177; ह़ : 17596; वसनदुहू स़ह़ीहुन) जौहरी (रह़.) फ़र्माते हैं कि जब कोई किसी को चिमट जाए उसे थाम ले तो अ़रब कहते हैं (अलज़्ज़) यही लफ़्ज़ इस ह़दीस में आया है तो मत़लब यह है कि इल्ह़ाह़ व ख़ुलूस़ आजिज़ी और मिस्कीनी के साथ हमेशगी और लज़ूम से अल्लाह तआ़ला के दामन में लटक जाओ। स़ह़ीह़ मुस्लिम और सुनने अरबआ़ में ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ से सलाम फेरने के बाद सिर्फ़ इतनी ही देर बैठते कि यह कलिमात कह लें (अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु तबारक्ता या ज़ल्जलालि वल्इकराम) (स़ह़ीह़ मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाब इस्तिह़बाबुज़् ज़िक्रि बअ़दस्स़लात...: 592; अबूदाऊद : 1512; तिर्मिज़ी : 298; नसाई : 1339; इब्ने माजा : 924; अह़मद : 6/62; इब्ने ह़िब्बान : 2000)

अल्ह़म्दु लिल्लाह! अल्लाह के फ़ज़्लो करम से सूरह रह़मान की तफ़्सीर मुकम्मल हुई।

***